श्रीनाथजी ।
श्रीनृत्यगोपालो जयतितराम् ।
महाराज श्रीनागरीदासजी कृत—
नागरसमुच्चय.
पंडित श्रीधर शिवलालजी
'ज्ञानसागर' छापखाना—(मुंबई)

॥ दोहा ॥

या बोलनकै रस बसे। याहीमें दिन रात
डोलैं डुलैं न और दिश। नागर पद जिहिं भात ॥१॥

रिझवारनके बश सदा। रिझवार सिरदार
बात रिझ हारेन पैं। रिझ हार है हार ॥ २ ॥
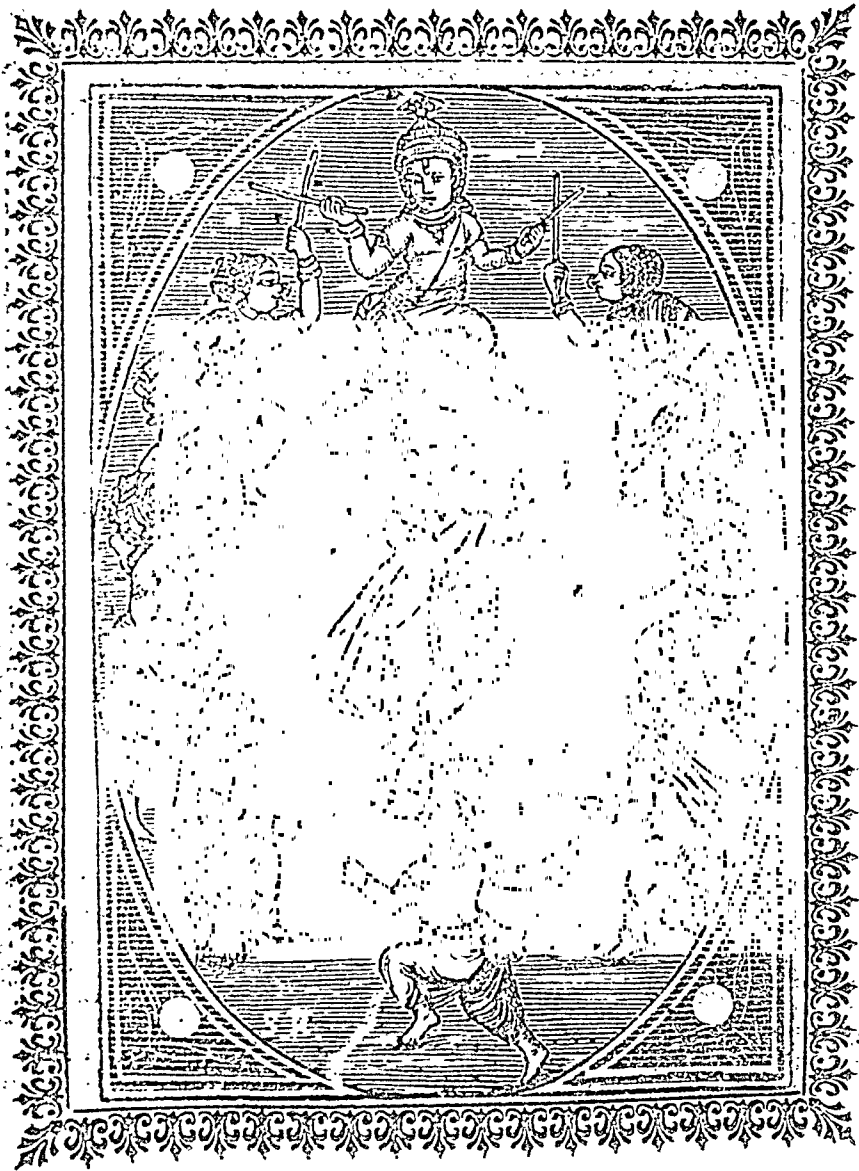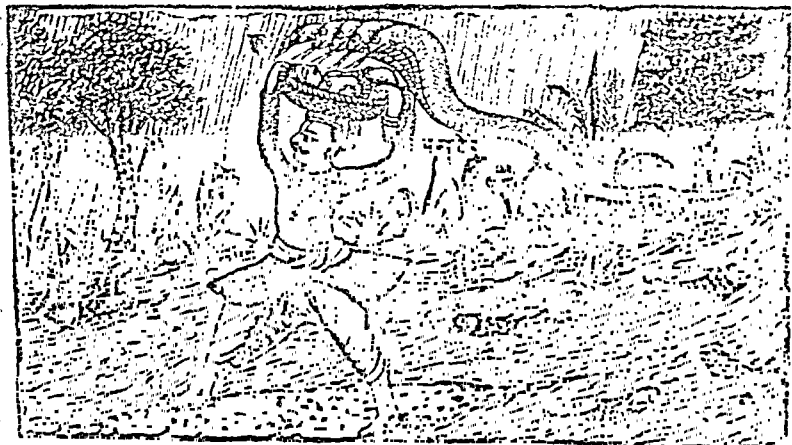
श्रीनाथजी.

श्रीनृत्यगोपालो जयतितराम् ।

श्रीकृष्णगढाधीश श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजा जी श्री श्री श्री १०८ श्री श्री सावन्तसिंहजी द्वितियहरिसंबंधनाम नागरीदासजीकृत

# नागरसमुच्चयः

जिस्कों

श्रीमन्महाराजाधिराज श्री श्री श्री १०८ श्री श्री शार्दूलसिंहजी महाराज जी. सी. आई. ई. कृष्णगढाधिपतिके आज्ञानुसार

## मुंबईमें.

पं० श्रीधर शिवलालजीनें अपने स्वकीय

## ज्ञानसागर

छापाखानामें छापके प्रसिद्ध किया.

सन १८९८ संवत् ११५५ चैत्रशुक्क १.
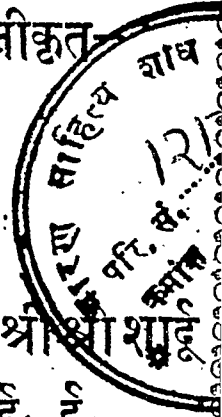
श्रीनाथजी

# अर्पणपत्रिका.

श्रीमान् क्षत्रियकुल तिलक, राठोर वंशावतंस, वीर पुंगव महाराजाधिराज, गोब्राह्मण प्रतिपालक श्री श्री श्री १०८ श्री श्री शार्दूल सिंहजी महाराज जी. सी. आई. ई. धीर वीर चिर प्रतापी सदा समरविजयी कृष्णगढाधीश तथा श्रीमानके लघु भ्राता श्रीमान दीक्षितादि पदवी प्राप्त श्रीयुत महाराजाधिराज श्री श्री श्री १०८ श्री श्री जवानसिंहजी महोदयकी सेवामें श्रीयुतकी गुणग्राहकता, परोपकार, स्वधर्म परायणता, प्रजापालनता, प्रभृति अनेक सद्गुणोंके तथा श्री महाराज के यहां विद्या ओर लक्ष्मी सदैव निवास करतीहै जिन्होंके पूर्वज श्रीयुत् महाराजाधिराज नागरीदासजी कृत नागर समुच्चयको श्रीमहाराज के आज्ञानुसार छापके नम्रता पूर्वक अर्पण करताहूं

महाराजकी प्रजामेंसे एक राज्यभक्त,

पं० श्रीधरात्मज किसनलाल गौड
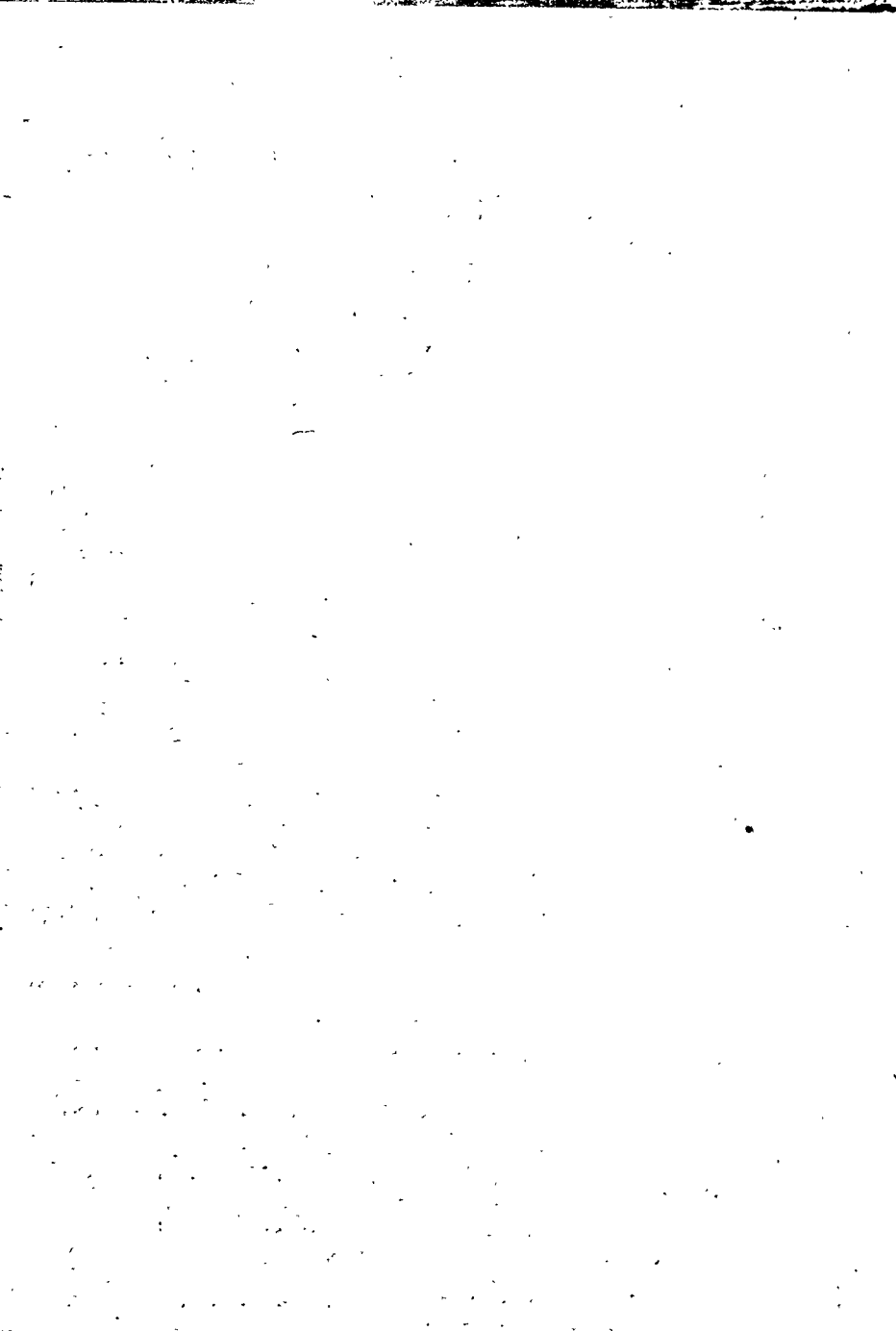
श्रीनाथजी.

# भूमिका.

उस सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर करुणा वरुणालय श्रीकृष्ण चंद्र आनन्द कन्द विविधगुण विशिष्टको कोटिशः धन्यवादहै जिसके कृपासागरके एक विंदुमात्रपर प्राणीमात्रका कल्याण निर्भरहै. उसी कृपा समूहके आधारपर अवलंवन कर सृष्टिके आरंभसे लेकर आज तकमें अनेक भगवद्भक्त इस असार संसारमें जन्म ग्रहणकर अपने सुललित उपदेशों और अपने सद्गुणोंसे प्राणीमात्रका उपकार करगये हैं. यों तो कृष्ण गढका राज्य वंश आरंभसे लेकर आज तक प्रजा पालनादि सद्गुणोंमें और न्याय परायणता तथाच दया धर्म में विख्यात हो गया और होते जाता हैं पर जिसकी समता इस समयभी अन्य राज्य वंशोंमेंसे कोई भगवद्भक्ति नहीं कर सकता परंतु अहाहा ! इस ग्रंथके रचयिता श्रीमान् महाराजा धिराज सावन्तसिंहजी द्वितिय हरिसंवंध नाम नागरीदासजी महाराज महोदयकी अपूर्व भक्तिका तो कहना ही क्याहै !! जिन्होंने केवल ईश्वर भक्तिके लिये राज्यको छोड संसारसे विरक्त हो श्रीवृंदावन धाममें वास कर अपनेको इस घोर कलिकालमें एक उदाहरण वनादिया. ऐसे महात्माका जीवन चरित्र और उनकी कतिपय कविताओंका संग्रह प्रिय हिन्दी रसिकोंके समक्ष रखना कितना आवश्यक है इस बातका विचार प्रिय पाठकों को ही करना चाहिये. उन भगवद्भक्ति परायण महानु भावके जीवन चरित्रसे शिक्षा प्राप्त करने और उनके सदुपदेशोंसे अपने चारित्रका संशोधन करनेके लिये यह पुस्तक एक उत्तम मार्गहै. ऐसे अलभ्य रत्नों का संग्रह करनाभी मेर जैसे तुच्छ मनुष्यके लिये महाकाठिन था परंतु

धन्यहै श्रीमान् महाराजाधिराज श्री श्री श्री १०८श्री श्रीशार्दूल सिंहजी महाराज जी: सी. आइ. ई. धीर वीर चिर प्रतापी कृष्ण गढाधीश एवं उनके लघु भ्राता श्रीयुत श्रीश्रीश्री १०८श्रीश्री दीक्षितजी महाराज श्री जवान सिंहजीको सो जिनकी कृपासे मुझको यह बहु मुल्यरत्न आज पाठकोंके दृष्टि गोचर करनेके लिये प्राप्त हुवाहै. इस वातसे उक्त श्री-मानोंनें हिन्दी रसिकोंके लाभ एवं मनोरंजनके लिये मुझको इस पुस्त-कके छापनेकी आज्ञा देनेके सिवाय धनसंबंधी सहायता देकर प्रथम आवृत्तिके लिये इसका मूल्य केवल, दो (२) रुपैये अंदाजन रखनेकी आज्ञा दी है. क्योंकि भाग्यवान तो चाहेसो द्रव्य खर्चके ले सक्ता है परंतु साधु माहात्मा या साधारण को कष्ट न होनेके लिये.

यदि हिन्दीके रसिक जन इसको आश्रय देकर कुछभी लाभ उठावैंगे तो मैं अपनेको कृतार्थ समझूंगा.

| मुंबई<br>श्री ज्ञानसागर यंत्रालय<br>चैत्रशुक्ल१ ॥ संवत् १९५५ | कृष्णगढकी प्रजोंमे से<br>राज्यभक्त<br>और हिन्दीका हितेषी प्रकाशक |
|---|---|

पंडित श्रीधरात्मज

**किसनलाल गौड**

सलेमाबाद निवासी.

श्रीनाथजी ॥

# सूचना



ख; प—इस पुस्तकमें खकार दोनों तरहके छपे हैं सो पाठकगण अर्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें।

जाहि, तहा, जहा, जिहि, इहि इत्यादि शब्दोंपर अनुस्वार नहीं छपे हैं सो भी पाठकगण अर्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें।

जोऊ, कोऊ, इत्यादि शब्दोंमें गुरुका लघु पढा जाता है सो भी पाठकगण अर्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें।

भापा—यह पद जहां है वहां वचानिका चाहिये सो भी पाठकगण अर्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें।

ध, ध—ये अक्षर भी वहुतसे समान हैं सो भी पाठकगण अर्थांशपर ध्यान देके समझ लेवें।

श, प, स—इनको भी अर्थांशसे पाठकगण समझ लेवें।

व, व,—इनको भी अर्थांशसे पाठकगण समझ लेवें।

सो वानैं, सो; वानैं—ऐसे कई स्थानपर पद मिल रहे हैं सो भी अर्थांशसे पाठकगण समझ लेवें।

को, कौ, ठो, ठौ—इत्यादि शब्दोंको अर्थांशसे पाठकगण समझ लेवें।

व्हैं—इसको (ह्वैं) समझना चाहिये

१४० के पृष्ठसे बहुतसे अक्षरोंके व्यंजनका चिन्ह नीचे लगाया है । उसका तात्पर्य यह है कि, ग्रंथ कर्त्ताने उनका पूरा उच्चारण नहीं किया हैं । कदाचित् इनका पूरा एक मात्रिक उच्चारण किया जाय तो छंद् भंग होता है । और जिनके नीचे व्यंजनका चिन्ह किया है उनका उच्चारण पूर्वअक्षरके साथ होता है । सो पाठक गणको उच्चारण करनेमें विदित होगा ।

ग्रंथ संशोधक—

**कवीश्वर जयलाल.**

श्रीनाथजी ।

# नागरसमुच्चयके ग्रंथोंका सूचीपत्र.

## वैराग्यसागरे ।

## शृंगारसागरे।

# उत्सवमालाके उत्सवोंका सूचीपत्र।

# उत्सवमालामें रागहैं जिनके नाम ।

ये राग कई वार आगये हैं । परन्तु पाठक गणोंके जाननेके लिये एक वार लिखे हैं कि इस ग्रंथमें इतने राग हैं ॥

| पृष्ठ | पंक्ति | राग | पृष्ठ | पंक्ति | राग |
|---|---|---|---|---|---|
| ५३२ | ६ | रागपट | ५४३ | १ | देवगन्धार |
| ५३२ | ११ | रागगौरी | ५४३ | १३ | विलावल |
| ५३२ | १४ | रागअडाणौं | ५४३ | १९ | सारंग |
| ५३२ | १८ | राग परज | ५४५ | १४ | श्रीराग |
| ५३३ | ९ | राग षमायची | ५४७ | ९ | पूरवी |
| ५३३ | १३ | राग सोरठ | ५४७ | १५ | कामोद |
| ५३४ | २ | राग काफी | ५४९ | ७ | धनाश्री |
| ५३५ | १० | राग ईमन | ५५० | ९ | केदारो |
| ५३६ | १४ | राग षमायच | ५५४ | १८ | रागनट |
| ५३६ | २१ | रागविहागरो | ५६५ | ८ | हिंडोल |
| ५३७ | १३ | रागभैरूं | ५६८ | २२ | रामकली |
| ५३८ | ६ | सोरठमलार | ५८८ | ९ | जंझोटी |
| ५३८ | १६ | आसांवरी | ५९५ | १८ | मल्लार |
| ५३८ | १९ | टोडो | ६०० | ११ | वडहंस |
| ५४२ | १२ | नायकी | | | |

# पद मुक्तावलीमें रागहैं जिनके नाम.

ये राग कईवार आगये हैं। परंतु पाठकगणोंके जाननेके लिये एक एकवार लिखे हैं कि इस ग्रंथमें इतने रागहैं।

# उत्सवमालाके पदोंका सूचीपत्र।

# पदमुक्तावलीके पदोंका सूचीपत्र

| संख्या | पृष्ठ | पंक्ति | दो. चौ. |
|---|---|---|---|
| ६४ | ३९८ | २१ | नितिदानमांगेगहवरगैलमें ४०२।९ |
| ६५ | ४३४ | ४ | दोहा—नितदुलहनिनवनागरी ४३५।२० |
| ६६ | ४९४ | १५ | निसउजियारीफूलेद्रुम |
| ६७ | ४६७ | ५ | नितगरजगरजकेवरसवरसन घटालागी |
| ६८ | ४७१ | ७ | निलजवंसीलगीपियमुपगाजैं |
| ६९ | ४७९ | ९ | निगाहकेमिलतेहीचस्मौंपैगामाकिया |
| ४७० | ४०४ | १२ | दोहा—नित्यकेलिआनन्दरस ४४५।६॥ ५२९।१० |
| ७१ | ४०२ | १ | दोहा—नीठसंभारतसांवरो |
| ७२ | ५१६ | १६ | दोहा—निससर्दोत्फुल्लमल्लिकाककुभ |
| ७३ | ४६५ | १० | दोहा—नीलवसनगोरैंवदन |
| ७४ | ४५० | ६ | दोहा—नीलपीतमनिक्रांत |
| ७५ | ४२१ | १७ | दोहा—नीलपीतपटछोरछवि ४५०।९ |
| ७६ | ४७४ | ५ | दोहा—नीलांवरसिरचंद्रिका |
| ७७ | ३९६ | १४ | नींदभरीअंषियांजूवडीव |
| ७८ | ३९२ | ११ | दोहा—नींदभरेतन |
| ७९ | ४४६ | १३ | नींदझुकीपलनिरपिपिय |
| ४८० | ४६९ | १ | दोहा—नेहमुरलियाकौंगिनौं |
| ८१ | ४२५ | २ | नैंनांयैंहीलगेरी |
| ८२ | ४०८ | १९ | नैंननिसैंनतैंहूंथकी |

# श्रीनाथजी ।

# महाराज श्रीनागरीदा-सजीका जीवनचरित्र ।

॥ श्रीनाथजी ॥

॥ श्रीनृत्यगोपालोजयति ॥ श्रीयज्ञनारायणोजयति ॥

॥ सर्बसके शिर धूरदे ॥ सर्बस की व्रज धूर ॥

तसवीर कृष्णगढाधीश माहाराजाधिराज माहाराज श्री साव-न्तसिंहजी तद्द्वितीयहरिसम्बंधि नाम माहाराज श्रीनागरीदासजी की.

श्रीः ।

( बाबू राधाकृष्णदास लिखित )

# श्रीनागरीदासजीका जीवन चरित्र.

पिय प्यारी अनुराग मधु, मत्त मधुप सुखरास ।
गुप्त प्रेम अनुभव छके, जयति नागरीदास ॥

आज हम उस महानुभाव भगवदंश महात्माके चरित्र लिखनेमें प्रवृत्त हुए हैं जिसके गुप्त प्रेमानुभव भाव को स्मरण करतेही सहृदय रसिक मात्र को

* मेरी इच्छा बहुत दिनों से श्रीनागरीदासजीका जीवनचरित्र लिखनेकी थी परन्तु ठीक २ पता न लगनेसे न लिखसका, मित्रवर बाबू अमीरसिंहजी द्वारा कई ग्रन्थोंके मिलने से वह इच्छा पूरी हुई और एक जीवनी लिखीथी जो कि "नागरीप्रचारिणी सभा"के उत्साही सभ्योंकी इच्छानुसार ता०२४ मार्च सन १८९४ ई० को सभामें पढ़ीगई थी। सभाके अनुरोधसे "खड्गविलास यंत्रालय" के स्वामी महाराजकुमार बाबू रामदीनसिंहजी ने अपने यंत्रालयमें उसको छाप कर प्रकाशित किया था। परन्तु उससे मुझे संतोष न हुआ मैंने अपने मित्र कुंअर जोधसिंह जी मेहता की कृपा से कृष्णगढ़ के दीवान राव-बहादुर श्यामसुन्दरलालजी द्वारा कृष्णगढ के कवीश्वर जयलालजी से नागरीदासजी के वृत्तांत मँगाए, उसके देखने पर मेरे हृदय में कई सन्देह हुए और उनको लिखकर उन सभों के उत्तर मँगाए और तब जीवनी लिखनी आरम्भ की, इसी बीच में पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्याजीने इनकी जीवनी पर एक लेख एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल में छपवाया, जिसे देख कर और भी उत्साह बढ़ा और यह जीवनी लिख आप लोगों के सन्मुख उपस्थित करता हूं तथा उक्त महाशयों को धन्यवाद देता हूं।

इसके पहिले संस्करणमें भ्रम से महाराज सावंतसिंह के स्थानपर महाराज जसवंतसिंह छप गया था।

रोमांच होता है, और जिसे भाषा का जयदेव कहने पर भी हृदय को संतोष नहीं होता । आहा ! हमारे प्यारे नागरीदासजी के प्रेम रंग रँगे चित्र का जो महाशय दर्शन करेंगे वे अनुरागरसमत्त झुके और डबडबाए नेत्रों में अलौकिकता की झलक से अवश्य मोहित से होजांयगे और जैसा महानुभाव भगवदीयों के दर्शन मात्र से अपने चित्त का विलक्षण परिवर्तन होता है उसका अनुभव प्राप्तकरसकेंगे । हम यहां उनके हृदय के चित्रस्वरूप इस पद को अपने प्रिय पाठकों को सुनाये विना आगे नहीं बढ़सक्ते--

"गावनि रोवनि मौनहिमें व्है मौनहि मांझ सराहनि । रोके ऊर्द्ध उसास मौन में यह दुख कठिन निबाहनि ॥ बेरे बिजाती निकट काठ से लगे रहैं हियदाहनि । नागर सुखसागर किन मेटौ यह अब दुख अवगाहनि ॥ १ ॥"

नागरीदास इस नाम के चार महात्मा हुए हैं । सबसे प्रथम श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु के शिष्य आगरा में रहते थे जिनकी कथा[1] "चौरासी वैष्णवों की वार्त्ता" में है और जिनके विषय में गोस्वामि श्रीहितहरिवंशजी के शिष्य श्रीध्रुवदासजी ने अपने ग्रन्थ "भक्तनामावली" में लिखा है ।

"नेही नागरिदास अति, जानत नेह की रीति
दिन दुलराई लाड़िली, लाल रंगीली प्रीति ॥ २ ॥"

ध्रुवदास जी ने सम्वत १६८६ में "श्री वृन्दावन सतक" और सम्वत १७०२ में "रहसि मंजरी" बनाई थी परंतु "भक्त नामावली" में सम्वत नहीं लिखा ।

इन्हीं बड़े नागरीदास जी के विषय में भारतेन्दु श्रीहरिश्चन्द्र ने अपने "उत्तरार्द्ध भक्तमाल" में लिखा है ।

"हिय गुप्त वियोगहि अनुभवत बड़े नागरीदास हे ।
बारवधू ढिग बसत सबै कछु पीयो खायो ॥
पै छनहूं हिय सों नहिं सो अनुभव बिसरायो ।

---

१ "इन नागरीदासजी का नाम चौरासी वैष्णवोंकी वार्ता में तथा दोसो बावन वैष्णवों की वार्ता में नहीं मिला । परन्तु ग्रंथकर्ता बाबूराधाकृष्ण दासजी के लिखने से लिखा ।

सुनतहिं बिट्ठल नाम भक्त मुख श्रवन मझारी ॥
प्रान तज्यो कहि अहो अजौं सुधि तिन्हैं हमारी ।
दरसनही दै हरि भक्त अपराध कुष्ट जन दुख दहे ॥"

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य का जन्म सम्वत १५३५ में हुआ था अतएव उसी के लगभग इनका भी काल है ।

दूसरे नागरीदास जी श्रीस्वामी हरिदासजी के शिष्य परंपरामें हुए हैं। मिस्टर ग्रोस साहब अपने "मथुरा" नामक ग्रन्थ में यह परंपरा यों लिखते हैं— श्री स्वामी हरिदास के शिष्य विट्ठलविपुलजी (जो कि उक्त स्वामी के चाचा थे) उनके बिहारिनिदास और उनके नागरीदासजी । सम्वत १५३७ में श्रीस्वामीजी लीला में प्राप्त हुए और उनकी गद्दी पर बिट्ठल विपुलजी विराजे । यदि २० वर्षकी अवधि महंती की मानली जाय तो श्री नागरीदासजीका सम्वत १५७७ के लगभग होता है । इनके विषय में ध्रुवदासजी लिखतेहैं ।

'नागरि अरु हरिदास मिलि, सेये नित हरिदास ।
वृन्दावन पायो दुहुनि, पूजी मन की आस ॥ १ ॥

तीसरे नागरीदास जी श्री गोस्वामी हितहरिवंशजी वा श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुके सम्प्रदाय में हुए हैं इनका काल भी १५५० सम्वत से १६०० के लगभग समझना चाहिए । इनके विषय में ध्रुवदास जी लिखते हैं:—

"रमन दास अद्भुत हुते, करतकबित्त सुढार ।
बात प्रेमकी सुनतही, छुटत नैन जलधार ॥ १ ॥
बौरोरस मैं फिरै सो, खोजत नेह की बात ।
आछे रस के बचन सुनि, वेगि बिबस ह्वै जात ॥ २ ॥
कहा कहौं मृदुल सुभाउ अति, सरस नागरीदास ।
बिहारी बिहारिनि को सुजस, गायो हरषि हुलास ॥ ३ ॥

इन दोनों नागरीदासजी के विषय में भारतेंदुजी लिखते हैं ।

"श्रीवृन्दावन के सूरससि, उभय नागरीदास जन ।
*निज गुरु श्रीहरिवंश कृष्णचैतन्य चरनरत ॥

---

* यहां भ्रम होता है ।

हरि सेवा में दृढ़, काम क्रोधादि दोष गत ।
अद्भुत पद बहु किए दीनजन दै रस पोषे ॥
प्रभु पद रति विस्तारि भक्त जन मन संतोषे ।
दृढ़ सखी भाव जिय मैं बसत सपनेहुं नहिं कहुं औरमन ।

चौथे नागरीदासजी हमारे ग्रन्थ के नायक महाराज सावंतसिंह कृष्णगढ़ ( राजपूताना ) नरेश उपनाम श्रीनागरीदासजी हैं । ये महाप्रभु वल्लभाचार्य संप्रदाय के शिष्य थे । इनके विषय में भारतेंदुजी लिखते हैं ।

"हरिप्रेममाल रस जाल के नागरिदास सुमेर भे ।
वल्लभ पथहिं दृढ़ाइ कृष्णगढ़ राजहिं छोड्यो ।
धन जन मान कुटुम्बहिं बाधक लखि मुख मोड्यो ॥
केवल अनुभव सिद्ध गुप्त रसचरित बखाने ।
हिय सँजोग उच्छलित और सपनेहुं नहिं जाने ।
करि कुटी रमण रेती बसत संपति भक्ति कुबेर भे ॥"

भाषा कवि चूडामणि श्री आनन्दघनजी से इनसे बड़ाही प्रेमथा । हमारे यहां एक अत्यंत प्राचीन चित्र है जिसमें नागरीदासजी और घनआनंदजी एक साथ बिराजते हैं । घनआनंदजी के विषयमें भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्रजी "सुजानशतक" की भूमिका में लिखते हैं:—

"आनंदघनजी जाति के कायस्थ थे और मुहम्मदशाह के मुन्सी थे गानविद्या और कविता दोनों विषयों में अति कुशलथे और सचे प्रेमीथे अंतसमय में घर छोड़ कर श्री वृन्दावन बास करतेथे । नादिरशाहने जब मथुरा लूटी तो उसी मार काट में ये भी मारे गए ।"

"शिवसिंह सरोज" में इनका समय सम्वत् १७१५ लिखाहै ।

ठीक यही बात नागरीदास जी के विषय में भी प्रसिद्ध है कि मथुराके कत्लेआममें कट गए परन्तु श्रीवृन्दावन वास न छोड़ा, परन्तु "वनजनप्रशंसक" ग्रन्थ में जिसे नागरीदासजी ने सम्वत १८१९ में बनाया वे लिखते हैं:—

"अष्टादश शतदश जु नव, सम्वत माघसुमास ।
वनजनप्रसंस ग्रन्थ यह, कियो नागरीदास ॥"

---

१ बाबू राधाकृष्ण दासजीके यहां

इससे प्रमाणित हुआ कि सम्बत १८१९ तक नागरीदासजी बर्तमान थे और सम्बत १८१४ [ सन् १७५७ ई० में ] शाह आलम सानी के समय में अहमद दुर्रानी ने मथुरामे कत्लेआम किया था। इस विषय में कवीश्वर जयलालजी ने मुझे* यह लिखा है:—

" कत्लेआम होने की खबर यहां कृष्णगढ़ रूपनगर में गुप्त आ पहुंचीथी, नागरीदासजी के छोटे भाई बहादुरसिंहजी और नागरीदास जी के पुत्र सरदारसिंहजी ने इनको अर्जी लिखीथी कि कुटुम्बयात्रा के लिये यहां अवश्य पधारें तब इसधोखा दई से यहां आगए थे फिर छ महीने रह कर पीछे वृन्दावन ही पधार गए ।

सं० १८२१ की भादव सुदी ३ को वृन्दाबनही में परलोक निवासी हुए वहां उनकी छतरी है जिसमें लेख भी है । "

चारों नागरीदास जी कविता करते थे और ये सब कविता ऐसी मिल जुल गई हैं कि कुछ पता नहीं लगता कि कौन कविता किसकी है परंतु यह भ्रम व्यर्थ है क्यों कि कृष्णगढके पुस्तकालयमें श्रीनागरीदासजीके वर्त्तमान समयके सर्व ग्रंथ उनके हस्ताक्षरोंसहित अद्यापि हाजिर है इससे इनकी वाणीका दूसरे नागरीदासजी-की वाणीमें मिल जुल जाना यह भ्रम व्यर्थ है और राजा नागरीदास जी की अलौकिक कविता में कुछ ऐसा माधुर्य और गूढ भाव भरा है कि थोड़ेही काल में इसकी झनूकार सहृदय मात्र के हृदयमें गूंजउठी और हिन्दीभाषा के कवियों के मुकुटमणि का स्थान इन्हों ने पाया ।

हमको खेद है " शिवसिंहसरोज " मे शिवसिंहजी ने इनका सम्वत बहुत ही अशुद्ध लिखा है। उन्हों ने सम्बत १६४८ लिखा है। यदि कहा जाय कि उन्होंने पहिले के नागरीदास में से किसी का वर्णन किया है तो यह इससे अशुद्ध ठहरता है कि निम्न लिखित सवैये जो " शिवसिंह सरोज " में उक्त कवि की कविता में लिखे गये हैं वे महाराज सावंतसिंह उपनाम नागरीदासजी के ग्रन्थो में पाये जाते हैं और यदि इनके समझे जायँ तो समय ठीक नहीं है, क्योंकि इनका जन्म सम्बत १७५६ का है—१०८ वर्ष का अन्तर है और इसी

---

* राधा कृष्णदासजीके नाम

विश्वास पर डाक्तर ग्रियर्सन साहब ने * इनके जन्म का समय सन् १५९१ ई० अपने ग्रन्थ The Modern Vernacular Literature of Hindustan में दिया है. पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्याजीने अपने लेख Antiquity of the poet Nagari Das* में इनके जन्म का समय ठीक दिया है परंतु शिवसिंह+ और डाक्तर ग्रिअर्सन के भ्रम को स्पष्ट नहीं दिखलाया हैं, क्योंकि यदि समय के अनुसार इन्हें छोड़ पहिले नागरीदासों में से कोई माने जांय तो कविता नहीं मिलती और यदि कविता के अनुसार ये माने जाय तो समय ठीक नहीं।

" भादो की कारी अंध्यारी निसा लखि बादर मंद फुही बरसावै। श्यामाजी अपनी ऊंची अटा पै छकी रस रीति मलारहि गावै॥ ता समै नागर के दृग दूरि तें चातिक स्वाति की बूंद यों पावै। पौन मया करि घूंघट टारै दया करि दामिनी दीप दिखावै॥ १॥ "

" देवन की औ रमापति की दोउ धाम की बेदन कौन बडाई। संखरु चक्र गदा पुनि पद्म सरूप चतुरभुज की अधिकाई॥ अमृतपान बिमानन बैठिबो नागर के जिय नेक न भाई। स्वर्ग बैकुंठ में होरी जो नाहीं तौ कोरी कहा लै करै ठकुराई॥ २॥ "

" गांस गंसोलिये बातें छिपाइये इश्क ना गाईये गाईये होलियां। गेंद बहाने न बीरा चलाइए सूंघे गुलाल उड़ाइये झोलियां॥ लोग बुरे चतुरे लखि पावैंगे दाबे रहौ दिल प्रीति कलोलियां॥ पाइ परौं जू डरौ टुक नागर हाइ करौं जिनि बोलियां ठोलियां॥ ३॥

इन कविताओं में कुछ पाठांतर नागरीदास जी के ग्रन्थों से हैं जिसे पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्याजी ने लिखा है उसका आशय नीचे प्रकाशित करते हैं।

" हमारी पास इनके ग्रन्थों के संग्रह में नम्बर ३८ पत्र १९२ में एक अ-

---

*डाक्तर ग्रिअर्सन का The Modern Vernacular Literature of Hindustan नम्बर ९५ पृष्ट ६३८ और नंबर ३३ पृष्ट १३८ देखो। *Journal Asiatic Society Of Bengal Vol LXVI Part 1 No 1—1897 Page 63 देखो। +शिवसिंह सरोज—नं० ११ पृष्ट १७२ देखो

धुरा ग्रन्थ " वर्षा के कवित्त " है जिसमें केवल ८ कवित्त हैं, उसका सातवां कवित्त यह है इसमें बड़ा पाठांतर यही है कि शिवसिंह ने जहां नागर लिखा है वहां इसमें ' मोहन ' है:—

भादौं की कारी अंध्यारी निसा झुकि बादर मन्द फुही बरसावै । श्यामा जू आपनी ऊंची अटा पै छकी रस रीत मलारहि गावै ॥ ता समै मोहन की दृग दूरि ते आतुर रूप ( रूप ) की भीष यों पावै । पौन मया करि घूंघट टारै दया करि दामिनि दीप दिखावै ॥ ७ ॥

उसी संग्रह में नम्बर ३९ पत्र १८४ में " होरी के कवित्त " नामक ग्रन्थ है जिसमें १९ कवित्त हैं, उसका १९ वां कवित्त यह है, इसमें भी बड़ा अंतर यही है कि नागर के स्थान पर भावते लिखा है ।

गास गसीलीये बातैं छिपाइये इश्क न गाइये गाइये होलियां । गेंद बहाने न बीरा चलाइये सूधे गुलाल चलाइये झोलियां ॥ लोग बुरे चतुरे लखि पावैंगे दाबे रहो दिल प्रीति कलोलियां । पाय परौं जु डरो टुक ( टुक ) भावते हाय करो मति बोलियां ठोलियां ॥ १९ ॥

उसी संग्रह में नम्बर ४१ पत्र २९६ " फाग विहार " नामक ग्रन्थ है उसमें यह सवैया ८ वां है ॥

देवन केरु रमापति के दोऊ धाम की देवनि कोनी बड़ाई । संखरु चक्र गदा अरु पद्म सरूप चतुर्भुज की अधिकाई ॥ अमृतपान बिमानन बैठिबो जेती कही तेती एक न भाई । स्वर्ग बैकुंठ में होरी जो नाही तौ कोरी कहा लै करै ठकुराई ॥ ८ ॥

कविता में नागरि, नागर, नागरीदास और नागरिया नाम रखते थे ।

इनका कुल सदा से वीर वैष्णव चला आता है । इनके हृदय में राजकाज में फँसे रहने पर भी सदा उज्वल प्रेमशिखा प्रदीप्त थी और श्रीवृन्दावन के लिये तरसा करते थे जैसा कि उनके पदों से झलकता है ।

" ज्यों ज्यों इत देखियत मूरख विमुख लोग त्यों त्यों सुखरासी ब्रजबासी सुधि आवै है । खारे जल छीलर दुखारे अंधकूपचितै कालिन्दीके काज महामन ललचावै है ॥ जैसी अब बीतत सु कहत न आवै बैन नागर न चैन परै प्रान अ-

कुलावे है । थोहर पलास देखि देखि कै बबूल बुरे हाय हरे हरे वे तमाल सुधि आवे है ॥ ”

कृष्णगढ राज्यका ७२४ मील मुरब्बा है । सन १८८१ ई० में इसमें ११२६३३ मनुष्योंकी वस्ती थी, जिनमें ५९०९८ पुरुष और ९३५३५ स्त्रियां, ये लोग ३ नगर और २१० गावोंमें रहते हैं, और सब २४९२८ घर हैं; जिनमें ९७८४६ हिन्दू ८४९२ मुसल्मान और ६२९५ जैन रहतेथे । इस राज्यमें कृष्ण-गढ (राजधानी) रूपनगर और सरवार ये तीन नगर हैं ।

इस राज्यको जोधपुरके महाराज उदैसिंहके द्वितीय पुत्र कृष्णसिंहने पैतृक अधिकारको छोडकर अब जिस देशमें कृष्णगढराज्य है उसे विजय किया.

कृष्णगढ़ नगर बहुतही सुन्दर गूंदोलाव नामकतालाव के किनारे पर बसा है, जिसके बीचमें महाराजका बाग मुहकमविलास बना हुआ है, नगरमें श्रीमदन मोहनजी श्रीब्रजराजजी श्रीद्वारकानाथजी श्रीगोवर्द्धननाथजी तथा मोहनलालजी सुखनिधानजी नरसिंहजीका मंदिरहैं और जैनके मंदिरोंमेंभी चिन्तामणिजीका मंदिर मकराणेके पत्थरका बहुत अच्छाहै । कृष्णगढसे १२ मीलपर सलीमाबादमें एक नि-म्बार्क संप्रदायका मन्दिर है जिसमें उस प्रान्तके बहुतसे हिन्दू यात्री दर्शनके लिए आया करते हैं और निम्बार्कोंमें यहगद्दी सबसेबडीहै जैसे कि वल्लभकुल संप्रदायमें श्रीनाथद्वाराकी गद्दीहै और सलीमाबादमें ठाकुरजी विराजतेहैं जिनका नाम श्रीराधामाधवजी है यह स्वरूप कविचूड़ामणि जयदेवजीके मस्तकके हैं मूर्ति अति विसाल मनोहर है । और श्रीसर्वेश्वरजीका स्वरूपभी वहीं विराजताहै जो कि सनकादिकोंके सेव्य है ऐसी प्रसिद्ध ख्याति है ।* और सलेमाबादग्रामके दक्षिण दिशामें पंडित श्रीधरकी १ छोटीसी वाटिकाहै जिसमें हनुमानजीकी मूर्ति अति विसाल है. इस लघु ग्रामका नाम बहुत देशांतरोंमें फैला है कारण पं०श्रीधरके ज्ञा० सा० छा० की पुस्तकें या पंचांगों मात्रमें सर्वत्र इस ग्रामका नाम लिखाजाता है इस्से

कृष्णगढ राज्यके स्थापनाके विषयमें कृष्णगढ दर्बारके कवेश्वर जयलालजी ने मेरे प्रश्नके उत्तरमें यह लिखा है:—

---

* ( Dr Hunter's Imperial Gazetteer of India Volume VIII Page 223 )

" सम्वत १६५४ में जोधपुरसे प्रथक राज्य, प्रथम तो 'हिंडोण' § में हुआ और फिर 'सेठोलाव' में जो कि कृष्णगढ़से पश्चिम तरफ २ मीलके लगभग दूरी पर है वहां हुआ और महाराज श्रीकृष्णसिंहजीने सम्वत १६६८ में कृष्णगढ बसाया "

ये महाराज कृष्णसिंहजी श्रीवल्लभकुलके अनुयायी वैष्णव थे और तबसे बराबर यह कुल उन्हींका अनुयायी चला आता है इस विषयके प्रश्णोत्तरमें उक्त कवीश्वरजी लिखते हैः—

" यह कृष्णगढकी राजधानी नियत करने वाले जो महाराज कृष्णसिंहजी थे जबहीसे वल्लभाचार्यजीके अनुयायी हैं० और उनके मस्तकपर दो स्वरूप श्री नृत्यगोपालजीके विराजते थे, वे दोनों स्वरूप अद्यापि यहां विराजते हैं, जिनमें एक स्वरूप श्रीदाऊजीका और दूसरा श्रीकृष्णजीका है, और महाराज श्रीकृष्णसिंहजी नरवरगढके कछवाहा राजा आसकरणजी + जो श्रीवल्लभाचार्यजीके अनुयायी महा वैष्णव थे और जिनका प्रसंग वैष्णवोंकी वार्तामें है जिनके भानजे थे।"

---

§ हिंडोण–पहिले अच्छा नगर था महाराष्ट्रों ने उसे नष्टकर दिया प्राचीन प्राचीर टूटी फूटी पडी है। अब यह जयपुर राज्यान्तर्गत है।

( Dr. Hunter's Imperial Gazetteer Vol. V Page 414 )

+ नरवरगढके कछवाहा राजा आसकरणजी—डाक्तर ग्रिअर्सन लिखते हैं. Askaran Das, the Kachhwaha Rajput of Narwargarh, in Gwaliyar Fl. C. 1550 A. D.

Rag; He was son of King Bhim Singh See Tod II 392 Calc. Ch. II 390—The Modern Literature of Hindustan page 31 No. 71

यही शिव सिंहभी सरोजमें लिखते हैं। ( पत्र ६ न० ३७ )

यह गोस्वामि श्रीविट्ठलनाथजीके शिष्य थे, इनका चरित्र "दो सौ बावन वैष्णवकी वार्ता" में ( नं० २०२ ) जो लिखा है हम उनका संक्षेप यहां देते हैं:–

इन्हें रागपर बडी आसक्तिथी, देश देशान्तरके गवैयोंका आदर सत्कार करते थे. एक समय तानसेन इनके यहां आए और उन्होंने " कुंवर बैठे प्यारीके

महाराज रूपसिंहजीने 'रूपनगर' बसाया और उसे राजधानी बनाया इस विषयमें उक्त कवीश्वर जी लिखते हैं.—

"सम्वत १६६८ में महाराज श्रीकृष्णसिंहजीने कृष्णगढ बसाया और राजधानी नियत की फिर सम्वत् १७०० में महाराज श्रीरूपसिंहजीने रूपनगरको राजधानीका मुख्य स्थान नियत कियाथा जबसे वहीं रहतेथे फिर महाराज नागरी-

---

संग अंग अंग भरे रंग बलि बलि बलि त्रिभंग युवतिन मनभाई" गाया। राजा प्रेमसे मत्त हो मूर्च्छित होगए। चैतन्य होनेपर पूछा यह किसका पद है? तानसेनने बताया गोकुलके गोसाईं विट्ठलनाथजी के शिष्य गोविन्दस्वामीका। राजा तानसेनको दो सहस्र रुपैया देने लगे पर उन्होंने नहीं लिया कहामें रुपयेका भूखा नहीं, गुण ग्राहक ढूंढता हूं सो जैसा सुनाथा वैसा पाया" तानसेनको संग ले राजा गोकुल आए और श्रीगोशांईजीके सेवक हुए श्रीगोशांईजीकी आज्ञासे गोविन्दस्वामीजीने रमणरेती पर लिवाजाकर राजाको सेवाकी रीति तथा कीर्तन आदि सिखाये। तदनन्तर राजा श्रीगुशांईजीकी आज्ञा ले और श्रीमदनमोहनजी ठाकुरको सेवाके लिये पधरा अपने देश आये एक समय दक्षिण देशका कोई राजा इनपर चढआया, इन्होंने सेवामें विघ्न न पडै इसलिये विचार किया कि राज्य इसे सौंप आप गोकुल चल बसें. परंतु स्वप्नमें आज्ञा हुई कि मानसी सेवा कर और शत्रुसे लड, ऐसाही किया और प्रभुकी कृपासे जयी हुए। एक दिन जाडेकी ऋतुमें राजा चार घडीके तडके सेवामें नहाये, वहां चार चोर छिपे थे, उन सभोंने राजाको तीर मारी जो पीठको छेद बाहर निकलगई, भितरियोंने पट्टी बांध दी, परंतु राजा सेवामें ऐसा देहाध्यास भूलगए थे कि कुछ खबरही न हुई। जब सेवासे निकले पट्टी बँधी देखी लोगोंने सब वृत्त कहा, राजाने सोचा कि सब अनर्थ का मूल धन है, राज अपने भतीजेको दे ठाकुरजीका वैभव श्रीगुशाईंजीके यहां भेज. एक झांपीमें श्रीठाकुरजीको केवल गुंजा मोरपंख धरा अपने साथ ले श्रीगोकुल चले आये, और विरक्त भावसे रहने और लीलाका अनुभव करने लगे।

यह वार्ता श्रीगोस्वामी गोकुलनाथजीकी बनाई बताते हैं जिनका जन्म सम्वत १६०८ मि० माघ शु० ७ का है।

दासजीके एक पीढीपीछे अर्थात् सम्वत् १८२३ के पीछे कृष्णगढहीको पीछा राजधानीका मुख्य स्थान नियत किया सो अद्यापि है। और उक्त महाराजको कृष्णगढाधिपति इस कारणसे लिखते हैं कि अब प्रसिद्ध राजधानीका स्थान कृष्णगढही है नहीं तब ये तो रूपनगरकेही राजा थे. ॥ ”

नागरीदासजी किन वल्लभकुल गोस्वामीके शिष्य थे इसके उत्तरमें उक्त कविराजाजी लिखते हैं:—

“ महाराज श्रीकृष्णसिंहजीके पौत्र रूपसिंहजी थे वे श्रीवल्लभाचार्यजी*के पुत्र विट्ठलनाथजी÷ जिनके पुत्र टीकैत ( बडे ) श्रीगिरिधरजी† थे जिनके तृतीय पुत्र दीक्षितजी श्रीगोपीनाथजी‡ थे जिनके शिष्य हुए थे उन्हींके पास ब्रह्म संबंध भी लिया था और श्रीकल्याणरायजीका स्वरूप दीक्षितजी श्रीगोपीनाथजीने इन ( रूपसिंहजी ) के मस्तकपर पधराया था वह स्वरूप अद्यापि यहां विराजता है । और इन्हीं ( रूपसिंहजीने ) । श्रीवल्लभाचार्यजीके उस चित्रको जो बादशाह अकबरने बनवाया था जो बादशाह शाहजहांसे मांगके ले लिया था। वह चित्र अद्यापि यहां है और श्रीकल्याणरायजीके समीप सेवामें बिराजता है। पूर्वोक्त श्रीनृत्यगोपालजीके दो स्वरूप थे जिनमें एक स्वरूप बडा श्रीदाऊजीका सो तो श्रीकल्याणरायजीके गोदमेंही बिराजता है और दूसरा छोटा स्वरूप श्रीकृष्णजीकासो वर्तमान महाराजाधिराज महाराज श्रीशार्दूलसिंहजी बहादुर जी. सी. आई. ई. के अनुज महाराज दीक्षितजी श्रीजवानसिंहजीके मस्तकपर विराजता है।”

“जो कि महाराज श्रीरूपसिंहजीके गुरू गोस्वामी दीक्षितजी श्रीगोपीनाथजी थे जिनके प्रपोत्र गोस्वामी श्रीरणछोडजी+ नागरीदासजीके गुरू थे इनका स्थान कोटेमें श्रीबडे मथुरेशजीका है और श्रीरूपसिंहजीसे लेकर अबतक उसी

---

* श्रीवल्लभाचार्य—जन्म सम्वत १५३५ मि० वैशाख कृष्ण ११

÷ श्रीविट्ठलनाथजी—जन्म सम्वत १५७२ मि० पौष कृष्ण ९

† श्रीगिरिधरजी टीकैत—जन्म सं० १५९७ कातिक ब० १२

‡ श्रीगोपीनाथजी—जन्म संवत १६३४ माघ कृष्ण ६

+ गोस्वामी श्रीरणछोडजी—जन्म सम्वत १७७७ ज्येष्ट कृष्ण ५

स्थानके शिष्य होते हैं और उनका मन्दिर कृष्णगढमेंभी श्रीमदनमोहनजीका है जिनके भेट यहांकी तरफसे ग्रामभी हैं और लगान सहित दस सहसके लगभगकी जीविका है.

नागरीदासजीके सेव्य ठाकुरके विषयमें उक्त कवीश्वरजी लिखते हैं:—

"नागरीदासजी स्वयं पूर्वोक्त श्रीकल्याणरायजीकी सेवामें उपस्थित रहते थे और प्रदेश जाते तब श्रीनृत्यगोपालजीका स्वरूप साथमें रखते थे। वृन्दावनमें रहे तबभी श्रीनृत्यगोपालजीकीही सेवाकी।"

नागरीदासजीका जन्म सम्वत १७५६ पौष कृष्ण १२ को हुआ। इनके पिताका नाम महाराज श्रीराजसिंह था। इनका विवाह भानगढ नामक नगरके राजा राजावत (राजावत कछवाहोंकी एक शाखा है) यशवंतसिंहजीकी कन्यासे सम्वत १७७७ के ज्येष्ठ सुदी ९ को हुआ था। इन्हें ४ संतति हुई। प्रथम पुत्र जिनका जन्म सम्वत १७८३ में हुआ था बाल्यावस्थाहीमें परलोक गामी हुए। दूसरे कुमार सरदारसिंह जिनका जन्म सम्वत १७८७ के भाद्रपद शुक्ल २ को हुआ था। यही इनके उत्तराधिकारी हुए। पहिली कन्या किशोर कुंवरिजीका विवाह बूंदीके हाडा दीपसिंहजीसे हुआ था और दूसरीका नाम गोपाल कुंवरिजी था। इनका संबंध जयपुरके महाराज श्रीमाधोसिंहजीसे निश्चय हुआ था, परन्तु परम वज्र हृदय विधातासे यह सुखमय संबंध न देखा गया. उक्त महाराज विवाहके पहिलेही सुरधाम गामी हुए। इनके भ्राता महाराज सरदारसिंहजीने इनका विवाह दूसरे कहीं करनेका उद्योग किया, परन्तु जिस सती रमणी रत्नके शरीरमें परम भगवदीय महानुभाव नागरीदासजीका पवित्र रक्त संचालित होता था, जिसने पवित्र कुलकी शोभा वढायी थी, वह क्या कभी सांसारिक सुखोंके लोभमें फंसकर अपने परम पवित्र सतीत्व धर्मको तिलांजलि दे सक्ती थी? प्रातस्मरणीया गोपालकुंवरिजीने दृढता पूर्वक दूसरा संबंध अस्वीकार किया और कहा जो होना था हो चुका क्या एक शरीर दो पतिको अर्पण हो सकता है? और संसारके सुखोंसे मुख मोड भगवच्चरणारविंदमें मन लगाया अपने सिरपर एक स्वरूप श्रीठाकुरजीका पधराया जिनका नाम श्रीरामलालाजी रक्खा और इन्हींके प्रेममें मगन रहकर अपने इस क्षणस्थायी जीवनको परम संतोष पूर्वक व्यतीत किया। धन्य राजपूत कुल कमलिनी! धन्य सतीत्व मान संवर्धिनि!! धन्य नागरीदास यशोविस्तारि

नि !!! धन्य आज कलिकी कुल बालाओंको इनका उदाहरण लेना चाहिये, उन्हें हृदयकी आंखोंसे देखना चाहिये सती साध्वी पतिव्रताओंके लिये पति कैसा आदरणीय देवता है. उन्हें चाहिये कि गोपाल कुंवरिके आदर्शमय चरित्रको रात्रि दिवस अपने गलेका हार बनावें । कहां हैं गोपाल कुंवरि और कहां गए महाराज नागरीदास ? परन्तु यह उनका उज्वज्ल चरित्र आजतक यश फैला रहा है और अनन्त कालतक ऐसेही महानुभावोंके चरित्र भारतवर्ष तथा क्षत्रिय कुलका गौरव सारे संसारमें स्थिर रक्खेंगे । कहिये संसारमें कितनेही इनके ऐसे तथा इनसे बढ-कर लोग जन्मे और कालके कराल गालमें बिलीयमान हुए परन्तु किसका नाम कौन लेता है ! किसका चिन्ह पृथ्वीपर वर्तमान है ? परन्तु हां.—

कीर्तिर्यस्य सजीवति ।

महाराजा सावंतसिंह संस्कृत, फारसी अच्छी पढे थे भाषा पिंगल और डिं-गलके तो पण्डितही थे, राग, चित्र और शस्त्र विद्यामें परम प्रवीण थे । एक दिन जब कि ये श्रीवृन्दावनसे घर आए थे इनके भ्रातृपुत्र कुमार बिरदसिंहजीने कहा कि 'मैंने सुना है कि आप शिकार अच्छा खेलते हैं मुझेभी दिखाइए, आपने उत्तर दिया कि "अब मुझे शिकारसे क्या प्रयोजन परन्तु तुम कहते हो तो दिखाऊंगा एक हिरनके पीछे आपने घोडा डाला और थोडी दूर जाते जातेही उसकी सींगमें अपनी कुबडीको लगाकर उसे रोक रक्खा । चित्रमें ऐसे निपुण थे कि कई एक भाव प्रिया प्रीतमके चित्रका आपने नयाही निकालाथा । और विद्याका परिचय तो उनके काव्योंहीसे मिलता है ।

ये परमशूरवीर थे और बचपनहीसे परम निर्भय थे । संवत १७६६ में जब कि ये केवल १० ही वर्षके थे, एक दिन दिल्लीमें राज्यदर्बारसे लौटती समय एक मस्त हाथी जो कि महावतोंके काबूसे बाहर था, इनपर टूटा, महावत लोग लाख पुकारते रहे इधर मत आओ भागो, परंतु वीर बालकने पीठ देना सीखाही न था, इन्होंने हाथीसे मुठभेड होतेही एक हाथ तलवारका ऐसा मारा कि वह चु-पचाप दुम दबाकर पीछे भागा और आप अपने घर आये, उससमयका चित्र कृ-ष्णगढ दर्बारमें है ।

संवत १७६९ में जब कि इनकी अवस्था केवल १३ वर्षकी थी इन्होंने अ-

अकेले ही बूंदीके हाडा जैतसिंहको मारा था जिसमें इन्हें कुछ घावभी लगे थे।

इसी संवतमें दिल्लीके बादशाह बहादुरशाह मरे और गद्दीके लिये जहांदार-शाह और फर्रुखसियरसे लडाई हुई और फर्रुखसियरने विजयी होकर दिल्लीके तखतपर अधिकार किया इस लडाईका वर्णन श्रीधरकविने बहुत सुंदर लिखा है। यह श्रीधर कवि जिसका नाम मुरलीधरभी था प्रयागका रहनेवाला था इसने इसी "जंगनामा" में लिखा है।

"श्रीधर मुरलीधर उरुफ, द्विजवर बसत प्रयाग।
रुचिर कथा यह शाहिकी, बढ्यो कथन अनुराग॥

यह शृंगार और वीर रस दोनोही कविता सुंदर करता था। उस समयके अ-मीर उमराओंका बहुत कुछ गुणानुवाद किया है और पारितोषिक पाया है जिसने कुछ दिया नहीं है उसकी ऐसी हजो की है कि अश्लीलताके कारण वह कविता प्रकाशित करने योग्य नहीं हैं॥

शिवसिंहने अपने ग्रंथमें चार श्रीधर लिखे हैं। जिनमेंसे एकका नाम राजा सुब्बासिंह चौहान था और ओयल जिला खीरीके रहनेवाले थे। इनका समय सं-वत १८७४ दिया है जिन्होंने "विद्वन्मोद तिरंगिनी" नामक साहित्य ग्रंथ बनाया दूसरे श्रीधर राजपुताना वाले इनका समय १६९० दिया है जिन्होंने "भवानी छंद" नाम एक दुर्गाकी कथाका ग्रंथ बनाया है। शेष दोनो श्रीधर निश्चय एकही हैं क्योंकि दोनोकी कविता जो दी है वह श्रीधर उर्फ मुरलीधर कविहीकी है। शिव-सिंहने एक श्रीधर (जिनके नाममें मुरलीधर नहीं लगाया है) का समय १७८९ संवत दिया है और लिखा है कि "शृंगाररसमें सरस कवित्त हैं" और कवित्त इनका यह दिया है:—

"श्रीधर भावत प्यारो प्रवीनके रंग रंगे रथ साजन लागे।
अंग अनंग तरंगनिसों सब आपने आपने काजन लागे॥ १॥
किंकिनी पायल पैजनियां बिछिया घुघरू घन गाजन लागे।
मानो मनोज महीपतिके दरबार मरातिबे बाजन लागे॥ २॥

यह कविता श्रीधर उर्फ मुरलीधरके ग्रंथमें मुझे ढूंढनेपर मिली, यह प्राचीन हस्तलिखीत पुस्तकके ७७ पत्रेमें ३१ अंकका कवित्त है और प्रथमके एक पादमें कुछ पाठांतर है। हस्त लिखित पुस्तकमें यह पाठ है:—

श्रीधर भावतो प्यारी प्रवीनसों रंग भरे रति साजन लागे । हम इस कवित्तके ऊपर नीचेका एक एक कवित्त उद्धृत कर देते हैं:—

" ठाढोही सादेही साजसौं आजु उछाह भरी मद सौतिको खूंदिकै । आंचर खूंटि खुल्यो अचका निकसे कुच कोरक कंजसी दूंदिकै ॥ छाति छपावति भाव भरी तकि श्रीधर लाल रहे रसगूंदिकै । हेरि इते दृग फेरि गई हँसि घूंघटके पटसो मुख मूंदिकै ॥ ३० ॥

मेरे जवै आवतहौ हंसत हंसावतहौ रीझत रिझावतहौ रंगनि रंगतहौ ॥ और कैं पधारतहौ ताहिउर धारतहौ छलनि सुधारतहौ प्रेमसों पगतहौ ॥ श्रीधर अहिरा कछु जानत न पीरा सदा खीरा बार हीरा मीले जगत ठगतहौ । प्रीतकी प्रतीति होति देखें रीति रावरेकी नेक भीति ओट है अमीतसे लगतहौ ॥ ३२ ॥

समय तो ठीक मिलताही है क्योंकि संवत १७६९ में इन्होंने जंगनामा बनाया यथा:—

" संवतसो सत्रह सै उन्हत्तरि पूसपून्यो बुध तहीं ।
सनसो अग्यारह तेतिसा माहे मोहर्रम चौदहीं" । १ ।
अरू पातसाही माहे आजर वाएसी श्रीधर कही ।
सफजंगकी साएति सधी साहेबजहां कीनो सही ॥ २ ॥

अब यहां हिजरी सनमें भ्रम है क्योंकि फर्रूखसियरकी जहांदारशाहसे लडाई सन् ११२४ में हुई है यह भूल लेखककी प्रतीत होती है ।

दूसरे श्रीधर मुरलीधरका संवत शिवसिंहने नहीं दिया है. लिखा " कवि विनोद नाम पिंगल बनाया" और कवि विनोद पिंगलके ये दोहे उठाये हैं:—

" श्रीधर मुरलीधर सुकवि मानि महा मन मोद ।
कवि विनोद मय यह कियो उत्तम छंद विनोद । १ ।
श्रीधर मुरलीधर कियो निज मतिके अनुमान ।
कवि विनोद पिंगल सुखद रसिकनके मन मान" । २ ।

यही भ्रम डाक्तर ग्रियर्सनकोभी हुआ है ।

अस्तु यह तो निश्चय है कि यह दोनों एकही श्रीधरथे ।

सम्भव है कि इस संवत् १७६९ की लडाई में महाराज सावंत सिंहजीभी रहे हों क्योंकि कृष्णगढसे आये हुए इतिवृत्तमें लिखा है कि " इन साहिबोंपर

बादशाह फर्रूखसियरकी बहुत मेहरबानीथी इन साहबोंके पास घोडे फिरवाके बहुत देखता" और इधर श्रीधर अपने " जंगनामा में लिखते हैं कि:—

" तब मीर जुमिला संग व्है। द्वै लाख स्वार उमंग है ॥
यह बंक कोतल फौज है। सावंत उरमें ओज है ॥"

परन्तु अधिक सम्भव यही है कि कवि ने सावंत शब्द वीरके लिए लिखा हो, क्योंकि प्रायः ऐसाही किया है जैसेः—

" समसेर सरकि सिरोहकी सावंत ए दोऊ लरे।
घनघाइ खाइ अंगाइ अंगनि अटल व्है दोऊ अरे॥'

सम्वत १७७१ में जबकि आप १५ वर्षकेथे, जलूस महफिल हो रहीथी. उस समय इनके पिता महाराज श्रीराजसिंहजी कोटाके महाराज श्रीभीमसिंहजी, सोपर के महाराज श्रीराजसिंहजी, और महाराज भदोरिया श्रीगोपालसिंहजी प्रभृति बैठे थे। उस समय अकस्मात इनके जामाके दामनमें एक विषधर सर्प आगया आपने इसकी किसीकोभी खबर न होने दी, चुपचाप उसके फनको पकडकर मसल दिया और किसी बहानेसे उठकर मृतक सर्प बाहर फैंक आए इस भेदको उनके खिदमतगारोंके अतिरिक्त और किसीनेभी न जाना।

सम्वत १७७४ में जब किये १८ वर्षके थे थूणकी गढी को फतह किया। थूणकी गढीके स्वामी जाट बदनसिंहको पराजित करनेके लिये फर्रुखसियरने नव्वाब मुजफ्फरखां* जयपुरके महाराज जयसिंह, और कोटाके महाराज भीमसिंहको भेजा था, थूणकी गढी जो मेवासामें है वहां लडाई हो रहीथी, परन्तु गढी कब्जेमें नहीं आती थी क्योंकि जगह बेढंगथी चढनेका रास्ता न था, तब नव्वाब नोलादखां खानदौरा+ बख्शीके भाई ने अर्ज करके इन्हें भेजवाया, यह वहां

---

* नवाब मुजफ्फरखांकी बीरताके विषयमें श्रीधर लिखते हैं:—
" सज्यो मुजफ्फरखां फतूह कर। समसामुद्दौला सुबीर बर "

+ खानदौरा—पूर्व नाम ख्वाजा मुहम्मद आसिन, उसके पीछें अरफखां तत्पश्चात शमसामुद्दौला, अमीरुल्उमरा खानदौरा बहादुर मनसूरजंगकी पदवी मिली इनके पिता ख्वाजः कासिमनकश बंदीथे। खानदौरा नादिरशाहकी लडाईमें २३ फर्वरी सन १७३९ में जखमी हुए और चारही दिन पीछे २७ तारीखको ६८ वर्षकी अवस्थामें मरे।

पहुंचतेही बख्तर पहिरे हुए, गोलियोंकी वर्षाके बीच हाथीपर सवार घुस पडे और गढीके फाटक पर पहुंच हाथियोंसे फाटक तोडवा गढी भेल दी पीछेसे सारी फौज भी आ पहुंची यह दिन सम्वत १७७४ बैशाष बदी ६ था। इस समय एक गोली इनके शरीरसे भिडती हुई निकल गईथी परंतु कुछ गहरी चोट नहीं लगी; वहांसे पालकीमें सवार हो डेरे पर आए, उस समय नवाब और महाराज जयसिंह उनके डेरे पर आए और कहा कि यह आपहीका काम था, और नवाबने बादशाहके पास अर्जी भेजी उसमें फतह इन्हीके नाम लिखी। बादशाहने प्रसन्न हो बडीही प्रशंसाकी और खिलत शमसेर आदि भेजा।

सम्मत१७७६बीस वर्षकी अवस्थामें अकेलेही सिंहका शिकार किया जिसका चित्र कृष्णगढ दर्बारमें है।

सम्वत १७९३ में दक्षिणी मल्हार राव गुजरातसे मारवाड आया। इन्होंने उसे खिरणी ( कर ) नहीं दिया, कुछ लडाई भी हुई। अन्तमें बाजीराव पेशवाने मल्हार रावसे कहाः-

"बाजेराव मल्हारसौं कहतो गयो कथाह।
और राव सब राव है सांवत बात अथाह॥"

यह दोहा उस देशमें अत्यन्त प्रसिद्ध है।

सम्वत १८०४ में जब कि मुहम्मदशाह दिल्लीके तख्त पर बैठ चुके थे, पठानोंने दिल्ली पर चढाईकी, उस समय मुहम्मद शाहने यहां भी फर्मान भेजा था, इनके पिता श्रीमहाराज राजसिंहजी जानेकोप्रस्तुत हुए. परन्तु इन्होंने कहा कि आप बहुतेरी लडाइयें लड चुकेहैं इसपर हमें जाने दीजिये, निदान पिताकी आज्ञासे ये अपने पुत्र सरदारसिंहके साथ दिल्लीगए. परंतु बादशाहने इन्हें मुहिम

---

See Journal Asiatic Society Bengal Part 1 No. I Vol. LXVI page 57.

यह खानदौरा फर्रुखसियरके भी सर्दारोंमें था। श्रीधर लिखते हैं:

"सज्यो खानदौरा सुबहादुर। समसामुद्दौला सिपाहपुर।
उतहि उनको खानदौरा। इतहि सजि यह खानदौरा॥
संग केतिक खानदौरा। मनहु उनको खान दौरा॥ १३॥

ऐसेही अनेक स्थानपर लिखा है।

पर नहीं भेजा, अपनेही पास रक्खा विदित होता है कि इसी समयसे इनसे आनँदघनजीसे मित्रता हुई। सम्वत १८०५ में मुहम्मद शाह मर गए और उसी समय इनकेपिता महाराज राजसिंहजीकाभी परलोक हुआ और सम्वत १८०५ वैशाख सुदी ५ को ये गद्दीपर बैठे।

इस घटनाको एक वर्षभी न बीता था. ये इधर दिल्ली आए थे उधर इनके छोटे भाई बहादुरसिंहजीने राज्यपर अधिकार कर लिया। दिल्लीकी बादशाहतमें तो कुछ जोर रहही नहीं गया था, और मरहठोंका चढता समय था. उन लोगोंके पास सहायता लेनेके लिये यह भी गए, रास्तेमें अपने पुत्र सरदारसिंहको घासेडा नगरजो बडगूजर जातिके राजपूतोंकी राजधानी था और जहां सरदारसिंहजी ब्याहेथे, भेज दिया और आप मरहठोंके पास गये। उनके साथ आप कुमाऊंकी मुहिम्मपर गये।

कमाऊंकी लडाई संवत १८०८ में हुई थीं; वहीं 'जुगलभक्तिविनोद' ग्रंथ बनाया था।

"अष्टादश सत अष्ट पुनि, संवत माघ सुमास। जुगल भक्त गुन ग्रंथ यह, कियो नागरीदास॥ निकट कमाऊं पर्वतनि, विकट विटपकी भीर। तहां ग्रंथ रचना भई, नदी कौसिकी तीर॥"

वहांकी लूटके विषयमें लिखते हैं:—

"लाज छांडि मनकौं भजौ, दीजै मनकौ छूट।
कम्माऊंकी मुहिम मैं, जैसें लूटा लूट॥"

इसीके पीछे ही आपने "तीर्थानन्द ग्रंथ" बनाया है और उसमें उसी सिलसिलेसे मुकाम भी दिये हैं, जैसे रूपनगरसे सांभर गये, वहां देवयानीका वर्णन किया है, जैपुरमें गलता ( गालवाश्रम ) का वर्णन किया है फिर वृन्दावन आए वहांसे अपने पुत्रको घासेडामें भेज आप मरहठोंके पास गये. फिर उनकेसाथ कुमाऊं। मरहठोंको अपने साथ लेकर फिर श्रीवृंदावन आए; आप तो वहीं रहगये और अपने पुत्रको मरहठोंके साथ लडनेको भेज दिया, इन्हें वृंदावनमें स्वप्नमें आज्ञा हुई थी कि तुम यहीं निवास करो राज्य तुह्मारे लडकेको मिलेगा, निदान बहुत लडाईके पीछे संवत १८१३ में बहादुरसिंहजी और सरदार सिंहजीने राज्यको दो भाग करके बांट लिया।

संवत १८१३ के फाल्गुणमें इन्होंने कुटुंब यात्राके निमित्त प्रस्थान किया सुनते हैं कि उस समय इनके साथ आनंदघनजीभी थे परंतु जयपुरहीसे लौट आये, और इस भ्रातृ विरोधने कुछ ऐसा असर इनके हृदयपर किया कि फिर इन्होंने राज्यगद्दीपर पैर न रक्खा और संवत १८१४ द्वितीय आश्विन शुक्ल १० को अपने कुंवर सरदार सिंहजीको युवराज बना आप आश्विन सु० ११ को श्रीवृंदावन चले गये, उनके हृदयका भाव कैसा बदलगया था यह ये दोहे कहे देते हैं:—

"जहां कलह तहां सुख नहीं, कलह सुखन कौ सूल।
सबह कलह इक राज मैं, राज कलहको मूल॥
मेरे या मन मूढ तैं, डरत रहत हौं हाय।
वृन्दावनकी ओर तैं, मति कबहूं फिरि जाय॥
लेत न सुख हरिभक्तिकौ, सकल सुखनि कौ सार।
कहा भयो नृपहू भए, ढोवत जग बेगार॥
और भौन देखौं न अब, देखूं वृन्दा भौन।
हरिसौं सुधरी चाहिये, सबही बिगरै क्यौंन॥
व्रजमैं व्है व्हैकढत दिन, किते दिये लै खोय।
अब कैं अब कैं कहत ही, वह अब कैं कब होय॥
राज बडे बडे देत हरि, दिनमैं लाख करोर।
पैकाहूको नाहिं वै, खीचत अपनी ओर॥"

संवत १८१० में 'तीर्थानन्द' ग्रंथ बनाया। परंतु यह ग्रंथ संवत १८०८ से आरम्भ होकर संवत १० में पूरा हुआ प्रतीत होता है यदि ऐसा न हो तो इसमें तो संदेह नहीं है कि इन्हीं दो वर्षोंकी कथा इसमें लिखीगई हैं और इसीकी समालोचनामें हमारे पाठक बहुत कुछ समाचार आपके जीवनचरित्रका पावैंगे। इस ग्रंथका आरंभ यों किया है:—

"जब चले स्थिति तें देस आन। बिच किए देवयानी सनान॥" फिर लिखते हैं "पुनि चले तहां तें नाय माथ। परसे गोविन्द गोकुलके नाथ॥ पुनि गालव आश्रम अति अगम्य। जहां भ्रमत फिरत अति मधुप झुंड॥" वहांसे व्रजमें आए। पहिले श्रीगोवर्धन आकर रहे। यहां का वर्णन पाठकोंके सुनने योग्य है:—

"पायन प्रदच्छना दई फेर। बिच रसिकसंग गन गुनी घेर॥ कलगान

कीरतन बन्यों रंग । बड झांझ झनक बाजत मृदंग ॥ बन ग्वाल गऊ चले सुनत साथ ॥ मधु पिवत श्रवन पुट कृष्ण गाथ ॥ सब अनन्य मंडली छकी प्रेम । चित गए भूलि तब मनके नेम ॥ आये चलि तेहि ठां रसिकझुंड । तहँ राधाकुंड अरु कृष्णकुंड ॥ उत तें उमगे सुनि रसिकवृन्द । उठि चले सामुहे बढि आनन्द ॥ तहं रुपे सूर सन्मुख संभारि । बहि चले परस्पर प्रेमवारि ॥ हुंकार शब्द करि गिरि निसंक । कोउ चलत धरनि धुकि भरत अंक ॥ बंसीदास अरु मुरलिदास । मनु महारथी ये प्रेमरास ॥ बिच खेत परे मूर्छित निदान । सोए सर सज्जा गान तान ॥ सुख प्रेम भक्तिको भयो प्रात । मुखसों न कछू है बरन्यो जात ॥ दंपत रस संपत बर बिहार । फिर गाय चले तन मन संभार ॥ परक्रमा दै गिरिवर सुभाय । मधुपुरी चले दुख बिरह छाय ॥"

गिरिराजसे श्रीमथुरामें आए वहां बिश्रांतघाट स्नान किया । सांझको बिश्रांत पर श्रीयमुनाजीकी आरतीकी बड़ी शोभा वर्णनकी है । वहां एक वृद्धा तपस्विनी रहतीथीं, जो केवल दूधही पीतीथीं, उनका दर्शन करके श्रीवृन्दावन आए इस समय इनका नाम चारों ओर फैल गयाथा और इनके प्रेमका आस्वाद प्रेमीमात्रको मिल चुकाथा, क्योंकि श्रीवृन्दावनमें इनको महाराज कृष्णगढ सुनकर तो लोग उदासीन भावसे अलगही अलग रहे परंतु जब सुना कि नागरीदासजी येही हैं तो दौड २ कर श्रीबनके महात्मा लोग लिपट गए ।

" सुनि ब्योहारक नाम मो. ठाढे दूर उदास ।
दौरि मिले भरि नैन सुनि, नाम नागगरीदास ॥

इक मिलत भुजनि भरि दौरि दौरि । इक टेरि बुलावत और और ॥ कोउ चले जात सहजै सुभाय । पद गाय उठत भोगहिं सुनाय ॥ जेपरे धूर मधि मत्त चित्त । तेउ दौरि मिलत तजि रीति नित्त ॥ अतिसय बिरक्त तिनके सुभाव । ते गनत न राजा रंक राव ॥ वे सिमिट सिमिट सब आय आय । फिर छाडत पद पढवाय गाय ॥"

इससे विदित होता है कि उस समयतक इनकी कविताका पूरा प्रचार होगयाथा और महात्मा लोग बडे चावसे पढते और याद करतेथे ।

वहां श्रीबांके विहारीजी ( श्रीस्वामी हरिदासजीके सेव्य ठाकुर ) का दर्शन किया इस समय इनके साथ इनकी पासवान ( उपस्त्री ) बनीठनीजी भी थी और उन्होंने रसिकबिहारीछाप देकर कई एक पद गाये पहिले मुझे सन्देहथा कि उस अव-

सरपर रसिक बिहारी छाप रखकर स्वयं ही पद बनायेथे परंतु कृष्णगढके लेखसे विदित हुआकि रसिक बिहारी छाप उनके पासवान बनीठनजीकी है तब विचार पूर्वक निम्न लिखित कविताके देखनेसेभी यह निश्चय हुआ आप लिखते हैंः—

'बनो विहारिनि रससनी निकट बिहारी लाल ।
पान कियो इन दृगनि तें अनुपम रूप रसाल ॥
तहं पद गाए औसर संजोग । वित्र रसिक बिहारीहीके भोग ॥'

जान पडता है नागरीदासजी बनी ठनीजीको प्रेमसे केवल बनीही कहकर पुकारतेथे और यहभी इससे स्पष्ट है कि वे प्रायः उनको साथ रखतेथे तथा विशेष पर्दा आदिका विचार नहीं करतेथे ।

हम पाठकोंको उनमेंसे एक पद "उत्सवमाला" ग्रन्थसे उद्धृत करके सुनाते हैं । इस छापके तीन पद और चार दोहे उक्त ग्रन्थमें है ।

'कुंजमहलमें आजु रंग होरी हो । फाग खेलमैं बना बनीकी व्है रही पट गठजोरी हो ॥ मुदित व्है नारिगुलाल उडावैं गावैं गारि दुहुंओरी हो । दूलह रसिकबिहारी सुन्दर दुलहिनि नवल किसोरी हो ॥ १ ॥"

यहां यहभी कहे विना नहीं रह सकतेकि इनका प्रेम अधिक हरिवंशी और हरिदासी वैष्णवोंसे था क्योंकि इनके पदोंकी शैली प्रायः उनसे मिलती जुलती है और ये प्रायः श्रीवृन्दावनही में रहतेथे और वहां इन्हीं संप्रदायोंके महात्मा अधिकथे, गोकुलका बर्णन बहुत कम किया है ।

गोधूलक समय ज्ञान गुदरी आए, वहांभी देरतक समाज रहा । वहांसे जमुना पार उतरे ।

"सहि गई दुर्मति दुख असहि, बहि गई बुरी बयार ।
रहि गई ब्रज अवसेर हिय, उतरे जमुना पार ॥"

वहांसे श्रीजमुनाजीका स्नान करके सोरूमें आकर रहे । यह स्थान जिला एटामें है यहां बुढगंगाजीका स्नान किया । यहीं भगवानका श्रीवाराहावतार हुआ है हिरण्याक्षको माराहै । इसका उपनाम उकल क्षेत्र और दूसरा शूकरक्षेत्र है ।

वहां एक नौकरने श्रीगंगाजीके तटपर बकरा मारा इसपर गंगाजीने क्रोध किया वडी बाढ आई फिर नागरीदासजीने स्तुति किया तब शान्त हुई ।

"तहँ किए एक अनुचर अधर्म । तटि हत्यो अजासुत पापकर्म ॥ कछु

क्रोध कियो गंगा कृपाल । दई आन अचानक जल उछाल ॥ भुवकाइ गिरत अररात जोर । अति भयो भयंकर समय सोर ॥ भजि पटकि २ डेरा निकारि । भयभीत सकल कौतिक निहार ॥ जब करी स्तुतिसु सिर नाय पात्र । करिछमा कियो सीतल सुभाव ॥"

दूसरे दिन दीपदान किया ।

वहांसे कपिलाश्रम ( कपिलग्राम ) में आए जहां कपिलदेवजीने तपस्याकी है । वहांसे नावके पुलपर गंगापार उतरे । एक नदी रामगंगा§ और मिलीं उनका स्नान करके धवलागिरिके पास कौसिक नदीके तटपर कमाऊं×में पहुंचे वहां बहुत दिन रहे और वहांसे संधि करके लौटे । हम ऊपर लिख चुके हैं संवत १८०८ में यह ग्रंथ बनना आरम्भ हुआ "जुगल भक्त विनोद" वहीं संवत१८०८ में बनाया है जिसका वर्णन ऊपर है ।

"रहे बहुत दिवस कौसिकी तीर । करि चले तहां तें संधिवीर" फागुन वहीं बीता । ब्रजके फागका ध्यान करते यह वर मांगाकि परसाल अब होरी ब्रज में ही हो यही हुआभी ।

उसी रास्ते से लौटते हुए श्रीवृन्दावनके उस पार रातको पहुंचे । उस

---

W. W. Hunter's gazetteer of India.

§ Ramganga–Eastern—a river in Kumaun district N. W. P. rises on the Southern Slope of the main Hamalayan range at an elevation of 9000 ft above sea level and falls into the Sarju at Rameshwar.

Vol VII 537 Page.

× Kamaun—The Principal District of the Division of the same name. In 1814 it was resolved to annex it to British possessions. At the end of January 1815, every thing was ready for the attack on Kamaun. The first successful event on the British side was the capture of Almora by colonal Nicholson on 26 April 1815. Population 425963 Hindus 5569 Mussalmans in 1872. It has a mild climate. Vol. V 471 Page. Population in 1881 493641.

समय कोई नाव या बेडा न मिला; उधर श्रीवृन्दाबनका वियोग कौन सह सकता था। झट श्रीयमुनाजीमें कूद पडे और तैर कर श्रीवृन्दावन पहुंचे कुछ लोग इनके साथ आए कुछ रह गए। आप यों लिखते हैः--

"देख्यो श्रीवृन्दाविपिन पार। बिच बहत महा गंभीर धार॥ नहिं नाव नहीं कुछ और दाव। हे दई कहा कीजै उपाव॥ रहे वार लगनिकौं लगै लाज। गए पारहिं पूजै सकल काज॥

प्रेमपंथकों पीठ दै, यह जीवौ न सुहाय।
मंगल दिन है आजुकौ, प्रिय सन्मुख जियजाय॥

यह चित्त मांझ करिकै विचार। परे कूद कूद जल मध्यधार॥ चले पैर पैर तरराय धाय। तहां भई लगन सब बिधि सहाय॥ तरि गए तरुन जा दयौ पार। गहि हाथ लए ब्रजनाथ वार॥

वार रहे रहे बार ते, पार भये भये पार।
दरसे वृन्दाविपिन बिच, राधानन्द कुमार॥"

वहांका आनन्द लूटकर दिल्ली आए और यहां सर्वोंसे छुट्टी पा सांसारिक व्यवहारोंको छोड राज्य कुटुंबसे मुंह मोड अकेले श्रीवृन्दावन बास आरम्भ किया। यह समय संवत १८०९ के आरम्भका है। क्योंकि १८०८ का फाल्गुन कमाऊंमें हुआ और बर्षोत्सवका वर्णन आगे चलकर इस ग्रंथमें किया है उसके उपरांत अर्थात् वर्ष दिन श्रीब्रजमें रहने पीछे संवत १८१० के माघमें यह ग्रंथ "तीर्थानन्द" पूराहुआ है।

आप दिल्लीका वृत्तांतयों लिखते हैंः—

"फिर बहे बीच राजस प्रवाह। गए इन्द्रप्रस्थ हिय विरह दाह॥ दिल्ली दिवार कहकहा धाम। लियो फेरि तहां ते मोहि श्याम॥ तजि दयो तहां सब प्रवृत संग। भयो ब्रज सनमुख फिरी बढयो रंग॥ जब कह्यो सुता लडकाय भाय। लयो बोलि मोंहि वृषभानुराय॥ तब चले चरन बरसाने ओर। किए पैंड पैंड तीरथ करोर॥"

आगे फिर लिखते हैंः—

"ऐसो बरसानो निरखि, गहवर आयो प्रेम। करत दंडवत लुटतरज, छुटि गए राजस नेम॥"

इसके आगे आषाढ फिर सावनमें हिंडोलाका वर्णन बरसानेमें किया है फिर

भादोंमें श्रीकृष्ण जन्मोत्सव नंदगांवमें और ललिता जन्मोत्सव करेला गाममें किया वहांसे सुनहराकी कदमखंडीमें दानलीलाका अनुभव किया फिर भादों सुदी सप्तमीको बरसानेंमें आकर श्रीराधाजन्मोत्सवका दर्शन किया। नवमीको मोरकुटी, दानगढ, मानगढ, की लीला देखी; दशमी कोकिलावन, फिसलनीशिला, सांकरीखोंरमें दानलीला श्रीवृन्दावन, आश्विन मासमें सांझी, शारदीय पूर्णिमा, रासोत्सव देखा।

कार्तिक कृष्ण सप्तमीको श्रीराधाकुंड आए। दीपमालीका और अन्नकूट श्रीगिरिराजमें किया। गोपाष्टमीको नंदगावमें। अगहन और पूस बरसानेंमें रहे। बरसानेमें बसन्त और होली किया। होली वर्णन बडी धूमसे किया है। चैत्र बैशाष जेठका वर्णन कुछ नहीं किया यही लिषा दियाः--

" मधु माधव जेठोत्सव, याते बरन्यो नाहिं।
एक फाग आगें जिते, सब फीके दरसाहिं ॥ "

अंतमें इन दोहोंके साथ " तीर्थानंद " को पूरा किया है।

" गौर सांवरे रसिक दोउ, यह दीजे सुख रास।
कबहुं नागरीदास अब, तजै न ब्रजको वास ॥
माघ अष्टदससतजु दस, बिच वृन्दावन वास।
ग्रंथ तीर्थानन्द यह, कियो नागरीदास ॥ "

## नागरीदासजीके बनाए ग्रंथ इतने हैं

( १ ) सिंगारसार वा ब्रजलीलापदप्रसग
( २ ) गोपीप्रेमप्रकाश ( सं १८०० )
( ३ ) पद प्रसंग माला
( ४ ) ब्रजवैकुंठ तुला ( सं १८०१ )
( ५ ) ब्रज सार ( सं १७९९ )
( ६ ) भोर लीला
( ७ ) प्रातरस मंजरी
( ८ ) बिहारचंद्रिका ( सं १७८८ )
( ९ ) भोजनानन्दाष्टक
( १० ) जुगलरस मंजरी
( ११ ) फूल विलास
( १२ ) गोधन आगमन
( १३ ) दोहन आनन्द
( १४ ) लग्नाष्टक
( १५ ) फाग विलास
( १६ ) ग्रीष्म विहार
( १७ ) पावस पचीसी
( १८ ) गोपी बैन विलास
( १९ ) रास रस लता
( २० ) रैन रूपरस
( २१ ) शीतसार
( २२ ) इश्क चिमन

(२३) मजलिस मंडन
(२४) अरिलाष्टक
(२५) सदाकी मांझ
(२६) वर्षाऋतुकी मांझ
(२७) होरीकी मांझ
(२८) कृष्णजन्मोत्सव कवित्त
(२९) प्रियाजन्मोत्सव कवित्त
(३०) सांझीके कवित्त
(३१) रासके कवित्त
(३२) चांदनीके कवित्त
(३३) दिवारीके कवित्त
(३४) गोवर्धनधारनके कवित्त
(३५) होरीके कवित्त
(३६) फाग गोकुलाष्टक
(३७) हिंडोराके कवित्त
(३८) वर्षाके कवित्त
(३९) भक्ति मगदीपिका (सं१८०२)
(४०) तीर्थानन्द (१८१०)
(४१) फाग विहार (सं. १८०८)
(४२) बालविनोद (सं. १८०९)
(४३) सुजनानन्द (सं. १८१०)
(४४) बन विनोद (सं. १८०९)
(४५) भक्तिसार (सं. १७९९)
(४६) देहदसा
(४७) वैरागवल्ली
(४८) रसिक रत्नावली (सं १७८२)
(४९) कलि वैराग वल्लरी (सं.१७९९)
(५०) अरिलपचीसी
(५१) छूटकविधि
(५२) पारायणविधिप्रकाश (सं१७९९)
(५३) सिखनख
(५४) नखसिख
(५५) छूटक कवित्त
(५६) चरचरियां
(५७) रेखता
(५८) मनोरथ मंजरी (सं. १७८०)
(५९) रामचरित्र माला
(६०) पद प्रबोध माला
(६१) जुगलभक्ति विनोद (सं.१८०८)
(६२) रसानुक्रमके दोहा
(६३) शरदकी मांझ
(६४) सांझी फूल बीनन समेत सम्वाद
(६५) बसन्त वर्णन
(६६) फाग खेलनसमेतानुक्रम कवित्त
(६७) रासानुक्रमके कवित्त
(६८) निकुंज विलास (सं. १७९४)
(६९) गोविन्द परचई
(७०) बनजनप्रशंसा (सं. १८१९)
(७१) छूटक दोहा
(७२) उत्सव माला
(७३) पदमुक्तावली

(७४) बैन विलास
(७५) गुप्तरस प्रकाश

कृष्णगढके कवीश्वरजी लिखते हैं कि इनदोनों ग्रंथोंका नाम नागरीदासजीके ग्रंथावलीमें है परंतु यहां मिलते नहीं।

इनमेंसे जिनका समय ग्रंथोंमें दिया है उसे उद्धृत करते हैं ।

मनोर्थमंजरी ( नं० ९८ )

दोहा । संवत सतरासै असी, चौदस मङ्गलवार ।
प्रगट मनोरथ-मंजरी वदि आसू अवतार ॥

रसिकरत्नावली ( नं० ४८ )

दोहा । सत्तरै सै वइयासिये, भादो सुदि भृगु वार ।
तिथि परिवा कीनी इहै, लीजो सन्त सुधार ॥

विहारचंद्रिका ( नं० ८ )

दोहा । सत्तरै सै अठ्यासिया, संवत सावन मास ।
नव विहार यह चन्द्रिका, करी नागरीदास ॥

कलिवैरागवल्ली ( नं० ४९ )

दोहा । सत्तरासै पच्याणवें, संवत सावण मास ।
कलिवल्लीवैरागकी, करी नागरीदास ॥

भक्तिसार ( नं० ४५ )

कुण्डलिया । सुख पायौ पूरन भयें, ग्रन्थ जु भाषा चार ।
सतरासै निनांनवै, द्वैज द्यौस गुरुवार ॥
द्वैज द्योस गुरुवार मास सावन मन भावन ।
कृष्णपक्ष सुभ मन्त्र सन्त जन श्रवन सुहावन ॥
भक्ति सार उचार कियौ निज मन समुझायौ ।
नागरी दास न कहूं विमुष काहू सुख पायौ ॥

पारायणविधि प्रकाश ( नं. ५२ )

दोहा । सत्तरैसै निनांनवै, संवत सावन मास ।
पारायन जु प्रकास-विधि कियौ नागरीदास ॥

व्रजसार ( नं. ५ )

दोहा । सत्तरैसै निनांनवै, पोस जु सुदि रवि-वार ।
नौमी नागरीदास यह कियो ग्रन्थ व्रज-सार ॥

गोपीप्रेमप्रकाश ( नं. २ )

दोहा । संवत अठारैसै सुकल पक्ष जेठ सुभ मास ।

गोपीप्रेमप्रकाश यह, कियौ नागरीदास ॥

व्रज वैकुंठतुला ( नं. ४ )

दोहा । संवत अठारैसै जु इक, दिन वसन्त सुभ मास ।
व्रज बैकुण्ठ तुला कियौ, ग्रन्थ नागरीदास ॥

भक्तिमगदीपिका ( नं० ३९ )

दोहा । संवत अष्टदस सतजु द्वै, क्वार तीजगुरुवार ।
रूप नगर विचि कृष्णपक्ष, भयौ ग्रन्थ विस्तार ॥

फागविहार ( नं० ४१ )

दोहा । संवत अष्टदस सतजु पुन, अष्टवर्ष मधु मास ।
ग्रन्थ गङ्गतटि कृष्णपक्ष, कियो नागरीदास ॥

जुगलभक्तिविनोद ( नं० ६१ )

दोहा । अष्टादस सत अष्ट पुनि, संवत माघ सुमास ।
जुगल भक्ति गुन ग्रन्थ यह, कियो नागरीदास ।
निकट कमाऊं पर्वतनि, विकट विटपकी भीर ।
तहां ग्रन्थ रचना भई, नदी कौसिकी तीर ॥

बनविनोद ( नं० ४४ )

दोहा । समत अठारह सौ जु नव, कृष्णपक्ष मधु मास ।
बन बिनोद कल ग्रन्थ यह, कियो नागरीदास ॥

बालविनोद ( नं० ४२ )

दोहा । समत अष्टदस सत जु नव, मास असुनि भृगुवार ।
तिथि षष्ठमिं अरु शुक्लपक्ष, रच्यौ ग्रन्थ विस्तार ॥

तीर्थानन्द ( नं० ४० )

दोहा । माघ अष्टदस सत जु दस, विचि वृन्दावन वास ।
ग्रन्थ तीरथानन्द यह, कियौ नागरीदास ॥

सुजनानन्द ( नं० ४३ )

दोहा । समत अष्टदस सत जु दस, बरसानै वास ।
ग्रन्थ सु-सुजनानन्द यह, कियो नागरीदास ॥

वनजन प्रशंसा ( नं० ७० )

दोहा । अष्टादस सत दस जु नव, संवत माघ सु मास ।
वन जन-प्रसन्स ग्रन्थ यह, कियौ नागरीदास ॥

सबसे पहिला ग्रन्थ जो इनका मिला वह मनोर्थमंजरी जो सं० १७८० में बना, दूसरा रसिकरत्नावली सं० १७८२ में तीसरा 'विहारचंद्रिका" संवत१७८८ में बना ।

इस समै जैसी सुन्दर और प्रौढ कविता आपकी है उसे हम अपने पाठकोंको "विहारचंद्रिका" का एक अंश लेकर सुनाते हैं इसीसे वे सारे ग्रंथका गौरव समझलेंगें ।

"उज्जल पक्षकि रैन चैन उज्जल रस दैनी ।
उदित भयो उडराज अरुन दुति मन हर लैनी ॥
महा कुपित व्है काम ब्रह्म अस्त्रहिं छोड्यौ मनौं ।
प्राची दिसि तें प्रजुलित आवति अगिनि उठी जनौं ॥
दहन मानपुर भए मिलनकों मनहुलसावत ।
छावत छिपा अमन्द चन्द ज्यों ज्यों नभ आवत ॥
जगमगाति वन जोति सोत अमृतधारासे ।
नवद्रुम किसलय दलनि चारु चमकत तारासे ॥
स्वेत रजतकी रैन चैन चित मैन उमहनी ।
तैसी मन्द सुगन्ध पौन दिनमनि दुख दहनी ॥
मधिनायक गिरिराज पदिक वृंदावन भूपन ।
फटिकसीला मनि शृंग जगमगति दुति निर्दूषन ॥
सिला सिला प्रति चन्द चमकि किरननिछवि छाई ।
बिच बिच अम्ब कदम्ब झम्ब झुकि पायनि आई ॥
ठौर ठौर चहुं फेर ढेर फूलनके सोहत ?
करत सुगन्धित पवन सहज मन मोहत जोहत ॥
विमल नीर निर्झरत कहूं झरना सुख करना ।
महा सुगन्धित सहज वास कुमकुममद हरना ॥
कहुं कहं हीरन खचित रचित मंडल सु रासिके ।

जटित नगन कहुं जुगल खम्भ झूलनि बिलासिके ॥
ठौर २ लखि ठौर रहत मनमथ सोभारी ।
बिहरत विविध विहार तहां गिरिपर गिरि धारी ॥
दोहा । कहत कहत कहँ लगि कहै, अब कवि छबि अभिराम ।
प्रिया कमल पद परस हित, धरचो रूपगिरि श्याम ॥ १ ॥

नागरीदासजीकी सभामें निम्न लिखित कवि वर्तमानथे ।

१ प्रसिद्ध कवि वृन्द ( जिनकी बनाई वृन्दसतसई है ) के, पुत्र वल्लभजी, इनको महाराज नागरीदासके पिता महाराज राज सिंहजीने "सुकवि" की पदवीदी थी, अतएव ये सुकवि वल्लभ कहलातेथे ।

२ पूरबकी ओरके रहनेवाले सनाढ्य हरिचरणदासजी, इनके बनाए ग्रंथ सभाप्रकाश, कवि वल्लभ ( इन दोनों ग्रंथोंमें काव्य प्रकाशका ठीक ठीक उलथा किया है ) बिहारी सत सईकी "हरिप्रकाश" नामक टीका, रसिकप्रियाकी टीका, कविप्रियाकी टीका इत्यादि हैं ।

३ करौलीके सनाढ्य हीरालालजी. इनका बनाया "सिरदार सुजस" नामक ग्रंथ है, जिसमें महाराज नागरीदासजीके अनुज महाराज बहादुरसिंहने जब राज्य छीन लियाथा और नागरीदासजीने अपने पुत्र सरदारसिंहजीके साथ कुमाऊं आदि प्रदेशमें जाकर मरहठोंको लाकर अपना राज्य लिया उसका वृत्तांत लिखा है ।

४ मुंशी कनीरामजी, इनके मीर मुंशी थे, कवीभी थे ।

५ कल्लाह पन्नालालजी, कविथे

६ वैष्णव विजय चन्दजी, कविथे

७ बनी ठनीजी, जिनका वर्णन ऊपरहो चुका हैं ।

८ दाहिवां बिजय रामजी , कवि थे ।

९ बाहरके बहुतेरे कवि पंडित आतेथे, जिनमेंसे नरवर गढके राव उदयनाथजी

---

१ वृन्द-No. 837 The Modern Literature of Hindustan.

२ हरिचरणदास-No. 939-Do.

३ हीरालाल-No. 948-Do.

बहुत प्रसिद्ध थे इन्होंने नागरीदासजीके सिंहके शिकारका एक ग्रंथ बनाया है इनमेंसे डाक्टर ग्रिअर्सन और शिवसिंहने केवल पहिले लिखे तीन कवियोंका यत्किंचित वर्णन किया है परंतु प्रायःसमयमें भ्रम है और वर्णनभी नाम मात्र है।

अन्तमें बनजनप्रशंसक ग्रंथसे श्रीवृन्दावन वासपर नागरीदासजीके हृदयमें कैसा संतोष इस पदमें झलकता है।

"हमारी सबही बात सुधारी।
कृपा करी श्रीकुंजविहारिनि अरु श्रीकुंजविहारी।
राख्यो अपने वृन्दावनमें जिहिको रूप उंज्यारी।
नित्त केलि आनंद अखंडित रसिक संग सुखकारी॥
कलह कलेस न व्यापै इहिठां और विश्वतें न्यारी।
नागरीदासहिं जनम जिवायौ वलिहारी वलिहारी॥ १॥"

"व्रज सम्बन्ध" ग्रन्थसेः—

"सांचो मित्र गोपाल है मेरो परम पियारौ।
जिहिं दीनौ व्रजवासलै वैकुंठ तें भारौ॥
निज साधनको संग दयोनीकेते नीकौ।
जाके पटतर क्यों लगे सुख स्वर्गको फीकौ॥
राज कलहके मूलको विष अमल छुटायौ।
नागरियावृन्दाविपुल रस अमृत प्यायौ॥ २॥"

हम इन महानुभाव प्रेमरस छके महात्माका चरित्र उन्हीके इस छप्पयके साथ समाप्त करते हैं।

"धनि वह कुल धनि नगर धन्य वह देस सुमंडल।
धन्य खंड वह द्वीप धन्य वह सकल महीतल॥
धन्य धन्य सबलोक होत जेहि पावन पावन।
मुख रसना वह धन्य करत तिनकौ गुन गावन॥
जाकी महिमा कहि सकै को कवि नागर मध्य छित।
करत धन्य इन नैनिको जेहि उर प्रेमानन्द नित"॥ १॥

वर्तमान महाराजाधिराज महाराज श्रीश्रीश्री १०८श्री श्रीशार्दूलसिंहजीम.

श्रीः ।

नृत्यगोपालो जयतितराम् ॥

# अथ छप्पनभोगचंद्रिका

## लिख्यते ॥

## तत्रादौपूर्वार्द्धं

॥ दोहा ॥ चरनकंजअशरनशरन, हरनअमितअपराध ॥ वंदौंश्रीगुरुदेवके, देवहुबुद्धिअगाध ॥ १ ॥ श्रीजीनृत्यगुपालके, चरनकमलउरधारि ॥ छप्पनभोगउछाहको, रचौंग्रंथसुखकारि॥२॥ कृष्णगढ्ढपतिराठवर, श्रीशार्दूलनरेश ॥ तिनकेअनुजजवानसिंह, पालकधर्महमेश ॥ ३ ॥ तिनकीनौंआनंदसौं, छप्पनभोगउछाह ॥ श्रीकल्यानसुरायके, चरनकमलचितचाहि ॥ ४ ॥ नृपजवानमहाराजहिय, छप्पनभोगहुलास ॥ कीनोपूरनचंदसो, जगमेंपरमप्रकाश ॥ ५ ॥ जहांदीखतहैचंद्रिका, तहांहीचंदलखाय ॥ सोचिवांचियोंग्रंथतैं, भईबातलखिजाय ॥ ६ ॥ छप्पनभोगसुचंद्रिका, नामग्रंथकोदीन ॥ हरिसँबंधगुनसमझिकैं, लेऊसराहप्रवीन ॥ ७ ॥

कृष्णगढ्ढमहाराजके, गृहमेंहौंनिधिपांच ॥ तिनकीनिजवार्ताप्रथम, कहौंगहैंपनसांच ॥ ८ ॥ नृपवंशजुपुनिवर्निहौं, प्रभुवार्ताअनुसंग ॥ पूत्रारधमेंप्रेमधरि, कहिहौंपरमप्रसंग ॥ ९ ॥ प्रथमहिवर्ननकरत हौं, सुंदरताकोदेश ॥ श्रीकल्यानसुरायकी, निजवार्ताकौंवेश ॥१०॥ श्रीजीअरुश्रीनाथजी, नामग्रंथमधिआहि ॥ जहांकल्यानसुराय को, जानऊनामसराहि ॥ ११ ॥ छप्पय ॥ जयतिजयतिकल्या नरायकलिमलदुखभंजन ॥ जयतिजयतिबकबकीअसुरकंसादि विभंजन ॥ जयजयमुरलीमधुरनादकरिब्रजजनरंजन ॥ जयजय रासविलासरसानंदितमुनिमंजन ॥ जयजयतिरूपगिरिराजधरज यसुरपतिमदभंगकिय ॥ जयनंदसंगवृषभानगृहभोगरागअनुराग लिय ॥ १२ ॥ दोहा ॥ यानिधिकोआगमसरस, नगरकृष्णगढ जांनि ॥ भयोसुजैसीरीतिसौं, सोसबकहौंबखांनि ॥ १३ ॥ श्रीव ल्लभआचार्य प्रभु, कृष्णसुमुखअवतार ॥ तिनकेविठ्ठलनाथ प्रभु, गोस्वामीसुउदार ॥ १४ ॥ सप्तपुत्रतिनकेभये, तिनमेंश्रीटीकैत ॥ गिरधरलालकृपालहैं, मायावादविजैत ॥ १५ ॥ गिरधरकेसुतत्र यभये, श्रीमुरलीधरज्येष्ठ ॥ दामोदरहैंदूसरे, सबगुनसौंअतिश्रेष्ठ ॥ ॥ १६ ॥ अतिसुंदरहैंतीसरे, दीक्षितगोपीनाथ ॥ पुष्टिधर्मपालक बनी, बढीसुजसकीगाथ ॥ १७ ॥ तिनकेचरनसरोजकी, शरन गहीसुखमान ॥ कृष्णगढ्ढपतिराठवर, रूपसिंहराजान ॥ १८ ॥ सतरैंसैंअरुच्यारमें, लियोमंत्रउपदेश ॥ लखिगोवर्द्धननाथकौं, द

१ छप्पनभोगका मनोर्थ किया जाता है जिसकी भावना यह है कि श्रीकृष्णचंद्र नंदरायजीके साथ वृषभानजीके पाहुने पधारे हैं. ।

रस्योसबव्रजदेश ॥ १९ ॥ मंत्रजपतहरिभक्ति रस, लीनभयोमन मीन ॥ स्वपनेमेंश्रीनाथजी, दर्शनआज्ञादीन ॥ २० ॥ मोस्वरूपपधराहु अब, रूपसिंहतुवगेह ॥ यहसुनिउठिमनचकितव्है, कीनविचारजुएह ॥ २१ ॥ यहैलाभगुरुदेव विन, कोकरिसकैंप्रवीन ॥ रूपसिंहकरजोरि तब, इकदिनविनतीकीन ॥ २२॥ जैजैंप्रभुकीजैं सफल, मोहिमनोरथसिद्ध ॥ सेवाकेहितदीजियैं, हरिस्वरूपकीनिद्ध ॥ २३ ॥ दीक्षितगोपीनाथ प्रभु, आतुरदासहिचीन ॥ निजजनपैंवात्सल्यकरि, ऐसैंआज्ञाकीन ॥ २४ ॥ सोरठा ॥ सीखेसब शृंगार, सातौंबालकप्रथमही॥ हैंस्वरूपसुखसार, विठ्ठलप्रभुकेसमयको ॥ २५ ॥ जावहुलेहुनिहार, आज्ञासुनितबनृपचले ॥ छकिगयेरूपनिहार, लखिस्वरूपश्रीनाथको॥२६॥ अनुभवभयोअमाव, तबहीनृपकेहृदयमें॥ पहिलैंदियदरसाव, स्वपनेमेंश्रीनाथजी॥२७॥ ॥ दोहा ॥ नृपदरशनकरिगुरु निकट, कीनीविनतीजाय ॥ यही स्वरूपकृपालुमो, दीजैंशिरपधराय ॥ २८ ॥ श्रीदीक्षितगोस्वामि प्रभु, निजजनकौंअपनाय ॥ श्रीजीकेसुस्वरूपकौं, दियेशीसपधराय ॥ २९ ॥ दामोदरभटसंग दिय, सेवारीतिसुहेत ॥ तासौंनृपसमझीसबैं, सेवारीतिसचेत ॥ ३० ॥ विदामांगिगुरुसौंचले, चितमेंअतिशचुपाय ॥ अतिउमंगकरिकैंनृपति, श्रीजीसंगपधराय ॥ ॥ ३१ ॥ दरमजलैंमुकामकरि, सेवाकरतसप्रेम ॥ पधरायेनिजदेशमें, साधतनवधानेम ॥ ३२ ॥ मांडलगढपधरायकैं, मंदिरसिद्धकराय ॥ सबसाहित्यबनायकैं, चित्तबीचहरपाय ॥ ३३ ॥ सतरैंसैंइग्यारहैं, संवतमाघसुमास ॥ कृष्णपक्षतिथिप्रतिपदा, पाटो

त्सवसुखरास ॥ ३४ ॥ मांडलगढकेपरगनै, भटखेडीइकगाम ॥ दामोदरभटकौंदियो, रूपनृपतिअभिराम ॥ ३५ ॥ रूपसिंहम हाराजके, ताहिसमयकेमांहि ॥ मांडलगढमेवारको, हुतोअमलके मांहि ॥ ३६ ॥ मांडलगढमेवारको, जैसैंआयोहाथ ॥ रूपसिंह महाराज के,सोसुनियेंअवगाथ ॥ ३७ ॥ कृष्णगढ्ढकेनिकटइक, खोडांकोगिरिआहि ॥ विकटदुर्गतहांरचन नृप, कियआरंभसरा हि ॥ ३८ ॥ दिल्लीपतिश्याज्याहजू, यहैं खबरसुनिलीन ॥ रूपनृ पतिसौंजबकही, किंहिंकारनयहकीन ॥ ३९ ॥ रूपसिंहकीनीतवैं, दिल्लीपतिसौंअर्ज ॥ राजारानागढविनन, करतब्याहकीगर्ज ॥ ॥ ४० ॥ बन्योबनायोगढतुम्हैं, दैहौंकहिनृपईश ॥ मांडलगढमेवा रको, करिदीनौंबखसीस ॥ ४१ ॥ मांडलगढहीकोवतन, देशाधि पकरिदीन ॥ तासौंतहांश्रीनाथको, मंदिरसिद्धसुकीन ॥ ४२ ॥ मांडलगडमेंनृपकियो, छबिसौंछप्पनभोग ॥ भयेप्रसन्नश्रीनाथजी, छप्पनभोगअरोग ॥ ४३ ॥ तनमनधनसुसमर्पिकैं, भूपतिरूपव लिष्ट ॥ छप्पनभोगछकायकैं, कियेप्रसन्नानिजइष्ट ॥ ४४ ॥ श्रीक ल्यानसुरायप्रभु, होयभक्तआधीन ॥ रूपसिंहमहाराजसौं, सानु भावताकीन ॥ ४५ ॥ तिनप्रसंगकौंसुनतही, व्हैहैंसुखमेंलीन ॥ जिनजनकोमनव्हैंरह्यो, भक्तिसिंधुरसमीन ॥ ४६ ॥ जिंहिंठांजे सीसमयमें, जवैंभयोजिंहिंढंग ॥ लिख्योलख्योदफतरमहीं, सोइ कहुनियप्रसंग॥४७॥ देशाधिपश्याज्यांहको, आयोजबफरमान ॥ श्रीजीकौंपधरायसंग, कीनौंनृपतिप्रयान ॥ ४८ ॥ रहतभयेकेतेदि वस, दिल्लीपतिकेदेश ॥ एकदिवसऐसीभई, अद्भुतवातविशेष ॥ ४९ ॥

रूपनृपतिकेहृदयमें, नवधासाधतनेम ॥ प्रेमभक्तदशमीभई, प्रभु पोषकाजिंहिंप्रेम ॥ ५० ॥ श्रीजीकेशृंगारकौं, करतभयेरसलीन ॥ राजकाजकीबातकी, जहांकछुजातकहीन ॥ ५१ ॥ असवारीदि ल्लीशकी, निकसीआयअचान ॥ तबश्रीजीनिजरूपकिय, रूप सिंहराजान ॥ ५२ ॥ रूपसिंहकोरूपधरि, दिल्लीपतिपैंजाय ॥ नजरकरीतदश्याज्यहां, मुदरीदईसुहाय ॥ ५३ ॥ सेवासौंअवसर भयो, तबैंकरीसबअर्ज ॥ देशाधिपइंहिराहगो, कोजानैंकिंहिंग र्ज ॥ ५४ ॥ इतनेमेंदेशाधिपति, आयेयाहीराह ॥ तबैंजायकीनी नजर, रूपसिंहनरनाह ॥ ५५ ॥ रूपसिंहअतिशीघ्रतैं, देशाधि पकेपास ॥ गयेतबैंदेशाधिपति, कीनौंयहैंप्रकास ॥ ५६ ॥ पाहि लैंभीतुमरूपसिंह, करीनजरयहांआय ॥ दईअंगूठीहमतुमैं, करी नजरफिरआय ॥ ५७ ॥ अनुभवकरिहियमेंलख्यो, यहहरिहीको मर्ज ॥ अद्भुतसुनिधोरजधरी, करीमाधुरीअर्ज ॥ ५८ ॥ हरिगुरु स्वामीकेनिकट, जबजबसनमुखजाय ॥ भेटनजरनोछावरसु, क रियेंअतिहरषाय ॥ ५९॥ शिविरआपनेआयकैं, रूपसिंहनरनाथ॥ श्रीजीसौंविनतीकरी, दीजेमुंदरीनाथ ॥ ६० ॥ सिंहासनसौंउछरि तब, परीअंगूठीआय ॥ प्रेमविवसव्हैंनृपतिजब, लीनींहियेंलगाय ॥ ॥ ६१ ॥ यौंसबभृत्यनकौंकही, करियैंप्रकटनयांहि ॥ वहिमुंदरी कीउर्वशी, करिवाईनृपचाह ॥ ६२ ॥ श्रीजीकेधारननृपति, कर वाईहरषांहि ॥ वहउर्वशिअद्यापिहैं, हाजरभूषनमांहि ॥ ६३ ॥ यह अद्भुतनहिंमानियैं, समझिभजनकीरीति ॥ प्रभुरच्छकहैंभक्तके,

१ फोजके मुकामके डेरे.

जोसेवैंधरिप्रीति ॥ ६४ ॥ प्रेमसुभक्तिप्रभावतैं, भक्तहोतहरिरूप ॥ यहअद्भुतश्रीजीधरयो, रूपसिंहकोरूप ॥ ६५ ॥ रूपसिंधकेत बभयो, जोविचारचितमांहि ॥ सोप्रकाशकविजयकरत, सुनियैंर सिकउमांहि ॥ ६६ ॥ दिल्लीपतिकीनजरको, ममहितप्रभुकौंखेद ॥ तासौंअवनिजदेशमैं, पधरावैंविनखेद ॥ ६७ ॥ यहैंमनोरथधारि मन, रूपसिंहनरनाह ॥ प्रभुकीप्रभुतासमझिचित, वाहवाहकहि वाह ॥ ६८ ॥ कृष्णगढ्ढउत्तरदिशहि, नामकवेराग्राम ॥ ग्रामववेरा मधिहुतो, भारमल्लकोधाम ॥ ६९ ॥ भारमल्लकेपुत्रयह, रूपसिं हअभिराम ॥ नगरवसायोप्रथमतहां, रूपनगरदियनाम ॥ ७० ॥ प्रपितारूपनरेशके, कृष्णसिंहमहाराज ॥ कृष्णगढ्ढनिजनामपैं, जैसैंकिययहसाज ॥ ७१ ॥ सतरैंसैअरुपांचमें, दइरूपनगरनीं व ॥ किलाकोटसबसिद्धिभो, वीरसुखदकीसीव ॥ ७२ ॥ गढमेंमं दिरसिद्धकिय, याअवसरकौंपाय ॥ अरुजलकीइकवापिका, क रिवाईसुखदाय ॥७३ ॥ यहसवसिद्धभयेतवैं, मनमैंधारिउत्साह ॥ रूपनगरश्रीनाथजी, पधरायेनरनाह ॥ ७४ ॥ छप्पय ॥ जयपु रपोत्तमरूपजयतिजयगिरिवरधारी ॥ जयजयव्यापकब्रह्मजयति जयकुंजबिहारी ॥ जयजयशुचिरसरूपजयतिजनमनअनुहारी ॥ जयविट्ठलेशसुतसप्तखेलसेवाकेध री ॥ जयरूपसिंहनरईशकेशी सविराजेआंनकैं ॥ कल्यानरायवरनामसौंरूपनगरब्रजमानकैं ॥ ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ मंदिरकेसनमुखमहल, अपनेरहिवेहेत ॥ नृपव नायरहनेलगे, जवैंअनवसरलेत ॥ ७६ ॥ औरबातकहांलौंकहौ, से वाहितजेकीन ॥ नितगागरजलपानकी, वापीसौंभरिलीन ॥ ७७ ॥

तनमनधनसौंप्रीतकरि, साधेनवधानेम ॥ सर्वस्वात्मनिवेदनसु, भक्तिकरीकरिप्रेम ॥ ७८ ॥ नवधाभक्तिप्रभावको, बर्ननकियकविवृंद ॥ वहिकवित्वयहांलिखतहौं, मोमनधरिआनंद ॥ ७९ ॥ कविवर्यवृंदजीकृतमहाराजश्रीरूपसिंहजीकीवचनिका तामेंनवधानभक्तिकेकवित्वहैं वेहीयहांलिखेहैं ॥ नवधाभक्ति ॥ तत्रादौश्रवणभक्ति ॥ वचनिका ॥ प्रथम श्रीगिरिधरीजूकी श्रवनभक्ति जैसैं करी परीक्षित हितचित ॥ तैसैं राजारूपसिंह हरि गुन श्रवन करत नितनित ॥ कवित्त ॥ सागरसुधारकोहरिजसकोउजागरहैंनिर्मलरतनगुनआगरधरतहैं ॥ तापहरैंपापहरैंविषयविलापहरैंकलिकेकलापहरैंआनंदभरतहैं ॥ श्रवनसुदर्नेकेकटोरानसौंभरिभरिअचवतअतिहीयहौंसनहरतहैं ॥ भूपतिपरीक्षितज्यौंभूपरूपनितप्रतिभगतिसौंभागवतश्रवनकरतहैं ॥ १॥८०॥ गुनकीर्त्तन ॥ वचनिका ॥ दूजैं भगति श्रीनारायन गुन कीरतन ॥ जासैं जाको निह चल मन पूरनपन ताको कीजें बर्नन ॥ कवित्त ॥ आतमतरनपरमातमकरनसममहातमहरनमहातमबतायोहैं ॥ अशरनशरनशरनताकैंकोऊआंनधरनिधरनहूनजाकोपारपायोहैं ॥ पलपलछिनछिनप्रतिदिनप्रतिरैनसुपनसुपनहूमेंभूलिनभुलायोहैं ॥ रूपभूपभगतिसूंभागवतसुनिसुनिशुकमुनिकीसीधुनिहरिगुनगायोहैं ॥ २ ॥ ८१ ॥ पूजन भक्ति ॥ वचनिका ॥ एक भगति हरिपद कंजनको पूजन जैसैं करैं भक्तजन ॥ जैसैं राजापृथु भगति करी तैसैं राजा रूपचित धरी ॥ कवित्त ॥ एनसारघनसारकुंकुमउवटिअंगगंगजलसौंन्हवाइतामैंमनदीनौंहैं ॥ वसनबनाइनगभूषनबनाइतनचंदनचढाइरुचिरु

चिरसभीनैंहैं ॥ पुहपचढाइवनमालापहराइधूपदीपदरसाइबालभो
गआगेंकीनौंहैं ॥ पृथ्वीपतिपृथुजैसैंप्रभुपदपूजिपूजिरूपभूपपूजन
भगतिफललीनौंहैं ॥ ३ ॥ ८२ ॥ स्मर्नभक्ति ॥ वचनिका ॥ और
एक भक्ति हरि सुमिरन तामैं दीजैं मन जैसैं सावधान भये प्रह-
लाद ॥ तैसैं राजा रूप पायो भक्ति सुधाको सवाद ॥ कवित्त ॥
गुरुउपदेशपाइ औरोविसराइ ताहिविसरचोनछिनहियपाटीमांहिप
ढचोहैं ॥ करिमनमनकासुरतिसूतशुद्धकरिब्रह्मगांठिदेकैंकरीमाला
चाउचढचोहैं ॥ रैनदिनरसरसीरसनातैंछिनछिनफेरफेरफिरिफिरि
यहैंरटरढचोहैं ॥ रूपप्रहलादजैसेंधरिधरहरिओरनामपरिहरिगिरि
धरनामपढचोहैं ॥ ४ ॥ ८३ ॥ चरनसेवन भक्ति ॥ वचनिका ॥
और एक भक्ति चरन सेवन करन ॥ सुख करन दुःख हरन
ताको जैसैं कमलाकैंपन ॥ जासौं तैसैं अनुरागी भयो रूपमन ॥
॥ कवित्त ॥ करिथिरताईपरिहरिकैंअथिरताईसेवतसदाईसुखवेदमु
खभाख्योहैं ॥ परमसुवासपरिपूरनप्रकाशवासिताहीमैंविलासऔर
कौंनअभिलाख्योहैं ॥ कोमलअमलप्रेमरससौंसरसभरेसोईरसअमि
तसुचितचितचाख्योहैं ॥ भूपरूपसिंहकमलाज्यौंकमलापतिकेच
रनकमलकेशरनमनराख्योहैं ॥ ५ ॥ ८४ ॥ वंदन भक्ति ॥ वच
निका ॥ बहुरौं एक वंदन भगति ॥ अति हित सहित अलस र
हित जैसैं करी अक्रूर नितप्राति ॥ तैसैं राजा रूप करी दंडवति ॥
॥ कवित्त ॥ तनकरिमनकरिवचनरचनकरिनयननिहारिअनुहारिचि
तधरीहैं ॥ पदजानुउराशिरभूमिसौंछुवाईअतिमूरतिमधुरसौंसुमति
अनुसरीहैं ॥ प्रभुपदकंजनपरासिकरकंजनसौंऐसैंदंडवतराचिरचि-

रुचिभरीहैं ॥ पूरिपूरिहितनितप्रतिहीअक्रूरजैसैंभूपरूपबंदनभग
तिभलीकरीहैं ॥ ६ ॥ ८६ ॥ दास्यभावभक्ति ॥ वचनिका ॥ और
एक दास्य भावकी भगति ॥ जे हैं दास जगति ॥ तिनकौं अति
नीकीलगति ॥ जैसैं करी हनुमान सुमति ॥ तैसैं राजा रूपकैं
याही सौंसुरति रति ॥ कवित्त ॥ प्रातउठिआइभाइभरिहरिमंदिरमें
प्रेमपदगाइकैंजगाइछबिछायोहैं ॥ न्हाइकैंन्हवाइतनबसनबनाइग
नभूषनरचाइचोवाचंदनचढायोहैं ॥ नानाभांतिभोगभुगताइघनवी
रादैकैंपाछैंआज्ञापाइकैंमहाप्रसादपायोहैं ॥ दासहनुमानजैसैंआज्ञा
कारीनाथजूसौंरूपभूपऐसैंदासभावदरसायोहैं ॥ ७ ॥ ८६ ॥ स-
ख्यभक्ति ॥ वचनिका ॥ एक भक्ति सखा भावकी ॥ चितहित-
चावकी केवल श्रीनाथही अनुग्रह धरैं ॥ नाहीं सौंसखा भाव करैं ॥
जैसैं अर्जुनसौं कियो ॥ तैसैं राजा रूपसिंहजीकौं श्रीनाथजी अ-
पनौं करि लियो ॥ कवित्त ॥ विविधिविलासनमेंरहासिरहासनमेंगो
पीरसरासनमेंबातनछिपाइकी ॥ गढगिरिघाटनबिषमसमवाटनमेंथि
रचरथाटनमेंनैंकनजुदाइकी ॥ वनघनपुंजनमेंरनजनपुंजनमेंहरिक
रिगुंजनमेंआइकैंसहाइकी ॥ अर्जुनज्यौंनाथजूकौंनिरंतरसंगरहैंरू
पभूपजानीहैंभगतिसखाभावकी ॥ ८ ॥ ८७ ॥ सर्वस्वात्मनिवेदन
भक्ति ॥ वचनिका ॥ और एक भक्ति सर्व स्वात्म निवेदन ॥जातैं
तनमनधन श्रीनारायनहीकौं अरपन ॥ जैसैं राजा वलिकीनौं स-
मर्पन ॥ तैसैं राजारूपसिंहहूकौं यहैं पन ॥ कवित्त ॥ वाहीकेनिमि
त्ततनवाहीकेनिमित्तमनवाहीकेनिमित्तजनरीतिनितप्रतिकी ॥ वेदवि
धिधारनकौंब्रजकेविहारिनकौंधर्मअनुसारिनकौंसंपतिसुभतिकी ॥

सवधनधामकामकामनासमरपनहरिहीकेनामाथितिक्षितिक्षितिपति की ॥ वलिजैसैंनाथजूकेरूपवलिहारिरूपसरवसआतमनिवेदनभगतिकी ॥ ९ ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ सुनियैंद्वितियप्रसंगअव, जिंहिंसुनिमनहरषाय ॥ सानुभावतारूपपर, जगमेंदइदरसाय ॥ ८९ ॥ दिल्लीपतिशयाज्यांहको, फिरआयोफ़रमान ॥ भगवतइच्छाधीन व्हैं, कियोवलखप्रस्तान ॥ ९० ॥ जायवलखकौंसरकरी, फेरिदिल्लीशादुहाइ ॥ दिल्लीपतिकेहुकमतैं, रहेतहांजयपाइ ॥ ९१ ॥ तहां रहतवहुदिनभये, प्रभुसौंभयोवियोग ॥ व्हैंअत्यंतवियोगवश, हियउपज्योयहथोग ॥ ९२ ॥ विनतीपदसुबनायनृप, पठयोपत्रीवीच ॥ मुखियाभीतरियानकौं, लिखीनेहरससींच ॥ ९३ ॥ विनतीपदकेपत्रकौं, तुमनिजकरतैंलेहु ॥ समयअनवसरकेमहीं, प्रभुचरननिधरिदेहु ॥ ९४ ॥ रूपनगरकासीदसंग, आयोपत्रसुखेन ॥ मुखियादिकपत्रसुपढ्यो, नृपकौंअतिसुखदेन ॥ ९५ ॥ भयोअनवसर समयजव, विनतीपदकोपत्र ॥ धरयोचरनचोकीनिकट, पदपायोपदछत्र ॥ ९६ ॥ प्रोहितगिरधरकौंप्रभू, वहिनिशिसुपनेमांहि ॥ यहआज्ञाकीनीसुखद, आजबुलायेयांहि ॥ ९७ ॥ आज्ञादिनकीलिखिमिती, भेजजादियेकासीद ॥ दिल्लीपतिहूवाहिदिन, लिखीसीखताकीद ॥ ९८॥ आज्ञाकीअरुसीखकी, मिलीमितीजवएक ॥ रूपसिंहलखिकहिप्रभू, रखीभक्तकीटेक ॥ ९९ ॥ प्रेमावेशविशेष व्हैं, धरिप्रभुकोहियध्यांन ॥ दरमजलैंपहुंचेजलद, रूपनगरनृप आंन ॥ १०० ॥ श्रीजीकेदरशनकिये, कियनोछावरभेट ॥ सेवाकेसुखमेंपगे, मिटीकुसंगकिफेट ॥ १०१ ॥ ॥ छप्पय ॥ जयज

यजनप्रल्हादहेतनरहरिवपुजाता ॥ जयगरुडासनछाडिचलेगज ग्राहगहाता ॥ जयद्रोपदिहितदेरनहींकियचीरबढाता ॥ जयजयश्री कल्यानरायभक्तनिसुखदाता ॥ जयदीक्षितगोपीनाथदइरूपनगर मधियहसुनिधि॥ जयरूपसिंहनरईशकेसकलमनोरथकरनसिधि ॥ ॥ १०२ ॥ महाराजश्रीरूपसिंहजीबनायभेज्योसो पद ॥ प्रभुजुइ हांरहैंकछुनांई ॥ करियैंगवनभवनादिशिअपनैंसुनियेअरजगुसांई ॥ देखीबलखबरफहूदेखीअधमअसुरअवलोके ॥ मध्यमदेशवेषहूमध्य मइहांकहांलैरोके ॥ भक्तवत्सलकरुणामयसुखनिधिकृपाकरोगिर धारी ॥ रूपसिंहप्रभुविरदलजतहैंब्रजलैंबसोबिहारी ॥१०३ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायांपूर्वार्द्धेश्रीकल्यानरायप्रभूणांनिजवार्ता ॥

## अथ श्रीनृत्यगोपालजीकी निज वार्ता ॥

॥ दोहा ॥ अबश्रीनृत्यगुपालको, निजवार्तासुप्रसंग ॥ लिख्यो सुन्यौंदेख्योकहौं, रंगजंगकेसंग ॥ १ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालके, हैं स्वरूपअभिराम ॥ छोटेश्यामसुजानहैं, बडेरुचिरबलिराम ॥ २ ॥ यहस्वरूपदोऊसुखद, कृष्णसिंहमहाराज ॥ पधरायेनिजशीसपैं, कियसेवासबसाज ॥ ३ ॥ पट्टेपरवानेनपर, श्रीगोपालसहाय ॥ कृ ष्णसिंहकेसमयको, अजहूलिखियोपाय ॥ ४ ॥ कृष्णसिंहकेश्रीपि ता, उदयसिंहवरियाम ॥ मोटाराजाजोधपुर, हैंप्रसिद्धइहिंनाम ॥ ॥ ५ ॥ मोटाराजाउदयसिंह, तिनकेबारहपुत्र ॥ बडेसूरसिंहजोध पुर, अरुसबभयेसुपुत्र ॥ ६ ॥ सूरसिंहअरुकृष्णसिंह, भयेसहोदर भ्रात ॥ आसकरनमातामहसु, जोनरवरगढत्रात ॥ ७ ॥ आसकर

नवैष्णवपरम, बल्लभकुलकेदास ॥ वैष्णवप्रतिसुखकररह्यो, जिन-कोसुजसप्रकास ॥ ८ ॥ सोरहसैंअठसठलखो, संवनमाघसुमास ॥ शुक्लपक्षपंचमिवस्यो, कृष्णगछसुखरास ॥ ९ ॥ कृष्णसिंहकेच्यारसुत, सहसमल्लजगमल्ल ॥ भारमल्लहरिसिंहभो, रिपुदलदलनअटल्ल ॥१०॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकी, यथापुरातनप्रीति ॥ इनसबहीकेसमयमें, सेवाभइसुखरीति ॥ ११ ॥ सतरैसैंइग्यारहै, संवतलौंइहिंभाय ॥ रूपसिंहजूकेसमय, सेवाभईसुहाय ॥ १२ ॥ श्रीजीकौंजबरूपसिंह, पधरायेनिजशीस ॥ तबइनदोउस्वरूपकौं, पुष्टिकरायेवरीस ॥ १३ ॥ दीक्षितगोपीनाथप्रभु, व्हैकैंअतिसंतुष्ट ॥ स्थापनकियश्रीनाथकी, गोदमांहिकरिपुष्ट ॥ १४ ॥ तवैंकहायेगोदके, ठाकुरनृत्यगुपाल ॥ संगरखेसबठोरमें, रूपसिंहमहिपाल ॥ १५ ॥ दिल्लीपतिकोजबतबैं, हूकमभयोअनूप ॥ दक्षिणवलखबंधारकी, मुहमचढेनृपरूप ॥ १६ ॥ तबतबनृत्यगुपालप्रभु, चलतफोजकेमांहि ॥ राजतपीठगयंदके, अंबावाडीमांहि ॥ १७ ॥ जबैंरहतनिजदेशमें, रूपसिंहमहिपाल ॥ तबश्रीजीकीगोदमें, राजतनृत्यगुपाल ॥ १८ ॥ मानसिंहकेराजअरु, राजसिंहकेराज ॥ यहीरीतनिजदेशमें, रहतगोदकेसाज ॥ १९ ॥ भगवतइच्छाधीनव्है, नृपादिल्लीपतिपास ॥ जहांगयेतहांसंगकिय, नृत्यगुपालप्रवास ॥ २० ॥ जबजबनृत्यगुपालप्रभु, संगरहेपरदेश ॥ बहुवैभवजल्लूससौं, सेवाहोतसुदेश ॥ २१ ॥ रजतहेमकेमहलवर, रहतेंप्रभुकेसंग ॥ तिनमेंसदाविराजते, नृत्यगुपालअनंग ॥ २२ ॥ वहवैभवजल्लूसकी, सुबरनचोकीएक ॥ हाजरहैंअद्यापिलौं, कीजैंनहिंअविवेक ॥ २३ ॥

अठारहसैंऊपरैं, प्राप्तच्यारकीशाल ॥ तबैंगयेदिल्लीशपैं, सांवतसिंहनृपाल ॥ २४ ॥ सांवंतसिंहनरेशको, नामनागरीदास ॥ कविता पदसुप्रबंधमें, सबजगबीचप्रकास॥ २५ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकौं, पधरायेनिजसंग ॥ प्रतिउछवउछाहसौं, कीनौंबहुरसरंग ॥ २६ ॥ अठारहसैंऊपरैं, संवतनवकेमांह ॥ ब्रजमंडलथलथललख्यो, नागरकरिउच्छाह ॥ २७॥ तहांवृंदावनबीचमें, भूपनागरीदास ॥ वैष्णवपरमशिरोमणिहि, मिलेसंतहरिदास ॥ २८॥ तबैंकहीहरिदासजू, सुनहुनागरीदास ॥ राजकाजतजिहरिभजो, करिवृंदावनवास ॥ ॥ २९ ॥ राजकाजकेसर्वसुख, तेरेराजकुमार ॥ भोगैंगेतुमयहांरहो, करियैंब्रजसुबिहार ॥ ३० ॥ हरिरससांनेबचनसुनि, नागरदृढचितधार ॥ कियवृंदावनवासलिय, भक्ततख्तशिरभार ॥ ३१ ॥ महाराजश्रीनागरीदासजीयाभावकोवासमयमेंआज्ञाकियोसो पद॥ कृष्णकृपागुनजातनगायो ॥ मनहुनपरसकरसकैंसोसुखइनहीदृगनिदिखायो॥गृहव्यौहारभुरटकोभाराशिरपरतैंउतरायो॥नागरियाकौंश्रीवृंदावनभक्ततख्तबैठायो ॥ १ ॥ ३२ ॥ श्रीहरिदासजीकीप्रशंसाका ॥ दोहा—इस्कचिमनमेंमहाराजश्रीनागरीदासजीकह्यासो दोहा ॥ नकलसांचसौंसरसकरि, करिलीनेदिलदस्त ॥ हरीदासके हालमें, दरदिवालभीमस्त ॥ १ ॥ ३३ ॥ इश्कसांगसांचाकिया, दिलकौंदियाछकाय ॥ हरीदाससबकौंगया, चेटकरूपदिखाय ॥ ॥ २ ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ जोलौंवृंदाबनवसे, भूपनागरीदास ॥ तोलौं नृत्यगुपालप्रभु, राखेनृपनिजपास ॥ ३५ ॥ सेवतनृत्यगुपालकौं, ब्रजरसकोसुखलेत॥साधतनवधाभक्तिनृप, व्हैकैंपरमसचेत॥३६॥

# अथ महाराज श्रीनागरीदासजीकी नवधाभक्ति वर्ननकी भक्तिपंचाशिका तत्रादौ

## गुरुशरण हरि शरण लक्षणम् ॥

॥ छप्पय ॥ आगमनिगमपुरानप्रमानसुकहतजाहिको ॥ संप्रदायसुप्रसिद्धराजमगलसततााहिको ॥ ताकेव्हैंआचार्यशुद्धकुलमांहिप्रकटपर ॥ भक्तिवानगुनवानज्ञानयुतप्रेमरूपवर ॥ ऐसेगुरुकेचरननकीजबशरनगहैंदृढचित्तकर ॥ हरिशरनभक्तिनवधातवहिसिद्धिकरैंनरसुक्खकर ॥ १ ॥ हरिशरनगुरुशरनउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ व्हैंहरिमुखअवतारविदितवल्लभजगजितातित ॥ पुष्टिधर्मकियप्रकठआपपुरुषोत्तमजनहित ॥ श्रीवल्लभअणुभाष्यआदिग्रंथनमधिभाख्यो ॥ नागरनृपमनताहिसंप्रदास्वादसुचाख्यो ॥ सुतदीक्षितगोपीनाथकेप्रभुजीभोतिंहिजोरको ॥ दृढचरनशरननागरगह्योप्रभुजीसुतरनछोरको ॥ २ ॥ श्रवणभक्तिलक्षणं ॥ श्रवणभक्तिहैंमुख्यभक्तिसवतामौंउपजे ॥ श्रवनाकियैंविनअंधमनुजपगकैंसैंरुपजे ॥ करनलगततउवस्तुनामविनसुनिरहिछुपजे ॥ श्रवनकरतहरिसुजसअमितअघजावतधुपजै ॥ त्रिविधितापविध्वंशव्हैसुखपावतप्रेमसमाजको ॥ श्रवनकियैंविनहरिसुजसपशुसींगपूंछविनकाजको ॥ ३ ॥ नवरसमयसवकथाविश्वलौकिकपरलौकिक ॥ जिहिंरसचाहतवहीकरीलीलाहरिलौकिक ॥ अपनीलीलाहेतप्रभूकैसोश्रमकीनौं ॥ मच्छादिकअवतारब्रह्मकइवपुधरिलीनौं ॥ जिहिंइच्छातैंजगतकीयहसृष्टिस्थितिलयहोतहैं ॥ हरिजसाजि

हिंश्रवननकियोतिहिंनरकोसूकरगोतहैं ॥ ४ ॥ असतशास्त्रबकवादच्छाडिभागोतसुनीजै ॥ शुकमुखतैंरसश्रव्योनिगमकोतामेंलीजै ॥ श्रवनकटोरामांहितांहिलहिपानकरीजै ॥ तासौंव्हैंहियअमलतबैंहियहरिदेखीजै ॥ प्रभुकथाश्रवनकेहेतपृथुयाचेश्रवनसुदशसहश ॥ जसश्रवनविनांअनुरागहियहोतननैंनालगनवस ॥ ५ ॥ सुनतभागवतकथातथाअनुसारताहिके ॥कोऊभाषामांहिहोउतिंहिंसुनियचाहिके ॥ सुनतकथारोमांचसजलदृगगदगदवैनां ॥ लोकरीतदविरसानंदमदआवतनैंनां ॥ हरिरूपश्रवनकीछाकतैंछकेरहतहरिजनसुधर ॥ जगसाधुपुरुषऐसैंकहैश्रवनभक्तिकीसिद्धिवर ॥ ६ ॥ श्रवनभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ सुनिसुबोधिनीसहितभागवतभाष्यश्रवनाकिय ॥ पुष्टिमार्गसिद्धांतसमाझिसुनिसुनिहियभरलिय ॥ आनंदघनहरिदासआदिसंतनवचसुनिसुनि ॥ धमारादिमेंकहीवहैंनाहिंकहीसुशुकमुनि ॥ हरिलीलासुनिप्रेमवसदृगसजलवचनगदगदधरिय ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकीश्रवनभक्तिनागरकरिय ॥ ७ ॥ १ ॥

## अथ कीर्त्तनभक्ति लक्षणम् ॥

छप्पय ॥ करतकीरतनभक्तिभक्तहैभक्तिसुसाधैं । श्रवनभक्तिअरुभक्तिकीरतनसंगआराधैं ॥ करतकीरतनछकतचित्तआनंदअगाधैं कीर्तनकेसुप्रभावकोउभवदुखनहिंबाधैं ॥ च्यारौंयुगमेंमुख्यताशुककहीकीरतनभक्तिकी ॥ पैंकलियुगमेंअतिशयकहीजगउद्धारकशक्तिकी ॥ ८ ॥ नामीश्रीभगवानजीवगिनागिनउद्धारे ॥ नामरटतविनसंख्यजीवभवपारसिधारे ॥ कीर्त्तिनपीछैंसधतसबैंसाधनसु-

खकारी ॥ आगमअगनितसाखिदेतताकीजयभारी ॥ बहुकरतयज्ञ तपबहुबरपतबप्रसन्नकछुहोतहरि ॥ लघुकालभक्तिकीर्त्तनकरतव्हैप्र सन्नसोप्रीतिकरि ॥ ९ ॥ कीर्त्तनमहिमाकहतलहैंनाहिंपारविधाता ॥ देशकालधनपात्रआदिनाहिंयहांचहाता ॥ नरशरीरछिनभंगलखहु भवमहादुरंतर ॥ जहांकीर्तनहोततहांहरिवसतानिरंतर ॥ जयअना यासराजीहुवैंकीर्तनतैंयदुवंशरवि ॥ यहसबलछनसरसव्हैंतिहिंकी र्तनभक्तिसुकहतकवि ॥ १० ॥ कीर्त्तनभक्तिउदाहरनमहाराजश्री नागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ अखिलविश्वकोरूपनंदनंदनसुखका री ॥ ताकोजन्मविवाहबाललीलारुचिकारी ॥ हासविलाससुरास जासुकेकौतुकभारी ॥ लीलाकुंजनिकुंजप्रेमरसरसेविहारी ॥ तिंहिं सुरनरभाषाआदिमेंपदरचिकेतग्रंथाकिय ॥ यौंनागरनृत्यगुपालकी कीर्तनभक्तिकिसिद्धिलिय ॥ ११ ॥ स्मर्नभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ श्रवनकीरतनभक्तिकोसुफलभक्तिस्मरनहैं ॥ हरिस्मरनकेहोतजा तामिटैत्रिविधिजरनहैं ॥स्मरनकरतहरिगेहकरतअपनौंजनहियकौं॥ कीटभृंगदृष्टांतसमझिसमझावहुजियकौं ॥ ज्यौंविषयसुखनिकौंस्म रनकरिविषयमांहिवैंचितलहैं ॥ त्यौंस्मरनकरतछाकिजाततवस्मरन भक्तिसिद्धिसुवहैं ॥ १२ ॥ स्मर्नभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरी दासजीमें ॥ छप्पय ॥ करिकरिनितसतसंगश्रवनहरियशकोकी नौं ॥ ताकोकियकलगांनकाव्यपदवंधप्रवीनौं ॥ वहिरदृष्टिकौंमूंदि वहुरिमनरसतिंहिंभीनौं ॥ पग्योप्रेमहरिस्मरनमांहिज्यौंजलनिधिमी नौं ॥ नितस्मरनकरतस्थलस्थलसकलब्रजलीलाअनुभवताकिय ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकीयौंस्मरनभक्तिनागरछाकिय ॥ १३ ॥ पदसेवन

भक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ कहीशास्त्रकेमांहिकरनजोसेवारीतिसु ॥
कीनीवहिविधितबैंदेहफललीनौंजीतिसु ॥ सेवाहितपरब्रह्मकीसुप्र
तिमाकहिशुकमुनि ॥ शिलादारुमणिधातुमृत्तिकाचित्रलेप्यगुनि ॥
अरुमनोमयीकरिअष्टविधिप्रतिमापरमानंदकी ॥ शुचिरसस्वरूप
सुखकंदश्रीनंदनंदब्रजचंदकी ॥ १४ ॥ जैसीव्हैसामर्थ्यकरैंन
रतैसीसेवा ॥ नानाविधिसौंटहलकरतजनजानतभेवा ॥ नितप्रति
सेवाकरतसुखदहरिरूपनिहारैं ॥ सुखअसुवनकीचलैंजबैंनैननितैं
धारैं ॥ जिहिंबढतप्रेमअनुरागातिंहिंसमताकोउनकरिसकैं ॥ अरुट
हलकरतहरिभक्तकीतिंहिंगुनअहिपतिकहिथकैं ॥ १५ ॥ आदिभा
गवतपद्मपुरानसुदेवतसाखी ॥ हरिहरिजनकीटलकीसुनिजमुखयौं
भाखी ॥ मेरोभक्तकहायमोहिजनकोनहिंचेरो ॥ मैंमेरोनाहिलखौंता
हिपुनिरखौंननेरो ॥ हरिहरिजनपदरतिकरतपरमशांतिकौंचितल
हैं ॥ अैसेलच्छनहोततबपदसेवनभक्तिसुकहैं ॥ १६ ॥ पदसेवनभ
क्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ वसुविधिप्र
तिमामांहिमनोहररुचिरस्वरूपसु ॥ नृत्यगुपालसुनामललितसबअं
गअनूपसु ॥ दीक्षितगोपीनाथपुष्टकियरूपाविनयधीर ॥ पधरायेक
ल्यानरायकीगोदकृपाकरि ॥ नृपताहिस्वरूपकौंसंगलैंब्रजवृंदाव
नमधिवासिय ॥ सबयथासमयकरिटहलइहिंपदसेवनभक्तिसुकरिय
॥ १७ ॥ शय्यामेंपधरायचरनसेवनमनदेवत ॥ कमलाकौंसुखप्राप्त
वहैंअनुभवसुखलेवत ॥ साधुसंतकीटहलकरतपुनिनिर्मलकरमति ॥
लखिलखिरूपअनूपछाकछबिछाकतछितिपति ॥ मनवचनकर्मसौं

१ इसका अर्थ भेद. २ आठप्रकारकी प्रतिमा पहिलेकही जिनमें.

प्रेमधरिहरिहरिजनकोशरनलिय ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकीयौंपदसेव नभक्तिसुकरिय ॥ १८ ॥ अर्चनभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ सींचत मूलहिहोतपत्रअरुडारहरितमुख ॥ सबजगकेहरिमूलसमझिअर्चेहु व्हैसनमुख ॥ अर्चनविधिआचार्यमार्गकेजोकहिनिजमुख ॥ तिंहिं विधिअर्चनकरतविश्वमधिपावतसबसुख ॥ हरिमायाहरिपैंधरतअ पनीनहिंसमझीनजिंहिं ॥ करतसफलधनतैंसुतनअर्चनभक्तिसुकह ततिंहिं ॥ १९॥ अर्चनभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमैं ॥ ॥ छप्पय ॥ स्नानादिकसौंदेहशुद्धिकरिमंदिरअंतर ॥ देयसोहनी आदिसाजसजिसकलसुखंतर ॥ करिमंगलाकरिवायस्नानशृंगार धरंतर ॥ छबिलखिमनवलिहारिलेतरसस्वादनिरंतर ॥ करिधूपदीप धरियतसुनमिराजभोगअर्पनकरत॥ पुनिनीरांजनकरिनेहसौंअनव कासकरिहरिररत ॥ २० ॥ करिउत्थापनधरियभोगकरिसंध्यारा त्तिक ॥ सुखसौंशयनकरायफेरवांचतहरिवार्तिक ॥ तनमनधनकौं भक्तिरीतयौंकरिलियसार्थिक ॥ श्रीवल्लभमुखराचितसुविधिसाधीप रमार्थिक ॥ नृपरूपसिंहज्यौंप्रेमधरिनिजकुलरीतिसुअनुसरिय ॥ नृपनागरनृत्यगुपालकीअर्चनभक्तिसुसिधिकरिय ॥ २१ ॥ ५ ॥ वंदनभक्ति लक्षणम् ॥ छप्पय ॥ प्रभुपदपंकजनमतशीसहीहरिअ पनावत ॥ देनिजभक्तिप्रसंगभक्तशिरभारबढावत ॥ ताहिभारतैंन मतशीसहरिजनजहांपावत ॥ लहैंउच्चपदजितोचढतजलनलज्यौं आवत ॥ दशअश्वमेधसमकहतफलएकबेरवंदतहरिहि ॥ भवबंध कटैंबंदनसटैंवंदनभक्तिसुकहततिंहिं ॥ २२ ॥ बंदनभक्ति उदाहन महाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ प्रातऊठिहरिनामलेयवं

दनकियनितप्रति ॥ पुनिमंदिरमधिजायकरियवंदनप्रभुपदप्रति ॥
जबजबहरिसुधिआतनमततबतबसुखकरिअति ॥ संतनकौंलखि
जहांतहांवंदनाकियवरमति ॥ कियतनमनवचसाष्टांगसौंज्यौंअक्रू
रत्यौंधारिरिजिय ॥ नृपनागरनृत्यगुपालकीवंदनभक्तिसुसिद्धकिय
॥ २३ ॥ दास्यभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ हरिकोव्हैंकैंदासदासके
चिन्हसुधारैं ॥ तुलसीमालाकंठतिलकमधिभालसंवारैं ॥ गोपीचं
दनछापधारहरिप्रेमसुभारैं ॥ विनांचिन्हनहिंचीन्हसकतमनइष्टजु
सारैं ॥ ज्यौंवेश्यासुतकेवापकोबिनांचिन्हनिर्धारनहिं ॥ त्यौंदेखोस
बहिशास्त्रतैंविनांचिन्हनहिंदासकहिं ॥ २४ ॥ जिहिंतनद्वादशति
लकहोयजोअंतसमयमें ॥ वाकौंलखिजमदूतजातडरिव्हैविस्मयमें॥
पुनिप्रभुपदकीप्राप्तिहोयजिहिंअतिसुखमयमें ॥ महिमातिलकप्रभा
वसकैंकहिकोकुवलयमें ॥ जियतिलकमनोहरजानिकैंरामरच्योसि
यभालमधि ॥ सबसंतकहतइहिंभक्तिकौंदास्यभक्तिप्रेमसुअवधि ॥
॥ २५ ॥ दास्यभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छ-
प्पय ॥ गौरवरनतनलसतलसतपीतांबरकटिपर ॥ लसतउपरनाकं
धलसतउपवीतसुसुंदर ॥ तुलसीमालालसतकंठलासितिलकभालव
र ॥ कबहुप्रभूपरकरतमोरछ्ललसतालियैंकर ॥ वरचामरढोरतकब
हुकरकबहूपंखीकरलियैं ॥ करलसतआरसीकबहुहरिरूपसुधानाग
रापियैं ॥ २६ ॥ प्रभूप्रसादीपुष्पमालनिजकंठहिधारत ॥ हरिउच्चि
ष्टप्रसादलेयअंगअंगसुपारत ॥ प्रभुअर्पितवसनादिसर्वसौंगांधिपदा
रथ ॥ बिनअर्पनकरिकोउवस्तुधारतनहिंस्वारथ ॥ सतसंगतिपरभा

---

१ पृथ्वी.

वर्तैदासक्रियासजिकैंसुहिय ॥ नागरनृत्यगुपालकीदासभक्तिकीसि द्धिलिय ॥ २७ ॥ ॥ ७ ॥ सख्यभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ कहां जीवकरिसकैंसख्यताप्रभुसौंभाई ॥ पैंकरनौंआवश्यरीतिहरिजनजो गाई ॥ सख्यभक्तिमैंसर्वभक्तिसौंयहअधिकाई ॥ करतसखाहित्त आपयतननितयादवराई ॥ प्रभुग्वालनिकौंकांधैलियैंअर्जुनसौंमित्र त्वलहि ॥ स्मृतिपुराननमैंसकलमुनियहसख्यभक्तिलच्छनसुकहि ॥ ॥ २८ ॥ सख्यभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छ- प्पय ॥ लीलाकुंजनिकुंजरहसिरसमनअधिकारी ॥ पदप्रबंधरचि कह्योसखाज्यौंमतिअनुसारी ॥ तिंहिंकबिताकोगानकियोयुगकुंज बिहारी ॥ अर्जुनज्यौंसबठौरकरीअरुरक्षाभारी ॥ नृपरचितग्रंथम धिप्रकटहैंयहप्रभावयहांकछुकहिय ॥ यौंनागरनृत्यगुपालकोसख्य भक्तिकौंसिद्धकिय ॥ २९ ॥ ॥ ८ ॥

## अथ आत्मनिवेदन भक्तिलक्षणम् ॥

॥ छप्पय ॥ तनधनातियसुतगेहआदिसबप्रभुकौंधारैं ॥ अपनौं समझैंकछुनजानिप्रभुकोंरखवारैं ॥ यौंआवश्यकदेहगेहकेकारजसा रैं ॥ हरिसौंविनतीकरिसुद्रव्यबहुअल्पउपारैं ॥ हरिउच्छवादिबहु द्रव्यसौंसबसंमंधहरिअनुसरहिं ॥ परप्रेमछकेहरिजनकहतआत्मनि वेदनभक्तिइहिं ॥ ३० ॥ आत्मनिवेदनभक्तिउदाहरनमहाराजश्री नागरीदासजीमैं ॥ छप्पय ॥ सिंहासनयुवराजदियोपितुराजसिंह जव ॥ उच्छवफागविहारआदिबहुकीनमहातव ॥ पुनिसुतकौंदैरा जवडनकीरीतिकहीसब ॥ यहप्रभुहीकोराजजानिकरियैंअबकरत व ॥ करिवृंदावनकोवासनिजतनधनसर्वसुसफलकिय ॥ यौंनागर

नृत्यगुपालकीआत्मनिवेदनभक्तिलिय ॥ ३१ ॥ ॥ १ ॥ इनन
वधाभक्तिसौंदशमप्रेमप्रकटैयातैंप्रेमवर्णनं ॥ छप्पय ॥ इनतैंउपजैं
भावभक्तिअरुप्रेमभक्तिबर ॥ जिहिंविनआनउपायकियैंवशहोतन
गिरधर ॥ वहैंप्रेमविधितीनकह्योरसलीनसुमुनिवर ॥ लघुअरुमध्य
मकहतप्रेमपूरनअतिसुखकर ॥ जानतहौंकछुनांहितउक्षामिहहुप्रेमी
हरिसुजन ॥ लच्छनइनकेकहतहौंसमझहुचितदैमुदितमन ॥ ३२ ॥
भावभक्तिलक्षणं ॥ छप्पय ॥ कथाकीरतनसुनतलगतअतिनीकी
ताकौं ॥ जगतवातसबलगतसकलविधिफीकीजाकौं ॥ अलिसुगंध
हितजातकथाहितज्यौंजबधावैं ॥ समयजन्यजहांवादहोततवअति
दुखपावैं ॥ पूरनभक्तिप्रभावकोदीपतमहात्म्यअतिहीप्रबल ॥ हरि
गुनलीलारूपकोजबव्हैंप्रकाशहियमेंअचल ॥ ३३ ॥ कोमलव्हैंहि
यभूमिरीझमयवेलिसरसता ॥ कछुरीझतहरिसुजसताहिसौंहोयसर
सता ॥ भावतउत्तमवस्तुतहींहरिसुधिसुवरसता ॥ व्रजवृंदाबनवास
दरशकीबढततरसता ॥ हरिभक्तपृथकतानहिंचहैंओगुनतजिगुनकौं
गहैं ॥ लखिप्रेमभक्तधनधनकहतभावभक्तियाविधिलहैं ॥ ३४ ॥
भावभक्तिउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजीमें ॥ छप्पय ॥ शिशु
ताअरुयुवराजतासुमाधिहरिचितलायो ॥ वादजानिबकवादकथाकी
र्त्तनमनभायो ॥ राजकाजलखिव्यर्थवासवृंदावनचायो ॥ ओगुनत
जिगुनगहेसंतसबधनधनगायो ॥ उत्तमपदार्थजहांतहांसुलखिहरि
हीकीहियसुधिकरिय ॥ नृपनागरनृत्यगुपालकीभावभक्तियौंहिय
धरिय ॥ ३५ ॥ लघुप्रेमलक्षणम् ॥ छप्पय ॥ छुटतननवधाभक्ति
नेमसबकरतप्रेमयुत ॥ गदगदकंठसुहोयकबहुतनपुलकअश्रुयुत ॥

समयपाययौंहोयबहुरिव्हैंपूरवकोंसुधि ॥ आवतयौंजबप्रेमतबैंजग लज्जायुतबुधि ॥ यहयाहीतैंलघुप्रेमहैंकहतसकलसुज्ञानमुनि ॥ हियकामक्रोधव्हैंआतज्यौंसमयपायव्हैंयहसुपुनि ॥ ३६ ॥ कामादिक ज्यौंमिटैंसमयत्यौंप्रेमसुमिटवत ॥ छोटोयाकौंजानितजतजोजग सौंसिटवत ॥ तनकअग्निज्यौंबढतबहुतबनदहिकैंगिटवत ॥ जलनिधिअंबुफुंहारपवनवशलखितनभिटवत ॥ ज्यौंमहोरमहोरइकअरुबहुतसबैंस्वर्णहीकीसुगुनि ॥ भेदपराक्रमजानिकैंलघुप्रेमकहतइहिंविधिसुमुनि ॥ ३७ ॥ लघुप्रेमउदाहरनमहाराजश्रीनागरीदासजींमें ॥ ॥ छप्पय ॥ नवधासाधतनेमप्रेमकोपंथसुधारयो ॥ रहसिप्रेममयकबहुपुलकितनदृगजलढारयो ॥ राजकाजतिंहिंदियोदावगुरुमुखरखवारयो ॥ समयपायबढिगयोतबहिवहब्रजसुखसारयो ॥ कामक्रोधलोभादिकौंकरिभष्मतहांअविचलरहिय ॥ यौंश्रीनृत्यगुपालकोलघुप्रेमभयोनागरसुहिय ॥ ३८ ॥

## अथ मध्यमप्रेम लक्षणम् ॥

॥ छप्पय ॥ मध्यमप्रेमावेशरूपयौंहरिजनगावत ॥ रूपभावनामांहिरहतदृगछकिछाबेछावत ॥ अधरनमेंमुसिकांनथाकितमुखप्रफुलितमृदुरव ॥ झलमलातदृगनीरपुलकितनहोयमंदगव ॥ अरुचलतजबैंडगमगतपगमनहीमनबातैंकरत ॥ श्रवनादिकसुखभक्तिकोगहिसमयज्ञाननहिंचितधरत ॥ ३९ ॥ श्रवनकीर्तनस्मरनकरत अर्चनजबबंदन ॥ इनपांचनितैंप्रकटिप्रेममादकताफंदन ॥ चढतप्रेमकीछाकतबैंचालतनिजछंदन ॥ व्हैंउन्मादस्वरूपमहाकलिमलदु

---

१ लघुप्रेम. २ निजछंद अर्थात् स्वछंद नहीं चलै ।

खकंदन ॥ कबहुरुदतिनाचतिहसतिकहिवाहवाहराहिजातमुनि ॥ सुंदरमध्यमप्रेमतैंयहलच्छनव्हैमतिधीरगुनि ॥ ४० ॥

## अथ मध्यमप्रेम उदाहरन महाराज श्रीनागरीदासजीमैं

॥ छप्पय ॥ जातिपांतिकुलनेमराजतजिभोब्रजबासी ॥ मोह नमनुमुखजापराधकानामउपासी ॥ करिअनुभवपुनिवर्तमानलीले व्प्रकासी ॥ तिंहिंप्रभावबढिभावलगनकीभईउजासी ॥ हरिरसानं दकीप्राप्तिकौंप्रेमापंथप्रवेशतैं ॥ समयजन्यसबज्ञानकौंजबभूलेप्रेमा वेशतैं ॥ ४१ ॥ अंकुररूपसुभयोप्रेमलघुजबैंहीयमधि ॥ हरिगुनच र्चाकहतसुनतसचारीविधिमधि ॥ आनंदघनहरिदासआदिसौंसंत सभामधि ॥ प्रकटभयेअनुभावसवैंयाकेजुयथावधि ॥ व्रजवृंदावन वासबसिवरभक्ततक्तशोभासुलहि ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकोनृपनाग रमध्यमप्रेमगहि ॥ ४२ ॥

## अथ पूरनप्रेमलक्षणम् ॥

छप्पय ॥ फिरतदुहाईदेहबीचजबनेहनृपतिकी ॥ संचारीगति प्रेमभयोवहस्थाईगतिकी ॥ तनमनजबसुधिविसरजातगतिबहिरट ष्टिकी ॥ ऐसेजनकोदरसहोतहरिसुधावृष्टिकी ॥ परिपूरनप्रेमस्वभा वतैंप्रेमानंदसौंपूरिव्हैं ॥ हियप्रेमजुस्थाइहोतहीनवधानेमसुदूरिव्हैं ॥ ॥ ४३ ॥ जैसेगुडियनखेललगततियकोहियप्यारो ॥ अंकभरतनाहिं भुजनबीचजोलौंपियप्यारो ॥ पियगरवांहींदियैंबढतसुखजगतैंन्या रो ॥ निसिदिनकीसुधिरहतनांहिनाहिंपियहियन्यारो ॥ तियजहां

तहांपियहीलखैंऔरनदरशातप्रेमवश ॥ ज्यौंभाषतकृष्णस्वरूजग हरिजनकेहियप्रेमवश ॥ ४४ ॥ इंहिंविधितैंजबचढतरंगमनकृष्णप्रेमको ॥ कृष्णमईदृगहोतसबैंसुधिगसाप्रेमको ॥ सन्निपाताजिन्हकजुताहिकीदशापात्रको ॥ नैननीरमुखमौंनरहततनकहनमात्रको ॥ पुनिपूरनप्रेमानंदतैंदेहतजतहरिमिलताजिंहिं ॥ लच्छनऐसेमिलतमुनिपूरनप्रेमसुकहतातिंहिं ॥ ४५ ॥

## अथ पूरनप्रेम उदाहरन महाराज श्रीनागरीदासजीमें

॥ छप्पय ॥ गुरुसेवतबहुशास्त्रसुनतनवधाजियजागी ॥ नवधातैंसतसंगभयोतबममताभागी ॥ वृंदावनकेवासप्रेमकीआशालागी ॥ कृष्णमईसबविश्वलखतदृगभयेसभागी ॥ तबऐसेक्रमसौंबढिचलेलैंसुखप्रेमव्रजारको ॥ जबनागरनृपमारगगह्योलीलानित्यविहारको[1] ४६ ॥

## अथ सतसंगति महिमा वर्ननम् ॥

॥ छप्पय ॥ वेदपाठअरुगंगस्नानसो[illegible]रिथसेवन ॥ भूमिपरिक्रमासवदानभूम्यादिकदेवन ॥ [illegible]ादतदअरुमहारमानकैवल्यसुलेवन ॥ जपतमंत्रकौंकरतसविधिधूप[illegible]त खेवन ॥ अरुबहुतकष्टकरितपतपैंजायगरैंहिमशैलमहिं ॥ नरपूर्वकथितसबकरततनुसतसंगतिसमहोतनहिं ॥ ४७ ॥ सतसंगतिमहिमासुआपउद्धवप्रतिभाखी ॥ यहमोकौंवशकरतत्यौंसुविधिआननराखी ॥ व्हैंकुसंगकोनाशअविद्याहूकीखाखी ॥ वहीधन्यजगमांझमधुरतायाकीचाखी ॥ सबजगतदेहसंबंधकेतूटतनातेयाहितैं ॥ दुर्ल्लभतासुखलाभव्हैंयहसबतैंबडीसुता

1 नित्यविहारलीलाकामार्गगह्याअर्थातपरलोकवासीहुये.

हितै ॥ ४८ ॥ अमरअोरगंधर्वदैत्यपुनिराक्षसजैसे ॥ मातुपस्त्रीअरु शूद्रतरेवेश्यागजकैसे ॥ राजसतामसभरेतरेअंत्यजजनवैसे ॥ सत संगतितैंतरेगनेजावतकहिकैसे ॥ अतिदुर्लभप्रभुकीप्राप्तिजोयातैंसुख सौंलहतनर ॥ गोपदसमानसुखमानकैभवसागरकौंजाततर ॥४९॥

## अथ सतसंगति महिमा उदाहरन महाराज श्रीनागरीदासजीमें ।

छप्पय ॥ विप्रनिसौंसुनिवेदभागवतअर्थसुधारयो ॥ हरिदासहि तमानकहीसोहीअनुसारयो ॥ मुरलिदासअरुवंसिदाससौंसमयगु जारयो ॥ आनंदघनकोंसंगकरततनमनकौंवारयो ॥ नर्तितगुपाल मिलिजानयौंसतसंगतिनागरकरिय ॥ गोपदसमानसुखमानकैंभव सागरकौंलहितरिय ॥ ५० ॥ दोहा—कहीभक्तिपंचाशिका, जय कविसमझिप्रसंग ॥ याकेबांचतसुनतहिय, बढहिभक्तकोरंग॥५१॥ श्रीनागरमहाराजके, पूरनप्रकटीभक्ति ॥ ताकेकहिवेहेतनाहिं, मेरी मतिकीशक्ति ॥ ५२ ॥ तउजवानमहाराजजू, दीनीरीतबताय ॥ तैसैंहियाग्रंथमें, दीनीप्रकटजताय ॥ ५३॥ ग्रंथभक्तिमगदीपिका, र च्योनागरीदास॥तिंहिंमतसौंलच्छनकहे, हरिजनकोजयदास॥५४॥ नागरनृपकेरचितहैं, प्रभुयशकेबहुग्रंथ ॥ तिनसौंअनुभवकरियहां, उदाहरनदियग्रंथ ॥ ५५ ॥ प्रेमरूपहीकृष्णहै, कृष्णरूपहीप्रेम ॥ ज्यौंभावैत्यौंहीभजैं, सगुणअगुणविननेम ॥ ५६ ॥ ९२ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां पूर्वार्द्धे श्रीमन्नृत्यगुपालनिजवार्त्तायां महाराज श्रीनागरीदास देववर्मणा नवधाभक्ति वर्णनं भक्तिपंचा-

शिका ॥ दोहा—अठारहसैंऊपरैं, संवततेरहजान ॥ चैत्रकृष्णतिथि द्वादशी, व्रजतैंकियोप्रयान ॥ ९३ ॥ कुटंबयात्राहेतुनृप, रूपनगर मधिआय ॥ देशकोशसुतभ्रातुको, लीनौंसुखसरसाय ॥ ९४ ॥ तबैंपधारेसंगही, श्रीमन्नृत्यगुपाल ॥ रूपनगरअरुकृष्णगढ, जहांगयेमहिपाल ॥ ९५ ॥ अठारहसैच्यारदश, मासहितियश्रा सोज ॥ शुक्लपक्षएकादशी, फेरधरीव्रजमोज ॥ ९६ ॥ पीछेईहिं दिनगमनकिय, नागरनृपउरधार ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालतब, व्रज कौंकियोविहार ॥ ९७ ॥ जबैंश्यामआज्ञाकरी, नृपकौंसुपनेंमांहि॥ लीलानित्यविहारमम, अबदेखहुचितचांहि ॥ ९८ ॥ अठारहसैंबी शइक, तबभादववदितीज ॥ लीलानित्यविहारको, नागरमगगहि रीझ ॥ ९९ ॥ अठारहसैवीशइक, संवत्सरमेंजांन ॥ सोहतनृत्यगु पालप्रभु, फिररूपनगरआंन ॥ १०० ॥ रूपनगरसुपधारिकैं, श्री मन्नृत्यगुपाल ॥ श्रीजीकीवरगोदमें, बैठेरसिकरसाल ॥ १ ॥ तजि श्रीजीकीगोदकौं, श्रीमन्नृत्यगुपाल ॥ नांहिविराजेआजलौं, न्यारे काहूकाल ॥ १०२ ॥ पृथ्वीसिंहनरेशके, पुत्रद्वितीयजवान ॥ ध र्मधीरताकोलसैं, मानौंमूरतिवान ॥ १०३ ॥ राजकुमारजवानके, कलियुगमेंकमनीय॥भगवतइच्छासौंभयो, यहैंमनोरथहीय॥१०४॥ करीअरजअतिगरजकरि, ह्वैंअतिआतुरवान॥ पृथ्वीसिंहनरेशसौं, राजकुमारजवान ॥ ५ ॥ उत्तमगरजीदेखिकैं, प्रभुकीमरजीजान॥ सुनिअरजीहूकमकियो, सुनियैंकुंवरजवान ॥ १०६ ॥ श्रीमन्नृत्य गुपालके, दोऊरुचिरस्वरूप ॥ कृष्णसिंहमहाराजसौं, अपनेशी सअनूप ॥ १०७ ॥ जैसीनिधिश्रीनाथजी, अपनेराजतशीस ॥

तैसीनृत्यगुपालकी, लसतराजकेशीस ॥ १०८ ॥ यहपधरावेयोग नहिं, सुनियैंकुंवरजवान ॥ तदपि तिहारोभावलखि, पधरावैंसुख मान ॥ १०९ ॥ श्रीमतविठ्ठलनाथप्रभु, गोस्वामीगुरुदेव ॥ जवैंप धारैंगेयहां, तवबिनवौंयहभेव¹ ॥ ११० ॥ विनतीसुनिगुरुदेवजव, आज्ञाकरैंबरीश ॥ तब उनकेश्रीहस्तसौं, पधरावैंतुवशीस ॥ १११ ॥ समयआंनऐसोभयो, हरिइच्छाअनुसार ॥ पृथ्वीसिंहनरेशको, भो परलोकविहार ॥ ११२ ॥ इंहिंअवसरमाधिकृष्णगढ, श्रीमतगुरुमहा राज ॥ आपपधारेकरिकृपा, पुष्टिधर्मकेपाज ॥ ११३ ॥ विनतीगु रुमहाराजसौं, कियअग्रजशार्दूल ॥ पूर्वभयोवृत्तांतसब, मालुमकि यसुखमूल ॥ ११४ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालके, कहेजुदोयस्वरूप ॥ छोटेनृत्यगुपालजी, नंदनंदशुचिरूप ॥ ११५ ॥ करिवात्सल्यस्व रूपयह, दियोशीसपधराय ॥ नृपजवानकोचित्तकी, आतुरतामन भाय ॥ ११६ ॥ उगनींसैछत्तीसमें, पोषशुक्लपखजांन ॥ अष्टमिश सिअरुअश्विनी, सिद्धियोगसरसांन ॥ ११७ ॥ शयनसमयश्रीह स्तसौं, गुरुमहाराजाधिराज ॥ श्रीश्रीजीकीगोदसौं, पधरायेजनका ज ॥ ११८ ॥ कृष्णगढ्ढकेदुर्गमें, जीवरखाकेमांहि ॥ महलएकचो खंडिया, चंद्रमहलकेमांहि ॥ ११९ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकौं, दिये तहांपधराय ॥ उच्छवभोगसमार्पिकैं, अरुअचवनकरिवाय ॥ १२० ॥ टेरोदूरकरायकैं, श्रीविठ्ठलद्विजराय ॥ तिलककियोश्रीहस्तसौं, वीडा वस्त्रधराय ॥ १२१ ॥ शंखझल्लरीघंटअरु, दुंदुभिझांझमृदंग ॥ वा जनलागेअरुभयो, गानवधाईरंग ॥ १२२ ॥ अतिउत्साहउमंगक

---

1 भेद.

रि, पाटोत्सवसरसान ॥ श्रीविट्ठलकीमहरसौं, कीनौंनृपतिजवान ॥ १२३ ॥ कितेदिवसचोखंडिया, महलमांहिगोपाल ॥ नृपजवान शिरकरि कृपा, राजतदीनदयाल ॥ १२४ ॥ श्रीजीकेमंदिरमहीं, हुतोमहलवरएक ॥ तहांपधरावैंयह भयो, नृपकेहृदयविवेक ॥ १२५ ॥ वहीमहलसुधरायकैं, मंदिरयोग्यकराय ॥ श्रीजीकेअतिनिकटसौं मनमेंअतिहरषाय ॥ १२६ ॥ कवित्त ॥ शय्यागृहबनायओरसोई बनाईवेसस्थानजलपानकोपवित्रमनभावनौं ॥ फरसफँवारेहोजकी नेमकरानैंहीकेसुधासौंसवारेस्वच्छसाचेहींढरावनौं ॥ काचकेकिंवार चारुखचितरजतवीचकेतेद्दारबंदकैंरुनूतनकढावनौं ॥ महलकोव न्यौंहैंयोरसिकरसालललालनर्तितगुपालजूकोमंदिरसुहावनौं ॥ १२७ ॥ दोहा—उगनीसैंसैंतीसमैं, भादववदिवरियाम ॥ अष्टमिशनिअरुरो हिणी, हर्षयोगअभिराम ॥ १२८ ॥ यादिननृत्यगुपालकौं, याहि महलकेमांहि ॥ पधरायेअतिप्रीतिसौं, मनमेंवहुतउमांहि ॥ १२९ ॥ वरचोखंडेमहलमें, मंगलभोगधराय ॥ अरुमंदिरकेमहलमें, लिये वेगपधराय ॥ १३० ॥ यहांपंचाम्रृतस्नानके, कियदर्शनजनसर्व ॥ छविलखिनृत्यगुपालकी, मिटतमदनकोगर्व ॥ १३१ ॥ कवित्त ॥ राजैंशीसजूरारूराभालहैंविसालबंकभृकुटीचपलनैनश्रौनछविभा वनी ॥ उन्नतकपोलचारुनाशिकाअधरबीचमुसकिचिबुकग्रीवाअ लकझुकावनी ॥ अंसउपरैंनाउच्चवामकरपीनउरदच्छकरलड्डुवाहैंक टिलचकावनी ॥ पीतपटझुकेउरुनर्तितगुपालजूकीकोटिकाममूर तिसौंसूरतिसुहावनी ॥ १३२ ॥ दोहा—चरननिमैंनूपुरझनक, रणित किंकिनीलंक ॥ करनिकटककंठाभरण, मुखलखिलजितमयंक ॥

॥ १३३ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालको, यावानिककौंदेख ॥ दर्शनचाह भरेनके, लगतननैंनानिमेख ॥ १३४ ॥ दर्शनीनिवोडायकैं, मंगल स्नानकराय ॥ बहुभारीरत्नानिसौं, कियशृंगारबनाय ॥ १३५ ॥ भयेसुदर्शनतिलकके, छायोबहुआनंद ॥ राजभोगकेफिरभये, दर्शनपरमानंद ॥ १३६ ॥ व्हैंउत्थापनभोगअरु, संध्यारार्तिकहोय ॥ शयनआरतीकेभये, दर्शनरससुखजोय ॥ १३७ ॥ भोदर्शनजागरनके, आईनिशिअधरात ॥ तबभोदर्शनजनमके, निजजनमन हुलसात ॥ १३८ ॥ नंदमहोत्सवकोजुसुख, वर्ननाकियोनजाय ॥ नंदरायकेगेहको, सांचोसुखसरसाय ॥ १३९ ॥ पलनैंनृत्यगुपालप्रभु, निजमंदिरमेंझूल ॥ पुनिश्रीजीकीगोदमें, जाकैंपलनैंझूल ॥ ॥ १४० ॥ श्रीजीकेसंगझूलकैं, निजमंदिरहिपधार ॥ करनलगेनितरीतसौं, सेवासुखस्वीकार ॥ १४१ ॥ छप्पय ॥ लखिसुकुमारसुढारपीनतनलजितमीनधुज ॥ चरनकमलरजचंचरीकचितचहतवृषभधुज ॥ ग्वालबालसंगदेखिचांकितचितभयोहंसधुज ॥ प्रकटपुहमिमयपरममित्तपदपायोकपिधुज ॥ कल्यानरायकीगोदकेऐसेनृत्यगुपालबर ॥ जयराजतनित्यसुखेनसौंनृपजवानकेशीसपर ॥ १४२ ॥ दोहा—कितेदिवसपीछैंनृपाले, मंदिरमणिमयकीन ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालको, सुनिसुखपातप्रवीन ॥ १४३ ॥ मकरानेकोफरसजहां, शोभितस्वेतविशाल ॥ मनौंसतोगुनरूपधरि, भयोप्रकटछविमाल ॥ १४४ ॥ मकरानेकेकटहरे, शोभितफरसमझार ॥ मनौंसतोगुनकेभये, अंकुरसरसअपार ॥ १४५ ॥ होजफंवारेकोसरस, फरस मझारसुहात ॥ कीनौंमनवतकामतहां, मनुमनमथनिजहात ॥ १४६ ॥

सबैभांतिदर्पनमई, स्वर्णगचितसरसात ॥ शरदचंद्रिकामेंमनौं, दामिनिदुतिदमकात ॥ १४७ ॥ दर्पनकेखंभारुचिर, शोभितहैंइहिंभाय ॥ हरनारदहरिदरशहित, मनुठाढेहरपाय ॥ १४८ ॥ टोडीखंभाअरुगलत, देहलिसिगदलिआदि ॥ बनवाईसबकाचकी, स्वर्णगचीसरसादि ॥ १४९ ॥ लंबाईचौडाइको, जहांकोजितनोमाप ॥ तहांतिहिंआकारवर, गचाकियकाचअमाप ॥ १५० ॥ दर्पनभित्तिनमेंसरस, जितजिततहरिदरसात ॥ मनुभक्तनकेहेतप्रभु, रूपअनेकलखात ॥ १५१ ॥ दर्पनभित्तिनमेंसरस, जिततित्तहरिदरसात ॥ दक्षसुताकोदरशभो, सोलीलालखिजात ॥ १५२ ॥ शोभितहैंतहांरत्नके, जटितझाडबहुभांत ॥ मनुउडगणबहुजुत्थकरि, हरिदरशनहितआत ॥ १५३ ॥ तिनझाडनकेनामअत्र, कहौंसुसुनियैंमित्त ॥ वैभवकोअद्भुतपनौं, व्हैचतुरनकेचित्त ॥ १५४ ॥ जहांसोसनकेझाडमधि, नीलमकेहैंफूल ॥ पत्रकिलंगीडोडियें, पन्नेकीसुखमूल ॥ १५५ ॥ दावदीकेझाडमें, मोतिनकेहैंफूल ॥ पत्रकिलंगीडोडियें, पन्नेकीरसमूल ॥ १५६ ॥ हैनरगसकेझाडमें, पुखराजनकेफूल ॥ पत्रकिलंगीडोडियें, पन्नेकीबहुमूल ॥ १५७ ॥ गुल्लालाकेझाडमें, हैंहीरनकेफूल ॥ ताकेमाणिककीकिरण, सोहततिंहिंअनुकूल ॥ १५८ ॥ डोडीपन्नाकीमहीं, माणककीसुजिवारि ॥ पत्रकिलंगीरुचिरअति, पन्नाकीबहुभारि ॥ १५९ ॥ इनसबझाडनकेलसैं, कंचनकिरणअनूप ॥ लज्जितरविइनओटव्हैं, मनुनिरखतनिहरिरूप ॥ १६० ॥ गुलचकरीकेफूलहैं, पुखराजनकेखास ॥ मनुकृतिकाबहुरूपधरि, आइंब्रजशशिपास ॥ १६१ ॥ नवरत्ननकेझाडवर, शो

भितहैंइहिंवेस ॥ गर्ववैरताजिनवसुग्रह, मनुआयेहरिदेश ॥ १६२ ॥ पन्नाकेतुकमातहां, राजतरुचिरअनंत ॥ अतिलघुसुरसरिनीरमें, पद्मपत्रझलकंत ॥ १६३ ॥ पन्नेकीतखतीमहीं, इश्कहुस्नयेवर्ण ॥ खुदेसुशोभितयौंमनौं, मोहरमन्थकर्ण ॥ १६४ ॥ शोभितवज्राकि किरणविच,वृहतवज्रचोकोर ॥ स्वेतकमलपरमनुउदय, भयोशु ऋकरिजोर ॥ १६५ ॥ दीपकशाखारजतके, भित्तिनमेंसरसाय ॥ मनौंचंद्रिकानिजकरनि, करतवारनांआय ॥ १६६ ॥ निजमंदिर केकाचके, कंचनरजतकिंवार ॥ मनौंमोहवशनरकरन, मायाखडी सम्हार ॥ १६७ ॥ झाडगुलाबकोद्वारपर, विद्रुमरचितसुढार ॥ भ योचांदनिमेंप्रगट, मनुमंगललखिसार ॥ १६८ ॥ चौपाई ॥ स्वर्ण धनुषनिजद्वारसुऊपर ॥ यहअक्षरखुदिरहेतिहिंभूपर ॥ ( नीकेनैन मुसकिछविपाहैं ॥ यहछविशशिमेंकहोकहांहैं ॥ ) याकीउपमाहेत सुमोमति ॥ हेरतहेरतभईसिथिलगति ॥ १६९ ॥ दोहा–दूजेद्वार निकाचके, बहुरंगकेसुकिंवार ॥ मानौंनवरसथिरभये, दर्शनलोभ विचार ॥ १७० ॥ परदेलसतसुतासके, सोनेरीरूपैरि ॥ मानौंदम कतएऋढ्हैं, रविशशिकिरनघनेरि ॥१७१॥ कीनखापकीछातजहां, शोभितयौंरसमूल ॥ मानौंफूलीसांझमें, वरषेसुरतरुफूल ॥१७२॥ मणिमयऐसोहरिभवन, अद्भुतअमलअनूप ॥ पूरनवर्ननकरिसकैं, जोहोवैंअहिभूप ॥ १७३ ॥ जोकोऊयाभवनको, दरशनकरिहैं आय ॥ वहलखिहैंवर्ननकियो, जयकविसत्यबनाय ॥ १७४ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालको, निजवार्तासुप्रसंग ॥ जयकवियहवर्ननाके यो, मनमेंबहुतउमंग ॥ १७५ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां पूर्वार्द्धे श्रीनृत्यगोपालयोः निजवार्ता ॥

# अथ श्रीमहाप्रभुजीको चित्रविराजैंताकी निजवार्त्ता लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ श्रीलक्ष्मणभटगृहभये, श्रीवल्लभद्विजराज ॥ पनरासैंपैंतीसमें, भक्तउधारनकाज ॥ १ ॥ शाहसिकंदरलोदिभो, दिल्लीपतिवडभाग ॥ प्रभुतासुनिलखिहियभयो, सरसश्रवनअनुराग ॥ २ ॥ भयोश्रवनअनुरागतें, दरशनकोअनुराग ॥ तवदिल्लीपति चितभई, चित्रकरावनलाग ॥ ३ ॥ होनहारनामाहुतो, चतुरमुसव्वरविज्ञ ॥ तवताकौंहुकमदियो, दिल्लीपतिसुअभिज्ञ ॥ ४ ॥ श्रीवल्लभआचार्यको,लाव हुचित्रबनाय ॥ लेउयथार्थमिलायकैं, व्रजमंडलमें जाय ॥ ५ ॥ होनहारकरतारसो, गर्वधारिव्रजजाय ॥ श्रीवल्लभमहाराजके, सुंदरदरशनपाय ॥ ६ ॥ चित्रबनायोचित्तदै, अतिचातुरताधारि ॥ मिल्योकछूनांहींतवैं, फेररच्योचितधार॥७॥ द्वितियचित्रहूनहिंमिलत, होनहारकेचित्त ॥ दिल्लीपतिकोकहरको, प्रकटचोप्रभयअमित्त ॥ ८ ॥ तवश्रीबल्लभराजके, चरनवंदिछलछोर ॥ कीनीविनतीदीनव्हैं, होनहारकरजोर ॥ ९ ॥ दिल्लीपतिकेहुकमतें, हौंआयोब्रजमांहि ॥ लिखनरावरेचित्रकौं, पूरनचिन्हमिलाहि ॥ १० ॥ मोमतिकेअभिमानतैं, कीनेंचित्रसुदोय ॥ कछुनमिलेनिजरूपमें, देखेवहुविधिजोय ॥ ११ ॥ जोनाहिंमिलिहैचित्र तो, दिल्लीपतितकरार॥करिहैंपुनिकरिहैंकहा, कहाजानौंतिहिंवार ॥ १२ ॥ दीनबंधुकरुणाजलधि, श्रीवल्लभद्विजराय ॥ तवकरुणाकरिकैंकही, निजप्रभुतादरशाय ॥ १३ ॥ अवतूचित्रवनायकैं, ले

जावहुधरुधीर ॥ यहवचनामृत सुनिमिटी, होनहारहियपीर ॥ १४॥ पायअनवसरसमयकौं, श्रीजमुनातटधाम॥ कहतभागवतकीकथा, श्रीसुबोधिनीनाम ॥ १५ ॥ तहांभटमाधोदासजू, हाजररहतहमेश ॥ श्रीसुबोधिनीलिखतहैं, शीघ्रसुशुद्धविशेष ॥ १६ ॥ कृष्णदासमेघनजहां, हाजरहैकरजोर ॥ तीनदिवसठाढोरह्यो, पुरुषोत्तमकेजोर ॥ १७ ॥ दामोदरहरषानिजहां, करतदंडवतआय ॥ ग्रीषमऋतुकेसमयमें, ऐसोसमयसुपाय ॥ १८ ॥ पनरासैसडसठलखो, संवतकोअनुमान ॥ संप्रदायकल्पद्रुमसु, पुस्तकमांहिप्रमान॥१९॥ आज्ञालैचित्रसुलिख्यो, अवयवचिन्हमिलाय ॥ प्रभुस्वरूपप्रतिबिंबसौं, लीनौंशीघ्रबनाय ॥ २० ॥ हौनहारयहचित्रकिय, दिल्लीपतिपैंपेस ॥ लोदीसिकंदरतवकही, हौनहारसौंवेस ॥ २१ ॥ हौनहारयहचित्रतुम, क्यौंकरिलियोबनाय ॥ हाथजोरिज़ाहिरकरी, ज्योशिरवीतीआय ॥ २२ ॥ सुनिवृतांतनृपेशलखि, प्रभुहीकोअवतार॥ दृढकरिलीनोंचित्तमें, यहबिचारनिर्धार ॥ २३ ॥ निजचित्रालयमेंयहैं, दियोचित्रधरिवाय॥ दर्शनरुचिजबचित बढैं,तवहीलेतकढाय ॥ २४ ॥ याप्रसंगसौंरूपतिंह, वाकिबथेमनमांहि ॥ यहउपायचितनितकरत, पधरावौंगृहमांहिं ॥ २५ ॥ रूपसिंहकौंयहसमय, प्रापतभयोजिंहिंरीत ॥ सोअवसवहीकहतहौं, सुनियेंअतिकरिप्रीत ॥ २६ ॥ अकवरकेजहांगीरभो, ताकेशाहजिहांन ॥ रूपसिंहपैंमहरकरि, लिखभेज्योफरमान ॥ २७ ॥ जाहुवलखकीमुहमपर, करहुशत्रुकौंचूर ॥ तेरेमुखपैलसतहैं, रजपूतीकोनूर ॥ २८ ॥ हुकमपायपहुंचेवलख, रूपसिंहमहावीर ॥ दिल्लीपतिकीफोजको, सेना-

पतिव्है धीर ॥ २९ ॥ तुपकतीरतरवारसौं, कीनौंअतिघमसान ॥ व लखाधिपकेजंगमें, लीनौंछीननिसान ॥ ३० ॥ बलखाधिपकोंजेरे करि, आयेदिल्लीमांहि ॥ शाहजिहानदिलीशजू, कीनौबहुतसरां हि ॥ ३१ ॥ स्वेतलालरंगकोजुवह, हुतोंपठाननिसान ॥ दिल्लीपति देकैंकह्यो, राखहुयहीनिसान॥३२॥व्हैंप्रसन्ननृपरूपसौं, फरमाइक रिप्पार ॥ जोतेरेमनमेंचहो, लेवहुवहीअवार ॥ ३३ ॥ तबैंरूपनृप अर्जकिय, समयपाययहवेस ॥ अपनौंइष्टविचारकैं, मांग्योयहीन रेश ॥ ३४ ॥ श्रीवल्लभआचार्यको, होनहारकेहाथ ॥ चित्रकरायो प्रीतकर, शाहसिकंदरनाथ ॥ ३५ ॥ वहीचित्रअतिमहरकारि, करि दीजैंवगसीस ॥ यहसुनिकैंदिल्लीशयौं, हूकमकियोवरीस ॥ ३६ ॥ देशकोशकौंछाडिकैं, कहामांग्योवडभूप ॥ रूपसिंहकरजोरितव, कीनीअरजअनूप ॥ ३७॥ परमइष्टहमकोयहैं, सुनहुगरीवनिवाज॥ यातैंवहीसुदीजियैं, भूपनकेशिरताज ॥ ३८ ॥ चित्रालयअध्यक्ष सौं, करिहुकमदिल्लीश ॥ वहीचित्रकढवायकैं, करिदीनोवगसीस॥ ॥ ३९ ॥ फिरदिल्लीपतिहुकमकिय, फिरमांगहुमहाराज ॥ तबैंअर जकीनोसमझि, रूपसिंहनरराज ॥ ४० ॥ सबलसिंहकौंमहरकारि, दीजैंजेसलमेर ॥ यहभाटीअतिख्वीरहैं, अबकरियैंनहिंदेर ॥४१॥ दिल्लीपतिनृपरूपकी, करीअरजमंजूर ॥ तबभाटीसबलेशकैं, व ढयोचोगुनौंनूर ॥ ४२ ॥ रूपसिंहकेतातश्री, भारमल्लमहाराज ॥ तिनकेमातुलकोतनय, सबलसिंहयदुराज ॥ ४३ ॥ हौंनहारकोक हतहौं, अवैंसकलइतिहास ॥ ताकेसुनतहिहोतहैं, चतुरनिचित्तहुला

---

१ इसका अर्थ खराब होरहा है.

स ॥ ४४ ॥ चित्रलिखनकेइलमकौं, सीखसुबुद्धिअथाह ॥ गयोहा जरीदैनकौं, दिल्लीपतिदरगाह ॥ ४४ ॥ दिल्लीपतिसौंअर्जीकिय, लोजैंमोइमत्यान ॥ हजरतजवैंपधारकैं, लैंनलगेसुखमान ॥ ४६ ॥ हौंनहारतवयौंकरी, इकउष्णीशमंगाय ॥ व्हैंनरकौंठाढेकरे, चिल्ला कौंपकराय ॥ ४७ ॥ हौंनहारहयपैंचढ्यो, करमेंलईजुगाल ॥ घो रेकौंरपटायकैं, खैंचोरेखअटाल ॥ ४८ ॥ वहउष्णीसमंगायकैं, हौं नहारकियअर्ज ॥ याकोसूत्रकढायकैं, लखहुरेखकोमर्ज ॥ ४९ ॥ दिल्लीपतिउष्णीषको, देख्योसूत्रकढाय ॥ रेखएकवहिसूत्रपैं, आद अन्तसरसाय ॥ ५० ॥ यागुनकौंलखिकैंबहुत, दियोदानसनमान॥ हौंनहारसुखितादैं, गुनकोकियोवखान ॥ ५१ ॥ छप्पय ॥ श्री-लक्ष्मणभटगेहप्रगटअवतारलिवायो ॥ श्रीवल्लभआचार्यमहाप्रभुनाम कहायो ॥मायावादविखंडभक्तिपथपुष्टिबधायो॥ दैवीजीवउधारहेत यहमार्गबतायो ॥ भटमाधवकृष्णहिदासजूदामोदरकौंकरिसुथिर॥ धरिविग्रहरूपसुचित्रमयजयतिजयतिनृपरूपशिर ॥ ५२ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां पूर्वार्द्धे पुष्टिपथप्रवर्तक श्रीतैलंगकुलदि-वाकर श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभूणां चित्रस्य निजवार्ता ॥

## अथ श्रीसालग्रामजीकी निजवार्ता लिख्यते ।

दोहा—रूपसिंहकेसेव्ययह, सालग्रामस्वरूप ॥ तिनकेदर्शन करतहीं, होतभक्तसुखरूप ॥ १ ॥ कहांकहांदफतरमहीं, इनहीं कोअभिराम ॥ राजसिंहकेसमयमें, लिख्योसुदर्शननाम ॥ २ ॥ अगलेनृपतिपधारते, कारजवशपरदेश॥तबैंसंगरहतेसदा,नृत्यगुपा

१ पाग. २ इमलीका कोइला.

लसुरेश ॥ ३ ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालके, गोदमांहिंसुखधाम ॥ नितप्रतिसंगविराजते, यहश्रीसालग्राम ॥४॥ श्रीजीकेसान्निध्यमें, पंचामृतसौंस्नान ॥ जयंतीनमेंहोतहैं, अवलौंइनकौंजान ॥ ५ ॥ छप्पय॥ जयतिगल्लिकामांहिप्रगटपरमानंदराशी ॥ जयतिविष्णुवररूपअमरमुनिजनमनवासी ॥ जयतिश्रौतअरुस्मार्त्तसंततिंहिकरतउपासी ॥ जयतिसंप्रदाच्यारमांहिकारिरहेउजासी ॥ सबकहतवेदमयतीर्थमयसर्वदेवमयजयतिजय ॥ नृपरूपसिंहकेशीशपरजयजयसालग्रामजय ॥ ६ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां पूर्वार्द्धे श्रीसालग्रामस्वरूप निजवार्ता ॥

## अथ हरिभक्तिगुनप्रशंस गर्भित नृपवंश वर्नन

दोहा—इकस्वरूपश्रीनाथको, नृत्यगोपालकेदोय ॥ चित्रसुमहाप्रभूनको, सालग्रामसुजोय ॥ १ ॥ यहपांचौंनिधिकोकह्यो, निजवार्त्तासुप्रसंग ॥ अबवरनौंनृपवंशकौं, भक्तिरंगकेसंग ॥ २ ॥ महाराज श्रीकृष्णसिंहजीके पुत्र सहसमल्लजी, जगमल्लजी, भारमल्लजी, हरिसिंहजी ॥ कृष्णसिंहमहाराजके, पुत्रसुच्यारहुसिंह ॥ सहस जगमल्लअरु भारमल्लहरिसिंह ॥ ३ ॥ भारमल्लजीके पुत्र रूपसिंहजी ॥ भारमल्लकेपुत्रश्री, रूपसिंहनरनाथ ॥ इनसबकोवर्ननकियो, पांचौंनिधिकेसाथ ॥ ४ ॥ रूपसिंहजीके पुत्र मानसिंहजी ॥ रूपसिंहकेसुतभये, मानसिंहमहाराज ॥ श्रीजीकीसेवाकरी, चितसौंअतिहितसाथ ॥ ५ ॥ सिद्धकरायोस्वर्णको, महलसुअतिअभिराम ॥ तामेंनित्यविराजते, श्रीजीपूरनकाम ॥ ६ ॥ राजभोगनितहीधरयो, स्वर्णपात्रकेमांहि ॥ ऐसेंवैभवसौंकरी, सेवा

मानउमांहि ॥ ७ ॥ अजबकुंवारिकेवचनकौं, सत्यकरनकेकाज ॥ चाह्योग्रामसिवारकौं, तजिब्रजओगिरिराज ॥ ८ ॥ तबऔरंगउ त्पाते श्रीगोवर्धननाथ॥गमनकियमेवाडकौं निजजनकरनसना थ ॥ ९ ॥ नगरखे ॰ वॅटसुबन, आकरपुरअरुग्राम ॥ सरितासरजु पुनीतकिय, जहांतहांकरिमुकाम ॥ १० ॥ मानसिंहमहाराजके, विजयराज्यकेमांहि ॥ कृष्णगढ्ढकेदेशमें, नाथपधारेचाहि ॥ ११ ॥ नाथपधारेदेशमें यहसुनिकैंनृपमान ॥ दर्शनकोंपहुंचेजलद, अग वानोसुखमान ॥ १२ ॥ श्रीगोविंदगोस्वामिकौं । तीकियदंडोत ॥ श्रीगोवर्धननाथके, दर्शनतेंसुखहोत ॥ १३ ॥ गंगाबाईसौंकरी, आ ज्ञाश्रीगोस्वामि ॥ प्रभुसौंविनतीभूपहित, करहुसुदर्शनकामि ॥ १४ गंगासौंसान्निध्यही, आज्ञाकरतेनाथ ॥ तातैंश्रीगोस्वामिप्रभु, कह तेयाकौंगाथ ॥ १५ ॥ विनतीसुनिश्रीनाथजी, आज्ञाकरीरहस्य ॥ भगवदीययहवंशहैं, दर्शनहोयअवश्य ॥ १६ ॥ वसंतपंचमीडोल लौं, फागोत्सवसरसान ॥ करिहहुदिनचालीसलौं, यहांरहिहोसु खमान ॥ १७ ॥ कृष्णढ्ढदक्षिणदिशा, सार्द्धकोशपरस्थान ॥ पी तांबरकीगालमें, तहांविराजेआन ॥ १८ ॥ सवैया ॥ शृंगउतंग सुढंगसुराजतस्वच्छशिलातलहैंबहुठामा ॥ कीरमयूरसुशब्दसमीर सुगंधितसीतलमंदललामा ॥ निर्झरकूपमनोहरहैंजयवृच्छअनेक लसैंअभिरामा ॥ छाईकदंबकुरंबनिसौंसुपहारकिगारपितांबरनामा ॥ १९ ॥ दोहा ॥ पीतांबरकीगारमें, कदंबखंडिकीछांह ॥ श्रीजी दिनचालीशलौं, शोभितभयेसुतांह ॥ २० ॥ श्रीप्रभुजीगोस्वामि गुरु, इनपैंभयेकृपाल ॥ भगवदीयऐसैंभये, जबैंमानमहिपाल ॥

॥ २१ ॥ मानसिंहजीके पुत्र राजसिंहजी ॥ मानसिंहकेपुत्रश्री, राजसिंहमहाराज ॥ तिनकोजयवर्ननकरैं, भक्तिप्रसंगसुसाज ॥ ॥ १ ॥ गोस्वामीरणछोडगुरु, दियोमंत्रउपदेश ॥ भगवदीयवडभागभो, राजसिंहनृपवेस ॥ २ ॥ श्रीमतरायकल्यानकी, कियसेवाचितलाय ॥ मुक्ताअरुहीरानके, भूषणअधिकबनाय ॥ ३ ॥ निजमतिसौंसुंदररच्यो, ग्रंथसुबाहुविलास ॥ रुक्मिणिव्याहचरित्रकोबीरशृंगारकिरास ॥४॥ अरुकीर्तनरसकेभरे, कीनेभेटबनाय ॥ हरिकौंसेवापदनतैं, लीनेबहुतरिझाय ॥ ५ ॥ सेवाकेसुप्रतापतैं, बादश्याहकेपास ॥ मनसबहफतहजारिको, पाकेभयेप्रकाश ॥ ६ ॥ सतरैसैंरुसतंतरैं, बुधअष्टमिसुदिक्वार[1] ॥ दियोमुहम्मदशाहजू, मनसबहफतहजारि ॥ ७ ॥ घाटीजहांकरोलिकी, तहांहुतेमुकाम ॥ राजसिंहमहाराजजू, यहपायोतिहिठाम ॥ ८ ॥ श्रीजीकेसुप्रतापतैं, नागरिदाससुपुत्र ॥ भक्तिवानपायोनृपति, असोकोभयोकुत्र ॥ ॥ ९ ॥ बांकावतसीरानिकौं, व्याहीराजनरेश ॥ पतिव्रतधारीकुलवती, भक्तिवतीअतिवेश ॥ १० ॥ बांकावतमहारानिजू, पायोहरिसंबंध ॥ टीकाकीभागोतकी, भाषाछंदप्रबंध ॥ ११ ॥ भाग्यवानगुनवानअरु, रसिकसुउमरधराज ॥ राजसिंहमहाराजभो, कुलमर्यादजिहाज ॥१२॥ राजसिंहजीके ज्येष्ठ पुत्र सुखसिंहजी ॥ राजसिंहकेपांचसुत, तिनमेंसुखसिंहज्येष्ठ ॥ मनलायोजोगीपनैं[2], तजिसंसारसुखश्रेष्ठ ॥ १ ॥ राजसिंहजीके द्वितीय पुत्र फत्तेसिंहजी ॥ फत्तेसिंहदूजेभये, जंगजैतयुतनीत ॥ गयोकुंवरपरलोक

१ आसोज २ जोगीभये

कौं, गोंडनकीधरजीत ॥१॥ राजसिंहजीके तृतिय पुत्र सावंत सिंहजी ॥ साँवंतसिंहभयेतीसरे, भक्तिवंतगुनवंत ॥ राजकाजयुवराजव्है, कियोप्रजनिसुखवंत ॥ १ ॥ साँवंतसिंहनरेशको नामनागरीदास ॥ कवितापदसुप्रबंधमें, सबजगबीचप्रकाश ॥ २ ॥ गोस्वामीरणछोडगुरु, दियोब्रह्मसंबंध ॥ जिनकोभक्तिप्रभावको, फैलरह्योसुसुगंध ॥३॥ श्रीजीकीसेवाकरी, करिअत्यंतसुप्रीत ॥ रूपनृपतिज्यौंसर्वविधि, पालीकुलकीरीत ॥४॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकी, निजवार्त्ताकेमांहि ॥ भक्तिप्रभावसुसर्वविधि, इनकोकह्योसरांहि ॥ ॥ ५ ॥ अरुबृंदावनवासको, ताहिवार्ताबीच ॥ कहीताहिसुनिकैंधुपैं, केतेकलिमलकीच ॥ ६ ॥ सानुभावतादरशदिय, श्रीजीहोयकृपाल ॥ सोअववर्ननेतहौंसुखद, भक्तिचरित्ररसाल ॥७॥ जन्माष्टमिकेदिवसकौं, भोवृतांतसुएक ॥ भक्तनकेमनहोतहैं, ताकेसुनतविवेक ॥ ८ ॥ ब्रजवासीवैष्णवहुतो, तुलारामजिहिंनाम ॥ उपनामजुसखिवावरी, ताकोहोअभिराम ॥ ९ ॥ बहसप्रेमकीर्त्तनकरत, नृत्यतभावबताय ॥ गानबधाईकोकरत, रंगरह्योसरसाय ॥ ॥ १० ॥ जबैंबधाईमांहिइक, तुकआईइहिंभाइ ॥ वडभागीनंददेतहैं, मुंहमांगीठकुराइ ॥ ११ ॥ यातुककेगावतसमय, श्रीजीरीझेपूर ॥ सुमनमालश्रीकंठतैं, परीटूटिकैंदूर ॥ १२ ॥ बैठोअपरसऔटहो, इकभीतरियावृद्ध ॥ वहउठितहांतैंआयकैं, लीउठायस्वतसिद्ध ॥ १३ ॥ तुलारामकौंसवलखत, दइमालापहिराय ॥ ब्रजवासीकेभाग्यको, पारकह्योनहिंजाय ॥ १४ ॥ सेवकवडेबडेनको, ठाढोहोसमुदाय ॥ पैंश्रीजीनिजरीझतेहिं, मालादईदिवाय

॥ १५ ॥ जापदके गावत श्रीजी माला दीनी सो वह यह पद ॥ जसोदेवधाइयां ॥ नंदरानींदेलालऊपनां सीनेहियांसवैजिवाइयां ॥ सोहनियांसवगोपीयांतोघरआइयां ॥ पुत्रजायाजगजीवन रीतैंपैरूलगीवडाइयां॥ तैंडाभागसुलछनीसइयेंत्रभैंघोलिघुमाइयां ॥ अमृतसारजुलध्यानीसइयेपूरियांकितीकमाइयां ॥ साजनचंदारव कीताऐसीफूलियांअंगनमांइयां ॥ खुसीहुयेसुरनरमुनिजनजनुरंकांनिधपाइयां ॥ दूधदहीसिरपावदेनाचंदेग्वालांखेडमचाइयां ॥ वडभागीनंदवहठांदेंदासुंहमांगेठकुराइयां ॥ रामरायप्रभुप्रगटिया भगवानगलांमनभाइयां ॥ १ ॥ दोहा ॥ सावंतसिंहनरेशको, सुनियेंहितियप्रसंग ॥ ताहिसुनतमनमेंवढें, भक्तिरंगकोरंग ॥ १७ ॥ रूपवावरोनंदको, पुनिहोरीकोछैल ॥ यापदकोश्रीजानिकट, होत फागरंगरैल ॥ १८ ॥ पदमाफकशृंगारव्है, ताहिसुजवसत्रठाट ॥ सवैंउपासिकसुनिचलैं, लेवैंरसकौलोट ॥ १९ ॥ करिदर्शनवहुदर्शनी, छकिजाकिजातविशेष ॥ भाविकजनकेमनतहां होवतप्रेमावेश ॥ २० ॥ निजमरजीसौंठाटयह, श्रीजीकियस्वकार ॥ नृपआदिकभक्तनिसबनि, लीनौंहियमधिधार ॥ २१ ॥ रसिकचतुररिझवार जू, कीनोजोस्वीकार ॥ एकवरसनाहींभयो, यापदकोसुप्रकार ॥ २२ ॥ स्वपनेमेंनृपसैंतवैं, कियआज्ञाहैवार ॥ वहीगवावहुपद सरस, जामेंफागविहार ॥२३॥ जापदकौंश्रीजी आज्ञा देकैं गवायो सो वह यह पद ॥ राग ॥ रूपवावरोनंदमहरकोवहुरिबन्यौहोरीकोछैल ॥ रोकतटोकतघूंघटखोलतभरिपिचकारीतकतउरोजानिगो

---

१ अपनौ विभाग । जैसे अमुकने अपनी जमीनका अन्न लाटा ।

कुलरीमाईचलतनगैल ॥ छलसौंमसारिगुलालकपोलनिचितैंरहतप लभूलिनिलजव्हैहियैंभरतजोबनकेफैल॥ छुटीजैंसंधिवैसहचरिसुख मदनमवासरहततनताकेअँगअँगरीझिकटीलीसैल॥१॥२४॥ दोहा— सावंतसिंहनरेशकोसुनियैंतृतियप्रसंग ॥ याहिसुनतमनमैंवढैं, भक्ति रंगकोरंग ॥२॥ हिंडोरनकेदिननमें, जबगावतपदयेह ॥ रमकिरम किझूलनमहों, झमकिसुआयोमेह ॥२६॥ अंबरमधिबाद्दरकहू, जो रंचकनाहिंहोय॥तऊअ.नबरसनलगैं, गराजिसघनघनहोय॥ २७॥ मुकटचंद्रिकाजातझुकि, मुक्तमालउधिरात ॥ श्रीजीकेश्रीअंगकी, शोभावरनिनजात॥२८॥ आनसुपदगावतजबैं, तबबरषारहिजात॥ यहपदगावतव्हैंपरत, बहुबरषासरसात ॥२९॥ सुखियाभीतरियानृ पति, जानगयेमनमांहि ॥ यहपदठाकुररीझिको, यातैंअवश्य गवांहिं ॥ ३० ॥ यहपदजादिनहोतव्हैं, अधिकनोछावरभोग ॥ याउच्छवकेदरशकरि, होतविमोहितलोग ॥ ३१ ॥ जा पदकेगावत वर्षा होय अरु श्रीजीके फैंटा चंद्रिका झुकि जाय श्री अंगकी शोभा अधिक बढै सो वह यह पद ॥राग॥ रमकिरमकि झूलनिमेंझमकिमेहआयोनाहिंसुरझातिवातनितैं ॥ नवपल्लवसंकुलित फूलफलबरनबरनद्रुमलतातरैंझुलवतभयोबचावभयोपातनितैं ॥ मंदमंदझुलावनलागीथंभनिसौंओढैंअंबरजलघातनितैं ॥ कृष्णदा सगिरिधारितऊभीज्योंवागोसारीभौंरनकीभीरभारीटरतनटारी क्योंहूंउपजीछबीलीघटानिजगातनितैं ॥ १ ॥ ३२ ॥ दोहा—सां वंतसिंहनरेशको, सुनियचतुर्थप्रसंग ॥ ताहिसुनतमनहोतहैं, भक्ति रंगकोरंग ॥ ३३ ॥ सतरैंसैंपिच्यासिमैं, माणकचंदकोठारि ॥ अ

तिमरजीको हैंदगो, रच्योकुमतिउरधार ॥ ३४ ॥ याकौंविधिपूर्व कसकल, तवारीखकेमांहि॥देखिलेहुचातुरपुरष, मोपैंक्षमाकराहि ॥ ॥ ३५ ॥ तेजसिंहभाटीकह्यो, ताकोसबवृत्तांत ॥ तबहुकमअै सैंदियो, समझिकुंवरसिद्धांत ॥ ३६ ॥ माणकचंदकेहाथकी, ला हुलिखायकैंफर्द, ॥ तबैंसत्यसबमानिहौं, करिहहुमोहिसुपर्द ॥ ॥ ३७ ॥ कितेदिवसबीतेतबैं, भईज्जुऐसीरीत ॥ लिखिकागदयाकौं दयो, फोजलैंनकीचीत ॥ ३८ ॥ तेजसिंहतबपत्रलैं, गयोरात्रिके वख्त ॥ गयोनगरवाहिरतबैं, यामैंभईज्जुसख्त ॥ ३९ ॥ मारगमेंप गधरततब, मारगसूझतनांहिं ॥ जितदेखैंतितहीदिखैं, श्रीजीरूप हितांहि ॥ ४० ॥ अरुलकुटीसौंमारदैं, दईबुद्धिकौंफेर ॥ समझित त्वपीछोफिरयो, तेजसिंहतिंहिंवेर ॥ ४१ ॥ पत्रलियैंहाजरहुयो, साँवंतसिंहकेपास ॥ सकलभयोवरतावसो, कहिकैंकियोप्रकास ॥ ॥ ४२ ॥ तबमहाराजकुमारश्री, दियहूकमफरमाय ॥ माणकचंद कौंजलदही, लावहुयहांबुलाव ॥ ४३ ॥ वाकेहाजरहोतकछु, लि खिवायोविंहिंपास ॥ यहअक्षरवापत्रके, मिलिगयेएकाहितास ॥ ॥ ४४ ॥ तबैंक्रोधकरिकैंकह्यो, साँवंतसिंहकुमार ॥ यहहरामखोर निसुमिलि, कररह्योधूमअपार ॥ ४५ ॥ तबहीरचिसाँवंतकुंवर, इ कदोहाफरमाय ॥ माणककौंपंचत्वदी, गजकेपायबँधाय ॥ ४६॥ जोजोनरसामिलभये, याकोसलामझार ॥ यथायोग्यतिनकौंदि यौं, दंडनीतिउरधार ॥ ४७ ॥ दिल्लीमधिथेइंहिंसमय, राजासिंहम

---

१ महाराज नागरीदासजी । २ माणकचंदके हाथकी फर्द हमारे सुपर्द करेगा तब तेरी अर्ज सत्य मानी जावेगी. ३ मृत्यु.

हाराज ॥ स्वपनेमधिआज्ञातिहैं, कियश्रीजीमहाराज ॥ ४८ ॥ रक्षाकीनीदेशमधि, यहसुनिउठेनरेश ॥ सानुभावतासमझिकैं, कियदंडोतविशेष ॥ ४९ ॥ याकोकागददेशतैं, आयोकछुदिनवाद ॥ राजसिंहतवसबनिसौं यहकीनौंअनुवाद ॥ ५० ॥ या समय महाराज सांवंतसिंहजी दोहो फरमायो सो वह यह ॥ दोहा—जे अपराधीस्वामिके, ताहिगैबकीमार ॥ मूरखमनसमझैंनहीं, ताको यहैंबिचार ॥ १ ॥ ५१ ॥ सांवंतसिंहजीके पुत्र सरदारसिंहजी ॥ दोहा—सांवंतसिंहनरेशके, कुँवरभयेसिरदार ॥ प्रीतनीतकुलरीत युत, अतिउदाररिझवार ॥ १ ॥ अठारहसैंच्यारमें, दिल्लीपतिके पास ॥ सांवंतसिंहकेसंगही, गमनेधरिहुल्लास ॥२॥ पीछैंसैंनृपराज सिंह, गमनकियोहरिधाम ॥ दिल्लीतैंभेज्योसुलिखी, सँावँतेसवरियाम ॥ ३ ॥ प्रतिनिधिकरिशिवेंसिंहकौं. दीनौंकामतमाम ॥ इन कोरहिबहुगाफली, तबैंभयोयहकाम ॥ ४ ॥ गढसहरूपनगरलियो, ऐसोअवसरपाय ॥ सँावँतसिंहकेअनुजश्री, भूपबहादुरआय ॥ ॥ ५ ॥ याविपत्तिकेमांहिही, कहीभक्तहरिदास ॥ सँावँतसिंहनरेश तब, कियवृंदावनवास ॥ ६ ॥ मरेटानसोंसंधेकरि, श्रीसिरदारकुमार ॥ रूपनगरकौंलैनकौं, लायेउनकौंलार ॥ ७ ॥ काकाऔरभतीजके, भोसंग्रामअथाग॥तबदोऊमिलिराजके, कीनेदोयविभाग॥ ॥ ८ ॥ रूपनगरदाखिलभये, श्रीसिरदारकुमार ॥ तबश्रीजीकीभेटकिय, ग्रामएकउरधार ॥ ९ ॥ इहिंरनकोइतिहाससब, रचिकैंबहुतविशाल ॥ ग्रंथसुजससिरदारमें, कह्योसुहीरालाल ॥ १० ॥ श्री

१ महाराजा राजसिंहजीकी खवास (उपस्त्री)के पुत्र थे ।

जीवनगोस्वामिगुरु, तिनकोकृपाप्रताप ॥ शुद्धजोतिनयरीतिसों, लीनौंसुयशअमाप ॥ ११ ॥ जोपांचौंनिधिवडनकी, नृपसिरदार केशीस ॥ रूपनगरकेदुर्ग्गमें, राजतरहीवरीस ॥ १२ ॥ राजसिंहजीके चोथे पुत्र बहादुरसिंहजी ॥ दोहा—राजसिंहकेपुत्रश्री, भोच तुर्थगंभीर ॥ बहादुरसिंहसुनामजिहिं, सांवतेशवडवीर[1] ॥ १ ॥ अट्ठारहचोवीसमें, श्रीसरदारनरेश ॥ माधवमास[2]कुहूँ[3]दिवस, सुरपुरकियोप्रवेश ॥ २ ॥ तवबहादुरनिजपुत्रकों, तिनकेगोदहीदीन ॥ एकराजदोउराजके, बुद्धिबलसोंकरिलीन ॥३॥ तवश्रीजीकोकृष्णगढ, पधरायेसहुलास ॥ अट्ठारहपचीसमैं, वदिपंचमिमधमास[4] ॥ ॥ ४ ॥ कृष्णगढ्ढकेदुर्ग्गमें, हैंदहलानसुठाम ॥ हरीसिंहकेनामतें, हैप्रसिद्धअभिराम ॥ ५ ॥ भूपतितिंहिंदहलानमें, श्रीजीकोंपधराय ॥ करनलगेसेवासुविधि, मनमैंअतिछकपाय ॥ ६ ॥ तहांउपद्रवअग्निको, भयोकछुकदिनवाद ॥ तवपीछेरूपनगरहि, पधरायेसुससाद ॥ ७ ॥अट्ठारहपच्चीशमें[5], चैत्रशुक्लभृगुवार ॥ तिथिनवमी श्रीरामको, जन्मोत्सवसुतिदार ॥ ८ ॥ कृष्णगढ्ढकेदुर्ग्गमें, यादिनमंदिरनींव ॥ दईबहादुरसिंहजू, दूजोभुजवलभींव ॥ ९ ॥ मंदिर शीघ्रसुसिद्धकिय, युतसाहित्यसुथांन ॥ यहसंवतसरकारको, जानहुसुकविसयांन ॥ १० ॥ अठारहउनतीसमें, फागुनसुदिबुधवार ॥

१ सावंतसिंहजी (वडवीर) वडे भाई थे जिनके अर्थात् बहादुरसिंहजीके वडे भाई सावंतसिंहजी थे। २ वैशाख। ३ अमावास्या। ४ चैत्र ५ सरकारी संवत् आषाढसे माना जाता है जिससे विक्रमी संवत् १८२६ जानना चाहिये।

तिथिनवमीहरिदुर्गमें, राजतभयोपधार ॥ ११ ॥ पुनिश्रीजीकौं प्रीतिकरि, श्रीबहादुरनरनाह ॥ रूपनगरतैंकृष्णगढ, पधरायेकरि चाह ॥ १२ ॥ तबतैंकाहूसमयमैं, अबलौंकाहूठोर ॥ नांहिपधारे नाथजी, मंदिरतैंकिंहिंओर ॥ १३ ॥ सेवाविधिकुलरीतिसम, होत रहीअनिवेष ॥ हरिसेवनयहयज्ञतैं, सुवशवस्योसबदेश ॥१४॥ अ बजवानमहाराजके, हियकौंप्रेरिसुचाह ॥ फूलमहलराजतभये, छप्पनभोगउछाह ॥ १५ ॥ ताकेसबवृतांतकौं, उत्तरार्द्धकेमांहि ॥ सहितअनुक्रमवर्णिहों, निजदृगलखीसुतांहि ॥ १६ ॥ बहादुर सिंहनरेशजू, छितिपरतप्योअमाप ॥ गोस्वामीजीवनप्रभू, गुरुके तेजप्रताप ॥१७॥ पुत्रपौत्रसेवकसचिव, कोशदेशरनखग्ग ॥ जी तनीतकलरीतयुत, नृपसुखलहेअथग्ग ॥ १८ ॥ राजसिंहजीकेपां चवेंपुत्रवीरसिंहजी ॥ राजसिंहसुतपांचवें, वीरसिंहमहाराज ॥ तिन कोबंशरलावतें, राजतहैंसुखसाज ॥ १ ॥ वांकावतकेगर्भमें, जन्म लियोनृपवीर ॥ कछवाईकेगर्भतैं, च्यारोंभयेसुधीर ॥ २ ॥ बहादु रसिंहजीकेज्येष्ठपुत्रविरदसिंहजी ॥ बहादुरसिंहनरेशके, भयेकुंवर वरदोय ॥ बिरदसिंहतिनमेंबडे, बाघसिंहलघुजोय ॥ १ ॥ गोस्वा मीश्रीयुतसरस, विठ्ठलनाथकृपाल ॥ तिनसौंब्रह्मसँबँधलिय, विरद सिंहमहिपाल ॥ २ ॥ सुरबानीमेंअतिसुघर, षटशास्त्रनिविस्तार ॥

---

१ राजसिंहजीके दो रानी थी। बडे कछवाईजी छोटे वांकावतजी। यह कछवाईजी जयपुर महाराज श्रीमिर्जाराजा जयसिंहजीके छोटे पुत्र कीरतसिंहजी जो कामाके राजा थे जिनके पुत्र उमेदसिंहजी थे जिनकी पुत्री थी चतुरकुंवरिजी नाम था। २ संस्कृतमें.

पढिकैंपंडिनवरभये, अतिगुणज्ञरिझवार ॥ ३ ॥ टीकागीतगोविंद पैं, लघुअरुवृहतकरीसु ॥ विज्ञरसज्ञनिहितसरस, अतिपांडित्यभरीसु ॥ ४ ॥ टीकावृहतकरीतबैं, यहैंप्रतिज्ञालीन ॥ द्वितियेंशब्द मिलतेसतैं, पुनिशब्दनधरिदीन ॥ ५ ॥ यातैंवावनकोशकौं, लैसा निध्यविचार ॥ हेरशब्दपर्यायको, टीनोनृपउरधार ॥ ६ ॥ यह टीकायासमयमें, यातैंक्लिष्टमहान ॥ सहसाअर्थप्रकाशकौं, मम्नरह तवुद्धिवान ॥ ७ ॥ वावनकोशजुयादव्हैं, अतिव्याकर्णविनोद ॥ सरसाईसाहित्यकी, अरुसंगीतप्रमोद ॥ ८ ॥ न्यायवातस्यायन यवनं, भाषाऊहापोह ॥ जोजानैंसोकाहिसकैं, प्रकटअर्थतजिमोह ॥ ॥ ९ ॥ श्रीजीकीकुलरीतसम, सेवानिसिदिनकीन ॥ फेरनिवासहुलासयुत, वृंदाबनकोकीन ॥१०॥ लीलानित्यविहारमग, वृंदाबन केमांहि ॥ विरदसिंहपायोप्रवर, भवसमुद्रअवगांहि ॥ ११ ॥ श्री नागरमहाराजकी, छतरीरहीदिपाय ॥ ताकेछतरीपासही, इनकी दईबनाय ॥ १२ ॥ महाराज श्रीबहादुरसिंहजीके द्वितीय पुत्र वाघसिंहजी ॥ दावसिंहनृपकोलसैं, वंशफतेगढमांहि ॥ रसिकविहारी प्रभुजहां, अंतःपुरकेमांहि ॥ १ ॥ विरदसिंहजीके पुत्र प्रतापसिंह जी ॥ विरदसिंहमहाराजसुत, धीरवीरगुनवान ॥ रूपमहानप्रताप सिंह, वुद्धिवानबलवान ॥ १ ॥ श्रीविठ्ठलगोस्वामिगुरु, दियोमंत्र उंपदेश ॥ श्रीजीकीसेवाकरी, प्रेमसमेतनरेश ॥ २ ॥ श्रीप्रतापम

---

१ जब गीतगोविंदपर वृहत टीका बनाई तब वावन कोषोंमें शब्द मिला जहांतक वह शब्द दूसरी वेर नहीं धरा । २ फारसी । ३ ठाकुरजीकी नित्य विहार लीलाका मार्ग अर्थात् परलोक ।

हाराजमैं, संकटपरेविशेष ॥ तवारीखमेंदेखियो, वहइतिहासअशेष ॥ ३ ॥ ऐसेसंकटआपरे, जासौंविगरैंराज ॥ तिनसबकौंकाटेजलद, श्रीनाथजुमहाराज ॥ ४ ॥ प्रतापसिंहजीके पुत्र कल्यानसिंहजी ॥ इनकेसुतकल्यानसिंह, केतेकरेप्रबंध ॥ अष्टादशवेंवर्षमें, लियोब्रह्मसंबंध ॥ १ ॥ श्रीवल्लभगोस्वामिप्रभु, तिनकेचर्नसरोज ॥ जिनकीगहिशर्नजुलई, भक्तिमार्गकीमोज ॥२॥ श्रीयुतरायकल्यानकी, नृपकल्यानउदार ॥ टहलकरीअतिप्रीतिसौं, ताकोवारनपार ॥ ॥ ३ ॥ चमरछत्रअरुपात्रबहु, स्वर्णरौप्यकेवेश ॥ संकटवशकछुराजमें, कीनेखर्चविशेष ॥ ४ ॥ तिनसबकौंबनवायकैं, नूतनअतिकमनीय ॥ नृपकल्याननृपरूपज्यौं, भेटकियेरमनीय ॥ ५ ॥ पद्मरागमरकतजलज, इनकेभूषनचारु ॥ सिद्धकरायकल्यानसिंह, भेटकियेसुखसारु ॥ ६ ॥ राजभोगाद्विगुनितकियो, करिमनोर्थअभिराम ॥ तिंहिंहितभेटकियोनृपति, नोनिधपुरोसुग्राम ॥ ७ ॥ ग्रंथसुसेवारीतिको, रचिरमनीयनरेश ॥ कविताकीर्त्तनकौंकरी, अतिरसभरीविशेष ॥ ८ ॥ खासाअपरसरीतिसौं, सेवारीतिप्रबंध ॥ बांधिदियोताहीसुविधि, अवलौंव्हैंसुखसंध ॥९॥ कल्यानसिंहजीके पुत्र ह्मोकमसिंहजी ॥ नृपकल्यानकेकुंवरवर, म्होकमसिंहनरेश ॥ तिनकेश्रीवल्लभगुरू, गोस्वामीसुद्विजेश ॥ १ ॥ सेवाकियकुलरीतिसौं, श्रीजीकीकरिप्रीत ॥ व्हैंयुवराजसुराजको, काजकियोयुतनीत ॥ २ ॥ अल्पांतरकेसमयमें, कुंडवारेबहुकीन ॥ वीजैरवाडो

---

ग्रामका नाम नोनिध पुरा । २ ठाकुरजीके मनोरथसे भोग धरते हैं उसे कुंडवारा कहते हैं । ३ ग्रामका नाम वीजरवाडा ।

ग्रामइक, नृपतिभेटकरिदीन ॥ ३ ॥ औरमनोरथसवकरे, जासों जीतेयुद्ध ॥ भोअभिरामनुकामसम, नीतशुद्धमहाबुद्ध ॥ ४ ॥ श्री म्होकममहाराजकी, राणावतमहारानि ॥ महारानाअमरेशकी, तनयाबडकुलवानि ॥ ५ ॥ तिंहिंमंदिरसिद्धसुकियो, वहुभारीसुअनूप ॥ तहांगोवर्द्धननाथको, पधरायोलघुरूप ॥ ६ ॥ ग्रंथसुयाकेसुयशको, मतिमाफकमैंकीन ॥ तबहाथीशिरपावयुत, लाखपसावसुदीन ॥ ७ ॥ म्होकमसिंहजीके पुत्र पृथ्वीसिंहजी॥ दोहा—नीके दत्तकपुत्रश्री, पृथ्वीसिंहनरेश ॥ राजप्रजापालनप्रवर, मानहुद्वितीयसुरेश ॥१॥ श्रीविठ्ठलगोस्वामिउप, नामकन्हैयालाल॥ दियोब्रह्मसंबंधवर, व्हैकैंपरमकृपाल ॥ २॥ प्रेमपगेसेवनलगे, श्रीगोवर्धननाथ ॥ राजभोगनित्यानसौं, दुगनितकियमुदसाथ ॥ ३ ॥ श्रीजीकी सेवामहीं, दोनौंसमयेमांह ॥ आपसदाहीपँहुचते, धारिमनमेंउच्छाह ॥ ४ ॥ श्रीजीकेग्रामनिमहीं, बहुतखुदायेकूप ॥ वृद्धिकरी पैदासयौं, बुधिबलकरिकैंभूप ॥ ५ ॥ स्वर्णरत्नअरुरौप्यके, भूषणभाजनवेश ॥ नूतनसिद्धकरायकैं, भेटकियेपृथवेश ॥ ६ ॥

नवधा भक्ति वर्णनम् ॥नवधाभक्तिसुसिद्धिकिय, पृथ्वीसिंहनरेश॥ ताकोअबवर्ननकरौं, इकइकदोहावेश ॥७॥ श्रवनभक्ति ॥ सुनिभागोतसुबोधिनी, सुनिसिद्धांतअशेष॥भूपपरीक्षितज्यौंकरी, श्रवनभक्तिपृथवेश ॥ १ ॥८॥ कीर्त्तन भक्ति ॥ निजमुखसौंकीर्त्तनकरयो, हरिलीलासुखसार ॥ शुकज्यौंकीर्त्तनभक्तिकिय, पृथ्वीसिंहउदार ॥ ॥२॥ ९ ॥ स्मर्नभक्ति ॥ राजकाजकौंकरतही, हरिसुधिभूलेनांहि ॥

---

१ छोटा स्वरूप । २ ग्रंथ कर्त्ता कवि जयलाल । ३ गोद आये ।

सिद्धकरीप्रहलादज्यौं, स्मर्नभक्तिउरमांहि ॥ ३ ॥१०॥ अर्चनभक्ति॥ स्नानादिकशृंगारयुत, नीराजनपर्यंत ॥ पृथुज्यौंपृथ्वीसिंहनृप, अर्चनभक्तिकरंत ॥ ४ ॥ ११ ॥ ॥ चरन सेवनभक्ति ॥ कमलापतिकेचरनकी, शरनगहीसुखमानि॥कमलाज्यौंपृथिसिंहकिय, चरन सुसेवकजानि ॥ ५ ॥ वंदनभक्ति ॥ पदजानूउरसिरधरानि, धरिकर करिदंडोत ॥ कियपृथवेशअक्रूरज्यौं, वंदनभक्तिउदोत ॥६॥१३॥ दास्यभक्ति ॥ सबसेवासौंपौंहचिकैं,आज्ञाकारीवेश॥ लैंप्रसादहनुमानज्यौं, साधिदास्यपृथवेश ॥ ७ ॥ १४ ॥ सखाभक्ति ॥ अर्जुनकौंप्राप्तिसुभयो,हासविलासविनोद॥वहअनुभवसुखहरिदियो,सखा भक्तिरसमोद ॥ ८ ॥ १५ ॥ सर्वस्वात्मनिवेदनभक्ति ॥ तनमनधनसुसमर्पिकैं, बलिज्यौंनिजबलजान॥सर्वस्वात्मनिवेदनसु, सिद्धकरीराजान ॥ ९ ॥ १६ ॥ प्रेमाभक्ति ॥ इनतैंदशमीसिद्धभइ, प्रेमभक्तिरससार ॥ श्रीपृथिसिंहनरेशके, ताकोवारनपार ॥१०॥ १७ ॥ अरुश्रीजीकीमहरसौं, सिद्धभयेअभिराम॥ पृथीसिंहमहाराजके, उत्तमउत्तमकाम ॥१८॥ अग्निशकटआगमनतैं,भइसायरमधिहानि॥ गेवर्मेंटतैंनृपालियोताकोसवनुकसानि ॥ १९ ॥ इत्यादिकइतिहासकौं, तवारीखकेमांहि॥विधिपूर्वकसबदेखियो,सकलअभिज्ञउमांहि॥ ॥ २० ॥ पृथीसिंहमहाराजजू, कुलमेंभानुसमान ॥ वीरधीरगंभीरभो,भाग्यवानसुमहान ॥ २१ ॥ महाराज श्रीपृथ्वीसिंहजीके पुत्र श्रीशार्दूलसिंहजी जवानसिंहजी रघुनाथसिंहजी ॥ पृथ्वीसिंहनरेशके, तीनौंपुत्रमहान ॥ श्रीशार्दूलजवानअरु, अरुरघुनाथहिजान॥

---

1 रेलगाडी. २ अंग्रेजसरकार.

॥ १ ॥ तनुधारिकैंप्रकटेमनौं, अर्थधर्मअरुकाम ॥ पृथ्वीसिंहनरेश के, पुरुषारथअभिराम ॥ २ ॥ श्रीशार्दूलनरेशमें, धर्मरुकामसमान ॥ राजकाजकेहेतुतैं, सदाअर्थअधिकान ॥ ३ ॥ अर्थरुकामसमानहैं, दर्शतधर्ममहान ॥ जगमेंरहीजवानकी, धर्मध्वजाफहरान ॥ ॥ ४ ॥ लसतभूपरघुनाथमें, अर्थरुधर्मसमान ॥ मसिभीनैंवयहेतुतैं, कामअधिकसरसान ॥ ५ ॥ विजयराज्येमहाराजाधिराजमहाराजश्रीशार्दूलसिंहजीबहादुर जी. सी. आई. ई. श्रीशार्दूलनरेशको, अबैंकहौंवरताव ॥ सत्यसत्यसबभांतिनित, जोनैनांदरसाव ॥ ॥ १ ॥ महाभक्तश्रीनाथके,अनुभवरससुखहेत ॥ तनमनधनसौंप्रेमयुत, सेवाकोसुखलेत ॥ २ ॥ परमप्रीतिश्रीनाथके, चरनकमलके मांहि ॥ प्राचीननकेपुन्यतैं, कोलगिकहैंसरांहि ॥ ३ ॥ पृथ्वी¹सिंह महाराजजू, जोजोबांधीरीत॥ताकौंअतिदृढकरतहैं, शारदूलनृपप्रीत ॥ ४ ॥ रूपसिंहकेसमयतैं, अवलौंवनेपदार्थ ॥ जीर्णोद्धारसुसबनिको, कीनौंलखिनिजस्वार्थ ॥ ५ ॥ सिंहासनपलनारुरथ, पहिलैंसोंबडवार ॥ करिवायेशार्दूलनृप, रीतिबडनकीधार ॥ ६ ॥ जटितघटिततासौंकियो, भूषनवासनकोजु ॥ जीर्णोद्धारजलूसको, कहालौंकहिसककोजु ॥ ७ ॥ मकरानेकीजालियां, नवललगाइसुघाट ॥ निजमंदिरकेद्वारसब, चांदीकेजुकपाट ॥ ८ ॥ हिंडोरानकेफागके, आदिमनोरथसर्व ॥ आपकरैंअतिप्रीतिसौं, धारिधर्मकोगर्व ॥ ९ ॥ भ्रातुप्रमातृकलत्र²सौं, कहिसुबचनरसमूल ॥ करिवावैंशुभमनोर्थवहु, श्रीजीकेशार्दूल ॥ १० ॥ उच्छववैभवकहिसकन, ग्रं

---

१ दादी. २ स्त्री.

थवढनकेभीत ॥ ज्योदेखहिनिजनैंनसौं, करिहैंकहीप्रतीत ॥११॥
महाराजश्रीजवानसिंहजी ॥ श्रीमन्नृत्यगुपालकी, वार्त्ताहीकेमां
हि ॥ कह्योबहुतवृत्तांतवर, नृपजवानकोवांहि ॥ १ ॥ नृपजवानकी
नौंसरस, छप्पनभोगउछाह ॥ ताहिहेतुकौंसुनतही, कहिहैंजगवा
वाह ॥ २ ॥ छियालीसउगनीससैं, मार्गशीर्षसुदिजान ॥ तिथिअष्ठ
मिशनिशतभिषा, हैर्षसुबेवपहिचान ॥ ३ ॥ यादिननृपतिजवानके,
लीनौंजन्मकुमार ॥ श्यामसिंहतिंहिनामदिय, नृपद्विजमंत्रविचा
र ॥ ४ ॥ अग्रजश्रीशार्दूलनृप, अनुजभूपरघुनाथ ॥ जन्मोत्सव
आनंदउमंगि, कीनौंसरसअगाथ ॥ ५ ॥ होतपुत्रकेजन्मही, चितमें
धरीजवान ॥ करियब्रह्मसंबंधकरि, छप्पनभोगविधान ॥ ६ ॥ त
बपठयोगुरुदेवके, चर्नकमलकेमांहि ॥ विनतीपत्रसुप्रीतसौं, मन
मेंउमंगउमांहि ॥ ७ ॥ सुनिकैंविनतीपत्रको, श्रीविठ्ठलद्विजराय ॥
महुरतछप्पनभोगको, दियोलिखायपठाय ॥ ८ ॥ सैंतालिसउगनी
ससैं, पौषशुक्लबुधवर्ण ॥ द्वादशितिथिमृगशिरनछत, ब्रंह्मयोगबव
कर्ण ॥ ९ ॥ तवनृपछप्पनभोगकी, करनलगेततबीर ॥ श्रीजवान
महाराजजू, वीरधीरगंभीर ॥१०॥ महाराज श्रीरघुनाथसिंहजी ॥
श्रीरघुनाथनरेशजू, जिहिंविधिभक्तिकरंत ॥ उत्तरार्द्धमेंलखहिंगे,
भक्तिवंतगुनवंत ॥११॥ महाराज कुमार श्रीमदनसिंहजी ॥ श्रीशा
र्दूलनरेशके, श्रीमहाराजकुमार ॥ चिरंजीविमदनेशके, जेआचर्न
विचार ॥ १२ ॥ उत्तरार्द्धमेंवर्निहौं, अतिउमंगहरषाय ॥ ज्यौंज्यौं
निजनैंनालखौं, त्यौंदैहौंदरसाय ॥ १३ ॥ छप्पनभोगसुचांद्रिका,

---

१ हर्षनामक योग. २ बव नामक कर्ण.

भोसमाप्तपूर्वार्द्ध ॥ श्रीगुरुहरिकोस्मरनंकरि, कहिहौंअबउतरार्द्ध ॥१४॥ भयेवृंदविख्यातकवि, वृंदसतसईकीन ॥ तिंहिकुलकोजयक वियहैं, पूर्वार्द्धसुकरिदीन ॥ १५ ॥ इति श्रीछप्पनभोगचंद्रिकायां हरिसंबं धगुन प्रशंसगर्भितनृप वंशवर्ननं ॥

इति श्रीमत् कृष्णगढाधिपति महाराजाधिराज महाराजा श्रीपृथ्वीसिंहजी तद्द्वितीय पुत्र महाराजा श्रीजवान सिंहजी देववर्मणाज्ञया जयकवि रचित छप्पन भोगचंद्रिका पूर्वार्द्ध संपूर्णम् ॥

श्री नाथजी ॥

# श्रीनृत्यगोपालो जयति ॥

## अथ कृष्णगढाधिपति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजाजी श्री श्री श्री १०८ श्री श्री सावन्तसिंहजी द्वितीय हरिसंबंध नाम नागरीदास जी कृत,

# नागरसमुच्चयः ॥

### तत्रादौ मंगलाचरण ॥

दोहा ॥ परम पुष्टि रस जल अमित, उर्मी प्रेमावेश ।
नागर प्रकट आनन्दनिधि, बल्लभ सुतबिठलेश ॥ १ ॥
धन बल्लभ बिठलेश धन, धन्य सात सुत वंश ।
भव निस्तारनि हित प्रकट, नागर जगत प्रशंस ॥ २ ॥

नागरसमुच्चये—

# वैराग्यसागर ॥

### तत्रादौ

# प्रथम भक्तिमगदीपिका ॥

### मंगलाचरण ॥

॥ चौपाई ॥ श्रीभागवतसुअर्थरूपगुर । प्रणऊंतिनकौंतिनहिं धारिउर ॥ सर्वधर्मपरपर्म्मधर्मधुज । उचरौंआरंभसाखिसहितसुज १॥

यहऔसरचूकोमतिकोय । यहनरदेहबहुरिनाहिंहोय ॥ लख चौरासीभोग्यभोगसब । भयोजुनरसुभजोगजोगअब ॥ २ ॥ ताहिवृथामतिखोयकुढंग । जगनिधितरननावनरअंग ॥ कछुसुभ कर्मअवसिकरिलीजे । आतमघातकहोक्यौंकीजे ॥ ३ ॥ तहांप रएकादशस्कंधे ॥ श्लोक ॥ नृदेहमाद्यंसुलभंसुदुर्लभं, प्लवंसुकल्पं गुरुकर्णधारं ॥ मयानुकूलेन नभस्वतेरितं, पुमान् भवाब्धिं न तरेत्सआत्महा ॥४॥ अर्थ–देवादिक शरीर तिनहूकी आदि यह मनुष्यदेहकौं पायो वह मनुष्य देह अति दुर्लभ हैं । भगवत कृपाकरि याको सुलभ भयो यह देह संसारसमुद्र तरवेकौं नौकाहैं सो सब अङ्गनकरिसंयुक्तहैं । गुरुहीखेवकहैं मेरीअनुकूलतापवन हैं ऐसेहू मनुष्यदेहकरिकैं जो संसारसमुद्र न तरैं तो आत्मघातीहैं ॥ ५ ॥ चोपाई ॥ जगसमुद्रकहोकैसैंतरिये । कौनकर्मकरिकैंजुउ बरिये ॥ त्रिविधितापमैंप्रजुरितदेह । निसिदिनअतिदुखपरमअ छेह ॥ ६ ॥ जग्यदानतपकरैंजुकोय । लक्ष्मीआयुबिनानाहिंहोय ॥ पुन्यफलतुच्छस्वर्गअरुराज । दुखहीमैंकियोदुखकोसाज ॥७॥ स्वर्गतैंपुन्यछीनव्हैंपरैं । राजात्रिविधितापमैंजरैं ॥ सबविधिपूरन श्रीभगवान । सोतजिकैंचितचाहैंआंन ॥ ८ ॥ भजिहैंऔरैंदेवउ जागर । तऊनतरसकिहैंदुखसागर ॥ यहजानौंनिहचैंनिरधार स्वा नपूंछगहिकोभयोपार ॥९॥ तहांपरषष्टस्कंधे ॥ श्लोक ॥ अविस्मि तंतं परिपूर्णकामं, स्वेनैवलाभेनसमंप्रशांतं । विनोपसर्पत्यपरंहि बालिशः श्वलांगुलेनातितितर्त्तिसिन्धुं ॥ १० ॥ अर्थ–भगवानविषैं कछू आश्चर्य्य नहीं अपने स्वरूपानन्दही करिकैं परिपूरणहैं ।

या जीवतैं कछू चाहतनहीं सबविषैं समानहैं। जिनविषैं क्षोभ नहीं ऐसे प्रभुविना जो देवतान्तर की सरन जाय हैं। सो वह पुरुष जडहैं जैसैं कोऊ कुत्ताकी पूंछ पकरि समुद्र तरचो चाहैं ॥११॥ चौपाई ॥ स्वानपूंछगहैंकोमतिमंद। छाडिकृष्णअतिप्रबलगयंद ॥ मिटैंनदुखकियैंआंनउपाय। वृथानमनइतउतहिंभ्रमाय ॥ १२ ॥ सर्बधर्मकलिमैंदुरिभाजे। पर्मधर्मसर्वोपरिगाजे ॥ अनन्यशर्नेहरिपायनपरियैं। श्रीमुखकृष्णकह्योसोकरियैं ॥ ॥ १३ ॥ तहांपरगीता ॥ श्लोक ॥ सर्वधर्मान् परित्यज्य, मामेकं शरणं व्रज ॥ अहं त्वां सर्वपापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ १४ ॥ अर्थ—सर्बधर्म छाडिकैं एक मेरी सरण होहु मैं तोकौं सब पापनितैं छुडाऊंगो तू सोक नां करि॥१५॥ ॥ चौपाई ॥ यहसन्देहजोरहैंहियभोय। तनपातादिविघ्नविचहोय ॥ शर्नभक्तिदृढतानहिंपावैं। उतकौंआंनधर्ममिटिजावैं ॥ १६ ॥ इतकोहोयनउतकोप्रानी। रहैंझूलहीबीचअज्ञानी ॥ यहत्रिसंकगतिनाहिंनव्हैंहीं। तनकभक्तिफलपूरनदैंहीं ॥ १७ ॥ तहांपरप्रथमस्कंधे ॥ श्लोक ॥ त्यक्त्वास्वधर्मंचरणांबुजंहरेर्भजन्नपक्वोथपतेत्ततोयदि ॥ यत्रक्वा भद्रमभूदमुष्यकिं, कोवार्थआप्तो भजतां स्वधर्म्मतः ॥ १८ ॥ अर्थ—अपने वरणाश्रम धरमकौं त्यागिकैं भगवानके चरणारविन्दको भजन करत परपक्व भयें बिना भ्रष्ट होयजाय तो वाकौं काहू देहमैं अङ्गमल नाहीं जातैं भक्ति संसकार दृढहैं जाको नास नहीं अरु भजन रहित वर्णाश्रम धर्म्मन तैं कौन अर्थकी सिद्धि

होतुहैं ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ मानुषसिरारिणजनम्यौंतवको । देवपितररिषिभूतनसबको ॥ हरिकेअनन्यशरनजबहोय । छूटैं रिणसंदेहनकोय ॥ २० ॥ तहांपरएकादशस्कंधे ॥ श्लोक ॥ देवर्षिभूताप्तनृणां पितृणां, न किंकरो नायमृणी च राजन् ॥ सर्वात्मना यः शरणं शरण्यं, गतो मुकुंदं परिहृत्यकृत्यम् ॥ २१ ॥ अर्थ—देवता ऋषि औरहू प्राणीमात्र और कुटम्ब मित्रादिक पितर इनको किङ्कर कहिये आज्ञाकरता ऋणी नहीं कौन जो कायक बाचक सुभाव करिकैं अहङ्कार छाडि श्रीकृष्णचन्द्र सबनिके मुक्तिके दायक तिन प्रभुकी सरनआयो ॥ २२ ॥

## अथ हरिशरण विधि। प्रथम गुरुशरण विधि।

॥ चौपाई ॥ प्रथमहिंगुरुकीशर्णव्हैंप्रानी । तनमनधन बचन निमृदुबानी ॥ प्रसिधसंप्रदामैंगुरुकरियैं । मनकल्पितमतमैंनहिं परियैं ॥२३॥ तापैं ॥ श्लोक ॥ तस्माद्विसुभगे नित्यं, सम्प्रदायं समाचरेत् ॥ सम्प्रदायविहीना ये, मंत्रास्ते निष्फलामताः॥२४॥ अर्थ—ता कारण तैं हे पारवती नित्यही काहू संप्रदायको आचरण जीव करैं अरु जे सम्प्रदायकैं विहीनहैं तिनके मंत्र निःफल माने हैं ॥२५॥ इति गुरु शरण अंग ॥ अथ हरिसरनअंग ॥ चौपाई॥ पहिलैंव्हैंकैंगुरुकीशर्नै। नवधाभक्तिकरैंसुभकर्नै ॥ सोनवधाविधि सुनिमनलाय । सुनतहितनमनाहियोसिराय ॥ २६ ॥ तहांपरस प्तमस्कंधे ॥ श्लोक ॥ श्रवणं कीर्तनं विष्णोः, स्मरणं पाद सेवनम् ॥ अर्चनं वंदनं दास्यं, सख्यमात्मनिवेदनम् ॥ २७ ॥

अर्थ—भगवान के गुननिको श्रवण अरु कीर्तन अरु प्रभुके स्वरूप लीला गुननिको स्मरण अरु चरणारविन्दकी सेवा अरु प्रभुके श्रीविग्रहको अर्चन सुगन्ध पुष्प अलङ्कारादि करिकैं अरु वन्दन कहिये प्रभुकौं साष्टांग प्रणति अरु दम्भ छाडिकैं भगवानको दास्यभाव अरु सख्यकहियैं प्रभुकौं सकलपुरुषार्थ दायक परमहितकारक जानैं यामैं दृढविश्वास अरु आत्मनिवेदन कहिये अपने पुत्र कलित्र द्रव्य देह प्रभुकी सेवाविषैं समर्पण करैं॥२८॥

## अथ श्रवण अंग ।

॥ चौपाई ॥ नवधाभक्तिमैंमुख्यश्रवणहैं । श्रवणश्रवणहियभक्तिद्रवणहैं ॥ श्रवणकियैंबिनुनरकहाध्यावैं । जैसैंअंधनमारगपावैं ॥ २९ ॥ श्रवनसुनेबिनुकछूनजानैं । बिनजानेवस्तुनपहिचानैं ॥ यातैंसबमैंमुख्यश्रवनहैं । महात्रिविधितनतापदवनहैं ॥ ३० ॥ अष्टभक्तिहूइहितैंआवत । पुनदसमीहूयातैंपावत ॥ विनाश्रवननर महाअग्यान । सींगपूंछबिनपशुहैंजान ॥ ३१ ॥ चौपदभाग्यतैंघासनखावत । प्रगटिग्रामसूकरदरसावत॥ छाडिकथाहरिअमृतजथा। करतहैंदुर्भोजनजगकथा ॥ ३२ ॥ तहांपरतृतियस्कंध ॥ श्लोक ॥ नूनं दैवेन निहता, ये चाच्युतकथासुधाम् ॥ हित्वाशृण्वंत्यसद्गाथाः पुरीषमिव विड्भुजः ॥ ३३ ॥ अर्थ—निश्चयकरि जो पुरुष श्रीकृष्णचन्द्रकी कथारूपी अमृत ताकौं छाडिकै आन विषय गाथा सुनैं ते पुरुष दैवमारे हैं अरु जैसैं सूकर विष्टा खाइ ऐसे विष्टा के खानहारहैं ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ हरिइच्छाकियोज

गतप्रकाश । अरुइच्छातैंव्हैंसबनाश ॥ जिहिंकरिलीलाबहुवपुसाज । सोतोकथाहौंनकेकाज ॥ ३५ ॥ इतोकथाहितप्रभुश्रमकीनौं जोनसुनैंसोईमतिहीनौं ॥ कृष्णकथाकौंरुचिसरसात । ज्यौंलंपट सुनिजुवतीबात ॥ ३६ ॥ गदगदपुलकहरषव्हैंआवत । श्रवननि प्यारीकथासुहावत ॥ व्रजमथुराद्वारावतनाथा । नौरसमईसुजाकी गाथा ॥ ३७ ॥ जाकींजिहिंरससौंरुचिहोइ । कृष्णकथाक्यौंसुनैं नजोइ ॥ सुनततृपतिकौंकथाविधान । दसहजारमांगेपृथुकान ॥ ॥ ३८ ॥ तहांपरचतुर्थस्कन्ध ॥ श्लोक ॥ तदप्यहं नाथ न कामयेक्वचिन्नयत्रयुष्मच्चरणांबुजासवः ॥ महत्तमांतर्हृदयान्मुखच्युतो विधत्स्वकर्णायुतमेपमेवरः ॥ ३९ ॥ अर्थ—हेनाथ जहां तुह्मारे चरणारविन्द की मकरन्द नहीं सो कामना मैं न मांगूं जो मोकौं वर देतहो तो यह देहु जो सन्तजन तिनके अन्तष्करन हृदय मुखतैं श्रव्यो ऐसो जो तिहारो जस ताके श्रवनकौं दस हजार श्रवन देहु ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ विनाश्रवनअनुरागनहोय। यहनिश्चयजानौंसबकोय ॥ प्रथमहोयश्रवननिअनुराग । तबबाढतमननैंननिलाग ॥ ४१ ॥ बढैंलागजबहीमननैंननि। प्रीतमबात विनाछिनचैंननि ॥ अपनीकथासंगकरिगौंन । करनद्वारआवतहियभौंन ॥ ४२ ॥ तहांपरद्वितीयस्कंध ॥ श्लोक ॥प्रविष्टः कर्णरंध्रेण स्वानांभावसरोरुहम् ॥ धुनोति शमलं कृष्णः सलिलस्य यथा शरत् ॥ ४३ ॥ अर्थ—श्रीकृष्णचन्द्रजू अपनें भक्तजनके हृदय कमलविषैं कर्णद्वारकरि प्रवेश होय मलीनताकौं दूरि करैं॥४४ ॥ ॥चौपाई ॥ सुनियेश्रीभागोतपुरान । हियतमहरनप्रगटभुवभान ॥

ग्यानवैरागभक्तिकोआगर। लीलाललितकृष्णरससागर॥ ४५॥ जथासमयसोनित्यसुनीजे।श्रवननिकथासुधारसपीजे॥बातसारयह चित्तमैंचुनियैं। नानाअसतशास्त्रनहिंसुनियैं॥ ४६॥ कृष्णभक्ति दृढताहिनपावैं। असतशास्त्रभ्रमकौंउपजावैं॥ भोरोमननकहूंठ हराय। चकाव्यूहभ्रममैंपरिजाय॥ ४७॥ कहाशास्त्रकहाभा षाचार। जोईभागवतकैअनुसार॥ सोईसुनिसुनिहियेहितइये। हरिचरित्रसुनिजनमवितइये॥॥ ४८॥ (पैं) एकसमयभागोतसु नीजे। ज्यौंगुरुमंत्रनामनिजलीजे॥ एकहिअर्धहिसुनियेश्लोक। किधौंपदहिरसश्रवननिओक॥ ४९॥तहांपरपद्मपुराणे॥श्लोक॥ श्लोकार्द्धं श्लोकपादंवा, श्लोकं भागवतस्यच॥ शृणुयाद्वैष्ण वो नित्यं, विष्णुप्रीतिकरं परम्॥ ५०॥ अर्थ—एकश्लोक आधो श्लोक चोथाई श्लोक भागवत को नित्य सुनैं। भागवत को श्लोक भगवानकौं प्रसन्न करैं हैं॥ ५१॥ चौपाई॥ जाकैंहो यभागवतकथा। ताकोगृहहैंतीरथजथा॥ तिनकेमिटतजगतसं ताप। सोनरपावननितनिहपाप॥ ५२॥तहांपरपद्मपुराणे॥श्लोक॥ कथा भागवतस्यापि, नित्यं भवति यद्गृहे॥ तद्गृहं तीर्थरूपंहि, वसतां पापनाशनम्॥ ५३॥ अर्थ—श्रीभागवत की जो कथा निति जाके गृहविषैं होय ताको गृह तीरथरूप हैं अरु वसै हैं तिनके पाप नाश होय हैं॥ ५४॥ इति श्रवण अंग॥

## अथ कीर्तन अंग।

॥ चौपाई॥ कृष्णकथानित्यकीर्त्तनसजियैं। कीर्त्तनकरतन कबहूंलजियैं॥ द्वैवधर्मइककीरतनअंग। कीरतनश्रवनहोतहैसं

ग ॥५५॥ नामकीरतनधुनिसुमोहनी । हृदैमंदरमलकीजुसोहनी ॥ च्यारौंजुगमैंकीरतनसार । कलिमैंप्रगटतभयोअपार॥५६॥ कीरतनमहिमाकहीनजात । अजामेलकीसुनिलैंबात ॥ यहरसनाहैंमुखमैंचाम । कृष्णकीरतनाबिनबेकाम ॥ ५७॥ नामकीरतनअरुभगवान । येदोऊहैंएकसमान ॥ पैनामीतैंनामअधिकरे । नामीरामनामनिधितरे ॥ ५८॥ नामीगनेंसुजीवउवारे । एकनामअगनितजियतारे॥ नाममहातमपारनलह्यो ॥ ब्रह्माहूतैंजातनकह्यो॥५९॥ औरैंसाधनकीर्त्तनपाछैं । ताकीअगनितसासतरसाछैं ॥ यामैंपात्रनदेशनकाल । धनचहियेनकछुजंजाल ॥ ६० ॥ तनछिनभंगआयुगतिछीन॥ यातैंकीरतनकरोप्रवीन॥भोनरजनमकीरतनसाधो कीरतनहोतजहांहींमाधो ॥ ६४ ॥ तहांपरपद्मपुराण ॥ श्लोक ॥ नाहंवसामि वैंकुंठे योगिनां हृदये नच ॥ मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद ॥ ६५ ॥ अर्थ–हे नारद मैंवैंकुंठमैं वसौं नहीं॥ अरु न जोगी जनौंके हृदयमैं बसौं जहां मेरे भक्त कीरतन करैंहैं तहां मैं वसत हौं ॥ ६६ ॥ चौपाई॥ जग्यकरत तपकरत कष्टकरि।बहुतवरपहूतैंहैं प्रसन्नहरि॥सोकीयेकीर्तनलघुकाल।रीझतथोरेमांझदयाल॥६७॥तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक॥ कलेर्दोषनिधेराजन् नास्तिह्येकोमहान्गुणः ॥ कीर्तनादेवकृष्णस्य मुक्तबंधःपरंव्रजेत् ॥६८॥ अर्थ–यह कलिजुग सकल दोषनिधि हैं तामैं एक गुन सर्वोपर हैं जो भगवानके गुन कीर्तन मात्रहीं करिकैं सब वन्धनतैं छूटिकैं भगवानकौं प्राप्त होय ॥ ६९ ॥ इति कीर्तन अंग ॥

## ॥ अथ स्मरण अंग ॥

॥ चौपाई ॥ श्रवनकीरतनकरैंजुकोय। ताकोफलहरिसमरन होय ॥ हरिसमरनलाग्योजबहौंन। ताकोहृदयकियोहरिभौंन७० अपनौंभवनबहुरिकोत्यागैं ॥ अतिऊज्जलरापतअनुरागैं ॥ समरनभक्तिपरमहैंनिधि ॥ यातैंअधिकनऔरौंरिधि ॥ ७१ ॥ कीटभृंगभयसमरनकरैं ॥ यातैंकीटभृंगवपुधरैं ॥ मोहनसमरनमोहनमई। ताकीकहाअचिरजगतिभई ॥ ७२ ॥ रोकीगृहजागिपतनीगोपी। सोतजिदेहदिव्यतनओपी ॥ समरनकरिहरिप्रापतिभई। समरन महिमाजातनकही ॥ ७३ ॥ ज्यौं विषईबहुसुमरिविषयनित। विपयमईव्हैंजावतवेचित ॥ यौंहरिसुमरैहरिसौंप्रीत। यहनिश्चयजियराषिप्रतीत् ॥ ७४ ॥ तहांपरएकादसस्कंध ॥ श्लोक ॥ विषयान् ध्यायतश्चित्तं विषयेषुविषज्जते ॥ मामनुस्मरतश्चित्तं मय्येवप्रविलीयते ॥ ७५ ॥ अर्थ–जैसैं पुरुष निरंतर विषयनिको ध्यान करैं तो विषयनिहूमैं चित्त आसक्त होय जातहैं ॥ ऐसैं श्रीकृष्ण चंद्र कहैंहैं जो मेरो निरंतर समरन करैंहैं ते मेरे विषैं आषक्तहोतुहैं ॥ ७६ ॥ इतिस्मरणअंग ॥

## अथ पदसेवन अंग ॥

॥ चौपाई ॥ सेवाकरैंजेसासतरकही। देहधरैंकोहैंफलयही ॥ सिलामईमणिमनोमईहैं। धातमईसुभचित्रठईहैं ॥ ७७ ॥ औरस्मृत्तिकालेप्यादार। सेवाकरतव्यअष्टप्रकार ॥ जासौंजिहिंविधिकीवनि आवैं। जथासमयजहांतनमनलावैं ॥ ७८ ॥ तहांपर एकादशस्कं

घ ॥ श्लोक ॥ शैलीदारुमयी लौही, लेप्यालेख्याच शैकती ॥ मनोमयी मणिमयी, प्रतिमाष्टविधाःस्मृताः ॥ ७९ ॥ अर्थ-सिलामई अरु काष्टमई धातुमई लेप्यमई अरु चित्रमई मृत्तिकामई मानसी तथा मणिमई यह आठ प्रकारकीप्रतिमा कहिये ॥७९॥ ॥ चौपई ॥ व्हैंसामर्थ्यजोतिकदेह । तेतिकटहलकरैंजुतनेह ॥ विविधिटहलकहाकहैंवषान । करैंजथाऔकासप्रमान ॥ ८० ॥ नित्यप्रभूकीसेवाअनुसरैं ॥ लषिलषिरूपनैंनजलभरैं ॥ सेवामैंउपजैं अनुराग ॥ तोतासमनकोऊबडभाग॥८१॥ हरिसेवतअरुसेवतसाध ॥ ताकीमहिमाभाग्यअगाध ॥ लग्योकोऊजोसेवामांहीं । प्रीतिभावभक्तनसोंनांहीं ॥ यौंवभागवतटेरिसुनावत । सोवहप्राकृतभक्त कहावत ॥ ८२ ॥ तहांपरश्रीमद्भागवतेमहापुराणेएकादशस्कंधे जनकप्रतिनवजोगेश्वरवाक्य ॥ श्लोक ॥ अर्चायामेवहरये पूजां यःश्रद्धयेहते । नतद्भक्तेषुचान्येषु सभक्तःप्राकृतःस्मृतः ॥ ८२ ॥ अर्थ-प्रतिमा विषैं तो पूजाकरैं श्रद्धाकरि हरिकी अरुताहरिकेभक्तनविषैंश्रद्धापूर्वकपूजाकरैंनहीं सो प्राकृत भक्तकहिये॥८३॥पुनः पद्मपुराणे॥श्लोक॥ आराधनानांसर्वेषां विष्णोराराधनंपरम्॥ तस्मात्परतरंदेवि तदीयानां समर्चनं ॥ ८४ ॥ अर्थ-सव देवतानके आराधन तैं विष्णुको आराधनश्रेष्टहैं ताहूतैं उनके भक्तनिको आराधन सेवन बिसेषहैं ॥ ८५ ॥ चोपाई ॥ पुनिश्रीमाधोकह्यो सुनाय । सोवसुनौश्रवननिचितलाय ॥ जद्यपिमेरोभक्तकहावत ॥ मुहिसेवतनिसद्यौसविहावत ॥ ८६ ॥ तदपिनहींभक्तनिकोभक्त ॥ ताकीभक्तिवृथामधिजक्त ॥ मैंनगनूंतांहिंभक्तिनिवास ॥ जोनाहिं

मोदासनकोदास ॥ ८७ ॥ केवलमेरेसोनाहिंमेरे । मेरेजोमोजन केचेरे ॥ यहकह्योअर्जुनसौंभगवान । प्रगटसाषिमध्यआदिपुरान ॥ ८८ ॥ तहांपरआदिपुराणे ॥ श्लोक ॥ येमेभक्ताजनाः पार्थ नमेभक्ताःश्चतेजनाः ॥ मद्भक्तानांचयेभक्ता ममभक्तास्तुते नराः ॥ ८९ ॥ अर्थ--हे अर्जुन जे जन मेरे भक्तहैं तिनकौंमैं अपने भक्त न गनौं मेरे भक्तनके जे भक्तहैं ते जन मेरे भक्त हैं ॥९०॥ चौपाई ॥ प्रभुकह्योअपनौंभक्तप्रभाव। यातैंदोऊसेवोजुतभाव ॥ जिंहिंनरहरिकीसेवागही । मुक्तिसमीपइहींतनलही ॥ ९१ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ इत्यच्युतांघ्रिंभजतोनुवृत्या भक्तिर्विरक्तिर्भगवत्प्रबोधः ॥ भवंतिवैभागवतस्यराजं स्ततःपरां शांतिमुपैतिसाक्षात् ॥ ९२ ॥ अर्थ--जब निरंतर भगवानके चर्नारविंद की सेवाकरैं तव याकौं श्रीकृष्णचन्द्रके स्वरूपमैं राति और सबपदार्थनि विषैं बैराग्य अरु भगवत स्वरूपको अनुभव होय तबही साक्षात् परम शांतिकौं प्राप्तिहोइ ॥ १०० ॥ इति पदसेवनअंग ॥

## अथ अर्चनअंग ॥

चौपाई ॥ जथासक्तिहरिअर्चाकीजैं । धनतैंतनहिंसफलकरिलीजैं । सींचैंविटपमूलज्यौंकोय । साषापत्रहरितसबहोय ॥१॥ (जो) मूलटारिपल्लवजलदीनौं । निर्फलजायसकलश्रमकीनौं ॥ हरिकी मायाहरिपैंधरनी । अपनीनाहिंसुअपनीकरनी ॥ २ ॥ तहांपरषष्ठस्कंध ॥ श्लोक ॥ यथाहिस्कंधशाखानां तरोर्मूलावसेचनं ॥ एव

माराधनंविष्णोः सर्वेषामात्मनश्चहि ॥ ३॥ अर्थ--जैसैं वृक्षके मूल के सींचेतैं सवही स्कंध अरु डार पत्रादिकनिकी तृप्ति होतुहैं ऐसैं श्रीकृष्णचंद्रके आराधनतैं सर्व देवतानकी अरु अपनीहू तृप्तिहो तुहैं ॥ ४ ॥ इति अर्चनअंग ॥

## अथ बंदनअंग ॥

॥ चौपाई ॥ प्रभुपदकमलनिजोसिरनावत । ताहिस्यामआपुनअपनावत ॥ देतभक्तिअपनायप्यारतैं । नमतसीसतवभक्तिभारतैं ॥ यहनिश्चयमेरैंजियआई । सीसनमैंनांहिंविनगरवाई ॥ अच्युतगोत्रींहिजगुरदरसैं । भगवतरूपजानिजियसरसैं ॥ ६ ॥ पहिलप्रनामकरैंसिरनाय । समयपायसिरपरसैंपाय ॥ फलतअंवकीझंवझुकौंहीं । डारिबंबूरअकासउठौंहीं ॥ ७॥ इहिंजगमांझनमैंगोजोई । पदवीऊच्चलहैंगोसोई ॥ जितोजंत्रनलनीचोहोई । तेतोऊंचोपहुंचैतोई ॥८॥ नरसुरअसुरदोषजिंहिंकीनौं । बंदनकियैंक्षमाकरिदीनौं ॥ यांतैंनितनिश्चयजियधरिये । वंदनाप्रियसौंबंदनकरिये ॥ ॥९॥बंदननित्यलाभकिनलूटैं । वंदनतैंबंधनसबछूटैं ॥ बंदनवंदनदसअश्वमेद । कहतपुरानमहातमभेद ॥११०॥ तहांपरस्कंधपुराण॥ ॥ श्लोक ॥ एकोपिकृष्णस्यकृतःप्रणामो दशाश्वमेधावभृथैर्नतुल्यः॥ दशाश्वमेधीपुनरेतिजन्म कृष्णप्रणामीनपुनर्भवाय॥१११॥ ॥अर्थ–जो श्रीकृष्णचंद्रकौं एकही वंदन करैं तो ताके दस अश्वमेध यज्ञांत स्नानहू तुल्यनहीं क्यौं कि यह अधिकता जो दस अश्वमेध कियेतैं वहुर जन्मकौं धरैं अरु श्रीकृष्णचद्रकौं

प्रणामकिये तैं बहुरिजन्मकौं प्राप्त न होय॥११२॥ इति वंदनअंग॥

## अथ दास्यअंग ॥

॥ चौपाई ॥ दासहोयकैंदासकहावैं । दासरूपनिजअंगबनावैं ॥ मुद्रातिलकसुतुलसीमाल । रहैंबेसमंडितसबकाल ॥ ११२॥ राखैंअंगपवित्रसंवार । सेवतस्वामीनिकटविहार ॥ ज्यौंवपतिवतीबधूदेषिपथ । काजरतिलकतंबोलपोतिनथ॥११४ ॥ बीभछरहैंरुरूपभयंकर। पदवीदासनसोहततापर॥ (ज्यौं)भौंडीदीसतपतिविनजाया । रूपअमंगलसूंनीकाया ॥ ११५ ॥ इष्टनजानपरैंविनछाप । कोलहैंवेस्यासुतकोबाप ॥ विनबानैंनहिंमांनैंकोय । महाबीरवानैंतहैंसोय ॥ ११६ ॥ सबजानैंजबव्हैंसहदान । ज्योंवछापतैंपत्रप्रमान ॥ कृष्णाचरनअंकितजबठयो । गरुडतैंकालीनिर्भयभयो ॥११७॥ ऊंचनीचअधिकारीसबही दासरूपबडभागीतबही ॥ तुलसीगोपीचंदनकाय । इनकीमहिमाकहीनजाय ॥ ११८ ॥ तहांपरस्कंदपुराणे ॥ श्लोक ॥ तुलसीकाष्टजांमालां कंठस्थांवहतेतुयः ॥ अप्यशौचोप्यनाचारो मामेवैतिनसंशयः ॥ ११९ ॥ अर्थ—जोतुलसीमालाकौं कंठविषैं धारैं सो अपवित्रहोय आचाररहित होय तोहू मोकौं प्राप्तहोय यामैंसंशयनहीं ॥ १२० ॥ तहांपरस्कंदपुराणे ॥ श्लोक ॥ यस्यांतकालेस्त्युतगोपिचंदनं बाव्होर्ललाटे हृदिमस्तकेच ॥ प्रयातिलोकं सरमापतेर्मम गोबालघाती यदिब्रह्महास्यात् ॥ १२१ ॥ अर्थ—गोपीचंदन जाके बाहु ललाट हृदय मस्तक विषैं होय सो जन गो बालघाती ब्रह्मघाती होय तोभी र-

माकोजुपतिमैं ताके लोककौं प्राप्ति होय ॥ १२२ ॥ चौपाई ॥ तुल सीचंदनमहिमामहा । लघुमतिवरनसकौंहौंकहा ॥ ताकेतिलकलाले तहरिमंदिर । लिख्योभालजनौंगोपपुरंदर ॥ १२३ ॥ सोबैभवझिल कतमनौंबाहिर ज्यौंवमिहौंपटमांझजंवाहिर ॥ नरधारोधारोकिन नारी । तिलकदामनितमंगलकारी ॥ १२४ ॥ कौंनकरैंजगयाकौं दूषन । परममनोहरनैननिभूषन ॥ रूपानंदचाहभईजियकैं । मं गलतिलकरामरच्योसियकैं ॥१२५॥ तहांपररामचरित्र ॥ श्लोक ॥ सनिर्घृष्यांगुलिंरामो गिरिधातौमनःशिले ॥ चकारतिलकंपत्न्या ललाटे रुचिरं तदा ॥ १२६ ॥ अर्थ—श्रीराम चंद्रजू चित्रकूट पर्व तविषैं धातजो मनःशिल तामैं अंगुरिनतैं पत्नी श्रीज्यानकीजू ता के लिलाटविषैं सुंदर तिलक बनावत भये॥१२७॥इतिदास्यस्वरूप॥

## अथ दासक्रिया ॥

॥ चौपाई ॥ हरिउच्छिष्टभोगीन्हैंरहैं । विनउछिष्टकछुवस्तु नलहैं ॥ सब्दपरसपररूपसुवास । प्रभुसमंधभोगैंसोदास ॥१२८॥ यौंभोगभुक्तिमैंहोयनबाधा । न्हैंसबसिद्धिसहजसुषसाधा ॥ बिनप्र सादभोगीजेदुषी । हरिकेदासरहैंनितसुषी ॥ १२९ ॥ तहांपरएका दशस्कंध ॥ श्लोक ॥ त्वयोपभुक्तस्त्रग्गंध वासोलंकारचर्चिताः ॥ उछिष्टभोजिनोदासा स्तवमायांजयेमहि ॥ १३० ॥ अर्थ—तुम्हारी उतीरण भोगीजो माला सुगंध वसन भूषण इनकारि सोभित ऐसे उछिष्ट भोगी जो हम दास सो तुह्मारी माया कौं जीतैं इति दास्य अंग ॥

## अथ सख्यअंग ॥

॥ चौपाई ॥ वेईश्वरयहजीवजदपिहैं । मित्रत्वनातोकरनौंतदपिहैं ॥ मित्रभावतैंप्रीतबिसेषो । लौकिकदेषिअलौकिकदेषो ॥ १३ ॥ प्रीतिकहांऐस्वर्जजहांहैं । प्रीतिरीतिव्रजभूमितहांहैं ॥ हैंसष्यतुगोपीगोपनके । प्रीतिपारनहिंउनकेमनके ॥ १३३ ॥ हरिजलमीन सकलब्रजबासी । सहजसषाश्रीकृष्णउपासी ॥ अचिरजमतिभइविश्वसृजनकी । सष्यतुभक्तिदेषिव्रजजनकी ॥ १३४ ॥ तहांपर वत्सहरणसमयकोब्रह्मबाक्य ॥ श्लोक ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यं नंदगोपव्रजौकसां ॥ यन्मित्रंपरमानंदं पूर्णब्रह्मसनातनं ॥१३५॥ अर्थ–श्रीनंदगोपजूकोजु व्रज ताकेजुब्रजबासी तिनको जु भाग्य सो आश्चर्य उपजावतहैं जीनके परमानंद रूप परिपूर्ण ब्रह्मकहिये सर्व कलाजुत सनातन कहिये नित्य ऐसेजु श्रीकृष्णचंद्रजू जिनके मित्र कहिये सखाहैं ॥ १३६ ॥ चौपाई ॥ नित्यप्रतिसष्यत्वभक्तिरूपधर । सेवतबृंदाविपुनभूमिबर ॥ नितिनवजोबनभक्तिअंगेटा । ग्यानवैराग्यबृद्धसंगबेटा ॥ १३७ ॥ सष्यतुभक्तिसदातनतरुनी । रसिकस्यामकीहैंमनहरनी ॥ नवलभक्तिबिचनववृंदावन । नृत्यकरतरसमत्तमहामन ॥१३८॥ तहांपरपद्मपुराण ॥ श्लोक ॥ वृंदावनंपुनःप्राप्यनवीनांगासुरूपिणी जाताहंयुवतीसम्यक् प्रेष्टरूपातु सांप्रतं ॥ १३९ ॥ पुनः नारदवचन भक्तिप्रति ॥ श्लोक ॥ वृंदावनस्यसंयोगात् पुनस्त्वंतरुणीनवा। धन्यंवृंदावनंतेन भक्तिर्नृत्यातियत्रच॥ १४० ॥ अर्थ–वृंदाबनकौं बहुरिमैं प्राप्त होय नवीन

रूपा जुवती भलैंप्रकार प्रिय रूपभई॥१४१॥नारद वचन॥वृंदावन केसंजोगतैं बहुरितैं तरुणी नौतनभई वृंदावन धन्यहै ताकरि जहां भक्तिनृत्यकरैं हैं ॥१४२॥ चौपाई ॥ हरिअष्टभाक्तिसेवतअभिराम। सष्यभक्तिकौंसेवतस्याम ॥ ब्रह्मादिकजाकीपदरजध्यावैं । सीस छुवनकौंसोउनपावैं ॥ १४३ ॥ जोप्रभुसष्यतैंभक्तिरिझाये । कांधे अपनेग्वारचढाये ॥ हारेआपुनजीतेग्वाल । महिमासष्यतुभक्तिविसाल ॥ १४४ ॥ तहांपरदशमस्कंध ॥ श्लोक ॥ उवाहकृष्णोभगवान् श्रीदामानंपराजितः ॥ वृषभंभद्रसेनस्तु प्रलंबोरोहिणी सुतं ॥१४५॥ अर्थ-श्रीकृष्ण आप क्रीडामैं हारे तब सषाश्रीदामाकौं अपने कांधे राषतभये भद्रसेन बृषभकौं कांधैं धारत भयो अरु प्रलंबासुर रोहिणीसुत बलदेवजी ताकौं धारत भयो ॥ १४६ ॥ इति सष्य अंग ॥

## अथ आत्म निवेदन अंग ॥

॥ चौपाई ॥ तनमनधनकुटंवजुतनेह । कृष्णनिवेदनगृहकरिदेह ॥ हरिवैभवकोरक्षकरहैं । वस्तुनकोऊअपनीकहैं ॥ १४७ ॥ अपनौंअवस्यकाजकछुआवैं ॥ करिप्रार्थनाद्रव्यलगावैं । अधिक आडंबरनांहिनकरैं । जथाकाजसुलपहिअनुसरैं ॥ १४८ ॥ कृष्णोत्सवजन्मादिकआवैं । व्हैंउदारअतिद्रव्यलगावैं ॥ रक्षाकैंनकछूतवतनधन । हरिउत्सवआनंदमत्तमन ॥ १४९ ॥ कृष्णसमंधकरैं गृहकाज ।कृष्णसमंधीसवसुषसाज॥ निजमंगलहूकरैंअमंधी। मंगलगावैंकृष्णसमंधी ॥ १५० ॥ कहाकहीनहिंरहैंजक्तकी ।सहजरी

तिपरिजायभक्तकी ॥ सर्वकालयौंकरैंबितीत । आत्मनिवेदीकीय हरीत ॥ १५१ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ एवंधर्मैर्मनुष्याणा मुद्धवात्मनिवेदिनां मयिसंजायतेभक्तिः कोन्योर्थोस्यावशिष्यते ॥ १५२ ॥ अर्थ—याभांति इनधर्मनि करिकैं जेमेरे विषैं आत्म निवेदन करैं हैं तिनकी मेरैं विषैं भक्ति होतुहै तब याकौं और कोनसो अर्थ बाकीरहैं सबही पूर्ण हैं ॥ १५३ ॥ छप्पय ॥ हरिपवित्रजसमधुरसुधारसश्रवनसुनीजे । लीलाललितवतारनाम नित्यकीर्तनकीजे ॥ समरनकरिपदसेवमिटैंभवभवकीवेदन । अरचनवंदनदास्यसख्यरसआत्मनिवेदन । इहिंभांतिभक्तिनवधाकरत उपजैंदसवोंप्रेमहैं। नागरीदाससतसंगतैंयेनिबहत्तसबछेमहैं॥१५४॥ इतिश्री ग्रंथभक्तिमगदीपकामैं नवधाभक्ति निरूपणं प्रथमप्रकरणं

## अथ सत संग प्रकार प्रथम महातम अंग ॥

॥ चौपाई ॥ नौधाकहोनिबहैकिहिंभांत । जुतअहलादनित्य सरसात ॥ सबमैंमुख्यएकसतसंग । भक्तिकोयासौंनिबहतरंग ॥ १ ॥ परमभक्तियाहीतैंपावैं । अरुनिवाहयातैंबनिआवैं ॥ मिलैंकृष्णव्हैं प्रेमनिदान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ २ ॥ सर्वपृथीपरदछिनाकरैं । उत्तरजायाहिमालयगरैं ॥ दसौंद्वारव्हैंकाढैंप्राण । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ३ ॥ सांख्यजोगधर्मवेदअध्यैंन । तपअरुत्यागकरैंतजिचैंन ॥ अग्निहोत्रबापीकूपदान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ४ ॥ व्रतजिग्यरहस्यमंत्रजेसबही । येहारिवसकरिहैंन हिंकबही ॥ नेमजापबहुतीरथस्नान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान

॥ ५ ॥ औरतैंकहीनाहिहैंहियकी । कृष्णकहीउद्धवप्रीतिजियकी ॥ वसीकरनमोहिओरनजान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ६ ॥ जीवअविद्यायासौंछूटैं । जगतदेहकेनांतेतूटैं ॥ अरुकुसंगछूटतहै आन । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ७॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ ॥ श्लोक ॥ नरोधयतिमांयोगो नसांख्यंधर्मएवच ॥ नस्वाध्याय स्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तंनदक्षिणा ॥ ८ ॥ अर्थ--मोकौं जोग सांख्य-धर्म वेदअध्ययन तप त्याग अग्निहोत्रादिक वापी कूपादिक दान वस न करैं हैं ॥ ९ ॥ पुनः श्लोक ॥ व्रतानियज्ञछंदांसि तीर्थानि नियमा यमाः ॥ यथावरुंधेसत्संगः सर्वसंगापहोहिमां ॥ १० ॥ अर्थ--व्रत जग्य रहस्य मंत्र तीरथ नेम यम ये भी बस न करैं जैसैं सब संगकौं दूर करनहार सतसंग मोकौं वस करैं हैं ॥११॥ ॥ चौपाई ॥ संगमहातमकहांलगभनियें । यातैंतरेनकीगतिगनियें॥ गायोसुन्यौंसुबेदपुरान । नाहिंनाहिंकछुसतसंगसमान ॥ १२ ॥ देवगंधर्वसिद्धअरुचारन । गुह्यकविद्याधरअरुवारन ॥ राक्षसदैत्य हूतरेनिदान ॥ नाहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ १३ ॥ स्वर्गअपसरा मानुषनाग । जिंहिसतसंगकियोबडभाग ॥ तिनकौंआवतनाहिंप्र मान । नहिंनाहिंकछुसतसंगसमान ॥ १४ ॥ पगमृगवेस्यासूद्ररु नारी । अंत्यजरजतमकेअधिकारी ॥ वहुतैंतरेपापकीषान । न हिंनाहिंकछुसतसंगसमान ॥ १५ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ सत्संगेनहिदैतेया यातुधानाः खगामृगाः ॥ गंधर्वाप्सरसोनागाः सिद्धा श्चारण गुह्यकाः ॥ १६ ॥ अर्थ--सत्संगकरि दैत्य राक्षस पग मृग गंधर्व अपसरा नाग सिद्ध चारण गुह्यक ये बहुत मेरे पदकौं

प्राप्त होतभये ॥ १७ ॥ पुनः ॥ श्लोक ॥ विद्याधरामनुष्येषु बैश्याः शुद्रास्त्रियोंत्यजाः रजस्तमःप्रकृतयस्तास्मिन्तास्मिन्युगेयुगे ॥ १८ ॥ अर्थ–विद्याधर मनुष्य बैश्य सूद्रस्त्री अंत्यज अरु औरु हू रजोगुनी तमोगुनी तिनके स्वभावसो सत्संग करि मेरे पदकौं प्राप्ति होतभये जुग जुग विषैं ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ हरिप्रापति केऔरनधर्म । हैंसबमहाकष्टकेकर्म ॥ संतनकोढिगसुषकीपान । नहिंनहिंकछुसत्संगसमान ॥ २० ॥ सतसंगतिसुषजाकौंलग्यो । ताकैंचितऔरनसुषपग्यो ॥ तनकसुहावतनहिंसुषआन । नहिंनहिं कछुसतसंगसमान ॥ २१ ॥ उद्धवव्रजकौंस्यामपठाये । एकहि पहररहनकौंआये ॥ बीतिगयेषटमासनिदान । नहिंनहिंकछुसत संगसमान ॥ २२ ॥ ऊद्धवगोपिनकैंसतसंग । करीस्यामकी आज्ञाभंग ॥ बिनकहेरहेषटमाससुजान । नहिंनहिंकछुसतसंगस मान ॥ २३ ॥ उद्धवगोपिनकैंहितबोल । बढीकथारससिंधुकलो ल ॥ मत्तकथाप्रेमासवपान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ २४ ॥ स्वर्गवैकुंठकोसुखदनिवास । सर्वभूमिकेराजबिलास ॥ कैतिककहूं आनंदविधान।नहिंनहिं कछुसतसंगसमान॥१२५॥तहांपर प्रथमस्कं ध॥श्लोक॥तुलयामलवेनापिनस्वर्गंचापुनर्भवं । भगवत्संगिसंगस्य मर्त्यानांकिमुताशिषः ॥ २६ ॥ अर्थ–भगवतसंगी जो विष्णुभक्त तिनके संगको जो लव ताकरि स्वर्ग मुक्तिकौं सम न देषूं तो मानु- षौंकी तुछ कामना राज्यादिक करि कहा ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ उद्धवचितसतसंगलुभायो । हरिढिगपरचोनभायोआयो ॥ हरितैं अधिकप्रेमवतरान नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ २८ ॥ प्रभूमि

लैहूंमांगतदास । सतसंगतदीजेसुषरास ॥ हरिहूतैंगरवोयहदान । नहिंनाहिंकछुसतसंगसमान ॥ २९ ॥ तहांपरचतुर्थस्कंध ॥श्लोक॥ यावत्तेमाययास्पृष्टा भ्रमामइहकर्म्मभिः । तावद्भवत्प्रसंगानां संगः स्यान्नोभवेभवे ॥ ३० ॥ अर्थ—जहांलौं तुह्मारी मायाके स्पर्श करिकैं अरु कर्मन करि इहां हम भ्रमैं तहांलौं तुम्हारे संगीजु संत-जन तिनको सतसंग जन्मजन्मविषैं हमकौं होहु ॥ ३१ ॥ ॥ चौपाई ॥ कहांलगिकहैंनरसंगमहातम । आयुछीनमतिमंददुरातम ॥ जिहिंसुषभिद्योगुजानतप्रान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ३२ ॥ जाकैंनहिंसतसंगतिचाह । ताकैंउरनमिटैंदुषदाह ॥ वृथाउपायकरतहैंआन । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥ ३३ ॥ साधोरेसतसंगतिसाधो । सतसंगतिकरिहरिआराधो ॥ सर्वोपरसतसंगपहिचान । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥३४॥ पहिलैंतनतिलमनहोतेल । फूलसंगभयोनामफुलेल॥हरिहितसंगसुबासतप्रान। नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥३५॥ आगहोतसबआगिकेसंग । लोहपरसपारसकोअंग ॥ व्हैकंचनरहैंरंचनआन । नहिंनहिंकछुसतसंगसमान ॥३६॥ सर्वोपरियहजानिकैंलीजें । महापुरसकीसंगतिकीजें ॥जगकहैंकरामातकीपान । महापुरुसतिनकौंमतिजान ॥३७॥

## अथ अष्टसिद्धिधारकसिद्धअंग ॥

॥ चौपाई ॥ जैसैंनाटकचेटकसपनौं । भलोकरतनांहिंबेअपनौं ॥ तिनपरकृष्णकृपाकीरिद्धि । अष्टसिद्धिमानतनहिंसिद्धि ॥ ३८ ॥ सिद्धिप्रतिष्ठाकोब्यौहार । यासौंरीझतनाहिंमुरार ॥ हरिपदविमुष

करनकीमाया। इनकौतकनरमूढभुलाया॥ १३९॥ भक्तिजोगकौं जेनिरदरैं। अंतरायतिनकौंयेकरैं॥ १४०॥ तहांपरएकादश स्कंध॥ श्लोक॥ अंतरायान्वदंत्येता युंजतोजोगमुत्तमं॥ मयि संपद्यमानस्य कालक्षपणहेतवः॥ ४१॥ अर्थ—जो मोकारि जुक्त उत्तम जोगकौं करैं ताकौं कालक्षपण हेतु ऐसीजु येसब सिद्धि अंतराय करता कहैं है॥४२॥इति अष्ट सिद्धि धारक सिद्ध अंग॥

## अथ महापुरुषसाधुअंग॥

॥ चौपाई॥ भक्तनिकोकारियेसतसंग। प्रभुपदप्रीतबढावतरंग॥ तीनभांतिकेभक्तहैश्रेष्ट। उत्तममध्यमऔरकनेष्ट॥ ४३॥ उत्तमतैंनाहिंव्हैंपरमारथ। उनअपनौंकारिलीनौंस्वारथ॥ काजन व्हैंज्यौंरसरीजरी। तनआकृतहीरहिगईधरी॥ ४४॥ मध्यमकै सबचारविचार। भलोबुरोजानतव्यौहार॥ दिक्षाशिक्षादेतदया कारि। भवनिधितारतपरममयाकारि॥ ४५॥ तहांपरश्रीमद्भागवते महापुराणे एकादशस्कंधे उद्धवप्रति श्रीकृष्णचंद्रवाक्यं॥श्लोक॥ ईश्वरेतदधीनेषु, बालिशेषुद्विषत्सुच॥ प्रेममैत्री कृपोपेक्षा यःक रोतिसमध्यमः॥ ४६॥ अर्थ—ईश्वर विषैंतो प्रेम अरु ताके सेवकनि विषैं मित्रता अरु अग्यानी जनौंविषैं कृपा अरु शत्रुनि विषैं त्याग सो मध्यस्थ भक्त कहिये॥ ४७॥ चौपाई॥ तिनकोस तसंगकरोविचछन। जिनमैंप्रगटतपुनयेलछन॥ अतिकृपाल अद्रोहसुग्यांनीं। देतमानपरआपअमानी॥ ४८॥ रहितकामनाइंद्रीजीत। हरिपदकमलनिप्रीतप्रतीत॥ कोमलउपकारीरुपवित्र।

नित्यउचरतप्रभुचारुचरित्र ॥ ४९ ॥ निरमत्सरनिहकामनिकं
न । सांतरुसुहृदईरषारंचन ॥ निर्व्यलीकअरुसहनसीलअति
सुषदुषएकसमानधीरमति ॥ ५० ॥ मितभाषीमितभोजनकर्न
षटगुणजितकेवलहरिसर्न ॥ निर्विकारनिरउद्यमरहैं । निस्पृह
टुकबचननहिंकहैं ॥ ५१ ॥ सावधानसतबलकरुणाकर । धर्मसु
रसामर्थबुद्धिवर ॥ नम्रनिरालससबसौंमित्र । सुधावचनउपदे
विचित्र॥५२॥इकइकगुनकेबहुतप्रकार। तिनकौंवरनतव्हैंविस्तार
जेसंछेपपुराननिलहे। तेसाधूकेलक्षनकहे॥५३॥तहां पर एकाद
स्कंध ॥ श्लोक ॥ कृपालुरकृतद्रोहस्तितिक्षुःसर्वदेहिनां ॥सत्य
रोनवद्यात्मा समःसर्वोपकारकः ॥५४॥ अर्थ–कृपाल द्रोह रहि
सहनसील सत्य बल ईरषा रहित सुष दुष जाकै सम उपकारी॥५
पुनः ॥ श्लोक ॥ कामैरहतधीर्दांतो मृदुः शुचिरकिंचनः॥अनी
मितभुक्शांतः स्थिरोमच्छरणोमुनि॥५६॥अर्थ–कामना रहित इं
कोमल पवित्र निकंचन ईहा रहित लघुअहार सांतअंतः करण स
धर्म विषैं सथिर मेरी सरण मननसील॥५७॥ पुनः ॥श्लोक॥ अप्र
त्तोगभीरात्मा धृतिमान्जितषड्गुणः॥ अमानीमानदः कल्योमैः
कारुणिकःकविः ॥५८॥ अर्थ–सावधान निर्विकार धीर्जवान ष
गुणजित मानरहित मानदाता ग्यानदेवेमै प्रवीण सबसौं मि
करुणापान ग्यानी ॥ ५९ ॥ चौपाई ॥ इनमैंकेलछनव्हैंसाधनमैं
कृष्णमाधुरीजिनकेमनमैं ॥ कछुअपलक्षनहूंजोहोई । ताकोअ
गुनगनौंनकोई ॥ ६० ॥ गुनतजिनहिंऔगुनकौंलीजें । हृदय
लक्षीसोक्यौंकीजैं ॥ वसतसुधाउरअमलउजास । सदासिंधु

सीसनिवास ॥ ६१ ॥ पोषकअनीअवनिवनराई । सीतलसुंदरहैं सुखदाई ॥ जद्दपिहैंवहसहितकलंक । तदपिनघटिअधिकारमयंक ॥ ६२ ॥ तहांनृसिंहपुराण ॥ श्लोक ॥ भगवतिचहरावनन्यचेता भृशमलिनोपिविराजतेमनुष्यः ॥ नहिशशाकलुषछविः कदाचित् तिमिरपराभवतामुपैतिचंद्रः ॥ ६३ ॥ अर्थ—जाको चित्त निरंतर हरिमें लग्योहैं तामनुष्यमें जो कछु पाप दोषहू होयतो वाकी सोभा मिटैं नहीं जैसें चंद्रमा कलंकसों मलिन हैं तोहू अधिकार सों हारैं नहींतैसैं वैष्णवनको पाप होय तोहू दबायसकै नहीं ॥ ६४ ॥ इति साधु अंग ॥

## अथ साधु प्रगटन अंग ॥

॥ चौपाई ॥ इनलछिनकेकलिमैंसाध । थोरेनहिंहैंहैंजुअगाध ॥ दीसतनाहिंअभिमानदृष्टिसौं । महारजोगुनबुद्धिभ्रष्टसौं ॥ ६५ ॥ दृष्टांत ॥ धूरिसर्करामिलैजुतबहीं । गजपैंन्यारीहोयनकबहीं ॥ चैंटीसमलघुताईमानैं । साधुसर्कराजबपहिचानैं ॥ ६६ ॥ सतयुगत्रेताद्वापुरमहीं । ऐसेसाधुबहुतहैंनहीं ॥ अबकलिमैंकलिदोषहरतहैं । गंगादिकनिपुनीतकरतहैं ॥ ६७ ॥ गंगाभागीरथसौंकह्यो । सोमैंमध्यसासतरलह्यो ॥ याकारनभुवलोकनऐहैं । कलमपकलिकेजीवलगैहैं ॥ ६८ ॥ भागीरथवाक्य ॥ परमसंतजलपरसकरैंगे । वेसबकलमषदोषहरैंगे ॥ यातैंजबलगसाधअभंगा । तबलगप्रगटपद्दुमिश्रीगंगा ॥ तहांपरनवमस्कंध ॥ श्लोक ॥ किंवाहंनभुवंयास्ये नरामय्यामृजंत्यघम् ॥ मृजामितदघंकुत्र

राजनतत्रविचिंत्यतां ॥ ७० ॥ अर्थ–हे राजन् मैं बहोर पृथ्वीमें न जाऊंगी काहेतैं जो उहां नर मोविषैं पाप प्रक्षालन करैंगे सो वा पापकौंमैं कैसैं दूरि करौंगी सो ताको उपाय चिंतवन करो ॥७१॥ तहांगंगाप्रतिभागीरथवचनं ॥ श्लोक ॥ साधवोन्यासिनः शांताब्रह्मिष्ठालोकपावनाः॥ हरंत्यघंतेंगसंगात्तेष्वास्तेह्यघभिद्धरिः ॥ ७२ ॥ अर्थ–साधुजन अपने अंगसंगतैं तिहारे पाप हरैंगे अरु ते वे साधुकैसे हैं त्यागीहै अरु शुद्ध अंतस्करणहै अरु ब्रह्मके जानन हार है अरु लोकको पवित्र करण हार हैं अरु तिनके विषैं पापनके हरण हार हरि विराजैं हैं ॥ ७३ ॥

॥ चौपाई ॥ सतत्रेताद्वापुरकेलोग । यहचितचाहतहैसंजोग ॥ जोहमकोंप्रभुवेगउधारो । कलिमैंदीजेजन्महमारो ॥ ७४ ॥ कलिवहुभक्तिलोगसरसैंहैं । नारायनपारायनव्हैंहैं ॥ यापरवचनपुरानसुनीजैं । आरषसाषिमानिकैंलीजैं ॥ ७५ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ कृतादिषुप्रजाराजन्कलाविछंतिसंभवं॥ कलौखलुभविष्यंति नारायणपरायणाः ॥ ७६ ॥ अर्थ–हे राजन् सतजुगादिक विषैं जो प्रजा हैं जो कलिजुग बिषैं जन्म चाहत हैं निश्चय करि कलिजुग विषैं घनें नारायण परायण होहिंगे॥७७॥

॥ चौपाई ॥ कलिमेंपरमभक्तहैमहा । बिनजग्यासीपावैंकहा ॥ मथुराद्विजगनजग्यलुभाये । श्रीभगवाननिकटतहांआये ॥ ७८ ॥ तिनपहिचानेनहिंभगवान । तोसकैंकौनभक्तनिपहिचान ॥ ज्यौं उलूककोंभाननसूझत । त्यौंप्रभुभक्तहिंविमुषनबूझत॥७९॥ घटतीनाहिंकालिमैंसंतनकी । हैंघटतीअपनैंहीमनकी ॥ सतसंगकियेसाधप

हिचानैं । धन्यसोईसतसंगतिठानैं ॥ ८० ॥ इति साधुप्रगटनअंग ॥

## अथ सारासार ॥

॥ छप्पय ॥ वेदसारसत्रहपुरानद्रुतदहतभागवत । नवदुगनौं तिनमांझसारकोसारभागवत ॥ ताकोअवसुनिसारफंदसंसयमनसु रझैं । नवधानिवहैंनेमप्रेमदसवौंउरउरझैं ॥ हैंसर्वसारसुषसारयह जातैंपावतवेगहरि । नागरिदासदासानिकोसर्वोपरसतसंगकरि ॥ ॥ ८१ ॥ इति श्रीग्रन्थभक्तिमगप्रदीपिकामें सतसंगनिरूपणं द्वितीयप्रकरणं ॥ २ ॥

## अथ प्रेमप्रकार ॥

॥ चौपाई ॥ नवधावयधीसतसंगतिकल । भावभक्तिउपजत तिनकोफल ॥ भावभक्तितैंप्रेमहिआवैं । आरषपउरषदोऊगावैं ॥ ॥ १ ॥ सोप्रेमहिकहिहौंपश्चात । पहिलैंभावकहौंविष्यात ॥ २ ॥

## अथ भाव भक्ति लछन ॥

कथाकीरतनचितसुषपगैं । जगसुषबातैंफीकीलगैं ॥ ३ ॥ कथासुननजिततितउठिधावैं । ज्यौंअलिकुसमगंधपरआवैं ॥ कबहू कालजायजोबाद । तबउपजैचितपरमाविषाद ॥ ४ ॥ पूरनभक्ति महातमभासैं । हरिगुनलीलारूपप्रकासैं ॥ हृदयभूमिकोमलव्हैंजाय । रीझवेलितामैंसरसाय ॥ ५ ॥ नहिंरिझयोजिनबातनमूर । तिनहीपैंरीझहौंनलग्योचूर ॥ नीकीबस्तुजोईजबभावत । तबहींतहां स्यामसुधिआवत ॥ ६ ॥ ब्रजबृन्दावनसोरुचिहोय । दरसनवास आसहियभोय ॥ हरिकेभक्तलगैंजियप्यारे । कियेनभावतकबहूं

न्यारे ॥ ७ ॥ ओगुनातिनकेदृष्टिनआवत । गुनहींदृष्टिपरतगुनगावत ॥ भक्ताहिंप्रेमभयोलषियापरि । घनिघनिकहतरीझकैंतापरि ॥ ॥ ८ ॥ इति भावभक्तिअंग ॥

## अथ प्रेम अंग ॥

॥ चौपाई ॥ नवधासंगतैंव्हैयोंभाव । भावतैंहोतहैप्रेमबढाव ॥ सोहैतीनभांतिकोप्रेम लघुमध्यमपूरनबिननेम ॥ ९ ॥

## अथ प्रथम लघु प्रेम अंग ॥

॥ चौपाई ॥ छुटतननवधाभक्तिप्रेमबस । विधिवतरकरतनेमसौंजुतरस ॥ ताकौंकहांलगिकहौंप्रकार । वरनतवरनतव्हैविस्तार ॥ ॥ १० ॥ गदगदकंठपुलकितनआवैं । व्हैरोमांचबहुरिमिटीजावैं ॥ समयपायकबहुकदृगबहैं । बहुरिजथापूरबज्यौंरहैं ॥ ११ ॥ नवधाकरतकबाहियोंहोत । अधिकहोतनहिंप्रेमउदोत ॥ प्रेमावतजगलज्याआवैं । याहीतैंलघुप्रेमकहावैं ॥१२॥ कामक्रोधादिकव्हैंआवतज्यौं । कबहूंप्रेमसमयपावतज्यौं ॥ हियगृहसुंदरठौरसुभाय । नीचऊचसबहीतहांजाय ॥ १३ ॥ उच्चलग्योजावनतिहिंथांन । सोगृहतजिहैनीचनिदान ॥ अैसेंप्रेमजहांसंचारहैं । अंतकामादितहांतैंटारहैं ॥ १४ ॥ तनकअनऊआतिव्हैंवनदाढें । सुछमप्रेमतैंप्रेमज्यौंवाढैं ॥ यौंघटिप्रेमकौंघटिमातिमानौ । वडेप्रेमकीजातिहैजानौ ॥१५॥ ज्यौंसमुद्रजलपवनफुंहार । जातवहीजलकोनिरधार ॥ कहूंएकअरुकहूंअनेक । महारमहारसबधातहैएक ॥१६॥ जातिजातिमैंभेदजुनाहीं । जानौंभेदपराक्रममांहीं ॥ १७ ॥ इतिलघुप्रेमअंग ॥

## अथ मध्यम प्रेम अंग ॥ प्रथम मध्यम प्रेमावेससरूप॥

॥ चौपाई ॥ सहजहिंअंषियांरहतछकीसी । रूपभावनालगतजकीसी ॥ थकितरहतअधरनमुसिक्यान । बदनप्रफुल्लितमृदुवतरान ॥ १८ ॥ झलमलातनैंननिमैंनीर । छिनछिनव्हैंरोमांचसरीर ॥ चलतमंदअतिडगाडिगुलात । करतजांतमनहींमनवात ॥ १९ ॥ सेवाश्रवनकीरतनआदिक । करतकरतअतिवाढतमादिक ॥ २० ॥

## अथ मध्यम प्रेमधारक जन श्रवणरीति ॥

॥ चौपाई ॥ प्रीतमबातनिचितदृढगह्यो । विनाश्रवननाहिंजातहैंरह्यो ॥ ज्यौंतियबसनवतनहितपीर । बूझतडोलतवातअधीर॥२१॥ सुनिलीलागुनिमोहनवैनानि । भरिभरिलेतप्रेमजलनैनानि ॥ कविताकीरीतिदोषनाहिंसूझैं । स्यामसमंधसुधाश्रुतबूझैं ॥ २२ ॥ बादनकरतस्वादरसटरैं । फिरिफिरिपूछतपायनिपरैं ॥ कृष्णाकथाबिनाछिननसुहात । सुनतसुनतभूलतमुरछात ॥ २३ ॥ श्रोताऐसोप्रेमकोधाम । कोरेवक्ताकेकिहिकाम ॥ कोरेपंडितचतुरनमानैं । भींजेमनकीपीरनजानैं ॥ २४ ॥ कृष्णाकथाजलकोमनमीन । बिरह-तीरआतुरतनछीन ॥ २५ ॥ इति श्रवणअंग ॥

## अथ मध्यम प्रेमधारक जन कीर्तन करन रीति ॥

॥चौपाई॥ करनकीरतनहिताहियरंग॥गदगदकंठहोतिसुरभंग ॥ उमगतगहवरप्रेमविसाल । भूलतरागतानअरुताल ॥ २६ ॥ जथाजोगसमयोविसरावैं । मनलग्योजहांसोहीधौंभावैं ॥ प्रेमविनांभयेरहतसुजान । जेहंसिपरतसुनतयहगान ॥ २७ ॥ कइपुनसातकई

मुसिक्यात । लगतश्रवनछुपकइउटिजात । जिहिंहियनाहिंप्रेम आनंद । जानतकहाअभेदीमंद ॥ २८ ॥ भेदीजोजाकेउरप्रेम । जरिरह्योहितपावकचितहेम ॥ पुनिअपरसजपजातनकियो । प्रेम लियोकरसपरसाहियो ॥ २९ ॥ प्रीतिरसासबवढतपुमार भूलतनित्यचारआचार ॥ ३० ॥ इतिकीर्तनअंग ॥

## ॥ अथ मध्यम प्रेम धारक जन समरन रीति ॥

॥ चौपाई ॥ व्हैंगयोचितअतिसमरनमई। विसरतक्रियाछकनिचढिगई ॥ दांतौंनिकरमुखमैंरहिजात । व्हैंमध्यानजाहिटारिप्रात ॥ ॥ ३१ ॥ रूपसुरतचितडोरीअंतर । बिविधिभावनांकरतनिरंतर ॥ फैलिपरतमनमानसीसेवा । बिनभेदीकोजानैंभेवा ॥ ३२ ॥ कोकरैंसाधनसंध्यान्हान । कोकरैंजगलोकनिसनग्यान ॥ वहोधामौंनरहैं दिनरात । वोलैंकछुसौंकछुकहिजात ॥ ३३ ॥ इतिस्मरणअंग ॥

## ॥ अथ मध्यम प्रेम धारक जनसेवा करन रीति ॥

॥ चौपाई ॥ रचिसिंगारओरहतनिहार । फिरिफिरिउठिदेखत रिझवार ॥ ३४॥ दृगजलवरषतबाढतप्रीत । धरीरहतसेवाकीरीत॥ लोटतबिवसरीझकैंरोग । कौनधरैसीतलव्हैंभोग॥३५॥ टरतसमयनैंननिजलवहैं । प्रीतिकेआगैंरीतिनरहैं ॥ आरतनैंननिसौंमुखहेरत । आरतीअधिकप्रमानतैंफेरत ॥ ३६ ॥ फेरतफेरतफेरतजाय । हंसतलोकलखिकैंयहभाय ॥ छुवाछुईकीसुधिनहिरहैं । प्रेमछुयेकीकोगतिकहैं ॥ ३७ ॥ यथाजोग्यसेवानहिंहोय । प्रेमकेवससवविधिदैंखोय ॥ ३८ ॥ इतिसेवाअंग ॥

## ॥ अथ मध्यम प्रेमधारक जन बंदन रीति ॥

॥ चौपाई ॥ सुनियेबंदनकीगतिबांकी। व्हैंसरूपसेवाकीझांकी॥ सीसननवैंरहैंलखियौंहीं। पुलकिप्रेमतनसुरतिससौंहीं॥३९॥ अरुझतनैंनमीनछबिजार। साधनभक्तिभूलिव्यौहार॥ माधुरिपीवतपलकनिरंतर। बंदनकरिकरैंकोटगअंतर॥ ४० ॥ जबमनप्रेमहिंडोरैंझूलैं। नित्यनेमहूबंदनभूलैं॥ औरठौररीझतमनजहां। पुनिपुनिपायनिपरतहैंतहां॥ ४१ ॥ जोकोउइनकौंवंदनकरैं। येताकेचरननिदिसिढरैं ॥ घटिबढिकौंनकौंनहीग्यान। महानअताचितहितखान॥ ४२ ॥ कृष्णपदअंकितपहुमिव्हैंजहां। वहिंरजलुटतघसनसिरतहां॥ नेमजुक्तबंदनउडिगयो। प्रेमप्रबलकैमनबसिभयो॥४३॥ इतिबंदनअंग॥ चौपाई॥ नौधातैंसुप्रेमउठिजागैं। पुनिताहीकौंमेटनलागैं॥ उमगतजबैंउदधिज्यौंप्रेम। छुटिछुटिजातहैंनौधानेम॥ ४४ ॥ प्रेमीप्रेमकेसुखकीजानैं। गूंगोकहागुरस्वादबखानैं॥ प्रेमानंदबढतउरस्वाद। बाहिरदीसतज्यौंउनमाद ॥ ४५ ॥ गावतरुदतहंसतअरुनाचत। गहवरप्रेमतवैंउरमाचत ॥ वाहवाहकहिउठतसराहि। कबहुकमौनपकररहिजाहि ॥ ४६ ॥ तहांपर एकादशस्कंध ॥ श्लोक ॥ क्वचिद्रुदंत्यच्युतचिंतयाक्वचिद्धसंतिनंदंत्यवदंत्यलौकिकः ॥ नृत्यंतिगायंत्यनुशीलयंत्यजंभवंतितूष्णींपरमेत्यनिर्वृताः॥ ४७ ॥ अर्थ–कबहू अच्युतको चिंतवन करि रुदन करैं कबहू हसैं अरु आनंद जुक्ति होय अरु अलोकिक भयो बचन कहैं अरु नृत्य करैं अरु गावैं अरु हरिकौं प्रसन्न करैं अरु परम बस्तुकौं पाय आनंदित होय चुप व्हैरहैं ॥४८॥

॥ चौपाई ॥ ऐसीप्रेमदसाअभिराम । ताकोकहतमहातम स्याम ॥ ४९ ॥ इनहिंदेंहिजोमुक्तिबडाई । सुतोमुक्तिदैतनिहूपाई॥ औरकछूकहिबोनहिरह्यो। तवहरिउद्धवसैंयौंकह्यो ॥५०॥सोसबलो कनिवाहिरसंत । सेसलोकअजलोकप्रजंत ॥ ऐसोममजनपरसि महीकौं । करतपवित्रलोकसवहीकौं॥५१॥ तहांपरएकादशस्कंध॥ ॥ श्लोक ॥एवंव्रतः स्वप्रियनामकीर्त्या जातानुरागोद्रुतचित्तउच्चैः॥ हसत्यथोरोदितिरौतिगायत्युन्मादवन्नृत्यतिलोकबाह्यः ॥ ५२ ॥

अर्थ—ऐसो है आचरन जाके जो अपनौं प्रिय जो श्रीकृष्ण चंद्र ताके नामही कहने करि उपज्यो हैं अनुराग जाकें तासौं द्रव्योहैं चित्त जाको ताकरि कबहूं ऊंचे प्रकारि हंसैं कबहूं रोवें अरु गावैं उन्मादकी नांईं होय करि नृत्य करैं सोलोक बाह्य हैं ॥ ५३ ॥ पुनः ॥ श्लोक ॥ वाग्गद्गदाद्रवतेयस्यचित्तं रुदत्य भीक्ष्णं हसतिक्वचिच्च ॥ विलज्ज उद्गायतिनृत्यतेच मद्भक्तियुक्तो भुवनंपुनाति ॥ ५४ ॥ अर्थ—जाकी बानी गदगदतैं चितद्रवैं अरु वारंवार रुदन करैं अरु कवहू हंसैं अरु कवहू निलज्ज होयकैं गावैं अरु नृत्य करैं सो ऐसी मेरी भक्ति जुक्त सर्वलोक पवित्र करैं ॥ ५५ ॥ इतिमध्यमप्रेमअंग ॥

## ॥ अथ पूरन प्रेम अंग ॥

॥ चौपाई ॥ फिरैंनेहकीदेहदुहाई । व्हैंसंचारीप्रेमस्थाई ॥ तन मनहूंकीसुधिविसरावै । बाहिरदृष्टिकभूनहिंआवैं ॥ ५६ ॥ ऐसेनि कीकहासंगसुखारी । दरसनमात्रहिमंगलकारी ॥ पूरनरहैंजूस्था

इप्रेम । दूरिकियेनौधाकेनेम ॥ ५७ ॥ ज्यौंतियजवलगगुडियन खेलत । तवलगिपियभुजभरिनहिंखेलत ॥ जवपियसौंबाढीरंगर लियां । तववेगुडियांलगतनभलियां ॥ ५८ ॥ प्रेममगनपियसौं गरवांहीं । निसादिनङ्कीसुधिरहैनांहीं ॥ छुटिगयेऔरस्वादसव हीके । लहेनिरंतरजीवनजीके ॥५९॥ जोईढिगसोईसवधांदरसात। कृष्णमईआंखियांव्हैजात ॥ होतसवैसुधिप्रेमकोगसा । जिव्हकसं निपातजिमदसा ॥ ६० ॥ मुखमैंमौंनिदृगनिमैंनीर । कहनमात्र हीरहैंसरीर ॥ इहिंविधिकोवाढैजवनेह । वेगहिछूटिजातहैंदेह ६१॥ इतिपूर्णप्रेमअंग ॥ चौपाई ॥ प्रेमकीमहिमाकहिनसकतहौं । सुन तमहातमरहतचकितहौं ॥ प्रभुतैंअधिकप्रेमकौंजानौं ॥ प्रगटिप्रेमा नदियेतैंमानौं ॥ ६२ ॥ रामकृष्णवहौदरसनकरते । सवहिप्रेम आनंदनहिंभरते ॥ ताकीमतितैसीयेरहती । शत्रुनिकीलखिछाती जरती ॥ ६३ ॥ देतेदरसप्रेमनहिंदेते । सदाश्यामघनप्रेमविजेते ॥ वेदओसकलपुराननिमांही । यांतैंअधिकपदारथनांही ॥ ६४ ॥ जाकौंस्यामप्रेमहीदीनौं । ताकैंमनकीनौंआधीनौं ॥ कृपापात्रज नजाकोंकहिये । ताकैंलनप्रेमानंदलहिये ॥ ६५ ॥ गदगदकंठबि नारोमांच । विनअश्रुपातप्रेमउरआंच ॥ कैसैंकृष्णप्रीतविनवुद्ध । कैसैंव्हैमनउज्जलसुद्ध ॥ ६६ ॥ तहांपरएकादशस्कंध ॥श्लोक॥ कथंविनारोमहर्षं द्रवताचेतसाविना ॥ विनानंदाश्रुकलया शुद्धेद्भ क्त्याविनाशयः ॥ ६७ ॥ अर्थ–विन रोमहर्ष अरु विनाचित्तकेद्रवैं अरु विन आनंदके अश्रुपात ऐसी भांतिकी प्रेम लछना भक्ति बिनां कैसैं अंतहकरण शुद्ध होय ॥६८ ॥ चौपाई ॥ यवनानिहूके

मुखिहैंप्रेम । प्रेमैंस्वर्जकरनदृढनेम ॥ नकलश्रोअसलप्रेमभयोभान। सकलव्हैंठाढेकरैंसनमान ॥ ६९ ॥ येऊमुष्यप्रेमकौंजानैं । धिकजो प्रेमोत्कर्षनमानैं ॥ कृष्णाहैंप्रेमप्रेमहैंकृष्ण । याकोफिरिकरिवोन हिंप्रश्ण ॥ ७० ॥ छप्पय ॥ कोरिकजनमनिसुकृतकियेंनवधाकौं करिहीं । नवधाभक्तिहिंकियेंभावश्रंतरसंचरहीं ॥ भावभक्तितैंप्रे महोतहरिकृपारूपहैं । प्रेमतैंअधिकनकोऊवस्तुहरिपैंश्रनूपहै ॥ प्रभुहूतैंगरवोमहाप्रभुयाकेवसरहतनय । प्रणवतनागरिदासनितिज यजयप्रेमानंदजय॥७१॥पुनः॥धनिवहकुलधनिनगरधन्यवहदेशसु मंडल । धन्यखंडवहदीपधन्यवहसकलमहीथल ॥ धन्यधन्यसव लोकहोतजिंहिंपावनपावन । मुखरसनावहधन्यकरतातेनकोगुन गावन ॥ जाकीमहिमाकहिसकैंकोकविनागरमध्यछित । करतध न्यइननैंनकौंजिहिंउरप्रेमानंदानित ॥ ७२ ॥ चौपाई ॥ विनसतसं गविननवधानेम । अनायासव्हैंश्रावैंप्रेम ॥ सिद्धभक्तिउपजैंविन साधन । हरिकीकृपाकैंपूर्वाराधन ॥ ७३ ॥ काहूजनमजातनहिं छीज । उपजपरतजैसैंवटवीज ॥ तनकछुवैंछांडतनहिंगोहन । भक्तिमिलायरहतजगमोहन ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ भाषावार्तानेहजुत लोयश्लोकप्रकास । ग्रंथभक्तिमगदीपकाकियोनागरीदास॥ ७५ ॥ पढैंसुनैंयाग्रंथकौंमनदैंसरससुठौन । भक्तिपंथसूझैंतिन्हैंपहुंचैंप्रीतम भौन ॥ ७६ ॥ संमतअष्टदससतजुहैकारतीजगुरवार । रूपनगर विचकृष्णपक्षभयोग्रंथविस्तार ॥ ७७ ॥ इतिश्रीग्रंथभक्तिमगप्रदी पिकामैं प्रेमनिरूपणं तृतीयप्रकरणं समाप्तम् ॥ इतिभक्तिमगदीपि कासंपूर्ण ॥

## ॥ अथ देहदसा ॥

॥ चौपाई ॥ श्रीगुरकेपदपंकजध्याय। देहदसाबरनौंचितलाय॥ उपजनहितबैरागनरनकौं । गेहमगननहिंनरकपरनकौं ॥ १ ॥ श्रोणितबीजेंमिलैंजबदोय। पंचरात्रिमैंबुदबुदहोय ॥ दसदिनमैंव्है बेरसमान। मस्तकमांसबहुरिपिंडवान ॥ २ ॥ द्वितीयमासमैंबाहुर पाय । त्रितीयछिद्रनखकचसबकाय ॥ चोथैंमासधातुतनपागैं । पंचममासछुधाहूलागैं ॥ ३ ॥ अन्ननीररसकीयौंजुगतैं। आप्याय निनाडीसूंभुगतैं ॥ निजनासानिजनाभीछूवैं। बंध्योजराद्दढपरचो ज़ुकूवैं ॥ ४ ॥ घुटैंनासिकास्वासमहादुख। भुगतैंचर्मनर्कनांहींसुख॥ बिष्टामूत्रमहादुर्गंधि। तामैंफस्योजुपापसमांधि ॥ ५ ॥ जीवउदर केकाटततनकौं। रौंमरौंमपीडादुखमनकौं ॥ ऊष्णातिक्तभुक्तैंजब माता। चरमरातकोमलअतिगाता ॥ ६ ॥ कलमलायव्याकुलअ तिप्रांनी । सप्तमासमैंसबसुधिआंनी ॥ करनलग्योविनतीजवहरि सौं। महादुखीदुखहीकैडरसौं ॥ ७ ॥ अहोअहोकरुनानिधिस्वामी। काटोदुखमेरोबहुनामी ॥ होंप्रभुकीसेवाअनुसारिहौं। जगप्रपंचमैंनां हिनपरिहौं ॥ ८ ॥ यहसुनिबचननिकास्योऐसैं। जंतीमांझतारव्है तैसैं ॥ सोदुखदारुनकह्योनजाय। मनकीमनमैंबातविलाय ॥ ९ ॥ निकसतहीविसरचोगोबिंदा। परचोपवनलगिमायाफंदा ॥ बालाप नखेलनमैंबीत्यो । तरुनापनमैंजुवतिनजीत्यो ॥ १० ॥ अतिमद अंधओरनहिंबूझैं । एकविषैउनहीकौंसूझैं ॥ भरनपोखउनहीको करैं। कालब्यालतैंनांहींडरैं ॥ ११ ॥ साधनकीमनबातनमानी। अतिदुर्मतिकेवलअभिमानी ॥ वहुरिवृद्धतनकोवलगयो। चिंतामो

हमहाग्रनछयो ॥ ७० ॥ खासतथूकतचल्योनजाई । तहांलष्टकाभईसहाई ॥ नातीपुत्रचहूंदिसडोलैं । तिनसौंहोयतोतलोबोलैं ॥ १३ ॥ मोहविबसगईबुद्धिविलाइ । गोविवेकवैरागनसाइ ॥ तीनअवस्थायौंहीखोई । घुरसौंबेलिनरककीबोई ॥ १४ ॥ वहुरिजुकालआइकैंअरयो । व्हैकैंदुखीखाटमैंपरयो ॥ अतीसारभोकपराविगरै । महाविपतितैंदुरेजुसगरै ॥ १५॥ अतिदुर्गंधिमाक्षिकाछाई । सज्जनहूलखिनाकचढाई ॥ कृष्णनामरसनांनहिंधरैं । सुतनातीकौंटेरतमरैं ॥ ॥ १६ ॥ निकसतजीवमहादुखभयो । सोतोमोपैंजातनकह्यो ॥ इतयाकीफूंकीलैमाटी । उतजमआगैंपीटापाटी ॥ १७ ॥ साधविवेकीहितकेनातैं । निकसनिउदरमांझकीबातैं ॥ बहुबिधिकरिकैंसुधिजुदिवाई । मानीनांहिमारअतिखाई ॥ १८ ॥ यहसुनिमतिबिसरेरेभाई । कोटिकोटिहैंरामदुहाई ॥ बिषैमांझमनमतिदैंतेरो । जनमऔरहूंमांझघनेरो ॥१९॥ इहमानुषतनप्रभूमिलनकौं । सतसंगतिसुखसिंधुझिलनकौं ॥ हरिकीभक्तिकरोचितलाय । तीनौंतापवेगामिटिजाय ॥ २० ॥ करदयोदीपगलोचनदूवैं । अबजानिबूझिमतिपरोजुकूवैं ॥ नवधाभक्तिभागवतकही । ताकोफलदसधाहैंसही ॥ २१ ॥ सोसुखरूपजुस्यामामिलावैं । जोकबहूसतसंगतिपावैं ॥ उपजतग्यानकरनसुखरास । कहीबातइहनागरिदास ॥ १२ ॥ हरिसनमुखदैंवोजगपीठ । अभिमानीमानैंगोनीठ ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥ सुनैंसुनावैंजाकोऊ यहगाथाचितलाय ॥ दासनागरीजासके परैंस्याममगपाय ॥ २४ ॥ नागरियायाजगतमैं भागताहिकोभूर ॥ व्रजभक्तनकेचरनकी जिहिंधरीसिसपरधूर ॥ २५ ॥

नागरिदासहुलाससौं तेईगयेजगजीति ॥ मनसावाचाजिनकरी हरिभक्तनसौंप्रीति ॥२६॥ देहदसावरनीइहैं । मोमतिकैंअनुसार ॥ संतविवेकीसुनिसुकवि । लीज्योयाहिसुधार ॥ २७॥ इतिदेहदसा ॥

## ॥ अथ बैराग बटी लिख्यते । प्रथम धनभारी गृहस्थ ष्वारी ॥

॥ चौपाई ॥ परनैंमंगलचारबधाईं मरैंसीसमिलिकूटैं । पांचपिस ननकेनहिंजीते बाहिरअरिसोंजूटैं ॥ जैतअजैतहाथहरियहबिच हारिकहावैंकायर । ऐसोदुखीनत्यागिसकैंघर योमायाजोरावर ॥१॥ छप्पनभोगदासमिलिपावैं इन्हैंदालिकोपांनी । रोगग्रसतवैभवाकिंहिं कारज मनदुखियाहैरांनी ॥ नित्यनवैरैंन्यावसवनके परदुखमैंमनर हनौं । ऐसोदुखीनत्यागिसकैंघर योमायाकोलहनौं ॥ २ ॥

## अथ गृहस्थ मध्यस्थ धनद्वार ख्वार ख्वार बर्नेनं ॥

आठपहरदुषहीमेंबीतें कायकूयपरजाकी । बिषैंभोगआछैंहूं नाहीं चिंतामैंमतिछाकी ॥ जितातितअपजसदुरदुरघरघर तनमन कीअतिख्वारी ॥ ऐसोदुषीनत्यागिसकैंघर मायाकीगतिभारी॥३॥ नित्यचाकरीसौंचितडरपैं कछुचूक्योअरुमारयो॥कारजद्रव्यबिनां बलधीसैं मनसौंजातनहारयो ॥ दिनकुटंबकेभरनपोषमैं निसबि चारकरिसोयो ॥ ऐसोदुषीनत्यागिसकैंघर मायारांडबिगोयो ॥४॥ (नहिंधनटांकगृहस्थरांक) । बहुतठीकराठाटषडभडैं एकहूनांहिन लोटी । सांपगोहिराकरत कलोलैंपै बेकौंनाहिरोटी ॥ कालीकुटिलकु ब्यौतीकामिनी गुहीसूंजसोंचोटी ॥ ऐसोहूगृहत्यागिसकैं नाहिंमा

याकीगतिमोटी ॥ ५ ॥ जनौंऔदसाबारविराजत ऐसीटूटीछान ॥ बालकबहुतमनौंभुतलेटे तिन्हैंमिलतनहिंधांन ॥ नितउठिहोतिकलह अतिकर्कस जिततितपैंचातांन ॥ ऐसोहूगृहत्यागिसकैंनहि मायाकीगतिजान ॥६॥ ( भेषधरैंसहजसुपटेर ) धरैंभेषजोईजादिनतैंवंदनकौंअधिकारी । व्हैंनिर्भैंनिश्चिंतसहजमैंबिपतिमिटैंतबसारी ॥ सिषरनभातपीरकेन्यौंता नितउठिमंगलबद्धै । याहिलैंनसुषकौंनतजैंगृहमायाकेमुहच्चद्धै ॥ ७ ॥ पराधीनतामिटैंपापिनी व्हैंसुतंत्रभ्रुविचरैं । जहांनजांवनपावनहोतहां जायनिडरमुषउच्चरैं ॥ तीनहुतापमंदव्हैंजावैं बहुरिडरैंजमदूत । यहीबातनहिंसमझतजैंगृह हरिकीमायाधूत ॥ ८ ॥

## अथ सिद्धआनंदीदूरकरीमायालैगंदी ॥

कृपारंगतैंसंगमिलैंकहुंजोउज्जलरासिकनको राधारवनरूपकेरसमैं बूडैंनषसिषमनको ॥ उपजैंप्रेमानंददेहिमैं तबसुषकोसुषलूटैं । नागरिदासहोयमतिवारो मायाकोसिरकूटैं॥९॥ इतिश्रीवैराग्यबटी॥

## अथ रसिकरतनावलीलिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ श्रीमोहनगुरुप्रेमवपु । बंदौंपंकजपाय ॥ मोपैंपूरनकरिकृपा । दीनैंसंतबताय ॥१॥ तेईहरिजनइष्टमम । तिनहीकौंसिरनांउ॥ तिनहीकेजुप्रसादतैं । तिनहीकोजसगांउ ॥ २ ॥

## अथ बैष्णवसहजसरूपवर्ननं ॥

कवित्त ॥ मालागरैंतुलसीकीलपैंहियतैंमुक्तावलिजालबिसारैं । गूदरपैंकेईकंचनकेपटटूटीकोपीनपैंकाहिउचारौं ॥ जीरनजूतीघि

नांहिरागरंगनांहिचरचाचतुरताकीनांहिंसुखसैलस्वादआनंदनसायगो । नागरउदासाजियहौंसनहुलासहियदेखतहींदेखतमैंऐसोसमैंआयगो ॥ ७ ॥ दोहा ॥ अबबर्णाश्रमकीदसा, जोदिनदिनदरसाव ॥ सोन्यारोन्यारोकहूं, पलट्योसमैंसुभाव ॥ ८ ॥

## ॥ अथ प्रथम वर्ण द्विजदशा बर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ बहोविप्रनितजिदीनैंधर्म । हरिसमंधबेदोकतिकर्म ॥ सिसनउदरपोषनकीप्रीत । शुचिआचारनइंद्रींजीत ॥ ९ ॥ महातमोगनहियमैंधरैं । शस्त्रघाततनचांदीकरैं ॥ विद्यारहितमहाजडमनके । कर्मकुसांनमलिनअतितनके ॥ १० ॥ पातरथोरेबहुतकुपात्र । रहीजुएकजनेऊमात्र ॥ ११ ॥ कविबचन ॥ दोहा ॥ द्विजकुलकलिऔगुनभरे तऊसमर्थादोय ॥ भलोकरैंसेयेइन्हैं वुरोअसेयेंहोय ॥ १२ ॥ जद्यपिऔगुनहूभरे तऊबरनकेभूप ॥ कहींहैंदेवब्रह्मन्यहरि विप्रमामकीरूप ॥ १३ ॥

## ॥ अथ द्वितीय वर्ण नृप छत्री दसा ॥

॥ चौपाई ॥ छत्रीनृपधर्मनिकौंतजैं । करतकुकर्मनिनांहींलजैं ॥ रक्ष्याहितजेशस्त्रनिधरैं । तेधनप्रानप्रजाकौहरैं ॥ १४ ॥ गौब्राह्मणप्रतिपालकहावैं । तेफिरतिनहींगाहिगहिल्यावैं ॥ बच्छागऊविरहसंताप । द्विजकुलतिन्हैंदेतअतिश्राप ॥ १५ ॥ आपहुचोरचोरढिगरहैं । कबहूमुखतैंसांचनकहैं ॥ कपटकलपतरुदुष्टधुरंधर । निर्दैंहूदैपापपुरंदर ॥ १६ ॥ अतिअभिमानीअरुमदपानी । बिनहीगुननिजमुखगुनगानी । पाघकोआगागरदनपाछैं ॥ ज्यौंभांडभेखमत

वारोकाछैं॥ भृकुटितिरेखामूंछैंचढी । कटिकृपानआधिकरहैकढी॥ ॥ १७ ॥ यहछबिसोईसूरकहावैं । रनछांडतलज्यानहिंआवैं ॥ हरिगुरपिताभक्तिसौंदूर । झूठहीचंडीसेवतकूर ॥ १८ ॥ लघुस्वारथहितगैलेमारैं । गायगायमुखकहतप्रहारैं ॥ द्विजभिक्षुकस्वामीसंन्यासी । काहुनछाडतएदुखरासी ॥ १९ ॥ कापैंकरैंकुटिलजबरिसकौं । वारागांवजरावैंनिसकौं ॥ कैंरजनीसुखसोयेमारत । कैं भोजनमैंलैंबिषडारत ॥ २० ॥ नवतनदगेबहोतविधिठाने । तिन्हैं कहांलगिकोऊबखांनैं ॥ सांतसुह्रदताकबहुनधारैं । तनकभूंमिहितसुतपितमारैं ॥ २१ ॥ तेजहीनइनपापनिछत्री । धारिनसकतधीरमनधत्री ॥ शस्त्रअस्त्रनिजविद्याहीन । बनिककर्ममैंमहाप्रवीन ॥ ॥ २२॥ दोहा ॥ सतत्रेताद्वापुरमहीं । नृपछत्रीअधिकार ॥ रह्योन अबकलिकालमैं । बर्नाबर्नविचार ॥२३ ॥ चौपाई ॥ दुतियबर्नकोरह्योनकाजा । जोबलिष्टसोईव्हैंराजा ॥ तिनकैंएकलोभकोस्वारथ । दयामयानहिंमनपरमारथ ॥ २४ ॥ बिनबिवेकमूरखचितभंग । निद्राआलसअधिकअनंग ॥ जानिर्बलकेसुंदरनारी । गहिआंनतअैसेबिभचारी ॥ २५ ॥ महानिपुनछलविद्यामाहीं । गतिजससमरपराक्रमनाहीं ॥ साधिनसकतकछूनिजअर्थ । परदुखहरनक्षीनसामर्थ ॥ २६ ॥ अंगसरोगसदाबलछीन । धनकरिहीनभाग्यहूहीन ॥ जोकछूकरैंमनोरथकोय । सोनहोयउलटीसबहोय ॥ २७ ॥ अबयहसमैंबुरीहीकरैं । भलीबातश्रवननिनहिंपरैं ॥ बनैंजुकष्टदासकौंआय । तबस्वामीनहिंकरैंसहाय ॥ २८ ॥ संकटआवैंस्वामीपास । छाडिकैंजातअधरमीदास ॥ जिनकैंस्वारथहीकीप्रीत ।

स्वामिधर्मकीचलैंनरीत ॥२९॥ दोहा ॥ नृपछत्रिनकीयहकथा। कहीयथाकलिकाल। कीनीद्वादशस्कंधजोप्रगटव्यासकैलाल ॥३०॥

## ॥ अथ बैस्य बर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ बैस्यबंसबहोपापीभये । मनउपंगधर्मनिकौंलये ॥ मलिनवस्त्रतनमहाकुचील । परसैंउपजतन्हानसचील ॥ ३१ ॥ दुर्भोजनरुबिभछिक्रियाअति । इहाँदेहभुगतंतनर्कगति ॥ यापरनिंदिकऔरधरमके । छाडतसारपहारभरमके ॥ ३२ ॥ केवलनिजस्वारथकेसगे । लोभीएकलोभरसपगे ॥ परमारथकबहूंनाहिंकरैं चतुराश्रमसेवातेंटरैं ॥ ३३ ॥ बणिजकपटपरिपाटीपढे । मिथ्यामहाबिबादनिबढे ॥ छाडतराहरुचलैंकुराह । चोरीकरैंकहावैं साह ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ बैस्यबर्नबर्ननकियो । कलिजुगकेअनुसार ॥ सुद्रनिकुलकीकहाकहौं । ताकोवारनपार ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ मुख्यबर्नहूंकीजुयहैगति । सुद्रनिछुद्रनिकीधौंकहामति ॥ तपसीरूप पतिग्रहलेत । जानतनांहिनअपनोवेत ॥ ३६ ॥ बिनकुलतूटकुटंबीमूढ । उतमनकौंउपदेसतगूढ ॥ ठगईहितबहुविधिअनुसरै । कूरनरकतैंमूरनडरैं ॥ ३९ ॥ बिबिधिअकर्मानिकेपरकार । तिनकेबरनतव्हैंविस्तार ॥ अंतजसूद्रअंतकोलहैं । पापकर्मकौंकहांलगि कहैं ॥४०॥ दोहा ॥ कहीसुद्रकीकछुकथा । नैननिजथानिहारि ॥ लगी बहोतअबहोनजग । जैसीबरनौंनारि ॥ ४१ ॥

## अथ स्त्रीदसा वर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ छोटीकायाछोटीबुद्ध । खोटीतनमनमहाअसुद्ध ॥

साहसवहोतनिडरहियमाहीं । पुरुषतुच्छसमगिनैंजुनांही॥ ४२ ॥ हाथनिलावैंपगनिनुझावैं । वातनकछुहियमैंठहरावैं ॥ पगीरहैंमति जगजंजाल । अतिबिबादनीप्रकृतिकराल ॥ ४३ ॥ ब्रह्माविष्णुम हेश्वरआय । तीन्यौंरहैंबहुतसमझाय ॥ इनहींकीकछुकहीनमानैं । जोठानैंसोठानैंईठांनैं ॥ ४४ ॥ झूठीमतिअतिलोलउपंगी । सहज हिंअणामिलवचनकुढंगी ॥ लोभीमहालोभाचितमढी । लैवेहीकीपा टीपढी ॥ ४५ ॥ धनकुवेरकोजोघरभरैं । तऊतियतनकत्रिपतनहिं करैं ॥ लैवेहीकीरीतिठानिहैं । दैबेहीमैंप्रीतिजानिहैं ॥४६ ॥ बिन दीनैंसुखहूनहिंदेत । लैवेहीकोतिनकैंहेत ॥ मतिहलचलचोरीमैंचौ कस । कलहप्रियामतिमंदअलपरस ॥ ४७ ॥ औरतियनबिनहूंन सुहात । करैंतियनसौंमिलिउतपात ॥ आपहिकैंमत्सरताआगि । आपहितैंजुउठैंउरजागि ॥ ४८ ॥ आपहिकलपैंआपहिरोवैं । आ पहिअपनौंसबसुखखोवैं ॥ सुद्रीसहजकुचीलकुबेस । बेदवचनप ढिदैंउपदेस ॥ ४९ ॥ गुरव्हैंनरकौंदक्ष्यादैंहीं । मूढअपनपियकौं विसरैंहीं ॥ विभचारनकोपारनवार । ज्यौंजडवेलीकैंनबिचार५०॥ निकटहोयतासौंलपटावैं । जोगअजोगदृष्टिनहिंआवैं ॥ पैठिभूमि निकसैंआकास । व्हैंनसकैंछलछिद्रप्रकास ॥ ५१ ॥ जारहेतकछु बैंनविचारैं । पापनिसुतपितपतिकौंमारैं ॥ नौदसवरसनिकटजब आवैं । कामकथातबहीतैंभावैं ॥ ५२ ॥ वारहतेरहमांहिप्रसूत । साधकोईअरुअगनितधूत ॥ नहींरूपनहिंगुनउरअंतर । इतनैंपैं अभिमाननिरंतर ॥ ५३ ॥ पतिब्रतमानमानचतुराई । जानतमान हिंमानबडाई ॥ रातिरुच्यौंसमानमनमानैं । बिनामानकछुऔरन

सीफिरैंनागरतापैंसिंघासनफेरिकैंडारौं ॥ औरवषानौंकहामूंडमाधुरीस्वामीकीचांदिपैंचंदाकौंवारौं ॥ ३ ॥

## अथ अनुरागसहितसरूपबर्न्नंनं ॥

॥ कवित्त ॥ लोचनसजललालघूमताबिसालछकेचलनिमरालकीसीठाढेरैंमतनमैं । उज्जलरसभीनैंताकैंदीनैंगरबांहीरहैंस्यामास्यामदोऊंहियैंसुंदरसदनमैं ॥ पुलकितगातगिरागद्गदरोमांचिनितधारैंछापकंठीओतिलकनिजपनमैं ॥ कहाभयोनागरकियैंतैंतपजपदानजोपैंसंतमाधुरीबसीनश्रैसीमनमैं ॥ ४ ॥

## अथ बैष्णवमदोन्मत्तसुभावबर्णनं ॥

॥कवित्त॥ लीलारसश्रासवश्रवनपानकीनेहरिग्यांनाहिगजकआननांहिचहियतुहैं । बिधनांकुबेरइंद्रआदिसबरंकदीसैं ऐसेमदछायेपैंनमानिगाहियतुहैं ॥ भावनांहिंभोगमैंमगनादिनरैंनरहैंताकेनैंकताकैंनितछाकेराहियतुहैं॥औरमतवारेमतवारेनाहिंनागरवेप्रेममतवारेमतवारेकहियतुहैं॥५॥ कुंडलिया॥दोहा॥ चितवतनहिंबइकुंठदिस। नैंनकोरतैंमूर ॥ सबसरबससिरधूरदैं । सरबसकोब्रजधूर ॥ सरबसकोब्रजधूरिपूरिनितरहेएकरस । मनअंषियांतनबातनिरषिपुनिबंधतरीझबस ॥ जहांजहांसुनिपियबात नैनभरिछिनछिनबितवत । नीरसरसमईहोत तनकदृगकोरहिचितवत ॥ ६ ॥ लोकनमैंकैसैंमिलैं परमप्रेमनिधिचोर । देषतहीलषिजाइयैं श्रांषिनहींकीओर ॥ आंषिनहींकीश्रौरचोरपकरतवहिनिधकौं । पियप्रकासझलमलतमनौंबादरतरबिधकौं ॥ जिंहिंबिधयौंउरआहिमहातीछांनिदृगनोकनि । म

धिअवीधक्योंरलैंजाहिहियसूतविलोकनि ॥७॥ सूधेअतिवांकेमहा। फसेनेहकेपंक॥ दीनलगतचितवतानिपटाकहैंकुबेरसौंरंक ॥ कहैंकुबेरसौंरंकसंकहियमैंकछुनांहीं॥ फिरतविवसआवेस वलितवनघनकी छांहीं॥व्रजसमाजछबिभीररहतनितप्रतिहियरूधे । बोलतअटपटेवैंनलगतसूधनकौंमूधे ॥ ८ ॥ वृंदावनरसमैंपगे । जीत्योअजितसुभाव॥ सातगांठिकोपीनकैं। गनैंनरानाराव॥ गनैंनरानारावभावाचितरहेमहाभारि । लघैंदीनतैंदीनलीनव्हैंपरतिपगानिढरि ॥ अहाअनोपीरीत कहाकहौंरहतरहिततन। व्हैंचकोरससिवदनजुगलनिरषतवृंदावन ॥ ९ ॥ नैंननिजलचितव्हैंरहे । चूरचूरतनछीन ॥ चूरचूरढिगगूदरी। कहैंइंद्रसौंदीन॥ कहैंइंद्रसौंदीनमीनदृगलीनस्यामजल। जकरिजुलफजंजीर कियोबसमनमतंगवल ॥ रूपरसासवमत्तमुदितगदगदसुरवैननि ।तनघूमतलगिवाय स्यामसुंदरसरनैननि॥१०॥ताननिकीताननिमहीं । परचोजुमनगुकिधाहि॥ पैठचोरवगावतस्रवनि। मुषतैंनिसरतआहि॥मुषतैंनिसरतआहि साहिनहिसकतचोटाचित । ग्यानहरदतैंदरदमिटतनहिंविवसलुटतछित॥ रीझरोगरगमग्योपग्योनहिंछूटतप्राननि । चितचरननिक्योंछुटैं प्रेमवारनकीताननि ॥ ११॥ वोलनिहीऔरैंकछू। रसिकसभाकीमानि ॥मतवारेसमझैंनहीं। मनिवारेलैंजानि॥ मतवारलैंजानिआंनकौंवस्तुनवूझैं। ज्यौंगूंगेकोसैंनकोऊगूंगोहीवूझैं ॥ भीजिरहेगुरुकृपावचनरसगागरिढोलनि । तनकसुनतगरिजातसयानपअलवलबोलनि ॥ १२ ॥

## ॥ अथ वैष्णव प्राप्ति सिक्षा कथन॥

वूराविसरचोरैंनमैं। मगजनगजकौंपाय॥तजिऊंचेअभिमानकों। चैं

टीन्हैंतोखाय॥ चैटीन्हैंतोखायचायचितरजनिवारिकैं। कनिकार सिकहिलहैंअपनपोतनकधारिकैं ॥ मांनीमलिनमतंगताहिइहक होनमूरा। दीजैंतिनहिंवतायजाहिभावैंजनबूरा ॥ १३ ॥ दोहा ॥ जग्यदानसंजमनियम, कियेतीरथतपपूर॥ नेहनीरपरस्योनहीं, तो सबकीनौंधूर ॥१४॥ कवित्त ॥ नागरबेदपुरानपढ्योसबबादकैकी नीकईमतिपांगुरी। गंगओगोमतीन्हातफिरयोअतिसीतमैंप्रीतसौंहा थलैंकांगुरी ॥ गल्यकान्हायगोदावरीन्हायोसुत्यागिदैंअन्नरुखावत सांगुरी।औरहून्हायोसुमैंनबदीजौपैंनेहनदीमैंनदीपगआंगुरी॥१५॥ भाज्योफिरयोबहुतीरथकेहितबांधिकुटीब्रजगाढोगह्योना । नागर वेदपुरांनपढ्योसुषमोहनप्रेमसौंनांवकह्योनां॥ साधनकैव्रतकीनेंसबैं ब्रिजबासीकोसीतलैंखायोमह्योनां । कीनैंउपायधनेंतरबेकेपैंने हनदींमधिबूडिरह्योनां ॥ १६॥ दोहा ॥ रसिकदसाबरनीइहैं, अद भुतप्रेमउमंग ॥ सबनिदुहाईइष्टकी, सुनिकीज्योसतसंग ॥ १७ ॥ जोबांचैश्रवनानिसुनैं, रीझिहोयअनुरक्त॥ तेमोकौंकहियोइन्हैं, उप ज्योअतिहरिभक्त ॥ १८ ॥ कहीरसिकरतनावली, पूरनप्रेमप्र कास॥सुरतिहियेंब्रजवासकी, धारिनागरीदास॥१९॥ सतरैसैंबइया सिये, भादौंसुदिभृगुवार॥ तिथिपरिवाकीनीइहैं, लज्यिोसंतसुधार ॥२०॥कवित्त॥ केऊकरैंबिष्णुसेवकेऊपूजेंदेवीदेव केऊचाहैंमुक्तिके ऊउदरानिवासनां। आठौंसिद्धनवानिद्धचाहतअनंतजनकेऊचाहैंपु त्रकेऊनिजघटनासनां॥ मेरैंवेईदेवसंतउज्जलतिलककीनैंभानैंरसउ ज्जलओजुगलउपासनां ॥ नागरनिहोरीकरजोरमांगौंतिनपैंतैं । देहुप्रेमभक्तिओछुडायबिषैंबासना ॥२१॥ इतिरसिकरतनावली ॥

## ॥ अथ कलि बैराग्य वल्ली लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ कलमषचितचीगटहरन, बंदौंगुरपदरैन ॥ रहोभालभूषनसदा, अभैभक्तिफलदैन ॥ १ ॥ छप्पय ॥ धनिश्रीवल्लभबिदितधन्यधनिकुंवरविभूषन । बिठ्ठलेससुतसातधन्यहरिअंसवंसधन ॥ धनचौरासीभक्तजक्तहितपुरुसरूपाछित । धनिगोविंदकुंभनादिप्रीतगिरधरनअपरामित ॥ धन्यभानभुवभागवतनागरियाहियतमहरन । धन्यधन्यफिरधन्यहैंमहामंत्रकेवलसरन ॥ २ ॥ चौपाई ॥ एसवएपुरवोअभिलाषा । कछुशुकबचनकहूंकरिभाषा ॥ श्रीभागवतवेदतरकोफल । पूरितरसहरिकथामधुरकल ॥ ३ ॥ दोहा ॥ ताकेद्वादशस्कंधकी, द्वुतियत्रितियजेध्याय ॥ तहांकहीशुकसोसमैं, अवैंप्राप्तिभइआय ॥ ४ ॥ छप्पय ॥ समैंघोरकलिकालधर्मपदछेदनकीनैं । विफलक्रोधकंदर्पजीतिजीवनिकौंलीनैं ॥ लोभमोहतैंकरीप्रवर्तिमारगमतिपंगी । चितचंचलअतिअजितनीचसंगीबहौरंगी ॥ नागरिदासनऔरकछुत्रिबिधितापसीतलकरन । प्रगटितवल्लभवदनतिहिंसरनमंत्रकीहौसरन ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ पावसमैंपौंनधूपानिमलअकासहोत सीतमांनिभीतलोगरोगसरसायगो । ग्रीषमभयंकरताअंधकारधूरपूरचील्हओउलूकसब्दकूकरानिछायगो ॥ व्हैंरहीहैं सामसूमजिततितधामधूमकलहकलेसदेसदेससरसायगो । नागरबिलासहासिउरउदमादमिटेदेखतहीदेखतमैंऐसोसमैआयगो ॥ ६ ॥ धर्मकर्मप्रीतरीतसज्जनसुहृदताईसकलभलाइनकोपुंजसोबिलायगो । अंतरमलीनव्हैंकैंकलहप्रबीनभयेनरनिकलेससबदिनसरसायगो ॥

॥ ९८ ॥ जोकोउसकलजननिसुखदायक । वहोगुनपूरतसबविध लायक ॥ सोभोगतयहआयुनिधान । बरसवीसकैंतीसप्रमान ॥९९ जोजगकौंकंटकदुखदैंन । सोबहुजीवैंबेगमरैंन ॥ कलिजुगदुखहीदुषकोजोग । दुखहीकीमूरतिसबलोग ॥ १०० ॥ महादोषनिधहैं कलिकाल । कहांलगिकहियेदुखजंजाल ॥ १ ॥ दोहा ॥ एतेऔगुनतैंउगुन । औगुनभरेअनेक ॥ तऊनकलिसमजुगकोऊ । तामैंअतिगुनएक ॥ ३ ॥ जोहरिहोतप्रसन्ननाहिं । कीनैंतपबहोकाल ॥ तनकभक्तिकलिमैंकियैं । रीझैमहादयाल ॥ ४ ॥ चोपई ॥ तातैंअब मनहरिभजिभाई । ताजिदिनादिनजगदुखसरसाई ॥ जोतूंकछुचाहैजगभोग । अबनकहूंमिलिवेकोजोग ॥ १०५ ॥ खबरनपलकी तनछिनभंग । कलसेटूटिछूटिहैअंग ॥ अरुभुवमंगलसुखहूगये । ठामठामदुखथानाठये ॥ १०६ ॥ कलहकलपनांदावधावतजि । गृहमैंनिसप्ररहिंकैंहरिभाजे ॥ यथाशक्तिकछुआतिथदीजैं । जतनसाधिवहोसतसंगकीजैं ॥ १०७ ॥ श्रवणमहातमसवतैंभारी । जातैंबढतभक्तिसुखकारी ॥ कथाजथाऔकासप्रमान । सुनियेश्रीभागोतपुरान ॥ १०८ ॥ दोहा ॥ जपतपसंजमनेमव्रत । जोगजज्ञकरपूर ॥ भक्तभागवतसंगबिन । भक्तिनउपजैंमूर ॥ १०९ ॥ सुनैंभागवतभक्तहैं । भक्तभयेहोयचैन ॥ जगतमांझआसक्तक्यौं । दुखवितवैंदिनरैन ॥ ११० ॥ सम्रृतवेदपुरानहैं । सबहीहरिकेअंग । रंगनलागैंभक्तको । बिनाभागवतसंग ॥१११॥ जगतभक्तबहोभांतिकह । नानामतकेमांहि ॥ सुकमुखकेबिनफलद्रवैं । व्रजरसपावैंनांहि ॥ ११२ ॥ नागरीदासविचारियह । अफलजातहैदेह ॥ चापिभा

गवतअमृतफल । जनमसफलकरिलेह ॥ ११३ ॥ चौपई ॥ जोगृहमैंअतिकलहकलेस । करिनहिंसकैंभक्तिलवलेस ॥ तोबसिब्रजवृंदावनमांही । प्रेमभक्तिरंगलगैंतहांही ॥ ११४ ॥ कवित ॥ काहेकौंरेनानामतसुनैंनूंपराननकेतैंहीकहातेरीमूढगूढमतिपंगकी । वेदकोविवादनिकोपावैंगोनपारकहूं छाडिदेहुआसासबदानन्हानगंगकी ॥ औरसिद्धिसोधैंअबनागरनासिद्धकछूमानिलेहुमेरीकहीबारतासुढंगकी ॥ जाहुब्रजभोरेकोरेमनकौंरंगाइलैरेवृंदावनरैंनीरचींगौरस्यामरंगकी ॥ ११५ ॥ चौपई ॥ जद्यपिनूंउतहूंचलिजैंहैं । रसिकमिलैंविनरसनहिंपैहैं॥विनउहिंठांरंगेरसिककहांहैं।रसिकरतनकीखानितहांहैं ॥ ११६ ॥ कवित ॥ आयआयजांहिकोरिकोरिकअजाननरपावतनबस्तुरहैंनीरीअरुन्यारीजू । संतमनमानिकहरितनीलपीतस्वेतमिलेज्यौंज्यौंधूरमैंत्यौंकांतभईभारीजू ॥ रींझिरींझितिन्हैंउरधारतसुजानएकमैंतोमतिमेरीवहिनागरपैंवारीजू । काहूकौंनसूझैंतोनसूझोहैंप्रकासमानवृंदावनरत्नखानिजौंहरीविहारीजू ॥ ११७ ॥ दोहा ॥ ऐसेवृंदाविपुनबसि । करिरसिकनकोसंग ॥ ज्यौंचितचटकीलोचढैं । गउरस्यामदृढरंग ॥ ११८ ॥ कवित ॥ जमुनानदीसीतोनदीसीकोऊऔरतहांभक्तिरसरूपभईजाकोजलसोतहैं । कूलकूलफूलफूलझूलकुंजलतारहींबोलतचकोरमोरकोकिलाकपोतहैं ॥ रसिकसुजानसंतहरिगुनगानकरैंहरैंतापत्रिविधिसुआनंदउदोतहैं। जगदुखदंदतामैंदुखीकहानागरनूंबसिऐसेवृंदावनसुखीक्यौंनहोतहैं॥११९॥सहजैंश्रीण्णकथाठौरठौरहोततहांकीरतनधुनिमीठीहियकेउलासतैं । स्यामास्यामरूपगुनलीलारंगरंगेलोग

तिनकैंनध्वांतउरप्रेमकेप्रकासतैं ॥ एरेमनमेरेचेतउनहींसोकारिहेत नागरछुटायदेतजगदुखपासतैं । कामक्रोधलोभमोहमच्छरताराग दोषचाहदाहजैहैंसबवृंदावनवासतैं ॥ १२० ॥ इतिश्रीवृंदावन प्रगटसरूप ॥

## ॥ अथ गोपितरूप वर्ननं ॥

॥ कवित्त ॥ कुंजनिकलपतरुरतनजटितभूमिछविजगमगतज कीसीलगैंकामकौं । सीतलसुगंधमंदमारुतबहतनितउडतपरागरैंन चैंनसबजामकौं ॥ देवबधूद्रूमनिमैंकोकिलासरूपगावैंदंपतिबिहार बीचबृंदाबननामकौं । नागरियानागरसुदोनैंगरबांहींतहांमनरूपर वनीव्हैंदेखिऔसैधामकौं ॥ १२१ ॥ दोहा ॥ नागरियानितचित बसो । यहबृंदाबनथान ॥ नसोजक्तआसक्तमन । मायामदरस पान ॥ १२२ ॥ सतरासैंपच्याणवैं । संवतसावणमास ॥ कालि बल्लीबैरागकी । करीनागरीदास ॥ १२३ ॥ इति कालिबैरागबल्ली ॥

## ॥ अथ अरिल्लपच्चीसी लिख्यते ॥

संगफिरतहैंकाल भ्रमतनितसीसपर । यहतनअतिछिनभंगधुंवे कोधौंलहर ॥ यातैंदुर्लभसासनवृथागमाइयैं । ब्रजनागरनंदलाल सुनिसदिनगाइयैं ॥१॥ चलीजातहैंआयुजगतजंजालमैं । कहतटेरि कैंघरीघरीघरीयालमैं॥समैंचूकिबेकामनफिरिपछिताइयैं। ब्रजना० ॥ २ ॥ सुतपितपतितियमोहमहादुखमूलहैं । जगमृगतृष्णादेखिर ह्योक्यौंभूलहैं ॥स्वपनराजसुखपायनमनललचाइयैं । ब्रजना०॥३॥ कलहकलपनांकामकलेसनिवारनौं । परनिंदापरद्रोहनकबहुविचा

रनौं ॥ जगप्रपंचचटसारनचित्तपढाइयैं । व्रजना० ॥ ४ अंतरकुटि लकठोरभरेअभिमानसौं । तिनकेगृहनहिंरहैंसंतसनमानसौं ॥ उनकीसंगतिभूलनकबहूजाइयैं । व्रजना० ॥ ५ ॥ कहूंनकवहूंचै नजगतदुखकूपहैं । हरिभक्तनकोसंगसदासुखरूपहैं ॥ इनकैंढिग आनंदितसमैंविताइयैं । व्रजना० ॥ ६ ॥ कृष्णभक्तिपरपूरनजि नकैंअंगहैं । दृगनिपरमअनुरागजगमगैंरंगहैं । उनसंतनकेसे वतदसधापाइयैं । व्रजना० ॥ ७ ॥ व्रजवृंदावनस्यामपियारीभू मिहैं । तहांफलफूलनिभाररहैंद्रुमझूंमिहैं ॥ भुवदंपतिपदअंकतिलो टलुटाइयैं । व्रजना० ॥ ८ ॥ नंदीश्वरबरसानौंगोकुलगांवरो । वं सीवटसंकेतरमततहांसांवरो ॥ गोवर्द्धनराधाकुंडसुजमुनांजाइयैं । व्रजना० ॥ ९ ॥ नंदजसोदाकीरतिश्रीवृषभानहैं । इनतैंबडोनको ऊजगमैंआनहैं । गोगोपीगोपादिकपदरजधाइयैं ॥ व्रजना०॥१० वंधेअलूखलललदमोदरहारिकैं । विश्वदिखायोवदनवृच्छदयेतारि कैं ॥ लीलाललितअनेकपारकितपाइयैं । व्रजना० ॥ ११ ॥ मेटि महोछोइंद्रकुपितकीन्होमहा । जंबबरस्योजलप्रलयकरनकहिये कहा ॥ गिरधरकरीसहायसरनजिहिंजाइयैं । व्रजना० ॥ १२ ॥ वकीबकासुरआदिकअसुरअभावनैं । हतेसदगतेंकियेस्याममनभा वनैं ॥ रक्षिकघोषगुपालसुनहिंबिसराइयैं ॥ व्रजना० ॥ १३ ॥ निरविषजमुनाकरी दवानलकौंपियो । नंदत्रासअहिहरी सव नकौंसुखदियो ॥ आरतिघोषनिवारनसौंमनलाइयैं।व्रजना०॥१४॥ मंडलगोपसमाजस्यामतिनमांहिंहैं । हंसिहंसिजैंवतछाकढाककी छांहिहैं ॥ विधिमोहनकोतूहलध्यानसमाइयैं । व्रजना० ॥ १५ ॥

जानैं ॥ ५४ ॥ निसदिनगर्बपरयोगलगाजैं । हियेक्रोधकेपुंजबिराजैं ॥ तचततेजतामसतनमाहीं । देखिलरैंअपनीपरछाहीं ॥ ५५ ॥ ॥ कवित ॥ धूंधरीभयानकचढायेंकररातकोपिदंतपंतिकाढिकैंकरालमुषबाहरी । लपकनिरसनाकीनैंनज्वालसेज़रततामसकोतनमैंलग्योईरहैंदाहरी ॥ ठाढोव्हैंकैसोहैंअैसोकौनबतरावैमानौंकंठहीगहैंगीदौरिजातनहींसाहरी । भभकनिभारीनैंकजातनसंभारीतनओढैंखालनारीकीमुलमांकीनीनाहरी ॥५६॥ दोहा ॥ हैंफलपापरुपुन्यके । यहजानतसबकोय ॥ महापापतैंहोततिय । पुन्यपुरसबपुहोय॥५७॥ सातसिंधुकीमसिकरैं । लेखनसबबनराय ॥ भूमिपत्रजोबिधिलिखैं । तियगुणलिखेनजाय॥५८॥ यथाकालकैंतियनजुत । च्यारौंबर्नेंबर्न॥ अबआश्रमकीयहदसा । सुनियौदैंकैंकर्न ॥ ५९ ॥

## ॥ अथ प्रथमाश्रम ब्रह्मचारीदशा बर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ ब्रह्मचारिनिकेनाममांझसुठि । अनुस्वाररराकारगयेउठि ॥ ग्रस्ताश्रमतोपहिलैंकह्यो । अबतोकछुकहनौंनाहिरह्यो६० बानप्रस्तकीक्रियाकठिनअति । सोकयौंनिबहैंकलिजुगकैंमति ॥ सबोंपरसंन्यासउदोत । कलिमैंकाहूसौंनाहिंहोत ॥ ६१ ॥ अंबरदिसाकिंदराभौंन । करहीपात्रकरैंधौंकौंन ॥ भयेबगलिबिपरीतसंन्यासी । हयगयकोसभवनसुखरासी ॥ ६२ ॥ महाबिभौभूभुजउनिहार । क्रुध्धक्रुध्धकारिबरसतसार॥ ६३ ॥ दोहा ॥ बरनैंऔगुनयुत सबैं । बर्णाश्रमइहिंभाय ॥ बहुरिएकव्हैंजांहिगे । सकलभ्रष्टताछाय ॥ ६४ ॥ इति वर्णाश्रमदशा ॥

## ॥ अथ कविनिजदशा बर्ननं ॥

। कुंडलिया ॥ दोहा ॥ देखोमोओगुनयहैं । हूंओगुननिजिहाज ॥ ओगुनबरनतऔरके । मोहिनआवतलाज ॥ मोहिनआवतलाज भर्य्योअतिअगनितदोसनि । पगनिअगनिनहिंसूझतसूझतला गीकोसनि ॥ तजिनिजाछिद्रनिकहतओरकेयहकहालेखो । समझि सोचिचुपरहतनजडनागरजगदेखो ॥ ६५ ॥ इति कविनिजदसा ॥

## अथ सर्वबिस्वदशा बर्ननं ॥

॥ चौपाई ॥ कलिजुगमहातिमरघनजुरे । रबिबेदोक्तकर्मसब दुरे ॥ मनउपंगमतमनुखद्योत । तिनहींकीजागीजगजोत ॥ ६६ ॥ नाटकचेटककेसेजोग । तिनहींमैंपागेसबलोग ॥ सतमितभाषीपं डितसोई । ताहिनहींमानतहैंकोई ॥ ६७ ॥ जाकैंचंचलबचनबिला स । ताहिकहैंपंडितगुनरास ॥ अरुदंभीसोसाधकहतहै । साधहिंदं भीजांनिगहतहैं ॥ दूरकेतीरथश्रद्धालहैं । तीरथनिकटअश्रद्धारहैं ॥ जोअबकलिमैंअतिधनवान । ताहिकहतसबबुद्धिबिधान ॥ ६९ ॥ सोईप्रतापीसोईकुलीन । जोगृहमैंधनकरिनहिहीन ॥ जोबलिष्टअ तिपरबलहर्ता । जानतताहिन्यायकोकर्ता ॥ ७० ॥ अरुधनाढ्यपर निधनीजरैं । संपतिदेखिईरषाकरैं ॥ प्रजाजीविकारहतदलद्री । कं दमूलफलखावतबद्री ॥ ७१ ॥ रहैंजुस्वारथपेटभरनकौं । लेसनपर मारथहिकरनकौं ॥ मातपिताकीटहलनकरैं । सारेसुसरनकौंअनु सरैं ॥ ७२ ॥ सबहीकौंलीनेतियजीति । भामिननरनरभामिनरीति जोमनमानीसोहीतिया । सोमनमान्योंजोहीपिया ॥ ७३ ॥ मन

लागतवाहीदिसढरैं। जातिपांतिसौंब्याहनकरैं॥ बिनाबिपतिहीध मेंछूटिगे। पुनिबिपतनिहूंमांझटूटिगे॥ ७४॥ करतजुपापजीविका तवैं। पूरितपापव्हैंगयेसवैं॥ छोटीकायाबदनबिरूप। छुधाबहोत घटभोजनकूप॥ ७५॥ निर्वलअंगअन्नकैंटोटा। नरगतक्रांतिम नहुंभुतलोटा॥ चिंतारहतबदनपरछई। बिश्वससोकसर्वव्हैंगई ७६ अरुसबभृष्टसुचिनआचार। सुबसनसुगंधसंवारैंबार॥ ताहीकौंस बअतिसुचिमानैं। क्रियास्नानकोऊनहिंठानैं॥ ७७॥ जबइच्छात बसोवनलगैं। जबमनमानैंतबहींजगैं॥ ऐसैंहींजलभोजनकरैं। समैंबिचारनकछुजियधरैं॥ ७८॥ देतनकछूधर्मकैंहेत। जोकछुदे तसुजसहितदेत॥ कैलेवादेईब्यवहार। रहीपरसपरगधाखुजार७९ बहुरिनपात्रअपात्रहिजानैं। जोजिहिंमानैंसोतिहिंमानैं॥ अरुसदू धगोसेवतभाय। बिनादूधकीत्यागतगाय॥ ८०॥ होतहैंसुरभीअ जासमान।भृष्टअहारमिलतनहिंधान॥ मेटयोजगसबचितहिततोष मांचिगोबिनाप्रयोजनदोष॥ ८१॥ कोकाहूकोभलोनचाहत।मच्छ रतानलअंतरदाहत॥ जितातितकलहकलहकीरोर। बिनाकलहकछु बातनओर॥ ८२॥ करैंकलहसुतपितमिलिमात। करैंकलहभग नीअरुभ्रात॥ नारिपुरुसहूंकलहमचावैं। तबऔरनकीकौनचला वैं॥ ८३॥ कलहबिनाचितचैननपरैं। चलतेपवनपातसौंलरैं॥ जितातितकलहकलहकीधूम। व्हैंगईकलहमईसबभूम॥ ८४॥ दोहा॥ कलहचतुरआवतातिन्हैं। बिविधिकलहकेजोग॥ बुद्धिवान जिनकौंकहत। कलिजुगकेसबलोग॥ ८५॥ चौपई॥ गईजुमिटिभु वकीछाबिरास। नहींकरतकछुसमैंप्रकास॥ ताहूमैंवर्षानहिंमूर।

चतुर्मासनभमंडितधूर ॥ ८६ ॥ पवनतीब्रलागतनिसिसीत । समै
निरखिउपजताचितभीत ॥ निकसतगगनकहूंजोबादर । ताहि
दौरिसबदेखतसादर ॥ ८७ ॥ लागेपरनकालपरकाल । जगतमी
नजलबिनजंजाल ॥ सकुचिभूमिअनधनमिटिगयो । बढिदालिद्रस
बकौंदुखभयो ॥ ८८ ॥ जोघनबरसततोइहिंभाय । घोरघटाकारी
घुमडाय ॥ झूंमिझूंमिझुकिझुकिसरसाय । एकसींवछींटैंबरसाय८९
दूजीसींवानिकटतरसाय । जातहैंबादरबहुरिबिलाय ॥ मींड़तहाथ
कहैंजगहाय । इंद्रहिंगारीदैंअकुलाय ॥ ९० ॥ अंबकदंबादिक
नहिंहोत । मिटिगयेभलेद्रुमनिकेगोत ॥ मुंजाकैरजवासारास ।
रहिगयेथोहरबंबुलफरास ॥ ९१ ॥ अबनीकीसोभाभईदूर । रहिग
ईएकधूरहीधूर ॥ महाक्षुधितजगतजिपुरग्राम । जातहैंसूनेंक
रिनिजधाम ॥ ९२ ॥ लागेकरनिपरबतनिवास । कंदमूलफलईंध
णआस ॥ महलघटासमतेपुरग्रामनि । तिनमैंतियजनुदमकातिदा
मनि ॥ ९३ ॥ तहांघासघरकतहैंसूक । बोलतनिसदिनचील्हउलू
क ॥ बढतअमंगलमिटिगोमंगल । जितातितआतिदुखदुसहउदंग
ल ॥ ९४ ॥ नितअपसुगननिसौंचितचंपैं । उल्कापातभूमिहूंकंपैं ॥
दिवससृगालरैनकौंकाग । वचनलगतश्रवननिकोंआग ॥ ९५ ॥
पौनसीतघनघामअनर्थ । एनहिदूरिकरनसामर्थ ॥ राजदंडअरिचो
रनिकरिकैं । नितप्रतिहियोप्रजाकोधरकैं ॥ ९६ ॥ एतेपैंउपजतव
पुरोग । तनइंद्रीबलछीनेलोग ॥ मायापापनचायैंनचैं । त्रिविधिता
पमैंसबजगतचैं ॥ ९७ ॥ निसदिनरहैंसकलदुखभोय । कबहुनको
ऊनिर्भयहोय ॥ यापरहोनलगीलघुआव । डोलतकालविलोकतदाव

मोरपच्छधरगुंजधाततनलांवहीं। गोपबेसगोचारसहतबलगांवहीं॥ रजमंडितमुखध्यानपरमसचुपाइयैं । व्रजना० ॥ १६ ॥ रोकतगैलगुपालदानमिसलैंछरी । गहबरबनअंधियारहारतियहैंकरी ॥ नैनबैनतनउरझनमनउरझाइयैं । व्रजना० ॥ १७ ॥ तियमनमाखनहरतजुधरतदुराइकैं । देवीपूजतलीह्लैंचीरचुराइकैं ॥ इहींचोरकौंचाहिचित्तचुरवाइयैं । व्रजना० ॥ १८ ॥ सुनिमुरलीव्रजवधूभईबसकामहैं । थिरचरगतिविपरीतिबिबससुरबामहैं ॥ मादिकधुनिसुमिरतमनमादिकछाइयैं । व्रजना० ॥ १९ ॥ सरदनिसासुखरच्योरासबिसतारिहैं । गतिसमाधिचलचित्तभयेत्रिपुरारिहैं॥ रसानंदआवेससुमिरसरसाइयैं । व्रजना० ॥ १९ ॥ अन्योअन्यसंकुलितबाहुमृदुपदचलैं । मंडितचक्राकारहारकुंडलहलैं ॥ विस्मैदेवकुतूहलक्यौंविसराइयैं । व्रजना० ॥ २१ ॥ गुनसागरसंगीतगतनअतिछबिबढी । बोलमधुरथेईथेईलोलभृकुटीचढी ॥ कामविजइलीलारसप्रानभिजाइयैं । व्रजना० ॥ २२ ॥ नृत्तषेदरसमसेधसेजसुनातबैं । बिरहतजनुगजसंगजूथकरनीसबैं ॥ छबिछींटैंछिरकनकीसुमरिसिहाइयैं । व्रजना० ॥ २३ ॥ राधाहितव्रजतजतनहिंपलसांवरो । नागरनित्तबिहारकरतमनभावरो ॥ राधाव्रजमिश्रतजसरसनिरसाइयैं । व्रजना० ॥ २४ ॥ व्रजरसलीलासुनतनकबहुअधावनौं । व्रजभक्तनिसतसंगतिप्रानपगांवनौं ॥ नागरियाव्रजवासकृपाफलपाइयैं । व्रजनागरनंदलालसुनिसदिनगाइयैं ॥ ॥ २५ ॥ १५ ॥ इति श्रीअरिलपच्चीसीसंपूर्णम् ॥

# अथ छूटकपद लिख्यते ॥

श्रीहरिजयति॥ हमब्रजसुखीब्रजकेजीव॥ प्रानतनमनदैनसर्वसु राधिकाकोपीव ॥ १ ॥ कहांआनंदमुक्तमैंइहकहांमृदुमुसकान॥ कहांललितनिकुंजलीलामुरलिकाकलगान ॥ २ ॥ कहांपूरनसरदरजनीजौन्हजगमगजोत । कहांनूपुरबीनधुनिमिलिरासमंडल होत ॥ ३ कहांपांतिकदंबकीझुकिरहीजमुनाबीच । कहांरंगबिहारफागुनमचतकेसरकीच ॥ ४ ॥ कहांगहबरबिपनमैंतियरोकिबोमिसदान ॥ कहांगोधनमध्यमोहनाचिकुररजलपटान ॥ ५ ॥ कहांलंगरसखासोहनकहांउनकोहासि ॥ कहांगोरसछांछिटैंटी छाकरोटीरासि ॥ ६ ॥ कहांश्रवननकीरतन जगमगनिदसधारंग ॥ कंठगदगदरौंमहर्षन प्रेमपुलकितअंग ॥ ७ ॥ जहांएतबिस्तपड़यतबीचबृंदाधाम॥ हौंबऔसेब्रजसुखदसौंबाहिरैंवेकाम ॥ ८ ॥ दासनागरचहतनहिंसुखमुक्तिआदिअपार । सुनहुब्रजबसिश्रवनमैंब्रजवासननकीगार ॥ ९ ॥ १ ॥ ब्रजकेपरमसनेहीलोग ॥ गारीदैंहासिमिलतगहबरेअंतरप्रेमसंजोग॥ रागरूपअखबरबनलीलायहतिनकोनितभोग ॥ नागरीदाससदाआनंदीसुपनेंहूंनहिंसोग ॥ १ ॥ करियेब्रजबासिनसौंनेह॥ नखसिखभरेप्रीतरससागर आवतकबहुनछेह । नंदनंदनप्यारेकेप्यारेनितमतवारेरूप । नागरीदासमिलावतमोहन रसिककुंवरब्रजभूप ॥ २ ॥ जौकोऊब्रजलीलारसचाखैं ॥ ताकोफिरिकहुंऔरकथामैंकबहुनमनअभिलाखैं ॥ खटरसछप्पनभोग नभावतजोब्रजगोरसपावैं । हितब्रजरसिकउपासिकसौंकरिआनसौंमननमिलावैं ॥ नागरियाब्रजमहमारसनांतनकहुंजातकही

नां ॥ बिनरसरूपाभक्तिजक्तज्यौंसुरधरजेठमहीनां ॥ ३ ॥ हमारैंमुरलीवारोस्याम ॥ बिनमुरलीबनमालचंद्रिकानहिपहिचानतनाम ॥ गोपरूपवृंदावनचारीब्रजजनपूरनकाम ॥ याहीसौंहितचित्तबढोनितदिनदिनपलछिनजाम॥ नंदीसुरगोवर्धनगोकुलबरसानौंविश्राम ॥ नागरीदासद्वारिकामथुराइनसौंकैसोकाम ॥ ४ ॥ चरचाकरीकैंसैंजाय ॥ बातजानतकछुकहमसौंकहताजियथहराय ॥ कथाअकथसनेहकीबिनउरनमावतऔर ॥ बेदसंमृतिउपनिषदकौंरहीनाहिनठौंर ॥ मौंनिहीमैंकहानिताकीसुनतश्रोतानैंन ॥ सोबनागरलोगबूझतकहिनआवतबैंन ॥ ५ ॥

## अथ राधावल्लभोजयति ॥

आयोआयोरेकलिकालआयो॥ धरमहिंमारउठावतआतुरअधरमराजसवायो ॥ अमरमानिछिनभंगुरतननरपापनकरतसकायो ॥ छलकरिपुत्रपिताकौंमारतपितापुत्रहतिकैंसुखपायो ॥ औरजीवकौंनचलावैंहिंसाहीकोस्वादसुहायो ॥ जहांतहांद्रोहकलहककसतामत्सरक्रोधउरनिउफनायो ॥ महाअमंगलघरघरदीसतरूदितवदनबिलखायो ॥ कूकरकागअलूकभयानकसदासब्दरहैंछायो ॥ अल्पवृष्टआकासनिहारतत्राहित्राहिजगबचनसुनायो ॥ व्हैंगइकुटिलबुद्धिजीवनकीलोभमोहकैंहाथबिकायो ॥ रहतनह्वैतापनकाहूकोभवनकामतननाचनचायो ॥ तातैंगृहतजितीरथबसियेरहैंसतसंगसदासुखछायो ॥ दुर्लभमहापायनरदेहीचूक्योसमैंसोइपछितायो ॥ ठाकुरनागरीदासपाससौंइहउपदेसकहायो ॥ १ ॥

देखोसबजीवनकोंष्वारी ॥ महाघोरकलिजुगकीभामिनकलहभईस बहींकैंप्यारी ॥ लगीरहैंउरअंतरमांहींभावतनांहिकरीछिनन्यारी । याहीकौंसबसकरिजानैंसकलसुखनकीबातबिगारी ॥ यहजार नकौंनित्तलरावैंफिरिराखैंज्यौंकीत्यौंयारी ॥ नागरियाकेवलभ क्तनईंहिदारीदूरिनिकारी ॥ २ ॥ बिनहरिसरनसुखनहिंकहूं ॥ छा डिछायाकलपद्रुमजगधूपदुखक्यौंसहूं ॥ कलिकालकलहकलेसस लितावृथातामधिबहूं ॥ दासनागरठौरनिभैं कृष्णचरननिरहूं॥३॥ सबसुखस्यामसरनैंगयैं ॥ औरठौरनकहूंआनंदइंद्रहूकैंभयैं ॥ दुखमू लएकप्रबर्तिमारगकहिनमानतकोय ॥ सुखपग्योजिहिंनिवर्तिकौंम नजांनिहैंदुखसोय ॥ सतसंगअंबुजब्रजसरोवरकीरतनसुखवास । कीजियैंहरिबेगतिनकोभंवरनागरिदास ॥ ४ ॥ अबहौंसरनकेवल स्याम॥घोरकलिकेतेजकोतनसह्योजातनवाम॥लीजियैंतरुचरनछा यामूलसुखविसराम॥ अजितमनतैंकामसुभकछुहैंनव्हैंछिनजांम॥ सबनिलीनोजीतिहूंभयौभीतसरतनकाम । अवरहैंनागरिदासकैंर टलगीरसनांनाम ॥ ५ ॥ सबदुखगेहगेहसही ॥ जानिअनुभवश्रव नसुनिफिरिदेखिनैननिबही ॥ महाप्रगटपुरानब्रजहूसुनौंशुकमुषक ही ॥ हरपसोकप्रवर्त्तमारगमिटतक्यौंहौंनहीं ॥ दुखमूलबिबिधिप्र कारबातैंबहोतकहनीरही ॥ घरमिलैंनागरिदासठाकुरतऊसुखबन महीं ॥ ६ ॥ दुसहदुखजगसिंधुमैंहौंपरचोव्याकुलहाय॥ भवनभंव रतैंनिकसिसकतनदयोअधिकस्रमाय ॥ वंधासिलगरइंगरैंपरसोब ड़ाइलोक ॥ नैंकइतउतउकससकतनदेतनीचैंझोक ॥ बहोरिपद करगतिथकतअतिअरझिलाजसिंवार॥ जलजीवचौंटतकुटंवकारज

विवधाविवधप्रकार ॥ अप्राधमूरतग्राहकीधरिंगह्योदृढपगमर्म । गड
तकहरकरालदाढैंसोईभोगअकर्म ॥ रौंमरौंमनिपीरपूरसरीरधीरज
कास । अतिअमूझनिकलमलीरुकिघुटतनासास्वास ॥ अहोकरु
नासिंधुस्वामीलेहुमोहिनिकास ॥ नांवनागरिदाससुनिकोउकरैंन
हिंउपहास ॥ ७ ॥ क्यौंनहिंकरैंप्रेमअभिलाष ॥ याविनमिलैंननंददु
लारोपरमभागवतसाष ॥ प्रेमस्वादअरुआनस्वादयौंज्यौंअकडोडी
दाष ॥ नागरिदासहियेमैंऐसैंमनबचक्रमकरिराष ॥ ८ ॥ क्यौंनहिं
करतउपायभक्तिको ॥ पावतकियेंरूपआनंदीआनंदउरहिअपा
रलगतको॥ देहकुटंबआपकेस्वारथदीसतहैंसबमोहिठगनको॥ नाग
रीदासबैठिसतसंगतिभेटिदेहुदुखदाहजगतको ॥ ९ ॥ माईनीको
रसगोपालको ॥ औरैंरसकिहिंकामसखीरीगृहव्योहारजंजालको ॥
याकेगुनवाकीरूपमाधुरीसुमिरनप्रानरसालको ॥ नागरियातजिगं
गकौंनकरैंह्वांवनडोलीपालको॥१०॥ परयोकाममनसौंआय॥ महा
मनकीलगनिबिननहिंलहतमोहनराय ॥ सोबचंचलनीचसंगीछिन
नकहुंठहराय ॥ कबहुकुटिलकठोरकबहूसिथलथिरव्हैंजाय ॥ कबहु
कामानलजुतपकैंलाषज्यौंपिघलाय ॥ निपटअतिगतिबिकटमनकी
कहूंकाहिसुनाय ॥ कहूंसोईसामुहैंदुखउठैंमनकोगाय ॥ थक्योझौं
झटकरिबहुतबिधिकछूबसनबसाय ॥ मूंदिलोचनसरनव्हैंबिचगि
रयोगुरकैंपाय ॥ दासनागरिकोजुहरिसौंदेहुचित्तलगाय ॥ ११ ॥ ह
मतैंभजनगयोहैंभाजि ॥ एकघरीओकासनपावैंघेरिलयेगृहका
ज ॥ हियेअविद्याबाहिरअरथीदोऊतनकनआवैंबाज । नागरीदास
कोकहाजायहरिजोतुमकोआवैंनहिलाज ॥ १२ ॥ समयोहेरत

कहाभजनकोसमयोकबहुनपावैंगो ॥ दिनसमयोजगद्वंदमैंबीततनि समनजागभ्रमावैंगो ॥ कृष्णकुंवरसुमिरनकोआछैंसमयोकबहुन आवैंगो । नागरीदाससमोहेरतहीअंतसमोआयजावैंगो ॥ १३ ॥ प्रभुजूमोहीखबरनहिंमेरीहौंजुकौनहौंकिनमैं ॥ जोभावैंसोईमोहिकी जैंहौंअबठहरौंतिनमैं॥ भगतनमैंकोउकहैंमोहितोभगतगंधनहितेरी। जोकेवलपततनमैंतोक्यौंतिलकछापतनतेरी । मनसंभ्रमकछुस मझिपरतनहिंअलगथलगरह्योझूल ॥ नागरिदासनांवदैकैंहरिकरनी दईनमूल ॥ १४ ॥ गोयाआसनावनथेकभी ॥ तोतेकीसीआंखिगई फिरिदेखतदेखतअभी ॥ किसीकाकछुचलतानाहींहिकमतथकीस भी ॥ नागरीदासगलतअसनाईगायबहुईजभी ॥ १५ ॥ कहांवेसु तनातीहयहाथी ॥ चलेनिसांनबजाइअकेलेतहांकोऊसंगनसाथी ॥ रहेदासदासीसुखजोवतकरमोडैंसबलोग॥ कालगह्योतवसवहिनछा ड्योधरेरहेसबभोग ॥ जहांतहांनिसदिनविक्रमकौंभट्टथट्टविरद त्ति । सोसबबिसरिलगेएकैंरटरामनामकहैंसत्ति॥ बैठनदेतहुतेमाखी हूंचहुंदिसचंवरसचाल ॥ लयेहाथमैंलट्ठाताकोकूटतमित्रकपाल ॥ सौंधैंभीनौंगातजारिकैंकरिआयेबनढेरी ॥ घरआयेतैंभूलिगयेसब धनिमायाहरितेरी ॥ नागरीदासबिसरियेनांहींयहगतिअतिअसुहा ती ॥ कालव्यालकोकष्टनिवारनभजिहरिजनमसंगाती ॥ १६ ॥ तिन्हैंकोरिकोरिकधिरकार । रागदोषमतसरितातजिकैंमृतिजानि मानीनहिंहार ॥ सुन्योभागवतभक्तकहावतकछुइकरीतिकरीवी ॥ पैंसुखसाररुसतसंगतिफलआइनांहिगरीबी ॥ हियेअभिमानगोपध नगाडयोताकोसवैंबिकार । जोसचुपयोचहैंतोउरसौंदुरधनदेहनि

कार ॥ साधुबचनसुनिदीनभयेबिनक्यौंहुंनजरिनमिटैंगी ॥ नागरीदासबहुतपछितैंहोदुखमैंदेहपिटैंगी ॥ १७॥ जानतप्रीतिस्वादहरिराई ॥ रसकनिमनिहितरसआस्वादीमोहनसबसुखदाई ॥ जावनकीयैंजग्यजाचंग्यासुरमुनिमतितरसाई ॥ जिंहिंजग्यपातिननिकीसामग्रीमांगिमांगिकैंपाई॥कर्नद्रौनदुर्जोधनकैंगृहभोजनबिधिनसुहाई॥खाएबकुलहिंबिदुरबधूकरलहीस्वादसरसाई॥ बिप्रसुदामातंदुलल्यायोसजनसुहृदगुरभाई ॥ छप्पनभोगतजितिनकौंजेयैंकारिकरिबहुतबडाई ॥ अर्पतरमाबिबिधिबिंजनबिचद्दारावतठकुराई॥ तदपिमधुरताब्रजगोरसकीभूलतनांहिभुलाई। गोपीबरजितरजिताडततऊचोरिचोरिदधिखाई ॥ वारसकीफिरिसुधिआईजबअंखियांजलभरिआई ॥ परमप्रीतिआधीननंदसुतजानतप्रेमसगाई। नागरीदासकोऊक्यौंबिसरैंऐसोकुंवरकन्हाई ॥ १८ ॥ जिंहिंजनभक्तसुधारसपीयो ॥ सुर्गराजसुखगेहकाजमैंफिरमनकबहुंनदीयो ॥ बेदकलपतरुफलमाधवतजिजगविषफलनहिछीयो । नागरऔरसंगनाहिराचैंसाधसंगतिनकियो॥१९॥ जबलगहीजगकोसुखपागैं॥तबलगाजियहरिभगतसंगकोरंगनहींकछुलागैं ॥ गृहब्यौहारखेलगुडियनकोजबलगहींजियभावैं ॥ तबनवजोबनव्हैंमदरामयतियपियकंठलगावैं ॥ तिनचाख्योअतिस्वादअलौकिकस्यामममधुररसपाक । नागरीदासलगतजाकौंफिरऔरबस्तुसबआक ॥ २० ॥ हरिबिमुखनकेसंगतैंभलीसउचकीठौर। उनपैंकलहकलेसबढतहैंवहांनिकोऊऔर ॥ अतिएकंतस्थलआनंदमयगुणातीतनिरद्वंद । तिंहठांव्हैंनिश्चिंतबैठियेंपटनासामुखमुंद॥ तनमनकोदुखदूरहोयजहांपरमचैनसरसइयैं। ना

पैंभोजनमांगिलयोबलबीर ॥ कैंसैंढाकनिकीछहियांमिलिछाकखा तत्राभीर । कैंसैंसुंदरहस्तकंवलपरसातद्यौसगिरिधारचो ॥ कैंसैं बारबारब्रजजनकोबहोबिधिकष्टनिवारचो ॥ कैंसैंसरदनिसाबन कीनैंरासकेलिआनंद ॥ कैंसैंकामबिजैकरिलीनौंथकितरह्योनभ चंद ॥ कैंसैंघोखनिवासनिकौंहरिसुखदीनौंबहोभांत । नागरीदा सकहोसोनिसदिनजातहैंआयुबिहांत ॥ २७ ॥ मेरैयेईबेदब्या स ॥ श्रीहरिबंसरुव्यासगदाधरपरमानंदनंददास ॥ श्रीहरिदास बिहारनिदासबिठ्ठलबिपुलसुजांन ॥ रामदासनाभादामोदरअ लिभगवानसखीभगवान ॥ चतुर्भुजदासदासमेहापुनिश्रीभटच तुरबिहारी ॥ प्रीतमरसिकरसिकबल्लभअरुध्रुवरसरीतिउचारी ॥ तुलसीदासमीरांमाधवअरुउभैंनागरीदास । आसकरननरसींवृंदाव नकविमाधुरीप्रकास ॥ कृष्णदाससूरगोविंदअरुकुंभनछीतुस्वामि अनुरक्ता । श्रुतिपुरानमेरैंइनकेपदहौंश्रोताएवक्ता ॥ ताजिइनके पदअर्थसुनैंकोनानामतिबिभचार ॥ मूलसासत्रासिधक्यौंहेरैंपदछा डिअमृतफलसार ॥ रसनाश्रवननिमैंइनकेपदरहोहियमैंनिदूखन ॥ नागरियाइनकीपदरजसोहोहुभालमोभूखन ॥ २८ ॥ होतोनहीं भागवतपुरान ॥ तोइहिंतनफूटेअरघासेवृथाभयेहेकान ॥ सबभ्रम तेबिनपायेमारगबीचजगतढमढेर ॥ अंधडुंडज्यौंहैंफिरतेकरिमुं डमुंडभटभेर ॥ भक्तिसंगसुखबिननरसगरेबातश्रावकेजंत्र ॥ नाग रीदाससारसबोंपरसाधुभागवतमंत्र ॥ २९ ॥ होहरिनींबहुफूलचुके॥ मत्तभंवरनवकुसमगंधपरनिसदिनझूलचुके । रितुबसंतबैशाखवि तीत्योतमधौंभूलचुके ॥ नागरीदासकुसंगतकेनहिंमिटिदुखसूलचु

के ॥ ३० ॥ कलिकेजनमबिगारतलोग ॥ मूरखमहादोउवेखोव
तहरिकीभक्तिबिखैंसुखभोग ॥ कलहकलेसकरतदिनबितवताबिवि
धिबिपतिआस्वादी । ऐसैंहींसबआयुबितावतटेवतजतनहिंबादी ॥
दासीदासकुटंबमित्रसबयाहीदुखरसपगे । नागरकोउनांहिसमझा
वतसबस्वारथकेसगे ॥ ३१ ॥ कलिमैंतेक्यौंभक्तकहावैं । वृद्ध
होयजेबिमुखसंगफिरिदेसदेसउठिधावैं ॥ होतनिरादरदुखनाहिमा
नतनींवदेतअतिऔंडी ॥ चेततनहींबजतसिरऊपरयहघरियालका
लकीडौंडी ॥ बिनुजमुनापरसैंक्यौंउतरतस्वेतकचनाबिचधूर ।
नागरस्यामबैठिनहिसुमरातब्रजकोजीवनिमूर ॥ ३२ ॥ कलिकेलो
गकुमंत्रीसिगरे ॥ देतकुमंत्रबिगारतमनकौंआपुनमनकेबिगरे ॥ ए
कपेटकैंकाजहिखोवतदोऊलोकसुखअनुचर ॥ निजस्वामीकौंलियैं
फिरतहैंज्यौंगाहिघरघरबनचर ॥ दुखअपमानकोंव्यापतनाहींलोभी
लोभसुखारे ॥ पापभारसबवाकौंलागतदासरहतहैंन्यारे ॥ चतुरथ
आश्रमआयदेतफिरिलाखबरसकीनींव ॥ नागरीदासजानिउनसब
कौंमहापापकीसींव ॥ ३३ ॥ कदलीबेरढिगपछितात ॥ पवनपर
सतहलतत्यौंत्यौंगडतकंटकगात ॥ पीरबिनुवहहरीनितयहनीरबिनु
कुम्हिलात ॥ संगनागरतजैंताकोहोयजवकुसरात ॥ ३४ ॥ ते
क्यौंहंसतहांसुखपावैं ॥ स्वेतकासकोबिमलसरोवरजांनिजांनिकैंआ
वैं ॥ जहांकंवलजलमुक्तानांहीतप्रदमितहांपावैं । नागरअपनीभू
लकौंनकौंकहिकहिकैंपछितावैं ॥ ३५ ॥ भयोदुखीगजदौंसौंद
ह्यो ॥ दौरिचल्योमुरधरदिसमूरखनीरनकहूंलह्यो ॥ छाडिनृवतजल
परयोप्रवर्त्तथलदुखनहिंजातसह्यो ॥ नागरआयस्यामसलितातटभ

रिआनंदरह्यो ॥ ३६ ॥ जिनकौंझूठलग्योसंसार ॥ जगसौंनिसपृह सतसंगतिकरिलेतसदासुखसार ॥ तेकलेसमैंपरतनकबहूंसारअसार बिचार ॥ नागरीदासकुसंगतिकरिकैंकौनभयोनहिख्वार ॥ ३७ ॥ सदासुखहरिभक्तनिकैंमांहि ॥ दशरथसुतअरुनंदनंदनकीबातनिसमैं बितांहिं ॥ बिबिधिकलेशरुकलहकलपनातिनमैंउपजतनांहिं॥ नागरियाब्रह्मानंदहूतैंभजनानंदअधिकांहिं ॥ ३८ ॥ जिनकैंनहींसतसंगतिचाह॥ तिनकैंउरकबहूंमिटिहैंनहिंमहादुसहदुखदाह॥बिनसाधनकीकृपाकहोक्यौंकलिमैंहोतनिवाह ॥ नागरीदासभक्तबचननिसुनिभयेचोरतैंसाह ॥ ३९ ॥ बिनसतसंगमतिबेढंग॥ फिरतडांवाडोलमनज्यौंबिनलगामतुरंग ॥ कबहूगिरगिरउठतअतिश्रमचढतक्रोधउतंग । कबहुमूरखभ्रमतआतुरउपजअंगअनंग ॥ कहातपव्रतदानसंजमकहाह्नायेगंग॥ दासनागरबिनांसाधनसकलसाधनभंग॥ ४० ॥ अबतोबहोतबिपतमैंभोगी॥ अतिपिटवायोमायापैंतैंकृपादृष्टिकबहोगी ॥ बिबिधिकुगतिमैंनाच्योकूद्योकेतादुखाशिरझेल्यो॥काहूविधिमैंसचुनहिंपायोफाफडफोंदाखेल्यो ॥ खैंचाखैंचीजनमबिगारयोजनजनकोमनराखत॥नागरियाहरिसरनातिहारीवृंदाबनअभिलाषत ४१ करियतुवृथामनकीदौर॥ जियचहतइतऔरहीउतहोतऔरकोऔर॥ छीनआयुशहोतनिततनकालव्यालकोकौर ॥ दासनागरव्हैंनिवृतवसवासतीरथठौर ॥४२॥ मनयहनोंचसंगीनींच ॥ उच्चपदकौंचढतनाहींजदापिनियरीमींच ॥ नवनपापकौंगवनकरिहींज्यौंबनीरउलैंड । प्रबलअतिनाहिंरुकतरोकैंग्यानधूरकामेंड ॥ मिलतजाहीरंग आपुनहोतवाहीरंग । देहुनागरिदासकौंयातैंप्रभूसतसंग ॥ ४३ ॥

जानरकौंप्रभूयहधनलीनौं ॥ ताकौंनिसदिनजीवतहीतैंनरकमिल
ककरिदीनौं ॥ जनमकरमउत्सवलीलागुनकथाकीरतनहौंन ॥ झा
लरझांझमृदंगतालधुनिसंतसमागमभौंन ॥ इतनीवस्तुगईजापैंतैंवा
पैंरह्योनक्यौंहीं ॥ नागरकेवलदुखसहिवेकोंदेहराहिगईयौंहीं ॥४४॥
रागदेवगंधारतिताल ॥ नरकोजनमविगारतआसा ॥ स्वारथदाव
अठारैंचहियतुतीनपरतबिचपासा ॥ यहजगहैंचौपरकीबाजीअपने
वसनहिंख्याल॥ नागरीदासकरोसतसंगतछाडजगतजंजाल॥४५॥
अबजियकाहेकौंदुखभोवैं । कवहुकहरखसोककबहूव्हैंकबहूंहंसैंक
बहुरोवैं ॥ याजगमेंहैंयहीतमासाऐसैंहीनितहोवैं ॥ नागरीदासभ
जहुनंदनंदनजन्मवृथामतखोवैं॥४६॥गुपतिअतिमनमैंलागीलाय॥
बिबिधिकामनांउठतचंडझरआसापवनसहाय ॥ ग्यानबैरागहिब
रतदेखितनभक्तिहुरहीछिपाय ॥ नागरलोगबुझावतधोंसौंभोगतैं
नांहिबुझाय ॥ ४७ ॥ पद ॥ यहमनमूढमहाअहंकारी ॥ हारतनां
हिआपनैंहठसठअतिकुटेवटहंगारी ॥ हरिसमंधसुखकरिलैवेकोयह
नरतनसुखकारी ॥ ताकौंफिरतभ्रमायेंदिसादिसतजव्रजकुंजविहा
री ॥ इहींदेहभुगतावतअतिदुखपर्मपापअधिकारी ॥ आंधेलोग
वतावतमारगामिलमिलमहाविकारी ॥ अवसतसंगमित्रसजननमें
रहूंसदाजमुनातटचारी ॥ अपघरतैंपरघरमतडारोनागरसरनतिहा
री॥४८॥पद॥सूझतनहीआपनीआव॥लाखबरसकीनांवदेतइतडोल
तकालविलोकतदाव ॥ एतेपरक्यौंप्रियसजननसौंफिराफिरकरत
वियोग॥ अंतावियोगएकादिनव्हैहौंउपजविघ्नतनरोग ॥ यातैंक्यौं
सुखसंगततजियेलजियेनहींजगतसौं । नागरीदासवासवृंदावनव्हैं

हौसुखीभगतसौं ॥ ४९ ॥ पदः ॥ वृद्धहोयकैंधनउपजावत ॥ वही कहावतकरतमूढमतिगंगाकीराहमदारहिगावत ॥ जोधनउपज्यो तोवकहाकोकरिहैंलखमीभोग। घटतरूपबलदेहादिनाहिदिनबढत जुरातनरोग ॥ नागरियाबसियैंबृंदाबनबितयेबरसपचास ॥ हरिउच्छबलीलासुखलीजैंकथाकीरतनरास ॥ ५० ॥ पदः ॥ पापसर्पीट तजनमगयो ॥ चिततैंथकिबिश्रामनलीनोअधिकअधिकदुखभयो॥ ज्यौंज्यौंतनयहजीरनव्हैंहींमनव्हैंनयोनयो ॥ नागरीदासबसोवृंदा वननितसुखरहैंछयो ॥ ५१ ॥ पदः ॥ सुनियोकहतसबनिहौंटेरैं॥ यहविधिनाकोप्रगटचूकहैंद्वैमनकियेनमेरैं ॥ एकैंमनकौंसौंपिराखि तोसाधनगृहव्यौहार ॥ मनइकसौंहरिभक्तिहिकरतोजगदुखसबनि रवार॥नागरीदासएकमनतैंकहिंक्यौंबनिहैंद्वैजोग॥ बिबधविपतको रोगइतैंउतहरिरसलीलाभोग ॥ ५२ ॥ जोमेरैंतनहोतेदोय ॥ मैंकाहूतैंकछूनाहिंकहतोमोतैंकछुकहतोनहिकोय ॥ एकजुतनहरिविमुख निकेसंगरहतोदेसविदेस॥ बिबिधभांतकेजगदुखसुखजहांनहींभक्त लवलेस॥एकजुतनसतसंगरंगरांगिरहतोअतिसुखपूर । जनमसफल करलेतोब्रजबसिजहांब्रजजीवनमूर॥ द्वैतनबिनद्वैकाजनव्हैंहींआयु सछिनछिनछीजैं । नागरीदासएकतनतैंअबकहोकहाकरिलीजैं ॥ ॥ ५३ ॥ पदः ॥ भक्तबिननरछकडाकेबैल ॥ लोगबडाईदैंदैंहांकतचलतदुखतव्हैंगैल ॥ कारजद्रव्याविनाबलघसिैंमनसौंसकैंन हार ॥ लीनौंस्वारथसाधसबनिमिलयाकैंसिरदैंभार ॥ भटकतहीं मरजायवृषभमतनथेजगतकीलाज । नागरीदासबैठिबृंदाबनक रैंनअपनौंकाज ॥ ५४ ॥ हौंहरिथाक्योबिसवाबीसौं ॥

पीसतपीसतजनमगयोअबर्पासेकोकहापीसौं ॥ हारचोवहोतमजू रीकरिकरियहदुखअवैंनसइयैं ॥ नागरीस्यामकृपाकरिकैंमोहिवृंदा बिपुनवसइयैं ॥ ५५ ॥ मेरोमनयहविगरपरचो ॥ व्हैंगयोदहीप्रीत जांवनतैंदूधनजातकरचो ॥ नहिंऊगतनहिंकाजऔरहूजैसैंनाजज रचो । नागरियामनकामनआवतप्रेमबायबिचरचो ॥ ५६ ॥ मोप रकाहेहरिअनखाये ॥ भक्तसुधासागरतैंटारचोमृगमरीचजललग्या ये ॥ स्वादबूंदघनमेटध्रुवांकेबादरभलेदिखाये ॥ रसिकमंडली न्यारीकरपापिष्टीलोगमिलाये ॥ अपनीघांतनमननहिंराख्योजित तितभूलभ्रमाये॥ नागरनिजव्रजभवनदुरायोऊवटबाटचलाये५७॥ अबहमहिंहमारीसमझपरी । नहिंवैराग्रप्रीतहरिसौंनाहिमोमतिझूठ भरी ॥ कंचनजानकसोटीलायोपीतरव्हैंनिकरी ॥ नागरीदासनाव कैंनातैंकीजेकृपाहरी ॥ ५८ ॥ देखोअसमंजसअबहोवत ॥ त नकलग्योगंगाजलतनकैंसोमदिरासौंधोवत ॥ अमृतचाखिफेरनहिं चाहतगुरखैंवेकौंरोवत ॥ तुलसीपेडउखारभक्तघरबीजआककेबो वत ॥ महावृद्धवयव्याहकरननिजआसामैंदिनखोवत ॥ नागरआ पकहायपरेहठपोतसूतरीपोवत ॥५९॥ अबदिनखोवैंकौनअलेखैं॥ बैसीसमैंदेखिफिरऐसीकौनसमैंकोदेखैं ॥ इहिंसमयेकीजेजेबातैंति नपैंमननलुभाय ॥ नागरीदाससिंघभूखोरहैतऊघासनहिंखाय॥६० ॥ पदः ॥ धीरपुरसजाकौंसबकहैं ॥ कबहुहोतअधीरनाहिचितबि विधविपतसिरसहैं ॥ भक्तिकरनिमैंअंतरपरतैंधीरजधरैंबिचार॥ना गरियाऐसेधीरजकौंकोरकोरधिरकार ॥ ६१ ॥ हमकोंकियेकुसंग तिख्वार ॥ वृंदावननियरैंव्हैंनिकसेझांकानिंदयौनद्वार ॥ हरिचरचा

कोउकहतसुनतनहिंओरबातबिसतार ॥ प्रभुसमंधसुखसाधनकी चितभूलगयेउनिहार ॥ दितसुतसेनरकलहकलपतरुदेतहैंदुखअनपार ॥ इनतैंलेहुछुडायमोहिअबनागरनंदकुमार ॥ ६२ ॥ मेरैंह्रारसंतफिरिजावैं ॥ दियौचहतदरसनकरुनाकरिआवनहूनहिपावैं ॥ बधकबावरीथोरानिकौंआनंदितव्हैव्हैल्यावैं । क्यौंभूलैंनहिंनागरहरिकीमायातिन्हैंभुलावैं ॥ ६३ ॥ दर्पनदेखतदेखतनाहीं ॥ बालापनफिरिप्रगटिस्यामकचबहुरस्वेतव्हैंजाहीं ॥ तीनरूपयामुखकेपलटेनहींअग्यानताछूटी ॥ नियरैंआवतमृत्युनसूझतआंखैंहियकीफूटी ॥ कृष्णभक्तिसुखलेतनअजहूंबृद्धिदेहदुखरासी ॥ नागरियासोईनरनिश्चयजीवतनर्कनिवासी ॥ ६४ ॥ अबकैंसैंयेद्यौसभरैं ॥ आठपहरमैंबृंदाबनकीकबहुनकोऊबातकरैं ॥ नंदनंदनगोपीजनबल्लभनांवनमेरेश्रवनपरैं । नागरीदासबिनासतसंगतकोयामनकीपीरहरैं ॥ ६५ ॥ जहांकोजीवजहांसुखपावैं ॥ चंदनकौकीराथोहरमैंकैसैंमनाविरमावैं ॥ जलतैंमीनपरन्योमदरामैंकिहिंविधिजीवजिवावैं । नागरीदासकुसंगतमैंसंतसंगीनाहिंठहरावैं ॥ ६६ ॥ अबैंयेयौंलागेदिनजान ॥ मानौंकबहूहुतीनांहिनैंवासुखसौंपहिचान ॥ हरिअरचाचरचाकबहूनहिंनहींकथाबंधान ॥ जनमकरमहारिउत्सवनाहींरासरंगकलगान ॥ बिमुखअनन्यनिकटरहैंनिसदिनमहादुष्टदुखखान । येदुखतरैंकृपाकरिहैंजबनागरस्यामसुजान ॥ ६७ ॥ अबतोयहीबातमनमानीं । छाडौंनहींस्यामस्यामाकीवृंदाबनरजधानी ॥ भ्रम्योवहुतलघुधामविलोकतछिनभंगुरदुखदानी । सर्बोपरआनंदअखंडितसोजियठौरसुहानी ॥ हरिभक्तनिमैंस्तुतिव्हैही

निंदामुखअभिमानी । नागरियानागरकरगहिहैंरहिहैंजगतकहानी ॥ ६८ ॥ अबतोजोईमित्रकहावैं ॥ जोश्रीबृंदावनवसिवेकी निश्चयबातदृढावैं ॥ याबिनकहैंसुसत्रुहमारोसोजियकबहुनभावैं ॥ कहैंऔरकैंऔसरचूकैंसोनागरपछितावैं॥६०॥जगमैंबुद्धहीनसुखपावैं॥ वहिकाहूकैंनिकटनजावैंवापैंकोउनआवैं॥ताकौंदुखव्यापैंनहिंकबहूकेवलउदरभरावैं ॥ नागरभक्तिबिनाचातुरजेदुखमैंजनमबितावैं ७०॥हौंहारिमारकंडारिषिनाहीं॥मायाभलीदिखाईमोकूंझकझोरयोजगमांहीं ॥ अतिकलिकलहधूपतनतचहींजांऊंजहांजहांहीं ॥नागरियाकौंदेहुकृपाकरिबृंदाबनकीछांहीं ॥ ७१ ॥ हमारोसांचोहितूवहैं । गांधारीकेप्रतिसौंजैसीबिदुरकहीसुकहैं ॥ सोईसत्रुजोमोहिवहावैंआपहूसंगबहैं । नागरियाकौंप्यारोसोसंगबृंदाविपुनरहैं॥७२॥ अवहरिमेटोदसातृसंक ॥ अधबिचपरयोमोहिलैंदीजैंनिजसाधनकैंअंक ॥ कीजैंसरलकृपानिधिस्वामीजोमेरीमतिबंक ॥ नागरकृपाप्रसाददेहुकोचाबैंविपतकरंक ॥ ७३ ॥ अबहौंदिनदिनदुखनहिसहिहौं ॥ कैंवचबनतैंबेगानिकासिकैंबृंदाबनमैंरहिहौं ॥ यहविनतीमेरीहरितुमविनऔरकौनसौंकहिहौं । नागरीदासनांवगर्वतैंफैंटतिहारीगहिहौं ॥ ७३ ॥ आयेहमबृंदाबनरसभोगी ॥ जासुखभोगहिकरनसकतजेजगतविपतकेरोगी ॥ रासविलासरुकथाकीर्तनहरिउत्सवआनंद ॥ निसदिनमंगलमईसमयजहांनागरियाव्रजचंद ७४॥ हमयहकबहूसुनीनहींआगैं ॥ खैंचतस्यामआपनीदिसनरपीछेपीछेभागैं ॥ मानुसरोवरचाहतनाहींसांभरसरअनुरागैं ॥ नागरभवनबुरेतजिदेखौंरंगमहलकोजागैं ॥ ७५ ॥ तजिउपाधिजेहरिपदभज

ते। वेनृपकहाहुतेबावरेमनिमयकंचनकेगृहतजते ॥ अवछाडतन हिंकलहमूलघरभक्तिविमुखलोगनिसौंलजते ॥ नागरियानरमृत्युखिलौनारहतनाहिंदुखसेनांसजते ॥ ७६ ॥ सबनरपगेउपद्रवमांहीं ॥ कृष्णभक्तिकीइच्छाकैसीबिषैंभोगहूनांहीं ॥ कलहबिनाकछुऔरुनभावैंलरैंदोखिपरछांहीं ॥ नागरतापबिरुद्धनहोंइकवृंदाविपनजहांहीं ॥ ७७ ॥ कृष्णकृपाआयेदिनभले ॥ बहुतैंभ्रम्यौंआजलोंहौंअबवृंदाबनदिसचरनचले ॥ दुरजनटरेसजनमिलिहैंजेनंदनंदनकेंरंगरले ॥ भूखेहुतेश्रवनमनलोचनतेनागररसपोखपले ॥७८॥ हमारीअबसबबनीभलीहैं ॥ कुंजमहलकीटहलदईमोहिजहांनितिरंगरलीहैं ॥ साहिबस्यामास्यामउसीलीललितालतिअलीहैं ॥ नागरियपैंकृपाकरीअतिश्रीवृषभांनलली हैं ॥७९॥ कोई भूल्योपंथबतावैं॥ जितजाऊंतितसिरभटभेरतऊबटचल्योनजावैं ॥ कबहुकगिरतउठतकबहुकहटिछिनहूंसुखनबिहावैं ॥ नागरघरवृंदाबनकीकोउकरगहिडगरचलावैं ॥ ८० ॥ हरिजूअजुगतजुगतकरैंगे ॥ परबतऊपरबहलकाचकीनीकैंलेनिकरैंगे ॥ गहिरैंजलपाषाननावबिचआछीभांतितरैंगे ॥ मैंनतुरंगचढेपावकबिचनांहींपघरपरैंगे ॥ याहूतैंअसमंजसहोकिनप्रभुदृढकरपकरैंगे ॥ नागरसबआधीनकृपाकेंहमइनडरनडरैंगे ॥ ८१ ॥ हमारीचरचामौंनमई ॥ जिनकीअंखियांबहोश्रुतहीतिनकहतहीसमझलई ॥ फिरिनाहिंकियैंप्रण्णचितवनिहासीचितवनिरीझदई ॥ नागरकहतकहतनहिआवैंहैंजीरननितिनई ॥ ८२ ॥ येसिवहीसौंसंगनिभै ॥ वृषभसिंघसर्पअरुकेकीमूसौंहूरहतअभै॥ बिनभगवानसंगअसमंजसऔ

रतैंनांहिबनैं ॥ नागरिदासकुसंगततैंनितिबढतनभक्तिमनैं ॥ ८३ ॥ अमलपदकमलचारसुचार ॥ अरुननीलसुबरनमिलिमनहरनिभये छबिजार ॥ मुखरमनिमंजीरमनमथकरतप्रगटिचरित्र ॥ गउरजावकाचित्रचित्रेचतुरमोहनमित्र॥नखचंद्रिकाप्रतिबिंबप्रसरतकुंजकौतुकभूमि ॥ दासनागरमनमधुपतहांरहोझुकिझुकिझूमि ॥ ८४ ॥ तुमबिनकौंनसहायकरैं ॥ जानतप्रीतरीतरसिकनिमनिकोऊकहाउचरैं ॥ पद्मावतिजयदेवकेस्वामीयहमनबृथाडरैं ॥ नागरसुखसागरपदध्यायेकोदुखजरनिजरैं ॥ ८५ ॥ अबतोकृपाकरोगोपाल ॥ दीनबंधुकरुनानिधिस्वामीअंतरपरमकृपाल ॥ जगआसाविषफलमतख्वावोप्यावोभक्तिरसाल ॥ नागरियापरदयाकरोकिनजनदुखहरनिदयाल ॥ ८६ ॥ अबतोकृपाकरोगिरधारी ॥ अपनीबांहछांहतररारखोदेखोदसाहमारी ॥ जुरेघोरकलिकलहतिमरघनभीतलगतहैंभारी ॥ नागरसुखसंगउनकोदीजैंजिनकेप्रीततिहारी ॥ ८७ ॥ अबतोकरियेकृपाबिहारी ॥ जगमुंजारनतैंलैरापोवेजहांकुंजतिहारी ॥ सजनसमाजसहिततिंहिठांरसभक्तिकरैंसुखकारी ॥ नागरीदासनांवदेंकंकिनदेषोदसाहमारी ॥ ८८ ॥ अबतोकृपाकरोश्रीराधा ॥ वृंदाबिपुनबसौंश्रीस्वामिनिछाडिजगतकीबाधा ॥ तीनलोकगावतवावनकीलीलाललितअगाधा ॥ नागरियापैंतनकढरैंतैंहोयसहजसुखसाधा ॥ ८९ ॥ अवतोकृपाकरोललितादिअली ॥ तुमबिनऔरनकोऊसाधनसबतैंतिहारीसरनबली ॥ मोहिदिखावहुवृंदाबनकीवेनवकुंजगली । होतहैंनागरियानागरकीजहांनितिरंगरली ॥ ९० ॥ अवतोकृपाकरोव्रजबासी॥ जुगजुगमाधिहोसखास्यामकेलीलाललि

तउपासी ॥ कामनओरपुनीतठौरसौंगंगगयाकहाकासी ॥ नागरियापैंकरुणाकरिकैंकरियैंधोषनिवासी ॥ ९१ ॥ अबतोकृपाकरोसबसंत ॥ यातनमनसौंभ्रमतभ्रमतहीव्हैंगयेदिवसअनंत ॥ घटतबुद्धबलदेहदिनहिदिनतृष्णाकोनहिअंत ॥ नागरियाअबउहांबसइयेजिहिठांनित्यबसंत ॥ ९२॥ अबतोकृपाकरोश्रीबृंदा ॥ हेदेवीतुवबिपनभवनकीउल्हंगिनजाउंश्रलिंदा ॥ बैष्णवसहिततहांकोनित्यरसपानकरौंसुखकारी ॥ नागरियापैंकृपाकीजियेकृष्णकमलपदप्यारी ॥ ९३ ॥ अबतोकृपाकरोश्रीजमना॥ दरसपरसतटदेहुबासबनतृबिधितापतनदमना ॥ होदातारसभक्तिदानकीसलिताऔरुतुसमना ॥ नागरियाकीमेटदेहुजियजगतृष्णाकीभ्रमना ॥ ९४ ॥ बहुरिपरेवादिसकौंपांव ॥ परममनोहरजमुनातटपरिजादिसमेरोगांव ॥ स्वामीतहांहमारेमोहनस्वामिनिराधानांव ॥ नागरह्यांबहोचरनधारिउहांपहुंचपंगुव्हैजांव ॥ ९५ ॥ हमसतसंगतिबहुतलजाई॥ वृथागईसवबातआजुलौंजोकछुसुनीसुनाई ॥ भक्तिरीतिअनुसरतनहींमनकरतजक्तमनभाई ॥ अजहुंनतजतउपाधिअवस्थाचतुर्थाश्रमआई ॥ श्रीबृंदाबनबासकरनकीजातहैंसमैंबिहाई ॥ अबतोकृपाकरोनागरसुखसागरकुंवरकन्हाई ॥ ९६ ॥ तजतनहीमतिकूदाफांदी ॥ कैसैंपतिब्रतकरैंस्यामसौंज्योंवाबिलल्लीबांदी ॥ मायाभांगभसूकितरफरतहोतनहींमतिमांदी ॥ नागरसाधवचनमानैंबिनजमकूटैंगौचांदी॥९७॥ जबतैंमिटचोरंगीलोसंग । घटिचितचटकरूभयोभांवरोज्यौंअटानकोरंग ॥ मंदजुरैनबिनादीपकदिनज्यौंअनंगबिनअंग॥ नागरियापैंकृपाकरोहरिहौंननदेहुकुढंग ॥ ९८ ॥ इत

नीहैंसबठौरहमारी ॥ वृंदावनजमुनागोवर्द्धनराधाकुंडसुखकारी ॥ नंदगांवबरसांनौहैंजहांरहतस्यामकीप्यारी ॥ इन्हैंछांडिनहिंजाउंअनतकहुंयहनागरजियधारी ॥ ९९ ॥ हमतोबरसांनेकेबासी ॥ गहवरगिरजहांखोरसांकरीललितठौरसुखरासी ॥ कुंडभरेजलबनउपवनछबिकुंजकुटीअनयासी । कुंवरिलडीकीदेतदुहाईसबसुखसैलनिवासी ॥ नरनारिपसुपंछीइहिंठांलीलाललितउपासी ॥ फिरतलाडिलीकैसंगनितिनटनागरकरतखवासी ॥ १०० ॥ दुहुंभांतिनकौमैंफलपायो ॥ पापकियेतातैंबिमुखनिसंगदेसदेसभटकायो ॥ मिटिसतसंगभक्तिसुखकोऊहरिउत्सवनदिखायो ॥ तुच्छकामनाहितकुसंगवसझूठैंलोभलुभायो ॥ कौनपुन्यअबवृंदाबनवरसांनैंसुबसबसायो । आनंदनिधिव्रजअनन्यमंडलीउरलगायअपनायो ॥ सुनिबेहूकौंदुल्लभसोसबरसबिलासदरसायो ॥ स्यामास्यामदासनागरकोकियोमनोरथभायो ॥ १०१ ॥ चकसोलीकेचनाचुराये ॥ गारीदैंदौरीरखवारनिग्वारनिसहितगुपालभजाये ॥ हरेबूंटदाबैंबगलनिमैंस्वासभरेबनगहवरआये ॥ कहतआतुरेबोललोलदृगहसतहसतसबबापचढाये ॥ रेचबातकोउहोराकरिबनकीलीलाललुभाये ॥ नागरियाबैठीछकिहारीछीलछीलनंदलालहिखवाये॥१०२॥ सांचौहितूसुयहीदृढावैं ॥ नितिबिहारठौरनितिनिरषैंवहीकथानितिसुनैंसुनावैं ॥ व्रजबासनिसौंप्रीतिकरैंदृढनिसबासरसुखसमैंबितावैं॥ नागरियाकौंस्वपनैंहूमैंअबव्रजताजिकैंअनतनलैंजावैं ॥ १०३ ॥ नंदवृषभानइकभवनराजैं ॥ भईभटनटौंनकीभीरवृषभानपुरपौरिआतिमत्तगजराजगाजैं ॥ दोउकुलदीपकेकुलहिमंगदभनैंजुरेगनगुनीसंगीतसाजैं ॥

समधीसमधीमिलनिगोपगरईसभाप्रभाआनंदकछुऔरआजैं ॥ गारिगावतसकलमिल्योमहरावनौंकियेघूंघटलियेहियेलाजैं ॥ महलमहलनिचहलपहलमंगलमहाद्वारसहनायनीसानबाजैं॥ बटततहांपानकपूरअरुअरगजागोपकुलकरतसनमानभ्राजैं॥ नागरीदासजहांफिरतउत्सवटहलपरमआनंदछकिचढेछाजैं ॥ १०४॥ हमारीतुमसौंहरिसुधरैंगी ॥ बहुतजनमहमजनमविगारयोअबहूबिगरिपरैंगी॥ प्रीतिरीतिपूरननहिंकैसैंमायाव्याधिटरैंगी॥ नागरियाऊंसुधरैंगीजोअंखियांइताहिंढरैंगी ॥ १०५ ॥ होहरिसरनतिहारीदेहु ॥ बिरदहैंअसरनसरनतिहारोसोबसांचकरिलेहु ॥ मारतमोहिकलिकालदबायेंभरयोतरुनताछोह॥ च्यारसत्रुहैंवाकेसंगीकामक्रोधमदमोह ॥ पांचौंइंद्रीमोबसनाहींमनहूपलटिगयो ॥ लेहुबचायनागरीदासहिंतोपदकमलनयो ॥ १०६ ॥ सांचेसंतहमारेसंगी ॥ औरसबैंस्वारथकेलोभीचंचलमतिबहोरंगी॥ मनकायामायासरितामैंबहतैंआनिउछंगी॥ नागरियाराख्योबृंदाबनजिहिठांललिततृभंगी ॥ १०७ ॥ हमारीसबहीबातसुधारी ॥ कृपाकरीश्रीकुंजबिहारनिअरुश्रीकुंजबिहारी ॥ राख्योअपनेवृंदाबनमैंजिहिठांरूपउजारी ॥ नित्यकेलिआनंदअखंडितरासिकसंगसुखकारी ॥ कलहकलेसनव्यापैंइहिंठांठौरबिस्वतैंन्यारी ॥ नागरीदासहिंजनमजितायोबलिहारीबलिहारी ॥१०८॥ नितिआनंदबृंदाबनमहियां॥ नित्यकेलिकउतगरसलीलानिरखिनिरखिदृगहारतनहियां॥ नित्तहरेद्रुमफूलफलनिजुतजमुनातटअतिसीतलछहियां॥ नितिनउतनसबलोगसनेहीप्रीतिरीतियहऔरनकहियां ॥ नित्तरासनितकथाकीरतनानितिप्रातिगातिमातिरहैंउमहियां॥ नित्तबा

सतहांनागरिदासहिस्यामास्यामदयोगाहिबाहियां १०८ सबमैंउद्धवा ननरजेहैं ॥ तजिकुसंगसतसंगतकैंहिततीरथबासबसेहैं ॥ अपनेघ रहिंसंवारनिकारनबड्यापरमप्रवीन ॥ विषैंभोगकैंलालचअटके करतपुन्यबलछीन ॥ यहकलिकालसौरिकाजरकीकौंनभयेनहिं कारे ॥ नागरियातिनहींजगजीत्योजिनहरिचरणसह्यारे ॥१०९॥ हमतोबृंदावनरसअटके ॥ जबलगिइहिंरसअटकेनांहींतबलगिबहौ विधिभटके ॥ भयेमगनसुखसिंधुमांझह्यांसबतजिकैंजगखटके॥ अबबिलासरसरासहिनिरखतनागरिनागरनटके ॥ ११० ॥ हमारी बांहगहीबृंदावन॥राख्योअपनीसीतलछइयांजगदुखघांमतच्योतन ॥ मोमैंकछूकृपाबलनांहींहौंजानौंअपनैंमन॥नागरीदासनांवहितसौं कारिकृपाकरायोधनधन ॥ १११ ॥ व्रजमैंहोतसुखकीलूट ॥ परम धनआनंदकेभंडारानितरहेखूट ॥ अतुलद्रव्यसकेलिहीनरतउअघा तनकोय ॥ नंदअरुवृषभानघरपारसप्रगटिभयेदोय ॥ लेहुकिनजा पैंलयौजायपरेरिधिकेढेर । दासनागरकहतटेरैंफिरनअैसीबेर११२ देहधरैंकौअबफलपायो॥बीतेबहुतदिवसअसमंजसमायानाचनचा यो ॥ थोहरबनतैंमोहिकाढिथिरबृंदाबिपुनबसायो ॥ कौंनकृपाअ नयासभईहौंनिजमनहेरिहिरायो ॥ निसदिनपहरघरीछिनाछिनप लनितिआनंदरहैंसरसायो ॥ नागरिदासदासव्हैंकैंजोयहांनआयो सोपछितायो ॥ ११३ ॥ बृंदावनसुबसतजमुनातीर ॥ सदारूप कीपैठलगीरहैंकबहुनहोतउछीर ॥ प्रेमनदीसोफिरतरगमगीगालिनि गलिनिबिचभीर। नागरियानितमिलेदेखियतसांवरगउरसरीर११४ अबतोकहिंबेकोनरही॥अपनीबांहछांहतरराख्योबृंदाबिपुनमही ॥

अैसैंहींकारिकृपामेटियैंकामक्रोधसबही॥ नागरियाकीछूटिजायतुही सबहीकहाकही ॥ ११५ ॥ दीजैंप्रेमप्रेमनिधिस्याम॥ गदगदकंठ नैंनजलधारागाऊंगुनअभिराम ॥ याछकिसौंसबछूटिजायज्यौंऔ रसबैंकलमषकेकाम ॥ नागरियातुवरंगरंग्योफिरैंइहिंवृंदावनधा म ॥ ११६ ॥ येव्रजबासीहरिकेप्यारे ॥ येहरिमैंहरिइनमैंनितिप्र तिहोतनहींछिनन्यारे ॥ इंद्रआदिसुरअसुरदवानलबिषधरतैंजुउबा रे ॥ नागरिदासकितेयाव्रजपरपचिपचिगयेबिचारे ॥ ११७ ॥ व्र जराजाकोबेटाचोर॥ घरघरतैंदधिमाखनचोरेचोरेचीराकिसोर॥जुव तिनकेमनधानिकचोरेहासिचितवनदृगकोर । नागरीदासचुरावैंस बसजोआवैंइहिंओर॥११८॥व्रजकेलोगसबठगमहा॥ आपठगठगके उपासिकअधिककहियेकहा ॥ कनकबीजसीवचनरचनांदेततन कचखाय॥ बावरोव्हैंरहतसोफिरधामधनबिसराय ॥ छाडिकैंरज लुटतरजमैंदीनदीसतअंग॥ औरजगसुखरंगउडिकैंचढतकारोरंग ॥ भूमिठगद्रुमदेसठगयहांठगेस्यामसुजान ॥ राखैंसयानपसोबइनकैं औरकौनसमान ॥ इहांआवतहीपरतदृढप्रेमकीगरपास ॥ भूलिह्यां कोउआइयोमतकहतनागरिदास॥११९॥येवेईहरिकेव्रजवासी ॥ सु बलसुबाहुश्रीदामाआदिकतनघनस्यामउपासी ॥ वहीभूमिबनउ पवनवेईवहिगिरिराजछत्रछबिरासी॥नंदीसुरबरसानैंगोकुलवईठौर सबबिबिधिबिलासी ॥ वहगिरधरहरिदेबबिहारीबामअंगप्यारी चपलासी ॥ एईगायगोपीहैंवेईजुगजुगप्रगटिरहतअनयासी ॥ लीलाकरीवईजेअबलौंसदादेखियतुदृगनिप्रकासो । नागरि दासभेदइनउनमैंजोजानैंसोनर्कनिवासी ॥ १२० ॥ आयोमहा

कलिजुगघोर ॥ धर्मधीरजउडिगयेज्यौंपातपवनझकोर ॥ मिटेमंगललोकलागीहौंनआयुसुमंद ॥ बढीजिततितकलहकर्कसनाहिंनकहूंआनंद ॥ मिटीलक्ष्मीभाग्यसुभसुखमिटयोसबकोभद्र ॥ मिटीसोभासहजसंपतबाढिपरयोदारिद्र ॥ मिटीसजननिसुहृदताईरह्योस्वारथएक॥सुखीकोऊदेखियेनहिंदुखीलोगअनेक॥लेतकलिकलमपदबायेंजाइयेकहांभागि।त्रिविधितापमैंतनतचतलगीदसौंदिसमैंआगि॥दासनागरनहींसीतलधामनिर्भयऔर ॥जहांवृंदाविपुनजमुनाबचैंवाहीठौर ॥१२१॥जयतिगुरुदेवहरिभक्तिदानी ॥ तिनपैंकरिकरुनांलैंकियेतनमनादिव्यहुतेकलिमषनिजेमलिनप्रानी ॥ विमुखमुखरसनारसनाहुतीकठिनकटुताहिकरीमिष्टगोविंदगानी॥ नागरीदासअनयासजिनकीकृपाभयेमदपानीतैंअमृतपानी॥१२२॥ भक्तबिननरथोहरकेडंडा ॥ जरिमरिबेबिनऔरकामनहिंदीसैंअंगप्रचंडा ॥ रौंमरौंममैंकांटेतिनकैंनीरसखंडबिहंडा ॥ केवलउदरभरनिकौंउपजेजैसैंअन्नकेहंडा ॥ तिनपररुपेप्रसिद्धदेखियेजमराजाकेझंडा ॥ नागरीदाससंगउनकोकरैंसोव्हैंभंडसभंडा ॥ १२३ ॥ भक्तबिनहैंसबलोगनिखट्टू ॥ आपसमैंलडबेभिडबेकौंजैसेजंगीटट्टू ॥ नितिउनकीमतिभ्रमतरहतहैंतैसेलोलपलट्टू । नागरियाजगमैंवेउछरतजिंहिंविधिनटकेबट्टू ॥१२४॥ घोपमैंमोखहिंकोउनबूझैं ॥ डारडारद्रुमपातपातमैंपरेचतुर्भुजसूझैं ॥ घरघरटहलकरतहैलषमीछिनाकितहूंनाहिंजाय ॥ व्रजवृंदावनसुखवैभवलषिमुक्तरहीशिरनाय ॥ इहांअधिकवैकुंठहुतैंराजैंव्रजराजअवास ॥ नंदगांवबरसानेकानितिजगमगरह्योप्रकास ॥ हमगोलोकप्रजंतनचाहैंखरिकदेससुखवासी ॥ नागरिया

जहांराधामोहनलीलाललितबिलासी ॥ १२५ ॥ होहरिआछीसमैं सह्मारे ॥ थोरीअवधिजानिजीवनकीअपनेबिरदबिचारे ॥ भवप्रवाहमैंबहेजातहेवहियांपकरिनिकारे ॥ नागरियाराख्योबृंदावनजिहिठांअपनेप्यारे ॥ १२६ ॥ वृंदाबिपुनरसिकरजधानी ॥ राजारसिकबिहारीसुंदरसुंदररसिकबिहारनिरानी ॥ ललितादिकढिगरसिकसहचरीजुगलरूपमदपांनी। रसिकटहलनीवृंदादेवीरचनारुचिररनिकुंजरवानी ॥ जमुनारसिकरासिकद्रुमबेलीरासिकभूमसुखदानी ॥ इहांरसिकचरथिरनागरियारसिकाहिरसिकसवैंगुनगानी ॥ १२७ ॥ कृष्णकृपागुनजातनगायो ॥ मनहुनपरसकारसकैंसोसुखइनहिंदृगनिदिखायो ॥ गृहव्यौहारभुरटकोभारासिरपरसौंउतरायो॥नागरियाकौंश्रीबृंदावनभक्ततक्तबैठायौ॥१२८ कितेदिनबिनबृंदावनखोये ॥ यौंहींवृथागयेतेअबलौंराजसरंगसमोये ॥ छाडिपुलनिफूलनिकीसज्यासूलसरनिपरसोये ॥ भीजेरासिकअनन्यनदरसेबिमुखनिकेमुखजोये ॥ हरिबिहारकीठौररहेनहिंअतिअभाग्यबलबोये ॥ कलहसरायवसायभिटचारीमायारांडविगोये ॥ इकरसह्यांकेसुखतजिकैंव्हांकभूहंसेकभूरोये ॥ कियोनअपनौंकाजपरायेभारसीसपरढोये ॥ पायोनहींआनंदलेसमैंसबैंदेसटकटोये ॥ नागरिदासवसेकुंजनिमैंजबसबविधिसुखभोये ॥ १२९ ॥ व्रजकेलोगहैंमहाकठोर ॥ तनकनपीरपराईतिनकौमैंदेखेटकटोर ॥ अपनैंहींस्वारथकैंकारनडोलतहैंनिसभोर॥ नागरसुखलैबेमैंलोभीदैवेमैंझकझोर ॥ १३० ॥ यहव्रजनितप्रतिसुबसबसो ॥ नंदसुवनआनंदलीलाधनव्रजबासीबिलसो ॥ मंगलमईएक

रसनिबहौअरुबहोविघननसो ॥ नागरीदासदासनिसबासरगावोह रषिहसो ॥ १३१ ॥ मोहनकृपाकटाक्षनिहारैंगे ॥ मेरेओगुनसबैं विसारिकैंअपनेंबिरदबिचारैंगे ॥ बृंदाबिपुनवासदृढदैंकैंअबदुखदूर निवारैंगे ॥ नागरिदासनांवकैंनातैंबिगरीबातसुधारैंगे ॥ १३२ ॥ बिनवृंदावनयहरितुबुरी ॥ बादरलगतधुवांसेनैंननिचपलाचमांकि चुभैंज्यौंछुरी ॥ मोरसोरचहुंओरनिव्हैंमनुरिपुसेनाकेहींसततुरी ॥ नागरियातुलसीबनबाहिरपावकसीपावसझुकिझुरी ॥ १३३ ॥ ह मतोनकलभक्तिकील्याए ॥ कबहुनसांचीभक्तिकरीमनइंद्रिनिहाथ बिकाए ॥ कपटचतुरईबेषदेखिकैंसंतमहंतलुभाए ॥ बांनांधारीब धकनिपैंज्यौंमानसहंसबंधाए ॥ स्वांगधरैंहूंसबफलप्राप्तभक्तिम हातमजातनगाए ॥ नागरियानकलीकौंहरिप्रियवृंदाबिपुनबसाए॥ ॥ १३४ ॥ हमतोहैंयारसकेभोगी ॥ जोमाधांतवोषमैंप्रगटतताहिन जानतजोगी ॥ उज्वलरसरसमादिकपीकैंकरतराजविस्तार ॥ क्री डाबलवैरागग्यानगनहोतहैंज्यौंघनसार ॥ मासपांचषटयाआसामैं रहतहैंउरझेप्रान ॥ नागरियाहियसोसुखबरसोस्यामास्यामसुजा न ॥ १३५ ॥ जोसुखलेतसदाव्रजावसी ॥ सोसुखस्वपनैंहूंनाहिंपा वतजेवैकुंठनिवासी ॥ ह्यांघरघरव्हैरह्योखिलौंनांजक्तकहतजाकौंअ बिनासी॥नागरीदासबिश्वतैंन्यारीलगिगइलूटहाथसुखरासी१३६॥ व्रजहीतैंहैंहरिकीसोभा ॥ बैनअधरछबिभयेत्रृभंगीसोवहिव्रजकेबांस कोगोभा ॥ व्रजवनधातविचत्रमनोहरगुंजपुंजअतिसोहैं ॥ व्रजमो रनिकीपंखसीसपरव्रजजुवतीमनमोहैं ॥ व्रजरजनीकीलगतअलकपैं व्रजद्रुमफलउरमाल ॥ व्रजगउगनकैंपाछैंआछैंआवतमदगजचा

ल ॥ बीजलालव्रजचंदसुहायेचहूंऔरव्रजगोप ॥ नागरियापरमेसुरहूकौंव्रजतैंबाढीओप ॥ १३७ ॥ व्रजकोस्वादबैकुंठमैंनाहीं॥ हरिगुनकथाभईजबमीठीव्रजरसमिल्योतबैंतामाही ॥ व्रजरसबिनकहारसिकगावतव्रजबिनरसमरिजातो । व्रजमहिमाकौंवेईजानैंजिनकैंव्रजसौंनातो॥ भवनचतुर्दसमांझधन्यव्रजधन्यधन्ययेव्रजबासी ॥ नागरिदासधन्यहैंसोईजोव्रजरैंनउपासी ॥ १३८ ॥

## अथ व्रजसमंधनाममालापद ॥

व्रजसमऔरकोउनाहिधाम॥ याव्रजसौंपरमेसुरहूकेसुधरेसुंदरनाम॥ कृष्णनांवयहसुन्यौंगर्गतैंकान्हकान्हकहिबोलैं ॥ बालकेलिरसमगनभयेसबआनंदसिंधुकलोलैं ॥ जसुदानंदनदामोदरनवनीतप्रियदधचोर । चीरचोरचितचोरचिकनियांचातुरनवलकिसोर ॥ राधाचंदचकोरसांवरोगोकुलचंददधिदानी ॥ श्रीबृंदावनचंदचतुरचितप्रेमरूपअभिमानी ॥ राधारवनओराधाबल्लभराधाकांतरसाल॥बल्लवसुतगोपीजनबल्लभगिरवरधरछबिजाल॥रासबिहारीरसिकाबिहारीकुंजबिहारीस्याम ॥ बिपनबिहारीबंकबिहारीअटलबिहारीबिहारभिराम॥छैलबिहारीलालबिहारीबनवारीरसकंद ॥ गोपीनाथमदनमोहनपुनबंसीधरगोबिंद ॥व्रजलोचनव्रजरवनमनोहरव्रजउत्सवव्रजनाथ । व्रजजीवनव्रजबल्लभसबकेव्रजकिसोरशुभगाथ ॥व्रजभूषनव्रजमोहनसोहनव्रजनायकव्रजचंद॥ व्रजनागरव्रजछैलछबीलेव्रजवरश्रीनंदनंद ॥ व्रजआनंदव्रजदूलहनितिहीअतिसुंदरव्रजलाल ॥ व्रजगउगनकैंपाछैंआछैंसोहतव्रजगोपाल॥ व्रजसनमंधीनांवलेतए

व्रजकीलीलागावैं । नागरिदासहिमुरलीवारोव्रजकोठाकुरभावैं ॥
॥ १३९ ॥ गिरवैरागसिखरमनचढयो ॥ जगतकिचापिचकीचबी
चतैंअतिअमूंझकैंकढयो ॥ निर्भयभयोतमासोदेखतलरैंभिरैंनरम
रैं ॥ अहंकारव्यौहारअगनमैंवृथामूढमतिजरैं ॥ धामधूमिमाचिरही
रौरअतिसबहिदेखियेदुखी॥ नागरिदासबासबृंदाबनभक्तकरतजेसु
खी ॥ १४० ॥ सांचोमित्रगोपालहैंमेरोपरमापियारो ॥ जिंहिंदीनौं
व्रजवासलैबैकुंठतैंभारो ॥ निजसाधनकोसंगदयोनीकेतैंनीको॥जा
कैंपटतरक्यौंलगैंसुखस्वर्गकोफीको ॥ राजकलहकेमूलकोविषअ
मलछुटायो ॥ नागरियावृंदाविपुनरसअमृतप्यायो ॥ १४१ ॥
जगतकोवावबंदीव्योहार ॥ उपजतखपताछिनकमैंजैसैंबादरपरस
बयार ॥ अलगथलगआधारबिनासबहरिइच्छाअनुसार ॥ नागरि
याजागतसुपनेंकोहैंझूठोबिस्तार ॥ १४२ ॥ दिनादिनसमैंजातहैंबी
तो ॥नरअपनैंगृहकाजकरनसौंकबहुनहोयनचीतो ॥ जोईबिबेकी
शुभकारजकोऔसरयौंबिचारैं॥ नागरसूतसुईमैंपोहतज्यौंदामिन
उजियारैं॥ १४३ ॥देहुप्रेमहरिपरमउदार ॥ बिनांप्रेमजेभक्तिहैंनौ
धाभईजातव्योहर ॥ प्रेमहिकैंबसहोतस्यामनुमप्रेमहिंकेरिझ
वार । प्रेमहाथअपनैंनहिंनागरताकोकहाबिचार ॥ १४४ ॥
हमैंसास्त्रकीसमझनपरिहैं ॥ नहिंसमझेअबहूंनहिंसमझैंजेसमझेतिन
कहासुकरिहैं ॥ परमधर्मबेत्ताआचारजच्यारनिहोंकैंमतअनुसरि
हैं ॥ हंसवाहनीहठसलितामैंबूडकलैलैनांहिउछरिहैं ॥ व्रजरसके
लिसुधापियकैंफिरबिद्याबादानिनांहिंझगरिहैं॥ नागरिदासबासवृंदा
बननितिविहारतैंकबहुनटरिहैं ॥ १४५॥ अन्योक्तदोहाकुंडलिया॥

दांतगयेअरुबलगयोअंगभारनहिंलेत ॥ ऐसेबूढेबैलकौंकौनवृथा भुसदेत ॥ कौनवृथाभुसदेतमरतभूषनिकैंमारैं ॥ यहजीवततउलो गषालकोमोलबिचारैं ॥ सबस्वारथमैंमत्तआधिकअधरमसरसांत ॥ ज्यौंज्यौंदेखतवृषभसजनत्यौंपीसतदांत ॥ १४६ ॥ झूलनाछंद ॥ घूमघुमालीलावनवालीमतवालीसीझुलैंवहां ॥ नागरासिरजूडेखंचे अंगूडेमुखरूडेलटछुटीतहां ॥ चटकाचिकनियांअंगरहैंदीरंगमहैंदी लगीनहां ॥ इश्कझंझेटीलाजलपेटीयेमहरेटीचलकिहां॥ १४७ ॥

## अथ छूटकदोहालिख्यते ॥

परकारजकरिदुखसहैं, लेतनहरिरसघूंट । भारघसीटतऔरको, आपऊंटकेऊंट ॥ १ ॥ अपनौंभलोनकरतनर, सबमैंबडोकहाय ॥ बिनपरसैंहरिनामकै, ज्यौंसुमेररहिजाय॥२॥अपअपनेसबसुधिकर त, भवनभरेउतपात ॥ कबहूकोउनहींकरैं, वृंदावनकीबात ॥३ ॥ नितिनितिदुखगृहकोसहैं, जहांअमिटउतपात ॥ रोगदुखिततनत्या गिये, घरकीकितीकबात ॥ ४ ॥ करीनजिंहिंहारिभक्तिनाहिं, लये बिषैकेस्वाद ॥ सोनहिंजिमीअकासको, भयोऊंटकोपाद ॥ ५ ॥ मरिबोचाहतऔरको,अपनैंसुखहितकोय॥ तिनकौंऐसीनीतपारि,सु खकाहेकौंहोय ॥६॥ जाकौंकहियेमूढजग, दुखदौंलागीहेर॥जमुना वृंदाबिपुनताजि, धावतवीकानेर ॥७॥ विविधिभांतिकेदुखनिजिय, निकसतनहींनिदान ॥ बृंदावनकीआसपरि, उरझरहेयेप्रांन ॥८॥ आपसमैंजुलरायकैं, कियेमुसाफरभांड ॥ मायाजगतसरायमैं, बुरी भठ्यारीरांड ॥ ९ ॥ नहींअवस्थाधननहीं, औरनकहूंनिवास ॥ तऊ

नचाहतमूढमन, वृंदावनकोवास ॥१० ॥ जिंहिंविधिवीतिबहुतगइ, रहीतनकसीआय ॥ मतकबहूसतसंगबिन, अवयहआयुबिहाय ११ जहांकलहतहांसुखनहीं,कलहसुखनिकोसूल॥ सबैंकलहइकराजमैं, राजकलहकोमूल ॥१२॥ मेरेइहमनमूढतैं, डरतरहतहौंहाय ॥ वृंदावनकीऔरतैं, मतकबहूंफिरिजाय ॥१३॥ अधिकसयांनपव्हैंजहां, जोईबुधदुखखांन।सर्वोपरआनंदमय, प्रेमबायबौरांन॥१४॥ वृंदावनकेबासको,तिनकैंनांहिहुलास॥फूसफासतिनकीभगत.वृद्धभोगसुखआस ॥ १५ ॥ बहुतभूमिइतउतफिरयो, मायावसइकझोर ॥ अबकबव्हैंहैंसफलपग, वृंदावनकीओर॥ १६ ॥ दिनबितीतदुखदुंदमैं, च्यारपहरउतपात॥ बिपतीमारिजातेसबैं,जोहोतीनाहिंरात॥१७॥ लेतनसुखहरिभक्तिको, सकलसुखनिकोसार ॥ कहाभयोनृपहूभये, ढोहतजगवेगार ॥१८॥ रनिचौपरबाजीरची, च्यारनरानिइकसाथ॥ पासापरिकछुबसनहीं, हारजीतहरिहाथ ॥ १९ ॥ होहरिपरमप्रवीनव्हैं, कहाकरतयेपेल॥पहिलैंअमृतप्यायकैं,अबक्यौंपावततेल२० वगुलासेमुहपतितपर, कृपाकरोहरिराय॥ इंहरिनुवृंदाविपुनमैं, पावसबैठौंजाय ॥ २१ ॥ मेरीमेरीकरतक्यौं, हैंयहजिमीसराय ॥ कइयकडेराकरिगये, कियेकईकनिआय ॥ २२ ॥ औरभवनदेखूंनअब देखूंवृंदाभौंन॥ हरिसौंसुधरीचाहिये, सवहीबिगरोक्यौंन ॥ २३ ॥ द्रुमदौंलागेजात्तखग, आवैंजबफलहोय॥संपतकेसाथीसबैं, बिपताकेनहिंकोय ॥ २४ ॥ अधिकभयेतोकहाभयो, बुद्धहीनदुखरास । साहिबढिगनरबहुतज्यौं, कीरेदीपकपास ॥२५॥ वृजमैंव्हैंव्हैंकढतदिन,कितेदयेलैंखोय। अबकैंअबकैंकहतही,वहअबकैंकबहोय२६

तुमऐसीक्योंकरतहो, हरिवरिचतुरकहाय। भलेजिमावतहोहमैं भु सम्रुखीरमिलाय ॥ २७ ॥ सदाएकरसभक्तिसुख, ज्यौंवन्रमर वनबेल ॥ गृहकेलाभअलाभसब, जूवाकेसेखेल ॥ २८ ॥ हलतदंतदृगदृष्टिघटि, सिथिलभयोतनचांम ॥ तऊबैठिसमरतनहीं कामगयेहूंराम॥२९॥ तरुनसमयहरिनाहिंभजे, रह्योमगनरसबांम ॥ अबतोरेनरबैठिभजि, कामगयेतोरांम ॥३०॥ पंचरतनरथबैठिकैं, करिदेख्योकिनगौंन॥ राहछांडिऊबटचलैं, सुखपावैसोकौंन॥३१॥ अगलीसमैंरुइंहिंसमैं,इतनौंअंतरजांन ॥ ज्यौंलसकरतैंउठगये, पीछैरहैंसैंहदान ॥ ३२ ॥ मिटेमोदमंगलमही, जेपहिलैंसुखखांन ॥ अबजगकीपिछिलीसमैं, जैसोब्याहबिहांन ॥३३ ॥ नीकोहूलागतवुरो, विनऔसरजोहोय। प्रातभयेफीकोलगैं, ज्यूंदीपककीलोय३४॥ अमृतसरदेख्योनहीं, पारसकोनपहार॥ प्रेमछकेहरिभक्तिमैं, देखेनहींहजार३५॥मनतूऊंचीठौरलगि, जहांनपहुंचैऔर।तहांबैठेनीचीलगैं, सबऊंचीऊंचीठौर॥३६॥कोकाकौंदुखदेतहैं, कौनदेतसुखदान। सबजीवनिकीबुद्धिके, प्रेरकश्रीभगवांन ॥३७॥ लाजिछांडिहरिकौं भजो, दीजैमनकौंछूट। कम्माऊकीमुहममैं, जैसैंलूटालूट ॥३८॥ लाजकरीजिंहिंभजनमैं, जेकोरेरहेसोय। इंहिजगदछिनीसंगमैंलूट कियेंसुखहोय ॥ ३९॥ मायाप्रबलप्रवाहमैं, मनकोकछुनबसाय ॥ नदीकौसककीमांहिज्यौं, तलसिरऊपरपाय ॥४० ॥ जगतकमाऊकटकल्यौं,रांमनामभरिनाज॥लाजकियेलाजनरहैं,लाजतजें रहैलाज ॥४१॥ सत्रुकहतसीतलबचन, मतजानौंअनुकूल॥ ज्यौंवमासवैसाखमैं, सीतरोगकोमूल॥४२॥जगकीखातररा खिसुख, भक्तिलहैनाहें

रिद्धि । सांगनिकासैंजक्तसौं, तवभक्तिसांगव्हैंसिद्धि ॥४३॥ सुनि कैंलेहुपुरांनसत्र,वूझलेहुसबठौर॥ जक्तरीतकछुऔरहैं,भक्तिरीतकछु और ॥ ४४ ॥ जक्ततोषतोरैंकोऊ, तवैंताहिसुखहोय॥ खालाकाडर आसिकी,संगननिवहैंदोय ॥ ४५ ॥ अपनौंभलोनकरिसकैं,कहामो रकहासांझ ॥ जगकोभलोमनावतैं,बेस्यारहिगइबांझ॥४६॥ बहुतसं तभयेआजुलौं, ऐंसंसुनीनसाखि ॥ दयोभक्तिसुखखोयकैं, जगकी खातररांखि ॥ ४७ ॥ राऊवडेवडेदेतहरि, दिनमैंलाखकरोर ॥ पैं काहूकौंताहिवे, खैंचतअपनीओर ॥ ४८ ॥ कृपालहरनरकूरकी, सोइजांनियैंहैंफ ॥ जैंसैंखावतपानमैं, तम्माखूकीकैफ ॥ ४९ ॥ जांनिकैंजांनिअजांनिव्हैं, तत्रलीजियेछांनि॥ सिष्यहौंनमैंलाभहैं गु रूहौंनमैंहानि ॥ ५० ॥ वृंदावनजबभजतहैं, वासकरनिकैंचाय॥ वृंदावनतैंभजतअब चतुर्थआश्रमआय ॥ ५१ ॥ दामचामकी लगनतैं, सुधिआयेनहिंस्यांम ॥ कामकलपतरुनगरबासि, भू लेवृंदाधाम ॥ ५२ ॥ पतिकोदुखमैंसंगतजैं, जाकौंबहौतपतिहोय॥ जगतसुहागनिकौंहसैं, औरहिहसैंनकोय ॥ ५३ ॥ कुलपोखानि मैंकरतक्यौं, अपनौंजसवेकांम ॥ विश्वंभरभगवांनको, वृथा कहतजगनाम ॥ ५४ ॥ कोकरिहैंजबकुटमके, पोखनकोउपचा र ॥ कुससैंनीतबसोयहो, लंबेपांवपसार ॥ ५५ ॥ जाकोघरसब तैंवडो, सबघरजिहिंआधीन ॥ सोवरपरहारिफिरतक्यौं, घरघर व्हैंकैंदीन ॥ ५६ ॥ वृंदावनसेवतनहीं, करैंनहरिकीबात ॥ सब दिनबोलतहैंवृथा, डोलतलोगहसात ॥ ५७ ॥ नीकोहूफीकोल गैं, जोजाकैंनहिकाज ॥ फलआहारीजीवके, कौनकांमकोनाज

॥ ५८ ॥ फिरतरहोतीरथरहो, रहोकोउघरमांहि ॥ नानारंग केसंगमैं, चढतएकरंगनांहि ॥ ५९ ॥ नीकोऊफीकोलगैं, जो जाकैंनहिंकाज ॥ जैसैंसक्करखोरकौं, कौनकामकोनाज ॥ ६० ॥ आवतलोटचाभूमिपर, गयालोटिकैंभूमि ॥ झूठेफहकटबीचके, सेजविछौनालूंमि ॥ ६१ ॥ आपकुंडगोलकपिता, पितृपिताका नीन ॥ लखोसुनागरभक्तिजस, पांडवनित्यनवीन ॥ ६२ ॥ आ यपरेइहठोरमें, बुरेकर्मफलहेत ॥ बाहिरबृंदाविपुनसौं, जबलगि जीवतप्रेत ॥ ६३ ॥ भक्तिभोगदोउतजिफिरत, सरलव्हैंसूधीगै ल ॥ तेआयेनरजक्तमें, जैसैंवधियाबैल ॥ ६४ ॥ जापैंजैसीवस्तु व्हैं, तैसोहीमनहोय ॥ मालाऔरगिलोलकौं, करलैंदेखोकोय ॥ ॥ ६५ ॥ मिलैंसजातीदूसरो, जबव्हैंवस्तुप्रकास ॥ कढतनांहिवि नपवनज्यौं, द्रुमफूलनिकीवास ॥ ६६ ॥ पौढेक्षीरसमुद्रमें, ए काकीभगवान ॥ गौरश्यामद्वैमिलतव्रज, बढीकथासुखधाम ॥ ॥ ६७ ॥ जामेंरससोईहरचो, यहजानतसबकोय ॥ गौरस्यामद्वै रंगविन, हरचोरंगनहिंहोय ॥ ६८ ॥ काठकाठसबएकसे, सब काहूदरसात॥अनिलमिलैंतबअगरको, जबगुनजान्योजात॥ ६९ ॥ द्वैविनएकनकामको, यहमनलेहुविचार ॥ तनमाटीबिनप्रानके, विनतनप्राणबयार ॥ ७० ॥ प्रेमजहांहीअधिकव्हैं, तहांजुहोत सराह ॥ ज्यौंबबिरदसुनिसमरबिच, बीरनिबढतउछाह ॥ ७१ ॥ निंदकचौकसचतुरनर, नखसिखभरेसयान ॥ तिनआगैंकैसैंरहैं, प्रेमवायबौरान ॥ ७२ ॥ छिद्रनिहारतफिरतअरु, बातनगढताबि धान ॥ तिनआगैंकैसैंरहैं, प्रेमवायबौरान ॥ ७३ ॥ गुनीवैद्यज्यौं

फिरतले, कांखकोथरीगान ॥ तिनआगैंकैसैंरहैं, प्रेमवायबौरान ॥७४॥ सतरंजचौपरपोथीखोई, भगवतचर्चागप्पोंनें॥खोयारासभक्तियोंभक्तनि, हरिजसखोयेटप्पोंनें७५इति छूटकदोहासंपूर्णम् ॥

## अथ तीरथानंदग्रंथलिख्यते ॥

## सुधिकरनिचित्तमनहरनि कवित्त ॥

ज्यौंज्यौंइतदेखियतमूरखविमुखलोगत्यौंत्यौंसुखरासीव्रजवासीजियभावैंहैं ॥ खारेजलछीलरदुखारेअंधकूपचितैंकालिंदीकेकाजमहामनललचावैंहैं॥ जैसीअबबीततसुकहतनआवैंबैननागरनचैंनपरैंप्रानअकुलावैंहैं । थोहरफरासदेखिदेखिकैंबंबूरबुरेहायहरेहरेवेतमालसुधिआवैंहैं ॥ १ ॥ इति ॥

## अथ साभिलाख सवैया ॥

नांहितुलैंवैकुंठहूकोसुखवोषकीज्योंकबहूसमतोलैं ॥जेउहिंठांसबआनंदमैंगिरधारीकेबांहकीछांहकलोलैं ॥ नागरटारिदियेजिनकौंअबवेभटकैंमनमारिमलोलैं ॥ देसबिदेसअभागीफिरैंबडभागीजोईव्रजभूमिमैंडोलैं ॥२॥ दोहा ॥ परसायेव्रजआदिदैं, कहूंतीरथानंद॥ जनभिलापपूरनकरानि, पूरनश्रीव्रजचंद ॥ ३ ॥ छंदपद्धरी ॥ जबचलेसुस्थिततैंदेसआन, बिचकियेदेवजानीसिनांन ॥ हैंप्रासिधकथासंबंधकूप, पुत्रीसुसुतीरथसरूप ॥ जलअमलकमलपरिभ्रमतभृंग, तहांन्हातहोतनरदेवअंग ॥ फिरिचलेतहांतैंनायमाथ, परसेगोविंदगोकुलकेनाथ ॥ पुनगालिबआश्रमपरमरम्य, सोभक्तिविमुखलोगनिअगम्य ॥ जहांभ्रभतमत्तआतिमधुपझुंड, बहिंतृ

विधिपवनजलबिमलकुंड ॥ पर्वतसवृक्षनिर्झरनिघोष, लखिठौर होतगतगर्बमोष ॥ ऐसेस्थानमध्यगवनकीन, जहांहरियाचारजअतिप्रवीन ॥ सुभसुहृदसांतसीतलसुभाय, सुखरासलेतपदरामध्याय ॥ बसीकरानिसनमानदान, दैंकियेबिदारघुनाथध्यान ॥ सुखलूटिचलेसबनिसाबिहाय, फिरिपहुंचेश्रीव्रजअवनिआय ॥

## अथ श्रीव्रजबर्ननं ॥

छंदपद्धरी ॥ भयोपरसरेनुतनप्रेमधाम । सबसुनेसकारनग्राम नाम ॥ जलकुंडकितेद्रुमबनविशेष । दृगचकितरहेछबिदेखिदेखि तहांकहूंकहांलगिधामऔर । फिरिरहेआयगिरिराजठौर ॥ इति ॥

## अथ गोवर्द्धनबर्ननं ॥

सवैया ॥ नांहिहैंसुल्लभजीवानिकौंअतिदुल्लभदेवनिहूंकेंसमाजसो । नैंननिकौंतनकौंधनकौंमनकेपनकोसबहीफलआजसो ॥ नागरमैंदरस्योपरस्योबरस्योदिनसाततहांघनगाजसो । हाथपैंलैंसुरराजसमैंव्रजराजकुमारधरयोगिरराजसो ॥ ४ ॥ इति ॥ छंदपद्धरी॥पायनिप्रदछनांदइजुफेरि । बिचरसिकसंगगनगुनिहिघेरि॥ कलगानकीरतनबढ्योसुरंग । बहौंजांझझनकबाजतमृदंग ॥ बनग्वारगऊचलेसुनतसाथ । मधुपिवतश्रवनपुटकृष्णगाथ ॥ सबअनन्यमंडलीछकियप्रेम।चितगयेभूलितनमनकेनेम ॥ आयेचलितिंहिंठांरसिकझुंड। जहांराधाकुंडरुकृष्णकुंड ॥ उततेंसुनिउमगेरसिकवृं

द ॥ उठिचलेसामुहैंबाढिअनंद । तहांरुपेसूरसनमुखसह्मारि । ब हिचलेपरसपरप्रेमवारि ॥ हुंकारशब्दकरिगिरिनिसंक । केउचलत धरनिधुकिभरतअंक ॥ तहांबंसिदासअरुमुरलिदास । मन्नुमहार थीयेप्रेमरास॥ विचखेतपरेमुर्छितनिदान।सोयेसरसज्ज्यागानतान॥ सुखप्रेमभक्तिकोभयोसुप्रात । मुखसौंनकछूबरन्यौंहैंजात ॥ दंप तिरससंपतबरबिहार । फिरिगायचलेतनमनसह्मार ॥ परक्रम्मादैं फिरिसिवरआय । मधुपुरीचलेदुखबिरहछाय ॥ पुनिपुरीपुलनि तटिरहेआंन । कियेप्रातसमैंजमुनासनांन ॥ विश्रांतघाटजलपरस पाय । तनपापगयेपलमैंपलाय ॥ कियेसांझसमैंनौकाविहार । बि श्रांतसामुहैंमध्यधार ॥ सुखआरतिकोबरन्यौंनजात । मुखचातग सबघननहिंसमात ॥ नरनारिवृंदजहांजुरेआन । अतिभीररागगौरी सुगान ॥ कुलवधूनचतसबपगियप्रेम । गइसकुचसकुचहुंत्याग नेम ॥ सिरकेसपासजूरासुढार । तनभूषनभूषितकनकहार ॥ पहि रैंतुलसीदलपहुपमाल । झारीकरसूक्षमतिलकभाल ॥ बहौंजुरीआ नितजिकाजधाम । तनदिव्यवेइजग्यपत्निबाम ॥ फबिस्वेतसहज पटकीलपेट । नहिदुरतसुघटअद्भुतअंगेट ॥ इकदिसअैसीतियनि कटघाट । इकओरभक्तिपुरजनकेठाट ॥ कलगानकुलाहलकरत संग । बाजिबहुतझांझझालरमृदंग ॥ जुपिफिरतआरतीसमैंमिष्ठ ॥ जयशब्दहोतअरुपहुपबृष्ठ ॥ इति ॥ अथदोहा ॥ इंहिंविधिजमुना पूजिकैं,धूपदीपधरिभोग ॥जमुनागुनगावतगये,जमुनातटकेलोग५ इति॥ अथसवैया ॥ ह्वायताकीनहिंजायकहीजमुनाकहितैंजमुनादि गआवैं । स्यामाओस्यामकरैंजलकेलिहिंकूलविलासनिरैंनविहावैं ॥

नागरस्यामबसैंहियताकरिस्यामप्रत्यक्षप्रवाहबहावैं ॥ दैंअनपाय निस्यामकीभक्तिहिस्यामनदीघनस्यामभिलावैं ॥६ ॥इति ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ मातातपस्वनीतहांजुएक । नरद्वारदरसआसाअनेक ॥ जिंहिंमिश्रिततपस्स्याभक्तिरंग । पयपानकरतअतिछीनअंग॥ कारिदंडवत्तुकरुनाकराय । पुनचलेहैंबृंदाबिपुनधाय ॥

## अथ श्रीबृंदाबनानंद छंद पद्धरी ॥

एकत्रतहांसबसाधमित्र । त्रयलोककरनिएककपवित्र ॥ इति॥ ॥ अथ दोहा ॥ सुनिब्यौहारकनाममो,ठाढेदूरउदास ॥ दौरिमिलेभरिनैंनसुनि,नामनागरीदास ॥ ७ ॥ इति ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ इकमिलतभुजनिभरिदौरिदौरि।इकटेरिबुलावतऔरऔर ॥ केउ चलैंजातसहजैंसुभाय। पदगायउठतभोगहिसुनाय ॥ जेपरेधूरिमध्यमत्ताचित्त। तेउदौरिमिलतलजिरीतनित्त ॥ अतिसैविरक्ततिनके सुभाव । जेगनतनराजारंकराव ॥ वेसिमटसिमटसबआयआय। फिरिछांडतपदपढवायग्वाय ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ बनिविहार निरससनी, निकटबिहारीलाल। पानकियोइनदृगनितैं, अनुपमरूपरसाल ॥ ७ ॥ इति ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ तहांपद ॥ गाएऔसरसंजोग । बिचरसिकविहारीहीकोभोग ॥ जब गोधूलकभयोसमयआन। सबचलेपुलिनमिलिमिलिसुजांन॥भइसमैंसौंहनीमिटचोधूप। जहांमिलीज्ञानगुदरीअनूप ॥ लैंखरीमलिनियांपद्दुपहार । बजिरहेजहांमदुचंगतार ॥ सबकुंडलाकारवैठे सुभाय । रहिमहापरमछबिपुलनिपाय ॥ रचिरसिकरतनमाला संवार । मनुसांझपुलनिकीनौसिंगार ॥ दंपतिविहारगुनिगानहांन।

सुनिमुक्तविचारीगनैंकौंन ॥ पदगानसुनतमिलिरासिकभीर । झूकिझूमिरहेदृगपुलकनीर ॥ भइरैंनबहुतचितपगेसुप्रीति । जोनित्तसमैंसोगइयबीत ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ चलेउहांतैंनीठउठि, अतिअभागकैंजोर ॥ सोदुखबरन्यौंजायक्यौं, समैंभयोअतिघोर॥ ॥ ९ ॥ सहिगईदुमतिदुखअसहि, बहिगईबुरीबयार ॥ रहिगइब्रजऔसेरहिय उतरेजमुनापार ॥ १० ॥ इति ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ बृंदावनसुधिकरतबात । अतिबिरहदुखितचितचलेजात ॥ पुनिकालिंदीकेकरिसनांन । फिरिरहेआयसोरूंनिदांन ॥ तहांश्रीगंगाकोपरसनीर । गएपापभयेनिर्मलसरीर ॥ तहांकियोएकअनुचरअधर्म । तटिहत्योअज्यासुतपापकर्म ॥ कछुक्रोधकियोगंगाकृपाल । दइआयअचानकजलउथाल ॥ भुवफाटगिरतअररातजोर । अतिभयोभयंकरसमयसोर ॥ भजिपटकिपटकिडेरानिकार । भयभीतसकलकौतिकनिहार ॥ जबकरीसुस्तुतिसिरनायपाव । करिछिमांकियोसीतलसुभाव ॥ पुनिदुतियादिवसकियोदीपदांन । मनुकनकमईभयोतटसुथांन ॥ तटउतारिउतरिनमतैंसुहांति । बैठेनक्षत्रजनुपांतिपांति ॥ जबश्रीगंगाछबिदेततीर । जिमकनककिनारीसहितचीर ॥ बिचबहैंदीपधाराउजास । सुरसुरीरतनअभरानिप्रकास ॥ इंहिंभांतिनिरषिसुषरैंनतीर । दिनह्वायकियेपावनसरीर ॥ सिरनायकह्योफिरिजोरिहाथ । यहदेहुगंगमोहिकारिसनाथ ॥ ११ ॥ इति ॥

## अथ कामना सवैया ॥

॥ ब्रह्मकमंडलीब्रह्मसरूपकहांलौंकहौंगुनकेगनभारे । ल्याये

भगीरथजूतुमकौंतबतैंतुमजीवअनेकउधारे ॥ नागरकीकितीबात कृपालकरूंबिनतीपरुंपायतिहारे । जेरहेआडेन्हैंकैंब्रजवासके गंगातेकाटियेपापहमारे ॥ ११ ॥ पुनःसवैया ॥ जननीउहिंपुत्र पुनीतकीहोरनसोयेलगैंवहोतीरथकौं ॥ भुवमांझलैंआयेभगीरथ जूताकेदीजैंबडाइकितीरथकौं ॥ सबनागरपैंकरियेजुकृपामैंकहूंतुम आदिकतीरथकौं ॥ तुलसीबनछांडिभ्रमौंनाकितैंअबहौंजमुनाजल तीरथकौं ॥ १२ ॥ इति ॥

## अथ कपिलाश्रम आगमनि छंद पद्धरी ॥

फिरिजायरहेकपिलासुग्राम । तहांरामेश्वरासिवसिद्धधाम॥जगप्र गटितपस्थलकपिलदेव । तहांसदाअमरनरकरतसेव ॥ द्रुमकुं जकुंडजलह्लानकीन। तहांएकतपस्वीदेहछीन॥ भनुकरततपस्स्या हौंनसक्र । आकासदृष्टिभइग्रीवबक्र॥ करमुरेदोउबिचउरनिआन। मुखमौंननित्तपयकरतपान ॥ तपकरतकष्ठसंन्यासरूप । बिनभ क्तिबृथान्हैंजक्तभूप ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ चलेउहांहूंतैंपरैं,करि पवित्रनिजअंग ॥ नवकावालिपुलबांधिमिलि, गयेउतरिकैंगंग ॥ ॥१३॥इति॥ अथ छंद पद्धरी॥ इकनदीरामगंगासुऔर।तहांसिंघव्या घ्रअतिविषमठौर॥पुनिचलेतहांहूतैंजुह्लाय । धवलागिरिपहुंचेनिकट आय॥जहांअगमविषमदुर्गमपहार।तहांहोतनहींपंछीसंचार॥ ढिगन दीकौसिकीकियोसिह्लांन।तीरथपुनीतबरनतपुरांन॥ रहेयहोतदिवस कौंसकिकितीर।करिचलेतहांतेसंधिबीर ॥आयेकितकदिवसमैंगंगकू ल।व्रजबासआसहियबढ़ियफूल॥ ह्यांआयगईहोरीकुठौर । जियप

रोत्रुरीअतिविरहरौर ॥ जवगयेगंगतहांपुलनिठाम । रचिबरसानौं जहांनंदग्राम्र ॥ परचोखेलिगईउडिरैंनिपूर । ब्रजविनांषेलिसब मांझिधूर ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ ऐसैंहोरीपेलिकैं, सनमुख जोरेपांन ॥ बहुरिफागव्रजमैंकरूं, देहुगंगयहदांन ॥ १४ ॥ इति ॥ छंद पद्धरी ॥ बरमांगिमांगिफिरिकियोगौन । व्रजविरहहियैंमुषलिये मौन ॥ पुनदरसकियोजमुनाकौंआय । निसतीरतीररहेसिवरछाय ॥देष्योश्रीवृंदाविपुलपार । बिचबहतमहागंभीरधार ॥ नहिंनाव नहींकछुऔरदाव । हेदईकहाकीजेउपाव ॥ रहैंवारलगनकौंलगैं लाज । गयेपारहिंपूरैंसकलकाज ॥ इति ॥ दोहा ॥प्रेमपंथकौंपीठदैं, यहजीवोनसुहाय ॥ मंगलदिनहैंआजुको, प्रियसनमुषजिय जाय ॥ १५ ॥ इति ॥ छंदपद्धरी ॥ यहचित्तमांझिकरिकैंबिचार । परेकूदकूदजलमध्यधार ॥ चलेपैरपैरतररायधाय । तहांभईलगन सबविधिसहाय ॥ तरिगयेतरंनिजादयोपार । गहिहाथलियेब्रजनाथवार ॥ इति ॥ दोहा ॥ वाररहेरहेवारते, पारगयेभयेपार ॥ दरसे बृंदाविपिनविच, राधानंदकुमार ॥ १६ ॥ इति ॥ छंदपद्धरी ॥ गलिनिगलिनिसुखफिरिफिरिजुलेत । न्यौंनलिनिनलिनिअलिगन मेत ॥ जहांकथाकीर्तनरूपरास । लैंछकेप्रेममकरंदबास ॥ सुखभयोहइांसोकह्योनजात । मुखचातकसवघनकहांसमात ॥ फिरिवहेवीचराजसप्रवाह । गयेइंद्रप्रस्थहियविरहदाह ॥ दिल्ली दिवारकहकाहधाम । लियोफेरतहांतेमोहिस्याम ॥ तजिदयोतहां सबप्रवृतिसंग । भोव्रजसनमुषफिरिबढ्योसुरंग ॥ जबकह्योसुता लडकायभाय । लयोमोंहिबोलवृषभानराय ॥ तबचलेचरनबरसाने

ओर । कियेपैंडपैंडतीरथकरोर ॥ लखेधवलमहलपर्वतउतंग। फहरातधुजाकलसनिसुरंग ॥ तहांबनपर्वतछबिराहियछाय । द्रुमवेलिसघनलपटीसुभाय ॥ बसबासकुसुमअलिकरतरौर । सरभरेबिमलजलठौरठौर ॥ रसपगेलोगनांतोसुमांन । तहांकुंवरिललीकी फिरतआन ॥ इति ॥ अथदोहा ॥ ऐसोबरसांनौंनिरषि,गहवरआयोप्रेम ॥ करतदंडवतलुटतरज,छुटिगयेराजसनेंम ॥ १७ ॥ इति ॥ अथ छंदपद्धरी॥वृषभानरायदरबारजाय।श्रीकीरतजुतदोउदरसपाय ॥ फिरिलैप्रसादगयोकुंवरिपास । जहांदंपतसुखसंपतनिवास ॥ करिकृपालडैतीभरिउसास । मुंहिनिजबरसानैंदयोसुबास ॥ इति ॥

## अथ आषाढमासबर्ननं ॥

छंदपद्धरी ॥ आसाढमासब्रजहरितभूम । नभबरसतबदराझूमझूम ॥ जिततितसुनियतहैधुनिमलार । गावतब्रजबासीनितबिहार ॥ इति ॥ अथदोहा ॥सांवनमनभांवनसबनि,आयगयोसुभमास॥ निरषनिदंपतिझूलिबो, बाढ्योहियेहुलास ॥ १८ ॥ इति ॥

## अथ सावनमासबर्ननं ॥

प्रथम तीजोत्सवलिख्यते ॥ छंद पद्धरी ॥ सबबरसानैंसुघरह्योसुछाय । तिथप्रगटीसावनतीजआय ॥ ब्रजनरनारीमिलिठांहिठांहिं । सबचलेराजमंदरहिजांहि ॥ उततेंश्रीलाडिलीछबिनिदांनि। वैठीबाहिरछत्रीसुआंनि॥बजिप्रणवबीनझालरियसंग। सहनायभेरगोमुखमृदंग ॥ तहांनचतगुनीगनभरेसुमोद । उचरतमलारझूलनिबिनोद ॥ तबतिनहिंमिलेबौहपटप्रसाद । मननैंनश्रवनलह्योप

रमस्वाद ॥इति॥ अथ दोहा ॥नागरीदासहिंडोरनैं, सोभाछबिभ्रव रेखि॥ प्रेमभ्रुलनिभ्रूल्योकरै, दंपतिभ्रूलनिदेखि॥१९॥इतिद्वितीय॥

## अथ श्रीबलदेवजनमोत्सव लिख्यते ॥

छंदपद्धरी॥सुभसांवनपंचमिसुकलपष्ष। मिलिमिलिव्रजवासी चलेलष्ष ॥ जहांगयेगांमऊंचैंसुठाम । तहांजनमथ्यौसअभिराम राम ॥ प्राचीदिसरोहनिउदितचंद । धुनिगानबधाईअतिअमंद ॥ मचिखेलिबह्योदधहरदछीर । ह्वैरहीभवननरनारिभीर ॥ बिचइ कढाढीअनुकरनबानि । सोपढतभयोबिचवंसआनि ॥ उनपायो बहुसनमानदान । पुनिकियोबिदादैंतिलकपान ॥ बलदेवजनमउ त्सवअपार । बाजतनिसानसहनायद्वार ॥ मंदिरसुखसुंदरछ्योसु छाय । कविपैंसवबरन्यौंनहिंनजाय॥पुनमनदैंसुखलैंलैप्रसाद । सब चखेकरतसुधिसमयस्वाद ॥ इति ॥

## अथ तृतीय सलौंनौं उत्सव लिख्यते ॥

जबभईसलौंनौंतिथसलौंन । कियोप्रेमसरोवरसवनिगौंन ॥ जलअमलकमलपरअतिअलिंद । नवकुंजपुंजबहैंमरुतमंद ॥ ति हिंठामसबैंसरवरकैंतीर । इकओरभईव्रजजुवतिभीर ॥ दंपतजब बैठेकुंजआंनि । रक्षाबंधनभइदुहुनिपांनि ॥ फिरिचढेललितझूलैंक दंब । झुकिझुकितमालरहेनिंबअंब ॥ छबिदेतमुकटद्रुमलतनिमां झ । झूलतापियप्यारीसमयसांझ ॥ पुनउतररच्योमंडलपैंरास । व्रजप्रेमसरोवरसुखनिवास ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ सांवनगतभा

दौंलग्यो । आंवनव्रजसुखसार ॥ जनमोत्सवआगमबढ्यो । घरघरमंगलचार ॥ २० ॥

## अथ भादौंमासश्रीकृष्णजन्मोत्सव लिख्यते ॥

॥ छंदपद्धरी ॥ बढिनंदग्रामसोभाअभंग । चढिधुजापताकापीतरंग ॥ गोपुरनिवासनौबतनिनाद । सहनायरागरह्योपूरस्वाद ॥ नरआवतगावतनचतनार । भइसिंहपौरिगहमहअपार ॥ कहुंकहामहामंगलअनूप । व्रजरासिकानिहियवहिवसतरूप ॥ गुनतहां गुनीप्रगटतसुभाय । कलगानबधाईरहिसुछाय ॥ बनिढाढीबोलत वंसगोप । अतिनंदभवनआनंदओप ॥ इंहिंभांतिअहर्निसगईविहाय । दधकादौंनौमीमचीआय ॥ अतिसमैंमनोहरभयोसुभोर । बिचनंदसदनआनंदसोर ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ कृष्णजनमको सुखभयो । नंदगामनिसप्रात ॥ विधिहूंतेंजातनकह्यो । मेरीकितियकबात ॥ २१ ॥ इति ॥

## अथ श्रीललिताजन्मोत्सव लिख्यते ॥

॥ छंदपद्धरी ॥ पुनिसबललिताकोजनमजानि । मिलिग्रामकरहरैंरहेआनि ॥ जहांगानबधाईश्रवनचैन । अरुभयोरासजागर्नरैंन ॥ झूलेफिरिदंपतिहोतभोर । पुनिबहुरिउतरिबैठेंकिसोर ॥ तहां करीभरीहितव्याहरीत । लइभांवरसांवरगउरमीत ॥ तबकीसोभा सुखकहैंजुकौन । बरषैंजलनैंनानिमुखहिमौन ॥ यहकारिलीला सिररासिकमौर । फिरिगयेकदमपंडीसुठौर ॥ अैसीनठौरकोउऔर रम्य । विनकुंवरिकृपासबकौंअगम्य ॥ तहांभईदुहुनिमैंदानकोलि ।

भरिप्रेमरङ्गसबसुखहिंझेलि ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ रासहिंडोरोव्याहविधि । दानकेलिअभिराम ॥ सोसबकबिनहिंकहिसकैं । भईकरहरैंग्राम ॥ २२ ॥

## अथ श्रीराधाजनमोत्सव लिख्यते ॥

॥ छंदपद्धरी ॥ निससप्तमिहींबरसानैंजाय । तहांसुखढाढीदेख्योसुआय ॥ वृषभानुरायकोपढतबंस। जोब्रह्मादिककृतमुखप्रसंस॥जहांबरीसानपर्वतनिवास। तहांधवलनवलउज्जलअवास॥ फहरातधुजाकलसनिउतंग ॥ ठहरातनहींलगिपवनसंग । घहरातहैंतापरघटाआंनि । लहरातइतैंबाजतनिसांनि ॥ जबभयोअष्टमीद्योसप्रात । श्रीराधाजनमउछाहगात ॥ अतिमंगलधुनिपुरगइयपूर । बजिउठेभेरसहनायतूर ॥ झंझनतझांझनौबतनिघोष। प्रतिसब्दगयोपुरजहांमोष ॥ सबगावतनाचतभरेहैंरंग । आवतअपअपनीचावसंग ॥ इकउतरतअरुइकचढतप्रात । गिरिगैलभीरनिकस्योनजात ॥ दधकादौंमांचीबढ्योसुपेलि । बहचलीजहांतहांघरनिरेलि ॥ सबहरददहीभीजेलसंत । जनुफूल्योभादौंमैंबसंत ॥ लयोदृगनिश्रवनसुखसबनिभोग । गावतखेलतमिलिचलेहैंलोग ॥ उतरैंगिरतैंछबिदेतझुंड । सबगयेह्वानवृषभानकुंड ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ इहिंविधिराधाअष्टमी, जिहिंलीनौंसुषसार ॥ ताहिनकछुकरिवोरह्योयहजानौंनिरधार ॥ २३ ॥ इति ॥ अथ छंदपद्धरी ॥ नौमीजुप्रातरविकैंप्रकास । गिरिगढबिलासजहांदेषिरास ॥ पुनिमोरकुटीघनस्यामजात । संगदामिनिभामिनिछबिसुहात ॥ अति

देतरूपसुषबरसवारि । नरएकओरइकओरनारि ॥ब्रजचंदउदैंगिरि सिषरओर।इतब्रजबासीइकटकचकोर॥ फिरिफैंकतलडुवाहरिसुजान । मनुदेतकृपाफलभक्तदान॥पुनियहांगानवहांमानलेत।आवतसुगंधहस्तकसमेत॥ अथ दोहा॥इंहिंठांजोकछुसुषभयो,मौपैंकह्योनजाय ॥ रसनांकैंतोदृगनहीं, दृगबिनरसनांहाय॥२६॥इति अथ छंदपद्धरी ॥ दसमीसबकोकिलवनहिंजांहिं । लषिरासहिंजावकबटहिंछांहिं॥सुषदेपितहांआवैंअटोर । तहांसिलाफिसलनींचढभोर॥पदव्याहसमैंकेजहांसुहोत ॥ बहरासिकनिदृगआनंदसोत । पुननिसबारसगढमानरास । रहैंदंपतिकरिगिरिसिषरबास ॥ तिहिंभोरउतरिगिरितेकिसोर । करिदानकेलिसांकरिहिषोर ॥ हसिचहनिझुकनिझझकनिसुहात । तहांबचनरचनबरनेनजात ॥ इकग्वालगह्योगुनसैनसांधि । द्रुमडारातियनिदइचुटियाबांधि ॥ व्हैंआतुरटेरचो तबहिग्वाल । सुनिअहोकहूंहैंनंदलाल॥ तूकोहैंहेलाकौंनठौर । यौं कहतस्यामसिररसिकमौर ॥ तबकहतग्वारभइयाछुटाय । मोंबांध्योबरसांनेंकिआय ॥ कहिकहाचलीतेरीरेमित्त । इनतोरेबांध्यो हौंहुंनित्त ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ वचनस्यामकेसुनतए, सबहिनिबाढयोरंग ॥ गिरेकईकइसुनिरहे, प्रेमपुलकिकैंअंग ॥ २५ ॥ पुन दोहा ॥ वरषागतआगमसरद, अमलअंबुआकास । बनद्रुमपातनिधूरिधुपि, छबिवाढीसुषरास ॥ २६ ॥ पुन दोहा ॥ बरसमेघअवषेककरि, वेदमंत्रधुनिगाज । वृंदावनकौंदैंगये, सुंदरताकोराज ॥ २७ ॥ इति ॥

## अथ सांझी उत्सव लिष्यते ॥

॥ छंद पद्धरी ॥ शुभपष्षस्यामसांझीबिलास । सुखसोनकरतरसनाप्रकास ॥ दंपतिछबिअरुझीहीयमांझ । वहिफूलनिबीननिसमयसांझ ॥ इंहिंसांझीकीसबकहतबात । बढिजायग्रंथसबकहांसमात ॥ पुनराकाआईउहिंसुथांन । जाकौंबरनतबिचबौहपुरांन ॥ वहबृंदाबनवहसरदरैंन । तहांलीनौंमनलोचननिचैंन ॥ भयेठौरठौरमंडलनिरास । व्हैरह्योबिमलनभससिप्रकास ॥ धुनिछायगईपदरासगान । बृंदाबनतनरह्योसुरवितान ॥ छतकुंजकुंजचढिरासिकभूप । जहांपधरायेसेवासरूप ॥ छबिबनीरुपहरीबढियऔर । दंपतिसुखसंपतिठौरठौर ॥ तहांमनलोचनलयेरूपकौर । कहांकहांसुखलीजैंदौरदौर ॥ इति ॥ दोहा ॥ बृंदावनजोसरदसुष, निरष्योराकारैंन ॥ बडेभाग्यदेषैंबनैं, बरनतबनैंनबैंन ॥ २८ ॥ इति ॥

## अथ कार्तिकमास प्रथम श्रीराधाकुंडस्नान जात्रा लिष्यते ॥

॥ छंद पद्धरी ॥ जबलग्योमासकातिकजुआय । मनबढ्योसबनिचौगुनौंसुचाय ॥ भइकृष्णपक्षसप्तमियरैंन । राधाकुंडआएसबसुपैंन ॥ दुहुंकुंडतीरदुतिदीपजाल । जगमगतमनहुमनिपीतमाल ॥ चहुंओरभीरधुनिहोतनाम । आनंदकुलाहलठामठाम ॥ बिचतिरतबहोतदीपकबिचित्र । मनुह्लातनछत्रहोतहैंपवित्र ॥ जबभयोअर्द्धनिसिससिउद्योत । नरनारिह्लातजलशब्दहोत ॥ ससिचढ्योगईनिसभयोसुप्रात । कछुकहिनपरतसुषसमयबात ॥ इति ॥

॥ अथ दोहा ॥ गउरस्यामकेनामपैं, गउरस्यामकेधाम । चस्मां देषनिरूपके, दोउकुंडअभिराम ॥ २९ ॥ च्यारजामबितईनिसा, बंसीदासनिकेत ॥ रुपेरासिकरसकीरतन, भयोप्रेमकोषेत ॥ ३० ॥ इहांभयोसुषसोकह्यो, आवतनांहिप्रमान ॥ चरचादंपतिप्रेमकी, कबितागानबिधान ॥३१॥ चलेप्रातसबहीजहां, गोवर्द्धनगिरिराज॥ उच्छवमनउच्छवकरनि, दीपमालिकाकाज ॥ ३२ ॥ इति ॥

## अथ श्रीगोवर्द्धन बर्ननं ॥

॥ छंद पद्धरी ॥ सबउमगिचलेब्रजजहांजुसैल। चहुंओरधुंधरितभइयगैल ॥ आवतप्रवाहसलितानिरीत । गिरपरसपरसहोवनपुनीत ॥ तनिगएस्वेतचहुंधांबितांन । तिनमांझहोतागेरधरनिगांन ॥ ब्रजकटकसोरमंदोरधूम । छबिछायरहीसबसिवरभूम॥ दीपकप्रकासभयेकूहुसुरैंन । उडिअंधकारचढिगयोहैंगैंन॥रह्योदीपनिदुतजगमगपहार। जनुंकीनौंगिरिरतननिसिंगार॥ गिरद्रुमनिदिपनिकीचमकिहोत। मनुप्रेमसजीवनिजरीसुजोत॥दुतिदीपमांनसीगंगकूल।मनुपारजातमालासुफूल॥कईकुंडमांझधसिकैंजुह्नात। कइकरतप्रदछिनांगातजात॥ कइरासदेषिदेषतसुजांन।करिदयोसुपहिसुपमैंबिहांन॥ अथ दोहा ॥ दीवारीकीरातयौं, बितईगिरकेमूल॥वहुरिप्रातअनकूटकी। हियमैंबाढीफूल ॥ ३३ ॥ अथ छंदपद्धरी ॥ गोस्वामिऔरदुजवरअनंत। ब्रजलोगबहुतसंतरुमहंत ॥ एपूजतगिरिगइयांखिलात । अनकूटलुटतभीरनसमात ॥ नरनारिप्रदछनाकरतपाय । मिलिरहेकुंडलाकारआय ॥ तिहिंसमैंकह्योनाहिंपरतरूप । ज

नुपहरीगिरमालाअनूप ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ चलेसवैंगिरराजतैं । गोपअष्टमीकाज॥नंदग्रामआयेसकल। भेटेश्रीव्रजराज॥२४॥इति ॥

## अथ श्रीगोपाष्टमी उत्सव लिख्यते ॥

छंदपद्धरी ॥ कीनेसिंगारबलदेवस्याम । दोउकुंवरनिहारेअति भिराम ॥ तबनंदभवनतैंकढेलाल । सबदेखछकेनरवृंदबाल ॥ लखिबदनसबनिभूलीनिमेष । लियैंलकुटमुकुटनटवरसुबेप ॥ चलिगालकरतव्रजबधुनिसंग । लियैंबदनअर्धघूंघटसुरंग ॥ बडडेजुगोपचहुंधांसुहात । अतिभीरगलिनिनिकस्योनजात ॥ दधिलूटछाकमगमैंअपार । ब्रजनारिखरीसबद्वारद्वार ॥ नंदीश्वरओप्योअतिउछाह । उररातसकलव्रजबाढियचाह ॥ चलिआयेजसुदाकुंडकूल । हियबढीदुहुनिबनदेखिफूल ॥ तहांकरिकैंठाढेदोउभ्रात । तबकहनिलगीव्रजबधुनिबात ॥ तुमसुनिहुगोपबडबंसनाम । येहैंबालकबालिरामस्याम ॥ बनव्याघ्रसिंहहैंजंतुऔर । कहुंदूरनजइयोविषमठौर ॥ एपितामातकेनैंनप्रांन । याव्रजकीजीवनिसुखनिदांन ॥ हौंकहौंकहांलौंकछुबढाय । एदयेतिहारीगोदमाय ॥ सुनिसुनिनातेंकेमधुरबैंन । सबलोगपुलकिरहेनीरनैंन ॥ पुनिचलेतहांतेगांनहोत । दिनप्रथमगऊचारनउदोत ॥ चलिरहेकदंबखंडीनिहारि । तहांकियोछाकलीलाबिहार ॥ फबिरहीकुंडलाकारभीर । बिचकुंवरगउरसांवलसरीर ॥ फिरनंदीश्वरकौंचलतलाल । बाजतमृदंगअरुसृंगताल ॥ बिचबिचबंसीधुनिहोतजात । गोआगमगौरीरागगात ॥ आगैंअतिसोहतगउनिठाट । रहैंठटिकठटिकपुनिचलतबाट ॥

तियमुकटझलकलखिरैंनमांझ। अंगुरीनिबतावतसमयसांझ॥ सबमं दिरचढिचाढिकैंअगारि। नंदीसुरकीराहिनिरखिनारि॥ पुनसनमुख आईभरिसुप्रीत। बिचगलिनिगलिनिगावतिसुगीत॥ सिरमंगलक लसानिधरतबाल। रुकिगईडगरजुवतिनिकेजाल॥ चलिनिजमंद रगयेदोउबीर। तबभईआरतीसमयभीर॥ इति॥ अथ दोहा॥ च लतवारतीपैंउतैं। कमलनयनकीसैंन॥ रहेकरतछकिआरती। रू पआरतीनैंन॥ ३५॥ इहिंबिधिकरिगोपाष्टमी। नंदगोपकेग्राम॥ लीलासुमरतसबचले। अपनैंअपनैंधाम॥ ३६॥ सतसंगतसुख रूपसुख। बितयोमगसरमास॥ ब्रजबासीसुखनिधिसबैं। ब्रजसु खसदानिवास॥ ३७॥ दोहा॥ भयोपोसमैंजोकहा। कह्योसोसमैं जाय॥ कमलनयनसुखहोतसुधि। हियैंसुधिनठहरात॥ ३८॥ नामनलीनौंजातहैं। औचकबन्योसंजोग॥ कैंजियजानैंआपनौं। कैबरसानैंकेलोग॥ ३९॥ दंपतिकेलिसमंधसुख। नीकैंबितयोमा ह॥ परममुदितआगमहियैं। नवलबसंतउछाह॥ ४०॥ कुंवरिला डलीनिकटतहां, मोहनलाललसंत॥ बरसांनैंअतिसुखबढ्यो, जादि नभयोवसंत॥ ४१॥ कबित्त॥ फूलेद्रुमबल्लीबनझूलेअलिगंधबो लैंमदनसदनमानौंमंगलबधावनौं। जहांतहांआवतधुनिगांनहिंडोर तैसोकोकिलांनिकोयलकोसोरमनभावनौं॥ उमहींसकलबालआ ईबृषभानजूकैंकिसलैकलससंगसोहैंमहरावनौं। हियेंहुलसंताबिकसं तकंजतियमुखनागरबसंतबरसानेमैंसुहावनौं॥४२॥इति॥अथदोहा॥ माघमासराकाभई, प्रगट्योपूरनचंद॥ होरीडांडोरुपतहीं, बाढ्यो ब्रजआनंद॥४३॥ इति॥ कवित्त॥ लागीहीवसंतैंसरसआसजुवति

निकौंफागरसलागभरयोवहीदिनआजहैं । उमगेसकलव्रजवासी सुखरासीमहाफिरतसुहाईयेंदुहाईरतिराजहैं॥होरीडांडोरोपतहींदुंदुभिस्हनायभेरनागरसमूहडफउठेवाजवाजहैं। हलचलपरीहैंधूंमधीरजढहनलागेदहलानेमानगढहहलानीलाजहैं ४४॥इति॥अथछंदपद्धरी॥जिततितडफसुनियतविनप्रमान।मनुमदनसदनबाजतनिसान॥जगिउठीलगनचितचौंकिचाह। व्रजबाढ्योघरघरअतिउछाह॥इतबरसांनौउतनंदगांव।त्रयलोकप्रगटहैंदोउनांव॥एचाहतहितमनुहारजीत। अतिउरझेनातैंप्रीतरीत॥नरनारिरंगीलेदुहूंओर। बढिफागुउदधिआनंदहिलोर॥उतनंदीसुरतैंहितप्रवेस। कहिपठयोबरसानैंसंदेस॥हमआवतहोरीखेलिकाज। यहकहियोजहांवृषभानराज॥सुनिबढ्योसबनिआनंदअपार। चढिचढिअगारगावतधमार॥नरनारखेलसजिसौंजसांनि। रहेरोकिरोकिकैंगैलआंनि॥उततैंसबआयोनंदग्राम। बिचलियेमनोहरकुंवरस्याम॥दुहुंओरउठेबाजत्रबाजि। कलकूटनिपठगइलाजभाजि॥अतिउडिगुलालचलिरंगधारि। सबगायउठीव्रजनारिगारि॥ उतगोपबतावतनिलजभाव।इतवहतलकुटचटचोटचाव॥ कइलगतकईछलबलबचात।कबिंकरतफुरतफिरिकूदिजात॥घूंघटझुकिझूमकदेतनारि। रहेप्रेमपुलकिभावकनिहार॥ अतिगलिनिमांहिबढिपरयोरंग। फिरचढेसबैंमंदिरउतंग॥ ढिगकुंवरिलडीकैंभइयभीर। छाईगुलालधुंधरिअबीर॥ छबिमुकटझलकराजतरसाल। बिचनंदगांवकेजेगुपाल॥ व्रजबासीनिलीनौघेरिताहि॥ पटझटकतकटिगाहिचाहिचाहि। कइनिकटआयदेगारिबोल॥ कइआंजतअंजनदृगसलोल। कइगुदगुदायगुलचातगाल॥

मनुललितलतालपटीतमाल॥ सबसमधांनैंकीनवलनारि। त्रिफरी गावतजसुदाकौंगारि॥ बरसांनैंअतिसुषरह्योसुछाय। बढिपरच्योरंग बरन्यौंनजाय॥ दैंकियेंविदावृषभानपान। तबचलेनंदगृहसबसु जान॥ इति॥ अथ दोहा॥ नंदग्रामकेलोगसब, इंहिंविधिहो रीषेलि।नंदसुरकौंफिरिचले, सबसुषसागरझेलि॥४५॥ सजीसौंज जेवसतहे,बरसांनैंकैंवास॥नंदग्रामकेषेलिकौं,सबकैंवढ्योहुलास४६

## अथ नंदग्रामकीहोरी बर्नन लिख्यते

जबभयेलोगएकत्रआय। मिलिचलेदुंदुभीडफबजाय॥ सब लियेंषेलिकीसौंजसंग। जेव्रजबासीरंगिरहेरंग॥ लटपटीसीस पगियांसुहांति। करलियेंमोरछलनचतजांति॥ तनपीरेपटफैंटनि अबीर। व्हैंरहीरंगीलींडगरभीर॥ उतनंदग्रामनरनारिठाट। इनकीसबजोवतपरेबाट॥ इतकीजबआवतदेखिभीर। वेआये सौंहैंचलिसधीर॥ जहांसुभगभूमिजसुदासुकुंड। हैंजुरेसनम्मुख दोउझुंड॥ किलकारिकारिमिलेदौरिदौरि।उड़िउडिगुलालमचिपरी रौरि॥ सिरनायेघटभरिभरिसुरंग। सबझोरवोरभयेअंगअंग॥ न हिंआपआपपहिचांनेंजात। गिरउठतएकलपटातगात॥ वेलष्ट पुष्टगनगोपपीन। एफागकेलिमैंसबप्रबीन॥ कछुकांहेनपरतबढि परचोसुषेलि। बहिचलींधरनिपररंगरेलि॥ बनलालभयोफागुन विहार। छुटिचलेसवैंमिलिनंदद्वार॥ बिचगांवअटारिनिचढिय बाल। भरिरंगकलसढारतगुलाल॥ दररातनीरभररातभीर। गावतगारीदैंओटचीर॥ उडिउडिगुलालमनुभइयसांझ। व्हैंरह्यो

कुलाहलगलिनिमांझ ॥ रसफागमहासुषसिंधुझेलि । यौंमंदरपहुंचेपेलिषेलि । श्रीनंदजसोदाकुंवरदेखि ॥ लागीनतनकनैंननिनिमेष । करिउततेउनमनुहारचार ॥ औसरविचारगाईधमार ॥

## बरसांनेंकी गोपी फगुवा मांगन आई ॥

॥ अथ छंदपद्धरी ॥ वेजथासमैंगावतधमारि । ९ ॥ इतमृदंगडफझांझतार ॥ रसमगनकहीकछुसुनैंकौंन । हतहितमनुहारसबनंदभौंन ॥ इकसमधानौंअरूफागमास । अरु । बदिफागुबचनहास ॥ केउछिरकतकेसरनीरआय । केउमुखेरससानैंटातजाय ॥ उडतहैंअबीरझोरनिगुलाल । बिचमंदरआंगनमच्योसुख्याल ॥ तहांबहुव्रजबासानिआयआय । वृषभानहिंगारीदेतगाय ॥ व्हैंरह्योकतूहलनंदधाम । मुसिक्यातपरेबलराम स्याम ॥ व्रजथकितभयोकौतुकलुभाय । नंदीसुरअतिसुषरह्योहैछाय ॥ रंगिरहीछबीलीभवनभूमि । व्रजबासानिझूमकदेतझूमि ॥ अथ दोहा ॥ इतठाढेबरसांनियां, समधीलोगनिहारि ॥ धाईएकहिबेरजुरि, नंदगांवकीनारि ॥ ४७ ॥ अथ छंद पद्धरी ॥ कहिहोहोहोपिलिपरियवाल । कहांरुकैंप्रेमसलिताउथाल ॥ घिरिगईचहूंधांआयआय । तबगयेकईछलकरिपलाय ॥ उनबरसांनैंकोमोहिमांनि । सबभीरचूरिहैंगह्योजुआंनि ॥ कटिफैंटपकरिझटकतहैंएक । हैंइकवेव्रजदेवीअनेक ॥ व्हैंगईबहुतपैंचासुषांच । डगमगतपगनिबलमिटयोसांच ॥ इकबरसांनैंकेकोउआंनि । पटगांठिजोरिदइतांनितांनि ॥ इतउठेब्याहकेगीतगाइ । दोउओर

हासिरसरह्योछाइ ॥ मोमुषअबीरतियमांजिमांजि ॥ नैंननिमैंत्र्जनक्योसुआंजि ॥ दोहा ॥ सांठिलगैंव्रजसौंजबैं, व्रजतियमिलवैंसांठि ॥ गांठिकुबुधकीजबछुटैं, एपटबांधैंगांठि ॥ ४८ ॥ अपनावैंव्रजबासिनी, तबव्हैंव्रजसौंहेत ॥ ब्रजसरूपसूझैंतबैं, व्रजतियरंजनदेत ॥ ४९ ॥ छंद पद्धरी ॥ इंहिंरीतषेलभयोनंदद्वार। जेवसतहे,यंनिबाढ्योअपार ॥ पुनकियोविदाश्रीगोपराज। सनमांन ॥ सबविधिसुषलैंलैंकियोहैंगौन । डफदुंदभिबाज

अथ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ बरसांनैंनंदगांवको, षेलिभ तभांति ॥ सोबतनकसोहीकह्यो, कह्योसबैंकहांजांति ॥ ५० ॥ मधुमाधवजेठोत्सवहि, यातैंबरन्यौंनांहि ॥ एकफागआगैंजिते, सबफीकेदरसांहि ॥ ५१॥ व्रजलीलाउच्छवबहुत, मनलोयनसुषदैंन॥ वेनकहेमैंतेकहे, जेदेषेनिजनैंन ॥ ५२ ॥ यहैंरंगीलोधामहैं, औरधामकछुऔर ॥ धन्यधन्यजेकरतहैं, व्रजहोरीइकठौर ॥ ५३॥ वैकुंठादिकलोकजे, व्रजपरडारूंवार॥ उच्छववारूफागपर, जेप्रासिद्वसंसार ॥ ५४ ॥ व्रजतैंसोभाफागकी, व्रजकीसोभाफाग ॥ फागबिनांकहालागहैं, लागबिनांकहाफाग ॥ ५५ ॥ फागलागकेसुषजिते, तिनकेयेद्वैठांव॥गउरस्यामजीवनिजहां, बरसांनौंनंदगाव॥५६॥ गउरसांवरेरासिकदोउ, यहदीजेसुषरास ॥ कबहुनागरीदासअव, तजैंनव्रजकोबास॥५७॥माघअष्टदससतजुदस, बिचवृंदावनवास॥ग्रंथतीरथानंदयह, कियोनागरीदास॥५८॥ इतिश्रीग्रंथतीरथानंदसं० ॥

## अथ ग्रंथ श्रीरामचरित्रमालालिख्यते ॥

श्रीरामचंद्रायनमः ॥ दोहा ॥ सियारामपदध्यायकैं, कोमलक

मलनवीन ॥ रामचरितमालारचूं,चुनिचुनिपदप्राचीन ॥ १ ॥ अथ श्रीरामजन्मसमयपद॥चलिरीआजुहैमंगलचार॥ राजादसरथकेदरवार ॥ अतिसुंदरश्रीरामस्यामतनप्रगटेराजकुमार ॥ पावतगुनीदानवहौकंचनअरुमनिमुक्ताहार ॥ नागरिदासअमंगलमिटिभये मंगललोकअपार ॥ पुनपद ॥ अवधिपुरबाजतआजुवधाई ॥ भईनगरपरभीराविमाननिप्रगटिभयेरघुराई॥ वरषतकुसमधुजाकलसनिपरिअतिसोभाउफनाई॥नागरिदासगानमंगलधुनिछायरहीसुपदाई ॥

## अथ बाललीला पद ॥

करतलसोहतबानधुनहियां ॥ पेलतफिरतकनकमयआंगनपहिरेलालपनहियां॥दसरथकौसल्याकेआगैंवसतनैनकीछहियां॥मानौं च्यारहंससरवरतें वैठेआनिसदहियां ॥ रघुकुलकुमदचंद्रचिंतामणि प्रगटेभूतलमाहियां ॥ यहैदैनआयेरघुकुलकौंआनंदनिधिसबकाहियां ॥ यहसुखतीनलोकमैंनांहीसोपइयेप्रभुपाहियां ॥ सूरदासहरिवोलभक्तकोनिवाहतदैवहियां ॥ पुनः पद ॥ छोटीसीधुनहियांपनहियांपायछोटीछोटीसीकछोटीकटिछोटीसीतरकसी॥ राजतझगुलीझीनीदामिनीकीछविछीनीसुंदरबदनसोहैपगियांजरकसी ॥ मोमनहरनिविचित्रआभूषनकछूकछूआवतसनेहकीसरकसी॥ सूरतकीमूरतकहीनवनैतुलसीजोइजनजानैंजाकैंकसिकैंकरकसी ॥ पुनः पद ॥ धनुहींबानलियैंसंगडोलत ॥ च्यारौंवीरधरिसंगअतिसोभितवचनमनोहरिबोलत ॥ लछमनिभरतसत्रुवनसुंदरराजीवलोचनराम ॥ अतिसुकुमारपरमपुरषारथअर्थधर्मधनकाम ॥ कटितटपीतपिछौरीवांधेकाकपक्षधरेंसीस ॥सरक्रीडादेखनिदिनआवतस्यौसुरनारिअनी

स ॥ सिवमनसोचइंद्रमनआनंददुखसुखविधिहिसमान॥दितिदुर्बल अतिअदितसुसुखमननिरखिसूरसंधान ॥ इति पद ॥

## अथ अश्वगिंदुकलीला पद ॥

रामलच्छइकओरभरतरिपुदमनलालइकओरभये॥ सरजूतीरस मस्तभागकरिगनिगनिगुनियांवांटिलये ॥ गिंदुककेलिकुसलहयच ढिचढिमनसिजसेवानिढोकिपये॥करकमलनिविचित्रचौगानैंखेलनिल गेषेलिरिझये॥व्योमविमाननिविविधिविलोकितखेलनिछांहछये॥भूर भागअनुरागउमगिजलसकुचिसकुचिसिरनैंनिनये ॥ इकलैंवढतएक धरिफेरतप्रेमप्रमोदविनोदमये ॥ एककहैंभइहालरामकीएककहैंभइ याभरतजये॥प्रभुवकसतगजवाजसाजसौंजैधुनिगगननिसानहये॥ते सेवगजाचिकभरिजीवनिफिरिनदूसरैंद्वारगये ॥ जामअवधिकरिजा चतब्रह्मातृजिगजौंननवठांमठये॥ तुलसीतेसमांनऊपरजेप्रभुकेनिज रंगानिरये ॥ पुनः पद ॥ झरोखैंझांकैदसरथरानी॥कौसल्यादिसुतनि केसुखकौंदेखतनांहिंअघानी ॥ नैनानिनीरपुलकउरआनंदकौतक रहींनिहार॥च्यारूंवीरअश्वगैंदुकमिलिखेलतराजकुमार ॥ ललकार तदुवटतअसितातेआवतदृष्टिनपारिहीं॥विज्जुलतासेपलटपलटहयलें लैगैंदनिकारिहीं ॥ वारतमातवसनभूषनमिलिवकसतनृपगजवाज ॥ भईविमाननिभीरअवधिपरिदेखतअमरसमाज॥अर्थधर्मअरुकाममो क्षयेमानहुंरूपधरैं ॥ नागररामचंदसवहीकेदृगनिकोतिमरहरैं॥पुनः पद ॥ खेलतअश्वगेंदुकवीर॥सत्रुघनअरुभरतलछमनरामसरजूती र ॥ सुभगअतिसमभूमिपरहयचपलपदगतिचार॥पत्रचलदलचलत

जनुंथरहरतमुक्ताथार॥ परसपरलैजातगेंदुककरतहथछुटदौर ॥ भ्रमतलोलपनरनिकोमनज्यौंनठहरतठौर ॥ उठतअंगझकोरसौंधेंकेलिश्रमचौगांन॥ टूटमोतीमालविथुरतचिकुररजलपटांन ॥ खेलिविचहसिहसिवहसकेवदतमधुरेबोल॥हियेनागररहोदसरथराजकुमरकलोल ॥ पुनः पद ॥ सोईखेलनिहारे॥उतरिउतारिचुचकारितुरंगनिसादरजायजुहारे ॥ वंधुसखासेवगसमाजसनमानसनेहसुहाये॥दियेवसनगजबाजसाजसुभभूसवभांतिसुहाये॥ मुदितनैंनिफलपायगायगुनीसरसानंदसिधारे ॥ सहितसमाजराममंदिरकोंश्रीरामरायपांवधारे ॥ नितिनितिमंगलमोदअवधिसवविधिलोगसंवारे॥ तुलसीतेसमानतेऊपरजेप्रभुचरितसुखारे ॥ इति पद ॥

## अथ रिषि विस्वामित्र अजोध्याआगमनि जाचंग्या पूरन पद ॥

नृपतिघरविस्वामित्रपधारे॥पदपदार्थव्हैंवैठतहीजाचंग्यावचनउचारे ॥ देतमहामखमांझनिसाचरअतिदुखदुष्टदुखारे ॥ तनसुंदरघनस्यामरामयेदीजैंसंगहमारे॥ रिखमुखवचननमान्योदसरथभयेमगनसरमोह॥जानीनहिंमानीजाचंग्यादुजमनउपज्योछोह ॥ फरकतअधरअरुनलखिलोचनरहीसभाभैपाय॥ मानौंविस्वप्रलयकेकारनरुद्रउठेअकुलाय ॥ भुवडगमगतविटपिउडटूटतदिग्गजधृतडिगुलाये जान्यौंअंतहिहोतअवधिपतिजववसिष्टसमुझाये ॥ अतिसुकुमारमनोहरमूरतगउरसांवरेअंग॥नागरिदासकुमरदोउदीनेंकरितपसीकेसंग ॥ इति पद ॥

## अथ विस्वामित्रसंगलीलापद ॥

सानुजभरतभवनउठिधाये॥पितासमीपसमाचारलैंमुदितमातपैं आये॥गदगदसुरतनपुलकअधरफरकतलखिप्रीतिसुहाये॥कौंसल्या लयेलायहृदयसौंवलिवालिकहतकछूसुधिपाये ॥ सतानंदप्रौहितअ पनौतोहितिनातपठाये॥कुशलक्षेमरघुवीरलछिनिकीललितपत्रिका लाये ॥ दलीतारिकामारिनिशाचरमखराषेतियतारी ॥ लैविरदसु फिरिगयेजनकपुरगुरसंगरहेसुखारी ॥ सजिपिनाकपनसुतास्वयंवर सवनृपकटकवटोरचो ॥ राजसभारघुवरमृनालज्यौंशंभुसरासनतो रचो ॥ यहसुनिसिथलसनेहवंधुदोउअंवुअंकभरिलीनें॥बारबारमुख चूंमिचापिकेंवसनन्यौछावरकीनें ॥ सुनतसवासनिचाहिअवधिघर घरआनंदवधाये॥तुलसीदासरनवासरहीसरससखीनिमंगलगाये ॥ इति पद ॥

## अथ यापदकी टीका प्रथमतारिकादि हतानि मखरिष्या पद ॥

असुरसुबाहुतारिकामारी॥सप्तश्रौसवीरासनराघवकरीजज्ञरखवारी॥ स्थापकधर्मअधर्मउथापकनागरराम उदार ॥ धनुषवानकरलियेप्रग टिभुवभक्तहेतअवतार ॥ इति पद ॥

## अथ अहल्या झींवर समय पद ॥

चरननिकीमहिमांमैंजानी॥प्रगटसिलातेंनिकसीसुंदरिपदपरसत गउतमरानी ॥ देखिचिन्हचकतभयोझींवरनावलइगहिरेपानी ॥

चरनप्रछालचढोतुमरघुवरदीनवचनवोलतवानी ॥ तरुनीमेरीतारोजोतुमहोयसकलकुलकीहानी ॥ कृष्णदासकटहरियाकेप्रभुकहाजानैंनरअभिमानी ॥ पुनपद ॥ पावनपदरजरघुवीरकी ॥ जापरसतसिलकोतनपलटयोगतिभईदेवसरीरकी ॥ ल्यावनावपेवटिबोलेप्रभुठाढेतटिनीरकी॥ चलेपलायफेरिनहिंचितवतसंकारामसधीरकी ॥ करतपरमगतिपरमकृपानिधितारिपतितभौभीरकी ॥ जातनाववैकुंठसघरणीकुटंवसहितकीरकी ॥ सेसमहेसनिगमनारदमुनिसेवाब्रह्मउजीरकी॥ परसाशुकसनकादिभजनरतिउरधरिगुनिगंभीरकी ॥ इतिपद ॥

## अथ जनकपुर प्रवेस उपवन विहार समय प्रथम दरसन पद ॥

जनकसुताउपवनमैंआई ॥ पूजनधनुषपहुपकेकारणसखीवृंदलैंधाई॥वेनावीनमृदंगसंगधुनिहोतमनोहरगान॥ चलवतचंवरसर्षीउडगनविचसियदुतिचंदसमान ॥ नूपुरसब्दविपनव्यापकभयोसकलरगमगीआनि॥ झूमझुंकावतद्रुमनिद्रुमनिछविकनकलतासीजानि ॥ इतरिपपठयेपहुपलैंनकौंअतिसुंदररघुवीर॥ भईअचानकभेटरूपकीपरीदृगनिपरभीर ॥ सजलकमलदलसेदृगइतउतरहेनिहारिनिहारि ॥ मनमथसरानिसुमारभयेदोउरहतसह्मारिसह्मारि ॥ कठिनफिरेअपनोमनदैंदैंसुधिकरिगुरजनकांनि॥ मननैननिलयोस्वादअलौकिकनेहरूपसरसानि॥ प्रीतजहांमर्जादरहतनाहिंयेमर्जादासागर॥इहिंरसकारननंदभवनतवप्रगटभयेनटनागर ॥ इतिपद ॥

## अथ स्वयंवर समय पद ॥

स्वयंवरजनकरच्योसीताजूकोब्याह॥ अतिअद्भुतकौतुकदेखत हीमिटतदृगनिकेदाह ॥ देसदेसकेनवनरेससुनिसुनिसववेसवनाये॥ हयगयसजदलदलतमहीथलमिलिसवमिथुलाआये ॥ भूपनिकोरू पदेखिगर्वगयोलोगसुविस्मयपाये॥ एककामसोतोहरजारचोएककोटि कामकिंहिंजाये ॥ तापीछेरघुवीरधीरलघुवीरसाहितपावधारे॥ उदित भांनजनुभवनभवनप्रतिदीपकफीकाफिकारे ॥ मदगजसेनृपचाहिच कितभयेओजमनोजसिधारे॥वालसिंधसमसुंदरअतिगातिराजतप्रान पियारे॥महामल्लसतअष्टकष्टकरिधनुषसभामेंआन्यौं॥करिकरिकोउ वलवंतवदनदसताहुकोभुजवलभान्यों ॥ नृपतिसमाजमध्यठाढोव्है यौंकहिदूतवषान्यो॥जोऐंचैसोवरैंजानकीजनकयहैंपनठान्यो ॥ ए कचापकोदरसकरतहींमिसहींमिसजुपलानैं॥ एकउठावतगिरतधर निधुकिओरहिआनजठानैं ॥ दसदससहस्त्रगजानिकोवलनृपतेऊ निपटांषिसानैं॥देखिहसेदोउवीरपरसपरलागतपरमसुहानैं ॥ तवरघु वरनवघनमूरतिश्रीसियतनमुरिमुसिक्यानैं॥दामिनिसोपटकटिलपे टछविसोचालिचापनिरानैं ॥ तिंहिंछिनअंधवृद्धनरनारीसुरमुनिरा जारानैं॥भईभीररघुवीरकेकौतुकदेषनिकौंउररानैं॥झटदैंलैंचटदैंच ढायतटदैंधनुतोरिगिरायो॥ जनकमुदितजुवतीमुदितसियकोवप्रान घटआयो ॥ जैजैजैसवकहत्तअमरगनपहुपनिअंवरछायो ॥ नंददा सवलिवलितिंहिंऔसरघरघरमंगलगायो ॥ इतिपद ॥

## अथ विवाह समय तथा अयोध्या प्रवेस समय पद ॥

च्यारदूलहवनेकुंवरअवधेसकेचलेब्याहनिअलीजनकनृपकेसद

न॥मुहेवागेवनेसरससौंधेसनथकितव्हैंरहिगयोनिरखिसोभामदन ॥ सोहैंसिरसेहराषचतनगजगमगतलगतकमनीयअतिविमलविधुसेव दन ॥ पातवीरागरैंलसतहीरापदकदमकिमुसक्यानमैंसिषरमानिसेर दन ॥ विविधिभूषनवसनसजीचतुरंगिनीलगीचकचौंधसीमिलेदि नमनिकिरन॥ नटीछविजटीसवनचततपतनिचढीवजतनौवतमिलो सकलवाजनिपरन ॥ जनकपुरघरनगरडगरवनवाटकानिषाचितम निकोसकैंताकीसोभावरन॥ सवहीसंपतभरचोव्याहकौंदेषिकैंअवाहि मानौअमरपुरउतरिआयोधरनि ॥ लैकैंजनवासतैवागरचनाभईप रषगजअश्वकपिऔरकौतकघनें॥ अगनिकेजंत्रतहांछुटानिलागेअग निधरगगनजोतिमयमनहुतिंहिदिनठनें ॥वाजगजवसनअरुविविधि भूषनसवैंतनकहुनथाकहींदेतमंगदजनैं ॥ स्तुतिकरैंबंदीजनविरदव रनैंनये॥ मिलेमांगदसबैंदुहूंबंसनिभनैं ॥ बडडेअश्वनचढेकुंवरसंम दवढेपढेकेकांनअसनचतलियेमानकौं॥उततैंसजिसेनानिजजनकनृ पप्रेमतैंलैंनआयेसह्वैंजानमानिजानकौं ॥ समधीसमधींमिलेप रसपरप्रीतिषिलेनारिमिलिगारिदैंकरनिलगीगानकौं॥ अटानिचढिपु रवधूवारैंभूषनबसनदेषिकैंविबसभइरघुबंसभानकौं॥ पौरिपहुंचेतहां चारुतोरनवंधेगजनचढिषडगसोंजायपरसे॥उतरिभीतरगयेगजसुने गानिलयेसब्दजयजयभयेकुंवरदरसे ॥ राहिसपुरनारिसववारिसरव सकहैंदेहधरेच्यारनृपपुन्यपरसे॥ जनककुलप्रोहितनिआयकरिआर तीतिहिंसमैंहेमसभमोतीवरसे ॥थारमनिमानिकनिभरचोमंत्रनिस्वरो तिलककरिदुजवधूअछितलाये॥ चातुरनिपातुरानितिंहिंसमैंसोहिले अधिकमनमोहिलेमधुरगाये ॥ सफलकरिलेखनैंनैंनकारिपेषनेंदेखनें

देवदिगपालआये॥ विविधिअद्भुतवनेंघनेंनभजानसोंदिसाविदिसआ
कासससकलछाये ॥ व्याहमंडपतरैंजायठाढेभयेयथाविधिदुजवरन
व्याहठान्यौं॥ च्याररचिमाढयेतिन्हैंतहांलैंगयेकंन्यावरजोग्यतहांआ
निवान्यौं ॥ लायपटगांठिपरसायकरदुहनिकेवनावनीपरसपरमोद
मान्यौं ॥ फेरालिवायजूअगनकौंसाखिदैंछाडयोनृपकन्यकादानपा
न्यौं ॥ दुगधओदनतहांपरसपरकौंमदैंनबलजुवतीजुवावहुतहरषे॥
उंहीमिसनिरखिसुखसरदउडराजसेअवधिमहाराजसुतचित्तकरषे॥
कुंवरिहूउहीमिससुघरवरवरनलखिअपअपनैंजोग्यनिजनाहपरषे॥
तिहींपुरतिहींदिवसपरममंगलभयोसंकभइलंकघनरुधिरवरषे॥ दु
जनिदइदक्षिनाग्रामगजतुरंगरथरतनपटवरनेवेजानकापैं॥ पोलिभं
डारदयेभूपसबआपनैंलेहुजाचिकजुलयोजायजापैं॥करीज्यौंनारअ
सचतुरविधिभोजनानिरुचिसौंजैंवैजदापिबहुरिधापैं॥पूजिकुलदेवकौं
षेलिजूवातहांबिछायदयेपलकाजायबैठेंतापैं ॥ बिबिधिदयेदायजे
करीपहिरावनीअवधिभूपालभयेअधिकराजी ॥ इनहूंपुनिजाचक
निदियेअतिमोदसौंअनगनितबसनमनिनागबाजी ॥ चलेलैंदुलह
निकुमरनिजनगरकूंचढीबडीफौजसोअधिकछाजी ॥ चहूंदिसब
जिउठेबिबिधबाजेघनैंघनज्यूंगंभीरनौबतजुगाजी ॥ आयपहूंचे
कितिकदिनानिअवधिकूंअवधिनवनिधिभरीपटनिछाई ॥ कियोप
रवेसतवकारिकेगंठजोरतहांसुघरवरनवकिसोरचारूंभाई ॥ साजि
कैंआरतीजननीतीनूंतबैंजुवतीजनसंगलैंसाम्हैंआई ॥ आरतीकरी
जुपुनवारिमनिमानकनिवृंदावनप्रभुनिकिलईबलाई ॥ इतिश्रीदस
रथप्रागटिकुंवरसमयचारित्रपद ॥

## अथ श्रीदसरथ पश्चात श्रीराममहाराज समय ॥

॥ दोहा ॥ औरकथाकरुनामई, मैंनलिषीहैंजांन ॥ अबैंबीररस धरतपद, रावनहतनिबिधान ॥ १ ॥

## अथ सिया सुधि लैंन हनूमान समुद्र उलंघन समय पद ॥

तबैंइकअंगदबचनकह्यो । तरिकैंसिंधुसुधिलैहैकिहिंबलइतोलह्यो ॥ इतनींबातश्रवनसुनिहरष्यो, हसिबोल्योजामंत ॥ यादलमध्यप्रबल केसरीसुत, जाहिनामहनुमंत ॥ जोमनकरैंएकवासरमैं, छिनआ वैंछिनजाय ॥ स्वर्गपतालआहिताकौंगम, कहियेकहाबढाय ॥ यह लैहैंसीतासुधिपलमैं, अरुऐहैंजुतरंत ॥ इंहिंप्रतापत्रिभुवनकोपायो, याकेबलहिनअंत ॥ जबैंबुलायसुचितचितव्हैंकह्यो, बच्छतंबोराहि लेहु ॥ ल्यावहुजायजनककन्यासुधि, रघुपतिकोंसुषदेहु ॥ पौरपौ रप्रतिफिरहुबिलोकत, गिरकंदरबनगेहु ॥ लेहुबिचारिमुद्रिकादी जहु, सुनिहुमंत्रसुतएहु ॥ धरिअहिपत्रसीसमारतसुत, करचोचौ गुनोगात ॥ चढिगिरसिखरबचनइकउचरयो, गगनउठ्योआघात ॥ कंपतसिंधुसेसवसुधानभ, रबिथंभ्योउतपात ॥ मानहुंमेरपच्छहैंलागे, उड्योअकासहिजात ॥ चकृतभयेपरसपरबनचर, बीचकरीकिल कार ॥ तहांनिसाचरीमिलीजुअद्भुत, करिआतिमुखबिस्तार ॥ पवनपूतउरपैंठिबिदारी, तबहींलगीनबार ॥ सूरदासस्वामीप्रतापतैं उतरयोजलनिधिपार ॥ २ ॥ इतिपद ॥

## अथ हनूमान लंका प्रवेस सियासोधन तथा दरसन संभाषन मुद्रिका दैन बिपुन विध्वंसन असुरसेना हतन रावन संभाषन पुरी प्रजारि लांगूलसांतकरी आयपुनजानकी पद परस करनसमय पद॥

हनुमानलंकाजुसिधाये॥ सूछमतनकरिभीतरआये॥ पुरगिरसकल कंदराहेरी कहूंदृष्टिनाहिंआई॥ बिपुनअसोकासिंसपाद्रुमतर जनकसुतातहांपाई॥ करिप्रनामअरुदईमुद्रिका कहीकथाजोरामकहाई बागविध्वंसहतेदानवदल सदृढबचनकहिलंकजराई॥ बहुरआरसीतापदपरसे पहिलेउदधिलांगूलबुझाई॥ नागरीदासकह्योआग्या ह्वैं जायकरौंदरसनरघुराई॥ ३॥ इतिपद॥

## अथ हनूमान प्रति संदेस कहन पद॥

देषैंहोकपिजातसंदेसकहांहौंकहौं॥ सुनिकपिइनप्राननिकोपहिरोकवलगिदेतरहौं॥ एअतिचपलचल्योईचाहतकरतनकछूविचार॥ लैलैंनामजतनकरिराषतरोकिरोकिमुखद्वार॥ बारबारअकुलायकहत हौंडरपतहौंहनुमंत॥ नांहितसूरसुनोकाहूको दुषकरुनामयकंत॥ ॥ पुनपद॥ मेरीओरतेबिनतीकीबी॥ पहिलेनामसुनायपायपरिमानिरघुनाथहाथलैंदीबी॥ मंदाकिनितटफटाकिसिलापरिसुमरतसुर

तहोतउरअरनी ॥ कहाकहौंकपिकहैंबनैंअब, मुखमुपजोरीतिलक कीकरनी ॥ तुमहनुमंतपुनीतपवनसुतकहियोजायज्ञुहैंमैंबरनी ॥ सूरसुनैननिआनिदिषावहुमूरतदुसहदोषदुषहरनी ॥ इतिपद ॥

## अथ हनूमान रघुपति ढिगआय विज्ञप्ति करनि पद॥

रघुपतिवेगजतनअबकीजैं ॥ बांधिहुसिंधुवेगसुभटनिकौं आपुनिआयसुदीजैं ॥ तौलौंबिगतरौंयापौकौं द्रुमपाषाननिछाय ॥ दुतियसिंधसियनैननिकोजल जबलगींमिलैंनआय॥ यातैंविनतीकरतकृपानिधि बारबारअकुलाय ॥ सूरदासअकालप्रलयप्रभुमेटोदरसदिषाध ॥ इतिपद ॥

## अथ श्रीरघुनाथ उदधिउलंघन समय पद ॥

उदधितटउतरतरामउदार ॥ रोषावेषकियेरघुनंदनसबाविपरीत व्यौहार ॥ सागरपरिगिरिगिरपरिअंबरकपिघनकैंआकार ॥ गरजाकिलकिआवातउठतमनुदामिनपावकझार ॥ उमडतसललिसमातनसलतनिचलतउलटिकैंधार ॥ मनुरघुपतिभयभीतिसिंधुपरिपतनीपठईप्यौंसार ॥ सेनासेतगगनमारगअरुचढिजलचरबिचवार ॥ सीयसुगनसुभहोतसूरप्रभुजलनिधिउतरेपार ॥ इतिपद ॥

## अथ रावनप्रति मंदोदरीबचन पद ॥

सरनपियजाइयेमनक्रमवचनविचारि ॥ ऐसोकोसमरथत्रिभुवनमैंजोअवलेहिउवारि ॥ सुनिसिषिकंतदंततृनधरिकैंसहपरवारासिधारो ॥ परमपुनीतिजानकीसंगलैंकुलकलंकिनिटारो ॥

एदससीसचरनतरराषोतजिमातिकुटिलअधीर ॥ मेटैंगेअपराध महाप्रभुकृपाकरानरघुबीर ॥ जिहितोरिधनुषमुखमोरिनृपतिकौं सियास्वयंवरकीनौं ॥ छिनइकमधिभृगुपतिप्रतापबलकरषिहृदोहरलीनौं ॥ लीलाकपटकनकमृगमारचोवध्योबालअभिमानी ॥ सोईदसरथकुलचंदअमितबलआयेसारंगपानी ॥ जाकोदलसुग्रीवसुमंत्री प्रबलजूथपतिभारी ॥ महासुभटरनजीतिपवनसुत निडरबजरबपुधारी ॥ करिहैंपंकलंकछिनभीतरबजरासिलालैंधाय ॥ कुलकुटंबपरवारसहिततोहिवधतविलंबनलाय ॥ अजहूंबलगिनकरि संकरकौंमानिबचनसुनिमेरो ॥ जायमिल्योकौसलनरेसकौंबंधुविभीषनतेरो ॥ कटकसोरमंदोदरसोदिसदेखतकपिदलभीर ॥ सूरस्वामिरघुवंसतिलकदोऊउतरेहैंजलनिधितीर ॥ इतिपद ॥

## अथ अंगदसंधिसंदेसार्थरावनढिगआवनवर्णन ॥

पद॥ बालनंदनवलीविकटवनचरमहाद्दाररघुवीरकोवीरआयो॥ पौरतैंदौरिदरवानदसमाथसौंजायसिरनाययौंकहिसुनायो ॥ सुनि श्रवणदसवदनसदनअभिमानकैंनैनकीसैनअंगदबुलायो॥ विविधि आयुधधरेसुभटसेवैंखरेछत्रकीछांहनिर्भयदिखायो ॥ देखिहरिवप्पलं केसहरहरहस्योसुनहुभटकटककोपारपायो॥ देखिदानवमहाराजरावनसभाकहनकोमंत्रजवकपिपठायो ॥ रेरंकरावनकहांडकतेरोइतो दौरिकरजोरिविनतीविथारो ॥ परमअभिरामरघुनाथकेरोमपरवीसभुजसीसदसवारिडारो ॥ कोपिकरिबालगहिकाललंकाधिपतिरे मूढरामकौंसीसनाउं ॥ सिंभुकोसपतकपिकुपथकायासकलरदास

आकासवनचरउडांउ ॥ फेरिकैंचरनहैंपंचसिरपहुमिदैसबनिदेखत अरेअबसंधारौं ॥ जानकीनाथकेहाथतेरोमरनकहामतिमूढतोहिबी चमारौं ॥ तोहिवनचरअबहींदंड़दैहूंदेखिकोपिअनचरनिआज्ञाउचा री ॥ तिहींछिनबालसुतझपटपटमुकटलैपटकिभुवअसुरभयोगगन चारी ॥ मारिअसुरनिसभाजीतिपुरकनककीतेजहरिचक्रसमछोह छायो ॥ सूरप्रभुसुभटलंकेसकीलाजलैरामपदकमलसिरआयनायो॥ इतिपद ॥

## अथ रघुबीर वीर उच्छाह उच्चारनि पद॥

दुसरेकरवाननलैहौं॥ सुनिसुग्रीवप्रतंग्यामेरीएकहिबानअसुरसव हैंहौं ॥ सिवपूजाजिंहिंभांतिकरीहैसोपंकतिसिरसंततजैहौं ॥ करतप्र हारपापफलवर्जितसिरमालाकुलसहितचढैहौं ॥ करौंनविलंबकछू जोछिनइकअरिसनमुखव्हैपैहौं ॥ जैसेतूलज्जुपरतअगनिमुखजारि जडनिजमपंथपठैहौं ॥ यौंवधदुष्टदेवदुजमोचनलंकविभीषनतोकौं देहौं ॥ सीतासहितबंधुसूरप्रभुकृतपनपारिअजोध्याअैहौं॥इतिपद॥

## अथ जुद्धसमैं रावनहतन पद ॥

आजुअतिकोप्योहैंरनराम॥ब्रह्मादिकआरूढविमाननिदेखतसुर संग्राम॥घनतनकवचवीरवरसाज्यौंकरसाज्यौंसारंग॥ सुचिकरिसक लवानसूधेकरिकटितटिकस्योनिषंग ॥ छुभितसिंधुसेससिरकंपतिप वनभयोगतिपंग ॥ इंद्रहस्योहरहसिविलखानेजानिबचनकोभंग ॥ टूटतध्वजापताखछत्ररथचापचमूअसत्रान॥सोभितसुभटजरतमानौं दौंद्रुमबिनसाखापान॥ घनअंबरदसहूंदिसवाढीसायककिरनसमान

मानौंमहाप्रलयकैंकारनउदितउभयषटभान ॥ श्रोणछिंछउछरतअकासलौंगजवाजनिसरलागि ॥ मनहूनगरतृणघरनिधरनितेउपजीहैं अतिआगि ॥ उठिकंमंधभहिरायभीतव्हैंपरतवजनुजरिजागि॥फिरतसृंगालसिलोसौंकाढतचलतवासिरलैंभागि ॥ रघुपतिरिसपावकप्रचंडभइसीतास्वाससमीर॥ रावनजुतकुलसघनवेणुवनऔरुसुभटरनधीर ॥ होतभस्मकछुवारनलागीज्यौंज्वालापटजीर॥ सूरदासप्रभुविपुलबाहबलछिनकमांझकियेकीर ॥ इति पद ॥

## अथ श्रीरामविजयसियामिलनि पद ॥

बाढ्योआजुलोकानंद॥ मिलतसियसुखचंद्रिकाचलिअमलरघुपतिचंद ॥ संषपटहिनिसांनमंगलगानरवऊच्चार ॥ विभीषणहनुवंतआगैंभक्तिजनप्रतिहार ॥ धायआयेश्रवनसुनिसुनिसकलहरषितगात॥भालकपिअनगनतसेनादरसहितउतरात॥ दारछरीप्रहारआगैंनांहिपावतजान ॥ कह्योतबसबहिनप्रभूसौंवराजियेहनुमान ॥ तबैंसिविकाछांडिसीताचलीआग्यापाय ॥ रामदलबादलनिबिचमनुदामिनींदरसाय॥ उडीरेनुआकासपूरतकटकभटबहुसाथ ॥ दासनागरमिलेआनंदजानकीरघुनाथ ॥ इतिपद ॥

## अथ अयोध्या आगमनि आनंददैनार्थ हनूमानपठावन पद ॥

वेगपवनसुतकूंदसरथसुतआनंददैनपठाये॥ कुसमविमानतैंउतरिवीरकपिनरवपुधरिकैंधाये॥ गुहिकूंसमाचारकहिकैंफिरिकहैंभरथकूंजाय॥मारिलंकपतिकौंसीतापतिआयेहैंरघुराय॥सुनिकैंमुदितचकृत

चितवतहैंमुखतेकढैनवैन ॥ आयेसिमिटितबैंश्रवनानिमैंमनव्रतप्रानरु नैंन ॥ मिल्योजायतबकृपासिंधुसौंभरतभक्तिजलसोत ॥ नागरीदासरामपदसेवततिन्हैंक्यौंनसुखहोत ॥ इतिपद ॥

## अथ विमान दरसन निकट आगमनि पद॥

देखोरामराजाव्हैंआवत ॥ दूरहितेंदुतियाकेससिलौंपुरजनव्योमविमानबतावत ॥ सीयासहितवरवीराविराजतअवलोकतआनंदवढावत॥ अगैंबंदरभीरमहाभटज्यौंघनगगनपवनवसधावत ॥ निकटनगरजियजानधरच्योधरजनमभूमिकीकथाचलावत ॥ यहममजनमभयहैंप्रजाजूप्रियजनआपकपिनिकहिकहिसमुझावत ॥ यहवसिष्टकुलपूजिहमारेपालागिहुसबसखनिसिखावत ॥ यहस्वामीसुग्रीवविभीषणभरतहुतेमोकूंजियभावत ॥ कोजानतोकहांदशरथसुतवनजुगयेकछुबातनआवत ॥ सबकीरतिकीअवधिइहालौंबरनतअंगजहांहदोजडावत ॥ रिपुहनिदेवकाजसुखसंपतिसकलसूरइनहीतैंपावत ॥ इतैंमानकरिकृपाकृपानिधिसुरपैंठतजनकौंजसगावत ॥ इतिपद ॥

## अथ अजोध्यापुरीप्रवेसानंद पद ॥

आजसखीअवधिपुरमध्यमंगलमहा ॥ सकलसुरनरानिमनमोदवरनोकहा ॥ कदलीकंचनकलसविमलनौरतनजुतदीपतदीपावलीलसतलाजा ॥ द्वारतोरनिरचितधामधामनिधुजापुरीप्रवेसितसियारामराजा ॥ घटनिसीअटनिद्युतिदामिनीकुलवधूगानधुनिकरतमुनिमननिकरपैं ॥ परमउत्सवभरीअवधिपरअमरगनगगनतैंरसमगनकुसुमवर

पैं ॥संगरघुवीरलघुवीरसेनासहितवजतवादित्रचहुंधांसुहाये॥ नागरीदाससुषरासरघुकुलतिलकदेवकारिकाजनिजराजआये ॥इतिपद ॥

## अथ कविबचनफल स्तुति ॥

॥ दोहा ॥ पढैंसुनैंयाग्रंथकूं, घरीएकदिनजाम ॥ जाकेहियनितप्रतिबसो, सियारामअभिराम ॥ इतिपद ॥

॥ दोहा ॥ संमतअष्टदससतजुषट, हिंडनिसलितातीर ॥ नागरपदचुनिचुनिकियो, ग्रंथचरितरघुवीर ॥ इतिश्रीग्रंथरामचरित्रमाला संपूर्णम् ॥

# अथ मनोरथ मंजरी ॥

दोहा ॥ मोनैंननकीठौरकौं, कवलैंहैंवहरूंध ॥ तीनतापसीतलकरन, सघनतरुनकीधूंध ॥ १ ॥ कववृंदावनधरनमें, चरनपरैंगेजाय ॥ लोटिधूरिधरिसीसपर, कछुमुखहूमैंपाय ॥ २ ॥ पिककेकीकोकिलकुहुक, वंदरबृंदअपार ॥ ऐसेतरुलखिनिकटतैं, कवमिलिहौंवांहपसार ॥ ३ ॥ कवैंरसीलीकुंजमैं, हौंकरिहौंपरवेस॥ लखिलखिलताजुलहलही ॥ चितव्हैंगोआवेस ॥ ४ ॥ प्रियपरकरकेसुघरजन, विरहीप्रेमनिकेत ॥ देखकबैंलपटायहौं, उनतैंहियकरहेत ॥ ५॥ मोकौंलैंएकंतमैं, मिलिमिलिरासिकविसाल ॥ कवैंसुरतनवकुंजकी, कहिहैंवातरसाल ॥ ६ ॥ कछुमोहूमैंप्रेमलषि, तवऔरनतैंफाट ॥ कवैंपुलिनलैजाहिंगे, करनमानसीठाट ॥ ७ ॥ जमुनातटनिसिचांदनी, सुभगपुलिनमेंजाय ॥ कबएकाकीहोयहौं, मौनवदनउरचाय ॥ ८ ॥ जुगलरूपआसवछक्यो, परेरींझकेपांन ॥ ऐसेसंतनकीक्

पा, मोपैंदंपतिजांन ॥९॥ कवैंझुकतमोओरकौं, अैहैंमदगजचाल॥ गरवांहिदीनेंदोऊ, प्रियानवलनंदलाल ॥ १० ॥ सिरझलकतमंजुलमुकुल, कटिलौंलटरहिछूटि ॥ सोभितललितलिलाटकैं, उभैंभौंहकीजूटि ॥ ११ ॥ तामधिवैंदीरतनकी, तरमुकताकीहाल ॥ नैंनछकौंहैंकछुअरुन, सुंदरसरसविसाल ॥ १२ ॥ कुंडलझलककपोलपर, राजतनानाभांति ॥ कबइननैंननिदेषिहौं, बदनचंदकीकांति ॥ १३ ॥ ऊंचीनासापरसजल, चमकतमुकताचारु ॥ करतबुलाकहलाकमन, रहिहैंनांहिसंभारि ॥ १४ ॥ हायअधरकीअरुनई, मनलोभीकौंदाम ॥ हैरिवैरीलाजकी, धीरभगावनभाम ॥ १५ ॥ दमकदसनिईपदहसनि, उपमासमसरहैंन ॥ फैलिपरताकिरनानिनिकर,कबदेषौंइननैंन ॥ १६ ॥ गडरबांहसुठिग्रीवपर, चूरीहरीरसाल ॥ इननैंननिकबधौंलषौं, चूंमतझुकिझुकिलाल ॥ १७ ॥ वाहुजुगलकवदेपिहूं, भूषनवलितसलोल ॥ रीझरीझमनविवसव्हैं, छापीतियनितमोल ॥ १८ ॥ कमलपांनसुंदरीचमक, विमलसौरईबीच ॥ लपटांनोंनिसदिनरहैं, कुचकुमकुमकैंकीच ॥ १९ ॥ कवैंनवलयाकरकमल, मुसकिगहैंगेस्याम ॥ रोमऊठितनकंपव्हैं, कसकिजगैंगोकाम ॥ २० ॥ सुभगउरस्थलपरहरैं, मोतीलरैंविसाल ॥ स्यामकलेवरपरकिरन, हालकरतबेहाल ॥ २१ ॥ सेलीमुकतावलिविचैं, रोमावलिकोहाय ॥ सुधिआयेमारतमदन, देपीकैंसैंजाय ॥ २२ ॥ महाछीनकटिकिंकनी, मदपंडततनकाम ॥ सोअबकबहौंदेषिहौं, लाजबहावनवाम ॥ २३ ॥ अतिसुढारजुगजंघरी, कहावरनौंमतिपंग ॥ पटपीरेंझीनैंतरैं, झलकतसांवररंग ॥ २४ ॥ पीरीधोतीकीअहो, प

दुलीअतिछबिदेत ॥ साफफबितबनमालमधि, रसिकजननमनलेत ॥ २५ ॥ चरनलंकछबिपंकमैं, मनगजअरुझतकोट ॥ तापैनूपरकिरनपर, बंधीरूपकोपोट ॥ २६ ॥ नषनिचंदद्युतिमंदकी, अंगुरिनअनवटपांति ॥ तरीमहावारिसौंभरी, हरीअरुनमनकांति ॥ २७ ॥ वदनविलोकतलालको, अंषियांकहाअघाय ॥ लाजनिगोडीदृष्टिकौं, सगतिपारिहैंपाय ॥ २८ ॥ सिषनषलौंकबदेषिहौं, रूपहासिमृदुमंद ॥ ताकौंचितवतहीलुटत, कामचरननषचंद ॥ २९ ॥ जोमनअरुझ्योरूपहैं, क्यौंहूंकहतवनैंन ॥ रसनाकैंतोमननहीं, मनकैंरसनांहैंन ॥ ३० ॥ अवैकहाकहिहौंअहो, राधारूपरसाल ॥ ताकीकछुभुवभंगमैं, मोहनमदनविहाल ॥ ३१ ॥ जुगलरूपऐसोचितैं, गिरिरहोतनसुधिभूल ॥ वेनूपरझनकायकैं, जैहैंजमुनांकूल ॥ ३२ ॥ तबदुषदाईहोयगो, मोकौंविरहअपार ॥ रोयरोयउठिदोरिहौं, कहिकहिकितसुकुंवार ॥ ३३ ॥ ठहरिठहरिउठिहौंअहो, भहरिभहरिअतिरोय ॥ हियेषरकऔसेरकी, सुधिसबदेहैंषोय ॥ ३४ ॥ तादिनहीतैंछूटिहैं, षांनपांनअरुसैंन ॥ छीनदेहजीरनवसन, फिरिहोंहियेकुचैंन ॥ ३५ ॥ नैंनद्रवैंजलधारहैं, उषटतलेतउसास ॥ रैंनअंधेरीडोलिहौं, गावतजुगलउसास ॥ ३६ ॥ चरनछिदतकांटेनतैं, स्रवतरुधिरसुधिनांहि ॥ पूछतिहौंफिरिहौंभटू, पगमृगतरुवनमांहि ॥ ३७ ॥ हेरतटेरतडोलिहौं, कहिकहिस्यामसुजान ॥ फिरतगिरतवनसघनमैं, यौंहींछुटिहैंप्रान ॥ ३८ ॥ प्रानछूटिनिसिरासिमैं, अप्राकृतमिलिदेह ॥ माधिपरकरकैंदेषिहौं, सदाजुगलकोनेह ॥ ३९ ॥ कवैंमनोरथसिद्धए, व्हैहैंमेरेलाल, सतसंगतितेंदूरिनाहैं ॥ जांनैंरसिकरसाल

॥ ४० ॥ ताहिदयोसतसंगहारि, जासौंकछुराष्यौंन ॥ प्रगटभागवत कहतहैं, कहतयहैंकथहौंन ॥४१॥ जाहिकुसंगतिलैंदई, तापैंपूरनरोष ॥ जनमजनमनहिंछूटिहैं, तीनतापदुषपोष ॥ ४२ ॥ हरिमिलबो मानतनहीं, सतिसंगतिसौंकूर ॥ वासौंजोफिरिहितकरैं, ताकेमुषमैं धूर ॥ ४३ ॥ परममित्रआग्यादई, मेरेहूहितवास ॥ नवलमनोरथ मंजरी, करीनागरीदास ॥ ४४ ॥ संवतसतरासैंअसी, चोदसिमंगल वार ॥ प्रगटमनोरथमंजरी, वदिआमूअवतार ॥ ४५ ॥ जोबांचैंसी पैंसुनैं, रीझिकरैंफिरिप्रष्ण ॥ सोसतसंगतिकीजियो, पहौंचैंजैश्री कृष्ण ॥४६॥ इतिश्रीमहाराजाधिराजश्रीसांवतसिंघजीकृतमनोरथ मंजरीसंपूर्ण ॥

# अथ पदप्रबोध माला ग्रंथ लिख्यते ॥

## प्रथम मंगलाचरन हरिसुजस प्रचुरिकीर्तन कर्ताभक्तिजनानि प्रति स्तुति ॥

॥ पद ॥ मेरेयेईबेदव्यास ॥ श्रीहरिवंसरुव्यासगदाधरपर मानंदनंददास ॥ श्रीहरिदासबिहारनिदासबिठ्ठलबिपुलसुजान ॥ रामदासनाभादामोदरअलिभगवानसषीभगवान ॥ दासचतुर्भुज दासमेहापुनश्रीभटचतुरविहारी ॥ प्रीतमरासिकरासिकवल्लभअरुध्रुव रसरीतउचारी ॥ तुलसीदासमीरांमाधवअरुउभैंनागरीदास ॥ आ सकरननरसींवृंदावनरुचिमाधुरीसुषरास ॥ कृष्णदाससूरगोविंदअ रुकुंभनछीतुस्वांमिअनुरक्ता ॥ श्रुतपुरानमेरेंइनकेपदहौंश्रोताये

वक्ता ॥ तजिइनकेपद अर्थसुनैंकोनानामतबिभचार ॥ मूलसास्त्रसि धकयैंहिरैंपदछाडिअमृतफलसार ॥ रसनाश्रवननिमैंइनकेपदरहो हियमैंनिर्दूषन ॥ नागरियाइनकीपदरजसेहोहुभालमोभूषन ॥ १ ॥ ॥ इतिस्तुतिपद ॥

## अथ हरिविस्मर्न कर्ता नर बाल अवस्थावर्नन ॥

॥ पद ॥ जनमतजनमतकोदुषभूल्यो ॥ विसरगयोकरुणा निधिकेसवबालकेलिरसझूल्यो ॥ कबहुकरोवतहसतकबहुमिलिसि सुमतिमूढमहा ॥ भलीवुरीहूसमझतनाहींहरिगुनलहैंकहा ॥ बालाप नसवयौंहीबीततनांहिस्यामसुधिआवैं ॥ नागरहोयतरुनतरुनीसंग फिरिहरिकूंविसरावैं ॥ २ ॥ इतिबालअवस्था ॥

## अथ तरुन अवस्था ॥

॥ पद ॥ तरुनभयोतरुनीसंगराच्यो ॥ धनकैंकारनधनउप जावताबिबिधिभांतिनटकपिज्यौंनाच्यो ॥ मोहमगनविषियार सलंपटनिसिदिनजातनजानैं ॥ तनकैंजोरमरोरमत्तमनदेहअमर ज्यौंमांनैं ॥ स्वारथहेततज्यौपरमारथनिजगृहकाजप्रबीन ॥ अप नौंकियोबृथामानतसबनागरहरिआधीन ॥३॥ इतितरुनअवस्था ॥

## अथ वृद्धअवस्था ॥

॥ पद ॥ जीवतमृतकव्हैंगयोबृद्ध॥ होतनहींस्वारथपरमारथइंहिं जीबेमैंकहासिद्ध ॥ उगलतकफषांसततनकांपतदेहबुद्धबलनास्यो॥ सबइंद्रिनिकीसक्तिघटिगईतनबहोरोगप्रकास्यो ॥ लेटचोरहैंप्रजंक द्वारबिचउदरअहारनपचहीं ॥ जुराजरतमृत्यागमआयोतऊनहारे

सौंरचहीं ॥ पहिलैंसाधनकीनौंनांहीरहिसाधनकेसंग ॥ नागरीदास लगैंअवकैंसैंकृष्णभक्तिकोरंग ॥ ४ ॥ इतिवृद्धअवस्था ॥

## अथ मरनगति दोष बिस्मर्न दसा ॥

॥ पद ॥ कहांवेसुतनातीहयहाथी ॥ चलेनिसानबजायअकेले तहांकोउसंगनसाथी ॥ रहेदासदासीमुखजोवतकरमोंडैंसबलोग ॥ कालगह्योतबसबहिनछाडयोधरेरहेसबभोग ॥ जहांतहांनिसदिन विक्रमकोभट्टथट्टविरदत्त ॥ सोसबबिसरिलगेएकैंरटरामनामककहैं सत्त ॥ बैठनदेतहुतेमाषींहूचहुंदिसचंवरसचाल ॥ लयैंहाथमैंलट्ठाता कोकूटतमित्रकपाल ॥ सौंधैंभीनैंगातजारिकैंकरिआयेबनढेरी ॥ घरआयैंतैंभूलिगयेसबधनमायाहरीतेरी ॥ नागरीदासबिसरियेनां हीं यहगतिअतिअसुहाती ॥ कालव्यालकौंकष्टनिवारनिभजिहरि जनमसंगाती ॥ ५ ॥ इतिमरणदसा ॥

## याभांति तीन्यूं अवस्था सतसंग बिन बिषियानं दकी आसाही आसामैं षोई तहां परि पद ॥

नरकोजनमबिगारतआसा ॥ स्वारथदावअठारैंचहियनुतीनप रताविचुपासा ॥ यहजगहैंचौपरकीबाजीअपनैंबसनाहिंण्याल ॥ ना गरीदासकरोसतसंगतछाडिजगतजंजाल ॥ ६ ॥ पुनःपद ॥ क रियतुवृथामनकीदौर ॥ जियचहतइतऔरहीउतहोतऔरकीऔर॥ छीनआयुसुहोतनितलनकालव्यालकोकौर ॥ दासनागरव्है निवृत बसबासतीरथठौर ॥ ७ ॥

## जब आसापूरन होतनांही जबजिय अतिदुषकों परासहोय तहांपरि सिछ्या ॥

पद ॥ अबजियकाहेकूंदुषभोवैं ॥ कबहुकहरषसोककबहूंव्हैंक बहुहसैंकबहूरोवैं ॥ याजगमैंहैंयहीतमासाऐसैंहींनितहोवैं ॥ नागरीदासभजिक्नूनंदनंदनजनमवृथामतषोवैं ॥ ८ ॥

भाषा—जद्यपि आसाहू धनादिक करिकैं पूरनहोय अरु सबतें बडो कहावैं तउसतसंग बिन सुख नांहि ज्यौं अधिक बडो होय त्यौं दुखहू अधिक बडो होत जाय इंद्रपर्यंततहांपरि ॥

पद ॥ सबदुखबडेकहांयेंहोय ॥ इंद्रसबमैंबडोकहियतुरहतानितिदुषभोय ॥ उग्रतपरिषिकरतसुनिकैंलुटतसेजअंगार ॥ असुरडरअमरावतीतजिभजतबारंबार ॥ ब्रह्महत्यातैंपलानैंदुरेकंवलमृनाल ॥ अंगभगमंडितभयोगिरिगयेवृषणबिहाल ॥ बुझ्यादीपकबडोजैसैंबड़ोकहियतुभूल॥मानिलघुहरिसरननागररहैंसोसुपमूल॥९॥

भाषा—यातैं सर्वथा सतसंग करि हरिसरनरहिये तहांपरि

पद ॥ सबसुषस्यामसरनैंगयैं ॥ औरठौरनकहुंआनंदइंद्रहूकैंभयैं॥दुखमूलएकप्रवर्तमारगकाहिनमांनतकोय॥सुषपग्योजिहिनिवार्तिकोमनजांनिहैंदुषसोय॥सतसंगअंबुजब्रजसरोवरकीरतनसुषबास॥कीजियेहरिबेगतिनकोभंवरनागरीदास॥ १० ॥

भाषा—बिनसतसंग मन बस होतनांही यहमन महा चंचल नीचहैं तहांपरि मन निंदा ॥ पद ॥

मनयहनीचसंगीनीच ॥ उच्चपदकौंचढतनांहींजदिपिनियरीमी

च ॥ नवनपापकौंगवनकारिहीज्यौंवनीरउलैंड ॥ प्रबलअतिनहिं रुकतरोकैंग्यांनभूरिकीमैंड ॥ मिलतजाहीरंगआपुनहोतवाहीरंग ॥ देहुनागरीदासकौंयातैंप्रभूसतसंग ॥ ११ ॥ पुनःपद ॥ बिनसतसंगमतिबेढंग ॥ फिरतडांवांडोलमनज्यौंबिनलगामतुरंग॥कबहुगिरिगिरिउठतअतिश्रमचढतक्रोधिडतंग ॥ कबहुमूरषभ्रमतआतुरउपजअंगअनंग ॥ कहातपअतदानसंजमकहान्हायैंगंग ॥ दासनागरबिनासाधनसकलसाधनभंग ॥ १२ ॥

भाषा–यातैं सर्बथा साधनको सतसंग कीजै तहांपरि ॥ पद ॥

सदासुपहरिभक्तिनकेमांहिं ॥ दसरथसुतअरुनंदनंदनकीबातनिसमैंबितांहिं ॥ बिबिधिकलेसरुकलहकलपनांतिनमैंउपजतनांहिं ॥ नागरियाब्रह्मानंदहूतैंभजनानंदअधिकांहिं॥१३॥ पुनःपद ॥ जिंहिंजनभक्तिसुधारसपीयो ॥ स्वर्गराजसुषगेहकाजफिरिमनकबहुंनदीयो ॥ बेदकलपतरुफलमाधवतजिजगविषफलनहिंछीयो ॥ नागरऔरसंगनहिंराचैंसाधसंगतिनकीयो ॥ १४ ॥ पुनःपद ॥ जबलगहीजगकौसुषपागैं ॥ तबलगिजियहरिभक्तिसंगकौंरंगनहींकछुलागैं ॥ गृहब्योहारषेलिगुडियनकोजबलगिहीजियभावैं ॥ तबनवजोबनव्हैंमदरामयतियपियकंठलगावैं ॥ तिनचाष्योअतिस्वादिअलौकिकस्याममधुररसपाक ॥ नागरीदासलगतजाकौंफिरिऔरबस्तुसबआक ॥ १५ ॥ ॥

भाषा–सो जानैं या रसको स्वादपायो ताकौं संसार सुष न भायो तहांपरि ॥ पद ॥

जिनकौंझूठलग्योसंसार ॥ जगसौंनिसप्रहसतसंगतिकारिलेतस

दासुषसार ॥ तेकलेसमैंपरतनकवहूसारअसारविचार ॥ नागरीदासकुसंगतिकरिकैंकौनभयोनहिंष्वार ॥ १६ ॥

भाषा—कुसंगति करिकैं मनुष्यहोय ष्वारवढैं दुखविस्तारतहांपरि पद ॥

कलिकेजनमबिगारतलोग ॥ मूरषमहादोऊवेषोवतहरिकीभक्तिविषैंसुखभोग ॥ कलहकलेसकरतादिनाबितवतबिविधिविपतआस्वादी ॥ अैसैंहीसबआयुबितावतटेवतजतनहिवादी ॥ दासीदासकुटंबमित्रसबयाहीदुषरसपगे॥ नागरकोउनांहिसमुझावतसबस्वारथकेसगे ॥ १७ ॥

## पुनःकुसंसग फल दसा पद ॥

कलिमैंतेक्यौंभक्तकहावैं ॥ वृद्धहोयजेविमुषसंगफिरिदेसदेसउठिधावैं ॥ होतनिरादरदुषनहिंमानतनोंवदेतअतिऔंडी ॥ चेततनहींवजतासिरऊपरयहघरियालकालकीडौंडी ॥ बिनजमुनापरसैंक्यौंउतरतस्वेतकचानिविचधूर ॥ नागरस्यामबैठिनाहिसुमिरतिव्रजकीजीवनमूर ॥ १८ ॥ पुनः

## कुसंगीनिकी दसापद ॥

कलिकेलोगकुमंत्रीसिगरे ॥ देतकुमंत्रबिगारतमनकौंआपुनमनकेविगरे ॥ एकपेटकेकाजाहिंषोवतदोऊलोकसुषअनुचर ॥ निजस्वामीकौंलियेंफिरतहैंज्यौंगहिघरघरबनचर॥ दुखअपमानकौंन्यापतनाहींलोभीलोभसुषारे ॥ पापभारसबवाकूंलागतदासरहतहैंन्यारे ॥ चतुरथआश्रमआयदेतफिरलाषबरसकोनींव ॥ नागरीदासजानिउनसबकूंमहापापकीसींव ॥ १९ ॥

भाषा—यातैं नर अैसी विजाती कुसंगको त्याग करैं तब सुख होय तहांपर पद ॥

कदलीबेरढिगपछितात ॥ पवनपरसतहलतत्यौंत्योंगडतकंटकगात ॥ पीरबिनुवहहरीनितयहनीरबिनकुह्मिलात ॥ संगनागरतजैंताकोहोयजवकुसरात ॥ २० ॥

भाषा—यातैं सब वेद पुराननिको सार कहतहौं कुसंगतैं टरिये अरू सतसंग करिये तहांपर पद ॥

रेमनत्यागिपरमकुसंग ॥ बेगकरिसतसंगआतुरयहैतनछिनभंग ॥ सकलवेदपुरानकैंबिचसारयहउपदेस ॥ गाययेनागरसदाकरिसाधुसंगविसेस ॥ २१ ॥

भाषा—तातैं जनम साधुसंगमैं वितावनौं तहां हरि जनम करम गुन गावनौं तापरि पद ॥

रेमनजनमकरमगुनगाय॥ लोकवेदविसतारसारबिननीरसकथावहाय ॥ कैसैंबालकेलिकौतूहलगोकुलमांझकरे ॥ कैसैंढुरिघरघरदधिचोरचोकैसैंचीरहरे ॥ कैसैंब्रजबृंदावनबिहरेकैसैंगायचराई ॥ कैसैंजमुनाकूलकदमतरमोहनबैनबजाई ॥ कैसैंजग्यपतिननिपैंभोजनमांगिलयोबलबीर ॥ कैसैंढाकनिकीछहियांमिलिछाकखातआभीर ॥ कैसैंसुंदरहस्तकमलपरिसातद्यौसगिरधारचो ॥ कैसैंबारबारब्रजजनकौबोहोविधिकष्टनिवारचो ॥ कैसैंसरदानिसाबनकीनैंरासकेलिआनंद ॥ कैसैंकामाबिजैकरिलीनौंथकितरह्योनभचंद ॥ कैसैंघोषनिवासनिकौंहरिसुखदीनौंबहोभांत ॥ नागरीदासकहोसोनिसदिनजातहैंआयुबिहांत ॥ २२ ॥ यापदकेटीकाविस्तार ॥

## अथ हरिबाल लीला पद ॥

नंदसुतनित्यरसबाललीलामगनउदधआनंदगोकुलकलोलैं॥ गउरअरुस्यामअभिरामभइयादोऊललितलरिकानिलियैंसंगडोलैं ॥ भवनप्रतिभवनचलिचोरहींदूधदधरतनभूषनवदनतनउजेरैं ॥ स्वातलपटातढरिकातफिरिहांसिभजतचक्रतव्हैंभवनौंनिजभवनहेरैं ॥ कबहुगाहिंगहिफिरतपूंछबाछियांनिकीकिंकिनीकनककटिमधुरबाजैं ॥ गोपगोपीनिमनद्रगनिकेखिलौंनांखिलतमुखकमलमुरिहसांनिभ्राजैं ॥ वदनदधिछींटछबिधूरधूसरअंगअबहीतैंमदनगतिपगनिपेलैं॥ कंठबघनांदियेंपायपैंजनझनकदासनागरहियेअंगनाखेलैं॥२३ तिहारोधोटाबरजैंक्योंनहिंमाई ॥ इनबातनवृजकौंनबसैगौवहौतबहौतनाकिआई ॥ मेरीऔरसासकीचुटियासोवतगांठिधुराई ॥ फिरदधखायजगायभज्यौहमभटभेरनिभहराई॥ चतुरचोरछिपिछलसौंनिकसतआवतनांहिगहाई ॥ अबहीतैंनागरछंदतेरौअरीबडोऔटपाई ॥२४॥ खेलतभइयादोउमइयाकेआगैं ॥ गोपीऔरनिरखिरहिकउतकपलकपलकनाहिंलागैं ॥ जसुमतगोदतैंबलिचालिआवतरोहिनीतैंघनस्याम ॥ भेलाव्हैंव्हैंसीसभिरावतगरजिगरजिअभिराम ॥ लरिलपटायललामिलिलोटतबालकेलिसुखदानी ॥ नागररितचितैंआनंदमैंहसिहसिपरतहैरानी ॥ २५ ॥ इतिबाललीला ॥

## अथ चीर हरन लीला पद ॥

पियाजियपीरकछुपहिचान ॥ चीरसबकेहरतकहाचितहरेइहिंसुसकयान ॥ सीतवसहमजलमगनतननगनिबिनतीमान ॥ नांहिंच

हियतुतुह्मैंअैसींदेहुअंवरआंन ॥ हासरसआनंदकीनौंचतुरिठगईठां न ॥ प्रीतिबाढीपरसपरबरदयोहरिसुषदान ॥ स्यामकैंमनगउरतन छबिवसीकचलपटान ॥ रहोनागरीदासकेजियबसनचोरसुजान ॥ २६ ॥ इतिचीरहरनलीला ॥

## अथ गोचार आवन लीला पद ॥

सुनतधुनिवैंनमधुरागगौरीरुचिरचाढियनिजभवनतियरवनहिति अगमगी ॥ जानिघनस्यामआगमनिगोकुलवधूअटनिदुहुदिसनि मनौंदामिनीजगमगी ॥ सांझसुषसमयआनंदगहिमहिठईउडिरैंनधैं नवहोगलिनिविचरगमगी ॥ संगगोपालनटबेषिराहिदोखिसबपलकन हिंलगतमुखअलकरजसगमगी ॥ कइकहसिफूलडारतकइककांकरी कइकमगछाडिरहिसांकरीलगिमगी ॥ नागरीदासहरिमाधुरीपानक रिरहिनकछूठौरिमतिमदनबसडगमगी ॥२७॥ इतिगोचारनलीला ॥

## अथ बैनगीत पद ॥

सुनिरीसषीसुषदाई ॥ देषिअमलसरदरितुआई ॥ आईसरदगत पंकभुवभयेसुच्छअंबुअकासहैं ॥ कुंजकाननअतिप्रफुल्लतछईकुसम सुवासहैं ॥ ठौरिठौरिसरोवारिबिचअमलकमलनिपुंजरी ॥ तहांभ्रम तअलिंदमातेकरतआतुरगुंजरी ॥ सुभगवृंदाबनअवनिबहैंत्रिविधि रोचकपवनहैं ॥ दासनागरदेषितिंहिठांकरतमोहनगवनहैं ॥ २८ ॥ उरमंडितबनमाला ॥ डोलैंगायनिसंगगुपाला ॥ संगगायनिकैंगु पालावेषिनवनटवराकियैं ॥ मोरपाच्छिप्रसूनपुंजप्रवालजूरासिरदियैं ॥ कंजकरननिकर्निकातनधातगुंजावलिलसैं ॥ दसनकिरननिजारि

कोउरहारफैलततबहसैं ॥ मदबिघूर्नितनैंनसोहैंबंकभौंहैंमनहरैं ॥ दासनागरस्यामघनलषिमुरलिकाअधरनधरैं ॥ २९ ॥ पसुपंछीचहुं दिसरी ॥ सुनिधुनिगानदेहसुधिबिसरी ॥ बिसरीजुसुधिषगम्रगच कितचितमुषनकहुंकनित्रनाछियैं ॥ धेनुवरषतनीरनैंननिनाहिंबछरा पयापयैं ॥ थक्योमंदसमीरसुनिद्रुमपातहुनपल्लवहलैं ॥ बिथकिज मुनाजलरह्योरथभाननाहिंआगैंचलैं ॥ नभबिमाननिगिरतसीतियप तिउछंगनिवारिदी ॥ दासनागरसुनतधुनिसुरबधूदेहबिसारिदी॥ ३० रीतैंकौनपुन्यतपकीनौं ॥ प्रियकोअधरसुधारसलीनौं ॥ लीनौंअध ररससुधाबनमैंअरीबैरनबांसुरी ॥ हमभवनतलफतफिरतइतउतकि योधीरजनांसुरी ॥ उडतअंचरउरजउघरतबैंनधुनिसुधिहारिलई ॥ कबरिछुटिभइसिथिलनीबीमदनपीड़तनिर्दई ॥ कहैंसह्मारिसह्मारि कबहूकबहूआवततांवरो ॥ दासनागरध्यानतनमयभरतअंकनिसां वरो ॥ ३१ ॥ इतिबैनगीतपद ॥

## ॥ अथ जगपतिनी भोजन लीलापद ॥

पूरनब्रह्मनंदके अैंनां ॥ सुंदरस्यांमकंवलदलनैंनां ॥ कबदेषैंरू पप्रकास ॥ लगीजग्यपतनीनिमनआस ॥ लगीआसउदासजियमैं रहैंडारिउसासकौं ॥ नैंनभरिबनओरचितवैंज्यौंचकोरप्रकासकौं ॥ कह्योजिहिंछिनस्यामकौंसंदेसग्वारनिआयकैं ॥ उठीलैंलैंविवि धिभोजनचलीआनंदछायकैं॥ धरतपगचंचलतऊभयेपंथकोसकरो रके ॥ चंदचाहनिघुटेछूटेबृंदमनहुंचकोरके ॥ एकरोकीगेहसोत जिदेहसबपहिलैंगई ॥ दासनागरलालकरिउरमालतेंहिंबालहिलई

॥ ३२ ॥ पुनः जग्यपतनीभोजनलीलापद ॥ ढिगआईद्विजबाला ॥ रहीइकटकलपिनंदलाला ॥ ठाढेपरमछविपावैं ॥ हरिकरगहिकंव लफिरावैं ॥ कंवलफेरतस्यामठाढेकंवलमुषमुसक्यावहीं ॥ कंवल मालाचरनपरसतकंवलदृगनिदुरावहीं ॥ बामभुजधरिसखाअंसहि धुकेअतिछबिपायकैं ॥ तिहींछिनलखिकोटमनमथरहेहैंसिरनायकैं॥ निरखिमोहनमाधुरीद्विजबधूप्राननिवारिहीं ॥ देतभोजननेहआतुर देहकौंनसह्मारिहीं ॥ करतहीनिसद्यौसभामिनिसोमनोरथसबठये ॥ दासनागरनंदनंदनप्रीतहीकैंवसभये ॥ ३३ ॥ इतिजग्यपत नीभोजनलीला ॥

## अथ छाकलीला पद ॥

नवलगोपालमिलिकरनभोजनलगे ॥ तीरजमुनाविपुनभीरब होबालकनिहृदैंआनंदभरिपेलिरसरगमगे ॥ छाकलीलाललितकू लकोलाहलनिदिवसभयोजानिमनुकोकलागनजगे ॥ चहूंदिसकुं डलाकारग्वालावलीचारुब्रजचंदउडगननिविचजगमगे॥ कइकछी कांनिकइफूलफलसिलनिपरिकइकदधमधुधरानिबकुलकललैंनगे॥ किसलैंदलकदलिदलजलजदलजघनिपरिधरतव्यंजनबिबिधिपर मकौतुकपगे ॥ स्यामकरबामपरिभातधरिपातफिरिनागरीदासह सिजातबातनिपगे ॥ निरषिविधिकहतमनकहांजग्यभोग्ययेझूठप सुपालकनिकीजुतैंनहिंभगे ॥ ३४ ॥ इतिछाकलीला ॥

## अथ गोवर्द्धन धारन लीला पद ॥

सजनीनिरषिनंदकुमार ॥ धरैंगिरकरवढीछबिलषिमदनवहौ

बलिहार ॥ ललितअंगतृभंगकटितटिकनककिंकिनिजाल ॥ बंक भुवदृगअलकपरसतचरनपरसतमाल ॥ उदितब्रिचब्रजचंदपूरन तिमरमेटयोघोर ॥ तहांगोपीगनतरइयांभानकुंवरिचकोर ॥ उहां बाहिरइंद्रबरषतप्रलयघनलियेंसंग ॥ दासनागरगोवर्द्धनतरइहांब रषतरंग ॥ ३५ ॥ इतिगोवर्द्धनधारनलीला ॥

## अथ रासलीला ॥

पद ॥ रासरच्यौनंदलाला ॥ लीनेंसंगसकलब्रजबाला ॥ अद्भु तमंडलकीनौं ॥ अतिकलगांनसरससुरलीनौं ॥ लीनौंसरससुरराग रंजितबीचमिलिमुरलीकढी ॥ हौंनलाग्योनृत्यबहौविधिनूपुरनिधु निनभचढी ॥ डुलतकुंडलखुलतबैंनीझुलतमोतिनिमाला ॥ धरतप गडगमगबिबसरसरासरच्योनंदलाला ॥ चितहावभावनिलूटैं ॥ अ भिनयद्रगभौंहनिसरछूटैं ॥ ललितग्रीवभुजमेलत ॥ कबहुकअंक मालभरिझेलत ॥ झेलतजुभरिभरिअंकनिसंकतमगनप्रेमानंदमैं ॥ चारुचुंबनिअरुउगाराहिधरततियमुखचंदमैं ॥ उडतअंचरप्रगटिकु चबरग्रंथपटकसछूटैं ॥ बढयोरंगसुअंगअंगचितहावभावनिलूटैं ॥ प गनगतिकउतकमचैं ॥ कटिमुरिमुरिमध्यलचैं ॥ सिथलकिंकनी सोहैं ॥ मुकटलटकिमनमोहैं ॥ मोहैंजुमननटमुकटलटकनिमट किगतिपगधरनिकी ॥ भंवरभरहरिचहूंदिसछबिपीतपटफरहरानि की ॥ गिरयोलखिमनमथमुरछलैंभजीरतिमुखमधुअवैं ॥ नचत मनमोहनतृभंगीपगनिगतिकउतकमचैं ॥ वृंदावनसोभाबढयो ॥ तापरिव्योमबिमाननिसौंमढयो ॥ दुंदभिदेवबजावैं ॥ फूलनिअं

जुलिवहोअरपावैं ॥ बरषैंजुफूलनिअंजुलीवहोअमरगनकौंतकप गे ॥ विविसअंकनिनिजवधूहियनिराखिमनमथसरलगे ॥ व्हैंगयेच रथिरसुथिरचरथिरसरदपूरनसासिचढ्यो ॥ दासनागररासअवसर वृंदावनसोभावढ्यो ॥ ३६ ॥ पुनःपद ॥ रह्योरंगखेलतरासरसा ला ॥ तुटिगयेहारछुटिगयेअंचरश्रमडगमगतमराला ॥ जथकैं॥ थजुतधसेजमुनाबिचमदनमोहनतिंहिकाला ॥ क्रीडतनेहआतुर संगलीनैंमत्तदुरदनंदलाला ॥ गोरैंअंगमहाछबिपावरथसबठये ॥ साला ॥ मनौंसीतलचंदनपुतरीनसौंलगीलपटिअहि इतिजग्यपत सौंछींटनिखेलमचावतप्रेमबिवसव्रजबाला ॥ जनूंउच्छवकालंदीगृ हउछरतमुक्तिनिकेजाला ॥ बाहुसुंडअवगाहिनीरवलबीरचलेगज चाला ॥ नागरीदासब्रह्मरात्रीरमिआयेगेहगुपाला ॥ ३७ ॥ इति रासलीला दोहा ॥ इंद्रप्रस्थजमुनांनिकट । भवनपुलिनदिगचार ॥ तिंहिंठांपदरचनांकरी । मोमतिकेअनुसार ॥ ३८ ॥ अष्टादससत पंचहैं । वरषपोषसुदिमास ॥ पदप्रवोधमालाकियो । ग्रंथनागरीदा स ॥ ३९ ॥ इतिश्री ग्रंथपदप्रवोधमालासंपूर्णम् ॥

## श्रीजुगलभक्तबिनोदग्रंथ ॥

दोहा॥ भक्तनिकौंअतिहरिहिप्रिय । हरिहीप्रियनिजभक्त॥सिर नांऊंतिनकेचरन । हरनिदुसहदुखजक्त ॥१॥ कृष्णभक्तवत्सलप्रग टि।भक्तहेतअवतार॥तिनकौंतिनकेभक्तको ।कहूंसुजसश्रुतसार॥२॥ चौपाई॥मिथुलापुरहैभक्तनिवास।दुजश्रुतदेवनृपतिबहुलास॥तिन केनैंननिबढीपिपासा। निंतिप्रतिरहैंहरिदरसनआसा ॥ सुनतसदा

गुनिगानस्यामके । भूलिगयेसबकामधामके ॥ तिनसुभस्वप्नरैनउ वरेषे । कदलीअंबफलेबहुदेषे ॥ दोउप्रातसोवततैंजगे । अंगदां हिनैंफरकनिलगे ॥ आंगनबिचषगषंजनडौलैं । उडिकमलनिपारि करतकलोलैं ॥ सुनतबचनसुभमुखतैंकढे। सहजहीहरषहियेमैंवढे॥ रषतत्त्वांहिंभक्तनसौंऊरन । तेआयेकरनमनोरथपूरन ॥ दौरिचले मने । प्रेमातुरचितदोऊधने ॥ निरषिस्यामजगमोहन हैंगयेदुजअरुभूप ॥ संगदेवरिषजगहितकाज । श्री पद ॥ रासरसमाज ॥ दुजनृपभक्तदोऊजेआये । बिनयबोलि प्रभुगृहपधराये ॥ रिषनिसहितकरिद्वैद्वैदेह । स्यामसिधारेभक्तनि गेह ॥ चलेजातहरिजनदोउआगैं । पैंडपिछैंहैंपलकनलागैं ॥ बि थुरतमोतीवारतराजा । दुजदुहुंसुठीउछारतलाजा ॥ भूपतिसज्यारु चिररचाई । बिप्रचटाईआयबिछाई ॥ उतसुगंधभरेकंचनवेला । इतैंछिरकिधरेआगैंढेला॥ उताहिंबिबिधिकुसमावलिधरी। इंहिंरापीदु र्वालैंहरी॥ उताहिंगुनीगुनप्रगटतसांचे । इताहिंमगनमनदुजहीनांचे ॥ उतसंगीतसुघरसरसांही । इतयहकूदतहारतनाहीं ॥ उतछबिजटी नटीमृगआंषैं । इतपांसूंकाढिऔंडीकांषैं॥ उतनृपचंवरढुरावतहाथ। प्रेमबिबसनिरषतजदुनाथ ॥ दुजफौरिलैंअंगुछाफेरत । कृष्णकृ ष्णप्रेमातुरटेरत ॥ मनिमुक्तावलिभरीभारती । रानीनिजकरकरत आरती ॥ पहरिदुजबधूकांमरिधोती । चूंनादियाकरिकीनीजोती ॥ ॥ दोहा ॥ दुहनिआरतीकरिधरी, दुजात्रियअरुनृपनारि ॥ प्रेम बिवसदोऊभई,बदननिहारिनिहारि॥३॥संतसदनपावनकरे, पूरेमन केकाम ॥ एकप्रेमकैंबसभये, भक्तवत्सलघनस्याम ॥ ४ ॥ चलेदु

हुनिकेभवनतैं, दुहुनिकोभलोमनाय ॥ हरिपीतांबरपौंछदृग, कंठलगायलगाय ॥ ५ ॥ अंतरकीजानतसबैं, सुंदरपरमप्रबीन ॥ क्यौंबिसरैंऐसोप्रभू, भक्तजननिआधीन ॥ ६ ॥ अष्टादससतअष्टपुन, संवतमाघसुमास ॥ जुगलभक्तगुनग्रंथयह, कियोनागरीदास॥ ॥ ७ ॥ निकटकमाऊपरबतनि, विकटबिटपकीभीर ॥ तहांग्रंथरचनांभई, नदीकौसकीतीर ॥८॥ इतिश्रीजुगलभक्तबिनोदसंपूर्ण श्रीकृष्णचंद्रभक्तिवत्सलौजयति ॥

# अथ भक्तिसार ग्रंथ लिख्यते ॥

## अथ तप बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ श्रीगुरुपदरजबंदिकैं, करतग्रंथउच्चार ॥ इंहसंसारअसारमैं, एकभक्तिहैंसार ॥ १ ॥ महाउग्रतपकष्टकरि, करतपर्वतनिबास ॥ कृष्णभक्तिबिनुहैंवृथा, राजस्वर्गकीआस ॥ २ ॥ ॥ कवित्त ॥ पंचानलसाधैंपौंनबांधैंनासागाहिगाहिसाहिसहिसीतदेहतपकौंबढांवहीं ॥ सेवतविषमवननबसनबकुलअंगभोगसौंउदासमहाजोगदरसांवहीं ॥ अधोमुखऊर्द्धमुखभसमलगावैंगातपातकंदपनिपातकष्टउपजांवहीं ॥ ऐसेऐंहैंप्रसिद्धहोतनागरनासिद्धजौलौंगोकुलअवाधिलीलासुखनहिंगांवहीं ॥ ३ ॥

## अथ अष्टसिद्धवर्ननं ॥

अष्टसिद्धजाकौंकहत, करामातसबजक्त ॥ वादीगरकेखेलसो, बिनाकृष्णकीभक्त ॥ ४ ॥ जथाउदाहरन ॥ कवित ॥ सिंहहोतसर्प

होतगजहोतगैंडाहोतकवहूतनसूक्ष्मऽहैंजहांजहांजावहीं ॥ इच्छा रूपधरिधरिबिचरतविस्वमांझ कइकसहस्रकोसछिनमैंऽहैआवहीं ॥ पूजैंसबसिद्धपायभयेहैंत्रिकालदृष्टिजाकैंआगैंअष्टसिद्धठाढीसिरनां वहीं ॥ अैसेभयैंनागरप्रसिद्धकहासिद्धजोलौंगोकुलअवधिलीलासु खनहींगावहीं ॥ ५ ॥

## अथ निर्गुनमत बर्नन ॥

॥ दोहा ॥ मूलजानिनिर्गुनभजें, करतपूरपछिपाठ ॥ छाडिकृ ष्णफलअमृतकौं, मूढचचोरतकाठ ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ घटहीमैंब्र ह्मकहैंघटहीमैंतीरथघटघटरमैयारामनाममुखलांवहीं । अलषनिरं जनकीजोतिहीकौंजानैंरूपगुनकौंनमानैंसुन्यसांनलैंबतावहीं ॥ औ रकौंनदेषैंएकदेषैंनासाअग्रवोरइंद्रीसबजीतीमनाकितहूंनजांवहीं ॥ अैसेभयेनागरप्रसिद्धकहासिद्धजोलौंगोकुलअवधिलीलासुखनहिं गावहीं ॥ ७ ॥

## अथ केवल पांडित्तता बर्नन ॥

॥ दोहा ॥ बसतसरस्वातिकंठनित, कृष्णभक्तिहियनांहि ॥ ज गतअविद्यावहतये, वहेजुविद्यामांहि ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ सामबेदज जुरअथर्बनऔरिगबेदजानैंत्रिनभेदजाकेजिभ्याअग्रआंवहीं ॥ वांच नउपनिषदसास्त्रन्यायसांष्यओपातांजलमीमांसाआदिपढिकैंसुनां वहीं ॥ संमृतअठाराजाग्यवल्कमिताक्षराटीकाअवरपुरानपाढिपंडि तकहांवहीं ॥ अैसेभयेनागरप्रसिद्धकहासिद्धजोलौंगोकुलअवधि लीलासुखनहिंगांवहीं ॥ ९ ॥

## अथ केवल चातुर्जता बर्नन ॥

॥ दोहा ॥ वहुगुनगनतनमैंबसैं, जोनभक्तिकोलेस ॥ नीकोऊ फीकोलगैं, बिनानृपतिज्यौंदेस॥१०॥कबित्त॥ संसकृतबोलैंअरुबोलैंबहुदेसभाषाकंठवाकबानीवडेचातुरकहावहीं ॥ गानमैंसुजाननवरसकेबषानवानबातनबिधानकहिजगकौंरिझावहीं ॥ रचनारचतकाव्यनांनांछंदबंदनसौंसुघरसभाकेमांझवाहवाकहावेहीं ॥ ऐसेभयेनागरप्रसिद्धकहासिद्धजोलौंगोकुलअवधिलीलासुखनहिंगावहीं॥११॥

## अथ हरिभक्ति वहिर्मुख सप्त द्वीपराज्य बैभव बर्नन॥

॥ दोहा ॥ सुरपतितैंवैभवअधिक, उदयअस्तलौंराज ॥ यहप्रभुताईस्वपनसुख, भक्तिबिनाकिहिंकाज ॥ १२ ॥ छंद भुजंगी ॥ जटेस्वर्णकेधामलालंप्रवालं ॥ झरोषांनिझांकीबंधीमुक्तमालं ॥ कढैंरंध्रजालीअगरधूपधूमैं ॥ पुरेचौकमोतीनिसौंरत्नभूमैं ॥ करीनांहिभक्तैंगयोभूलिकर्त्तार ॥ जुषोयोवृथाजन्मानिर्धारनिर्धार ॥ १३ ॥ जुरेजोरिगढद्वारगजवाजमाते ॥ भरेभूपदर्बारनांहींगनाते ॥ सजैंपालकीनालकीरत्थवाजी ॥ लियेंद्वारठाढेदरोगामिजाजी ॥ करीनांहिंभक्तैं० ॥ १४ ॥ समांनेतनेबेलिबूटाजरीदी ॥ बिछीकालियांदराविलायतखरीदी॥लगेपीठितकियाजरीदोजनीके॥बनीसूजनीफरसमीरंमनीके ॥ करीनांहिभक्तैंगयो० ॥ १५ ॥ मनौंतेजसिंघासनंभानभ्राजैं ॥ तहांछत्रछाजैंमहाराजराजैं ॥ दुहुंघांचलैंचौंरचांरंउदारं ॥ महातेजभूपंसरूपंअपारं ॥ करीनांहिभक्तैं० ॥ १६ ॥ लियेस्वर्णआसापरद्वारठाढे ॥ वतावैंअदवहौतइतमांमगाढे ॥ बजैं

द्वारनीसानऊंचेसुहाये ॥ सुनैंसब्दजेतेसबैलैंरिझाये ॥ करीनांहि भक्तैं० ॥ १७ ॥ सजैंअंगभूषनृषरेआंनिआगें ॥ लियेबीनवीना गुनीरागरागैं ॥ कियेनारिसिंगाररंगीअनंगी ॥ नचैंपातुरीचातुरी सौंसुधंगी ॥ करीनांहिभक्तैं० ॥१८॥ बडीसैंनताकैंजुसन्नाहसाजैं॥ मनौंमेघकारीघटासीबिराजैं ॥ चलैंसासनांदेसदेसंअभंगं ॥ कोऊ भूपभूमैंजुरैंनांहिजंगं ॥ करीनांहिभक्तै० ॥ १९ ॥ पढैजस्सजुद्धं सुसुद्धंप्रसिद्धं ॥ जुरैंभट्टठट्टंतिहैंदेतरिद्धं ॥ भईहैंबिमलजोतिकीरत् जुन्हाई ॥ छईसिंधुकेतीरलौंहैंबडाई॥करीनांहिभक्तैं०॥२०॥दोहा ॥ कहावनेंआश्रमकहा, कहारंककहाराय ॥ करीनजिहिंहरिभक्तितिं हिं, दीनौंजनमगमाय ॥ इतिसप्तद्वीपराज्यहरिभक्तिवहिर्मुख ॥

## अथ सप्तद्वीप हरिभक्त रिषिराज वर्ननं ॥

छंदभुजंगी ॥ महाद्रव्यधारीधराव्हैंनरेसं ॥ विभोदेषिताकोल जैंजीसुरेसं ॥ इतेपैंनफूलैंरुभूलैंनमाधौं ॥ तिन्हैंहोतनांहिकछूराज बाधौं ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौंजेअनन्यं ॥ सुधन्यंसुधन्यंसुधन्यंसु धन्यं ॥ २१ ॥ रचैंजन्मकर्मादिउत्सवसुहाये ॥ मनौंनंदगोकुल धरैंरूपआये ॥ बजैंसंषझालरजहांहोतअर्चा ॥ कहूव्हैंकथामैंमहा मिष्ठचर्चा ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौंजेअनन्यं ॥ सुधन्यंसुधन्यंसुध न्यंसुधन्यं ॥ २२ ॥ सदापरक्रमादंडवत्नैंमुलीनैं ॥सुनैंगानगोविंद गाथाप्रवीनैं ॥ अलंकारसिंगारहरिकेबनावैं ॥ रचैंरागभोगंमहाद व्यलावैं॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौं० ॥ २३ ॥ विभौभूपअमरावतीज्यौं बिसालं ॥ धरैंकुंभसिरनीरल्यावैंनृपालं ॥ निजंअंगतैंस्यासेवा

सह्मारैं ॥ निहारैंकंवलनैंनवहोद्रव्यवारैं ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौं० ॥ २४ ॥ बसैंनित्यपुरवागसंतंमहंतं ॥ अवरवृंदगोस्वामिदुजंवर अनंतं ॥ चहुंओरहरिनामगुनधुनिछईहै ॥ सुनैंतैंतिहूंतापतनकीगईहै करैंकृष्णकीभक्तिकौं० ॥ २५ ॥ लगीहैंटहलहोतबहोबिधिरसोई ॥ पकव्वानमेवानकपूरभोई ॥ सुआतित्थ्यकररायपायंप्रछालैं ॥ पवित्रं करैंभौंनलावंतभालैं ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौंजेअनन्यं० ॥२६॥ सुपारायणंब्रह्मजग्यंकहूंव्हैं ॥ तहांभजनआनंदप्रेमांचलैंच्चैं ॥ वितानंतनै अग्रसौंगंधछायो॥मनौंभक्तिउत्सवधरैंरूपआयो ॥ करैंकृष्णकीभक्तिकौं०॥२७॥प्रथमकृष्णअर्पणाकियैंबस्तुभुक्तैं ॥ रचैंहरिसमंधी रुचिरकाव्यजुक्तैं॥ भुजासंखचक्रादितुलसीसकायं ॥सहजसीतसीतलसुहृदैंसुभायं॥करैंकृष्णकीभक्तिकौं०॥२८॥लसैंचंद्रवत्कांतिरिषिराजराजैं ॥ मनौंमांझकलिकालअंब्रीषआजैं ॥ रहैंराज्यकेकाजमैं भक्तिसाधैं ॥ विविधिभोग्यतिनकौंकछूनांहिबाधैं ॥ करैंकृष्णकी भक्तिकौंजेअनन्यं ॥ सुधन्यंसुधन्यंसुधन्यंसुधन्यं ॥ २९ ॥ दोहा ॥ तनमनधनकरिहारिभगत, करैंनृपतिजोकोय ॥ राजकाज सुखभोगसौं, तनकनबाधाहोय ॥ ३० ॥ करैंभक्तिब्रजरवनकी, भूपभवनकेमांहि ॥ महिमाजाकेभागकी, बरनिसकैंकाबिनांहि॥३१॥ दोहा ॥ कुंडलिया ॥ आपकुंडगोलकपिता, पित्रपिताकानीन॥ लखोसुनागरभक्तजस, पंडवानित्यनवीन ॥ नित्यनवीनोसुजसकृष्णमिश्रतहैजिनको, भयेसप्रदीपेसबहोतनृपनांवनतिनको ॥ पावन कारीसुजसप्रचुरपांडवजगजापै, पुनिपुनिकरीसहायस्यामसारथि भयेआपै॥३२॥दोहा॥ महाकाठिनकलमैंनअब, औरभक्तसरसात ॥

मुरलीधरधनुधरनकी, कीजैनिसदिनबात ॥ ३३ ॥ कबित्त ॥ आ
योकलिकालअतिकलहकलेसछायोतामैंलैंअपनपेकोंकैसैंकैंबचाइ
यैं ॥ जग्यदानतपमांझचहैंदेसकालपात्रपुनिफलतुच्छस्वर्गराजभोग
पाइयैं ॥ कीचहींसौंकीचधोयैंमिटैनमलीनताईकरिकैंबिमलभक्ति
सुखसरसाइयैं ॥ दसरथनंदओनागरनंदनंदनकीवातैंकहिकहिनिसि
दिवसविहाइयैं ॥३४॥ मिटीभूमिलषमीनरनिबडीआयुमिटीमिटीहैं
अरोगगतदुखदरसाइयैं ॥ मिटचोधर्मकर्मप्रीतसज्जनसुहृदताईमि
टयोधीरहियपीरपारनांहींपाइयैं ॥ छायोकलिकालमहापायनदवा
योदौरयातैंअबवोटबेगसाधनकीजाइयैं ॥ दशरथनंदओनागरनंद
नंदनकीबातैंकहिकहिनिसदिवसाबिहाइयैं ॥ ३५ ॥ कीरतनश्रवण
करेतैंनांहिलागैंधनअरुकायाकष्टहूनतातैंजीडराइयैं ॥ जाकेगुनसु
नैंनितताहीसौंबढतप्रीतिजासौंप्रीतताकेगुनसुनैंनअघाइयैं ॥ प्रभुज
सरसनापवित्रकीजैंबारबारयातैंअबविस्वावीसयहैंजियलाइयैं॥दसर
थनंदवोनागरनंदनंदनकीबातैंकहिकहिनिसबासराविहाइयैं ॥ ३६॥
कियैंचर्चासास्त्रकीतोहोतहैंअवस्यबादजहांबादभयोतहांस्वादकहां
पाइयैं ॥ जोपैंस्वादजानिजानिलोककथाकीजियैंतोतामैंपरमार
थनस्वार्थसरसाइयैं ॥ स्वारथपरमारथहूबिनबादस्वादभरीकथीवा
लमीकसुकदेवसोसुहाइयैं ॥ दसरथनंदओनागरनंदनंदनकीबातैंक
हिकहिनिसदिवसविहाइयैं ॥ ३७ ॥ अवधिबिहारऔंबिहारब्रजगो
कुलकोकरतबिचारनितनौतनहींपाइयैं ॥ सरजुकेंतीरअरुतीरजमु
नांकेंजेवेकीनींहैंलालितलीलाकहियेकहाइयैं ॥ लघुवीरसंगगइतसंग
ग्वारभरेरंगडोलनिकलोलनिकौंसुमिरिसिहाइयैं ॥ दसरथनंदओना

गरनंदनंदनकीवातैंकहिकहिनिसदिवसबिहाइयैं ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ यहअबनागरिदासपैं, कृपाकरोहरिराय ॥ कहतसुनततिहारीकथा, सबदिनजांहिबिहाय ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ कुंडलिया ॥ सुषपायोपूरन भयें, ग्रंथजुभाषाचार ॥ सतरासैनिनांनवै, द्वैजग्यौसगुरवार ॥ द्वैजग्यौ सगुरवारमाससावनमनभावन ॥ कृष्णपक्षसुभमंत्रसंतजनश्रवनसुहावन ॥ भक्तिसारउच्चारकियेनिजमनसमझायो॥नागरिदासनकहूं बिमुखकाहूसुखपायो॥४०॥दोहा॥नागरिदासबिचारिकहैं, जितेधर्म केअंग ॥ सर्वोपरकलिकीरतन, अरुसाधनकोसंग ॥ ४१ ॥ इति श्रीभक्तिसारग्रंथसंपूर्ण ॥ श्रीराधाकृष्णोजयति ॥

## अथ श्रीमद्भागवतपारायनविधि प्रकास ग्रंथ लिष्यते ॥

वचनिका॥प्रथम सुंदर ठौरहोयतहां कदलीषंभ बंदनमालावली धूपदीपकरिकैं जथासक्ति रचना रुचिर बनाइयैं ताकौंदेखिध्यानउपजें ऐसीयावस्तुकेपात्रहोय तिनकौं आमंत्रनकरि बुलाइये तिनकौं लिखिये यहकवित्त॥ महाकलिकालघोरपावतनओरछोरभोरसांझनिंतिहोकुसंगमतिछीजिये॥यातैंअबकीरतनब्रह्मजग्यरचनांकोभयोहैंआरभसुखलीजेसुपदीजिये ॥ समयोनचूकनौंहैसर्वोपरकाजयहैंमनमैं बिचारिकैंहमरोकह्योकीजिये॥दसधाकोसाधनसमागमहैंसाधनिको कृष्णकथाकीरतनकोभागआयलीजिये१॥ वचनिका॥फिरि सुभदिन देखि आरंभकराइये ता आरंभके समैं प्रथम मुष्यश्रोताहोयसो पूजाकरि आरतीकरैं तासमैंगवइया इहआरतीको पदगावें जथासमैं

राग॥आरतीश्रीभागौतकीकीजै॥श्रवनसुनतजीवनफललीजै॥गोघृतरचतकपूरकीबातीनिरखतजोतिजोतिभईछाती॥ जनमजनमकेबंधनजारे॥ भवसागरमैंबहतउवारे॥ तीनतापकरिडारेमंदे॥ नागरीदासफिरतआनंदे ॥ २ ॥

भाषा—फिरितापीछैं सब बैठैं तबगवइया गावैं प्रार्थनाको यह पद राग प्रभातमैं तथा सारंगमैं तथासमय

पद ॥ अहोमुनिवाहीकोसुजससुनाय ॥ ब्रह्मअगनतैंजरतउवारयोमेरीकरीसहाय ॥ वेजदुनाथसधीरनंदसुतसंतनसदासहाय ॥ उनकीजनमकरमगुनलीलाआदिअंतलौंगाय ॥ वेजगदीसईसगुरुमेरेनांहिनआंनउपाय॥ उनकोश्रवननिपायसुधारसज्यौंचितअनंतनजाय॥ अैसोकोअभिमानीपसुताहिहरिचरचानसुहाय ॥ भववेदनिकौंवैदवेदविधिओषददईबताय॥ ब्रह्मादिकसनकादिकनारदमुक्तिकियेहरिराय ॥ गोविंदप्रभुकीअमृतकथाहैंसुनतनश्रवनअघाय ॥२॥भा०॥यह गायचुकैं तापीछैं औतापढैं प्रार्थनाके कवित॥चढततृविधितापभक्तिछुधामंदभईअंतरजरनचिंतामिटैनामिटाइयैं॥ निद्रानैंनमौंटमननागरउचाटअतिरसनाकटुकवैननांहिसरसाइयैं॥करतकुपथपापवढतसंतापत्यौंत्यौंपुन्यवलछीनहोतदुखअधिकाइयैं॥ नरनकैंराजरोगबिमुषतामेटिवेकौंकृष्णकथाअमृतधन्वंतरव्हैंप्याइयैं ॥ १ ॥ ॥पुनः॥कैसैंनंदभौंननटनागरप्रगटभये बालकबिनोदकैसैंकीन्हेंसुपदाइयैं ॥ कैसैंगोपगनमांझफिरिकैंचरायगायकैसैंबनढाकनकीछांहछाकषाइयैं ॥ कैसैंगिरधारयोअरुमुरलीबजाईकैसैंरचीरासकेलिनिसासरदसुहाइयैं ॥ वृंदावनजमुनाश्रीनंदगांवगोकुलमैं जहांजहां

कीन्हीहरिलीलासोसुनाइयैं ॥ सवैया ॥ रूपअसूझकलोगनिकोजुद याकरिकैंवहियांगहनींहैं । श्रौननिसींचिसुधासबकैंउरअंतरदाह निकैंदहनींहैं॥होबकताहरिभक्तनिकेयातैं मेरीकहीचितमैंलहनीहैं॥ प्यारीकथारसकेजुविहारीकीसोवतुमैंगुनिकैंकहनीहैं ॥ अन्यकवि ॥ द्वादसकंधहिहैंहरिकेतनकृष्णकथाजगपावनकारी । जोव्रजकेलिक रीसुकहोआछैंलागतवैष्णवश्रौननिप्यारी॥क्योंकहैंसर्वगोपीजनवल्ल भक्यौंमुरलीधरक्यौंगिरधारी। कैसैंवृंदाबनमैंविहरेअरुनामभयोकै सैंकुंजविहारी ॥ कवित्त ॥ चलीजातआवसोनजांनीजातनावजैसें लीजियेनिकासिकैंवहतभवधारसौं॥ मनअभिमानीकितेजनमकोबि गरैलसुरझैनमूढमहामायाउरझारसौं ॥ आएहोहमारैंभागबिगरीसु धारोजूअमंगलकौंमेटोमहामंगलउचारसौं॥ करुनाकेआगरकीभक्त सुषसागरकीकहियेव्रजनागरकीकथाविस्तारसौं॥ ५ ॥ यहीव्रजभू मियेईगिरग्रामद्रुमजातरहेझूंमिझूंमिभरेफूलफलमौरमैं ॥ वहीव्रजवा सीसंतपरमचतुरश्रोताह्यांईकेउपासीयेपरेहैंप्रेमरोरमैं ॥ मंजुलपुल नियहीयहीजमुनाकेकूलमिलेदेसकालपात्रकहाकहौंऔरमैं ॥ यही हैंरसिकविहारीयेईश्रीवृंदाबनकथायाहीठौरकीसुनावोयाहीठौरमैं ॥ ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ उदतउचारसंनिपावनजगतहोताकिरनिबिविधि लीलानंदलाललहियैं ॥ परमपुनीतमनकोकनदप्रफुलितविमुषक मोदसमदेपतहीदहियैं ॥ यहैश्रुतिसारमथिनागरसुषदरूपनवधाप्र कासरसपीवतउमहियैं ॥ तिमरअग्यांनकलिकालकोमिटायवेकौंप्रग टिप्रभाकरश्रीभागवतकहियैं ॥ ९ ॥ आपकेजोअकुलानिकीवा नितोवानिहमारीकौंनीकैंलहोगे ॥ आपकेचाहकछूकहिवेकीतौचाह

श्रोतांनहींकीकौंचहौगे ॥ आपजोप्रानगहायहौयामैंतौनागरप्रांनप रायेगहौगे ॥ आपकथामनदैकैंकहौगेतौऔरानिकेमनलैकैंरहौगे ॥ ॥ १० ॥ आयेशुकरूपमहामंगलवधायेआजुभईयहसुभघरीसव निजियारीको ॥ पांवननैंपांवनिक्रियौगृहआंवनिमैंकहांलौंकहौंभैं वातकृपाघातिहारीको ॥ कृष्णकेलिकौतिकसुधाकेंप्यासेनागरयेबै ठेहैंसमूहश्रोताश्रवनतयारीको ॥ भागवतलोगनिकौंभागवतकहिये जूलागतहैप्यारीकथाव्रजकोविहारीकी ॥११॥ कौंनैंमैंउपावाकितेनैंक नलग्योहैकोऊतातैंनिसवासरेहीचिंतानितजारिये ॥ आयेतुमप्रेरकप ठायेश्रीकरुनांनिधिविनतीहमारीसुनिकृपाढारढरिये॥वहुतिकदिनां निकौवढ्यौहैअंधकारहियेंऔरनविचारयहनागरसुधारिये ॥ भक्तिम हारांनींउरभवनपधारिवेकौंभागवतदीपकप्रकासवेगकरिये ॥ १२॥ अथ दाहिवा बिजय रामकृत ॥ ॥ कवित्त ॥ कौंनपुन्यकी नैंवसुदेवदेवकीजूकहोपुरुषपुरानपुत्रपायोरूपजोतहैं ॥ तृणावर्त अघबकबकीआदिहतेकैसेंकैसैंदीनौंभक्तिनकौंआनंदउदोतहैं ॥ द्वारावतिजायकहोकीनैंकौंनराजधर्मविजैरामकेतोकहोवढ्योनिज गोतहैं ॥ नारायनकथासबकहिकैंसुनाइयेंजूपारायनसुनेनरपा राइनहोतहैं ॥ १ ॥ पुनः ॥ जरयोतिहुंतापनिसौंजनमअ्र नेकानिमैंबचनापियूषउरअंतरासिराइयैं ॥ विजैराममोहमदाबिबिधि बिकारनकौंपापकेपहारनकौंतूलसेउडाइयैं ॥ दयाकरिदीननिअ्र सूझनिकीआंषिनकौंअंजनदैग्यानभक्तिरूपदरसाइयैं ॥ नृपतिपरी छतसौंकहीशुकदेवसोईकृपाकरिकृष्णकथाहमकौंसुनाइयैं ॥ २ ॥ ॥ पुनः ॥ कल्हापन्नांकृत ॥ कवित्त ॥ मोहजलप्रवलअथाहजामैं

पूररह्योघेरेमायाजालकहोकैसैंकरिजीजियैं ॥ चहुंवोरसवैंपरवारभ
रेजलजंतुनिकासिनपैयेतामैंदिनप्रतिछीजिये ॥ प्राननाथविनतीकर
तसवश्रोताश्रैसैंशुकरूपश्रवनहमारेमंत्रदीजियैं ॥ बूडेजातसवहीसं
साररूपसागरमैंकृष्णकथानवकाचढायपारकीजियैं ॥ ३ ॥ अन्य
संनावढहीरालालकृत ॥ कवित्त ॥ कृष्णव्रजलीलागुनगायवेकोमा
रगश्रोभक्तिउरश्रायवेकोविधिदरसायहैं ॥ आछेसवसुषनकोसुषहैंप्र
गटभुवयहभवसागरतैंजननितिरायहैं ॥ जानमोक्षफलशुकदीनौंहो
परीक्षतकौंहीरालालकहतउपायजियभायहैं ॥ अंतरजरानिचिंता
प्रजरिरहीहैंकहाभागवतसुनैंविनुहियोनासिरायहैं ॥ ४ ॥ श्रन्यविनैं
चंदवैष्णवीनामचरनदासकृत ॥ कवित्त ॥ श्रुतिरुसंमृत्तश्रादिसोधि
सोधिदेषेसोतोसबकोसकामतासुभावसरसांवनौं ॥ मारगप्रवर्ततामैं
तापननिवर्तहोतयातैंइनमांझमनवृथाहीभ्रमांवनौं ॥ चरनदासम
दिरासौंमदिराहीधोयेंकहाकर्मकियैंकालपैंकलेसहीकरावनौं ॥ ता
तैंशुकरूपभागवतहीसुनावोहमैंभागवताविनांभक्तिरूपनाहिपांवनौं
॥ ५ ॥ पुनःहरिचरनदासकृत ॥ कवित्त ॥ सर्दससिपूरनउजासमैं
रमतरासमाननीमनवैहारिवांसुरीवजायकैं ॥ काननमैंफिरैंसदागौं
हननवेलिनिकेप्यारीमुखचंदचारुरहतचितायकैं ॥ व्रजकौंविहारी
मनहारीपटहारीजिनलीनौंवांमकरसैंलवरकौंउचायकैं ॥ ऐसीसुधा
सानीनिगमागमवषानीपुनिकहियेकहानीदधिदानीकीसुनायकैं ६॥
॥ वचनिका ॥ येकवित्त पढिचुकैं फिरि कथा होय तामैं पहिलैं
श्रीभागवत महातम होचुकैं तब श्रीभागवत होय सो द्वैवेर कथा
होय एक तो प्रात अरु एक घटिका रात्रिगयें सो पहर पहरही
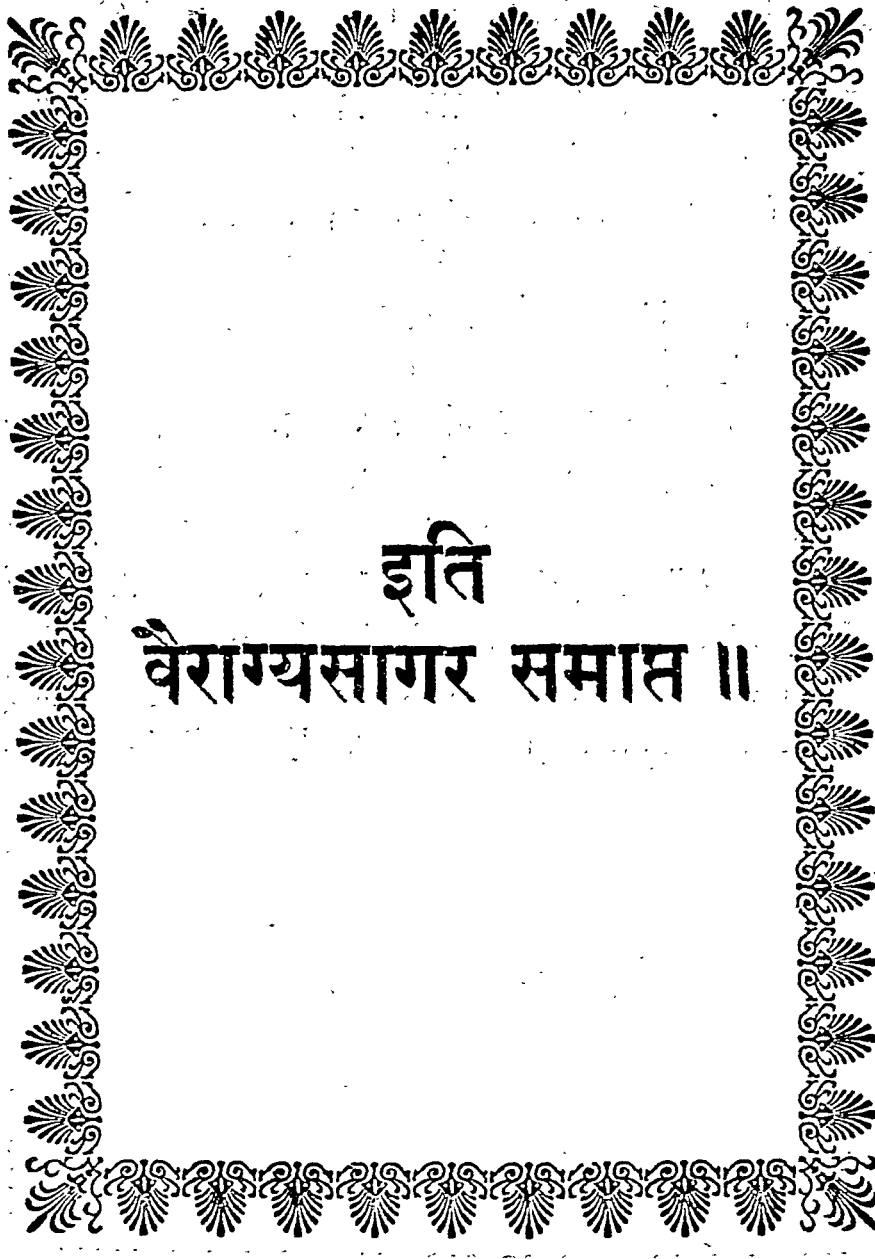
हैं बीच बीच प्रेमानंद उपजत जाय अरु सरीर श्रम करि महा कष्ट पावैं तब आनंद कहा होय तातैं वक्ता श्रोतानिकौं परिश्रम न होय यालिये ऐसैं सुखेन सुनियैं पुनि बीच बीच जथा अवकास जथा समयके विष्णुपद होत जाय यामैं वक्ता हूकौं विश्राम हैं अरु स्वादहू उपजैं ऐसैं कथा होचुकैं तापीछैं वैष्णव पद्धितके विष्णुपद हौंहि फिर नावधुनि सहत प्रदक्षिनां करैं याभांति नित्य सुनत द्वादस स्कंध सर्व पूरन होचुकवेके उत्सवकैं दिवस जथा सक्ति बसन भूषन अलंकृत परकर सहित हूजे फिर श्रीभागवतको वक्ता दंडवत करि पत्रधरि ऊपनैत करि रहैं तब श्रोता पढैं सो यह कवित्त ॥ तीनतापतचेतेजकोरिकतरानि जैसैंजामैंजीवजरेसोनजातकछूवैंकहीं ॥ पारायनसमैंमनभावनकैं सावनसौंमेटीरजहियसियराईकौंतवैंलहीं ॥ नागरउरआनंदभोवाढीहरियरीत्यौंहुतीजीअविद्यासोजवासेलौंसवैंदही ॥ वक्ताआपगाजगाजभागवतझरलायेश्रोतासरसायेप्रेमभक्तिकीनदीवही ॥ १ ॥ पुन ॥ नागरकहायदुखसागरमेंपरेहुतेराजसअपारधारआनतनपहरैं ॥ हरिकेसमंधसतसंगकैंनरंगरचेकालतैंनिडरभयेहियेमैंनहहरैं ॥ ऐसेहुतेतिन्हैंकृष्णचरितविचत्रकरिरंगडारेरंगमहामाधुरीमैंगहरैं ॥ भागवतचंद्रमाप्रकासकैंकरतउरसुखकौंसमुद्रवढ्योआनंदकीलहरैं ॥ २ ॥ न्यौंतिकैंवुलायेआछैंआयेमनभायेलोगसंतऔमहंतआचारजकुलनौगुनी ॥ औरहूसवादींहैंबरनतीनसोप्रवीनाजिनकीरहीहैंमिटिगईमतिऔगुनी ॥ नागरउदारवक्ताविविधित्यौंनारानिसौंदईहैरसोईनोंकीसुधासनहौगुनी ॥ पंगतिनभेदकीनौंपंगतिबैठायजथाफेरयो

कथापारसबढाईभूखसौगुनी ॥ ३ ॥ नागरमनफिरैंवह्यौकेतोसम
झायकह्योमायाकैंलपेटचैपायपलहूनठहिरैं ॥ हरिसमंधमैंनरहैंथि
रचंचलअतिचलतप्रचंडपौंनजैसैंपटफहिरैं ॥ ऐसोहुतोताहिकृ
ष्णचरतिविचित्रकहिबौंरिडारचौंमनमहामाधुरीमैंगहिरैं ॥ भागव
ताकासासिहोतहीउदतहियैंभक्तिकोसमुद्रवाढचोआनंदकीलहिरैं ॥
॥ ४ ॥ अन्य ॥ कीनौंउचारिजिहींछिनतैंभजनानंदआनिछ
योसुछयोहैं ॥ श्रीरसिकेंद्रविहारीजूकीकथाआसवप्यायदयोसुद
योहैं ॥ जेहेअभावकतेईगयेछकिभावकरंगठयोसुठयोहैं । लोयनभी
जरहेसुरहेमनहाथतैंरीझगयोसुगयोहैं ॥ ५ ॥ गाईसोपुराननमैंपा
ईनिधिअनयासयहभूमिछाडिहमकितहूनजावैंगे । जमुनाजलपान
रुसनानश्रीजमुनाकीरजकौंपरसप्रेमपुलिकासिहावैंगे । वृंदाबनमां
हिसदासंतनिकैंबांहबलदंपतिचरित्रचारुसुनैंगेसुनावैंगे । रसिकबि
हारीप्यारीकृष्णकथाआनंदमैंऐसैंहीवितांईसमैंऐसैंहींवितावैंगे ॥
॥ ६ ॥ अन्य ॥ चाहचितौंनलगीटकलालसौंनेहमईगतिऔरैंभ
योतन । आनंदमैंपवरयोनकछूचितबौरिदयोसुखसागरकेगन ॥
श्रीशुकत्यौंहीकथावागुपालकीमोहनवानीछकायेसबैंजन॥ झूंमिझु
केरसमत्तव्हैंबावरेभीजरहेदृगरीझगयोमन ॥ ७ ॥ अन्य ॥ भट्टब्र
जनाथकृत ॥ कवित्त ॥ प्रगटचोप्रथमअनुरागहीअरुनतासौं
भयेसबलालरंगरंजितगहगहे ॥ मिटीमायानिसिचलेनवधाभक
तिपंथसूकेपापपौधाकलिकीनेजेलहलहे ॥ छिपेहरिभजनविमुखम
तिउडगनभाजेकामक्रोधचोराचितकेबहबहे ॥ नागरप्रकासभांनभा
गवतहोयकियेहियकेकंवलमहाआनंदडहिडहे॥८॥ अन्यविजैरामदा

हिवांकृत ॥ कवित्त ॥ पोषेहैंपपीहाप्रानतपतामिटायसबनृत्ततमयूर
मनहरपबढायोहैं ॥ हियभूमिमांझभावअंकुरप्रगटभयेप्रीतलताफूली
चारुप्रेमतरुछायोहैं ॥ पूरितप्रवाहभक्तिआपगाबढीहैंउररसासिंधुभ
रिकैंदृगनिउझलायोहैं ॥ शुकमुनिरूपसेहैंबकताजूबिजैंरामभा
गवतअमृतकोघनबरसायोहैं ॥ ९ ॥ अन्य ॥ कल्हापन्नांकृतक
वित्त ॥ ग्यानकोप्रकासभयोआनंदउरानिछयोसबकेअग्यानदुषग
येलैकैंपापकौं ॥ वृंदावनधामस्यामास्यामआभिरामनकीसुषदल
लितलीलाकरतसुजापकौं ॥ व्यासजूकेबचननिरचनासुनायसुषपा
वनकियेहैंमेटिदियेबहुआपकौं ॥ प्राननाथश्रोतांनकेश्रवनसुधाकौं
सींचिभक्तिसियराईमंदकीनैंतीनतापकौं ॥ १० ॥ अन्य, सनाव
ढहीरालालकृतकवित्त ॥ भक्तिलताअदभुतउलहीजुउरमांझपिय
राईनीरसतामिटीसुनिधुनिकैं ॥ नवअनुरागतेईपल्लवप्रगटभयेसींचे
सुधाबैंनआपरूपशुकमुनिकैं ॥ हीरालालसांवरेतमालसौंवलितअ
तिललितसुमतिआलबालराष्योचुनिकैं ॥ छायरह्योछायासोउछा
हतहांसबनकेफूलेमनभक्तनकेभागवतसुनिकैं ॥ ११ ॥ अन्य ॥
मुनसीकन्हींरामकृतकवित्त॥ सतजुगत्रेताकिधौंद्वापुरप्रगटकियोऔ
रैंमनभयौसोनकहिवेमैंआवनौं ॥ छुटगीमलीनमतितामैंहृतेलीनअ
बप्रगटीनवीनभक्तिहरिगुनगावनौं ॥ कृष्णलीलाकहिवेकीकांनानि
रहैंगीधुनिरूपमुनिनैंनाजियलालमनभावनौं ॥ कन्हीरामसुषधाम
ब्रह्मजग्यरचनांकोहियतैंननिकसैंगौसमयसुहावनौं ॥ १२ ॥ अन्य
विनैचंदवैष्णवीनामचरनदासकृतकवित्त ॥ कारिडारयोछीनतापती
नकोप्रबलदुषआनंदअपारआंनिसबकैंहियैंछयो ॥ श्रोतारसभरेअ

रुपरसउछाहभरेभरेनैननीरप्रेमपीरठाटहैठयो ॥ चर्नदासचित्तक
लिकालमांझविस्मययेऔरैंगतिऔरैंमतिऔरैंलोकव्हैगयो ॥ अहो
शुकरूपब्रह्मसंहितासुनाईतातैंसतजुगत्रेताकिधौंद्वापरसमैंभयो ॥
॥ १३ ॥ महामूढमनताकीकहियेकहानिकैसीजाकोलैंकुसंग
च्यारिबेदानिमैंगायोहैं ॥ हियेभरयोकदरजसुयाकेपुनीतकाजव्हैकैं
दयालआपभागवतसुनायोहैं ॥ चरनदासचिरजीज्यौबक्तासुखदरू
पतिनयौंविरदभवतारवेकोपायोहैं ॥ होतीनांठौरपरयोजगप्रपंचरो
रताहिगौरकरिदौरभक्तमहलबसायोहै ॥ १४ ॥ श्रवनकरायशुकपु
रानअहोवक्ताजूसवउरभौनकियोभक्तिमहारानीको ॥ कृपाद्दष्टितैं
जुकीन्हीसुधावृष्टिचहूंकोदवर्ननकहांलौंकीजेअैसीमृदुबानीको ॥
चर्नदासतुमसेतोतुमहींहोमहाराजभक्तिदांनदैबोकामतुमहीसेदांनी
को ॥ समरसकादिगर्वमेंटिदियेहरिजैसेंआपमैंटयोहैगर्वकलिसेअभि
मांनिकौ॥१५॥बचनिका॥यह कबित्त पढचुकैं ता उपरांइत इत्यादि
पद गावैं ॥ पद ॥ मुनिसबलोकपावनकरे ॥ प्रगटिश्रीभागवतकी
नौंकनासागरढरे॥ ल्यायभागीरथसुरसुरीपापपूरबहरे॥तुमजुसबउर
भवनभवनमैंभक्तिदीपकधरे॥कृष्णचरित्रबिचत्ररसमदप्रेमगहवरभ
रे॥सहजश्रीशुकचरननौकादासनागरतरे॥१६॥व०पूजाकरि मुख्य
श्रोता आरती करैं तावेर संख दुंदभी भेर प्रणवआदि वाद्यगीत
नृत्य करि महामंगल धुनि हौंहि, पुसप और सौगंध चूरन चंदन-
की बहुत वृष्टहोय,परसपर तिलककरैं सिरदूबधरैं फूलमाला पहि-
रावैं गरैं पायप्रणाम भुजभरि मिलन सर्वकरैं, वैसैंही गहगड धुनि
सहित प्रदक्षिनांलैं साष्टांग दंडवत करि यासुखकौ चिंतवन करत

सब अपअपनैं स्थांनकजांहि, याकालिकालमैं सर्व जग्य वर्जतअरु यह केवल ब्रह्मकीरतन जग्य करतव्यहैं सोकरैं, ताके भाग्यको वाष्यांनब्रह्मा आपनी आरबल प्रमानकरैं तऊपूरन न होय,ताकौंम नुष्य तुछ आर्बल कहावरननकरैं ॥दोहा॥ जपतपसंजमनेमव्रत, जो गजग्यकरिपूर ॥ भक्तिभागवतसंगाबिनु, भक्तिनउपजैंमूर ॥ १ ॥ संमृतवेदपुरानहैं, सबहीहरिकेअंग ॥ रंगनलागैंभक्तिको, बिनांभा गवतसंग ॥ २ ॥ जक्तभक्तिवहुभांतिकहैं, नानामतकेमांहि ॥ शुक मुखकैंविनुफलद्रवैं, ब्रजरसपावैंनांहि ॥ ३ ॥ नागरिदासविचारिजि य, अफलजायनहिंदेह ॥ चाखिभागवतअमृतफल, जनमसफल करिलेह ॥ ४ ॥ लखिइच्छावहुवैष्णावनि, नागरीहितसरसाय ॥ र चनारुचिरचिग्रंथकी, दयोश्रवनमधुपाय ॥ ५ ॥ सतरैसैंनिनांनवा, संवतसावनमास ॥ पारायनजुप्रकासविधि, क्रियोनागरीदास ॥ ६॥ इति श्रीमद्भागवतपारायनविधिप्रकासग्रंथ संपूर्णम् ॥ श्रीराधाव ल्लभोजयति ॥

---

इति
वैराग्यसागर समाप्त ॥

श्रीः

# नागरसमुच्चय ।

तत्रादौ

# सिंगारसागर प्रारंभः ।

अथ कृष्णगढाधिपति श्रीमन्महाराजाधि
राजमहाराजाजी श्री श्री श्री १०८
श्री श्री सावन्तसिंहजी द्वितीय हरि
संबंध नाम नागरीदासजी कृत,

ताकौं

मुंबईमें.

ज्ञानसागर छापखानेमें
छापके प्रसिद्ध किया.

श्रीनृत्यगोपालोजयतितराम्.

श्रीनंदसुतगोपीजनवल्लभोजयति ॥

# अथ सिंगारसागर लिख्यते ॥

## ब्रजलीलाग्रंथ ॥

## अथ दसमस्कंधके पूर्वार्द्धानुसार श्रीब्रजलीला नंदगृह जनमोत्सव षंड लिख्यते ॥

॥ रागसोरठ ॥

पद ॥ श्रीवल्लभकुलवंदौं ॥ करिध्यानपरमआनंदौं ॥ धनि नंदजसुमतिरानी ॥ लयोकृष्ण जनमजगजानी ॥ कृष्णजनमतभयोआनंदगृहमहामंगलठयो॥ घोषउच्छवभीरभारीनभबिमाननसौंछयो ॥ दूधदधिघृतमर्चीकादौंमनौंभादौंबरसहीं ॥ पोहोपवरषाकरतसुरअहलादअतिजियसरसहीं ॥ नवनिद्धिघरघरफिरतकंवलागोपकुलगनअलिनमैं ॥ छायरह्योबैकुंठतैंसुखअधिकगोकुलगलिनमैं ॥ तिहींछिनतैंसकलब्रजजनसंपदासुखसौंसजे ॥ दासनागरधन्यसोजिहिंपरमहितकरिहरिभजे ॥ १ ॥

## अथ दैत्यबधषंड ॥

झूलतपालनैंहरिराई ॥ भंज्योसकटबकीवनिआई ॥ चकितरहीब्रजबाला ॥ यहकोहैंरूपरसाला ॥ प्रथमरूपरसालधारिकैंलालगहि

रुएगोदमैं ॥ कंसरिपुकौंपायपलनांपूतनांभइमोदमैं ॥ करतस्तनपा नलींनिंप्रानऐंचिसुसोसमैं ॥ कृपानिधिहरिदइगतिकारिगिरीतनषट कोसमैं ॥ जमलाअर्जुनतारिदईमुषमातविस्वादिषायकैं ॥ तृणाव र्तअरिष्टअघबकहत्योबच्छफिरायकैं ॥ संषचूडप्रलंबकेसीव्योमधे नुकबहोहते ॥ दासनागरगोपतनहरिकियेत्र्प्रासुरसदगते ॥ २ ॥

## अथ दावानल पांनादिक ब्रजरच्छिक लीलाखंड ॥

करिपांनदावानललयो ॥ गहिकाढिकालीअहिदयो ॥ गोपनवैं कुंठदिषायो ॥ हरिव्यालतैंनंदबचायो ॥ लयोनंदबचायबौहोंवि धिसकलव्रजरछ्याकरी ॥ सप्तदिनकरधारिगिरवरप्रलयजलमेटी झरी ॥ द्रुमनकेषगनगकेऊपरातिन्हैंकहुंनहिंजलाछियो ॥ परयोपा यनइंद्रतवसिरअभैकरगिरधरदियो ॥ गोपगोगोपीनकैंमनसप्तदिन उच्छवरह्यो ॥ कहतजैजैसकलसुरनंदनंदगोविंदपदलह्यो ॥ विविधि लीलाकरतव्रजमैंनंदसुतअतिसौहने ॥ दासनागरिकृष्णअरुबलि महामनकेमौहने ॥ ३ ॥

## अथ मांषन चोर लीला षंड ॥

जसुमतिसुतसुषरासी ॥ रसमग्नसकलव्रजबासी ॥ तियधामका मसबभूली ॥ रहैंवालकेलिरसझूली ॥ करतबालककेलिबौहोविधि सबनकेमनकौंहरैं ॥ चोरहींदधिदूधघरघरजदपिलैंकौनैंधरैं ॥ वृंद वांदरअरूसषासबतिनहिंसंगषवावहीं ॥ देषिभवनीभवनआवततहां तैंभजिजावहीं ॥ कहूंबालकचढिअलूषलजाकैंपरफिरसांवरो ॥ रं ध्रघटकरिमह्योपीवतनंदसुतमनभांवरो ॥ जग्यमैंत्र्प्रावतनकोनैंवेदमं त्रउपायकैं ॥ दासनागरसोवव्रजमैंदहीपातचुरायकैं ॥ ४ ॥

## अथ गोचारन छाक लीला षंड ॥

बनबनगायचरावैं ॥ गावैंअरुबैंनबजावैं ॥ बलिरामकृष्णसुषदाई ॥ बहौलीलाकरतसुहाई ॥ करतलीलाबिबिधिबनमैंसंगवालकमंडली ॥ छाकजैंवतठाकछहियांचितैंचकितकमंडली ॥ चहूंदिसिग्वालावलीव्रजचंदविचअवरेषिहिं॥ ललितलीलाबालकउतकसुरबिमांननिदेषिहीं ॥ परसपरचापतचषावतहसिहसावतहेतबैं ॥ जग्यमुकक्यौंजूठजैंवतहरेबिधिबछराजवैं ॥ सकलजगरक्षोहेरिजाकौंसोईहेरनकौंचले ॥ दासनागरकरतभोजनफिरतमोहिलागेभले ॥ ५ ॥

## अथ बछराहरन लीला षंड ॥

राजसगुनमदफूलिकैं ॥ हरेग्वालवच्छविधिभूलिकैं ॥ फिरितेसेतिहिंठांचितैं ॥ गिरचोचरनचतुर्मुषहीहितैं ॥ गिरचोचरननिदंडज्यौंब्रह्मांडकर्तास्यामकैं॥वौहोरूपचितवतचतुर्भुजाविचअवनिवृंदाधामकैं ॥ डारअरुफलफूलदलद्रुमकृष्णमयसबजानियैं॥अहावृंदाबनमहातमकहाकहिजुवषानियैं ॥ कहीहरितरवरनिमहिमांआपुसुपवलवीरकौं ॥ रहोतिनकौध्यांनरहेजियपरासिजमुनानीरकौं ॥ धन्यवहबनभूमिजिहिंठांलालपदपंकजधरैं ॥ दासनागरधन्यसोनरवासवृंदावनकरैं ॥ ६ ॥

## अथ जग्यपत्नी लीला षंड ॥

पूरनब्रह्मनंदकैंअैंनां ॥ सुंदरस्यामकमलदलनैंना ॥ कबदेखैंरूपप्रकास ॥ लगीजगपत्नीनमनआस ॥ लगीआसउदासजियमैं

रहैंडारिउसासकौं ॥ नैंनभरिबनओरांचितवैंज्यौंचकोरप्रकासकौं ॥ कह्योजिहिछिनस्यामकोसंदेसग्वारनिआयकैं ॥ उठीलैंलैंविविधि भोजनचलीआनंदछायकैं ॥ धरतपगचंचलतऊभयेपंथकोसकरोर के ॥ चंदचाहिनघुटेछूटेवृंदमनहुंचकोरके ॥ एकरोकीगेहसोतजिदे हसबपहिलैंगई ॥ दासनागरलालकरिउरमालतिंहिबालहिलई ॥७॥

## पुन जग्यपत्नी लीला षंड ॥

ढिगआईद्विजबाला ॥ रहीइकटकलषिनंदलाला ॥ ठाढेपरमछ बिपावैं ॥ हरिकरगहिकंवलफिरावैं ॥ कंवलफेरतस्यामठाढेकंवल मुषमुसकावहीं ॥ कंवलमालाचरनपरसतकंवलदृगनिढुरावहीं ॥ वामभुजधरिसषाअंसहिंधुकेअतिछबिछायकैं ॥ तिहींछिनलषिको टिमनमथरहेहैंसिरनायकैं ॥ निरषिमोहनमाधुरीद्विजवधूप्राननिवार हीं ॥ देतभोजननेहआतुरदेहकौंनसंम्हारहीं ॥ करतहींनिसद्योसभा मिनसोमनोरथसबठये ॥ दासनागरनंदनंदनप्रीतहीकेंवसभए ॥८॥

## अथ चीरहरन रास बरदांन वेणुरव आरंभ षंड ॥

गोपीजनजमुनांन्हावैं ॥ देवीपूजिपूजिसिरनावैं ॥ कात्यायनी बरदीजैं ॥ हमारेनंदपुत्रपतिकीजैं ॥ नंदसुतचितचोरआएलएचीर चुरायकैं ॥ प्रीतिसांचीनिरखिकैंदयेचीरबरमुसकायकैं ॥ आयहैंअ बसरदरात्रीरमणमिलिकरिहौंजबैं ॥ सकलपूरनकामव्हैहींमदनमद मोचततबैं ॥ सरदनिसिआईजुवेवहौमालतीफूलनछई ॥ उदितपूर नचंदकिरनैंसर्वबनव्यापकभई ॥ अतिमनोहरसमैंनिसिमुषबेणुहारि अधरनिरली ॥ दासनागरमहामोहनमंत्रधुनिदूतीचली ॥ ९ ॥

## अथ रासारंभ षंड ॥

बंसीस्यामबजाई ॥ सोमधुमयधुनिछाई ॥ परीश्रवनमैंजाकैं ॥ सुधिनांहिंरहीफिरताकैं ॥ रहीनांहिंनसुधीतनकहूजिहिंभनकश्रवन निसुनी ॥ गईछूटिसमाधिसिवकीबिवसमनग्रीवाधुनी ॥ द्रुमनिपरि जाकिथकिरहेषगरुक्योजमुनानीरहैं ॥ हलतनांहिद्रुमावलीथकिर ह्योमंदसमीरहैं ॥ चलीसुनिव्रजवालमारगनादअमृतधारकैं ॥ गेह तजिकैंनेहआतुरलोकवेदबिसारकैं ॥ रुकीसोनहिरुकीगृहबिचगई तनताजिभामिनी ॥ दासनागरस्यामघनसौंमिलीचलिज्यौंदामिनी॥

## अथ रासरमण लीलाषंड ॥

अलीअवलीसबठाढी ॥ मनुचित्राचितेरैंकाढी ॥ रहीइकटकनैंन बिसाला ॥ मधिनिरषित्रृभंगीलाला ॥ माद्धिनटनागरतृभंगीकंवल मुषमुरलीधरैं ॥ बंकभुवमनहरनद्दगसिरमुकटबनमालागरैं ॥ हरिम नोहरमाधुरीतियपिवतपललागैंनहीं ॥ जिहींतनजाकेपरेद्दगथकेपु नितिहींकितहीं ॥ रहेअरबीरस्यामहूइतलपितियनिकीओरहैं ॥ बहो रूपघनमैंपरेद्दगभयेभरेकेसेचोरहैं ॥ भीरबहोचंदाननीबनभयोरू पप्रकासहैं ॥ दासनागरसबनिहियमैंरासकरणहुलासहैं ॥ ११ ॥ पुनरासषंड ॥ मनमोहनहितनातैं ॥ हसिकहनलगेकछुबातैं ॥ सुन तबिंगकेबैंनां ॥ भरिलीनेतियजननैंनां ॥ लयेभरिकैंनैंनसबरुपरोष जुतभुवभंगकी ॥ जगतविजईहितपिचीहैंमनहुंचापअनंगकी ॥ स तरहैंहैंबंकचितईलगीछाबिअभिरामिनी ॥ मंदसहजसुछंदसौंपि रदयेउत्तरभामिनी ॥ तवबिहसिरसद्दष्टिसौंपियसवनकौंअंकानि

भरी ॥ आरंभगानसुरासहितमिलिमहामोहनधुनिकरी ॥ करनसौं करजोरिहैंद्वैतियभईबिचश्यामकैं ॥ दासनागररच्योमंडलमध्यवृंदाधामकैं ॥ १२ ॥

## अथ रास विरहोत्पन्नलीला षंड ॥

बिहरतबनवनवारी ॥ कहुंदुरिगयेढिगलैंप्यारी ॥ विरहाविबस तियहेरैं ॥ संगमधुपगनघेरैं ॥ घेरैंमधुपसुकमोरलषिमुषओररहतच कोरहैं ॥ बिकलभईबूझतलताद्रुमकितैंनंदकिसोरहैं ॥ नीरनैननि पीरहियबिनधीरबिलपतडोलहीं ॥ कितैंहोहरिप्राणनाथयौंसहित आरतिबोलहीं ॥ लालकीलीलाललितमिलतिहिंसमैंसबहिनरची ॥ बढ्योबिरहविषादजियसुकवारिअबलातनतची ॥ पियहिहेरत फिरतटेरतसकलबनमैंरगमगी ॥ दासनागरिचंदसौंबिछुरीकिर नजनुजगमगी ॥ १३ ॥

## पुनिरास विरहोत्पन्न लीला षंड ॥

च्यारचरनचिन्हपाए ॥ रजसौंदृगसीसलगाए ॥ पियसुषसौंसु षभीनी ॥ कछुकोपीनाहिप्रवीनी ॥ नहिनकोपीप्रेमवोपीसंगगोपी जानिकैं ॥ बहुरिदेषीवहीठाढीतजीपियसुषसानिकैं ॥ रगमगीअ लकैंसिथलदृगपुनिचलतधारानीरहैं ॥ तुट्योमोतिनहारउरतैंछु ट्योअंचरचीरहैं ॥ डगमगतपगधुकिधरनिपरनाहिंसकतराहिगहिधी रकौं ॥ मनहुंदीपकलोयलहकतपरसमंदसमीरकौं ॥ छुवतमुखद्रुम पातपल्लवसकतनहिंनिरवारिकैं॥ दासनागरिउठतपियकौंकासिका सिपुकारिकैं ॥ १४ ॥

## अथ हरिप्रागट्य व्रजबाला मिलनषंड ॥

महासघनबनआवैं ॥ तहांजीकोलोभनल्यावैं ॥ अपनैंअंगउजेरैं ॥ रूपकोसागरहेरैं ॥ रूपसागरसौंविछरितरफरतबिधिज्यौं मीनकी ॥ देषिकैंदुरिद्रुमनिमैंपियपहँगतिगोरीनकी॥ लालदृगभरिनीरलीनैंपीरजियव्यापकभई ॥ तबहितिनमैंआयप्रगटेसलजमुषग्रीवानई ॥ आनंदतवकोकह्योपरतनबहोरिबैठेपुलिनमैं ॥ रंगबाढ्योदुहूंदिसिहितबहसिबातैंपुलिनमैं ॥ रिनीहौंतिहारोकहतवारतअपनपोस्यामहैं ॥ दासनागरव्रजबधुनिलयेमोलहरिबिनदामहैं॥१५

## अथ रासलीलाखंड ॥

निर्ततहैंव्रजवामा । सुंदरछबिअभिरामा ॥ दामिनितनदुतिराजैं । मुखकुंडलथहरनिभ्राजैं ॥ थहरतकुंडलफहरतअंचलनहिंठहरतउरमाला ॥ खूटतबैंनीछूटतफूलसुपियमनलूटतबाला ॥ सरससगीतानिघटतनउघटततत्तरंगत्तक्किटकाटिलौंनी ॥ ततथेईथेईथेईधुमकटतकथोपरननिपरतसुठौंनीं ॥ झंझंझनकतकिंकिंनिनूपरस्वनकतवलयाकंकन ॥ उरपातिरपनटअलगलागमैंलेतभुजनभरिअंकन ॥ चंचलतनचलदलगतबिलुलितदुतिअलातसीसोहैं ॥ नागरीदासमुघरनिर्तकसबगुनप्रगटतमनमोहैं ॥ १६ ॥ पुनिरासलीलाखंड ॥अनूपमरासबन्यौहैं ॥ सुरतांनबितांनतन्यौंहैं ॥ गिरचोकामकामकेवानानि ॥ नभमोहेदेवविमाननि ॥ देवबिमाननिकौतिकमोहेफूलनिकौंबरसावैं ॥ प्रेममगनकौतूहलदेखतदुंदुभिपरनमिलावैं ॥ निरखिसुरबधूपीडतमनमथसबसुधबिसारिगइहैं ॥ कबरीछुटतकिसतकुस

मावलिनीबीसिथलभईहैं ॥ मधुमयरागमुरलिकामोहताथिरचरचर थिरकीनैं ॥ उडगनसहितचंद्रमाविथकितपैंडनआगैंदीनैं ॥ मुकट लटकअरुहस्तकभेदनअदभुतरंगबढ्योहैं ॥ नागरिदासरासतैंरस मयनभलौंशब्दचढ्योहैं ॥ १७ ॥ पुनिरासलीलाखंड ॥ श्रमकनमु खव्हैंआये ॥ मनुचंदसुधाप्रगटाये ॥ खिसबैंनांझुकिमोहैं ॥ सिर सिथलचंद्रिकासोहैं ॥ सिथलचंद्रिकामुकटझुकौंहोंश्रमितअंगछबि पाये ॥ उपजतगातिकौतकपायनमनडगमगडगनिडुलाए ॥ स्वेदसु वासअंगप्रगटतभईसंगभौंरभहरावैं ॥ गउरस्यामतननीलपीतपटफै लफैलफहरावैं ॥ गिरिगिरपरताबिमलनगभूषनरहीजुतनसुधिनां हीं ॥ रसानंदसागरअतिबाढ्योमगनभयेतिहिमांहीं ॥ मंडलरासबी चदोऊउरझेगरबांहीपियप्यारी ॥ नागरीदासबसौहियराधाअरु श्रीकुंजथिहारी ॥ १८ ॥

## अथ रासोत्तरजलविहार खंड ॥

रासमैंरंगरह्योहैं ॥ सोनहिजातकह्योहैं ॥ श्रमितअंगसरसाये ॥ तबचलिजमुनांआये ॥ आयेजुजमुनांतटपुलिनतहांकंवलसौरभआ वहीं ॥ धसेजलरसमत्तक्रीडताछिरकितनाछिरकावहीं ॥ अंजुलनिज लछुटतछबिकविकहतजुगताविचारिकैं ॥ ग्रहतरनिजाउछाहमुकता मनुउछारतवारिकैं ॥ चंद्रिकामैंचमकिबूंदैंगिरतयौंछबिपावई ॥ जा निवहौउडपतिअवनिउडिउडिगगनतैंआवई ॥ पारजातकेजोत मयजनुफूलखेलतफैलहीं ॥ दासनागरिजलकलोलतछबिसौं छिरकतछैलहीं ॥ १९ ॥

## पुनःजलविहारखंड॥

भीजेतनछबिपावैं॥ पियकेलखिनैंनासिरावैं॥ प्रेमसनीतियजलसनी॥ राजतज्यौंकंचनकुमुदनी॥ मनहुंकंचनकुमुदनीजलबीचदुतिजगमगरही॥ भईलखिव्रजचंदप्रफुलितपरतनाहिंसोभाकही॥ तनछबीलेवारभीजेलगेअतिछबिपायकैं॥ ज्यौंबचंदनपूतरिनसौंरहेअहिलपटायकैं॥ कबहुतनजलमगनाविथुरेकचनिबिचमुखदेखियैं॥ ज्यौंसिवारनचंदउरझेनिरतजलअवरेखियैं॥ रूपजगमगरह्योसलिताखिलीराकाजोतिहैं॥ दासनागरितिहिंसमैंजलकेलिवहोविधिहोतहैं॥ २०॥

## अथ जलबिहार उतरगृह आगमन खंड॥

क्रीडतजुवतिनसंग॥ हरिव्रीडतकोटिअनंग॥ कामकेलिरसभीने॥ निसिविविधिकुतूहलकीने॥ कीनैंकुतूहलविविधनिसरसमंडलीआनंदछई॥ रूपसरसनिअंगपरसनिरंगवरसनिअतिभई॥ नीरबिचबलबीरगजज्यौंसंगकरनिनिसुखलियो॥ बाहुसुंडादंडसौंअतिअंबुअवगाहनकियो॥ झोलिसुखसागरचलेनिसनैंनउन्मीलताकियैं॥ रहिमनोहरमंडलीछकिप्रेमरसमदिरापियैं॥ काव्यआश्रयभईवातैंसुधाश्रवनसुहावहीं॥ दासनागरधन्यसोव्रजललितलीलागावहीं॥२१
इति श्रीव्रजलीलापदप्रबंधसंपूर्णम्॥

## अथ गोपीप्रेमप्रकासग्रंथलिख्यते॥

दोहा॥ गोपीगोपीनाथके, एकप्रानद्वैगात॥ तिनहीकौंसिरना

यकैं, तिनकीवरनौंबात ॥ १॥ अथ बचानिका ॥ श्रीकृष्ण उद्धवकौं
व्रजपठये, ताको जगप्रसिद्ध प्रयोजनतो यह, जो श्रीनंद जसोदा
गोपी गोपनको समाधान करनौं, प्रीति लोकरीति अनुसरनौं,
इति प्रथम प्रयोजन ॥ अथ दुतीयप्रयोजन ॥ श्रीकृष्ण लीलापुरु
षोत्तम अवतारी सो जाकैं अभिमान होय ताको अभिमान रहन
न दे, सो देख्यो उद्धव ज्ञानको अवतारहैं, अरुयाकें अभि
मानहैं, जो ग्यानउपरांत औरपदारथ कोऊनांहीं, याकिलियै
इनकौं व्रजपठये, अरु उद्धवके चितमैं जो मुष्य आसयहो सोई
श्रीकृष्ण उन्हकौं यालियैं कहायो, जो इनकें उनकें यही
चरचाहोइ, जो गोपी प्रेमभक्तिको स्वरूपहैं, उनके मुखकी
बात सुनि उनकी दसादेखि इनको वह मत्तअरुअभिमान दूरि
होयगो ॥ दोहा ॥ कहाउद्धवकहाइंद्रअरु, मदनमहे[illegible] खान ।
काहूकैंतननतनकहरि, रहनदयोनाहिंमान ॥ २ ॥ इति [illegible]यप्रयो
जनम् ॥ अथ तृतीयप्रयोजनम् ॥ जो सगुन निर्गुन सो [illegible] दोऊ
गावत हैं सो उद्धवकेतो निर्गुन ब्रह्मकोआसै ॥ अरु गोपीनके
प्रेमरूपको आसै, यो ग्यानी वे अनुरागी सो इनदोवनके चरच
करांवनीं सो जामैं जोसरस रहैं अरु आपनौं रंग वाकों लगायदेवैं
सोही मत मुष्य जगमैं प्रसिद्धहोय ॥ दोहा ॥ प्रेमरूपमोहनमई
उमगैंउदधिउलैंड ॥ कौनसकैंतबरोकिकैं, ग्यानधूरिकीमैंड ।
॥ ३ ॥ इतिप्रयोजनतृतीयम् ॥ ॥ अथ चतुर्थ प्रयोजन ।
जो श्रीकृष्ण तो सिंगारमय परम रसिक मानि, अरु उद्धव नि
कटवर्ती सषा सो महारूपेग्यानी, सो इन उनके संगमैं सदा रं

सुष क्यौंकरि निबहैं, एकमत प्रकृतबिन तातैं हरि सुजान जानि मनजानि कृपाकरि ब्रजके रंगकी रैनीमैं रंगाय मंगाये, ॥ दोहा ॥ प्रेमभक्तिनवरंगकी, रैनीब्रजअभिराम ॥ बिनारंगैंवहिरंगमन, ढिग क्यौंराषैंस्याम ॥४॥ इतिचतुर्थप्रयोजन ॥ अथ पंचम प्रयोजन ॥ जो श्रीकुंजबिहारी तिनको नित्यबिहार श्रीवृंदावनमैं, तिन यह बिचारी जोउद्धव निजसषाहैं, ताकौं श्रीवृंदावनमैं राषियैं, सोयाकी बिनउतकंठा कैसैं बास होय सो याहूतैं उहांपठये, जो गोपी सतसंगके रंगको सुषभिदैं तव वाठौरको वास चाहैंगे सो अैसैंहीं भयो उद्धव परार्थनांवचन ॥ श्लोक ॥ आसामहोचर्णरेणु जुषामहंस्यां वृंदाबनेकिमपिगुल्मलतौषधीनां ॥ याद्रुस्त्यजंस्वज नमार्यपथंचहित्वा ॥ भेजुर्मुकुंदपदवींश्रुतिभिर्विमृग्यां ॥ ५ ॥ अर्थ सो अैसी इनकी प्रार्थनां वृथाकैसैंजाय, तातैं श्रीकृष्ण कृपा-करि गोप्यस्वरूप द्रुमलता स्वरूप करि श्रीवृंदावन राषे, सो औरनकौं चर्मदृष्टि करि कैसैं दीसैं, अरु वृजवासी हरिगुन गा-यक वैष्णव उद्धौको एकअंककरिकैंभये, सूरदास सोतो श्रीम-तगोस्वामी बिठ्ठलनाथजी द्वारा यहभेदजान्यौं, तथा उनके पद भ मरगीतके अनुभवीक तिनहूतैं जान्यौंपरयो पदस्तुति ॥ दोहा ॥ किधौंसूरकोसरलग्यो, किधौंसूरकीपीर ॥ किधौंसूरकोपदलग्यो, यातैं विकलसरीर ॥ ६ ॥ सो अब उनहींके पदनि करिकैं प्रसंग वर्नन करियतुहैं ॥

## अथ उद्धवप्रति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ उद्धववेगहीब्रजजाहु ॥ श्रुतसंदेससुनायमेटोवल्लविन

कोदाहु ॥ कामपावकतूलतनमनबिरहस्वाससमीर ॥ भस्मनांहिन होंनपावतलोचननिकेनीर ॥ आजिलौंइहिंभांतिउद्धवकछूकुसल सरीर ॥ इतेपरविनसमाधांनहिंजरहिंगीतियधीर॥ बारबारकहाकहौं सुनिसषासाधुप्रवीन॥सूरसुमतिविचारिजैसैंजियहिजलविनमीन ॥७

## ॥ अथ गोपीप्रति गोपीबचन पद ॥

कोऊवैसीहीउनिहारि॥ मधुवनतनतैंआवतहैंरीदेषोनैननिहारि॥ वैसेहीमुकटमनोहरकुंडलपीतबसनरुचिकारि ॥ वैसैंहींबातकहतसा रथिसौंब्रजतनबांहपसारि ॥ इतनैंहूंअंतरयौंमानतमनौंवीतेजुगच्या रि । सूरसकलतलफतआतुरव्हैंज्यौंवमीनविनवारि ॥

## अथ कविबचन तथा गोपीप्रति गोपी बचन ॥

॥ पद ॥ देष्योनंदद्वाररथठाढो ॥ बहुरिसषीसुफलकसुतआयो परयोसंदेहउरगाढो ॥ प्राणहमारेतबहीगयोलैंअबकिहिंकारनआ यो ॥ मैंजांनीइहिंबातसत्यकैंक्रियाकरनउठिधायो ॥ इतनैंअंतरल षिसुफलकसुततिहिंछिनदरसनदीनौं । तबपहिचानिसषाहरिजूको परमसुचितमनकीनौं ॥ तबप्रनामकियोअतिरुचिकरिकैंऔरसब निकरजोरे । सुनियतहुतेतैसेहीदेषेपरमसुहृदअतिभोरे ॥ तुह्मारो दरसनपायआयभोजन्मसुफलकरिजान्यौं । सूरसुउद्धवमिलतभ योसुषज्यौंझषपायोपांन्यौं ॥ ९ ॥

## अथ गोपीप्रति उद्धव बचन ॥

॥ पद ॥ सुनहुगोपिहरिकोसंदेस ॥ करिसमाधिअंतरगतिध्या वोयहहरिकोउपदेस॥ हौंअबगतिअबिनासीपूरनघटघटरह्योसमाई॥

जोगतत्वबिनमुकतनहोइबेदपुराननिगाई ॥ सगुनरूपतजिनिर्गुन ध्यावैंइकमनइकचितलाय ॥ यहउपायकरिबिरहतरोतुमामिलैंब्रह्म तबआय ॥ दुसहसंदेससुनतमाधौकोगोपीजनबिलषानी । सूरबिर हकीकहांलगिकहियेनैननिबरषतपानी ॥ १० ॥

## अथ उद्धवप्रति गोपी बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौयाब्रजकीदसाबिचारो । तापीछैंयहसिद्धिआप नीयोगकथाबिस्तारो ॥ जाकारनपठयेतुममाधौसोसोचहुमनमाहीं। कितकबीचबिरहपरमारथजांनतहोकिधौंनाहीं ॥ परमचतुरनिजदा सस्यामकेसंततनिकटरहतहो । जलबूडतअवलंबफेनुकौंफिरिफि रिकहागहतहो ॥ वहअतिललितमनोहरआननकौंनैंजतनबिसारौं॥ जोगजुगतअरुमुकतिबापुरिवामुरलीपरवारौं ॥ जिहिंउरबसतस्या मघनसुंदरतहांनिर्गुनक्यौंआवैं॥ सूरदाससोईभजनबहांउजाहिदूस रोभावैं ॥ ११ ॥ पुनःपद ॥ मधुकरकौंनमनायोमानैं॥ अबिनासी अतिअगमअगोचरकहाप्रीतकीजानैं ॥ सिपवहुजायसमाधिजोगम तजेसबलोगसयानैं । हमअपनैंऐसैंब्रजवासिहैंबिरहबायबौरानैं ॥ जागतसोवतसुभग्रौसनिसरहिहैंरूपरवानैं ॥ बालकुमारकिसोरली लासुपसिंधुसुधासौंसानैं ॥ जिनकैंतनमनप्रानसूरहरिमृदुमुसकानि बिकानैं । परिजुबूंदअलपपयनिधिमैंबहुरिनकोऊपहिचानैं ॥१२॥

## अथ गोपीनप्रति उद्धव बचन ॥

॥ पद ॥ ग्यांनबिनांहोयसचुनांहीं ॥ घटघटव्यापकदा[illegible] ज्यौंसदाबसैंउरमांही ॥ सगुनछांडिनिर्गुनकौध्यावोयौंजुव[illegible]

नांही ॥ तत्वभजैंऐसीव्हैंजैहोज्यौंतनकीपरछांही ॥ देषोयातैंसबस चुपावतजेअबलौंअवगांहीं ॥ सूरदासनिर्गुनबिनकैसैंउरमैंऔर समांही ॥ १३ ॥

## अथ उद्धवप्रति गोपी बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौनिर्गुनकैसैंध्यावैं ॥ जोध्यावैंतोकहाकहिध्यावैंरू परेषबिनध्याननआवैं ॥ अगमअगाधिअगोचरकाहियतअविना सीकोपावैं । नागरस्वादनआवैंजोकोऊबहुतउबासीपावैं ॥ १४ ॥ पुनपद ॥ ऊधौजलभांगताजिनदेउसयानी ॥ घटहीमैंगंगाघटहीमैं जमुनांभरिभरिपीवोपांनी॥ स्वादनआवततुसफाकतज्यौंनिर्गुनबात बपानी॥नैननिप्यासमिटैंजबमिलिहैंनागरसुखसागरदधिदानी ५१

## अथ गोपीनप्रति ऊधौ बचन ॥

पद ॥ जबलगहृदैंग्याननहिंआवैं ॥ तोलौंकोटिकजतनकरोको ऊबिनविवेकनहिंपावैं॥बिनविचारसबहैंसुपनोंसोमैंदेष्योसबजोय ॥ नानादारूसूरज्यौंपावकप्रगटमथैतैंहोय ॥ १६ ॥

## अथ ऊधौप्रति गोपीनबचन पद ॥

नांहिनरहीमनमैंठौर ॥ नंदनंदबिनऊंचतैंकैसैंआनियेउरऔर ॥ घोसजागतचलतचितवतसुपनसोवतराति ॥ हृदैंतैंव्हैंमदनमूरति छिननइतउतजात ॥ कहतकथाअनेकउधौलोकलोभादिषाय ॥ क हाकरौंहितप्रेमपूरनघटनिसिंधुसमाय ॥ स्यामगातसरोजआननल लितमधुरसहास । सूरऐसेरूपकौंयेमरतलोचनप्यास ॥ १७ ॥ पुन

पद ॥ ऊधौचरचाकरीनाहिंजाय ॥ तुमन्नजानतप्रेमपथहमक
जियसकुचाय ॥ कथाअकथसनेहकीविनउरनआवतओर ॥ बे
मृतउपनिषदकौंरहीनाहिनठौर॥ मौंनहींमैंकहनताकीसुनतश्रो
न । सोवनागरतुमनजानतकहिनआवतबैन ॥ १८ ॥

## अथ गोपीप्रति उद्धव बचन पद ॥

मानहुजोगकह्योहैमाधौ ॥ करिबिचारअपनेजियसाधौ ॥ इ
पिंगलासुषमननारी ॥ सुन्यधारनाविनआकारी ॥ ब्रह्मभाव
सबकौंजानौं ॥ सूरपरमतत्वयहपहिचानौं ॥ १९ ॥

## अथ उद्धवप्रति गोपी बचन ॥

पद॥ सवपोटेमधुवनकेलोग ॥ जिनकेसंगस्यामसुंदरपियसी
उपजोग॥भलीकरीऊधौंव्रजआयेदुषतिनकौंलैंजोग॥ आसनध्य
नैंनमूंदेतैंकैसैंजातबिजोग ॥ तुमहिंउनहिंयहभलीबनिआईकुब
सौंसंजोग ॥ सूरसुबैदकहालैंकीजैकहैंनजांनैंरोग ॥ २० ॥ पु
पद ॥ व्रजजनसकलस्यामव्रतधारी ॥ बिनांगुपालनहिंआं
पासनअनतकहूंबिभचारी ॥ जोगपोटसिरभारवहनकोंकतव्रज
झउतारी॥इतनिकदूरिजाहुचलिकासीउहांबिकातहैंभारी॥ऐसेग
हिंकौंनछुवतहैंमंडलीअनन्यहमारी ॥ जोप्रभुवहरसरीतउपदेशी
क्योंजातबिसारी॥ इहांमुकतिकोऊनहिंपरसतजदपिपदारथचा
सूरदासप्रभुजुवतिबृंदवरदरसनकीजुभिषारी ॥ २१ ॥

## अथ गोपीप्रति ऊधौ बचन पद ॥

गोपीपद्मासनचितलावो ॥ नैंनमूंदिअंतरगतिध्यावो ॥ हृद

मलमयजोतिप्रकासी ॥ सोअच्युतअवगतअविनासी ॥ इहिंउप
यविरहातनमेटो ॥ सूरजोगजगदीसहिभेटो ॥ २२ ॥

## अथ ऊधौप्रति गोपीबचन ॥

पद॥ऊधौमुषहिंआवतगारि । कहाकरौंनंदनंदकीकारिकांनिदेतहै
टारि ॥ वहमनोहरमाधुरीलषिमंदमृदुमुसिक्यात । तुझैंफिरिसुधि
रहीकैसैंजोवानिगुनबात ॥ जानियतहैंयहतिहारैंकहनहींकेनैन ।
कलपवीतैंपलपरनमैंहोतहांक्योंचैन ॥ नवलनागररूपनिधिमैंव्है
ह्योजोलीन । मुरस्थलमैंडारियेक्यौंकहेतैंमनमीन ॥ २३ ॥ पुनः
पद ॥ ऊधौतुमनजानतप्रेम ॥ बसोमथुराराजधानीतहांव्यापकने
म ॥ कथननिर्गुनग्यानसूकोराजनीतप्रवंघ ॥ प्रीतनैंनानिरूपरीझ
निकहाजानैंअंध ॥ इहांब्रजमैंवृथाकीजैंजोगनीरसपाठ ॥ छाडि
नटनागरमधुरफलकौंनचावैंकाठ ॥ २४ ॥

## अथ गोपीनप्रतिऊधौवचन ॥

पद ॥ तुमअपनैंघटहीमैंदेखो ॥ बिलपतिकहावावरीसीव्हैवाहि
रढूंढतयहकहालेषो॥ सर्वब्रह्मकौंनहींदूसरोयहसबहीचितमैंअवरेषो॥
सूरदासजदुनाथमिलनकोछांडिदेहहियपरमपरेखो ॥ २५ ॥

## अथ ऊधौप्रतिगोपीबचन ॥

पद ॥ परेखोकौंनवातकोकीजैं ॥ नांहरिजातनपांतिहमारीकत
हींमांनिदुखलीजैं ॥ वासदेवजादूकुलदीपकवंदीजनव्रह्मावैं ॥ नं
दनंदनगोपीजनवल्लभनांहिनकान्हकहावैं ॥ नांहिनमोरचंद्रिकाम

थैंनांहिनउरबनमाल ॥ सोभितहैंभूपनिकेभूषनसुंदरश्यामतमाल॥ बिसरिगयेगृहबनकोनांतोऔरहमारोरंग ॥ सूरदासप्रभुगईसगाई वामुरलीकेसंग ॥ २६ ॥ पुनःपद ॥ हाहाऊधौकहियैंबात ॥ सुरमुरलीसौंमोहीसबहमअबसुरसंखबजात ॥ रंगरसतजिरनरसवसभये कछुमृदुकर्कसलखिजात ॥ सहिनसकेसरनैंनहमारेक्यौंसरसारसुहात ॥ पीतझगाकोलगतभारतबकवचकसतक्यौंगात ॥ मूंठिगुलालल गतअबलाकरअबनगदाडरपात ॥ सुनिसुनिहमयहसाहिनसकतहैंहोतदृगनिजलपात ॥ जगतकहतहमैंभईबावरीप्रीतिरीतिकेनांत ॥ मुरलीमुकटलटकन्हैंछबिकीहियतैंनांहिनजात ॥ राजसिंघप्रभुकरयोकहायहधरीदयानहिंगात ॥ २७ ॥

## अथ गोपीप्रतिऊधौबचन ॥

पद ॥ जानिकैंबावरीजिनहोहु ॥ तत्वभजैंऐसीन्हैंजैहोज्यौंपारसपरसैंलोहु ॥ मेरेबचनसत्यकैमांनौंछाडोसबसौंमोहु ॥ तौलौंयहसबनीकीचुपरीजोलौंअस्तुतिद्रोहु ॥ अरेअरेमधुपबातयहऐसीक्यौंकहिआवैंतोहि ॥ सूरसुबसतीछाडिघरबसेहमहिबतावतखोह ॥ २८ ॥

## अथ ऊधवप्रतिगोपीबचन ॥

पद॥ ऊधौअपनौंजतनकरो ॥ हितकीकहैंअहितलागतहैंइहांबेकाजपरो ॥ जायकरोउपचारआपनौंहौंजुदेतसिखजीकी ॥ कछूकहतकछुवैंकहिआवतधुनिदेखतनाहिनीकी॥ साधुहोयताहिऊतरदीजैं तुमसौंमानीहारि ॥ यहजियजानिस्यामसुंदरतुमदीनौंढिगतेंटारि ॥ मथुरादौरिगहोइनपायनबाढयोहैंतनरोग ॥ सूरसुबैदवेगिकिनहेरोभ

येअरधजलजोग ॥ २९ ॥ पुनःपद ॥ तूह्यांकहतकौनकौनातैं ॥ सुनिऊधौहमसमझतनाहींफिरिबूझतहैंतातैं ॥ कोनृपभयोकंसकिहिंमारच्योकोवसुदेवसुकाहि ॥ ह्यांजसुदासुतपरममनोहरजीजतहैंमुखचाहि ॥ दिनप्रतिजातधेनुबनचारनगोपसखनकेसंग॥ वासरगतरजनीमुखआगमकरतदृगनिगतिपंग ॥ कोपूरनव्यापकअविनासीकोविविवेदअपार ॥ सूरवृथाबकवादकरतकतह्यांब्रजनंदकुमार ॥ ३०॥

## अथ गोपीप्रति ऊधौबचन पद ॥

॥ पद ॥ अबतुममांनलेहुब्रजबाल । हौंजुकरतउपदेसतत्वकोपचतभयोबहुकाल॥ छांडिहुमायामोहहियेकोबिरहाविषमाविसाल । सूरदासनिर्गुनकौंध्यावतमिटिहैंहितजंजाल ॥ ३१ ॥

## अथ ऊधौप्रति गोपी बचन॥

पद॥ऊधौवृथाकरतबकवादि॥हमजान्यौंतुमजानतनांहीरूपसुधासुपस्वादि ॥ सकलब्रजमोहनमईहैंगोपअरुगोपीगाय ॥ तिनैंतोविनघनस्यामसुंदरकैसैंऔरसुहाय ॥हमारेतनकरिषंडषंडज्यौंदेहुभूमिमैंडारि ॥ न्यारेन्यारेलपटिजांहिलषिनागरनंदकुंवार ॥ ३२ ॥ पुनःपद॥ ऊधौयहतनजोकोऊफेरिबनावैं ॥ तऊनंदनंदनतजिप्यारेकौंऔरुनमनमैंआवैं ॥ जोयातनकीतुचाकाढिकैंलेकरिदुंदभिसजई ॥ मधुरउतंगसब्दसुरनिकसैंलाललालहीबजई ॥ छूटैंप्रानमिलैंतनमाटीद्रुमलागैंतिंहिंठाम ॥ कहअबसूरफूलफलसापालेतउठैं हरिनाम ॥ ३३ ॥

## अथ कबिबचन ॥

॥ दोहा ॥ ऊधौमनपलटयोनिरषि, गोपीप्रेमउमंग। बिनलाग्योकबहुनसुन्यौ, प्रेमभक्तिकोरंग ॥ ३४ ॥

## अथ गोपीप्रति ऊधौबचन ॥

॥ पद ॥ अबअतिपंगभयोमनमेरो ॥ पठयोहोनिर्गुनउपदेसन भयोसगुनकोचेरो॥ जोकछुकह्योग्यानगाथासोतुमहिनपरसतनेरो॥ मैंसठबादकियोसोयौंहींकह्योसुन्यौंउनकेरो ॥ मैंजान्यौंनहिप्रेमतैंपलभरिह्यांषटमासबसेरो ॥ सूरस्यामपैंआग्यादीजैंबोरयोजोगकोबेरो

## अथ कबिबचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौबारबारसिरनावत। गदगदकंठपुलकिबिव्हलमनकरपायनसौंछूवावत॥ धन्यगोपीतुमरंगीस्यामरंगतज्योसकलचितचैन। गुल्मलताव्हैंरहियेइांहिंठांतनरंजितब्रजरैन ॥ प्रेमभक्तिरससुधापियोमैंअबचितअनतनजाय॥ तुममेरेगुरुकह्योछिमहुसवपरततुह्मारैंपाय ॥ यौंकहिऊधौउठेगवनकौंफेरसकतनहिंपीठ ॥ नागरमनयहांगयेराषिकैंतनपहुचायोनीठ ॥ ३६ ॥

## अथ ऊधौमधुपुरी आगमानि श्रीकृष्णप्रति बचन ॥

॥ पद ॥ माधौजूयहब्रजकोव्यौहार। मेरोकह्योपवनकोभुसभयोगावतनंदकुंवार ॥ एकग्वालगोसुतव्हैंरेंगतएकलकुटिकरलेत ॥ एकमंडलीकरिबैठीरतिछाकबांटिकैंदेत ॥ एकग्वालनटवतसबलीलाएककर्मगुनगावत ॥ अनेकभांतिकरिमैंसमुझाईनैंकनउरमैंआ

वत ॥ निसवासरएहीटकव्रजमैंदिनदिननौतनप्रीत ॥ सूरग्यानसव फीकोव्हैंगयोदेषतवहरसरीत ॥ ३७ ॥ पुनःपद ॥ मैंसमुझाईकारि अपनौंसो ॥ तदपिउन्हैंप्रतीतनउपजीलग्योसबैंसुपनौंसो ॥ कहीतु ह्मारिसबैंसुनाईऔरकछूअपनी॥ सुनतबचनममगयोधितमनऔरउ ठीकपनी ॥ कोऊकहैबनायपचासकउनकैंबातजुएक ॥ धन्यसुव्रज कीनारिजुतिनकैंबिनदरसनकछुऔरनटेक ॥ देषनउनकोप्रेमइहां कीधरीरहीसबऊल्यौं ॥ सूरस्यामहौंरह्योठग्योसोज्यौंमृगचोका भूल्यौं ॥ ३८ ॥

## अथ ऊधौप्रति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौइतेदिवसक्यौंलाये ॥ पठयेहुतेजोगकहिआवनतु मपटमासबिताये ॥ तुमबकताव्हैंबिरमिरहेकिधौंउनकछुकहिबिर माये ॥ सूरस्यामउनश्रोताकरिमोहिसबैंग्यानबिसराये ॥ ३९ ॥

## अथ श्रीकृष्णप्रति ऊधौ बचन ॥

॥ पद ॥ उनमैंपांचदिवसजोबसिये ॥ नाथतुह्मारीसौंजीउपज तफेरिअपनपौकसिये ॥ वहलीलासबव्रजगोपिनकीदेषतहीबनि आवैं ॥ मोकौंबहुरिकहांवैंसोसुषवड़भागीसोपावैं ॥ मनसावचकर मनाकहियतुनांहिकछूअवराषी ॥ सूरकाढिडारयोव्रजतैंज्यौंदूधमां झतैंमांषी ॥ ४० ॥ पुनःपद ॥ होहरिअहुरिदावदैहारयो ॥ आग्या भंगहोयक्यौंमोपैंवचनतुह्मारोपारयो ॥ हारिमांनिउठिचल्योदीनव्हैं मांनिअपनपोकैद ॥ जांनिलेहुइतनेमैंमाधौकहाकरैंनीमनकोवैद ॥ उत्तरकोउत्तरनहिंआवततवउनहींमिलिजात॥मेरीकितकबातब्रह्मा

हूअद्धबचनमैंमात ॥ अपनीबातसमझिमनहीमनचल्योबसीठीतोरि सूरएकहूअंगनकाचीमैंदेपीटकटोरि ॥ ४१ ॥

## अथ ऊधौप्रति श्रीकृष्णबचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौतुमसेसषासुजान ॥ क्यौंउपदेसलग्योनहिउन कौंगाथागूढविधान ॥ तुमजुग्यानऔतारप्रगटजगवेअबलाअन जान ॥ सूरदासवहिरंगरंगेतुह्मदीसतबिसरचोग्यान ॥ ४२ ॥

## अथ श्रीकृष्ण प्राति उद्धवबचन ॥

॥ पद ॥ माधौसुनहुब्रजकोप्रेम ॥ बूझिमैंषटमासदेष्योगोपिक निकोनेम॥हृदैतैंनहिंटरतकबहूस्यामकामबिजेत ॥ आंसूसलिलप्रवा हमांनौंअर्घनैंनजुदेत ॥ देहगेहसमेतअर्पनकमललोचनध्यान॥ सूरव हरसभजनदेषतगयोउडिसबग्यान ॥ ४३ ॥ पुनःपद ॥ नीकैंसुन हुस्यामसुजान ॥ कौंनमानैंबातनीरससकलब्रजरसपान ॥ तुमजुहे बिधिबेदवक्ताप्रगटश्रीभगवान ॥ उहिमनोहरमंडलीमैंक्यौंनराष्यो ग्यान ॥ कबहुतुमकौलैनचायेजोरिपानानिपान॥ कबहुछ्वायोमुकट चरननिकियोउतजबमान ॥ कबहुबैंनीगूंथिनिजकरपगमहावरसा न । कबहुठाढेजोरिकरकारिदीनाचितसनमान॥ प्रेमआगैंनेमकौकछु चलतनांहिनिदान ॥ रनौंहैंछूटेवहांक्यौंनवलनागरप्रान ॥ ४४ ॥

## अथ ऊधौप्राति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौअबतुमहमरेलायक ॥ रूषीबातनकहतहोभीजेक हतप्रेमकेबायक ॥ मोअनुरागरंगरैंनीब्रजरंगिआयेमनरंग ॥ सूरस षाप्रियमेरोतेरोअबैंबन्यौंहैंसंग ॥ ४५ ॥

## अथ कृष्णप्रति ऊधौ बचन ॥

॥ पद ॥ कहांलौंकहियेब्रजकीबात ॥ सुनहुस्यामतुमबिनउनलोग निजैसैंद्यौसबिहात॥जाकौंआवतदेषतहैंमिलिबूझतहैंकुसलात॥ चल ननदेतप्रेमउरआतुरफिरिफिरिपगलपटात ॥ गायग्वालगोपीगोसुत सबबिलषिबदनकृसगात ॥ परमदीनजनुसिसरहेमहतअंबुजगनबि नपात॥पिकचातिकबनबसननपावतबायसबलहिनषात॥ सूरदाससं देसनकैंडरिपथकनवहमगजात ॥ ४६ ॥ पुनःपद ॥ ब्रजकीजुव तिअतितनछीन ॥ रहतइकटकचित्तचातकस्यामघनतनलीन ॥ नां हिपलटतबसनभूपनदृगनिदीपकतात॥ बिलषिबदनमलीनतनज्यौं तरुनिबिनजलजात ॥ कहतज्यौंहौंकह्योश्रुतिमतपच्योकरिउपदे स ॥ धरतनलनींबूंदज्यौंजलबचनहियेप्रबेस॥ वहैंमुरलीमोरचंद्रिका पीतपटबनमाल ॥ रहीवहछबिअंगअंगनिलतालपटितमाल ॥ दिव सज्यौंबितवतसकलमिलिकहतगुनिबलबीर ॥ रैनउडपतिनिराषित लफतमीनज्यौंजलतीर ॥ अहोकरुनासिंधुस्वामीहोहुबेगसहाय ॥ सूरप्रभुअवकैंदरसदैंमरतलेहुजिवाय ॥ ४७ ॥

## अथ ऊद्धवप्रति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ ऊधौसबब्रजभूलतनांहीं ॥ हंससुताकूलनिकीसोभाअ रुकुंजनिकीछांहीं ॥ वहसुरभीगउबच्छदोहनींघरकदुहांवनजांहीं ॥ ग्वालबालमिलिकरतकुलाहलनृत्तगहिगहिबांहीं॥लीलाबहुतभांति हमकीनीजसुमतिनंदनिवांही । जबजबसुरतिहोतवासुषकीमनउम

गतिमनमांहीं ॥ यहद्वारेकारचींकनककीमनिमुक्तावलिजांहीं ॥ सूरदासप्रभुसुमरिसुमरिसुषयौंकहिकहिपछितांहीं ॥ ४८ ॥

## अथ श्रीकृष्णप्राति उद्धव बचन ॥

॥पद॥ चितदैंसुनौंस्यामप्रबीन ॥ हरितुह्मारेबिरहराधामैंजुदेपी पीन ॥ कहतजबहिंसंदेससुंदरगमनमोतनकीन ॥ छूटिछुद्रावलि अरुझिपगधरनिंधुकिबलहीन॥ उलटितबहिंसंभारिभटलौंपरमसाह सकीन ॥ कहतबैंननबोलआवैंहृदैंपरिअसुभीन ॥ नैंनइकटकसुर तबिनज्यौंग्रस्तआपददीन ॥ सूरप्रभुकरुनाकरोयौंजीवतआसाधी न ॥ ४९ ॥ पुन पद ॥ बातैंबूझतयौंवहरावत॥ सुनहुस्यामवैंसषी सयानीपावसरितुराधेनजनावत ॥ घनगरजतवहकहतकुसलमति गरजतगुहासिंघसमुदावत ॥ नहिंदामिनद्रुमदवासैलपरिबावउलटि तातीझरिआवत ॥ दादुरमोरपपीहाबोलतग्वालमंडलीपगनिपिजा वत ॥ कबहुकप्रगटिपपीहाबोलततवामिलिकरतारीजुवजावत ॥ नहिनभवृष्टिझरतझरनाधरपरिपरिबूंदउछटिइतआवत ॥ सूरदासप्र भुकहौंकहांलगितुह्मारेदरसबिनांदुषपावत ॥ ५० ॥

## अथ ऊधौप्राति श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ पद ॥ मोहिगोपीजननहिंबिसरत ॥ उनकीप्रीतिरीतिअंतर कीतनकनमुषतैंनिसरत ॥ सबहिचतुरसबआनंदमूरतिसबतनप्रेम अछेह॥तिनमैंश्रीराधाकेमेरेएकप्रानद्वैदेह ॥ जदपिविभौह्यांअमराव तिसोरह्योसकलसुषछाय ॥ तद्यपिसुधिआवतब्रजकीतबसाधेहुकी

सुधिजाय॥ऊधौपरमप्रवीनसषाप्रियतुमबिनकासौंकहियें ॥ नाग
दासदुसहमनहीमनबिरहपीरानितसहियैं ॥ ५१ ॥

## अथ कबि बचन ॥

॥ पद ॥ जद्यपिपाईहैंरजधानी ॥ बारबारबृंदाबनकीहारिक
कहिउठतकहानी ॥ जद्यपिकनकजटितमंदिरमैंरचीरुचिरकमनी
ज्यौंसुषपत्रबिछायराधिकासुषसोतेअवनी ॥ जद्यपिभूषनवहुत
तियेमर्कतलालमनी ॥ सूरदासवागुंजपुंजकीसोभापैनबनी ॥ ५

## अथ कविप्रार्थना कवि बचन ॥

॥ पद ॥ हमारैंमुरलीवारोस्याम ॥ बिनमुरलीबनमालचंद्रि
नहिंपहिचांनतनाम ॥ गोपरूपबृंदावनचारीब्रजजनपूरनकाम
याहीसौंहितचित्तबढोनितदिनदिनपलछिनजाम ॥ नंदगांवगोव
नगोकुलबरसांनौंविश्राम ॥ नागरीदासद्वारिकामथुराइनसौंकै
काम ॥ ५३ ॥ पुनःपद ॥ जोकोऊब्रजलीलारसचाषैं ॥ ताकों
रिकहुंऔरकथामैंकवहुनमनअभिलाषैं ॥ पटरसछप्पनभोगनभ
तजोब्रजगोरसपावैं ॥ हितब्रजरसिकउपासिकसौंकरिआंनसौंमन
मिलावैं ॥ नागरियाब्रजमहिमारसनातनकहुजातकहीनां ॥ बिनर
रूपाभक्तिजक्तज्यौंमुरधरजेठमहीनां ॥ ५४ ॥ पुनःपद ॥ हम
जसुषींब्रजकेजीव । प्रानतनमननैंनसवैसुराधिकाकोपीव ॥ क
आनंदसुक्तिमैंयेकहांकेलिबिधान ॥ कहांललितनिकुंजलीला
लिकाकलगान ॥ कहांपूरनसरदरजनीजौंह्लजगमगजोत ॥ क
नूपुरवीनधुनिमिलिरासमंडलहोत ॥ कहांपांतिकदंबकीझुकिर

जमुनाबीच ॥ कहांरंगबिहारफागुनमचतकेसरिकीच ॥ कहां गहबरबिपनमैंतियरोकिबोमिसदान ॥ कहांगोधनमध्यमोहनचिकुर रजलपटानि ॥ कहांलंगरसषासोहनकहांउनकोहास ॥ कहांगोरस छाछिटैंटीछाकबिपनबिलास ॥ औरठौरनकहूंयेसुषबिनांब्रजइहिं धाम ॥ दासनागरघोषतजिचहैंमोषसौंबेकाम ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ प्रभुतासोभास्वादिबिन, मननलगतअभिराम ॥ करनफूलमाणिक नकके, मधुकरकेकिहिंकाम ॥ ५६ ॥ रसलीलाबैकुंठकी, सुनीन नित्यनवेलि ॥ तीनलोकमैंगाइयै, नउतनहींब्रजकेलि ॥ ५७ ॥ मारमापतिसंखकौं, वहुधाकोउबरनैंन ॥ तीनलोकमैंगाइयैं ॥ गोपीमोहनबैन ॥ ५८ ॥ लखमीदयोभ्रमायजग, बोरतलषमीभोग ॥ गोपीजनगुनगायकैं, तरतजुकलिकेलोग ॥ ५९ ॥ स्यामाहिंसब गोपीप्रिये, गोपिनकौंप्रियस्याम ॥ सोनागरियाहियबसो, निसदिनपलछिनजाम ॥ ६० ॥ संमतअठारैसैंसुकल, पक्षजेठशुभमास ॥ गोपीप्रेमप्रकासयह, कियोनागरीदास ॥ ६१ ॥ इतिश्रीगोपीप्रेम प्रकासग्रंथसंपूर्णम् ॥

## अथ पद प्रसंगमाला लिख्यते ॥

श्रीरसिकरायमुरलीधरनजयति ॥ प्रथमपूर्वसाक्षी ॥ श्लोक ॥ नाहंसवामिबैकुंठेयोगिनांहृदयेनच ॥ मद्भक्तायत्रगायंते तत्रातिष्ठामिनारद ॥ १ ॥ अर्थ—श्रीकृष्ण भक्तिवत्सल तिनकौं केवल भक्तिप्रिय, सो भक्तिनवधा, तामैंमुख्य श्रवण अरु कीर्त्तन सो एक कीर्तनमैं है धर्म, श्रवणहू अरु कीर्त-

नहू तातैं कीर्तनसार, कीर्तनहूमें गान सहित कीर्तन सो यह यातैं अधिक जो चित्तकी एकाग्रता करि उद्दीपन करै हैं, व्रजवधूनके चित्त गानहीसौं आकर्षन करि बुलाई, गानहीसौं आकर्षन करि नारद श्रीकृष्णकौं हृदयमें बुलावतहैं, अरु शिवके गानहीसौं रीझि हरि जलव्है द्रवगये, ऐसे गान प्रिय स्यामसुजान तिनकी लीला पद छंदवंध रचना करिकै वैष्णव गावत आयेहैं, तिनके कछूक पदप्रसंग लिषौंहौं, श्रीजयदेवजी गीतगोविंदकी अष्टपदी बनावतहुते, तामैं यहधरचो चाहतहेजु ॥ स्मरगरलषंडनं ममहृदयमंडनं देहिपदपल्लवमुदारं ॥ फिर चित्तमैं आईजु, भगवान विषैं यहकैसैं संभवैं, याही चिंताकरत जयदेवजी तो देहकृत्यकौंगये, अरु पीछैतैं ठाकुर आइकैं श्रीहस्तकमलसौं वहीपदलिषगयेजु ॥ स्मरगरलषंडनं ममहृदयमंडनं देहिपदपल्लवमुदारं॥ सोवह यहअष्टपदी ॥ आसावरीरागे ॥ अठताले ॥ वदसियदिकिंचिदपिदंतरुचिकौमुदी हरतिदरतिमरमतिघोरं ॥ स्फुरदधरसीधवेतववदनचंद्रमा रोचयतिलोचनचकोरं ॥ १ ॥ प्रियेचारुशीले प्रियेचारुशीले मुंचमयिमानमनिदानं ॥ सपदिमदनानलोदहतिममममानसं देहिमुखकमलमधुपानं ॥ सत्यमेवासियदि सुदतिमयिकोपिनी देहिखरनखरशरघातं घटयभुजबंदनं रचयरदखंडनं येनवाभवतिसुखजातं ॥ प्रियेचारुशीले ॥ २ ॥ त्वमसिममभूषणं त्वमसिममजीवनं त्वमसिममभवजलधिरत्नं ॥ भवतुभवतीहमयि सततमनुरोधिनी तत्रममहृदयमतियत्नं ॥ प्रियेचारुशीले ॥ ३ ॥ नीलनलिनाभमपि तन्वितलोचनं धारयतिकोक-

नदरूपं ॥ कुसमशरबाण भावेनयदिरंजयसि कृष्णमिदमेतदनु-
रूपं । प्रियेचारुशीले ॥४॥ स्फुरतकुचकुंभयो रुपरिमणिमंजरी
रंजयतुतवहृदयदेशं ॥ रसतुरसनापितव वनजघनमंडले घोषय-
तुमनमथदिनेशं ॥ प्रियेचारुशीले ॥ ५ ॥ स्थलकमलगंजनं
ममहृदयरंजनं जनितरतिरंगपरभागं ॥ भणमसृणवाणिकर वाणि-
पदपंकजं सरसलसदलक्तकसुरागं ॥ प्रियेचारुशीले ॥ ६ ॥
स्मरगरलखंडनं ममहृदयमंडनं देहिपदपल्लवमुदारं ॥ ज्वलतिम-
यिदारुणो मदनकदनानलो हरतुतदुपहितविकारं ॥ प्रियेचारुशी
ले ॥७॥ इतिचटुलचाटुपटुचारुमधुवैरिणो राधिकामधिवचनजातं॥
जयतिजयदेवकविभारतीभूषितं मानिनीजनजनितशातं ॥ प्रिये-
चारुशीले ॥८॥१ ॥ पुन ॥ अन्यपदप्रसंग ॥ श्रीजयदेवजी एक-
समैं एकराजापैंरहे उनकी स्त्री पदमावतीजी सोरानीपैंरहैं सोरानी
निंदक बुद्धिहीन हुती, सो पदमावतीजीकी अरु जयदेवजीकी
प्रीत परिछाके निमत रानी झूठबनाइ कह्यो, पदमावतीजीसूंजु
राजा सिंघकी सिकार गयेहैं, सो जयदेवजीनें सिंघनें मारे,
यहकहि एकपाग आंनि धरी, ताहीछिन सुनत पदमावतीजीनैं
प्रान छाडिदये,रानीको मुह सूकिगयो,इतनेमैं राजा अरु जयदेवजी
आये वरआये, यहवृत्तांत सुनि राजानैंतो बहौत पेदकियो, अरु ज
यदेवजी आप पदमावतीजीके मृतक सरीरकें ढिग गीतगोविंदकी
अष्टपदी गावतभये, तबताहीछिन पदमावतीजी सरजीवत व्है सं
गगावनलागे, सो वह इत्यादि अष्टपदी ॥ देसीवैराडीरागे ॥ वह-
तिमलयसमीरे मदनमुपनिधाय ॥ स्फुटति कुसमनिकरे बिरहिहृ

दयदलनाय ॥ १ ॥ सखिसीदतितवबिरहेवनमाली ॥ दहतिशिशिरमयूखे मरणमनुकरोति ॥ पततिमदनविशिखे बिलपतिबिकलकरोति ॥२॥ ध्वनितमधुपसमूहे श्रवणमपिदधाति ॥ मनसिवलितविरहे निशिनिशिरुजमुपयाति ॥ ३ ॥ बसतिबिपिनविताने त्यजति ललितमपितवनाम ॥ लुठतिधरणिशयने वहुविलपतितवनाम ॥४॥ भणतिकविजयदेव इतिबिरहविलसतेन ॥ मनसिरभसाबिभवे हरिरुदयतुसुकृतेन ॥ ५ ॥ इति ॥ २ ॥ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ श्रीजयदेवजी गीतगोबिंदबनायो ॥ तामैं अष्टपदी बनावतहे सो जाअष्टपदीमैं येअछर आयेजु ॥ पततिपतत्रेविचलतिपत्रे॥तहां जयदेवजी इनअछरनके अरथपर रीझि प्रेमानंदमैं मगन भये, वाहीछिन इनहीं अछरनि अरु जयदेवजीपर रीझि, श्रीराधामाधौ तबही तहां वनमैं आय दरसन दीनौं, अरु आग्यादई, जो ए अष्टपदी कोऊगावैंगो तबतहां मैं आयसुनौंगो, सो औरकोऊ गावैं ए अष्टपदी गावैं तव कैतो मंदिरमैं गावैं कैएकांत स्थल बैठिगावैं, अरु एक मालीकी लरकिनी भोरी तानैं यह इतनौंहीं सीपिलियोजु ॥ धीरसमीरे जमुनातीरे बसतवने वनमाली ॥ सो इतनौं बैंगनकीबारीमैं गावत डोलैं, ताके संग संग ठाकुर फिरे, ठाकुरके जामाको दावन बैंगनके कांटेनमैं उरझि टूकटूकभयो, अरु ठाकरहू रीझि टूक टूक भये, सो जहां श्रीमंदिरमैं श्रीजगन्नाथदेव ठाकुरको विग्रह सरूपहो, तहां जामांको दावन फट्यो देष्यो, अरु बैंगनके कांटा अरुझेदेषे, तव सबनि भीतरिया आदि प्रार्थनांकरी जु, महाराज यहकहा ब्रतांतहैं, तब ठाकुर सुपनैंमें सबही

कही, सो सुनि वहांको पृथ्वीपतिहो तानैं दुहाईफेरी, जोकोऊ चलत फिरत अष्टपदी न गावैं जोकोऊ गावैं सो मंदिरकी ठौर तथा औरनोकी ठौर गावैं, जा अष्टपदीपर ठाकुर रीझि मालीकी लरकनीके संग संग फिरे, अरु पतातिपतत्रे यह अछर धरत रीझि श्रीठाकुर जयदेवजीकौं दरसनदीनौं, जो वह यह अष्टपदी॥ रतिसुषसारे गतिमभिसारे मदनमनोहरवेषं ॥ नकुरुनितंविनि गवनविलंवन मनुसरतंहृदयेशं॥१॥धीरसमीरे यमुनातीरे वसतबनेबनमाली॥गोपीपीन पयोधर मर्दन चंचलकर युगशाली॥नामसमेतं कृत संकेतं वादयतेमृदुबेणुं॥बहुमनुते तनुते तनुसंगति पवनचलतिमपिरेणुं॥२॥पतितिपतत्रे विचलतिपत्रे शंकितभवदुपयानं॥रचयतिशयनं सचकितनयनं पश्यतितवपंथानं ॥ ३ ॥ मुखरमधीरं त्यजमंजीरं रिपुमिवकेलिसुलोलं ॥ चलिसखिकुंजं सतिमिरपुंजं शीलयनीलनिचोलं ॥ ४ ॥ उरसिमुरारे रुपहितहारेघनइव तरलबलाके ॥ तडिदिवपीते रतिबिपरीते राजतिसुकृत बिपाके ॥ ५ ॥ बिगलित वसनं परिहृतरसनं घटयजघनमपिधानं ॥ किशलयशयने पंकजनयने निधिमिवहर्षनिधानं ॥ ६ ॥ हरिरभिमानी रजनिरिदानी मिय मपियातिविरामम् ॥ कुरुममवचनं सत्वररचनं पूरयमधुरिपु कामं ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवे कृतहरिसेवे भणति परमरमणीयं ॥ प्रमुदितहृदये हरिमतिसदयं नमतसुकृतकमनीयं ॥ ८ ॥ या अष्टपदीमैं जयदेवजीकौं श्री ठाकुर दरसन दियो, सो यह प्रसंग प्राचीन व्यासजी सुनि रीझि एक पद बनायो, सो वह यह पद है ॥ जयदेवसेरासिकनकोईजिनलीलारसगायो ॥ जाकीजुगतिअ

पंडितमंडितसबहीकेमनभायो ॥ १ ॥ बिबिधबिलासकलाकविमं
डनजीवनिकेभागनिआयो ॥ पततिपतत्रेमुपनिसरतहीराधामाधव
कोदरसनपायो ॥ २ ॥ बृंदावनरसमायाबैभवपहिलेंसबैंसुनायो ॥
तापीछैंऔरनकछुपायोसोरससबनिचषायो ॥ ३ ॥ पद्मावतिहरिच
रननचारीजिहिंगोविंदरिझायो ॥ व्यासनआसकरीकाहूकीकुंज
निस्यामबुलायो ॥ ४ ॥ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥
श्रीमद्वल्लभाचार्यजीसौं काहू सेवकनैं कहीजु, राजश्री बृंदाव
नमें एक बैरागी नांव परमानंददास कीरतन आछ्यो करैहैं,
राजि सुनियैं, तब श्रीआचार्य्यजी गोप्यपधारिकैं परमानंददासके
कीरतनसुने, तहां बिरहको कीरतन सुनिकैं आवेस स्थित भये,
उहां तैं सेवक उठाइ लैंआये; सात आठ दिनलौं प्रसाद लैबेकी
देहकी कछु सुधि रही नहीं, अंतरंगरहे; सो वह यह पद ॥
हरितेरीलीलाकीसुधिआवैं ॥ कंवलनैंनमोहनमूरतिकेमनमनचित्र
बनावैं ॥ कबहुकनिबिडतिमिरआलिंगत कबहुकपिकसुरगावैं ॥
कबहुकसंभ्रमक्कासिक्कासिकहिसंगहिलिमिलिउठिधावैं ॥ कबहुक
नैंनमूंदिउरअंतरिमनिमालापहिरावैं ॥ मृदुमुसकानिबंकअबिलोक
निचालछबीलीभावैं ॥ एकबारजाहिमिलहिकृपाकरिसोकैंसैबिस
रावैं ॥ परमानंदप्रभुस्यामध्यानधरिऐसैंबिरहगमावैं ॥ १ ॥
अथ अन्य पद प्रसंग ॥ नामदेवजूकी बाल अवस्थासो
इनको गृहमैं चितलगैं नांहीं, लरि कांनहूके संग षेलैं
नांहीं, जोपेलैं तो काहू बस्तुको एक ठाकुर बनांवैं, कछु बस्तु
हाथमैं लैकैं वाकी आरती करैं, सब सेवाको अनुकरन करैं, तथा

ठाकुरके देहुरैं जहां सतसंग अरु दरसन होय तहां बिसेस जांहिं, तब इनकी महितारी देष्यो, कि एकतो घरको कसब न सीषैंगो, फिरि काहू अतीतके साथ उठि जायगो तोहु बुरीबात, यातैं नामदेवजूकौं बहुत पिजकैं बरजत भई कि तुम देहरैं मतिजाहु, ताही दिन नामदेवजूकौं महावैराग्य उपजिकैं कविताशक्ति व्हैंआई, सो एक पद नयो बनाय अपनी माताकौं गाय सुनावत भये, सो अैसैं प्रथमही बनायो ॥ सो वह यह पद ॥ तूजिनबरजैंमायरीमोहिदेवलजातां ॥ मोहनमेरैंमनबस्योचरणौंचितरातां ॥ करम छाडिकुकरमकरूंतोनूबरजैंमाई ॥ मोहनमेरैंमनबस्योमोपैंरह्योन जाई ॥ बिनदीपकमंदिरकिसोवालकबिनमाता ॥ रामसनेहीनांमदे हरिकेरंगराता ॥१॥ पुनःअन्यपदप्रसंग ॥ दक्षिनमैं ठाकुर श्री पंडुरनाथ जू, तिनको दरसन होतहो आगैं एक नटी नृत्त्यकरतही, संकीरन ठौरमैं भीर बहुत भईही तासमय नामदेवजू दरसनकौं आये, तिनकौं लोगनि ठौर न दई जहां वैठे तहां तहां कहूंनीपये निसौं लोग ठेलधकेलिदेवैं तब ये मंदरके पाछैं आय वैठे, दरसनके अंतरको बहुत दुष मानि अकुलानि सहित एक नयो, पद बनाय गावत भये, ताहीसमय पाछली ओर द्वार व्हैंगयो, आगैं बैठेहे तिनकौं पीठको दरसन होतभयो, अरु नांमदेवजूकी ओर श्रीमुखभयो, सब दौरि नांमदेवजू के पाय निपरे, यह बात जगतमैं बहुत प्रसिद्ध भई, सो नांमदेवजू जासमय पाछैं बैठि पद गायेतैं दरस नपायो, सो वह यह पद ॥ हींणहोजातमेरीजादूराया ॥ कलिमैंनांमईयाकाहेकौंपठाया ॥ तालपपावजबाजैंपातरनाचैं ॥ हमा

रीभगतबिठ्ठलकाहेकूंराचैं ॥ पंडुरप्रभुजूबचनसुनीजे ॥ नांमदेस्वामींदरसनदीजे ॥ २ ॥ पुनःअन्यप्रसंगपद ॥ एक समय नांमदेवजू आलको गाडा लियें आवतहे, सो कहूं मारगमैं गाडाको पहिया षोटका व्हैं कैं फसिगयो, बैल दुर्वल तिनसौं निकसैं नांहीं, तब येनिरउद्यमव्हैंकैं एक नयो पद बनाय गायबेकौं बैठिगये, ताही समैं एक बडो बैल दृष्टि परिगयो, नांमदेवजू जानी जोमैं प्रारथना करी सोहीभई, वा बैलकूं गाडा सौं लगाय गाडा निकासि हांक्यो अरु वृषभगवान अंतर्ध्यान भये, सो ज्या प्रार्थनाके पदकौं बनाय गायैं ठाकुर वृषभव्हैं कैं नामदेवजूको गाडा निकासिदियो, सो वह यह पद ॥ पैडोअटक्योहोबाबला ॥ जीकीजीवनतूसांवला ॥ कलिपोटीकुसमलिकलिकाल ॥ भवबंधनमेटोगोपाल ॥ काटिनरायणजमकाफंध ॥ समरथहोयकरिवाडोकंध ॥ नामदेकौ नरहरिपूरोसार ॥ होयकरिपहुणउतारोपार ॥ ३१ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ वैष्णव श्री नांमदेवजू सबही जीवमात्रमैं भगवानहींकौं देषैं, काहूसमय वैष्णव तिलोचनजू नांमदेवजूसौं कह्यो, जो हमपर ऐसी कृपाकरो, जो भगवांनको दरसन होय, हमतैं तो यह वस्तु दूरिहैं, अरु तुह्मारी अनुग्रहतैं दूर नांहीं, तब नांमदेवजूनैं कही, हमतो नित्य सबनिमैं भगवानहीकौं देषतहैं, ऐसैंही तुमदेषो, यह कुत्ताठाढौहै याहूमैं भगवानहैं, जो चितकी सचाईतैं याहूमैं प्रभू दरसनदैं, तब तिलोचनजू बिवाद चरचातो इनसौं कैसैं करैं, सुनि मुसिक्याय चुप व्हैंरहे, तब नांमदेवजू फैंट मैंतैं तार निकास वा कुत्ताके वरननको एक नयो पद बनाय गावत भये, सो

कुतातौं दृष्टि आयबेतैं रहिगयो, अरुवाकी ठौर भगवानको दरसन होत भयो, सो जापद गायबेतैं भगवान दरसन दीनो, सो वह यह पद ॥ एप्रभुअंधारेघरकेमदनराय ॥ चाकीचाटैचूंनखाय॥चूला मांझिप्रभुकीसेज॥ छींकाकांनीअधिकतेज ॥ रुगचुगरुगचुगप्रभुकी चाल॥पूंछहलैंज्यौंजौकीबाल॥छांनछायअबबहौरयांआये॥ आगैंरो टीचुपरिजिमाये ॥ कातीमैंयाप्रभुकोभोग॥गहिगहिलकुटिघिरावैलो ग ॥ तीनतापयेमेटैंरोग ॥ नांमदेवस्वामीबण्यासंजोग ॥ ४ ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ काहू समय नांमदेवजू सौं कबीरजू कही, जो तुम अकेलेही भगवानके दरसन करि अपनौं स्वारथकरो हो, कबहू हमारोहू परमारथ करो, तब नांमदेवजू कही, तुम सब जानौंहोही हमसौं कहाकहो, दरसनकी कमी नांहीं, जीवके वि-स्वासकी कमीहैं, ऐसे दोऊ महापुरुसननैं बातैं कीनी, ताके पश्चात कितेक दिवस पीछैं एक मुगल नांमदेवजूकौं बेगार पकरि मूंडपैं गंठरियादैं आगैं चलायें लियें जातहो, तासमय वा ओरतैं कबीरजू आवतहे, तिनपूछीतुह्मारी ये कहा गति हैं, तब या उत्तरकौं तबही एक नयोपद बनाय चले जात गावन लगे, जबपदके भोगकीतुकि सुनि कबीरजू मुगलके पायन परे, ताही समय मुगल दृष्टि न आवत भयो, अरु वाकी ठौर श्रीरा मचंद्रजूको दरसन करत भये, सो जापदगांयैं नांमदेवजू अरु कबीरजूकौं श्रीरामजूको दरसन भयो, सो वह यह पद ॥ हैं यहरामजीकहाजानूंहौंन ॥ भगतिकरतबेठिपकरैंकौंन ॥ पूवप्रभुकी तसबीपूबहैंसुगल ॥ द्वारिकानगरमैंएहीमुगल ॥ कालोघोराजरदप

लान ॥ ताजकुलहसोहैंरहमांन ॥ कहतनांमदेवसुनौंकबीर ॥ चरनगहो येईरघुवीर ॥ ५ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ एक समय कबीरजू वनमें बैठेहे, तहां इनपें एकांत स्थलमें द्वै अपसरा स्वर्ग तें आई, तव कबीरजूनें बिचारी, इनसौं संभाषन कारिनौं भलो नांहीं, ज्यौं इनको अैसो रूप देषिनौंभलो नांहीं त्यौं इनको बोल निहू सुननी भली नांहीं, यह विचार नयोपद बनायगावत भये, वापदहीमें उनकौं उठजावे कोउतरदयो, अपसरा निरासव्है जात रही, वासमय गायो सो वह यह पद ॥ तुमघरजावोमेरीबैंनांइहांतु मारोलैनांनदैनां ॥ रामबिनागोविंदविनाबिपलागैंयेनैनां ॥ जगमगा तपटभूषननगमयउरमोतिनकेहार ॥ इंद्रलोकतैंमोहनआईमोहिक रनभरतार ॥ इनबातिनिकौंछांडिदेहुरीगोबिंदकोगुनगावो ॥ तुल सीमालाक्योंनहिंपहिरोपारब्रह्मपदपावो ॥ इंद्रलोकभैंटोटभयोक हाहमसोऔरनकोई ॥ तुमतोहमैंडिगांवनिआईजाहुदईकीषोई ॥ बहुतैंतपसीबांधिबिगोएकचैंसूतकैंधागैं ॥ जेतुमजतनकरोबहुतेरो जलमैंआगनलागैं ॥ हौंतोकेवलहरिकैंसरनैंतुमहोझूठीमाया ॥ गुरपरतापसाधकीसंगतिसोमैंजुपरमपदपाया ॥ नांवकबीरजातजु लाहागृहबनरहौंउदासी ॥ जोतुममांनमहतकारिआईतोईकमाई दूजीकमासी ॥ १ ॥ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ काहू समैं रैदासजूको उत्ककर्ष बहुत लोकनिकौं करत देषि कित्त नेक ब्राह्मन आंनधर्म अभिमानीहे, तिनकैं बहुत मत्सरता ऊपजी, तव बहुत सुबुधी सुहृद ब्राह्मन वैष्णव धर्ममें सावधान हे तिन उनकौं मनैंकीनें, तथा भक्ति महातम कहि सुनायो, तऊ उनके

मनमैं न आई, वैसीही वैसी मंडली मिलि राजापैं जाय पुकार करीजु, यह हीन जात ठाकुर क्यौं सेवैं, धर्मशास्त्रमैं मनैं हैं, याकोदोस तुह्मैं पहुंचैंहैं, तब राजानैं यह कही, जोभक्तिमहातम घटि नहि, अरु शास्त्रहू षंडन न कियोजाय यातैं ठाकुर बीचमैं पधरावो, एक और तुह्म बैठो एक और वे बैठैं, तुमहू आराधन करो वेहू आराधन करो, जासुं ठाकुर प्रसन्नहौंहिगे ताहीकी और सुतहसिद्धि सिंघासन सहित पधारैंगे,तब ऐसैंहीं कियो, एक ओर ब्राह्मन अपरस होय बेद पाठ करत करत द्वै पहर बिताये, कंठ रहिगये, बहुत श्रमतव्हैं चित्तमैं दुषमानि बैठिरहे, फिरि रैदासजू सौं कह्यो अब तुम आरंभकरो, तब इनकौं और कछुतो आवतहो नहीं, द्वैमंजीरा फैंटमैंतैं निकास एक नयोपद बनाय अकेलेही गदगद कंठ दीनता करुणां सहित गावन लागे, तब भोगकौतुक आयचुकी, वाही छिन ठाकुर सेवाको सिंघासन सब देषत चल्यो सोरैदासजूकी गोदमैं आय रह्यो, सो यह प्रसंग अरु पद जग तमैं बहुत प्रसिद्ध भयो, सो वह यह पद ॥ आयोआयोहोदेवादि देवतुमसरनआयो॥ परमसुखकोमूलजाकैंनांहिंसमतूलसोचरनमूल पायो ॥ लियोबिबिधिजोंनबासजमकीअगमत्रासतुह्मारेभजनबि नभ्रमतफिरचो ॥ मायामोहविषयरसलंपटयहदुपदुसतरातिरघो ॥ तिहारेनांवबिसवासछाडीआंनकीआससंसारीधरममेरोमननधीजैं ॥ रैदासदासकीसेवामानहोदेवापततपावननांवप्रगटकीजैं ॥ १ ॥ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ ब्राह्मन नरसीमहता गुजरातमैं महावैष्णाव महानुभाव भये, तिनकी दोहितीको व्याहतो, तहां

गये, सो एतो वैष्णवनकी टहल करि भगवत इच्छा तैं द्रव्य करि हीन हुते, तातैं इनको आदर न कियो, उनके चितमैं माहेराकी चाह, इनकैं माहेरो कहां दैनकौं, तब इन कीरतन बनाइकैं गायो तब माहेराकी सामग्री सब सिद्ध होय गई, बहो सुश्रूषा भई, सो वह यह पद ॥ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ नरसीमहता ठाकुर सेवा आगैं अपनी स्त्रीकौं संगलैं नित्य कीरतन नृत्य करते, तब ठाकुर इनकौं फूलनकी माला देते, यह वार्ता उहांके पृथ्वीपति सुनि नरसीजीके ठाकुरके दरसनकौं अचानक आये परीछाके निमत्त नरसीसौं कहीजु, हम देषत ठाकुर तुमकौं मालादे तो भलेहैं, नांहींतो या पाषंडको फल पावोगे, तब नरसी कही हूंतो कछु जांनौं नहीं, ठाकुरके आगैं कीरतन करौंगो इच्छा उनकी होहिगी तो देहिंगे, यह कहि कीर-तन करन लग्यो ठाकुर कृपा करि मालादई, सो वह यह पद ॥ देवाअमांनैंतोतुमांनानांवनोआसरोकरमचालेषभूंच्यानजाई ॥ राजामंडलीकप्रेरपेरप्राहुवैंछबीलाबिनादुषकैंनकहाई ॥ कोईकहैलंपटकोईकहैंलोभियोकोईकहैंतालकूटियोरेषोटो ॥ दीनजांणेंनैंदयाकरेदामोदरमालाआपैंतोनूंनाथमोटो ॥ बिहूपाससुंदरीकंठबाहोधरीकेसवाकीरतनएमहोई ॥ अजांणलोगतेअजांणवांणीवदैंपुन्यवंतपुरुषतेप्रेमजोई ॥ आगवैंबिवाहिएघणूंबिगोयोउष्णजलमोलिनैंहासकीधो ॥ द्वादसमेघमोकल्याश्रीपतिआपणूंभक्तिनैंमांनदीधो ॥ सोरठमांहिसहूसाचोकह्योपुत्रीनोमाहेरोएमकीधो ॥ नागरीन्यातिनैंईंडोचढाइयोनरसीयानैंअभैदानदीधो ॥ देवाअमचीबे

रकांईविधहोयलाआपणूंभक्तिरखैविसारीगईला ॥ मलेछमांहितुमे कबीरनैंऊधरचोनामैंनाछापरागयोछावी ॥ जयदेवनैंपदमावती आपनिागरैंमाटरषेभूलिजावी ॥ अमेपलभलतांतुमेषलभलस्योसुषैं वैकुंठमैंकेमरहस्यो ॥ वृंदाबनमैंराधिकानैंसंगअमानैंएकलोछाडि तुमेत्रिनोदकरस्यो ॥ आगैंमोनैंरावमंडलीकमारसीमुठडेकधूलिहो यजायथासे ॥ भगतकरतांनरसीयोमारियोभगतवछलतांहरोबिर दजासे ॥ श्रीकृष्णसांवलामूंकिमनआंवलाऊठिगोपालजीअसुरथा से ॥ नरसीयानैंएकहारडोआपतांतांहरावापरोस्यौंजासे ॥२॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ बचनिका॥मेडतैं मीरांबाई तिनकौं रानाके छोटे भाईसौं व्याही, यह जग प्रसिद्धहैंही सो कितनेक दिन उपरांत काहूसमैं रानाके वा भाईको देहांत भयो, अरु रानाहुतेसो मीरां-बाईसौं दुषपायरहेहीहे, ये बैष्णवनिको सतसंग करितेयातैं, वासमैं रानानैं कहाई, जो यह औसरहैं तुम भरताके संग सतीहोहु, तब मीरांबाई भगवत रंगआगैं लगेहे, त्यौंहीं लगेरहे यासमैं कछू षेदमानी नाही, अरु याबातके उत्तरकौं एक बिष्णुपद नयोब नाय रानाकौं लिषि पठयो, पद बहुत प्रसिद्ध भयो ॥ सो वह यह पद ॥ मीरांकेरंगलग्योहरीकोऔररंगसबअटकपरी॥ गिरधर गास्यांसतीनहोस्यांमनमोह्योघननामी॥ जेठबहूकोनातोनहींराणा जीथेसेवगम्हेस्यामी॥ चूडोदोवडोतिलकऱुमालासीलवतसिंगार ॥ औरसिंगारभावैनहींराणाजीयोंगुरग्यानहमार॥कोईनिंदोकोईबिंदो गुणगोबिंदरागास्यां॥ जिणमारगवैंसंतपहूंतातिणमारगम्हेजास्यां॥ जोरीकरांनजीवसंतांवांकांईकरसीम्हांरोकोई ॥ हसतीचाढिगधैंन

होंचढांयातोबातनहोई ॥ राजकरंतानरकपडेसभोगीडाजमकैलीया ॥ भगतकरंतामुक्तपहूंताजोगकरंताजीया ॥ गिरधरधणीकहूंबो गिरधरमातपितासुतभाई॥ थेथांहरैम्हेह्मांहांरैंहोराणाजीयौंकहैंमीरांबाई ॥ १ ॥ पुन ॥ अन्य पद प्रसंग ॥ मीरांबाईसौं राना बहौत दुषपायैंरहैं, रानाके घरकी रीततैं इनके भिन्य रीत, यह भगवत संबंध सत्यसंग बिसेसकरैं, देह संबंधको नातो व्यौहार कछु न मांनैं, राना बहुत समुझाय रह्यो, निदांन एक विषको प्यालो उनकौं पठियो, कह्यो चरनामृतको नामलेकैं दीजियो, उनकैं प्रणहैं, चरणामृतके नामतैं पीहीजांयगे, सो ऐसैंहीभयो, जांनिबूझ पीयो, रानातो इनके मरिबेकी राहदेषतरह्यो, अरु यह झांझ मृदंग संगलैकैं परम रंगसौं एक नयो पद बनाय ठाकुर आगैं गावतभये, पद बहुत प्रसिद्ध भयो, सो वह यह पद ॥ रानैंजूबिपदीनौंहमजानी ॥ जानबूझिचरनामृतसुनिपियोनहींबौरीभोरानी ॥ कंचनकसतकसोटीजैसैंतनरह्योबारहवांनी ॥ आपुनगिरधरन्यावकियोयहछांन्यौदूधरुपानी ॥ रानाकोटकवारौंजिहिंपरहौंतिंहिंहाथबिकानी ॥ मीरांप्रभुगिरधरनागरकैंचरनकमललपटानी॥२ पुन ॥ अन्य पद प्रसंग ॥ रानाको छोटोभाई मीरांको देहसंबंधको भर्ताहो, सो ताको परलोक भयो, तापीछैं मीरांबाई गंगादिक तीरथ करिकैं अरु श्रीबृंदावनहू आये, तहां जीऊगुसांईजूको प्रण स्त्रीके न देषिबेको छुटाय सबसौं गुरुगोबिंदवत सनमान सत्यसंगकरि द्वारिकाकौं चले, उहां बास करिबेकैं लियैं तहां एक मारगमैं नयोपद बनायो, बहुत प्रसिद्ध भयो, सोवह यह

पद, रायश्रीरनछोडदीज्योद्वारिकाकोबास ॥ संखचक्रगदापद्मद रसैंमिटैजमकीत्रास ॥ सकलतीरथगोमतीकेरहतानित्तनिवास॥ संप झालरझांझबाजैंसदासुषकीरास ॥ तज्योदेसरुबेसहूतजितज्योरा नाराज ॥ दासमीरांसरनश्रावततुझैंअबसबलाज ॥ ३ ॥ पुनःप्रसं ग ॥ सो याभांति मनोरथ करत यह पद गावत द्वारिका पहुंचे, तहां कोईदिनरहे तापीछैं मीरांबाईके संग प्रौहितादिक जे रा- नाकेलो कहे, तिनकह्यो अब बहुत दिन भयेहैं अब देसकौं चलो, रानाकी श्राग्याहैं, श्रैसैं है तीन दिन तो कह्यो, फिरि मीरांबाई परि धरनांकियो, तब मीरांबाई ठाकुर श्रीरनछोडजूसौं विदा व्हैबेको नांवलैं मंदरिमैं श्रकेलेही जाय महाआरति सहित एक नयो पद बनाय गायो, सो वह यह पद ॥ हरिकरिहो जनकीभीर ॥ द्रोपदाकीलाजराषीतुमबढायोचीर ॥ भक्ति कारनरूपनरसिंघधरयोआपसरीर ॥ हरिनकस्यपमारिलीनौध रयोनांहिनधीर ॥ बूडतैंगजग्राहतारयोकियोबाहिरनीर ॥ दासमी रांलालगिधरदुषजहांतहांपीर॥४॥सोयहपद गायेंहू उततैंन टरे,तब महाश्रारति प्रेमावेस सहित एक औरपद बनायगायो, तबही ठाकुर श्रापमैं उनकौं याही सरीरतैं लीन करिलीनें देहहूनरही, सो जापद केगायें लीनभये, सो वहयहपद ॥ सजनसुधिज्यौंजानैंज्यौंलीजैं ॥ तुमबिनमेरैंऔरनकोईक्रपारावरीकीजैं ॥ द्यौसनभूषरैननांहिंनिद्राय हतनपलपलछीजैं ॥ मीरांप्रभुगिरधरनागरश्रबमिलिबिछुरानिनाहिं कीजैं॥५॥सो येदोऊ पद निकट द्वारकैं इनकी पर्मचतुर वैष्णवसषी न कंठकरिलीनैं, तथा लिषिलीने तेप्रसिद्ध भये ॥ ५ ॥ पुनःश्रन्य

पदप्रसंग ॥ मीरांबाईकी कई भांतिकी चरचा निंदकजन राना-आगैं वहुत करन लागे, तब एकसमैं रानानैं अपनैं अंतहपुरकी एक स्त्रीकौं पठाई कह्यो कि आधीराति उपरांत जहां वेहोय तहां चलीजाई जाइये काहूकी हटकी मतरहिये सो वानैं ऐसैंही कियो, मीरांबाई अटारीपर सोई सोई जागतही सौंहैं, चंद्रमाकौं देषि देषि हरि प्रीतमके अंतरायको विरह सह सहतहीं उनकी भांवनां करि करि परी उसास लेतही,इतनेंहीं येजाय ठाढी भई,ताकूं मीरां बाई कह्यो, तनकेक बैठिकैं हमारो दुष सुनौं, यासमैं हमकूं तुम वडे श्रोता मिले, सो जद्यपि वह बिजातीही, परंतु ज्यो कोऊ अति अधीर अनुरागी होय, ताकूं बिजाती सजातीको ग्यान नांहीरहै, वहि अपने चित्तकी कहै सो कहै ही कहै, यातैं वाके आगैं वाही वेर एक पद बनाय वनायकैं गांवनलगी, सो पद सुनि इनकी अवस्था देषि वह आई हुती सो परम अनुरागमैं मूरछित व्हैंगई, इनकीही निकटवर्ती परम वैष्णव भई, फिरि रानाके अंतहपुरमैं न गई, फिरि राना और काहू स्त्रीनिकौं इनपैं पठावैं सोई नटजाइ, अरु कहै ज्यो उनपैं ज्यो जायहै, सो बावरीव्है जातहै, तातैं हम नजांहिगी, यह वात इनकैं बहुत प्रसिद्ध भई, सो पिछली रातके समैं जापदकें सुनैंतैं रानाकी सहचरीकी उनमत्तदसा व्हैंगई,सो वह यह पद ॥ सषीमेरीनींदनसांनीहो ॥ पियकोपंथनिहारतां सवरैंनविहांनी ॥ सषीयनिमिलिसीषदईमनएकनमांनी ॥ विनदेषैं कलनापरैंजियऐसीठांनी॥अंगछीनव्याकुलभईमुषपियापियबांनी॥ अंतरवेदनविरहकीवहिपीरनजांनी ॥ ज्यौंचातकघनकौंरटैमछरी

बिनपांनी॥ मीरांब्याकुलबिरहिनीसुधिबुधिबिसरांनी॥६॥ अन्यपद प्रसंग ॥ मारवारमैं गांव एक पालरी तामैं वैष्णव, एक रामानुजी चतुरदासजू नाम रहैं, तिनको पोजी नाम प्रसिद्ध भयो, सो ज्याभांति पोजीजू नाम भयो सो ताको प्रसंग भक्तमालके टीकामैंहैं, बिस्तारव्हैंबेकौं यामैं धर्‍यो नांहीं, ये सापीमें तो पोजी नांव धरते, अरु विष्णुपदमैं चतुरदास नांवधरते, सो यह चतुरदासजू एकसमैं श्रीमतभागवत पाठ करतहे, औरहू श्रोता बहुत बैठेहे, तहां एक कांजर घूंस ताकौं कोल कहतहैं, ताको फंदालयें आय निकस्यो, सरीरकी मलीनदसाहैं, मूंडके ऊपर झेबार आंषिनिपरि आय रहेहैं, सिरपरि छाबडी तामैं रोटींनके टूक तथा नाजहैं, अरु मुष तैं यह पुकारतहैं, कोई कुडमंडाडेहो कोईकुड, याभांति कांजरकौं देषि सब श्रोताहसे, अरु चतुरदासजू आसन छांडिकैं दौरे सो वाके पायनमैं मूंड जायदियो, तब सबनि मिलिकही स्वामीजू बावरे व्हैंगये, वा कांजरकौं चहूंऔर सब श्रोता ठाढेहैं, अरु स्वामी दंडवतकरतहैं, इतेहींमैं वाकांजरके सरूप भगवानहे सो अंतर ध्यान व्हैंगये, तव चतुरदासजूको प्रभाव सबनि जान्यौं, अरु विस्मय रहे, अरु सब ठौर यह बात बहुत प्रसिद्ध भई, यासमयको तवही एकपद बनायो सो वह यह पद ॥ कांजरनहोयबावोकमलाकंत ॥ तीनलोकजाकेमुषभीतरअंतरजांमीसवजीवजंत ॥ पांणीमैंपापांणतिरायेसोतुमल्योहबिचारी ॥ मच्छकच्छवाराहरुनरसिंघवांवनहैंफरसधारी ॥ पंडूमपकरुणामयकाजैंजिनकेपात्रपपारे ॥ कां

धैंकूडधारिकलिजुगमैंजनकैंद्वारपधारे ॥ मांडीषातपलकमैंपालक आपणरह्योछिपाई॥चतुरदासदिसपूरणदेषीमारतकोलबिलाई ॥१॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ मुरधरदेसमैं एक गांव बलौंदा तहां मुरारिदास वैष्णव रहैं, तिंनकैं बरसवैंदिन गुरको महोच्छव होत हो, ता महोच्छवमैं ए उठि नृत्य कीरतन करतहे, सो एक महोच्छवमैं नृत्य करतहे अभिनय बतावतहे, पद गावतहे, ता पदमैं यह तुक आईजु ॥ जातनाववैकुंठसधरणीकुटंबसहितचलीकीरकी ॥ तब प्रेमविबस व्हैंगये, अरु देह छूटिगई, सो वह यह पद ॥ पावनपदरजरघुबीरकी ॥ जापरसतसिलकोतनपलटचोगतिभइदेवसरीरकी ॥ ल्यावनावपेवटकहिबोलेप्रभुठाढेतटनीरकी ॥ चलेपलायफेरनहिचितवतसंकारामसधीरकी॥ करतपरमगतिपरमकृपानिधितारिपतितभोर्भीरकी ॥ जातनाववैकुंठसधरणीकुटंबसहितचलीकीरकी ॥ सेसमहेसनिगमनारदमुनिसेवाब्रह्मउजीरकी ॥ परसाशुकसनकादिभजनरतिउरधारिगुनगंभीरकी ॥१॥ अथअन्यपदप्रसंग ॥ एकसमैं वैष्णव राघोदासजी धमारि बनावतहे, सो कितेक तुकैं तो बनाई, अरु जहां ए तुकआई, मनुअवनींपरमेघकौंघेरिरहेबदौचंद॥सो यह तुक लिपतही प्रेम बिवस व्हैकैं देह छोडि दई तब तहां राघोदासजूकी स्त्री बैठीहुती तानैं उनकी देहक्रिया तो पाछैंकीनी, पहिलैं उनको भोगदैं धमारि पूरीकरी, सोवह यहधमारि ॥ चलिजांहिजहांहरिषेलतगोपिनसंगा ॥ आंनकबहुवाजेतालमुरजमुषचंगा ॥ गावतसुनिभावतमंदमधुरमुषवानी ॥ जनौंहरषिपरसपरमनहूंमदनगतिबानी ॥ ॥ टेक ॥

चलिजांहिजहांक्रीडतनंदनंदनझांझप्रणवडफभारी ॥ बीनउपंग मृदंगचंगवहौंदेतपरसपरगारी ॥ करपीचकवीकचमुपकटिपटु वेषबनायो ॥ जनुगुदरदैंनकौंबानिवसंतब्रजआयो ॥ हाटिक मनिगनषचितबिविधकरजेरीसाजैं ॥ रुंजमुंजसहनाईढोलढो लकडफबाजैं ॥ आवजअतिआतुरबजैंब्रजजनपेलैंफाग ॥ तां नतरंगनिबायबध्योछायरह्योअनुराग ॥ धुनिसुनितपियारनुकु मकुमभूषनकीनैं ॥ वहौरंगबसनतनजावकचरननिदीनैं ॥ कंव रीकबजसवारिनिरषिउपमांकौंहारी ॥ मानौंहाटकलतारहीपगिप न्नगनारी ॥ श्रवनतारउरहारछविअरुमुकतासरससुढार ॥ जनुजु गगिरबिचदेषियेधसीसुरसुरीधार ॥ रचितिलकभालभालपरमृगम देरेषसंवारी ॥ जनुयुगलजीभधरिपन्नगपीवतसुधारी ॥ पंजनमीन अधीनदेषिदृगसारंगलाजैं ॥ बदनचंदभुवचापस्वातिसुतनासासा जैं ॥ उपमांकौंअबिलोककवियासमनांहीऔर॥ मनौंकीरउडिगन गहैंचुगतनहींसुनिऔर॥अतिअधरअरुनछविअरुदसननिद्युतिपाई॥ जनुबिज्जुलबीजनिबिद्रुमवारिबनाई॥ कंठकपोतलजातिकरनअंग दजगमगियो ॥ मानौंजलजमृनालसरदसासिवालकलाजियो ॥ पौं हचनिअतिपुंहचीसिघनसुंदरस्यामसुपास ॥ मनौंकंजकेकंठलागि भृंगरहेमधुहास ॥ बनिचलीसकलतियपगनूपुरसुरमारी ॥ मानौं विविधकामकलहंसकरतकिलकारी ॥ सापिजवादिसुगंधकुमकुमा केसरिघोरी ॥ भाजनिभरिलैंचलीसकलतियगावतहोरी ॥ नपासिप तैंअविलोकिछबिनागरिमोहैंगान ॥ मानौंसंगीतसालापढीघटिवदि परतनतान ॥ छबिसिंधुललनतनदेषतलोचनभूले ॥ स्यामास्या

मरमैंअतिरंगसौंकेसनिपूले ॥ बरनबरनासिरपागश्रवनकुंडलमनिम
यअति ॥ मनौंस्यामनगसिषरतरनिजुगरमतितरलगति ॥ उरबन
मालविसालछबिविविधिसुमनबहौबेष ॥ मनौंजलदमैंप्रगटअतिस
तमषसारंगरेष ॥ रचितिलकमलैकोपियकरषौरबनाई ॥ मनौंजुग
लअहिनिसिसिंघनिपरदईदिषाई ॥ घनतनदेषिलजातकंजहृगक्यौं
समपावैं ॥ मुषससिस्यामभुजांनिदेषिअहिबपुहिलजावैं ॥ नषसि
षतैंअबिलोकिछबिकटिपटुपीतसुदेस ॥ मनौंजलदधुरवासषीदामि
निरहीप्रवेस ॥ छबिश्रीमोहनतनलघुमतिबरनीनजाई ॥ चितवति
चितचोरतमनमथरह्योहैलजाई ॥ तियनिपरसपरहराषिहरितकरडि
गेनबाजे ॥ उठेगोपकिलकारलागिदुहुंदिसतेबाजे ॥ एकनिकुमकु
मालियोएकनिघोरिगुलाल ॥ चलीसकलब्रजसुंदरीपकरिनमदन
गोपाल ॥ सैंननहीमोहनहलधरदियेहैंबताइ ॥ गहिनीलवसनतनदै
बिंदुदियेछिटकाइ॥सबनिमिलिपकरेस्यामसुमुरलीतबलईछिनाई ॥
तबहितरुनिमुसकाइसाषिभाजनलैंधाई ॥ छींटनिछिरकतभरतब
होप्रेमछकीनंदनंद ॥ मनुअवनीपरमेघकौंघेरिरहेबहौचंद ॥ निर
षतांथकतनभजहांजहांअमरबिमान ॥ बरषतसुरसुमननिऔब
जाइनिसान ॥ रह्योपरसपररंगसकलतियभवननिआई ॥ तबहि
तिनहिंब्रजराजबिविधपटदईमठाई ॥ आयतरनितनयासलिलमंज
नकियोबलवीर ॥ पहरिबसनआयेभवनसंगसकलआभीर ॥ दुति
यामोहनतनराजतपीतसुबास ॥ बैठेसिंगासनवानिबलिबलिराघो
दास ॥ २ ॥ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक
समैं तुलसीदासजू कासीनगर रहैं, तहां सहजही एक ओर

बहिर भूमिकौं गयो करते, अवसेप जल रहतो सो नित्यही एक वृच्छके मूलमैं डारयो करते, तामैं एक प्रेत रहतो, सो जलकरि तृप्तहोतो, वह एकसमैं उनकौं प्रतच्छ भयो, अरु कह्यो कि मैं प्रेतहूं, तुम मोकौं जल करि तृपति करतहो सो वडो गुन करतहौ, मैंहूं तुमसौं गुन करूंगौ, याओरकौं रामायणकी कथा होयहैं, तहां हनूमान जू आवैं हैं, यह उनकीपरीछाहैं, पोरे दुर्वल वृद्ध ब्राह्मनके स्वरूप, सब श्रोतानिके पहिलैं तो आवैं हैं, अरु पाछैं जायहैं, सो तुलसीदासजू यह सुनि अरु वेकथा सुनि जातहे, तहां उनके पांवनि सीस दैकैं पांव गहि रहे, हनूमानजू वहुत नटे कह्योमैं बृद्ध ब्राह्मनहूं, मोमूं कहा कहैं हैं, इननि पाव नाहीं छाडे तब हनूमानजूनैं कही, तू चाहतहैं सो मांगि, अरु मेरो पैंडो छोडि, तब तुलसीदासजू कही, मोकूं श्रीराम लक्ष्मणजूको दरसन करावो, तब हनूमानजू कही वहुत चिंताकरि कह्यो, तैं वहुत दुर्लभ बस्तु मांगी भला कहा कीजे, इच्छा उनहींकी, तव वाहिर एक बनमैं टीबावतायो, तू यापरि जाय वैठि, इहां तोकूं दरसन होयगो. तहां तुलसी दासजी वैठे, सहित आरत देपत रहे, इतेही मैं श्रीराम लक्ष्मणजू मनुष्यको स्वरूप याभांति कियें आगैं आय निकसे, मलीन तो वस्त्रहैं, हाथमैं धनुहीं अरु तीरहैं, एक मृग मारयोहैं, ताकौं उलटायैं लियें जायहैं, लोही गिरत जाय हैं, तव तुलसीदासजू उनतैं निजर टारि भूमिकी ओर देपि रहे, चित्तमैं कह्यो ऐसे निर्दईन मनुष्यौंकौं मैं कहा देपूं, अव वेग निकस जांहिंगे, सो याभांति श्रीरामजी तो निकसि गये, अरु ए तिनके

पाछैं बहुत बेरलौं बैठे, श्रीरामजूके आयबेको मारग देष्यो करे, फेर तहां हनूमानजूको दरसन वाही भांति होत भयो, तिनसौं इन कही मोकूं श्रीरामजूको दरसन कबहोइगो, मैं बहुतबेरको बैठ्यौं हौं, तब हनूमानजूनैं कही, वेमृगिया वारेनिको स्वरूप कियैं श्रीराम लक्ष्मणहीहे, तब तुलसीदासजू रोवनलगे, बहुत पश्चात्ताप कियो, अरु वाहीसमयको तबही एक पदबनायो ॥ सो वहयहपद ॥ लोचनरहेबैरीहोय ॥ जानिपूछअकाजकीनौंदयेभुवमैंगोय ॥ अबगतिजूतेरीगतिनजानूरह्योजागतसोय ॥ सबैरूपकेअवधिमेरेनिकस गयेढिगहोय ॥ कर्महीनाहिंपायहीरादयो पलमैंषोय ॥ तुलसीदासश्रीरामबिछुरैंकहोकैसीहोय ॥ १ ॥ पुनःअन्यपदप्रसंग ॥ वैष्णव श्रीतुलसीदासजी श्रीराम उपासिकरहैं, तहां कोई एक स्त्री हुती सो सतीहौंनकौं जातही, तानैं मारगमैं तुलसीदासजूसौं दंडौतकरी, तब इनकह्यो सौभाग्यवतीहोहु, यह कहतही वाको पति जीय उठ्यो, यह बातसुनि पातिसाह जाहांगीर तुलसीदासजूसौं बुलायकही, कछु करामात दिषावो, तब इन कही, हम करामाततो कछू जानैंनहीं, तब इनकौं कैदकरि राषे, तासमैं राजा अनीराय बडगूजर तुलसीदासजूके पास आये, बीनतीकीनीजु महाराज अैसोकीजियैं हिंदवनके मारगकी घटती न दीसैं, अरु आगैंतैं कोई बैष्णवनकौं संतावैंनहीं, तापर इननि एक नयो पद बनाय वाकौं गांवनलगे, ताहीसमैं अगनित बादर उपद्रव करत पातिसाहकी दृष्टिपरे, तब पातिसाह भयमानि इनिके पाइनि आंनिपरिकैं छमाकरवाइ सीषदई, चलतीबेर तुलसीदासजी

नैं यह आग्याकीनी कि यहां श्रीरामजीके सेवक हनुमानको पर
करआयो सो यहठौर उनकीभई, तुम औरठौर जायरहो, यहां
तुम्हारेही कुटंबके बंदीवांन व्हैंरहैंगे, यह सुनि पातिसाहनैं सलेम
गढ छोडिदयो, सो अबतकभी पातिसाहके कुटंबके उहां कैद
रहतुहैं सो जापदकौं बनाय गायेतें यहलीलाभई सो वह यहपद ॥
तुमहिंनऐसीचाहियेहनुमानहठीले॥साहीबसीतारामसेतुमसेजुवसी
ले ॥ तुमरेदेखतसिंघकेसिसुमैंडुकलीले ॥ जानतिहूंकलितेरेऊमनु
गुनगनकीले ॥ हाकसुनतदसकंधकेभयेबंधनढीले॥ सोबलगयोकि
धौंभयेअबगरबगहीले ॥ सेवककोपरदाफटैंतुमसमरथसीले ॥ सास
तितुलसीदासकीसुनिसुजसतुहीले ॥ तिहूंकालतिनकोभलोजेरामरं
गीले ॥ २ ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ वैष्णव तुलसीदासजू सो
श्रीरामचंद्रजूके उपासिक महाअनन्य, ऐसेजू औरु अवतारी
अवतारानिके गुन बर्नन न करैं, न औरानिके गुन सुनैं, स्वइछासौं
न औरनिके स्वरूपको जाय दरसन करैं, अरु औरु महानुभाव
बडे जो प्रीतकरि दरसननकूं लेजांहिं. तो उनको अनादरहू
कैसैं करैं, यातैं जांहिं परंतु ।वन। श्रीरामचंद्रजूके स्वरूप
औरानिकौं दंडवत नाहीं करैं, एक समय श्रीगोवर्धन आय
निकसे तहां श्रीगुसांईंजू तुलसीदासजूकौं, श्रीगोवर्द्धननाथजूके
दरसनकौं लैंगये तहां दरसन करि तुलसीदासजू, यह
दोहा कह्यो ॥ दोहा ॥ कहाकहौंछविआजुकी, भलेबनेहो
नाथ ॥ तुलसीमस्तकजबनमैं, धनुपबांनल्योहाथ ॥ १ ॥ सो श्री
ठाकुरतो भक्तिआधीन वाही समय धनुपबांन हाथलियैं सव-

निकी दृष्टिपरे, तब तुलसीदासजूनैं दंडवत करी, अरु सबनिके मनमैं इनकी ओरको बडो उत्कर्ष आयो, अरु सबनि कही, जो भक्तिनिके विषैं आश्चर्य कहा, आगैं तो ठाकुर अपनी प्रतग्याहू मेटि भक्त भीषमजूकी प्रतग्या राषीही, सो ऐसी औटपाई अनन्यनातो इनहीतैं बनि आवैं, अरु या वारतापरि जो कोऊ संदेह उठावैंजु अवतारनिके बिषैं भेदाभेद क्यौंचहियें, तथा चतुर्व्यूहके बिषैं भेदाभेद क्यौंचहिये तथा ब्रह्मा विष्णु महेश इन तीन्यूं देवतांनिबिषैं भेदाभेद क्यौं चहिये, सो याकी यह वार्त्ताहैंजु सास्त्रही कीतो आग्याहैं, अरु अनन्यताकी अरु सास्त्रहीकी आग्याहैं, भेदाभेद न राषिवेकी, सो दोऊही सत्य हैं, ऐश्वर्ज बुद्धिमैं तो भेदनहीं अरु आसक्ति उपासना भेद बिन क्यौं बनैं, ताको दृष्टांत जो जा राजाके नगरके लोग तथा देसके लोगहौंहिं तिनकौं तो राजाके बिषैं तथा राजाके पुत्रके बिषैं तथा मंत्रीस्वरनिकैं विषैं एक राजाहीके सरीर तुल्य जांनिवेकी बुद्धि चाहियैं, यहजांनैंजु यह सब राजाहीको स्वरूप हैं, अरु राजाकी स्त्रीनिकौं यह बुद्धिनचाहिये, वे यह बुद्धिराषैं तो दोषलगैं, यातैं सास्त्रकही सो जथापात्र दोऊही सत्य हैं, सो तुलसीदासजू ऐसे महाअनन्यहे तिन सौं काहू वैष्णव मित्रनैं बहुत कही, जो महाराज तुह्मारी ऐसी कबिता अरु तुम श्रीकृष्णचंद्रको कोऊ एक हू पद बनायो नांही, सो ऐसैं कहत कई दिनतो निकासे, फिरि उनकौं बहुत आग्रह जानि, एक पद बनायो, तामैं हूं श्रीरामचंद्रजूकी मिश्रतता छाडी

नाहीं, सो यह पद सुनि कितेक रसिकानिकौं वहुत चाहभयो, पद बहुत प्रसिद्धता पाई, सो वह यह पद॥ बरनौंअवधिगोकुलग्राम॥ उतबिराजतज्यानकीबरइतांहिस्यामास्याम॥ उहांसरजूवहतअद्भुत इहांजमुनानीर॥ हरतकलिमलदोऊमूरतसकलजनकीपीर॥ मनि जटतासिरक्रीटराजतसंगलक्ष्मनिबाल॥ मोरमुकटरुबैनकरह्यांनिक टहलधरिग्वाल॥ उहांपेवटसषातारेबिहसिकैंरघुनाथ॥ इहांनृग जदुनाथतारयोकूपगहिनिजहाथ॥ उहांसिवरीस्वर्गदीनौंसीलसागर राम॥ इहांकुबजाल्यायचंदनकियेपूरनकाम॥ भक्तिहितश्रीरामकृ ष्णसुधरयोनरअवतार॥दासतुलसीदोऊआसाकोऊउतारोपार॥२॥ अथ अन्य पद प्रसंग॥एक समय गोस्वामी श्रीविठ्ठलनाथजू कितेक जीव कृतारथ करिबेकौं इंद्रप्रस्थ पधारे, सो एक सेवगकैं पधारे, ताकैं परोस एक सरावगी महाजन मानकचंद नामरहैं, सो वेहू तमा सो देषिबेकूं आय ठाढो भयो, अरु वाके चित्तमैं आयगई सो कह्यो, महाराज सवारैं मेरी रसोई अंगीकार कीजैं, तव श्रीगुसांईजू आग्याकरी, आंनधर्मीकी रसोई लैबेकी हमारे पद्धिति नहींहै कैसैं लेवैं, तव दूसरैं दिवस फिरि आयो, तासमैं श्रीगुसांईजू श्रीमतभागौतको पाठ सारथक नित्यनेम को करतहे, वहुत जग्यासी श्रोता हू बैठेहे, सो गुसांईजूके मुषके बचन सुनतही वाको चित्त वहुत फिरिगयो, दौरि पांवन परयो, कह्यो मोकौं सिष्यकरो, मैं सरावगीनको धर्म छोडयो, वहुत हठ कियो तव श्रीगुसांईजू भगवत इछया जानि सिष्य कियो, सो मंत्र सुनाय कंठी बांधतही याके प्रेम व्हैं आयो, अरु सुतह सिद्धि कविता

सक्ति व्हैं आई, श्री गुसांईजूकौं श्रीठाकुरको स्वरूप मान वाही समैं पद बनाय गाय उठ्यो, पद बहुत प्रसिद्ध भयो सो वह यह ॥ पद ॥ प्रगटेश्रीविठ्ठलनाथहमारेद्वापुरवसुधाभारहरचो ॥

अबकलजुगजीव उधारेजबवसुदेवगृहप्रगटहोयकैंकंसादिकरिपु मारे ॥ अबवल्लभगृहप्रगटहोयकैंमायावादनिवारे ॥ अैसोको कविहैंकलमहियांगुनबरनतजुतिहारे ॥ मानकचंदप्रभुकौंपोजत गावतबेदपुकारे ॥ १ ॥ ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ छीतु स्वामी सो स्वामी तो पीछैं कहाये, पहिलैं छीतू मुथरिया कहावतहे, चित्तमैं बहौत रिंद कुटीचर रहैं, शैवहुते, श्रीगुसांई जूकी कोऊ स्तुति करैं अरु कहैं जोए श्रीगोवर्द्धननाथ को स्वरूपहैं, तब ए चित्तमैं बहुत उद्वेगकौं प्राप्त व्हैं, ईरषा मांनैं, एक दिवस एक नारियरमैं राष भरिकैं श्रीगुसांईजूकौं जाय दरसन करि वह नारियर भेट कियो, तब श्रीगुसांईजू आग्याकरी वाहीकौं, जो तू या नारियरकी गिरी काढि सबनिकौं बांटि दैं, तब यह चित्तमैं सकुच्योजू, इनके इते सिष्य शापा बैठेहैं सो राषदेपिकैं मोकौं लात मूकीनतैं मारिडारैंगे, यह जांनि वाको ससोक मुष व्हैंगयो, तब गुसांईजू फेर आग्याकरीजू तू चिंता करतिहैं सुमति करि, अरु गिरी बांटिदेहु तब वानैं जटा दूरिकरी बांटिवेकौं, तब राषकी ठौर गिरी सुंदर निकसी, सो सबकौं वरताइ दई, छीतू मुथरियाके चित्तमैं बडो चमत्कार भयो, दंडवत करि शिष्य भयो, तब वाही ठौर एक विष्णु पद बनायो, सो वह यह पद ॥ जेवसुदेवकियेपूरनतपतेईफलफालितश्री

बल्लभदेव ॥ जेगोपालहुतेगोकुलमैंतेईअबआंनिबसेकरगेह ॥ तेवेगोपबधूहुतीव्रजमैंजेअबबेदरिचाभईयेह ॥ छीतस्वामिगिरधरनश्रीबिट्ठलबेईयेईयेईबेईकछुनसंदेह ॥ २ ॥ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीगुसांई हरिबंस, श्रीवृंदाबन बास करैं, रसिक बैष्णवनकौं सबभांति ऐसैं सुषदैंहि, भजनानंदमैंजु राति दिन जात जान्यौं न परैं, सो याही बीच एकसमैं श्रीहरिबंसजू श्रीवृंदाबन पायो, नित्य सिधपरकरमैं प्रवेस करयो, पाछैं सब रसिक वैष्णवनकौं महा बिरह भयो, राग रंग सुष समाज भजनानंद मिटगयो, व्यासजी एक कोटरीमें बैठि रहे, भीतरकी सांकरी लगाय बिरह दुषतैं बाहिर न निकसैं, प्रसाद कछु न लेह, एक समैं सब बैष्णवनि मिलि बाहिर निकासे, सो बाहिर आय वैष्णवनके समाजमैं एक नयो पद बनाय सुनायो, सो सुनतही सबनिकौं हरिबंसजीको बिरह आवेस भयो, कितेक मूर्छित भये, सो वह यह पद ॥ हुतोसुषरसिकनकोआधार ॥ बिनहरिबंसजुरसरीतिनिकोकापैंचलिहैंभार ॥ कोराधादुलरावैंगावैंबचनसुनावैंचार ॥ वृंदाबनकीसहजमाधुरीकहिहैंकौंनउदार ॥ बडोअभाग्यअनन्यसभाकोउठिगयोठाटसिंगार ॥ व्यासएककुलकुमदचंदबिनुउडगनझूठोथार १॥ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ बुंदेलषंडके एक प्रोहित व्यासजी महा पंडित दिगबिजैंकौं फिरतहे, सो श्री वृंदावनहू आइ निकसे, पूच्छयो इहां कोऊ पंडितभीहैं, तब काहूनैं कह्यो हरिबंसजीहैं, तब बाद करिबेकौं हरिबंसजी

पास आये, कह्यो मोसौं बिद्याकी चरचाकरो, तासमैं हरिबंसजी ठाकुरकैं रसोई करतहे, तब व्यासजी बोलें भलैं, बिद्याकी चरचा रसोई करि चुकैं पीछैं करियैंगी, इतनें कछूसुलपसंभाषनतोकियेंजाइये, तबश्रीहरिबंसजू टोकनीउताारि चूलाजलतैं बुझाइदयो, तबव्यासजूबोले, इतनौंक्यौंकियो, दोऊ बात करत जाते, तबश्रीहरिबंसजू वाहीसमैं नयोपद बनाइ सुनायो, सो पद सुनतही व्यासजू, सर्व पुस्तक संग्रह ऊंटनपैं लदेउतारि श्रीजमुनामैंडारिदिये, बिबाद उदबेगछोडि बृंदावनबासकियो, याभांति व्यासजूकैं उपदेसलग्यो॥सो वहयहपद ॥ यहजुएकमनबहौतठौरकरिकाहिकौंनैंसचुपायो ॥ जहांतहांविपतिजारजुवतीलौंप्रगटपिंगलागायो ॥ द्वैतुरंगपरिजोरचढतहठिपरतकौंनपैंधायो॥ कहिधौंकौंनअंकपरराख्योजोगानिकासुतजायो ॥ जैश्रीहितहरिबंसप्रपंचबंचिसबकालव्यालकोषायो ॥ यह जियजानिस्यामस्यामापदकमलसंगीसिरनायो ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीगुसांई हरिबंसजूके दरसन परसन संभाषन उपदेश बिष्णुपद तुक ॥ यहजुएकमनबहुतठौरकरिकहिकौंनैंसचुपायो ॥ इत्यादि सुनि व्यासजू श्रीवृंदाबन आय निकसेहे, सोचित्तकौं संसारतैं निबर्तकरि बैठि रहे, बास करिबेकैं अर्थ वाही दिन श्रीगुरुगोबिंदकृपातैं कबिता शक्ति व्हैं आई, प्रथमही एक बिष्णु पद बनायो ॥ सो वह यह पद ॥ कहाकहानहिंसह्योसरीर ॥ स्यामसरनबिनकामसहायनजनममरनकीपीर ॥ करुनांवंत साधुसंगतबिनुमनहिंदौंहिंकोधीर ॥ भक्तिभागवताबिनकोमेटैंसुखदैं

दुखकीभीर ॥ बिनअपराधचहूंदिसबरषतपिसुनबचनअतितीर ॥ कृष्णाकृपाकवचऊबरैडरपचढीउरपीर ॥ नामांसेनधनारैदासदीन ताकरीकबीर ॥ तिनकीबातसुनतश्रवनानिसुखबरषतनैंननिनीर ॥ चेतहुअबैंबेगकलिबाढीकामनदीगंभीर ॥ व्यासबचनवृंदाबनबासि सेवहुकुंजिकुटीर ॥ पुनः अन्यपदप्रसंग॥ श्रीव्यासजू बृंदाबन आ य बासकियो तिनकौं लेजायबेके वासतैं बुंदेलाराजा श्रीवृंदाब न आयो, बोहोत हठ कीनो, राजाकह्यो तुम न चालोगेतोमैंहूं य हांतैं न जाऊंगो, तब व्यासजूकूं येबातैं सुनि सुनि बोहोत दुख भयो, बृंदाबन छोड्यो न भायो, ता समय एक नयो पद बना य गावत रोवत फिरनलगे, जावृच्छसौं जायमिलैं तावृच्छकूं छो डैंनहीं, वृंदावनमैं तो वृच्छ बहोत इनके चित्तमैं अनुराग बहो त, अरये अकेले कहांलग मिलैं, है तीन दिन बिना प्रसाद जल ऐसैं बितीत कीने, सो जापदकौं गाय गाय रोय रोय वृच्छनसौं मिले, सोवह यह पद॥ बृंदावनकेरूंषहमारे मातपितासुतबंधु ॥ गु रुगोविंदसाधुगतिमतिसुषफलफूलनिकोगंधु॥ इनहिंपीठिदैंदीठअन तकरैंसोअंधनमैंअंधु ॥ व्यासइनहिंछोड़ैंरुछुडावैंताकोपरियोकंधु॥ ॥ ३ ॥ पुनः अन्यपदप्रसंग ॥ एकसमैं श्रीवृंदाबन रासहोतहो त हांसबगुसाईं महंतु बैष्णव गृहस्थ दरसनकरत, तहांनृत्यकरतश्रीठ कुरानीजुको नूपुरटूटिगयो, सो व्यासजूहू उहांबैठेहे, इन अप नी जनेऊ तोरि पाइके अंगूठामैं पकरि बटदैं नूपुर पोय चरनकैं बां धिदियो, यहदेषि कितेकतो रीझिगये,बहोत लोगनि निंदाकरी, तबव्यासजूनैं यहकही, इतनें दिन यहडोरा टोयो हो, सो

आजहींकामआयो, फिरि यापर एक पदबनायो ॥ सोवहयहप
द ॥ रसिक अनन्यहमारी जाति ॥ कुलदेवीराधावरसांनैं पेरोत्र
जवासिनसौंपांति ॥ गोत गोपालजनेऊमालासिषासिषंडीहरिमंदि
रभाल ॥ हरिगुनगानवेदधुनिसुनियतमुंजपषावजकुसकरताल ॥
रापाजमुनापटकर्मप्रसादप्रानधनरास ॥ सेवाविधिनिषेदजडसं
गतिव्रत्तसदावृंदावनवास ॥ संमृतभागवतसंध्यातर्पनअरुगायत्री
ताप ॥ बंसीरिषजजमानकलपतरु व्यासनदेतअसीससराप ॥
। ४ ॥ पुनः अन्यपपप्रसंग ॥ व्यासजूवैष्णवनिकों सीतप्रसा
द प्रसिद्धलैनलगे, तबकितेक याबातकी चरचाकरनलगेजु,
तुम कुटंब राषतहो, तुमारे कौंन व्याहनकौं आवैंगो, अरुतुम्हारेपुत्र
कौनकेव्याहोगे, कुटंबीनकौं ये जोगनाहीं, तबयाकहिबेपरि व्या
सजूनैं एकपद बनाय सबनिकौं सुनायदियो ॥ सोवहयहपद ॥ इ
नैंहैंसबकुंटबहमारो ॥ सेनधनानामांपीपाकबीररैदासचमारो ॥
रूपसनातनकोसेवकगंगजलभट्टसुधारो ॥ सूरदासपरमानंदमे
हमीरांभक्तिविचारो ॥ वांभनराजपुत्रकुलउत्तमकरतजातकौंगा
रो ॥ आदिअंतभक्तनकोसर्वसराधावल्लभप्यारो ॥ आसूकोहरि
दासरसिकहरिवंसनमोहिबिसारो ॥ इहिंबिधिचलतस्यामस्यामा
कोव्यासहिवोरोभावैंतारो ॥ ५ ॥ पुनः अन्यपदप्रसंग ॥ एकसमैं
व्यासजू कितेक वैष्णूनौंतेहे, तिनकौं अपनेघर प्रसाद लिवावतहे,
तिनकीपंकतिमैं आपहूवैठेहे, तहां व्यासजूकी स्त्री परोसतही,
सोदूधप्रसादी सबवैसनवोंकौं परोसतआई, व्यासजूवैठेहे, तहां
सवमलाई व्यासजूकौंपरोसदई, याबातसौं व्यासजू बहोतदुष पाय

लरनलगे, जो न कहिबेके वचनहेसो कहे, अरु वाठौरकौं छोडि औरठौरि बैष्णवनकैं जायरहे, केतेकादिन बीते, तब बईसनवनि ब्यासजूसौं हठिकरि घरिकूं ले गये ॥ उनकी स्त्री को अपराध छिमा करायो, तब स्त्रीकूं सिछ्या दैबेकूं एक नयो पद बनाय सुनायो, सो वह यह पद ॥ बिनतीसुनियोराधादासी॥ जासरीरमैंबसतनिरंतरनरकबातपितपासी ॥ ताहिभुलायहरिहिंदृढगहियोहसतसंगसुषरासी ॥ बढैंसुहागताहिमनदीनैंऔरुवराकबिसासी ॥ ताहिछांडिहितकरैंऔरुसौंगरैंपरैंजमफासी ॥ दीपकहाथपरैंकूवामैंजगतकरैंसबहांसी ॥ सर्वोपरिराधापतिसौंहितकरतअनन्यबिलासी ॥ तिनकीपदरजसरनव्यासजूकौंगतिवृंदाबनबासी६॥ ॥ पुनः ॥ अन्य पद प्रसंग ॥ ब्यासजू श्रीबृंदाबन रहैं, सो एक समैं कोइक दिन नितक, वैष्णूं रसिकनिको सतिसंग रंग सुष समाज सब मिटि गयो, भले भले वैष्णूं अंतर ध्यान भये, यातैं बाह्य सुष भगवत सनबंधी सब जात रह्यो, केवल भावनामैं अंतरंग चितरहैं, तब लौंही सुष, फिर बाहिर चित आयो, अरु महा दुष व्यापैं तब ब्यासजू, एक नयो पद बनाय बैष्णवनके विरहमैं गावत रोवत फिरन लागे, जहां तहां कुंजगलीनमैं, ऐसैं कितेक दिन बिरह दुषमैं विताये, पद प्रसिद्ध भयो, सो वह यह पद ॥ विहारहिंस्वामीबिनकोगावैं ॥ बिनहरिवंसहिराधावरकौं कोरसरीतिसुनावैं ॥ रूपसनातनबिनकोवृंदाविपुनमाधुरीपावैं ॥ कृष्णदासबिनगिरधरजूकौंकोअबलाडलडावैं ॥ मीरांबाईबिनकोभक्तनिपिताजानिउरलावैं ॥ स्वारथपरमारथजै

लविनुकोसकबंधकहावें ॥ परमानंददासबिनअबकोलीलागाय
[नावें ॥ सूरदासबिनपदरचनाकौंकौनकब्रहिकोहिआवें ॥
ौरसकलसाधनबिनकोअबकलिकालकटावैं ॥ व्यासदासइनबि
[कोअवतनकीतपतिबुझावैं ॥७॥ पुनः ॥ अन्य पद प्रसंग ॥ श्री-
यासजूके देहांतको समैं आयो, तब इनके बहन बेटादिक कुटं-
के निकट आय बैठे, व्यासजूकौं कहन लागे, जो तुम अब हमकूं
ौनकूं सौंपोहो अरु कहा कहोहो, हम कहा करैं, तब व्यासजू
ौर कछु बोलेनांहीं अरु एक नयो पद बनाय उनकूं सुनाय
[यो, सो वह यह पद ॥ बहिनीबेटाहरिकौंभजियो ॥ जासंगति-
पतिगतिनासैंसोसंगतितैंलजियो ॥ मातपिताभइयाभामिनिकुल
[पीसपासुपताजियो ॥ साधनिकेपंथचलियेऊबटचलैंसुवेगवरजि
ो ॥ गुरुहिंनआवैंगारिबातकीसोसांगरीसंजियो॥ व्यासविमुपदुज
[परिहरिकैंसुपचभक्तिकीओटउबरियो ॥ ८ ॥ अथ अन्य पद
[संग ॥ दोऊ नेत्र करि हीन एक ब्रजबासीको लरिका ब्रजमें
[रदास, सो होरीके भंडउवा बनावें हेतुकिया, ताके वासतें
ीगुसांईजूसौं जाइ लोगनिनैं कही, तापर श्रीगुसांईजू वा ल
[िकाकौं बुलाय वाके भंडउवा सुनें हसे, श्रीमुषतैं कह्योजु ल-
[िका तू भगवत जस बनाय, श्रीभागौतके अनुसार प्रथम जनम
[की लीला गाय, तब वानैं कही राजहूं कहा जांनौं, तब आग्या
[री भगवत इच्छाहैं, तू बनावैं गो, ऐसैं श्रीगुसांईजूकी आग्यातैं
[गवतलीला म्यासी, सरस्वती जिव्हाग्र भई, प्रथमही प्रथम
ीसूरदास जू, जनमलीलाकी वधाई बनाय अरु श्रीगुसांईजू

कौं सुनवाई, तब बहोत प्रसन्न भये, कंठी दुपटा महाप्रसाद दयो, अरु सबनसौं आग्या करीजु श्रीठाकुरजूकी आग्यातैं हम कहतहैं, बरसवैं दिन जनमाष्टमींकी जनम लीलाकी जनमाष्ट-मीकौं श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगैं प्रथम एही बधाई गावैंगे सो अब लौं एही बधाई गावत हैं, सो वह यह पद ॥ राग आसावरी॥ ब्रजभयोमहरकैंपूतजबयहबातसुनी ॥ सुनिआनंदेसबलोकगोकुल गानिकगुनी॥ग्रहलगननछतबलसोधिकीनीवेदधुनी ॥ अतिपूरबपू रेपुन्यरुपीकुलअचलथुनी ॥ सुनिधाईसबब्रजनारिसहजासिंगार कियैं ॥ तनपहरैंनवतनचीरकाजरनैंनादियैं ॥ कसिकंचुकीतिलक लिलाटसोभितहारहियैं ॥ करकंकनकंचनथारमंगलसाजालियैं ॥ अपअपनैंघरतैंनिकसीभांतिभली ॥ मनौंलालमुनिनकीपांतिपिं जरनिचूरिचली ॥ गावैंमंगलगीतमिलिदसपांचअली ॥ मनौंभो रभयैंरबिदेपिफूलीकमलकली ॥ मनिश्रवनानितरलतरवनीबैंनी सिथलगुही ॥ सिरबरषतसुमनसुदेसमानौंमेघफुही ॥ मुषमांडैं रोरीरंगसैंदुरमांगछुही ॥ उरअंचरउडतनजानैंसारीसुरंगसुही ॥ पियपहिंचलैंपहुंचीजायअतिआनंदभरी ॥ लईभीतरिभवनबु लाइसबसिसुपाइपरी ॥ इकबदनउघारिनिहारिदेतअसीसष री ॥ चिरजीवोजसोदानंदपूरनकामकरी ॥ धनिदिनध नियहरातिधनियहपहरघरी ॥ धनिधनिमहरिकीकूषिभागसु हागभरी ॥ जिंहिंजायोऐसोपूतसबसुषफरानिफरी ॥ थिरथा प्योसबपरवारमनकीसूलहरी ॥ सुनिग्वालनिगाइबहोरिबालकबो लिलियैं ॥ गुहिगुंजाबासिबनधानआंगनचित्रकियैं ॥ सिरदाधिमा

पनकेमाटगावतगीतनये॥ मिलिझांझमृदंगवजातसवनंदभवनगये॥ इकनाचतकरतकनूलछिरकतहरददही ॥ मानौंवरषतभादौंमासन दीघृतदूधवही ॥ जहांजहांचलिजांहिकौतकतहींतहीं ॥ अतिआ नंदमगनगुवालकाहूवदतनहीं ॥ इकधाइनंदपैंजाइपुनपुनपाइप रैं ॥ इकआपआपहीमांहिहसिहसिअंकभरैं ॥ इकअंबरसवैंउतार देतनसंककरैं ॥ इकदधिरोचनअरुदूवसबनिकेसीसधरैं ॥ तवनंद न्हाइभयेठाढेअरुकुसहाथधरैं॥ नंदीमुखपितरपुजाइअंतरसोकहरैं॥ घसिचंदनचारुमगाइबिप्रनितिलककरैं ॥ वरगुरुजनद्विजपहिराइ सवनिकेपायपरैं ॥ गइयागनीनजांहितरुनसुबछवढी ॥ चरैंजमुन कैंकाछदूनैंदूधचढी ॥ पुररूपैंतांवैंपीठसोवनसींगमढी ॥ दीनीद्वि जनिअनेकहरपिअसीसपढी ॥ वंदीजनमागधसुतआगनभवनभरे॥ सवबोलैंलैंलैंनामहितकोऊनांविसरे ॥ अतिदानमानपरधांनपूरन कामकरे ॥ जोजिंहिंजाच्योसोइदीनौंरसनंदरायढरे ॥ अपनेमित्र सवंधहसिहसिवोलिलियैं ॥ मथिमृगमदमलयकफूरमाथैंतिलककि यैं ॥ मनिमालापहिरायवस्त्रविचित्रदियैं ॥ मानौंवरपतमासअसा ढदादुरमोरजियैं ॥ तवरोहिनीअंबरमंगायसारीसुरंगधनी ॥ दीनी वधूनिवुलाइजैंसीजाहिवनी ॥ सवनिकसीदेतअसीसरुचिअपनी अपनी॥ अतिआनंदसौंवहुरीनिजगृहगोपधनी॥ घरघरभेरमृदंगप टहनिसांनवजे ॥ वांधीबंदनवारधुजाकलकलससजे ॥ तादिन तेएलोकसुखसंपतिनतजे ॥ सुनिसूरसबनिकीयहगतिजिनह रिचरनभजे ॥ १ ॥ पुनः अन्य पद प्रसंग ॥ एकसमैंश्रीसूरदा सजू, वाहिर एकांत स्थानवैठेहे, तहांहरि कृपा शद्वाहट सुन्यौं

तब नेत्रनिकौं चितमैं दुख करिकैं पद बनायो॥सो वह यह पद॥कहावतऔसेत्यागीदान॥च्यारपदारथदयेसुदामांगुरकेसुतदयेआन॥बभीषनकौंलंकदीनीप्रेमप्रीतपहिचान॥ रावनकेदसमस्तकछेदेहढगहिसारंगपान॥प्रल्हादकौंनिजकृपाकीन्हीसुरपतिकियेनिदान॥सूरदासपरबहुतनिठुरतानैंननहूकीहान॥२॥सो वह यह पद॥बनाय गायो, तबनेत्रव्हैंआये, अरु हरिदरसन भयो, तासमैं आग्याभई, तूकछुमांगि तबसूरदास यहमांगीजु मेरेनेत्र वैसेही मुदिजाय, यह रूप नैंननिमैंलैकैं, अबऔरकहादेखौं, तबफिर वैसेही नेत्रहीन व्हैं गये, सो याभांति दरसनकरिकैं वाहीसमैं बनायो यहपद, सो वह यह पद॥सनमुषआवतबोलतबैंन॥नांजांनूंतिंहिंसमैंजुमेरैंसबतनश्रवनकिनैंन॥ रौंमरौंममैंसुरतिसद्दकीनषसिषलोचनऔंन॥इतेमांझबांनीचंचलतासुनीनसमझीसैंन॥ तबजाकिथकिचकिठईमौंनमुषअबनपरैंचितचैंन॥सुनहुसूरयहसत्यकिसंभ्रमकिधौंसुपनौंदिनरैंन॥ २॥ पुनः अन्य पद प्रसंग॥ बैष्णूं सूरदासजू तिनके बहोत पद हैं, अरु प्रसिद्ध हैं तिन सूरदासजूकी, स्तुति पातिसाह अकबर सुनि अरु सूरदासजू सौं मिलि, अरुउनकी परिछालैंनकौं यह कहीजु, तुम्हारी काबिताकी बहोत बडाई सुनीहैं, तातैं कछुहमारोहू बर्नन करो तापर सूरदासजू, या बातके उतरकौं, एकपदही पढि सुनायो, सो सुनि पातसाह सहित सब सभा रीझिगई, सो वह यह पद॥ मनमैंरहीनाहिनठौर॥ नंदनंदनअच्युतकैसैंआंनियेउरऔर॥ द्यौसजागतचलतचितवतिसपनसोवतराति॥ हृदैतैंवहमदनमूरतिछिननइतउतजाति॥कहतकथाअनेकऊधौलोकललोभदिषाइ॥

कहाकरहिहितप्रेमपूरनघटनासिंधुसमाइ ॥ स्यामगातसरोजआनन ललितमधुरसहास ॥ सूरऐसेरूपकौंयहमरतलोचनप्यास ॥ ३ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं अकबर पातसाह तांनसैंनसौं बूझीजु, तैं कौनसौं गाइवोसीष्यो कोऊ तोहूतें अधिक गावैं हैं, तब यानैं कहीजु मैं कौंनगनतीमैंहूं, श्रीबृंदावन मैं, हरिदास जी नांमैं वैष्णव हैं, तिनके गायबेको हूं सिष्यहूं यह सुनि पातसाह तांनसैंनके संग जलधरीलैं श्रीबृंदावन स्वामीजूपैं आयो, पहि लैं तांनसैंन गायो बिनती करी महाराज कछु बोलिये तब श्री हरिदासजू, आलाप चारीकरी मलार रागकी, चैत्र बैसापको महीनौं हुतो, तब ताही वेर घटा घुमडि आई, मोर बोलनि लगे तब नयो बनाई बिष्णु पद गायो, तब ताही वेर बरषा होंन लगी सो वह यह पद ॥ ऐसीरितुसदासरबदाजोरहैंबोलतिमोरनि ॥ आछेबादरआछेधनुषचहूंदिसआछीनीकीमेघनिकीघोरनि ॥ आछीभूमिहरीहरीतापैंबूंदनिकीरंगनिकामकरोरनि ॥ हरिदासकेस्वामीस्यामाकुंजबिहारीकैंगावतरागमलारजम्पोकिसोरकिसोरनि १॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं सूरदासजू कृष्णदासजूसौं मिले, अरु पद चरचा करत भये, तासमैं गोधूलि कवारियां जांनि सूरदासजू कृष्णदासजूसौं कह्यो, यासमैं को एक पद अब हमहू बनावत हैं अरु तुम हू अब बनावो, सो सूरदासजूनें तो दोय च्यार बनायलये, कृष्णदासजू बनाइवेकौं लगे, सो तत-काल बन्यौं नाहीं, यातैं संकोच भयो, तब ठाकुर श्रीगोवर्द्धननाथ आप पद बनाय पत्रमैं लिषि कृष्णदासजूकी गोदमैं डारि दियो,

तब कृष्णदासजू आसश्चर्य मानि पत्रलैं पढिउठे, सो सुनि सूर-
दासजू रीझे बडे महानुभाव हैं, जानि गये कह्यो, यह तो तुमारि
हिमायत बडी ठौरतैं भई, सो श्रीठाकुरजूनैं बनायो, सो वह यह
पद ॥ रागगोरी॥आवतबनैंकांन्हगोपबालकनिसंगनईचुकीषुररैंनछु
रतअलिकावली ॥ भौंहमनमथचापबंकलोचनबांनसीससोभतम
त्तमोरचंद्रावली ॥ उदितउडराजसुंदरसिरोमनबदनानिरपिफूलीन
वलजुवतिकुमदावली ॥ अरुनसकुचितअधरबिंबफलउपहसतक
छुकप्रगटितहोतकुंददसनावली ॥ श्रवनकुंडलभालतिलकबेसरिना
ककंठकउस्तभमनीसुभगत्रिवलावली ॥ रतनहाटकषचितउरसिप
दकनिपांतिबीचराजतसुभ्रझलकमुक्तावली ॥ बलयकंकनबाजू
बंधआजांनुभुजमुद्रिकाकरतलबिराजतनषावली ॥ कुणितकरमु
रलिकामोहतसकलबिश्वगोपिकाजनमनसुग्रथितप्रेमावली ॥ कटि
छुद्रघंटिकाजटितहीरामईनाभअंबुजबलितभृंगरोमावली ॥ धाइक
बहुकचलतभक्तिहितजानिपियगंडमंडलरचितश्रमजलकनावली॥
पीतकोसेयपरधानसुंदरअंगचरननूपरबजितगीतसब्दावली ॥
हृदयकृष्णदासबलिगिरधरनलालकीचरननषचंद्रिकाहरततिमराव
ली ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं अधिकारी
श्रीकृष्णदासजू श्रीठाकुर गोवर्द्धननाथजूकें कछु बसन भूपना
दिक सामग्री लैबेकौं श्रीगोवर्द्धनतैं दिल्ली आये, तहां रात्रिके
समैं काहूकी अटारी पर एक रामजनी गायवेमैं महा प्रवीन
ही सो गावत नाचत हुती, ताको गान सुनि मारगमैं रीझि थ
कित व्हैरहे, जान्यौंजु याको राग श्रीगोवर्द्धननाथ रिझवारके

सुनायबे जोग्य हैं, फिर वहैं उहां सौं अपनें घरकौं चली, तब ए वाकौं भगवत इछातैं वहोत द्रव्य दैकैं लैं आये, वासौं कह्योजु ह मारैं सरदारहैं सो बडे रिझवारहैं उदार सुंदर अपार चायकहैं, तुह्मारैं सब भांतको परम लाभ होयगो, ऐसैं मारगमैं उपदेस देत आये, वाहूकैं परान्चीन सुध कारिकैं श्रवनानुराग बढत गयो, ए श्रीगोवर्द्धन पहुंचे अरु वाकौं मांदिरमैंलैंआये, तहां लौं वानैं भेद भगवत सेवा सरूपको न जान्यौं हो, कीरतन आरंभ कियो कृष्णदासजू एक अपनौं बनायो एक पद कंठ करायो हो, सो गावत भई, इतनैंहीमैं टेरा षैंच्यो, तब महा सुंदर माधुरी देषि, सजल नैननि इक टक रीझि छकि रहि गई ॥ दोहा ॥ सषियांकषियां हाथदैं, तनराष्योठहराय ॥ मनहरिमदिराछबिछक्यो, दईनारिल रिकाय ॥ १ ॥ ऐसैंकृष्णदासजूकीभेटठाकुरकैंअंगीकारभई ॥ वाकीमति आकर्षन करिलई, फिरि याभांति अश्रुधाराचलत महा प्रेमावेस सहितअभिनय बनावत गावत जबभोगकौतुकआई, तब वाकोसरीर छुटिगयो, सबनि विस्मयव्है धनि धनि कर्यो, बडेबडे मर्यादाछाडि वाकीदेहक्रिया करन संगगये, सोजापदगावतमैंश्रीकृष्णदासजूकीकृपासतिसंगतैं रामजनीभी सरीरछाडि भगवतप्राप्ति भई ॥ सो वह यह पद ॥ मोमनगिरधरछबिपरअटक्यो ॥ ललितत्रिभंगनिपरचलिगयो तहांहींठटक्यो ॥ सजलश्यामघनबरनलीनव्है फिरचितअनततनभटक्यो ॥ कृष्णदासकियेप्राननौछावरयह तनजगसिरपटक्यो ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ काहू समैं श्रीगोस्वामि विट्ठलनाथजू, भगवत इच्छा आधीन व्हैकैं श्रीगोवर्द्ध-

नतैं फेर बिदेसकौं गवन कीनौं, कलिके जीवनिकौं ब्रह्म संबंध करिबेकौं, तहां अपनौं सेवक कुंभनदास हुतो, ताहूकौं संगलीनो सो गुर आग्यातें नांही न करिसक्यो, जहां पहिलेई दिवस जाइ उतरे, तहां सब बृछनितैं ऊंचां एक बृच्छ देषि ताबृच्छकी टिगुसी-पर कुंभनदास चढे, श्रीमंदिरको दरसन करिबेकौं, एक पहरहीकी अंतरायमैं, जहां एक पद नयो बनायकैं गायो, सो वा पदको भोग आयो, तब टिगुसीतैं भूमिपर गिरचो, श्रीठाकुरकी कृपातैं जीवसौं बच्यो, यह देषि, महाआसक्तवानजानि श्रीगुसांईजू कुंभनदासकौं श्रीजी पासिही छोडिगये, सो वह यह पद ॥ कितेकादिनव्हैंगयेबिनदेषैं ॥ तरुनाकिसोररसिकनंदनंदनकछुकउठतमुखरेषैं॥ वहचितवनिवहचालमनोहरवहबांनिकनटभेषैं ॥ वहसोभावहकांतिबदनछबिकोटिकचंदाविसेषैं ॥ मदनगोपालसंगखेलनकीआवतहियैंउमेषैं ॥ कुंभनदासलाल गिरधरबिनजीवनजनजनमअलेखैं ॥ १ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ श्रीगोवर्द्धनपर श्रीगोवर्द्धननाथजूकों मंदिर,तामंदिरके सामुहैंगांव जमुनावतो, तहां गौरवाकुंभनदासनांव, श्रीगुसांईजूको सेवगर हैं, सोदिनकौंतो जथाजोग्य भजन व्यवहार जथाजोग्य समैंहोयसो सबकरैं,अरु राति वहोतजाय तबसोइवेकौं अपनी ऊंची मैरी तहांजाय, सो व्हांजातही प्रेमावेस व्हैंजाय,यहदसाहोते कितेक दिनभये, एकसमैं पूरनप्रेम अवस्था न भई, कछुथोरीभई तबतहांदूरतैं, श्रीगोवर्द्धननाथके मंदिरके दीपगकौं देखिदेखि, अश्रुपुलकि प्रेमसहित एकपद बनाय बनायगायो, सोवहपदसुन्योंसबनियहभेद

जान्यौं ॥ जोयेमंदिरकेदीपगकौंदेखिनित्यआवेसास्थितहोतहैं ॥ सोवहयहपद॥ वेदेखोवरतझरोखनिदीपकहरिपौढेऊंचीचित्रसारी॥ सुंदरवदननिहारनकारनरापेहैंवहोतजतनकरिप्यारी ॥ कंठलगाय भुजदैंसिरहानैंअधरअमृतपीवतापियप्यारी ॥ तनमनमिलीप्रानप्यारेसौंनउतमरसबाढ्योअतिभारी ॥ कुंभनदासप्रभुसौभगसींवांजोरी भलीवनीइकसारी ॥ नवनागरीमनोहरराधेनवललालगोवर्द्धनधारी ॥ २ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ श्रीमद्गोस्वामिबिट्ठलनाथजीभगवतइच्छाआधीनव्हैकैं बिदेसपधारे, कलिकेजीवनिकौं ब्रह्मसंबंध करिवेकौं, तहां अपनौं सेवकचतुर्भुजदास तिनहूकौं संगलीनौं, तहांविदेसमैं, श्रीगोवर्द्धननाथके बिरहतैं, एकपदचतुर्भुजदासजीनैं बनायो, तापदपर रीझिकैं ठाकुर श्रीगोवर्द्धननाथ दरसन दीनौं अरु यह अग्यादईजुयापदकौं कोऊ जो बरसादिनतक नित्यप्रति गावैंगो, जो मेरो दरसन पावैगो, सो आगैं गायो तिहिं श्रीगोवर्द्धन विषैं॥ श्रीगोवर्द्धननाथ बिराजते॥ तहां तिनको दरसन पायो, अब गावति हैं सो मेवारमैं सिहारगांव तहां वेही ठाकुर श्रीगोवर्द्धननाथ बिराजत हैं तहां जाय दरसन पावत हैं, सो वह यह पद ॥ गोवर्द्धनवासीसांवरेतुमबिनरह्योहिन जायहो ॥ बंकचितैंमुसकायकैंसुंदरवदनादिखायहो ॥ लोचनतरफैंमीनज्यौंजुगभारिघरीविहायहो ॥ सप्तकसुरबंधानसौंमोहनवैंनवजाय ॥ सुरतिसुहाईबांधिकैंमधुरैमधुरैंगाय ॥ रसिकरसीलीबोलनीगिरचढिगायबुलाय ॥ गायबुलाईधूमरीऊंचैटेरिसुनाय ॥ दृष्टिपरेजाद्यौसततैंतवतैंरुचैनआंन ॥ रजनीनींदनआवहींबिसरेभोजन

पान ॥ दरसनकौंनैंनातपैंबचनसुननकौंकान ॥ मिलबेकौंहियरातपैंजियकेजीवनप्रान ॥ मनअभिलाषायहरहैंलागैंननैंनानिमेष ॥ इकटकदेषौंभांवतोनागरनटवरभेष ॥ पूरनससिमुषदेषिकैंचितचिहुटचोवाहिंओर ॥ रूपसुधारसपानकौंजैसैंकुमदचकोर ॥ लोकलाजबिधवेदकेमैंछाडेसबैंबिवेष॥कमलकलीरविज्यौंबढैंछिनुछिनुप्रीतबिसेष॥ मनमथकोटिकवारनैंदेषिडगमगीचाल ॥ जुवतीजनमनफंदनाअंबुजनैंनबिसाल ॥ कुंजभवनक्रिडाकरोसुषनिधिमदनगोपाल ॥ हमबृंदाबनमालतीतुमभोगीभंवरभुवाल॥ यहरटलागीलाडिलेजैसैंचातकमोर ॥ प्रेमनीरबरषायहैंनवघननंदकिसोर ॥ जुगजुगअबिचलराषियैंइहिंसुषसैलनिवास ॥ श्रीगोवर्द्धनधररूपपरबलिजायचतुर्भुजदास ॥ २॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ और भट श्रीगदाधरजी महापंडित विष्णुपद बोहोत सुंदर बनावैं सो सुनि सुनि बृंदाबनमें वैष्णव बहोतरीझे, एक समैं एक बिष्णु पद बनायो, तामैं ऐसी तुक बनाई ( हूंतोस्यामरंगरंगी, ) सो यह पद सब वैष्णवननैं पत्री लिपि अरु लिष्योजु, दूर बैठेहीं तुमारो चित-रंग्यो गयो सो यहऊआसचर्य, अरु हरि कृपाकी परा अवधिताहैं, परंतु स्याम रंगकीरैंनीतो श्रीवृंदावन हैं, यहां आयें औरभी बहोत गहरौ रंगचढैंगो, यह पत्री लै एक वैष्णाव गयो, सो भट गदाधरजी नगरके बाहिर एक कूपपर बैठे दांतन करत हुते, भटजी बैष्णावकौं देषि पूछ्यो तुम कहां रह्यो हो, तब वैष्णव कह्यो श्रीवृंदावन रहौंहौं, भट गदाधरजीपैं आयोहूं, सब वैष्णूंनै पठयो हैं, यह सुनि भाग्य मानि आनंद मैं मूर्छित भये,

तव वैष्णूंनै और लोगनिसौं पूछी, एकौंनहैं, तव सवनैं कही भट गदाधरजी एई हैं, तव भटजीकी बाह्यदसा भई, तव बहैं पत्री उहांहीं पढि उहांहींतैं, श्रीबृंदावनकौं उठि चले, घरां न गये, श्रीबृंदावन आये, बहोत रंगसौं श्रीबृंदावन वास कीनौं, इनकौं इनहींके पदकी वार्ता चातुर्य्यतासौं लिषि बृंदावन बुलाये, सो वह यह पद ॥ हूंतोस्यामरंगरंगी ॥ देषिबिकायगईवहमूरतिसू रतिमांझपगी ॥ पौढिहुतीअपनैंस्वपनैंसपषीसोयगईरंगभोय ॥ जागतैंआगैंदृष्टिपरैंवहिनैंकनन्यारोहोय ॥ एकजुकन्हैयामेरेनैंनानिमैं निसद्योसरह्योकरिभौंन ॥ गायचरावनजातसुन्यौंसषीसोधौंकन्है याकौंन ॥ कासोंकहूंकोपातियायमेरैंकौंनकरैंबकबाद ॥ कैसैंकैंक ह्योजातगदाधरगूंगेपैंगुरस्वाद ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक सूरधज ब्राह्मण गृहस्थ उनकैं नेत्र तो आछेहे, परंतु नाम सूरदासजी, पातसाही एक परगनांके दिवांनहे, सो हरिगुर बैष्णवन कोंटहल तन मन धन प्रेमकरिकैं करते, अपने घरके रुपीयातो वैष्णवनकौं षुवावतेही, परंतु कछु पातसाही षजानेकेभी रुपीया बैष्णवनकौं षुवाइ देते, एक समैं ऐसो भयोजुपरगनांके सव रुपीया वैष्णवनकौं षुवाइदये, कछु बाकीन राषी, थेलीनमैं पथर भरिभरि वीजककी ठौर एक विष्णुपद लिषि सब थेलीनमैं, वह कागज डारि दियो, सो उनथेलीके संदूक तो पातिसाहकी वोर चलवायो, अरु आप गृहस्थकौं त्यागकरि आधीराति भागि आइ बृंदावन आइ बैठे, जो बीजककी ठौर पद लिषि थेलीनमैं धरच्योहो सो वह यह पद ॥ तेरालाषसंडेलैंउपजे ॥ सबसाधनमि

लिगटके ॥ सूरदासमदनमोहनमिलि । आधीरातिसटके ॥ १ ॥
अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं ठाकुर श्रीमदनमोहनजीकैं उत्सवपर गुसांई महंत बैसनव एकठे भये, एक काहू बैष्णूंके मनमैं आईजुसूरदास मदन मोहन यह पद बनायो हैं, ताकी भोगकी तुकमैं यह धरयो हैं, ॥ सूरदासमदनमोहनजनमजनम गांऊं, ॥ संतनकीपांनहीकोरच्छिकाकहांऊं, ताकी आज परिच्छा लीजैं सो सूरदास वाही समैं दरसनकौं आवति हुते, तब वा बैष्णूंनैं द्वारपैं ठाढैं सूरदास सौं यह कहीजु, मेरी पांनही धरीहैं, तुम देषत रहियो, मैं दरसनकौं जातहौं, सो यह कहि बैष्णूं तो मंदिरमैं आयो, अरु सूरदास उनकी पांनही हाथ लियें ठाढे रहे, और बैष्णनवकी पांनहींही, सोऊ बनाय बनाय धरी, ठाढेरपवा रीकरी, भीतरि सौं गुसांई महंत बुलावैं, ये न जाय; कहैं महाराज मेरो तो मनोरथ आजही पूरन भयो हैं, बैष्णावनकी पांनहींकी सेवा करतहूं, तब सब प्रसन्न भये, जो बैष्णाव परिच्छा लेतहुतो सो रीझिपाइनपरयो इततैं एऊगिरे, सो जा पदपर ऐसी भांति परिच्छा लई, सो वह यह पद ॥ मेरैंगतितुमहीअनेकतोपपांऊं चरनकमलनषमनिपरबिपैंसुषवहांऊं ॥ घरघरजोडोलौंहरितोतुम्हैं लजांऊं ॥ तुह्मारोकहायकैंअबकहोकौंनकोकहांऊं ॥ तुमसेप्रभूछा डिकहादीनानिकौंधांऊं ॥ सीसतुह्मैंनायकैंअबकौंनकौंनवांऊं ॥ कं चनउरहारछाडिकाचक्यौंबनाऊं ॥ सोभासुभहांनिकरौंजगतसब हंसांऊं ॥ हाथीतैंउतारिकहागदहाचाढिधाऊं ॥ कुंमकुंमकोलेपछा डिकाजरमुंहलांऊं ॥ कामधेनुघरमैंतजिअजाक्यौंदुहांऊं ॥ कनक महलछाडिक्यौंअबतृनमंडइछांऊं ॥ पाइनजोपेलोप्रभूतोनअनत

जांऊं ॥ सूरदासमदनमोहनगुनजनमजनमगांऊं ॥ भक्तनकीपांन हीकौरच्छिकाकहांऊं ॥ २ ॥ पुनअन्यपदप्रसंग ॥ एई सूरधजसूर दास गृहस्थको त्यागकारि श्रीवृंदावन आयबैठे ठाकुर श्रीमदनमो हनजीके सेवक आसक्त वांनहे, केवल सिंगार रसहिके पदबनाव ते, जहां अपनौं भोग पदमैं धरते, तहां सूरदासमदनमोहन या भांति धरते, तातैं सूरदासमदनमोहन यहइनके नामकी छाप परी, एपद बनावते सो वेगप्रसिद्ध वहोत होतो, एकसमैं एक पद सरद की पूरनवासीके दिवसबनायो, सोपद जादिन बन्यो वाहीदिन च्यारसैं कोसपर भगवत कृपातैं काहूठौर सरदकी पूरनवासीकौ ही बैष्णवनमैं प्रगटभयो, बोहोत बैष्णवननैं कंठकियो, जब बै- ष्णवश्रीवृंदाबन आये, अरु वह पद उन बैष्णवनगायो, तब औरलोगननैं पूछी, जोतुम यहपद कहांसुनिकंठकियो, तब उन बैष्णवन कहीकि यहांतैं च्यारसैकोस ( अमकेदेसमैं ) सरद की पूरन वासी कौंसुनि कंठकियोहौ॥ तबयहपरच्यो जान्यौं ॥सो वह यह पद ॥ उरझीकुंडललटबेसरिसौंपीतपटबनमालाबीचआ यउरझेहैंदोऊजन ॥ नैननिसौंनैनबैनबैनानिउरझिरहेचटकीलीछ बिदेपेलपटातस्यामधन ॥ होडाहोडीनृत्यकरैंरीझरीझअंकभरैंतता थेईथेईथेईकहतमगनमन ॥ सूरदासमदनमोहनरासमंडलमैंप्यारी कोअंचरलैलैपौंछतिहैंश्रमकन ॥ ३ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ एक सूरधज ब्राह्मन तिनकेनेत्रतोहुते, परंतु ठाकुरके बिष्णुपद बना वते, तामैंभोगसूरदास मदनमोहन औसोधरते, यातैं इनकी सू रदासमदन मोहन छापभई, ठाकुर श्रीमदनमोहनजूके वडे आ-

सक्तवान बैष्णवभये, तिनको हृदै केवलसिंगार रसमईही व्हैग-
यो, ब्रजभूमिमैं जोलीलादेषैं सोइनकौं सिंगाररसमईही भासैं,
काहूसमय मथुरा श्रीकेसौरायजूकैं मंदर चोरीभई ठाकुरके आभ-
रनादिक द्रव्यगयो, ताकी जहां तहां बातैं हौंनलगी बहोत,
सो सुनिकैं सूरदासमदनमोहनजूकौं यहभासी, ठाकुरसुसरा
रिपधारेहैं, तहांके लोकरीत अनुसारि सुसरारिके अंतहपुरके लो
कनिनैं हासके लियैं भूषनादिक चुरायधरेहैं, तबयाही भावको
नयो एक बिष्णुपदबनायगायो, तासमैं बहुत प्रसिद्धभयो, सो वह
यह पद ॥ गहनौचुरायोमाईकाहूकेसोरायको ॥ माथेकोमुकटली
नौंकंगनांजरायको ॥ मुषकीमुरलीलीनीजोरालीनौंपायको ॥ गां
वबरसांनौंसबसुषदायको ॥ स्यामजूकीसुसरारिराधेजूकोमायको॥
चोरहूकेभागजागेसबसुषदायबो ॥ सूरदासमदनमोहनबहुरिघबरा
यबो ॥ ४ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ एक गृहस्थकायथ महावैष्णव,
षरगसैंननाम, सो बिष्णुपद बहोत बनायो करैं, अरुताकी रास
दरसनसौं बहोतअधिक रुचि, सोबहोत द्रव्य लगाय लगाय रास
उत्सव कियोकरैं, सो एकसमैं सरदकी पूरनवासीकौं रासमं-
लके चौतरापर रासमैं, एक पदबनावत हुते, सो जब भोगदै चु-
के, तब अपनैंई पदपैं रीझिप्रेम बिबसव्हैं देहछोडिदई, सो वह
यह पद ॥ द्वैगोपिनाबिचबिचनंदलाला ॥ स्याममेघकैदुहूंओरराजत
नवदामिनबाला ॥ करतनृत्यसंगीतभेदगतिगंजतगर्वमराला ॥ फ-
हरतअंचलचंचलकुंडलथहरतहैंउरमाला ॥ मध्यरलीमुरलीमोहन
धुनिगानवितानछयोतिहिंकाला ॥ चलियझमाकिझंकारवलयामि

लिनूपूरकिंकानिजाला ॥ देवबिमाननिकौतकमोहेलषिभयोमदन विहाला ॥ षर्गसैनप्रभुरैनसरदकीबाढचोरंगरसाला ॥ १ ॥ अथअ न्यपदप्रसंग ॥ श्री ब्रजमैं एक नरबांहननाम जमीदाररहैं, सौदौ डिकरि काफला मारचोकरैं, एकसमैं एक काफलापरदौरे, गृहस्थ एकलाषनिको द्रव्यलियैं जातहो, ताकोद्रव्यलियो सहित पकरि ल्याये, अपनैघर बंदीषानैंमैंदियो, सो वहगृहस्थ श्रीहरिबंसजी को शिष्यहुतो, अरुयह नरबाहनहू शिष्य हरिबंसजी कोही हुतो, सो इन दोऊनकौं षबारि नही, जो हम एक गुरके शिष्यहैं, सो वह गृहस्थ एक समैं भुरहरीकी बेर बंदीषा- नांमैं पद पाठ करन लग्यो, हरि बंसजीकी चौरासीके, वाके नित्य नेमहो, सो सुनि नरबाहन दोरि जाय पूछ्यो, तुम कौनके शिष्यहो, तब वानैं हरिबंसजीको नाम लियो, सो सुनिवाकों द्रव्य वाकोंदैं दंडोत करि सीष दई, यह बात श्रीहरिबंसजी सुनि आ- ग्या करीजु, या कलिकालमैं लाषनिको द्रव्यदैं डारिबो गुरके नाम पर, महा कठिनहैं, बहोत प्रसन्न भये, सो द्वै पद बनाये, तामैं अपनैं शिष्य नरबांहनको भोग दीनौं, सो अजहूं बेपद चोरासी केपदनिमैं उनको पाठ, उनके शिष्य सापा पाठ करतहैं, सो वह यह पद ॥ मंजुलकलकुंजदेसराधाहरिबिसदबेस राकानभकुमदब धूसरदजामिनी ॥ सांवलदुतिकनकअंगविहरतामिलिएकसंग नीरद मनिनीलमधिलसतिदामिनी ॥ अरुनपीतनवदुकूल अनुपमअनुरा गमूल सौरभजुतसीतअमितमंदगामिनी ॥ किसलयदलरचितसैन बोलतापियचारुबैनमांनसहितप्रतिपदप्रतिकूलकामिनी ॥ मोहनम

थतमार परसतकुचनीवीहार वेपथजुतनेतिनेतिवदतिभामिनी॥
बाहनप्रभुकेलिबहुबिधभरेभरतझेलि सौरभरसरूपनदीजगतपा
ति ॥ १ ॥ चलहिराधिकेसुजानतेरेहितसुषनिधान रासरच्यो
ामतटकलिंदनंदिनी ॥ नृतितजुवतीसमूहरागरंगअतिकतूहलबा
तिरसमौलिमुरलिकाअनंदिनी ॥ वंसीबटानिकटजहां परमरचन
मितहां सकलसुपदमलयबहैं वायुमंदिनी ॥ जातीइषदबिकास
ननअतिसैंसुबासराकानिससरदमासबिमलचांदिनी ॥ नरबाह
प्रभुबिहारिलोचनभरिघोषनारिनपसिषसौंदर्यकामदुपनिकंदिनी
२ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ जिन बुंदेलांनके राजगु-
रोहित व्यासजी हुते, सो बुंदेलाको नाम मधुकर साह राजा,
म भक्तिवांन भये कंठी तिलक धारी बैष्णव मात्र आवैं, तिन
की सेवा प्रीत कारि रीतपूर्बक भली भांति करैं, अरु सतसंग
को करैं ताको समझिकैं करैं, सो वा मधुकर साहके भाई बंधु
तनेंक इनकी बहोत निंदाकरैं, दुष मानैं कहैं कि देषो कितेक
णाव प्रतच्छ औगुन भरे आवैं, तऊ ए सेवाकरैं, एकंठी तिलक
देष लेवैं हैं,इनकौं और कछु षबर नहीं, तब उन सबन मिलिम
कारि, एक गधाके बहोतसी कंठी वांधि गहगहे तिलक छापे
रि आगले दोऊ पुरनिमैं सुमिरणा पहिराई। कारे डोरांनकी
दडी उढाई। जहां मधुकरसाह भीतर बैठे हे। तहां वा गधाकौं
ोडि आगैं उनपैं चलाय दियो, तब मधुकरसाह देखि उठि
ाम्हैं आये और दंडोत करी, परकरमा करी, उनकैं गनेसदे
व रानी हुती, सो झारीलैं आई, कह्यो इनको चरनामृत लेहु,

तब चरनामृत ले पियो, घर छिरक्यो, पवित्र करणके लियें, सो यह वार्ता व्यासजी सुनि वहोत राजी प्रसन्न भये, अरु एक पद वनायो, तामैं मधुकरसाहकोहू नांव दियो, सो वह यह पद ॥ भक्तिबिनकिनअपमानसह्यो ॥ कहाकहानअसाधनकीनौंहरिबलधर्मरह्यो ॥ अधमराजमदमातैंलैरथसौंजडभरथनह्यो ॥ पठझटकतद्रौपदीनमटकीहरिकोसरनचह्यो ॥ मत्तसभाकैरवनिविदुरसौंकहाकहानकह्यो ॥ सरनागतिआरतिगजपतिकौंआपुनचक्रगह्यो ॥ हाहरिनाथपुकारतआरतकौंनऔरनिबह्यो ॥ व्यासवचनसुनिमधुकरसाहैंभक्तिपनसदालह्यो ॥ २ ॥ अथ अन्यपद प्रसंग ॥ एक वैष्णव बिरक्त नाम नागरीदास, अति महानुभाव, पूरन कृपपात्र तदाकार, श्री स्वामिनीजीको उपासिक, सो बरसांनैं बासकरैं, एक कुटीमैं रहत हे, सो वाकुटीको दरसन प्रदछिना जात्री जायहैं सो अब लौंकरैंहैं, ऐसे नागरीदासजी भये तिनकौं श्रीस्वामिनीजी रहस्यसमैं दरसन दीनौं, वासमैं तो बिबस व्हैंगये, फिर वहोत बेर पाछैं वाह्य दसा भई, तब एक पद वनायो, जाभांति दरसन भयो हो, वाही भांतिको, सो वह पद गावत रोवत फिरन लगे, तब यह प्रसिद्ध भयो, सोवह यह पद श्रीराग ॥ गहवरगिरसाकरीगली ॥ रहीनसंभारदेहसुधिबिसरीमिलीऔंचकवृषभानलली ॥ दच्छिनकरगैंदुककुसमनकीबांमअंसभुजसुहृदअली ॥ अंचरडारैंआधैंसिरछबिमत्तदुरदगतिआवतचली॥ गुनप्रयोगसहचारिसंभरावतहृदैंरूपमूर्छासुचली ॥ नागरीदासमिटायललकरातिमिलतउरजउरगतिबदली ॥ ३ ॥

अथ अन्यपद प्रसंग ॥ वैष्णव एक भगवानदासजी महानुभाव मिंहीं उपासिक, सो एक समैं उनको देहांत हौंन लग्यो, ता समैं सावधान होय उठि बैठे, तब लैागनिनैं पूछो, महाराज तुम्हारो अव चित्त कौंन ठौर हैं, तब कह्योकि मोकौं, तंमूरा आंनिदेहु जहां मेरो चित्त हैं, सो बतांऊं, तब तमूरा लेकैं एक पद गायो, सो वापदके भोगकी तुक यह आईजु, ॥ सुमिरन मांझ समांनीरी ॥वाही समैं तमूरा तो हाथमैं रह्यो अरु इनकी देह छुटि गई ॥ सो वह यह पद ॥ मैंचलीरीतहांजहांमोहनमुरलीमधुरमधुरसुरबाजैंरी ॥ जमुनापुलिनसुभगबृंदाबनमदनगोपालबिराजैंरी ॥ जलनीलघनस्यामवरनतनबसनदामिनीछाजैंरी ॥ मोरमुकटकी शोभाबरनौंइंद्रधनुषद्युतिलाजैंरी॥ घूघरवारीअलकैंझलकैंचंदनातिलकलिलाटैंरी ॥ अमलकमलदलमंजुलनैंनाजोवतदैंममवाटैंरी॥ कुंडलकिरनकंठकउस्तभमानिआनंदमुष्यप्रकासीरी ॥ देषैंवनैंवह चरनधरनगतिकौतककुंजानिवासीरी ॥ जाकोमनमिलिरह्योकृष्णसौंताकीअकथकहानीरी ॥ कहैंभगवानहितरामरायप्रभुसुमिरनमांझसमानीरी ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ एक समैं छीतस्वामी राजा वीरवलकौं दरसन दैंन आगरैं आये, सो छीतस्वामीहू श्री गुसांईजूके सेवक हुते, अरु बीरवलहू श्रीगुसांईजूको सेवक वैष्णव जान्यौं हुतो, यानातैं कोई दिवस बीरबल ढिग रहे, फिर इनकी बिदाकीनी सो बिदा कियैं उपरांति एक दिवस । भगवत चर्चा करतमैं छीतस्वामी बिष्णु पद पढ्यो, ताकौं सुनि राजा वीरबल कह्यो, इतनांभी तो बढिकैं कहनां क्या लाजम. सो सुनि

छीतस्वामी दुष पाइ आइ रुपइया बीरबलनैं भेट किये हुते, सो मालजादीनके मंडलमैं, ठाढे होय उनकौं बांटिकैं चले आये व्रजकौं, कह्यो कि तिह्नकैं गुरु नेष्टा नहीं। उनके रुपइया, भगवत सनमंध न लगैं, ये मालजादीन लायकही हुते, सो या विष्णु पद पर इतनौं भयो॥ सो वह यह पद॥ जे वसुदेव किये पूरनतपतेईफलफलितश्रीवल्लभदेव ॥ जेगोपालहुतेगोकलमैंतेईअबआंनिवसेकरगेह ॥ तेवेगोपवधूहुतीव्रजमैंजेअववेदरिचाभईएह ॥ छीतस्वामिगिरधरनश्रीविठ्ठलवेईयेईयेईवेईकछुनसंदेह ॥ १ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ श्रीव्यासजीके छोटे वेटा किसोरीदासजी श्री वृंदावनमैं रहैं, पद बहोत आछे बनावैं, एक समैं एक पद रासको बनायो, सो वा पदको गांन बहोत बन बीच नित्त सिद्ध पर करमैं सुन्यौं, महानुभावहे, तिन किसोरीदासजी सहित दरसन तो काहूकौं न भयो, अरु वह पद गावतही सुनि सब बिवस भये, सो वह पद वैष्णव तथा रासधारी मात्र तिन सबमैं अबलौं बहोत प्रसिद्धहैं । सर्व रासधारी गावतहैं ॥ सो वह यह पद ॥ एदोउनृत्ततिरासमैंरसिकप्यारीदेषतिसवनिकोमनहरैं ॥नष सिषकुंवरिसिंगारीछविउपजतभारीतत्तथेई बोलतलालनबिहारी ॥ ॥ १ ॥ मृदंगबजावतललितारीसुधंगदसौन्यारी एकबजावततारी॥ मिलवतगतिन्यारी तिनमैंराधिकाप्यारीलेतउरपतिरपारीलालनरीझिकैंवारतकंठकीमुकतामालारी॥२॥ सुपदवृंदावनसघनफूलेपुहपारीत्रिविधिपवनसुषकारी ॥ जमुनापुलिननिसारीतैंसियसुभगराकारी ॥ प्राचीदिसभयोउडिराजारीकहतनवनैंसुच्छसरदकीउजिया

री॥३॥ किंकिनीनूपुरबाजारीधुनिसुनिदेहबिसारीदोऊरासमैंमगनर हतसदाव्यौहारी॥च्यारचरनरजकिसोरीदाससिरधारीवृषभानकीदु लारीतिनपरकरैंतनम नवलिहारी॥४॥ अथ अन्य पद प्रसंग॥ एक कोई गृहस्थ महापंडित सो शास्त्रकी चरचा बिबाद करिकरि बहोत पंडितन कौं हरायो करैं, ताकौं भगवत इच्छातैं अरु पराचीन सुधितैं, बैष्णवको सतसंग भयो, तासौं रसरूपा भक्ति उत्पन्नभई, सा-स्त्रकी बिबाद चरचा सब छाडिदई, जगत सौं बैराग उपज्यो, तब वह पंडित देशांतर सौं श्रीवृंदावन आयो, ताके चित्तमैं यहैंजु इहांके बैष्णावनसौं सब भांतिकी चरचा बिबाद करि झग-रौंगो, जो कोऊ या बृंदाबनके सांचे रंगमैं रंग रह्यो होयगो, सो मोसौं बिबाद चरचा न करैंगो, ताहीको शिष्यव्है बैठि रहूंगो, सोवानैं बहोतन सौं बिबाद चरचा कीनी,करत करत पहर पहर द्वै द्वै पहर बिताई, बिबादमैं कितेकनकौं बिरोधहू उपजायो, अपनैं मनतैं कोऊहारयो नहीं, ऐसैं कितेक दिन बीते,तब उन भगवान सषीनाम बैष्णव तिनपैं आय कह्यो, हमसौं चरचा करो, सो तासमैं भगवान सषी कीरतन करतहे, इनकौं उतरहू न दियो, केवल दंडौतही कीनी ऐसैं द्वै तीन बेरभई, निधान वा पंडितनैं, भगवान सषी सौं कही कि केवल कीरतनही करि जानतिहो कि कछु समझोबीहो हमकौं तो तुम असमझसे दीसो हो कछु समझो होतो बोलो, तब बैष्णव भगवान सषीजी एकनयो पद बनाय वाके समझाय बेकौं गायो सो सुनिकैं वाके प्रेमके अश्रु पुलकि व्है आये, दौरि पायनि परयो, अरु उनको बरजो।

शिष्य व्हैकें, गृहस्थ त्याग वृंदावन वास कीनौं, वह पद तब व्रजमें बहोत प्रसिद्ध भयो, अब लौंभी प्रसिद्ध हैं, सोवहयह पद ॥ ओरकोऊसमझ्झोसोसमझ्झोइतनोंहमकौंसमझिभली ॥ ठाकुर नंदकिसोरहमारैंठकुरायनिवृषभानलली ॥ सुबलआदिसबसखा स्यामसंगस्यामासंगललितादिअली ॥ व्रजसुखवाससैलवनविहरन कुंजनकुंजनरंगरली॥ तिनकोलाडचावसेवासुखभावबेलिबाढिसुफल फली ॥ कहैंभगवानहितरामरायप्रभुसबतैंउनकीकृपाबली ॥ ३ ॥

॥ अथअन्यपदप्रसंग, ठाकुर श्रीगोवर्द्धननाथजीको कीरतनियां नाम स्यामदास बहोत भावक बैष्णु तानें एक धमारि बनाई, जापर श्रीगोवर्द्धननाथ रीझि श्रीगुसांई बिट्ठलनाथजीसौं आग्याकीनी, जो होरिके दिनानिमैं यह धमारि नित्य हमकौंसु नायोकरैं, यह कीरतनियां हमारोहैं, यह तथा याकेबंसको कैसो हीहोहु, मेरेयांहीं कीरतन कियोकरैं, जाधमारिपर याभांति स्या मदासकौं अपनायवो प्रसिद्धभयो, सो वह यहधमारि ॥ होरीषेल तमदनगोपालफागसुहांवनौं ॥ व्रजजीवनिनंदलालअनंगलजांव नौं ॥ सुबलसुबाहुश्रीदामासषासंगराजहीं ॥ बौहआवजरुंजमुरज मुरलीडफबाजहीं ॥ करनिकनकपिचकारीफैंटअबीरकी ॥ भरि भांवरिसौंकावरिकेसरिनीरकी ॥ इहिंबिधिसाजसमाजचलेवृषभा नकैं ॥ मुनिमनसागइभूलिसुनतधुनिकानकैं ॥ उततैंझुंडनिचलि आईव्रजवासिनी ॥ तिनमैंकुंवरिकिसोरीनिकुंजविलासिनी ॥ संग रंगीलोसाजलियैंनवनागरी ॥ इकबरनवरनालियेराजतफूलनकीछ री ॥ आयजुरेदोऊटोलपौरिव्रजरायकी ॥ उतहिंचैतइतगारीदैंहि

बहुभायकी ॥ जेकबहूनबहूदरासिरबिनैंकहू ॥ तेगुरजनकीलाजकरतिनहिंनैंकहू ॥ षेलनिकौंहरिपैंहुलसीसबआंवहीं ॥ भरिकुमकुमकनककटोरनिओटदुरावही ॥ छिरकतभरतपरसपरमोहनभामिनी उडतगुलालअबीरकियोदिनजामिनी ॥ संगसषानहिंसूझैंकहौंधौंकहांगये ॥ सबसषियनमिलिस्यामअचानकगहिलये ॥ घिरआईसबबामठौरदसबीसतैं ॥ दियोहैंअरगजाढारिमनोहरसीसतैं ॥ लैंललितादइगांठिनीलपटपीतसौं ॥ घनदामिनराजतमोहनमीतसौं ॥ फगुवामांगतरंगरह्योनकह्योपरैं ॥ यहसुषनिरषतकौंनअबधीरजकौंधरैं ॥ षेलिफागनरनारिभरेअनुरागसौं ॥ व्रजबासिनकैंसंगस्यामबडभागसौं ॥ ४ ॥ अथ अन्यपदप्रसंग ॥ एक नराइनदास नाम नटवा, महावैष्णवप्रेमी, सो वह जहां भलोवैष्णव श्रोतासुनैं, जहां जाइ निर्लोभ कीरतनकरैं, सो एकसमैं काहू नबावनैं, हंडियासरायमैं, बडेहठनिसौं नचायो, वहिमाला तुलछीकी आगैंधरिवा आगैंनाच्यो, नबाबहू देषतरह्यो, बहोतरीझ्यो पदगावतिहो, तामैंयहतुकआईजु ॥ मदनमोहनरंगरातो ॥ ताको भाव तृभंगीव्हैं दिषावतहो, सोतृभंगीहि रहिगयो, महाप्रेम आवेसमैं देहछूटिगई सो वहयहपद ॥ सांचोप्रीतहीकोनातो ॥ कैंजानैंवृषभाननंदिनी कैंमदनमोहनरंगरातो ॥ यहैंसंपरलाअतिबलवंतीबंध्योप्रेमगजमातो ॥ मीरांप्रभुगिधरनागरकुंजमहलबसातो ॥ ५ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ परम भागवत श्रीकृष्णके अनन्यउपासिक, महाराजा रूपसिंघजू, भगवतइच्छा आधीन दिल्लीसकी आग्यातैं बलषकौं गयेहे, तहां बहोतदिनबीते, बिन सतसंग रंग

चितभंगरहैं, तब एकदिवस अकुलाय एकविष्णुपद प्रार्थनाको बनाय लिषिरूपनगर, श्रीगोवर्द्धननाथ उनके सीस विराजतहे तहां पठयो, भींतरियांनकों लिष्यो कि, यह विनती पत्र ठाकुरके चरनन आगैंधरियो, सो ऐसैंहींकीनौं, वाहीवेर वाहीराति परम भगवदीय भींतरिया हुतो ताकौं स्वप्नमैं ठाकुर आग्याकीनी, जो हम उनकी प्रार्थनांमानी, आजुही उनकौं उहांतैं वुलायेहैं, सो या दिन यहआग्याभई, ताही दिन रूपनगरतैं कासीदचलाये, सो जा मिती आग्याभईही कि आजुहमवुलाये, सो वह मिती अरु जादिवस वहांतैं कूचकियो, सो वह मिती एकही मिलिगई, सो सुनि सवनिकौं वडो आश्चर्यभयो, महाराज प्रेमानंदतैं विवसभये फेर वेगआय आपनैं राज्यस्थानमैं, श्रीगोवर्द्धननाथको दरसन कीनौं सो जापदकौं ठाकुर अंगीकार करि यलषसौं वुलाये, सो वह यह पद ॥ प्रभुजुइहांरहैंकछुनांई ॥ करियेगवनभवनदिसअप नैंसुनियैंअरजगुसांईं॥ देषिवलषवरफहूदेषीअधमअसुरअवलोके॥ मध्यमदेसवेसहूमध्यमइहांकहांलैंरोके ॥ भक्तवछलकरुणामयसुष निधिकृपाकरोगिरधारी ॥ रूपसिंघप्रभुविरदलजतहैं व्रजलैंवसो विहारी॥१॥ अथ अन्य पद प्रसंग॥ एक विष्णुपद फागकोसुफाग के दिन आवैं तव वा पदमाफिकही श्रीगोवर्द्धननाथकैं सिंगारहोय, रूपनगर मध्य वादिन वडो फागको ठाटहोय, सब उपासिक-लोग वादिन दरसनकौं वहोत आवैं, अरु यह कहि कहि अपनैं घरसौं दौरैंजु आजु वापदको ठाटहैं, वेगिचलो, सो वहपद सुनि सुनि सरूप दरसन करि करि भावकलोग वादिन प्रेमावेस व्हैं व्हैं

वहोतगिरैं, सब जानीजु यहपद ठाकुर रीझिकैं अंगीकार कियोहैं, सो एकबरस ऐसो जोग बन्यौ जु फागुनमैं यहपद न गायो नां वह सिंगारभयो, यह सवैं ठाटही नांभयो तव श्रीगोवर्द्धननाथ परमरसिक सुजान सुपनमैं द्वैबेर आग्याकीजु यहपदगवावो, सो वह यह पद ॥ रूपबावरोनंदमहरकोवोहोरिबन्यौंहोरीकोछैल ॥ रोकतटोकतघूंघटपोलतभरिपिचकारितकतउरोजानिगोकुलरीमाई चलतनगैल॥छलसौंमसरिगुलालकपोलनिचितैंरहतपलभूलिनिलज व्हैंहियैंभरतजोवनकेफैल ॥ छुटीवैसंधिबैससहचारिसुखमदनमवास रहतनताकैंअंगअंगरीझिकटीलीसैल॥१॥अथअन्यपदप्रसंग ॥ रूप नगरश्रीठाकुर गोवर्द्धननाथजी जनमाष्टमीकैं दिवस एकब्रजवासी गुनी, नाम तुलाराम ताकी प्रसिद्ध छाप बावरीसखी, सो नृत्य गान प्रेम सहित ठाकुर आगैं करतभयो, अरु वहोतरंगपरयो अरु पद गावतहो, तामैं यह तुक आई ॥ बडभागीनंदबैठादैंदामुंहमांगी ठकुराइयां॥ तहां ठाकुर रीझे, फूलनकी माला ठाकुरके गरेमैंही सो टूटि दूरि जाय रही एकभींतरिया वृद्ध अपरस वोट वैठोहो, सो स्वतैं सिद्ध वह उठिआय मालाउठाय जो गुनींब्रजबासी नृत्य करत गावतहो, ताकौं पहराइदई, औरहू बडे बडे सेवगठाढेहे, परंतु ठाकुर माला वाहीकौं दिवाई, सो जापदपर ठाकुर रीझि मालादई ॥ सोवहयहपद॥ जसोदेबधाइयां॥ नंदरानींदे लालउपनांससीनेहियांसबैंजिवाइयां ॥ सोहनीयांसबगोपियांतोध रआइयां ॥ पुत्रजायाजगजीवनरीतैंपैरुलगीवडाइयां ॥ तैंडाभाग सुलछननीसइयेंसभैंवोलिधुमाइयां ॥ अमृतसारजुलध्यानीसइयेपू

कीरतन करतहुते, सो एकपद बहुतबन्यौं जो भावक होय ताकौं तो सुनिकैं भावउपजैं, परंतु विजाती एक फकीर वापदपैं रीझि प्रेमावेस होय ऊपरतैंगिरयो सो ठौरतो ऐसी ऊंचीहीजु, भूमि तक आवतैं पहलीही बीचहीमैं प्रान निकासिजाय, परंतु यह वहांतैं गिरयो सो जीयो, वाही पदकौं गावत भयो, ॥ सो वह यह पद ॥ अरीहूंबाटनजानूंरीकोईबतावैंवाकोधाम ॥ यावनमांझअचांनकहूउरलाइलईअभिराम ॥ मनलैंगयोनामनहिं जांनौंहोसुंदरतनस्याम ॥ नागरीदासठगीहूंअबलाअबनकछूबस वाम ॥ मनभयोसिथलचरनकांपतसरमारतनिर्दईकाम ॥ ५ ॥ अथ अन्य पद प्रसंग ॥ वैष्णव एक नाममुरलीदास गौडिया, स्यामनदी वृंदावन वासी, बडे महानुभाव, सो रूपनगर आये हुते, सो एकसमैं, अपनी ठौरतैं उठि आये, वहोत प्रेम आवेस संयुक्त, तहां एक पद ताहीवेर बन्यौंहो, काहू सुन्यौं नांहीहो, वह पद लिपतही ताही छिन मुरलीदास आवत पहिलैं पीसामैं राप्यो हो, दुवात कलम ढिगही धरीही, सो वापदकी यह तुकगावतही आये ॥ हियेहरिमूरतिमंडरावैं ॥ गावत गावत याही तुकमैं अंतरंग दसा व्हैं गई, कछू सरीर सुधि न रही, बहोत बेरतक यह दसा-रही, सो पद सुनैं विनहीं वाकी तुक प्रेम आवेस युत गावत आये, अति आश्चर्य भयो ॥ सो वह यह पद ॥ आवैंआवैंहो वांसुरीधुनिआवैं ॥ अबमोहिगृहअंगनांनसुहावैं ॥ मेरोमिलनप्रानअकुलावैं ॥ मनमथलहरिघुमावैं ॥ हियेहरिमूरतिमंडरावैं ॥ नागरीदासचल्योनहिंजावैं । उठिउठिफिरमुरछावैं ॥ अथ पद प्रसंग ॥

बल्लभ रसिकजू महावांके उपासिक आसक्तवान मिहीन सो उनकी रीत उनकी बांनीतैं जानी परतहीहैं सो एक समय श्रीवृंदावनमैं सरीरकी व्यथा करिकैं असक्ति भये देहांत होत जांनिकैं ढिग लोग नामकीरतन करनलगे तासमय इनकौं सुधि व्हैं आई, तब षिजकैं कह्यो जो हमसौं अरु या महातमसौं लेषो कहा, तब एक पद भगवान सषीजूकोहो सो बतायो जो यह गावो सो अबहू गावो अरु देहांत भये पश्चात बाहिर लेचलो, तबहू यहही गावत जाइयो सो सबनि मिलि वैसैंहीं कीनौं सो जापदसौं या समय लौं रीझनि बाही अरु यह बार्ता प्रसिद्ध भई॥ सो वह यह पद॥ मनहरनिछैलनंदरायकोछबिसौंइतनिकस्योआय॥ देष तहींदृगछकिरहेमेरोजियरह्योललचाय॥ चंपकलीधरैंकुटिलअलकपरिऐंडौंऐंडभरयोऐंडाय॥ सूंघतकमलकमलदललोचनचितैंचितैंमुसिकाय॥ एरी अंगअंगछविकहाकहौंतनसांवलरंगचुचाय॥ मोहिदेषिठाढोरह्योप्यारोपगियापेचबनाय॥ रौमरौमनपसिपरग्यौंमनरामिलईरमाय॥ कहैंभगवानहितरामरायपियसबविधिरहे समाय॥ १॥ अथ अन्य पद प्रसंग॥ श्रीव्रजभूमि महिमा प्रगट करन हेत श्रीकृष्णचंद्रकी इच्छातैं कोई एक वासमैंके जूथकी सषी, श्रीव्रजमैं जन्म प्रगट कियो गूजरीभई, ताको नाम गौरी, परमसुंदरी ऐसीजो काहूसौं भरिदृष्टि वाकोरूप सहारयो न जाय, सो वह नित्य भोजनसामग्री, अपनै घरतैं बनाय, गोप्यलेजाय, बनकौं गोवर्द्धनकी तलहटी तहांसाछयात व्हैं, श्रीठाकुर भोजन करैं ऐसैं कितेक दिनबीतैं, एक समैं वाके भर्तानैं जानीजु ए काहू

पुरसपास लेजायहैं, तब वह तरवारलेकैं, पीछैं दूर दूर वाके संग चल्यो, सो सघन वृछहे तिनकी ओट पीछैं जाय ठाढो रह्यो, तब ठाकुर भोजन करतही उठिभाजे, तब याके श्रवननिमैं नूपरकीतो झनकपरी, अरु महा सौंगंध आई, पीतांवरकी फहरानिदेषी, और अधिक दरसन न भयो, यह मूर्छित व्हैं गिरयो, फिर सचेतव्हैं प्रेमावेस सहित, गौरी गूजरीके पाइन परयो, तादिनतैं यह बात बहोत प्रसिद्ध भई, ऐसीजु यह घरतैं जब बाहिर निकसैं तब गांवके लरिका याके चहूं और संग हौंहि षिजाइबेकौं, यह कहति जांहिजु अरी वेदेषि गोपाल आये तब यह फिरि घूंघट उघारिदेषैं तब लरिका तारिदैंदैं हंसिपरैं याके पदहू व्रज मैं बोहोत लोगननैं बनाये हुते, परंतु एक सिरोमनिनैं बनायो सो ठाकुर बोहोत अंगीकार कीनौं तातैं अधिक प्रसिद्ध भयो, ॥ सो वह यह पद ॥ गौरीगूजरीमनमोहनकीयारी ॥ सबव्रजकेटो कतरहैंतातैंनिकसैंघूंघटमारि ॥ जबकोऊझूंटकहैंवेआयेमदनमुरा रि ॥ रहिनसकैंइतउततकैंदुरिदेषैंवदनउघारि ॥ तनसुषकीसारी लसैंकंचनसोतनपाइ ॥ मनुदामिनकीदेहसौंरहीजौंन्हलपटाइ ॥ धरतपगनिलालीफिरैंभरैंढरैंरतिजाइ ॥ कांचकरौतीजलरंग्योकछु यहजुगतिठहराइ ॥ गुरनितंबमाधिपातरोउरजभारआधिकाइ ॥ ल ग्योलंकमनलालकोवाकीलचकनिलचक्योजाइ ॥ वरनवरनपट पलटहींनूतननूतनरंग ॥ जबहितबहिंनिकसैंफिरैंवहहरिहिदिषावैं अंग ॥ छूटीअलकनैंनावडेओप्योसोमुपचंद ॥ अरुनअधरमुस कातसेदियेंभालसिंदूरकोबिंद॥ लगनिलगीनंदलालसौंकरैंनिबाहन

काज ॥ चढयोचाकचितचतुरिकोवाकेप्रेमहिंआयोराज ॥ लाल लषैंलालचबढयोउतसासत्रासपियराइ ॥ यहसंजोगनिबिरह नीतातैंअरझीबीचसुभाइ ॥ नरनारीएकतभयेमिलिमिलिकरत चवाव ॥ सिरोमनप्रभुदोऊसुनैंतातैंबढैंचौगुनोंचाव ॥ १ ॥ अथ पद स्तुति पद ॥ जिंहिंजिंहिंहरिपदसौंरतिठानी ॥ तिंहिं तिंहिंकीपदसाषिप्रगटजगसुनौंपुरातमबानी ॥ कलिमैंसारकीरत नकहियतुभक्तनमनसुपदानी ॥ नागरीदासधन्यजोरसनाहरि जसरसउरझानी ॥ २ ॥ पुनःपद॥हरिपदरचनांरुचिरबनइये ॥ आपुनपढिपढिवइयेऔरैंहरिपदसुनिरुसुनइये ॥ हरिपदगावतहरि पदपावतहरिपदरतिउरझइये ॥ नागरियापदपरमपदारथहरिपद रससरसइये ॥ २ ॥ इतिश्रीपदप्रसंगमालासंपूर्ण ॥

## अथ व्रजवैकुंठतुला लिष्यते ॥

॥ व्रजचंद्रोजयति ॥ मंगलाचरन दोहा ॥भजनप्रेमआनंदमय, बंदौंब्रजजनवृंद ॥ सुषहूकोसुषसारातिन, पायोहैंनंदनंद ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥ श्रीभागवतआदिपुरान । तामैंसुनोकथासुपदान॥ कहूंताहिब्रबभाषाकरिकैं । सुनहुरसिकरसआनंदभरिकैं ॥ २ ॥ सबलोकनिपरवइकुंठलोक । गुनातीतपदहर्षनसोक ॥ यातैंवडोन कोऊपदारथ । तामैंसबजीवनकोस्वारथ ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सुरनर मुनिजनअहरनिस, मनबचक्रमकरिहोय ॥ ब्रह्मानंदवइकुंठकौं, ध्यावतहैंसबकोय ॥ ४ ॥ ब्रह्मानंदवईकुंठमैं, ब्रजमैंप्रेमानंद ॥ कौंनअधिकइनमैंबसो, सुनिलीजेरसकंद ॥ ५ ॥ ॥ चौपाई ॥

करैशास्त्रस्तुतिजाकीताकी।ताकीकछुरापतनहिंवाकी॥ ऐसैंकैसेंबदें प्रतीत । जाकेंव्याहताहीकेगीत ॥ ६ ॥ औरेंविधिकाहिमनमांहें आंनैं ॥ जिंहिंदेषीताहीकीमांनैं ॥ पैंकोऊबैकुंठहिजावैं । सोतो वहोरिकहननहिंआवैं ॥ ७ ॥ जोवहमध्यपुराननिकह्यो । सोमैंयह सोधौंकरिलह्यो ॥ व्रजगोपनप्रेमानंदपायो । तिनहींकोंबइकुंठदि षायो ॥ ८ ॥ तेफिरिआयेलषिजगदीस । यातैंग्वालनकहींसुबि स्वाबीस ॥ ९ ॥

## अथ गोपबइकुंठ दरसन समय कवि बचन ॥

॥ दोहा ॥ गुनातीतबइकुंठकौं, गोपवृंदसबहेर ॥ रहेआंगुरीध रिदसन, भैचकलगितिंहिंबेर॥ ९॥ अथ व्रज गोपवाक्य॥ श्लोक॥ सोयंहरिस्तत्रसखाप्रतीतःक्ष्वेलीचयैः सर्वशएवनित्यं ॥ एतेनसंक्री डनमद्भुतंनोतेवैसमारान्नियतंस्थितास्म ॥१० ॥ पितानपुत्रंपरिल्ला लयेदसौमातायसोदानसुतं प्रयाति ॥ गावश्चनैवाग्रतएवनिसृतास स्वीन्नकृष्णः सहगछतीह ॥ ११ ॥ गोप्यःकिलानेनविहारमुद्यता नवैवनंतत्कुसमाकरंच ॥ नचात्रभानोस्तनयातटानि नमर्कटा स्तेहरिवल्लभावै ॥ १२ ॥ अयंप्रभुर्दूरतएवसेव्यो वयंतुभृत्याइव दूरतःस्थिता ॥ कथंवसामोत्रविकुंठवासेपुनर्व्रजंदेहि जगन्निवास ॥ ॥ १३ ॥ पुन कवि बचन ॥दोहा ॥ प्रीतिजहांऐस्वर्जनहिं, ऐस्व र्जजहांनप्रीति ॥ प्रीतिविनांआनंदनहिं, मेरैंयहप्रतीति ॥ १४ ॥ पुनिकाविवचन, दृष्टांत ॥दोहा॥ प्रभुतासोभास्वादिबिन, मनन्नलग तअभिराम ॥ कारनफूलमनिकनकके, मधुकरकोकिंहिकाम ॥१५॥

चांवररूपेकेजदपि, दारिकनककीहोय॥ रोटीरतनजरायकी, तद पिनषावैंकोय ॥१६॥ अथ गोप बचन ॥ दोहा॥ वइकुंठवइकुंठना थतैं, प्यारेब्रजब्रजचंद॥धिगजोब्रजआनंदविसरि, चाहैंब्रह्मानंद ॥ जथा उदाहरन॥ कबित्त ॥ महातेजतनमैंप्रकासमानजैसैंभानवाढै चकचौंधआंपैं आंषिनिसौंजुरीमैं॥ देषौंवइकुंठनाथसंपचक्रगदाहाथ लागैंभयभारीनकहतबातदुरीमैं ॥ डोलतकलोलतनबोलतननागर ह्यांरहैचुपचापयहदेषीबातबुरीमैं ॥ ऐसीनसहैंगेब्रजमारगगहैंगे यहांछिनदूरहैंगेनांहिटगटगापुरीमैं ॥ १८ ॥ दोहा ॥ इहांरातिदिन होतनहिं, नहींसांझनहिंभोर ॥ जथासमयलीलाकरत, उहिब्रजनंद किसोर ॥ १९ ॥ जथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥ हमतोनभै याकोऊसंगहिंबजायजांनैंयेतोलीनैंमहासंषसबनिनिहाररे ॥ ब्रजब तरानिहसिगारीदैंनलगैंमीठीकैसैंकारिआवैंदेवबानीकोउचाररे॥ चि त्रकेसेकाढेकौंनठाढेरहैं नागरह्यांकहांवहबृंदावनबीथनिबिहाररे॥कै सैंकैं कन्हैयासंगपेलनकोसुषपावैंढवैंकौंनइहांच्यारहाथनकोभाररे॥ ॥ २० ॥ दोहा ॥ ब्रजवृंदावनबिहारिबो, मोहनमदनप्रताप ॥ सो तजिकैंह्यांकोबसैं, लैंनविप्रकोश्राप ॥ २१॥ जथा उदाहरन ॥ क- बित्त ॥ भैयाभैयामधुरकन्हैयाकीकहनअरुअमृतचहनिकोयेकांन निसौंच्छैरहैं॥ जोलौंचरैंगैयांतोलौंद्रुमछैयांसोवैंस्यामकाहूगोदसीस काहूगोदपायद्वैरहैं ॥ आपुचढिकांधैंकभूऔरनिचढायचलैं नागरन करतरौरि षेलिरसच्वैरहैं॥ऐसोसपाप्रीतनांतोछाडिवागुपालकोरेकौं नह्यांवैकुंठग्वालद्वारपालव्हैरहैं ॥ २२ ॥ पुन कवित्त ॥ कहांवह वृंदाबनकहांजमुनांकेकूलगुंजनकेहारफूलगहनौंबनायबो ॥ वह

बिधिषेलिनंदलालसंगसंगसदा आनंदमगनव्हैकैंमुरलीबजायबो॥घ ननकोघोरपिकमोरनिकोसोरकहांबंसीबटतटिगायहोरिदेंबुलायबो ॥ ब्रजसुखछायोचलिनागरलुभायोमनहमकौंनभायोइहांबैकुंठकोआ यबो ॥२३॥ दोहा ॥ ब्रजमैंअरुबैकुंठमें, जोजोकछुदरसात ॥ तुला धारिकरिचित्तकों, तौलौंसबहीबात ॥ २४ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ ऊहांमनमोहनकुंवर नामरसभींनेंइहांनामजीरननारायन कहांवहीं ॥ उहांकरकमलफिरांवेंअलिबेलिभांतिइहांगदाचक्रलये सबकौंडरांवहीं ॥ उहांगोपबधूबृंदमांझगरबांहींदियेंइहांएकरमांता पैंपायपलुटांवहीं॥ पसुपंछीजमुनाथकितहोतनागरयौंउहांबाजेंबंसी इहांसंषहींधुधांवहीं ॥ २५ ॥

## अथ बैंनगांनबर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ मुरलीअधरनिधरतहीं, छबिलषिलज्जितमैंन ॥ चर थिरथिरचरहोतसुनि, कमलनैंनकोबैंन ॥ २६ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ ललितकदंबतरेंमुरलीअधरधरैंठाढेव्हतृभंगछाबिछाजैंब नमालकी ॥ धैंनुनचरततृणबछरानपीवैंछीरमृगनिकैंनीरदृगभीर तिहिंकालकी ॥ उडतपंखेरूनभबीचठहरायरहैंनागरबिबसगतिजु वतिनिजालकी ॥ जमुनागवनथकिथकिकैंपवनरहैंबाजैंजबबृंदाब नबंसीनंदलालकी ॥ २७ ॥ दोहा ॥ कहिकैसैंकैसैंकहैं, जैसेंकिये बिहार ॥ छिनवहिबिसरतनांहिब्रज, माखनचाखनहार ॥ २८ ॥

## अथ माखन चोरलीला समर्ण ॥

सवैया ॥ रातहितैंब्रजगोपनकेलरकालियैंसंगफिरैंअंधियारैं ॥

भौंननिकौंननिमांझदुरचोदधिलेतनिकारिकैंअंगउजारैं ॥ नागरखायखवावतहैंहंसिजाछिनकोसुखकौंनउचारैं ॥ रेवासिकैंबइकुंठहुमैंधिगंजोवहमाखनचोरबिसारैं ॥ २९ ॥

## अथ बनभोजन लीलासमर्ण ॥

दोहा ॥ बनभोजनलीलाललित, किंहिंबिधिबिसरीजांहिं ॥ बिन गुपालबइकुंठबसि, कहो कौंनसंगखांहिं ॥३०॥ जथा उदाहरन॥ कवित्त ॥ इहांकहांनंदओजसोदामैयाकरुनांमैंऔरहूनकोऊकरइयाएुंजपाककी ॥ गोवर्द्धनकहांकहांखेलिनिकीठौरिआछीब्रजसोभाकहानिनसकतहोतबाककी ॥ नागरहंसिभोजनकरैंनंदलालप्यारेपीतपटवारेछबिछाजैंछांहढाककी ॥ मुक्तलोकवारूंहौंतोजवजवनिहारूंहैंगोपमध्यमंडलघमंडलीलाछाककी ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ भोजनकरिबनबिहरिब्रज, आवतमदगजचाल ॥ सोधनदृगासियरातलपि, गोधनसंगनंदलाल ॥ ३२ ॥

## अथ गोधनसंग ब्रजआगमन लीला समर्ण ॥

कवित्त ॥ नीलघनराजतबरनतनसोभादेतरंगरंगआभानगअभरनजालकी ॥ कंचनदुकूलछोरदुहूंओरफहराततैंसीझुकिझूलनिललितबनमालकी ॥ संगसुरभीतअंगरंजितपहुपरैंननागरलटाकिगतिगंजतमरालकी ॥ कमलफिरांवनिऔआवनिअनूपलसीवसीउरऐसीरूपमाधुरीगुपालकी ॥ ३३ ॥ पुन कवित्त ॥ बेरगऊभूलकसुनततियगोरीगांनदामिनीनिकरसीनिकरगृहतैंघिरैं ॥ गोधनकैंपाछैंआछैंनटवेषकाछैंस्यामचलतकटाछैंतियनैंननैंनसौंभिरैं ॥ गोरवनि

झरोपनिओवारिरनिअटारिनतैंनागरियाफूलपातीगैलछैलपैंगिरैं॥ हो तजवसांझउहिंगोकुलगलीनमांझकोटिबइकुंठसुखसहजवहेफिरैं ॥

## अथ दधि दानलीला समर्ण ॥

दोहा ॥ व्रजझगरोदधिदानको, राधानंदकुंवार ॥ झगरतहैंवइ कुंठमैं, द्वारपालदुजच्यार ॥ ३५ ॥

## अथ दधि दानलीला समर्ण ॥

कवित्त गोरसकैंलेतजहांजोरसप्रगटहोतसोरसबैकुंठनाथहून जानैंभारिये॥इतैंनंदलालअरुकीरतिकुंवरिउतैंरूपकीघटासीदुहुंओ रनिनिहारिये ॥ वातैंअनषीलीकहैंनैंनसनमानलहैं नागरगहत पटझुकिझिझकारिये ॥ मुक्तलोकबसिबेमैंसवहीबिचारिदेपोदानके लिकौतुककौकैंसैंकैबिसारिये ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥ दानकेलिदैंआ दिव्रज, लीलावहुसुपदाय ॥ पैंसुधिआवतफागजब, सुधिहूकी सुधिजाय ॥ ३७ ॥

## अथ फाग बर्नन ॥

॥ दोहा ॥ फागभासरितुउठतबहु, द्रुमनवपल्लवलाग ॥ जडहूकैंरो मांचव्हैं, विथामदनतनजाग ॥ ३८ ॥ बरसांनैंनंदगांवअति, उम डैंदलदोउवोर ॥ समरपेतसंकेतमैं, होतफागजुधजोर ॥ ३९ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ जोपैंमहासर्वोपरराजतवैकुंठधामतोपैं कौंनकामअइस्वर्जतेजसौंडरैं ॥ नंदीसुरबरसांनौंनांहिइहांसमधांनौं फागविनलागविनऐसैंदिनक्योंभरैं ॥ कौंनगावैंगारानिधमारानिम चांवैंभूमिनागरकुंवरबिनकौंनमनकौंहरैं ॥इतस्यामउतगोरीव्रजरीति

रंगवोरीहोरीबिनकोरीठकुराईलैंकहाकरैं ॥ ४० ॥ दोहा ॥ सुर नरमुनिजनबिबसलषि, ब्रजहोरीअभिराम॥आनंदकैंआनंदउलहि, बढतकामकैंकाम ॥ ४१ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ ब्रह्म लोकआनंदब्रजआनंदसमकहैलैकैंवहिनीरसकीरसनादहायघूं॥ जबहीरहसरसबाढतबहसपेलिनागरजियजानैंऔरकौनपैंकहायघूं ॥ दोऊवोरघुमंडिघटाज्यौंबरसतरंगातिंहिंसमैंकोध्यानमोहियतैंनहायघूं ॥ स्यामअरुगौरिपरिएकब्रजहोरीपरिकोटिकवैकुंठनिकसुपहिं बहायघूं ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ होतरंगीलेफागमैं, हियेरंगीलेअैंन ॥ महारंगीलेदिनसबैं, महारंगीलीरैंन॥४३॥ जथा उदाहरन ॥कवित्त॥ ठौरिठौरिचाचरचहुलमचैंचंगनकीअंगनिकीऔरैंदसाऔरैंरूपछांवहीं ॥ आनंदउरनिअतिअमितअपंडबाढैंनागरमिलनिदिनदावसरसांवहीं ॥ लाजओरुषाईतियसंगलैविवेकपतिभाजैंब्रजमैंतैंमारबानिदबांवहीं ॥ पौढीप्रीतजागीनिनवलनेहलागनि व्हांफागनसनेहनिकेभागनिसौंआंवहीं ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ छैलछलीब्रजरसिकजहां चोषचतुरईदाव ॥ नितहोरीकेपेलमैं, चितचोरीकोचाव ॥ ४५ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ रचिकैंकपटवेपडोलैंब्रजवापरानि छलिआवैंछैलजेछबीलीनववामहैं ॥ कवहुसिमिटिगहिलेतगोपवधूवृंदआंखिआंजिमांडमुषछाडैंगहिदामहैं ॥ उतदेतगारीइतभंडकुटहोतभारीनागरकतूहलबढतधामधामहैं ॥ आनंदनिवासनित्यफाग कोहुलासअैसैंहोरीबिनहासमुक्तवासकौनकामहैं ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ उडिगुलालआंधीपहल, डफगरजनअभिराम॥ रंगधारबरसततहां, गउरघटाअरुस्याम ॥ ४७ ॥ जथाउदाहरनकवित्त ॥ खेलतविहा

रीप्यारीजबकुंजकुंजनिमैंबूडैंमनआनंदमैंहेरैंनहिरतहैं ॥ नागरगुलालधूमिधूंधरिगगनचढैंछूटैंपिचकारीधारधारसौंभिरतहैं ॥ नूपुरनिनादसौंरहतपूरिबृंदावनधावतभरतनगभूषनगिरतहैं ॥ लागैंमुखरोरीउरतोरीमालबोरीरंगहोरीमांझगोरीझिकझोरीसीफिरतहैं ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ पटछूटतछूटतनहीं, रहैंखेलिरसभोय ॥ हारटूटिपायनिपरत, हारनमांनतकोय ॥ ४९ ॥ अथ कबिबचन ॥ दोहा ॥ नागरियागतिरीझकी, क्यौंहौंजातकहीन ॥ दंपतिफागबिहारसर, भयोलीनमनमीन ॥ ५० ॥ जाकोहोरीषेलसौं, तनकहुहुवोनहेत ॥ षालओढसोमनुषकी, भयोमुलम्माप्रेत ॥ ५१ ॥ मुक्तादिकजेलोकसब, ब्रजपरिडारूंवार॥उच्छववारौंफागपरि, जेप्रसिद्धसंसार॥५२॥ धनब्रजधनब्रजबासिया, धनब्रजपरमउपास ॥ धन्यफागरसरीतिब्रज, नागरहियैंनिवास, ॥ ५३ ॥ समतअठारासैंज्ञुइक, दिनबसंतसुभमास ॥ ब्रजबैकुंठतुलाकियो, ग्रंथनागरीदास ॥ ५४ ॥ इतिश्रीब्रजबैकुंठतुलाग्रंथसंपूर्ण ॥

## अथ ब्रजसार ग्रंथ लिख्यते ॥

श्रीब्रजरवनजयति ॥ दोहा—ब्रजमोहनमोहनप्रिया, अरुब्रजविपुनबिहार ॥ जनब्रजभुवबर्ननकरौं, मोमतिकैंअनुसार ॥ १ ॥

## अथ ब्रजभूमिमहिमाबर्ननं ॥

दोहा—बिचरतचढिबहुबांहननि, भूमनपरसतऔर ॥ ब्रजमैंफिरतउवाहिनैं, स्यामरसिकसिरमोर ॥२॥ अथउदाहरन ॥ कबित्त ॥ कहूंकबिमाननिपैंकहूंखगपतिपीठहोतहैंअरोहधरपरसतनांहिनैं ॥ कहूं

गजराजहयसाजरथकंचनकेजापैंजदुवंसभांनसैंनवांयेदाहिनें ॥ जहांअतिप्रीतितहांदेतनएस्वर्जसोभानागरभयेहैंगोपलीलाअवगाहिनें॥ प्रभुताईनांहिनैंनआंनैंमनमांहिनैंह्यांत्यागाबहिनैंकौव्रजडोलतउबाहिनें ॥ ३ ॥

## अथ व्रजभूमि अंगराग बर्ननं ॥

दोहा ॥ औरैंतीरथभूमिजे, इहिंबिधिनाहिंदरसात ॥ व्रजभुवहरिपदकवलरंग, रंगीरहतादिनरात ॥ ४ ॥ जथाउदाहरनकबित्त ॥ कोऊभूमितीरथकीश्रोणितसौंसानिरहीमहारथीबीरनकीसैंनजांलरीहैं ॥ कोऊभूमितीरथकीभस्मकुंडमंडितहैंधूमजग्यधूंधिरातिबिप्रमिलिकरीहैं ॥ मथुराश्रीजमुनानिकटसुषरासीभूमिकौसचौरासीाजिहिंनागरमतिहरीहैं ॥ गोपीकुचकुंकुमलग्योहैंलालपायनसौंव्रजभूमिहरीउहिंकुंकुमसौंभरीहैं ॥ ५ ॥

## अथ व्रजरज महिमा बर्ननं ॥

दोहा ॥ जद्यपिन्हातनउर्द्धगति, जातिच्यारव्हैंपांनि ॥ तदपिनतीरथजलकोऊ, व्रजकीधूरिसमांनि ॥ ६ ॥ अथ उदाहरन कवित्त ॥ चाहैंगुल्मलताभयोऊधौव्रजधूरिकाजदंडवतबिधिइंद्रपरसतथलहैं ॥ लुटतअक्रूरव्रजधूरिमांझभूरभागपरसतरागवाढ्योउरमैंअमलहैं ॥ बालकबिनोदलीलानागरगुपालकरैंव्रजधूरिचापैंसापैंसपाजेसकलहैं ॥ व्रजधूरिधूसरतस्यामअंगरापैंव्रजधूरिकैंनसमऔरतीरथकोजलहैं ॥ ७ ॥

## अथ व्रजभूमि कृष्णमुख कमलस्परस बर्नन ॥

दोहा ॥ अतिप्यारीसबअवनितैं, ब्रजअवनीअभिराम ॥ व्हैंस रूपवछरानिकैं, चांपतचूंमतस्याम ॥ ८ ॥ यथाउदाहरनकवित्त॥ तीरथमहीहैंजेपुराननिकहीहैंसबतामैंयहसवौंपरधारालेहुजानिकैं ॥ कोसचवरासीसुपरासीबनकोससबताकीयेअभासीनैंकधामच्यारपानिकैं ॥ नागरकमलपदअंकितकरतपुनयाहूतैंअधिककीसोसुनिजियआंनिकैं ॥ भईजगधूमैंकहामाहिमांकहूमैंदेषोव्रजभूमिचूमैंहरिरूपबछरानिकैं ॥ ९ ॥

## अथ व्रजाथिरचर कृष्णमय बर्नन ॥

दोहा ॥ कहतकहतकहांलगिकहैं, अबमहिमासरसांनि ॥ थिरचरजुतव्रजभूमिसब, कृष्णमईहैंजांनि ॥ १० ॥ जथाउदाहरनकवित्त॥कृष्णरूपगोपीगोपगायसबकृष्णरूपजमुनागोवर्द्धनयेकृष्णरूपमांनिलैं॥कृष्णरूपद्रुमजातफूलफलपातपातविधिकौंदिषायेकृष्णरूपउरआंनिलैं ॥ कृष्णरूपनागरकपोतशुकसारकादिकृष्णलीलागावैंमनप्रेमसरसांनिलैं॥ कृष्णकेलिकौतिककोआलयआनंदरूपजेतोव्रजमंडलसोकृष्णमईजांनिलैं॥११॥तदनांतर नंद जसोमति गोपी गोपनि प्रति गोपाल प्रीति बर्नन॥दोहा॥व्रजमहिमाकहिअबकहूं,जोव्रजजनसौंप्रीत॥राषीनागरनेहकी, जगसौंउलटीरीत॥१२॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ जाकेपदपरसनिकौंतरसतविश्वजिंहिंव्रजग्वालपेलिमांझपयेनचढायेहैं ॥ जाकौंदेवजग्यमैंबुलावैंनावैंसोधौं व्रजनंदएकथारमांझजैंयकैंसिहायेहैं ॥ जाकीमायाबांधिरापे

सुरनरमुनिगननागरसोजसुधापैंऊपरबंधायेहैं ॥ जांनैलैनचायेऔ रदारमईपूतरीज्यौंप्रेमबसताकौंब्रजबालनिनचायेहैं ॥ १३ ॥

## अथ ब्रजजन प्रत्य हरि आधीनता बर्नंनं ॥

॥ दोहा ॥ हरिजलब्रजजनमीनहैं, ब्रजजनजलहरिमीन ॥ ब्रजजनहरिआधीनहैं, हरिब्रजजनआधीन ॥ १४ ॥ जथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ आवतबुलायेंदौरिगावतगवायेस्यामनाचतनचायेंनित्यकरैंकह्योकह्योहैं ॥ जैंवतजिवायेंजलपीवतपिवायेंहठमांगेंतरसायैंमधुमईवहमह्योहैं ॥ नागरचरावैंगायटहलमेंसावधानवनरपवारैंप्यारैंघामसिरसह्योहैं ॥ बिश्वकेचराचरसकलबसऔरजाकैंसोह्यांब्रजदेबिनकैंबसपरिरह्योहैं॥१५॥तदनंतर मोहनमुष केवल श्रीवृषभाननंदनी नाम रटन बर्नंनं ॥ दोहा ॥ मुरलीकीमालाकरी, नंदलालाबसहेत ॥ राधेराधेरटतनित, गूढमंत्रसंकेत ॥ १६ ॥ यथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ जाकोनामसेसरटैंसिवआदिसुररटैंमुनिगननरनारिरटतनहटहीं ॥ देवओअदेवबधूनागबधूनृपबधूरटतहैं नांवछांडियटकेकपटहीं ॥ कमलाकमलमुषअमलरटननामसेवासावधानरहैंपायननिकटहीं ॥ जाकौंसवरटैंसोनागरतटजमुनाकैंमुरलीमैं राधेराधेनामनित्यरटहीं ॥ १७ ॥

## अथ प्रियाप्रति प्रियलालसा बर्नंनं ॥

॥ दोहा ॥ मनमोहनकोलालसा, सबजगउरसरसात ॥ मोहनकैंप्रियलालसा, मिटतनहींदिनरात ॥ १८ ॥ यथा उदाहरन ॥ ॥ कवित्त ॥ औरजाकोंबंसीसुनिबेकौंतरसतसोबराधाबैनसुनिबेकौं

हियैंसरसतहैं ॥ ताकीसबकृपाचहैंचहैंकृपाराधाकीसोइकटकरहै नैननांहिअरसतहैं ॥ जाकेपायपंकजानिराषैंकुचबीचकितीनागरियापायनसौंनैंनपरसतहैं ॥ जाकेदेषिबेकौंसबतरसतसोईहरिराधामुषदेषिबेकौंनित्यतरसतहैं ॥ १९ ॥

## पुन लालसा बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ मोहनमतिबौरीभई, ढौरीलागीचित्त ॥ राधादरसनकारनैं,रहतअटातरनित्त ॥२०॥ यथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ सांवरेंविहारीजूकैंगौरीएकचितचुभीताकेअटाछांहमैंअथांईप्रेमफंदकी ॥ लौचनचकोररहैचौंकतसेवाहीऔरबाढीअतिआसामुषचंद्रिकाअमंदकी ॥ परकैंकिंवारजबषिरकीकेनागरियाटकझकलागिउठैप्यारेनंदनंदकी ॥ झांकतहीरूपकोउजारोव्हैंदरीचैंमांझनैननिकौंसींचैवेमरीचैंमुषचंदकी ॥ २१ ॥

## तदनांतर प्रियापद महावर टहल बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ जगलषमीसेवतजुवह, सेवतहरिकेपाय ॥ सोहरिराधापगनिनित, जावकदेतबनाय ॥ २२ ॥ यथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ जाकेलियैंसिंधुमथ्योकरिकैंजुश्रमभारीताकीछटाजगमैंभईप्रकासमानहैं ॥ तनसुषत्यागैंनरताकैंकाजतपकरैंदेवओअदेवचहैंकृपासरसानहैं ॥ ब्रह्मविश्वजानीवडकुंठरानीसर्वोपरनागरकहांलौंकरौंप्रभुताबपानहैं ॥ ऐसीयेरमासोताकेपायनपलौटैंसोतोराधापदजावककोसेवामैंसुजानहैं ॥ २३ ॥

## अथ प्रियापद कमल महावर भरन बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ राधापदपंकजनिरषि, इकटकलाललुभाय ॥ लियैं महावरहाथमैं, रंगभरयोनहिंजाय ॥ २४ ॥ यथा उदाहरन ॥ कवित्त ॥ पीतपठपौंछपायदेतहैंमहावरपीतरवनिरूपरीझनैंनानि षगायबो ॥ रंगहिभरतहियदोऊरंगरंगेजांहिदोऊवोरबाढयोप्रेमप गिबोपगायबो॥ कंपरोमस्वेदअंगलगतअनंगतंद्रातबबनमालगहिला लहिंजगायबो ॥ लियैंपायगोदरहैंनागरवेभूलिभूलिघरीघावपावक लौंजावकलगायबो ॥ २५ ॥

## अथ महावर सिंगारांतर बैनीगूंथन बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ सेवाअंगसिंगारमैं, परमचतुरघनस्याम ॥ गोरीकी बैंनीगुहत, पुरवैंमनकेकाम ॥ २६ ॥ यथा उदाहरन ॥ कबित्त ॥ न्हायकैंगुलाबजलबारबगरायबडेबैठीआयबनीजहांफूलनिकीसैंनी जू ॥ आगैंधरिदर्पनानिहारैंसुषमोहनकोताहीमांझचलतकटाच्छल च्छपैनीजू ॥ पीतजुहीफूलनकौंनागररचतसीसबैठेजुगजानुकटि चापसुषदैनीजू ॥ ल्यायभुजबीचअरसायअंगमुरिद्वुरिरीझबैंनीगूंथ नकीदेतमृगनैंनीजू ॥ २७ ॥

## अथ बैंनीं गूंथनांतर सिंगाररचन बर्ननं॥

दोहा ॥ परसतहीन्हैंबिवसापिय,राधेतनसुकुंवार॥ सुघररायकहि यततऊ, करिनहिंसकतसिंगार ॥ २८ ॥ यथा उदाहरणकवित्त ॥ पंजनसेनैंनस्यामअंजनसकैंनभरिउतैंकंपइतैंप्रेमजलसरसातहैं ॥

हारपहिनातपियहाथजातकहूंतवटेढीकरिभोंहेंसोंहेंस्यामासतरातहैं॥ सीरोतनस्वेदअंगषिस्योपटपीत्तरंगउपजअनंगसुरभंगबतरातहैं ॥ सपीसह्मरावैंसबधीरजबंधांवैंतऊनागरसिंगारमैंसह्मारभूलेजातहैं२९॥

## अथ सिंगारांतरप्रियामुखकवल बीरीदैंन बर्ननं ॥

दोहा—तियसिंगारपियपांनदैं, चितईकरिभुवभंग ॥ बीरीनीरीहूनगइ, भईनैननिगतिपंग ॥ ३० ॥ यथाउदाहरनकवित्त ॥ नागरीनवलगुनआगरीरंगीलीजाकोबाढ्योहैप्रकासमुखचंदकुंजभौंनमैं ॥ बांकीभौंहेंबडेनैंनकहतबनैंनछबिरह्योहैंसरसरंगबरसाचितौंनमैं ॥ चहेंसुखदैंनमुपदैंनबीरीप्यारीजूकैपैंनचलैंकरउतरूपसरसौंनमैं॥ सकिजातचकिजातछकिछकिजातलालसिथलव्हैंजातगातभौंहभंगहौंनमैं ॥ ३१ ॥

## बीरीदैनांतरप्रियाबदनइकटकरीझचितैंबौ बर्ननं ॥

दोहा—मोहनकेदृगमत्तअलि, इतउतकहूंनजाय ॥ राधाआननकमलमैं, इकटकरहैंलुभाय ॥ ३२ ॥ यथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥ सारीकोकिनारीगिर्दकंचनदिवारमांझदृगद्वैसभासरप्रफुल्लकौलसौंभरे ॥ भौंहैंमधुपावलिसिंगारलताअलकनिफबेकर्नफूलफूलफूलेछबिसौंभरे ॥ नासिकासिरूंकेढिगलालागुलक्यारीबालानागरिअधररंगचितवितकौंहरे ॥ राधामुखबागबीचखंजनगुपालनैंनभूलेआज चंचलताइकटकव्हैंपरे ॥ ३३ ॥

## तदनांतरप्रियाअंगसुगंधलगावानि बर्ननं ॥

दोहा—इततैंइकटकलखिकुंवर, अतरलगावतअंग ॥ उततैंअदभु

तन्हैंपरत, भौंहभंगमैंरंग ॥ ३४ ॥ यथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥ रचि कैंसिंगारचारस्यामाअभिरामाबैठीढिगस्यामसुंदरकैंसोभासरसात ही ॥ दोऊओरमोरछलहलतचलतभौंरभूपनबसनउठीजोतिउफनातहीं ॥ करलैंसुगंधस्यामहेरयोमुषनागरिकोचितईदुराइनैंनकछूमुसक्यातही ॥ तबलाललागेअंगरागाहिलगावनिएसतरन्हैंजातगात अतरलगातही ॥ ३५ ॥

## अथ सबगंधादिसिंगारांतरप्रियापिय गांन बर्ननं ॥

दोहा ॥ नवलकिसोरीचतुरत्यौं, तैसेचतुरकिसोर ॥ गानतांन अबरहसिकी, बहसिबढीदुहुंओर ॥ ३६ ॥ कहावीनजडकोकिला, लागतश्रवनकठौर ॥ लहलहातनीकोउठैं, तांननिरंगहिलोर ॥ ॥ ३७ ॥ पियधीरजठहरैंनहीं, गाहिरैंसुरगुनगांन ॥ रागरसासवासिंधुकी, लहिरैंउपजततांन ॥ ३८ ॥ रूपअगाधाचतुरमनि, राधा रागउचारि ॥ कियेमूरछितस्यामकौं, बंसीबैंरसंभारि ॥ ३९ ॥ यथाउदाहरनकवित्त ॥ दुहुंसीसजूरासोहैंहाथनितंमूरावीनपरमप्रवीनगोरीगांनलैंउचारयोहैं ॥ छायोसुरकाननिछकायेपियप्राननिओछूटिगिरयोअंसजंत्रस्यामनसह्मारयोहैं ॥ रीझिमुरछावैंमुरछायठहिरावैंअंगनागरितरंगतांनमनबोरिडारयोहैं ॥ ताहिकियोबिवसघुमायगतिमतिडारीजाकीबांसुरीनैंब्रजबडोसोरपारयोहैं ॥ ४० ॥

## अथ गानांतरप्रियासुखचिंतैभंवर निवारन बर्ननं ॥

दोहा ॥ मोहनराधामुपलपैं, अमलउजारीमांह ॥ बहुरिचंदको डीठडारि, करतमुकटकीछांह ॥ ४१ ॥ यथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥

नवलनिकुंजमंजुकालंदीकेकूलजहांरहीझुकिझूलिलताफूलनिकेभा रहीं ॥ स्यामासुखदाईतहांअमलजुन्हाईआईऔरैछबिछाईछितसे व्यकोटिमारहीं॥ नागररसिकलालप्रेममतवारेप्यारेराधारूपदेपिदे पितोरितृणडारहीं॥चंद्रमाकीडीठहरिकरतमुकुटछांहपीतांबरगहिठा ढेभंवरनिवारहीं ॥ ४२ ॥

## तदनांतरबिहार बर्नन ॥

दोहा॥ नवनिकुंजनिभृतसुतहां, रहीछिपाछबिपाय ॥ बिचगो रीअरुसांवरै, रह्योरंगसरसाय ॥ ४३ ॥ यथाउदाहरन ॥ कवित्त ॥ लहकिलहकिजातलगिकैपवनलतामहकिमहकिऊठैमालतीसुवास हैं ॥ गहकिगहकिगावैकोकिलातरनचढीकुंजछबिपुंजकामसेवतनि वासहैं॥ नागरियास्यामास्यामसौंहैंसुषसैनीपरदेषैद्रुमरंध्रनिनकोऊ सपीपासहैं ॥ दोऊमनहरैंदोऊरीझिरीझिअंकभरैंअंगनिअनंगबा ढ्योरंगमैंबिलासहैं ॥४४॥ दोहा ॥ बाढीछबिरतिसुखसमैं, काढीत नककढैन ॥ जुगलकेलिमनरसरंग्यो, औरैरंगचढैन ॥४५॥ यथा उदाहरन ॥ कवित ॥ राधामनमोहनअगाधारूपरंगभरेभुजभररि झलिकामकेलिसरसायदी ॥ पगशुकसारिकादिजकिथाकिकारिडा रेनूपुरऔकिंकिनीकोझनकसुनायदी ॥ दूरहीहटकरापीकुंजद्वारअ लिसैंनोस्वेदअंगमिलीलैसुबासपहुंचायदी ॥ हुतीललितादिजेलता नवोटनागरितेदेषनसकतप्रेमछकनिछकायदी ॥ ४६ ॥ अथसुरतां त सरूप वर्नन ॥दोहा॥ प्यारीछबिन्यारीबढी, तनआलसबसमैंन॥ मुषलषिपियबिस्मयरहे, नैननिपललगैंन ॥ ४७ ॥ यथा उदाह

रनकबित्त ॥ छीनकटिछूटेबारआयेफैलिआननपैंआधेंसीससीसफूलबैंनांझुकिगोमहा ॥ टेढीभईबेंदीहारसरकेसिंगारलषिमोहूसेंहैंन्यारेमेरेलेयिनकरैंहहा ॥ बदनगुराईमांझअरुनाईपियराईनागारियाकेसैंनैनसिथलहुरैमहा ॥ रूपहैंकिठैरीहौंकिनैंनानिठगौरीहैंकिस्वपनौंकिसंभ्रमकिसांचहैंकिहैंकहा ॥ ४८ ॥

## अथ सुरतात्त आरसनैंननि सरूप बिलोक बर्नन ॥

यथाउदाहरन ॥ दोहा ॥ जुरैंजुरैंफिरिहसिमुरैं, घुरैंढुरैंरहिजांहि ॥ लोयनलहिरैंनिरषिपिय, धीरजठहरैंनांहि ॥४९॥ अरसांनैंघूमतझुकत, सरसांनैंछबिऐन ॥ बिहसिढुरांनैंपीयपैं, नींदघुरांनैंनैंन ॥ ५० ॥ जबपलआवैंझुकतपिय, दर्पनदेतादिषाय ॥ तबअपनीअंषियांनपर, अंषियांरहतलुभाय ॥ ५१ ॥ नींदझुकीपलनिरषिपिय, देतहैंपानबनाय ॥ उतनैंनानिकेषुलतही, इतबीरीछुटिजाय ॥ ५२ ॥ भौंरनिवारतबदनलषि, मनधनवारतजात ॥ फूंकिजगावतलालतब, षुलैंनैंनमुसिक्यात ॥ ५३ ॥ सपीलषैंदुरिद्रुमनिमैं, व्हैंगइचित्रसरीर ॥ निसउनदौंहैंद्दगनिपैं, भईद्दगनिकीभीर ५४ अरसांनींनिरषतप्रिया, जातबिहानीरैंन ॥ नैंननिलषिपियकेंभये, रौंमरौंममैंनैंन ॥ ५५ ॥ धरैंचिबुकतरहाथद्दग, देषतनींदषुमार ॥ लगेरूपकेंरहचटैं, नहिंपौढतरिझवार ॥ ५६ ॥ लषिउरझेसुरझैंनहीं, सबनिसगईबिहाय॥आरसउरझेद्दगनिमैं, पीयरहेउरझाय॥५७॥ क्यौंसुरझैंआरसभरे, नैंननिउरझेनैंन ॥ नागरियाकेहियवसो, यहरूपारसरैंन ॥ ५८ ॥ यारूपारसरैंनिकौं, जबहीसकैंनिहारि ॥

तनकेनैननिमूंदिदैं, मनकेनैनउघारि ॥ ५९ ॥ नागरिनैननिजिहिं लख्यो, यहरूपारसरैन ॥ तिनकेनैनसुनैनहैं, औरनैननहिनैन ६० सारसदृगश्रारसभरे, चितवनिकरतविलास ॥ यारसकेवारसस रस, व्रजजननागरिदास ॥ ६१ ॥ परमतत्वकोतत्त्वव्रज, नागर विपनविहार ॥ जान्यौंचाहैसारयह, तोतूपढिव्रजसार ॥ ६२ ॥ स त्रहसैनिंन्यानवैं, पोसजुसुदिरविबार ॥ नोमीनागरिदासयह, कि योग्रंथव्रजसार ॥ ६३ ॥ इति श्रीव्रजसारग्रंथसंपूर्ण ॥

## अथ बिहार चंद्रिका लिष्यते ॥

दोहा ॥ कुंडलिया ॥ नवलजुगलसहचरिनवल, श्रीगुरुबनन वकुंज ॥ इनकीकृपामनाइकहौं, नवलकेलिरसपुंज ॥ १ ॥ नवल केलिरसपुंजकहौं गिरबनजमुनांकी ॥ नागरकृपामनांउमुरलिहरि दुषदमनांकी ॥ अरुबंदौंअनुराग दुहुनिकौंअमितअमलकल ॥ नवकासरितबिहारचंद्रिकाकहौंकछुनवल ॥ नवलजुगलसहचरिन वलश्रीगुरुबननवकुंज ॥ इनकीकृपामनाइकहौंनवलकेलिरसपुंज ॥ ॥ १ ॥ कवित्त ॥ बृंदावनकुंजनकेरहसिउपासकजेनिसदिनस्या मास्यामहीकोगुनगांवनौं ॥ सज्जनसनेहीसुषदाइकरसिकमहासुनि लीलालोचननिनीरढरकांवनौं ॥ नागरियादासहौंहितिन्हैंसंतप्यारे यहैचंद्रिकाबिहारग्रंथताहीकौंसुनांवनौं ॥ बादीआंनधरमीताकैंवि द्याअभिमानहोइजासौंयहजाहीताहीभांतिकैंदुरांवनौं॥ २ ॥ दोहा॥ नित्यविहारीलालसंग, परमप्रियासुकमार ॥ भूमिरैनतारेनतैं, इन केअधिकविहार ॥ ३ ॥ ॥ छप्पय ॥ नितिराधानंदलालरूपर

सरासससनेही ॥ नित्यलगनरसमगनकरतकलकेलिअछेही ॥ नित्य दुहुनिचितचाहचटपटीचौंपनवेली ॥ नित्यसुपदसंकेतरचावतरुचि रसहेली ॥ तैसोकुसमितबनमनौंमनमथसरपंजरकियो ॥ नागरनि त्तबिहारकौंलपिदंपतिहुलसतहियो ॥ ४ ॥ ॥ चौपाई ॥ उज्जल पक्षिकीरैंनिचैंनउज्जलरसदैंनी ॥ उदितभयोउडिराजअरुनदुतिम नहरलैंनी ॥ ५ ॥ महाकुपितव्हैंकामब्रह्मअस्त्रहिंछोडयोमनौं ॥ प्राचीदिसतैंप्रजुरतिआवतिअगनिउठीजनौं ॥ ६ ॥ दहनमानपुर भयेमिलनकौंमनहुलसावत ॥ छावतछिपाअमंदचंदज्यौंज्यौंनभ आवत ॥ ७ ॥ जगमगातबनजोतिसोतसुअमृतधारासे ॥ नवद्रुम किसलयदलनिचारुचमकततारासे ॥ ८ ॥ स्वेतरजतकीरैंनचैंनचि तमैंनउमहनी ॥ तैसीमंदसुगंधपौंनादिनमनिदुपदहनी ॥ ९ ॥ म धिनायकगिरराजपदिकबृंदावनभूषन ॥ फटिकसिलामणिशृंगज गमगतदुतिनिर्दूषन ॥ १० ॥ सिलसिलाप्रतिचंदचमाकिकिरननि छबिछाई ॥ बिचबिचअंबकदंबजंबझुकिपायनिआई ॥ ११ ॥ ठौरठौरचहुंफेरढेरफूलनकेसोहत ॥ आवतसुपदसुगंधअंधमदभंवर बिमोहत ॥ १२ ॥ बिमलनीरनिर्झरतिकहौंझरनासुपकरना ॥ महा सुगंधितसहजबासकुंकुममदहरनां ॥ १३ ॥ कहौंकहौंहीरनपचितराचि तमंडलसुरासके ॥ जटितनगनकहौंजुगलपंभझूलनाविलासके ॥ ॥ १४ ॥ ठौरठौरलपिठौररहतमनमथसोभारी ॥ बिहरतबिविधिबि हारतहांगिरपरगिरधारी ॥ दोहा ॥ कहतिकहतिकहांलगिकहैं, अ बकबिछबिअभिराम ॥ प्रियाकमलपदपरसहित, धरयोरूपागिर स्याम ॥ १६ ॥ छिपातीयबनमित्रसौं, मिलतभइवसरूप ॥ निर

षिभयेआतुरअतन, रसिककुंवरव्रजभूप ॥ ॥ चौपाई ॥ चलेल
टकिगिरवोरलालचितचोरबिहारी ॥ मिलनमनोरथकरतवसीउर
प्रानपियारी ॥ १८ ॥ चढिगिररसिककिसोर मुरलिकाअधरधरीहैं
अतिआकर्षनमंत्रमधुमईधुनिउचरीहैं॥१९॥ कुहकिउठेबनमोरकंदि
रागरजतझांई॥चितचकृतमृगबृंदबिथामनमथसरसांई॥२०॥पहुंची
महलनिजायकछुकधुनिथोरीथोरी॥राधेराधेसुनतनांमनिजचलीकि
सोरी॥२१॥कवित्त॥भीतरितैंबाहिरनिकासिपायधारचोतबअंधकारि
फारीभूमिपैठचोढिगसेसकैं॥ परीहैंअवाईचंद्रचंद्रिकाओदामिनीपैंउ
तसुभसुगनव्हैंकुंवरव्रजेसकैं॥भोरकैसोजानिकैंप्रकासपंछीबोलिउठे
घिरिगईभौंरभीरनागरिसुदेसकैं ॥ देषीतबचलतअचलतेऊचलभये
हलचलपरीधूमधीरजनरेसकैं ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ धोषैंपरेचकोर
मोरअलिशुकसंगधाए ॥ चित्तचकितव्हैंरहतअरबरतअतिअकुला
ए ॥ २३ ॥ झुनकिझुनकिनूपुरनिछईधुनिवनसुपसाधा ॥ कुंजनि
कुंजप्रकासहोतआवतश्रीराधा ॥ २४ ॥ दोहा ॥ आवतदेषीभांव
ती,रूपरासिसुकवार ॥ मुरलीकटिअटकाइकैं,उतरतनंदकुंवार
॥ २५ ॥ सवैयो ॥ प्रानहरैंहरैंपायधरैंउतरैंगिरश्रृंगतैंबांहझुलाए ॥
छोरपीतांबरमोरगहैंछबिसौंमगहीमगल्यावतलाए ॥ बाहुलतानिल
तानिरवारिकहौंझुकिकैंनिकसैंअकुलाए ॥ छाकचढीगिरकेजुउता
रकीनागरिदेषतदेहभुलाए ॥ २६ ॥ दोहा ॥ किधौंचंदप्रतिचंद्रि
का,किधौंदामिनिघनघोर ॥ यौंमिलिगरवहियांचले, जमुनावो(
किसोर ॥ २७ ॥ कवित्त ॥ चलेगिरवोरतैंमरालचालप्रियापीवगा
वैंगांनमंदधुनिआवैंतटिजलकैं ॥ चहौंऔरभौंरमृगबृंदघेरैंहरैंमुष

ललितलुनाईरूपआननपैललकैं ॥ नागरिकुंवरिमुपश्रमकनवारि ताहिपैछैंपीतपटसौंनिपटहारिहलकैं ॥ दोऊगरबांहींधरैंदोऊदेतपैं डहरैंदोऊमुरिदेषवेमैंलागतनपलकैं ॥ २८ ॥ दोहा ॥ तिमरकुंज आवततऊ, मगपावततिहिंबेर ॥ दंपतिअंगउजासकौ, भौमंडल चहौंफेर ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ अतिनिर्जनएकांतमदनतसकरसेवतव न ॥ द्रुमपातनकीछांहछिपाछविछाइरहीघन ॥ जहांजहांसुंदरटौ रलहतआनंदरसबाढे ॥ ठठकितहांगहिलतालूंबिफिररहतहैंठाढे ॥ ॥ ३० ॥ तांनलेतपियसंगमिलीऊचैंसुरस्यामा ॥ गावतकरतकलो ललेललोचनबहोभामा ॥ ३१ ॥ इहिंविधिरागसमाजसाजलैंजसु नाआए ॥ मत्तद्विरदमनौंअगडतोडिगहगडसौंधाए ॥ ३२ ॥ नाव चावसौंचतुरसषिनजमुनातटिलाई ॥ बरनविमानविमानकरतसो भाउफनाई ॥ ३३ ॥ हाटिकहीरनजटितस्वेतअगनितछविबाढी ॥ ससिकिरननिमिलिझलमलातअतिद्युतिभईगाढी ॥ ३४ ॥ बंगला चारसुढारमंजुमोतिनकीझालरि ॥ जगमगातनवज्योतिकरतिचकचौं धीहालरि ॥ ३५ ॥ जारीजरीजराइकटहराजगमगजोति ॥ ठौरठौ रफबिलगेअमलमानिगनबहोमोती ॥ ३६ ॥ कनककमलमनिज टितअग्रअतिसैंछबिसोहत ॥ ताबिचआएभंवरस्याममनमथमनमो हत ॥ ३७ ॥ छबिसौंनिहुरिचढावतिप्रियहिभुजनभरिप्यारे ॥ दु हुंदिसिइकटकरहेरूपचितवतदृगतारे ॥ ३८ ॥ सोभासंपतिजीति मीतमिलिबैठेदंपति ॥ चढैंललितललितादिनवलनवकाकछुकंपति ॥ ३९ ॥ परसिअमलपदकमलमनौंसात्विकभयोभारी ॥ कंपनीर डगमगनिलगनियातेंसुपकारी ॥ ४० ॥ दोहा ॥ लपटिरहीपतिवा

रइक, नवलसर्पासुकुमार ॥ मानौंकदलीषंभप्रति, मुक्ताबेलिबिहार ॥ ४१ ॥ चौपाई ॥ नवलमलाहैंदेषिदृगनकोछुटितसलाहैं ॥ चलवतिचंपाचारुकरनजगमगतछलाहैं ॥ ४२ ॥ सोहतस्वेतलिबासतासकेललितलपेटा ॥ सिरकलगोकीहलनिचलनिमनौंमैनचपेटा ॥ ४३ ॥ हलतनवीनैंहारुचारुझीनैंतनजामां ॥ अतिसुदेसनरबेसबनीनवसुंदरबामां ॥ ४४॥ चमकिचपलताटंकबंकअलकैंझुकिझूलत ॥ मुषगावतगुनस्यामकामधुनिसुनिसुधिभूलत ॥ ४५ ॥ चंपावलिदुहुंओरचलतअैसीछबिलागैं ॥ मनौंवहीपाइनिपाइधाइकढिसोभाआगैं॥४६॥यौंजमुनांबिचिनावधारहीधारचलाई ॥ पूरनचंदप्रकासछाइरहिबिमलजुन्हाई ॥४७ ॥दोहा॥ हीरनकेभूषनमुकट, रजतबसनासिंगार॥ उभैअंगबांनिकभई,जोन्हछांहतिंहिंबार४८॥चौपाई॥बैठीदंपतिनिकटिललितललितादिकगावैं ॥ रसगोलकढोलकबजिबींननिपरनमिलावैं॥४९॥ रागतरंगनिरंगहासरसरासबढ्योहैं॥ चितछाजैंआनंदमहलकैंउमंगिचढ्योहैं ॥ ५० ॥ प्रियागांनरसमत्तभयेतनमनसबवारत ॥ रीझकोऊसिरनावतकोउमुषभंवरनिवारत ॥ ५१ ॥ कानानितांनानिकेबितांनसेतानिदयेहैं ॥ पसुपंछीहूसुनतगांनधुनिबिबिसभयेहैं ॥ ५२ ॥ धुनतसीससिरबधूसुनताबिचमुरलीमोहन ॥ नभबिमानसंकुलितफूलबरषतिथकिगोंहन ॥ ५३ ॥ कुसमितमईप्रवाहभईकालिंद्रीगोरी ॥ जितातितनवकाचलतअमरतितबरषतझोरी ॥ ५४ ॥ दुहूंतीरतरुभीरुनीरसापाझुकिपरसत ॥ बिचिबिचिबृंदाटहलमहलफूलनकेसरसत ॥ ५५ ॥ कहौंनालिनकेदलिनरुचिररुचिरापीसैंनी ॥ सीतलपवनपरागलियैंआवतसुषदैंनी॥

॥ ५६ ॥ सुंदरपुलिनपुनीतकहूंकहूंविचनिकरीहैं ॥ समरपेतकिधौं सेतजरीकीफ़रसिकरीहैं ॥५७॥ दोहा ॥ सलिलबीचसुथरीपुलिन, तहांलेसनहिंपंक ॥ मानौंमोहनहितलियैं, जमुनांअंकपरजंक ॥५८॥ चौपाई॥दुहूंदिसितहांगंभीरतीरनिरमलगतिहरई ॥ चलतनावचित चावचमकिजलमीनउछरई ॥५९॥ मनहुरजतद्युतिपत्रतत्रचमकंत सुहाई ॥पूरनचंदप्रकासनीरझिलमिलिछबिछाई ॥ ६० ॥ कवित्त ॥ जमुनांकेबीचफैलीझिलिमिलिछिपाकरकीपावतनपारतिहिंसोभा केबषानको ॥ चलीजातमध्यधारनवकाविहारचारकैधौंप्रतिबिंबय हताकेरतनानिको ॥ किधौंदीपमालकाकोउच्छववरुनगृहनागरप्र कासयहजोतिसरसानिको ॥ किधौंकोरिकोरिकअह्लातचंदचारुकि धौंचमकैंचपलभयोचूरचपलानिको ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ झिलिमि लिहीझिलमिलिचले, हिलमिलिकरतबिनोद ॥ फिरेदूरतैंपूररस, षेलतहसतप्रमोद ॥ ६२ ॥ ॥ चौपाई ॥ रहीपाछलीरातिरसम सीनवलरंगीली ॥ निरषिप्रियेंआलसबसअंपियांपरमरसीली ॥ ॥ ६३ ॥ पायचैंनरसअैनसैंनहितचलेभांवते ॥ महामधुरधुनिगांन तांनवहभांतिगांवते ॥ ६४ ॥ त्रिपुनतलहटीतीरनीरसोभाजुभली हैं ॥ पातनकीपरछैंयांआवतनावचलीहैं ॥ ६५ ॥ चितवति चलतिनिकुंजकुंजरहबोनिसजामैं ॥ यामैयामैंकहतयामैंनहिवामैंवा मैं ॥ ६६ ॥ मदनजुह्नैयाकुंजसदनसरसीदरसीइक ॥ परमप्रभा कीरासिनिरषिउपजतदृगकौतिक ॥ ६७ ॥ तहांकुंजकेमूलनावच लिलगीकिनारैं ॥ पहिलैंप्रीतमउतरिपानिगाहिप्रियाउतारैं ॥ ६८ ॥ ॥ दोहा ॥ मदगयंदगतिमिलिचले, ॥ आलसअमलरसाल ॥ होत

चालमैंचालचित, मालमहालमैंहाल ॥६९॥ चलतजातसुमिरनक रत, नवलनावकीकेलि ॥ कीनोंकुंजप्रवेसमिलि, सबसुषसागरझे लि ॥ ७० ॥ प्रियारहीपलटनिबसनि, गएअटापरश्याम ॥ कोटि कामसेवतसदा, सोसुंदरसुषधाम ॥७१॥ कबित्त ॥ सोएसुषसैंनी परंछबिसौंरसालललालउरतरउसीसादियैंप्यारीमगहेरहैं ॥ धाइधुनि नूपुरनिआईहैंवधाईदैंननागरउमंगअंगआनंदउरेरहैं ॥ ललितसहे लिनमैंललिताबलितकरलटपटीडगपगपरतअवेरहैं ॥ मंदगतिआ वतिठटकिहसिहेरिहेरिपियमनहोतमहाआनंदकेढेरहैं ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ बिछरीघनज्यौंदामिनी, उतरीसखीमिलाइ ॥ दईरंकनि धिबहुतजिम, लईलालउरलाइ ॥ ७३ ॥ कबित ॥ उज्जलमहलउ चसुच्छचंद्रिकाप्रकासमंदगतिसीतलबयारसुषकारीजू ॥ कसितसुडो रीसेजचोसरचबेलीबेलीफूलिरहीफूलनिकीबासमनुहारीजू ॥ चौकी चारुअतरगुलाबसीसेचमकतससिकीमयूषैंमिलिकौतकउजारीजू ॥ पूरनसरदरैंनीबिलसतसुषसैंनीकोककलानागरबिहारनिबिहारीजू ॥ ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ सींचतनीरगुलाबसौं, पियतियउरजसुढार ॥ कंजमनौंमकरंदकी, ढौरतशिवपरधार ॥ ७५ ॥ कवित्त ॥ तनकत नकबाजैंझनकचुरीनकीओगरैंहरवाईबातभनकसुहावती ॥ तूटेहार फूलनकेछूटेउरबंधनिमैंदोऊमुषचंदनिमैंसोभासरसावती ॥ लटप टाइमूरतिगुलाबजलभीजरहीबिगलितबारबासमदनबढावती॥ रूप ब्रसनागररसिकहसिहेरिहेरिफेरिफेरिभेटतभुजानभरिभावती ॥७६॥ ॥ दोहा ॥ प्यारीमोहनलालप्रति, हिलनिमिलनिइहिंभाइ ॥ मां नौंतररसिंगाररहि, पीतलतालपटाइ ॥ ७७ ॥ कबित्त ॥ रतिरसबा

तनिकरतमुसक्यातजातत्यौंत्यौंहोतआनंदकीअंगअंगभीरहैं ॥ परसतहाथनाथलेटिलपटातगातकोइलसीकुहकिहरतउरपीरहैं ॥ घुरतदुरतहसिजुरततिरीछीदीठसरकिसरकिढिगढरतसधीरहैं ॥ उघरे उरोजनभरतअंकनागरसुकसिगसिजातमनौंएकहीसरीरहैं ॥७८॥ ॥ दोहा ॥ दोउकोककलानिमैं, पंडितपरमप्रवीन ॥ सोवसनांकेसैंकहौं, रसनांनैंननिहींन ॥ ७९ ॥ कवित्त ॥ मरगजीसुवासवसआसपासभंवरभीरभ्रमतअधीरभईधीरहूनताहिकैं ॥ चांदिनिमैंसोएमिलिसुरतश्रमितअंगआनंदतरंगलीलासिंधुअवगाहिकैं ॥ झीनोंपटफारिफैलीबाहिरबदनकांतमांनौंजौंह्वजीतबेकौंचलीहैंउमाहिकैं ॥ नागरियाअरुझांनेग्रीवनिसृनालभुजपुलिजातआंपैंजवरहिजातचाहिकैं ॥ ८० ॥ दोहा ॥ चनकमूंदिजहांतहांभई, निद्राबसिबिश्राम ॥ दंपतिपाइपलोटहीं, नवलसषीमनभाम ॥ ८१ ॥ सवैयो ॥ भौरव्हैंआयोनभायोदुहूंनकौंबोलेविहंगमवानीसुहांते ॥ बीननिमांझप्रबीननिरागबिभाससुनाइजगाएजहांते ॥ बैठेतबैंउठिआरसअंगव्हैंनागररूपमहाउफनाते ॥ नींदभरेलगिआवतलोचनरूपकेलोभपुलैंरसमाते ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ नींदभरेतनलटपटे, छकेदृगनिकीहेर ॥ नागरियाकेहियवसो, कुंजभुरहरीबेर ॥ ८३ ॥ जमुनांवृंदाबिपुनकी, बरनीकेलिअनूप ॥ करैभांवनांनित्तजो, होइभांवनांरूप॥८४॥सतरैसैंअठ्यासिया, संवतसांवनमास॥नवविहारयहचंद्रिका, करीनागरीदास॥८५॥इतिश्रीविहारचंद्रिकासंपूर्ण॥

## अथ भोरलीला लिष्यते ॥

दोहा ॥ प्रेमानंदसरूपश्री, गुरपदपंकजवंद॥दंपतिलीलाभोर

की, कछुवरनौंरसकंद ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हरिहितमूरतिप्रियारमतर
जनीबहोभांतियां ॥ रह्योरंगनहिंपरतकह्योराहिपहरिकरातियां ॥ नैं
ननिवैंननिअंगअंगआलसजबछायो ॥ सोयेसौंधीसेझमिहींपटदुहुं
नउढायो ॥ २ ॥ चनकमूंदिबिश्रामकुंजपोढेपियप्यारी ॥ छ
बिसौंबाहुमृनालनकीअरुझनहींन्यारी ॥ नींदउचटिघुलिजातजब
हिजाकेढिगजेरत ॥ जोइरीझछकिरहतनिकटइकटकमुषहेरत ॥
॥ ३ ॥ इंहविधिकरिसुषसैनचैनजुतबितईरजनी ॥ भईभुरहरीबे
रजानिजुरिआईसजनी ॥ लैकैंबीनप्रवीनललितललिताजुवजायो॥
अद्भुतरागबिभासकुंजमंदिरविचछायो ॥ ४ ॥ चहचहाटपंछीन
कियोसुषसमैंसुहावन ॥ सीतलपवनपरागकंवलजलपरसतआवन
सियरोलग्योसमीरभनकपरिकाननमहियां ॥ उठेलटपटेलालबा
लदोनैंगरबहियां ॥ ५ ॥ घूंमतझूंमतझुकतरुकतअंगनिअलसावैं॥
सुनिसुनितांनसुजांनमुंदीआंषनिमुसक्यावैं ॥ अंगमरगजीबास
महकिभौंरनिबिचआई ॥ व्हैगयोरूपउजासकुंजऔरैंछबिछाई ॥
॥ ६ ॥ रंगभरेमुसक्यातिलतामंदिरतैंनिकसे ॥ सहचरिआईझूं
मिमुदितदृगवारिजबिकसे ॥ एकदुरावतपवनएकमुषबीरीदेंहीं ॥
एकदुहुंनिपैरीझिबलइयाफिरिफिरिलैंहीं ॥ ७ ॥ अस्तबिस्तअव
तंसएकगहितिह्नैंसंवारत ॥ इकतोरतत्रिनएकवारिमोतिनलरडारत
पीककपोलनिलीकनिरषिअंजनधरनीपर ॥ मनहींमनमुसक्यातस
षीआनंदहियेभर ॥ ८ ॥ दर्पनकुंजकीओरचोरचितकेपधराये ॥
चहूंओरातियवृंदमत्तगजगतिचलिआये ॥ दांतनमंजनकरतलगीनैं
सुकहीवरियां ॥ फिरवैठेनियराइसौंजासिंगारसुधरियां ॥ ९ ॥

गउरस्यामअभिरामअंगमिलिदर्पनदेषैं ॥ भूलतसवैंसिंगारदृगननहिंलगतनिमेषैं ॥ सवैंसषीसंभरावतजावतभंवरउडावत ॥ रचिरचिरुचिरसंवारसुघरासिंगारवनावत ॥ १० ॥ गउरपीठअभिरामस्यामगहिगूंथतवैंनी ॥ तियफिरअंजनदेतकमलनैंननिमृगनैंनी ॥ वनीकरनकवनीयवनीउतलटघुवरारी ॥ करनफूलपरफूलधरतइनफूलविहारी ॥ ११ ॥ परमहंसौंहैंइंदुविंदुरचिहींमुषगौरैं ॥ धरैंचिवुकतरहाथनाथदृगसौंदृगजोरैं ॥ भयेजातउरहारहारपहनांवतमोहन ॥ बढतरंगभुवभंगकछुकप्यारीव्हैंसोहन ॥ १२ ॥ नथवेसरिकैंदेतदुहुंदिसरंगबढचोहैं ॥ नासाचढनिसरूपस्यामकेचितजुचढचोहैं ॥ वैंनाभालवनायवहोरिमुपकमलनिहारत ॥ उतफैंटासिरपीतझुकातिकछुप्रियासंवारत ॥ १३ ॥ पेचनकीचहुंवोरमैंडअैंडनिलचिढौंहीं ॥ सुंदरकरनवनायचंद्रिकाधरीटिढौंही ॥ रतनपेचरचिवांध्योहारिकैंअतिरंगभीनौं ॥ छुटीकिरनिचहुंफेरघेरछविमंडलकीनौं ॥ १४ ॥ पटभूषनसवसाजश्यामपहराईसारी ॥ वनिठनिठाढेसरसपरसपरप्रीतमप्यारी ॥ तवराधापदगोदमोदजुतलैंअनुरागी ॥ चरनकंजमंजीरवैंठिवांधतवडभागी ॥ १५ ॥ चलिवैठेसैंनौंयसपींदर्पनलैंठाढी ॥ अंगअतरलपटावनिदावनिवहोविघवाढी ॥ प्रीतमकेसुषसुषीकरतपियसोईभावत ॥ दंपतिमनकीलगनिकहाकौंनैंपैंआवत ॥ १६ ॥ दोहा ॥ कैसैंहूजातनकहो, सुषवरष्योतिहिंकाल ॥ लालसिंगारतवालकौं, वालसिंगारतलाल॥१७॥ चौपाई ॥ पटरसभोजनसौंजात्रिविधभांतनकरिआंनी ॥ सुंदरसीतलविमलसुवासतभरिधरपानी ॥ करपल्लवच्छैंजातअधरअधरानि

मुसक्याते ॥ देतपरसपरग्रसाकछूइहिंलोभलुभाते ॥ १८ ॥ नैंन निनैंननिषगेपगेरसरूपरंगीले ॥ जैंवतबेरअबेरकरतअनहितरंग बोले ॥ कौंनैंलौंनैंरूपकोरनैंनानिकौंभावत ॥ घरीपलकछिनजा मजुगलइंहिंकामबितावत ॥ १९ ॥ दोहा ॥ मिलिजैंवतदोउदरस रसरसनांरसबिसराय ॥ गईछुधासबउदरकीरहीदृगनिमैंआय॥२०॥ चौपाई ॥ सषिनलयोअवसेषरह्योआनंदहियैंभर॥अचवनकरिकैंदई दुहुंनबीरीसुपसुंदर ॥ परदादयेउठायअगरबरिधूमसुवासत ॥ चली आरतीसाजजोतजगमगतप्रभासत ॥ २१ ॥ मोतिनझूंमतझवाझ लकिरहिदीपकबतियां ॥ बरतकदलिकपूरआरतीआवनअतियां ॥ गावततोडीरागतांनमधुरैंसुरसांची ॥ नियरैंआईझूंमिरूपगहमहसी मांची ॥ २२ ॥ दोहा ॥ चलतवारतीपैंउतैं, कवलनैंनकीसैंन ॥ र हेकरतछकिआरती, रूपआरतीनैंन ॥ २३ चौपाई ॥ दर्पनमंदिर मांझआरतीकरिकैंबहोरी ॥ वदनमाधुरीपानकरतअंषियांनअहो री ॥ सुमनसेझउठिसोयेंभोयेरतिरसवातन ॥ अरुझेतनमननैंनक रताहितउरझीबातन ॥ २४ ॥ बैठीबाहिरठौरसषीललितादिसुघर मुनि टीकदुपहरीबेरवजतबीनांसारंगधुनि ॥ इहिंबिधिलीलानित्त प्रातकीकछुकसुनाई ॥ दिनदिनकोसुपसषीकहौंकौंनैंपैंजाई॥२५॥ दोहा ॥ हरिगुरसंतनिकरिकृपा, दीनौंप्रेरहुलास ॥ लीलाभोरसुहा वनी, कहीनागरीदास ॥ २६ ॥ दंपतिलीलभोरकी, पढैंसुनैंजो भोर ॥ जाकेहियनिसदिनरहैं, झलकतजुगलकिसोर ॥ २७ ॥ इतिश्रीभोरलीलासंपूर्ण ॥

# अथ प्रातरसमंजरी लिष्यते ॥

दोहा ॥ सषीभोरलषिछकिरही, स्यामास्यामसुजान ॥ मुंदी पलकअलकैंषुली, अधरथकितमुसक्यान ॥ १ ॥ लताभवनललितादिसषि, बजवतबीनविधान ॥ मुदेनैंनमुसकांवहीं, सुनिसुनितांनसुजान ॥ २ ॥ पहपियरीपियरीसमैं, लषिदंपतिसुकुमार ॥ रंगभरीलपटानितन, अरुझेहारसिंगार ॥ ३ ॥ बहियांसीसअदाहसौं, धरिपैंढेमिलिमित्त ॥ सोवनकीसोवनमही, जगैंलगौंहौंचित्त ॥ ४॥ भईभुरहरीकरनदैं, कुंजछांहसुषसैंन ॥ केलिपगेसबनिसजगे, अबहिंलगेहैंनैंन ॥ ५ ॥ कैसैंनीदनिवारियैं, अरुअंगनिउरझांनि ॥ भोरभयोदिनकरकिरनि, आईरंध्रलतांनि ॥ ६ ॥ छुटतनआरसरसपगे, जानतभयोजुप्रात ॥ ओढैंपियरौपटदोऊ, फेरफेरलपटात ॥ ७॥ निसबीतीसबरंगमैं, उठेभोरसुकुमार ॥ आयसंवारतसहचरी, भूषनवसनसिंगार ॥ ८ ॥ लगेलगेदृगआंवहीं, बैठेपगेकिसोर ॥ नीलपीतपटपलटगे जगेरगमगेभोर ॥ ९ ॥ अलसौंहैंनिसकेजगे, सरबरसौंहैंनैंन ॥ इकटकसौंहैंअधषुले, सहजहसौंहैंनैंन ॥ १० ॥ आननसौंआननछियैं, पाननरचेकपोल ॥ लषिरीझछबिआरसी, बिहसैंलोयनलोल ॥ ११ ॥ आरससौंअरुझीपलक, अलकजुबेसरिमांहि ॥ अरुझ्योबैंनादेषिकैं, पियमनसुरझ्योनांहि ॥ १२ ॥ लसतभोरढीलेदृगनि, ढीलीमृदुमुसकानि॥ पियमनगाढैंबांधिगयो, सुनिढीलीबतरानि ॥ १३ ॥ उनदौंहांअंषियांनकी, पलकैंझलकिअनंग ॥ पियगहरैंरंगमैंरंग्यो, अधरनिफी

केरंग ॥ १४ ॥ छबिझलकैंअलकैंसिथल, सबतनसिथलसिंगार ॥ सूचततियतनासिथलता, निसहृढलगनबिहार ॥ १५ ॥ रसउरझी निसस्यामसौं, आरसउरझेबैन ॥ तेरीउरझीअलकमैं, मेरेउरझे नैन ॥ १६ ॥ नींदभरेतनलटपटे, छकेहृगनिकीहेर ॥ नागरिया केउरबसो, कुंजभुरहरीबेर ॥ १७ ॥ इतिप्रातरसमंजरीसंपूर्ण ॥

## अथ भोजनानंद अष्टक लिख्यते ॥

दोहा ॥ स्यामास्यामसिंगारसजि, जैंवतदृगसुखदैंन ॥ कोजन कविबरननकरैं, वहमिलिभोजनलैंन ॥ १ ॥ नवलकिसोरीलैंगसा दसनखंडकरिदेत ॥ रसिकसांवरोतिहिंफलहिं, भागसफलकरिले त ॥ २ ॥ मिलिजैंवतदोउदरसरस, रसनांरसबिसराय ॥ गईछुधा सबउदरकी, रहीदृगनिमैंआय ॥ ३ ॥ देतगसासुषतीयकैं, चित ईकरिभुवभंग॥रह्योकौंरहीहाथमैं, भईदृगनिगतिपंग॥४॥ सरसपरस कौंतरसिजिय, लालकौंरकरलेत ॥ चतुरचौंकितबलाडिली, अधर छुवननाहिंदेत ॥ ५ ॥ कौंरलेतकरकंपव्है, देतबीचछुटिजात ॥ स्वे दसिथिलासियरायतन, छुवतअधरमुसक्यात ॥ ६ ॥ देतकौंरहसि परसपर, नैननिंनैननमिलाय ॥ भूलिजातभोजनदोऊ, दीठरहतठह राय ॥ ७ ॥ अचवनिमैंरचवनिभई, हसिहसिबीरीदैंन ॥ नीरीनाग रियासखी, लषिसियरावतनैंन॥८॥इति भोजनानंदअष्टकसंपूर्णम् ॥

## अथ जुगलरस माधुरी लिख्यते ॥

दोहा ॥ हरिराधावृंदाबिपुन, नितबिहाररसएक ॥ बिछुरतनां हींपलकहू, बीततकलपअनेक ॥ १ ॥ नवनिकुंजमनकौंअगम, से

वतकोटिअनंग ॥ जुगलकेलिआनंदको, तहांअखंडितरंग ॥ २ ॥ नैननैनसियरांवहीं, बैनसजीवनमंत्र ॥ मुहाचहीजीयज्यांवहीं, स्यामास्यामसुतंत्र ॥ ३ ॥ दंपतिढिगनवकुंजसषि, करतगांनसारंग ॥ बीनतंमूराखंजरी, वजिदायरमुहचंग ॥ ४ ॥ रससंपतिमिलिबिलसहीं, दंपतिदैंगरबांह ॥ ढिगबीनांबीनासपी, बजवतिद्रुमकीछांह ॥ ५ ॥ बडेबारछबिसौंछुटे, अंसषीनकटिछीन ॥ सबारिझवारनिकेमनौं, मनभरिकावारिलीन ॥ ६ ॥ ललिततमूरावालढिग, सोहतहैंइहिंभाय ॥ समरजीतिद्दगसरानिसौं, तरगसलियोछिनाय ॥ ७ ॥ सषीरूपकीमंजरी, खंजरीटसेनैन ॥ वजैकरनिमैंषंजरी, लजैंपरेवाबैन ॥ ८ ॥ चलतदायरेपैंचपल, चारअंगुरियनरूप ॥ अछियांमछियांसींनचैं, मनौंअमृतकेंकूप ॥ ९ ॥ चंगमुंहमुंहचंगातिय, बजवतिहैंगतिकार॥ बैठचोकमलदराराबिच, मनौंअलिकरतगुंजार ॥ १० ॥ गहगडरागसमाजजुत, राजतबिचनवकुंज ॥ प्रेमरूपगहबरभरे, गौरस्यामरसपुंज ॥ ११ ॥ नित्तकेलिआनंदरस, बिचवृंदावनबाग ॥ नागरियाहियमेंवसो, स्यामास्यामसुहाग ॥ १२ ॥ इति जुगलरसमाधुरीसंपूर्णम् ॥

## अथ फूलबिलास लिख्यते ॥

दोहा ॥ फूलेफूलनिस्वेतबिच, अलिबैठेमधुलैंन ॥ हरिहितवृंदाविपुनमनौं, धारेअगनिततैंन ॥ १ ॥ बनफूल्योफूल्योजुमन, फूलवेसअभिराम, सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिकैंगोरीस्याम ॥ २ ॥ रंगरंगभूपनफूलके, रहेफूलितनझूल ॥ अंतरकोबाहिरमनौं, प्रगटो

यलइतियानिसंभारि ॥ इतउतदोउसरभररहे, व्है ट्टगसरनिसुमार ॥ ॥ ८ ॥ धेनुदुहतजानीसवनि, गउरस्यामकीप्रीति ॥ नागरियाकेहिय वसो, षरिकटहलकीरीति ॥ ९ ॥ इति श्रीदोहनानंद अष्टकसंपूर्णम् ॥

## अथ लग्नाष्टक लिष्यते ॥

दोहा ॥ जवतैंचितयेनैंनभारि, तवतैंछिननहिचैंन ॥ मनमोहनगोह नाफिरत, जागतस्वप्नैंसैंन ॥ १ ॥ मोहनलषिमोहनभई, कहालग्योयह हौंन ॥ सवसूझतमोहनमई, दईभईगतिकौंन ॥ २ ॥ लगीलगनिह रिमुखनिरषि, डारचोसवसुखरूंद ॥ जोहूंऐसोजानती, रहतीनैंन निमूंद ॥ ३ ॥ कौंनघरीकीलगनियह, अरीभरीनहिंजात ॥ मिट तनांहिदिनरातिजिय, स्यामरूपउतपात ॥ ४ ॥ घरवनकहुंनाहिंल गतमन, रहतस्यामतनलीन ॥ अरीढटोनांनंदकैं, कछुटौनापढिदी न ॥ ५ ॥ नैंननिदुषनैंनानिलगैं, तनमनदुषदुषगेह ॥ एदइयाकौंनैं दयो, दुषकोनांमसनेह ॥ ६ ॥ हरिसौंलगनलगायकैं, भरीरहतनि तनीर ॥ रिझवारानिअंषियांनसौं, हौंहारीरीवीर ॥ ७ ॥ नागरसैंन निसैंनमिलि, वनिजुनैंननिनैंन ॥ वनतवनतऐसीवनी, कहतव नैंनहिंवैंन ॥ ८ ॥ इतिश्रीलगनाष्टकसंपूर्ण ॥

## अथ फागबिलास लिष्यते ॥

दोहा ॥ फागविनांकहालागसुष, लागविनांकहाफाग ॥ फाग लागकीठौरव्रज, निरषैसोवडभाग ॥ १ ॥ व्रजतैंसोभाफागकी, व्र जकीसोभाग ॥ सवजगमैंव्रजफागको, गावतहैंअनुराग ॥ २ ॥ प्या रेनहिंप्यारेलगैं, सोफीसदाउदास ॥ इस्कऐसमादिरापियैं, कैफी

फागुनमास ॥ ३ ॥ कियेरंगीलेफागमैं, हियेरंगीलेअैन ॥ महारंगीलेदिनसबैं, महारंगीलीरैन ॥ ४ ॥ फागजुरसिकनहितभयो, रसिकफागकेहेत ॥ चंदाबिनानिससांवरी, निसबिनचंदासेत ॥ ५ ॥ जाकौंहोरीषेलसौं, तनकहुहुवोनहेत ॥ पालवोढिसोमनुपकी, कियोमुलम्माप्रेत ॥ ६ ॥ फागमासरितुउठतवहो, द्रुमनवपल्लवलागि॥ जडहूकैरोमांचव्है, बिथामदनतनजागि ॥ ७ ॥ इहिंरितुऔसरफागकैं, होतलगनकोराज ॥ डफमोहनमुरलीसुनत, छुटतबधुनकीलाज ॥ ८ ॥ सुनिरीडफवाजनलगे, सिरपरआयोफाग ॥ अबकैसैंदबिहैंदई, अंतरकोअनुराग ॥ ९ ॥ सुलगीलगनहियेनमैं, जुलगीहोरीआय ॥ पुलिगीग्रंथबिचारकी, ॥ मीतमिलनदरसाय ॥ १० ॥ छिनदेषैंबिनदेतदुष, लोयनपरेजुगैंल ॥ फागबावरेदिनानिमैं, रूपबावरोछैल ॥ ११ ॥ गृहकौनैंजातनरह्यो, परतअगौनैंपाव ॥ नितहोरीकेषेलमैं, चितचोरीकोचाव ॥ १२ ॥ बरसांनैंनंदगांवअति, उमगेदलदुहुंओर ॥ समरपेतसंकेतमैं, आजफागजुधजोर ॥ १३ ॥ ढोलकढोलमृदंगबजि, मुरलीडफसहनाय ॥ गहगडगांनधमारिधुनि, रह्योकुलाहलछाय ॥ १४ ॥ उडिगुलालआंधीपहल, डफगरजनिअभिराम ॥ रंगधारबरसनलगी, गउरघटाअरुस्याम ॥ १५ ॥ मचीदुहुंनिमैं फागइत, राधेउतनंदलाल ॥ जमुनांधरगिरतरुलता, पगमृगभरेगुलाल ॥ १६ ॥ लालभईसबदेपियत, घुमडयोगगनगुलाल ॥ मनुदंपतिअनुरागको, डारयोब्रजपरजाल ॥ १७ ॥ राजतिधूंधिगुलालमैं, भरिभरिभाजतबाल ॥ मानौंफूलीसांझबिच, चमकतच

पलाजाल ॥ १८ ॥ दृगनहिंचहतगुलालकौं, तनचहैंउड्योगुला ल ॥ धूंधरिमैंदुरिऔचकां, भुजभरिलीजैंबाल ॥ १९ ॥ सकैंन दृगभरिदेषिकैं, तिनकोबदनमयंक ॥ जिनकौंहोरीपेलमिस, अंक निभरतनिसंक ॥ २० ॥ कौंधिउठतज्यौंदामिनी, भरतभामिनी आय ॥ पियमनलैकैंपलटिफिरि, मिलैंझुंडमैंजाय ॥ २१ ॥ आ वतमुठीगुलालकी, छबिसौंछैलबचात ॥ पैंअचूकदृगलगिहियैं, वारपारभयेजात ॥ २२ ॥ रोकतघूंघटओटसौं, मुरितियापिचकी धार ॥ यहैंबचावनिदेपिउत, बचतनहींरिझवार ॥ २३ ॥ अजूक हांआंपैंभरो, कौंनरीतिकोषेल ॥ इनबातनिरहिहैंनहीं, हमसौंतुम सौंमेल ॥ २४ ॥ लगैंसुफिरनिकसैंनहीं, करीनभावतओट ॥ होरी मैंअंषियानकी, आंषिनहीपैंचोट ॥ २५ ॥ आंषैंभरतगुलालसौं, यहधौंकौंनसुभाय ॥ वदनमाधुरीपानमैं, अंतरपारतहाय ॥ २६ ॥ चतुराईकरिकैंदयो, पौंछनिदृगनिगुलाल ॥ कहतचलावतउतग यो, भोरैंछूटिरुमाल ॥ २७ ॥ चलतगुलालनिझोरियां, माची धूमधमारि॥ फागषेलझकझोरियां, फिरतगोरियांग्वारि॥२८॥पटछू टतछूटतनहीं, रहेपेलरसभोय॥हारटूटिपाइनपरत, हारनमानतको य ॥२९॥ नागरियागतिरीझकी, क्यौंहूजातकहीन॥दंपतिफागवि हारसर, भयोलीनमनमीन ॥ ३० ॥ इतिश्रीफागविहारसंपूर्ण ॥

## अथ ग्रीषम बिहार लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ जेठमासकोदुपहरी, आधीरातिसमान ॥ दुरिमिलि सुपवहोविधिकरैं, स्यामास्यामसुजान ॥ १ ॥ ग्रीषममैंगतिसिसर

बन, निबिडग्रौसअंधियार ॥ सुषउजियारैंकरततहां, दंपतिबितन बिहार ॥ २ ॥ सैंनीकदलीदलनकी, रचीकमलदलनैंन ॥ कुंज छांहदंपतिकरत, ग्रीषमरितुसुषसैंन ॥ तनसांनैंसउगंधसौं, मनठा नैंहितढेर ॥ कबहूतहषांनैंमिलैं, ठीकदुपहरीबेर ॥ ४ ॥ चंदनग्रं गलगांवहीं, आपलगेसेजात ॥ दंपतिमनसियरांवहीं, सपीनैंनासि यरात ॥ ५ ॥ रितुगरमीगरमीजुहित, तनगरमीनाहिंलाल ॥ ढांपी ढोरिगुलाबपैं, चितसरमीक्यौंबाल ॥ ६ ॥ अमितफुंहारेकौझुकी, नीरफुंहारैंलेत ॥ गाढीजोबनमदछकी, ठाढीरापतषेत ॥ ७ ॥ भुवबरुनीअलकानिरही, फबिजलजंत्रफुंहार ॥ सरदकमलपरओ सज्यौं, लषिरीझैंरिझवार ॥ ८ ॥ आईतियजलहोजबिच, चिहुटे भीजीनिचोल ॥ पियदृगसीतलकरिकरैं, ग्रीषमकुंजकलोल ॥ ९ ॥ षेलतछींटनिजलमगन, तियनसंगनंदलाल ॥ मानौंउत्सवबरुनगृ ह, उछरतमुक्ताजाल ॥ १० ॥ तिरततियाजलहोजबिच, रही जोतितनजागि ॥ पांनीऊपरफिरतहैं, मनौंफिरंगकीआगि ॥११॥ चुभकीलैंतियपरसहीं, अंगसरसईकाम ॥ रंगबरसहींदृगनिमैं, हो जमोजअभिराम ॥ १२ ॥ सुषबाहिरजलकेलिमैं, ताहिनचाहत जीव ॥ बहैंबूडिबोईभलो, तामैंपरसतपीव ॥ १३ ॥ भीजेसुषवा हिरलसैं, तियगनहोजअहांहि ॥ अमलकमलसेजोतिके, जगमगा तजलमांहि ॥ १४ ॥ आसपाससुषतियनकैं, फैलतजलबिचवार॥ डोलतहैंमनौंउदधिबिच, उरझेचंदासिंवार ॥ १५ ॥ निकसीकरि जलकेलिसब, चितवतिनंदकिसोर ॥ दुरेअंगलषिप्रगटदृग, भये भरेकेचोर ॥ १६ ॥ जलभीजेनवतियनके, चुवैंवसनतनहेम ॥ ग्रं

तरतैंउमडयोमनौं, लोपिनेमकौंप्रेम ॥ १७ ॥ सुंदरगौरैंतनलगे, भी जेवारबिसाल ॥ सीतलचंदनपूतरिनु, मनुपलटेअहिजाल ॥ १८ ॥ दिनगतिनिसआगमठयो, कीनैंतियनसिंगार ॥ स्यामसजीवनिग नानिमनु, दमकेदीपगजार ॥ १९ ॥ सजिमुकेसकेबेसतिय, म नहुमैंनकीफोज ॥ फूलझरीछोडतकरनि, अजबहोजपरमोज२०॥ दिनग्रीषमसुषमुषकहा, कहैंनागरीदास ॥ फिरसजनीदंपतिकरत, रजनीरुचिरबिलास ॥ २१ ॥ इति श्रीग्रीषमबिहारसंपूर्ण ॥

## अथ पावसपचीसी लिख्यते ॥

दोहा ॥ जडअवनीरितुवंतव्हैं, रसमैंनीरसठौर ॥ भीजीपावसरि तुरची, रूषीरितुसबऔर ॥ १ ॥ आवैंबदराकामदल, मोरनकी बअवाज ॥ फिरैंदुहाईसबसदन, होतमदनकोराज ॥ २ ॥ बरिषा बनघहराइतब, धीरनहींटहराय ॥ उठैंजुहियहहरायमुनि, तपता रीछुटिजाय ॥३॥ कीनौंमैंनिरधारसुनि, पावसघनघहरांन ॥सबके मनजीतेमदन, बाजतसदननिसांन ॥ ४ ॥ घुंमडिमेघछुबितधर नि, अंधकारबढिगैंन ॥ बिछुरिगयेचकवाचमकि, समझिद्यौंसकौं रैंन ॥ ५ ॥ कनकमालदामिनिहलैं, श्रमजलकनिबरषान ॥ काम मेघरतिभूमिकौं, देतमनौंरतिदांन ॥ ६ ॥ घनधाराझरहरिकरत, अवनीफारिप्रवेस ॥ चलेवहोसरसमरमनौं' करनमूरछितसेस ॥ ७॥ उतझरलाग्योमेहको, इतसैंनानिझरनेह ॥ गउरस्यामचढिचढिअटा, भीजतरीझविदेह ॥ ८ घटावतावैंभांवती, छटावतावैंस्याम ॥ रस भीजेसैंनानिकरैं, जलभीजेचढिधाम ॥ ९ ॥ भुवधनुकचधुरवाछुटे,

दसनदामिनोवृंद ॥ रूपघटाराधेअटा, गांनगरजिधुनिमंद ॥१०॥ घनतनदामिनपीतपट, बगमुक्ताअभिराम ॥ मुरलीगरजनिरंगझर, वरसतहैंघनस्याम ॥ ११ ॥ हरिमलारपूरितअटा, घुमडीघटाअछेह ॥ ज्यौंज्यौंबाजैंमुरलिया, त्यौंत्यौंबरसैंमेह ॥ १२ ॥ बरिपारितद्रुमगहबरे, वहोफलफूलनिझूंमि ॥ रचेकदंबहिंडोरनां, हरितभईब्रजभूमि ॥ १३ ॥ उतरिझमकिझूलैंचढैं, रंगरंगपहरिनिचोल ॥ लालमुनीयनकेमनौं, झुंडनिमचीकिलोल ॥ १४ ॥ कारीसारीगोरसुप, झूलततियरसकंद ॥ आवतजातबिमानज्यौं, घटालपेटैंचंद ॥ १५ ॥ झूलतछबिउमचीअधिक, मचकतदुंमचीवाम ॥ उचटैंचोटीपीठमनुं, लगैंचमौंठीकाम ॥ १६ ॥ रमकतप्रियाहिंडोरनैं, छबिदुरिदेषतपीय ॥ वेझूलतवेश्रमितकटि, लचकनिलचकतजीय ॥ १७ ॥ झूलतठाढीप्रियहिलपि, रहेलालसुधिभूल ॥ फहरतअंचलचंद्रिका, वैंनीबरसतफूल ॥ १८ ॥ दुरेलालगहिलतनिमैं प्रियसंगदयेझुलाय ॥ कंपितरौंमकटयातकर, डोरीगहीनजाय॥१९॥ दांवनिलांवनिदुहुंनिके, बाजतआवतजोर ॥ वैंनीहारहिलोरही, बढिझौटाझकझोर ॥ २० ॥ झूलतझोटाचढिगगन, मुरलीगरजनितूल ॥ गउरघटाअरुसांवरी, बरपतहारनिफूल ॥ २१ ॥ दिनझूलनिसंकेतमिस, मिलतमीतकरितोत ॥ फिरपावसकारीनिसा, अतिसुपकारीहोत ॥ २२ ॥ निसबरपाभिजईमिलत, तियारिझईनंदलाल ॥ पंथअंध्यारोवनविषम, चपलातहांमसाल ॥ २३ ॥ मिलिएकैंछतनांतरैं, रहैंकदमकेमूल॥अतिरसभीजतभीजहीं, पीरोनीलदुकूल॥२४स्यामघटाब्रजस्यामघन, गउरघटासुकुंवारि॥नागरियाहि

यभूमिविच, नितवरसोरसवारि॥२५॥इतिश्रीपावसपचीसीसंपूर्ण१० 

## अथ गोपीबैंन बिलास लिष्यते ॥

दोहा ॥ वरषागतआगमसरद, अमलअंबुआकास॥बनद्रुमपात निधूरिधुपि, छबिबाढीसुषरास ॥ १ ॥ वरसमेघअवषेककरि, वेद मंत्रधुनिगाज ॥ वृंदाबनकौंदैंगये, सुंदरताकोराज ॥ २ ॥ सुच्छि सुहाईसरदरितु, भूमिबिहाईपंक ॥ प्रफुलितकमलनिपरभ्रमैं, माते मधुपानिसंक ॥ ३ ॥ घनवूंदैंरहिठहरिकैं, कंजदलनिआधार ॥ ह रिहितालियैंसरोवरी, मनुमोतिनभरिथार ॥ ४ ॥ सषीदेषिनट वेपहरि, मत्तद्विरदकीचाल ॥ मुदितवजावतबैंनबन, गोचारतगो पाल॥५॥लषिसाषिधातसुरंगरंग, अंगत्रिभंगीलाल॥सीसपिच्छमुपवै णउर, गुंजापुंजप्रवाल ॥ ६ ॥ जमुनानीरसमीरगति, षगमृगव छराधैंन ॥ रहेथकितव्हैंएसषी, सुनिसुनिरीधुनिवैंन ॥ ७ ॥ हलैंन अवलिकदंबकी, थक्योपंथरथभान ॥ मोहनमुरलीसुनिभये, नभ संकुलितबिमान ॥ ८ ॥ सुनिबंसीनींवीसिथल, षिसिप्रसूनपुलिबा र ॥ भईबिमाननसुरवधू, मनमथसरानिसुमार ॥ १० ॥ सबकोम नमोहनकरत, मनमोहनमुपलाग ॥ न्यारीहोतनबंसुरिया, प्यारी तुववडभाग ॥ ११ ॥ वंसवंसमैंप्रगटभइ, सबजगकरतप्रसंस ॥ बं सीहरिमुषसौंलगी, धन्यवंसकोबंस ॥ १२ ॥ अलकचंदरचांपत करन, अधरउसीसालाल ॥ कौंनपुन्यकियेवांसुरी, यहसुषलहत रसाल ॥ १३ ॥ अहेवांसकीबंसुरिया, तैंतपकीनैंकौंन ॥ अधरसु धापियकोपियैं, हमतरसतबिचभौंन ॥ १४ ॥ देहुश्रवनसुषसबनि

कौं, करअधरनिरसपांन ॥ जिनडारैंधुनिमुरलिया, अरीहमारैं कांन ॥ १५ ॥ अरीछिमाकरमुरलिया, परततिहारेपाय ॥ और सुषसुनिहोतसब, महादुषीहमहाय ॥ १६ ॥ कियोनकरिहैंकौंन नहिं, पियसुहागकोराज ॥ अहेबावरीबंसुरिया, मुषलागीमिति गाज ॥ १७ ॥ तोकारनगृहसुषतजे, सह्योजगतकोघैर ॥ हमसौं तोसौंमुरलिया, कौंनजनमकोबैर ॥ १८ ॥ एअभिमानीमुरलिया, करीसुहागनिस्याम ॥ अरीचलायेसबनिपैं, भलेचांमकेदांम ॥ ॥१९॥मुषमूंदैंरहुमुरलिया, कहाकरतउतपात ॥ तेरैंहांसीघरबसी, औरनकेघरजात ॥ २० ॥ हरिचितलियोचुरायकैं, रह्योपरतनहिं भौंन॥ तापरवंसीबाजमति, देतकटेपरलौंन ॥ २१ ॥ तूहूब्रजकी मुरलिया, हमहूब्रजकीनारि ॥ एकवासकीकांनकरि, पाढिप ढिमंत्रनमारि ॥ २२ ॥ मतिमारैंसरतांनिकैं, नांतोइतोविचा रि ॥ तीनलोकसंगगाइये, बंसीअरुब्रजनारि ॥ २३ ॥ सब- कोमनलैंहाथमैं, पकरिनचाईहाथ ॥ एकहाथकीमुरलिया, ल- गिपियअधरनिसाथ ॥ २४ ॥ पीयहमारेकोलियो, अधरसुधातैंछी न ॥ हमतलफतसुनिबांसुरी, ज्यौंबिनजलकीमीन ॥ २५ ॥ वो लचलावतमुरलिया, कहासुहागकोतोत ॥ तोसौंपियटेढेरहैं, हमसौं सूधेहोत ॥२६॥ हमहीकीतूदूतिका, मुरलीसबजगसाषि ॥ हमहीं परगाजतभली, जूठहमारीचाषि ॥ २७ ॥ बाजैंमतिमतिबांसुरी, म तिपियअधरनिलागि॥अरीघरबसीदेतक्यौं, रौंमरौंममैंआगि ॥२८॥ फूंकनिकेचलितीरतन, लगैंपरतनहिचैंन ॥ अंगअंगआपाविंधाइकैं, हमहूबेधतबैंन ॥ २९ ॥ धीरतजैंनहिरनसुभट, ज्यौंतनसहैंप्रहार॥

त्यौंबंसीसुरसरलगैं, रहैंसम्हारिसम्हारि ॥ ३० ॥ हाहाअबरहि मौनगहि, मुरलीकरतअधीर ॥ मोसीव्हैंजोतूसुनैं, तबकछुपावैपीर ॥ ३१ ॥ सबदसुनावतहमहिनू, देतनहींछिनचैंन ॥ अनबोली रहुतनकतो, एबकबादीबैंन ॥ ३२ ॥ थिरकीनैंचरचरसुथिर, हरि मुषमुरलीबाजि ॥ गरबसुकोयेसबनिके, महागरबसौंगाजि ॥ ३३॥ अमलचलायोआपुनौं, मुरलीगरजिगुमांन, हियसूनैंकरितियनके, प्रानबसायेकांन ॥ ३४ ॥ बैठिअधरमैंमुरलिया, अधरमनैंकनिवारि ॥ कहाजगतजसलेहुगी, तूअबलनिकौंमारि ॥ ३५ ॥ घूमैंभूमैं घुकिउठैं, तुवबंसीसुरलागि ॥ कहरजहरलहरैंचढी, डसीभुवंगमराग ॥ ३६ ॥ जिहिंमोहीसबब्रजबधू, मोहनमृदुमुसकाय ॥ सो मोह्योतैंमुरलिया, बनघनमैंलेजाय ॥ ३७ ॥ अहेमुरलियामोहनी, तोसौंकहाबसाय॥ अधरसुधारसप्याइकैं, प्रीतमलियोछिनाय॥३८॥ पीयलियोपियमनलियो, लियोअधररसझूंम ॥ इतोलयोतैंकहादयो, बैरनिबंसीसूंम ॥ ३९ ॥ बंसीबंसीनामयह, कान्हूधरयोप्रबीन॥ तांनतांनकीडोरिसौं, पैंचतहैंमनमीन ॥ ४० ॥ बडेकढेगुनबांसुरी, बांवनसीलघुबेस ॥ भलीनचाईनाचहम, तोकौंहैंआदेस ॥ ४१ ॥ आपषुदीतूकरतरी, भईमुसद्दीमैंन ॥ गुद्दीपरक्यौंचढतहैं, मुद्दीव्हैं करिबैंन ॥ ४२ ॥ कहाजानैंतूबांसुरी, भीजेमनकीपीर ॥ कोरीसूकेहीयकी, अनबोलीरहुबीर ॥ ४३ ॥ गांठिगंठीलेबंसकी, महाद्रोहकीषांनि ॥ मतिमारैंरीमुरलिया, तांनानिविषकेबांन ॥ ४४ ॥ हमहारीगारीजुदैं, जडसौंकहाबसाय ॥ मौनगहतनहिंमुरलिया, हायहायफिरिहाय ॥ ४५ ॥ मुरलीसुनितनमैंभई, आंसूदृगानिवि

साल ॥ मुषआवैंसोईकहैं, प्रेमबिबसव्रजबाल ॥ ४६ ॥ नागरिहिय हरिहिलगकी, दारूधरीदबाय ॥ आगिरागबंसीलपट, पुंहचउठी भभकाय ॥ ४७ ॥ इतिश्रीगोपीबैंनबिलाससंपूर्ण ॥ १२ ॥

## अथ रासरसलता लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ निससर्दोत्फुलमल्लिका, ककुंभकांतराकेसि ॥ गहीबैंणुहरिनिरषिवन, रासरमणआबेस ॥ १ ॥ पूरनससिनिसिस रदकी, चलिबनमलयसमीर ॥ होतबैंणरवरासहित, तरुनतनइया तीर ॥ २ ॥ बंसीधुनिदूतीपठैं, बोलीहैंव्रजबाल ॥ समरबिजेआरं भरस, रासकरननंदलाल ॥ ३ ॥ परमप्रेमआरूढरथ, बिषमपंथधु निबैंन ॥ रासकेलिसंग्रामहित, चलीमदनगढलैंन ॥ ४ ॥ बिमलजु न्हइयाजगमगी, रहीबैंनधुनिछाय ॥ प्रेमनदीतियरगमगी, बूंदा काननआय ॥ ५ ॥ रुकीनकापैंतियगई, छाडिकाजगृहचाह ॥ मिल्योस्यामरससिंधुमन, सलिताप्रेमप्रवाह ॥ ६ ॥ जुरेकरनिकर कमलबिच, अमलजुन्हइयाजोति ॥ हावभावबहोगांनगति, रास रंगअतिहोत ॥ ७ ॥ नूपुरकंकनकिंकिनी, मिल्योझमाकिझंकार ॥ कोटिकामदलदलमलति, पायनिमतिबिसतार ॥ ८ ॥ अतिदरसी सरसीजुछबि, हैंतियमाधिनंदलरल ॥ कंचनमणिबिचस्याममणि, मनौंमैंनकोमाल ॥ ९ ॥ पदंन्यासउठिरासमैं, कुसमसुगंधितधूर ॥ रह्योनूपुरनिनादसौं, नववृंदावनपूर ॥ १० ॥ लगेहौंनरसरासमैं, बहोसंगीतप्रकार ॥ गांनतांनअतिगतिनके, कहिनसकतबिस्तार ॥ ॥ ११ ॥ रासकरतनंदलालतिय, संगसरदकीरात ॥ लाघवतातन

फिरनकी, मनौंमैनश्रालात ॥ १२ ॥ फुरतहरवईपगनिकी, नचत मांझदरसाय ॥ बालालालाफूलपर, उरपतिरपलैंजाय ॥ १३ ॥ ल षिउपजतचपलांनिचित, सीषनकीललचांन ॥ लगेलंकललनांनि की, अलगलागलैजांन ॥ १४ ॥ निकसिनिकसिमंडलनितैं, लेत ललितगतिलाल॥ देषिदेषिअंकनिभरत॥ रीझिरीझिवसबाल॥१५॥ मुकटलटकपटफरहरनि, भृंगभरहरनिसंग ॥ मुषमुरलीधुनिघरहर नि, नृत्ततस्यामसुधंग ॥ १६ ॥ ग्रीवढौरिगतिलैंचलनि, हलनिअ लकउरहार ॥ पायनिमनमथदलमलनि, नचतललनिछबिसार ॥ ॥ १७ ॥ कबहूप्रियमंडलकढत, अतिगतिबढतसुधंग ॥ हरिकेमन लोचनफिरत, उरझेपायनिसंग ॥ १८ ॥ वैंनीचलानितंबपर, छनकछलाअंगुरीन ॥ नचैंचंचलासीकला,कोबिदप्रियाप्रवीन ॥ ॥ १९ ॥ लाललईउरलाइलषि, रीझेगतिसरसांनि ॥ मंडलमैंसुरझैं नहीं, अंकमालउरझांनि ॥ २० ॥ उतअरझीकुंडलअलक, इतबे सरिबनमाल ॥ गउरस्यामअरुझेदोऊ, मंडलरासरसाल ॥ २१ ॥ गरबाहियांगतिलेतमिलि, श्रमबससिथिलतपाय ॥ डारेमनलैसब निके, डगमगडगतिडुलाय ॥२२॥ लेतबलइयारीझदोऊ, दोऊपौं छतश्रमवारि ॥ नचतसनीअतिरंगसौं, बनीमदनमनुहारि ॥ २३ ॥ उतैंझुकौहौंनवमुकट, इतैचंद्रिकाचार ॥ भयेरासरसमगनतन, सर केसकलसिंगार ॥ २४ ॥ पूटिपूटिअंचरगये, छूटिछूटिगयेबार ॥ अमितरासरससरंगमैं ॥ टूटिटूटिगयेहार ॥२५॥ कहतकहतकहांलगि कहैं, कविमतिमंदप्रकास ॥ तिनकेभौंहविलासमैं. कोरिकोरिव्है रास ॥ २६ ॥ नागरियादयरासमैं, अगनितकलपाबिताय ॥ मन

मथहूकोमनमथ्यो, कथ्योकौंनपैंजाय॥२७॥इतिश्रीरासलतासंपूर्ण

## अथ रैंनरूपारस लिष्यते॥

दोहा॥ सरसाईबृंदाविपुन, अमलजुन्हाईरैंन॥ लगतसुहाईद्दगानिकौं, कुंजनछबिसुखदैंन॥१॥ स्वेतफूलफूलेलतनि, बिलुलितहीराहार॥ ज्यौंन्हओढिपटरूपहरी, कुंजनिकरेसिंगार॥२॥ छईछिपाछबिदेतछित, पत्रविपुनइहिंभाय॥ ससिकारीगररुपहरी, अफसांकियोबनाय॥३॥ चितैंबदनव्रजचंदको, रीझिचंदभयोचूर॥ छिपाकिधौंवहिजोतिमैं, कुंजनिबिषरयोबूर॥४॥ फैलीचमकतचंद्रिका, बिचानिकुंजबनबाग॥ कतरिस्वेतमुकेसमनु, रतिपतिषेल्योफाग॥५॥ कुंजसबैंव्यापकभई, अमलजुन्हाईहोत॥ आईदेपनसगुनमनु, निगुनब्रह्मकीजोति॥६॥ नवनिकुंजराकारुचिर, अतिसितअमलउजास॥ लसतफटकफानूसनभ॥ बिचससिदीपप्रकास॥७॥ चंदचंद्रिकामंदकी, दंपतिअंगउजास॥ लताकुंजरंध्रनिकढयो, किरनानिनिकरप्रकास॥८॥ मैनरंगरसरगमगे, जगेउजारीरैंन॥ षगेनैंनपियकेतहां, लषिअलसौंहैंनैंन॥९॥ अंषियनआरसछबिलषैं, अमलउजारीमांहि॥ बहुरिचंदकीडीठडरि, करतमुकटकीछांहि॥१०॥ पलकैंपाननपीकसौं, रंगीजुरंगनवबाल॥ रीझिरहेसोईनिरषि, निसनींदभरेद्दगलाल॥११॥ सहजछकेसेरसछके, छकेनींदअरसांन॥ छकेछकावैंपीयकौं, नैंनरूपमदपांन॥१२॥ जुरैंजुरैंफिरिहंसिमुरैं, घुरैंढुरैंरहिजांहि॥ लोयनलहिरैंनिरषिपिय, धीरजठहरैंनांहि॥१३॥ श्रवननिछ्वैं

छविसौंफिरैं, लोयनबंकविसाल ॥ षुलैंनआरसअधषुले, करत लालपरहाल ॥ १४ ॥ अरसांनैंघूंमतझुकत, सरसांनैंछविऐंन ॥ विहसिदुरानैंपीयपर, नींदघुरांनेनैंन ॥ १५ ॥ रैंनघटैंत्यौंत्यौंव ढैं, आरसरूपझकोर ॥ नींदभरैंपियउरअरैं, नैंननिपैंनींकोर ॥ ॥ १६ ॥ जवपलआवैंझुकतपिय, दरपनदेतदिखाय ॥ तवअप नोअंषियांनपर, अंषियांरहतलुभाय ॥ १७ ॥ नींदझुकीपलनिरषि पिय, देतहैंपांनबनाय ॥ उतनैंननिकेषुलतही, इतबीरीछुटिजाय॥ ॥ १८ ॥ भौंरांनेवारतवदनलषि, मनधनवारतजात ॥ फूंकिजगा वतलालजव, षुलेनैंनमुसक्यात ॥ १९ ॥ सषीलखैंदुरिद्रुमनिमैं, व्हैंगइचित्रसरीर ॥ निसउनदोहैंद्दगनिमैं, भईद्दगनिकीभीर॥२०॥ अरसांनीनिरषतप्रिया, जातविहानीरैंन ॥ नैंननिलखिपियकैंभये, रौंमरौंममैंनैंन ॥ २१ ॥ धरैंचिवुकतरहाथद्दग, देषतनींदघुमार ॥ लगेरूपकेरहचटैं, पौढतनाहिंरिझवार ॥ २२ ॥ लषिउरझेसुरझैंन हीं, सवनिसगईविहाय ॥ आरसउरझेद्दगनिमैं, पीयरहेठहराय ॥ ॥ २३ ॥ क्यौंसुरझैंआरसभरे, नैंननिउरझेनैंन ॥ नागरियाहियमैं वसो, यहरूपारसरैंन ॥ २४ ॥ नागरिनैंननिरूपव्है, दोहापढिनै नानि, अछरनिहूकैंनैंनभये ॥ कहिनसकैंवैनानि ॥ २५ ॥ इति श्रीरैंनरूपारससंपूर्ण ॥

## अथ सीतसार लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ सीतनिसासंकेतहित, रचिवरचौंपरितोत, हितपक्वे नांहिनउठैं, फिरिफिरिकच्चेहोत ॥ १ ॥ समझिदावपियचूकिकैं,

चलतसारिसुपसारि ॥ पकरिपिछौंहोंदेतकारि, नवलडकीलीनारि ॥ २ ॥ फटकसारगहिलटकसौं, देतछबीलीबाल ॥ परतझगरई षेलविच, होतस्वेततैंलाल ॥ ३ ॥ पीतसारघनस्यामकैं, स्यामसारसुकंवारि ॥ खेलसारललितादिलषि, मनधनडारतवारि ॥ ४ ॥ प्रियजीतींतियसलजदृग, चितईजुतअंगरानि, बाजीबाजीलषिउठी, बाजीठहरीजानि ॥ ५ ॥ समैंदानदुषदानभो, पांनिहुसकैंन जोर ॥ गुलहाथनिगुलगीरलैं, गुलकीनौंगुलमोर ॥ ६ ॥ सिघरी धरिनियरैंकरत, इकटकडीठमिलाप, मीतसीतमैंदृगनिकी, तापि बुझावतताप ॥ ७ ॥ दोऊसनमुषबैठिकैं, तपैंअंगीठीमीत ॥ अंगुरीअंगुरीपरसतैं, अधिकअधिकव्हैंसीत ॥ ८ ॥ लोयकढैंमुपलोयनन, वुझैंहोतसुषअंग ॥ सीतरैंनदोउमीतकैं, तापनहीमैंरंग ॥ ९ ॥ सीतकियोबससीतकैं, मीतकियोबसबाल, सालसालकरिदृगनिकौं ढांप्योअंगरसाल ॥ १० ॥ अबररंगकीसालबिच, हसिफेरयोमुषचंद ॥ अतनातसमैंरीझिकैं, पियमनभोइसफंद ॥ ११ ॥ थरहराततनवचनचल, चंचललोयनवंक ॥ भईभीतबससीतकैं, सरकतआवतअंक ॥ १२ ॥ अनदेषैंदृगतरफरत, बिनांमिलैंबेहाल ॥ एकनिहालीसौंभये, दोऊनिपटनिहाल ॥ १३ ॥ नेहपगेरहियेलगे, नागरहिमरितुधाम, सुंदरपांनिपसहितहैं, तियउरगरमहमाम॥१४॥ इतिश्रीसीतसारसंपूर्ण ॥

## अथ इस्क चिमन लिष्यते ॥

दोहा ॥ इस्क उसीकीझलकहैं, ज्यौंसूरजकोधूप ॥ जहांइस्कत

हांआपहैं, कादरनादररूप ॥ १ ॥ कहूंकियानाहिंइस्कका, इस्तैंमा लसंवार ॥ सोसाहिबसौंइस्कवह, करिक्यासकैंगंवार ॥ २ ॥ सर सिंदाहोइइस्कसौं, सोदेवैंसबपोइ ॥ निंदासहदांनेबजैं, सोईचुनिंदा होइ ॥ ३ ॥ दुनियांदारफ़कीरक्या, हैंसबजितनीजात ॥ बिगर इस्कमस्तीअरे, सबकीकिस्तीबात ॥ ४ ॥ सादेजेप्यादेसबैं, जद्य पिधनअनपार ॥ इस्कअमलमस्तीलियैं, सोहस्तीअसवार ॥ ५ ॥ सबमहजबसबइल्मअरु, सबैंअैसकेस्वाद ॥ अरेइस्ककेअसरबि न, एसबहीबरबाद ॥ ६ ॥ आयाइस्कलपेटमैं, लागीचस्मचपेट॥ सोईआयाषलकमैं, औरभरइयापेट ॥ ७ ॥ जरबाजीविनखलकके, कामनसंवरैंकोइ ॥ एकइस्कबाजीअरे, ज्यांबाजीसौंहोइ ॥ ८ ॥ सी सकाटिकरभूधरैं, ऊपररप्पैंपाव ॥ इस्कचिमनकेबीचमैं, ऐसाहैंतो आव ॥ ९ ॥ जिनपांवौंसौंषलकमैं, चलैंसुधरिमतिपाव ॥ सिरके पांऊंसौंचला, इस्कचिमनमैंआव ॥ १० ॥ कोइनपहुंचाउहांतलक, आसिकनामअनेक ॥ इस्कचिमनकेबीचमैं, आयामजनूंएक॥ ११ इस्कचिमनमहबूबका, जहांनजावैंकोइ ॥ जावैंसोजीवैंनहीं, जीवैं सुबौराहोइ ॥ १२ ॥ अरेइस्ककेचिमनमैं, सम्हलिकैंपगधरिआव ॥ बीचराहकेबूडनां, ऊबटमांहिबचाव ॥ १३ ॥ मारेफिरिफिरिमारिये चस्मतीरसौंपूब ॥ कियेंअदालतजुलमकी, जहांबैठामहबूब ॥ १४ ॥ आसिकपीरहमेसदिल, लगैंचस्मकेतीर ॥ कियाषुदामहबूबकौं, सदासखतबेपीर ॥ १५ ॥ आसिकासिरअपनाअरे, धरिदेपैंरू ल्याय ॥ बेनिसाफमहबूबकैं, करैंदूरिअनषाय ॥ १६ ॥ पूंनकरैं लडबावरे, महबूबौंकेनैंन ॥ आसिककासिरकीगैंदसौं, खेलैंतबहिचैं

न ॥ १७५ ॥ सुरपचस्ममहबूबनैं, पंजरकियेसंवार ॥ निकलैंलो हूसौंरंगे, आसिकपंजरपार ॥ १८ ॥ इस्कखेतसौंनहिटलैं, आवैंबे उसवास ॥ चस्मचोटसौंसिरउडैं, धडबोलैंस्यावास ॥ १९ ॥ पल ककियाषालिकअरे, हसनेंहींकौंषूब ॥ सहनैंकौंआसिककिया, मारनकौंमहबूब ॥ २० ॥ चस्मौंसौंजष्मीकरैं, रसगस्मौंबिचपेत ॥ लटतस्मौंसौंबांधिकैं, दिलबस्मौंकरिलेतं ॥ २१ ॥ पंडितपूजापाक दिल, एदिमागमतिल्याय ॥ लगैंजरबअंषियांनकी, सबैंगरबउडि जाय ॥ २२ ॥ पावसकैंनहिठहरिकैं, बुरीचस्मकीपीर ॥ जोजानैं जिसकेलगैं, कहरजहरकेतीर ॥ २३ ॥ तीरनिगाहौंकेलगैं, दरद मुकरराहाय ॥ जरराहभीजरराहसौं, मिलैंनउरकेघाय ॥ २४ ॥ एतबीबउठिजाहुघर, अबसछुवैंक्याहाथ॥ चढीइस्ककीकैफयह, उत रैंसिरकेसाथ ॥ २५ ॥ कस्मौंतुम्हैंकरीमकी, सुनियोसवैंजिहान ॥ चस्मौंकीलागीगिरह, छूटैंछूटैंज्यान ॥ २६ ॥ क्याराजाक्यापात सा, क्यागरीबकंगाल ॥ लागैंतैंछूटैंनहीं, नैननिबडोजंजाल॥२७॥ लगातीरजमधरछिपैं, छिपैंछिपाईसैफ ॥ नहिंउतरैंनांहींछिपैं, हैं फइस्ककीकैफ ॥ २८ ॥ अरेपियारेक्याकरौं, जाहिरहोहैंलाग ॥ क्यौंकरिदिलबारूदमैं, छिपैंइस्ककीआग ॥ २९ ॥ आतसलपटैं रागकी, पहुंचैंदिलबिचजाय ॥ दबीइस्कबारूदकी, भभकानिला गीलाय ॥ ३० ॥ उठैंआगिउरइस्ककी, जलैंऐसआराम ॥ चलैंन कैफीचस्मबिच, घुटैंधुयेंकेधाम ॥ ३१ ॥ गिरेरहैंभिजेरहैं, मुतल कभीसम्हलैंन ॥ हुस्नपियालापीयकैं, हुयेहैंमदवेनैंन ॥ ३२ ॥ गिरे तहांहीगिररहे, पलभीपलउघरैंन ॥ पूरेमदवेहुस्नके, मजनूंहींकेनैं

न ॥ ३३ ॥ चलीकहानीपलकमैं, इस्ककमायाखूब ॥ मजनूंसेआसिकनहीं, लैलीसीमहबूब ॥ ३४ ॥ मजनूंकौंकहैंसबअसल, औरनकलकेभाय ॥ कछुहोदिलमैंअसलतब, सकैंनकलभीलाय॥३५॥ नकलसांचसौंसरसकरि, करिलीनैंदिलदस्त ॥ हरीदासकेहालमैं, दरादिवालभीमस्त ॥ ३६ ॥ इस्कसांगसांचाकिया, दिलकौंदियाछकाय, हरीदाससबकौंगया, चेटकरूपदिखाय ॥ ३७॥ इस्कहुस्नकीबातक्यौं, सकैंसुपनमैंआय ॥ दिलचस्मौंकेजुबांहोय, तबकछुकहैंसुनाय ॥ ३८ ॥ कहीजायकहांइस्ककी, कहैंनमानैंकोय ॥ जानैंसोजानैंअरे, जिससिरबीतीहोय ॥ ३९ ॥ पलकनमानैंएकभीअबसांकियेंबकबाद ॥खूबकमावैंइस्ककौं, तबकछुपावैंस्वाद ॥४०॥ मजाअजायबहुस्नका, चष्षैंचस्मजुवान ॥ इस्कचिमनरष्वैंसोई, आवादानसुजान ॥ ४१ ॥ चस्मौंकेचस्मांझरैं, झरनांआवफिराक ॥ इस्कचिमनतबसब्बरहैं, दिलजिमीनहोयपाक ॥ ४२ ॥ इस्कचिमनआवादकरि, इस्कचिमनकौंगाव ॥ नागरघरमहबूबकैं, इस्कचिंमनमैंआव ॥ ४३ ॥ जिगरजष्मजारीजहां, नितलोहूकाकीच ॥ नागरआसिकलुटिरहे, इस्कचिमनकेबीच ॥ ४४ ॥ चलैंतेगनागरहरफ़,इस्कतेजकीधार॥ औरकटैंनहिंवारसौं, कटैंकटेरिझवार ॥ ४५ ॥ इति श्रीइस्कचिमनसंपूर्ण ॥

## अथ छूटक दोहा मजलस मंडन लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥ मोरपखउवाबांसुरी, वेसरिगुंजाहार ॥ ब्रजमोहनहियमैंवसौ, जाकोयहैंसिंगार ॥ १ ॥ नीलांबरासिरचंद्रिका, गउर

अंगअभिराम ॥ सोमेरेहियमैंबसो, मोहनमोहनभाम ॥ २ ॥ जसव्रजभूषनबिनअवन, नहिंसोभाकेऔन ॥ विनांलालरसनाकहा स्यामबरनबिननैंन ॥ ३ ॥ सुभरेवाकेकुचनिपर, डीठिपरीहैं पैठि ॥ मनौंपरेवासिसतरू, रहेबराबरबैठि ॥ ४ ॥ अद्भुतगतिक हितनवनैं, भईजुमोमतिबांझ ॥ चितयेतोमुषचंदमैं, घटादामि नीसांझ ॥ ५ ॥ बोलनिडोलनिहसनिमैं, रहैंसदाहैंसंग ॥ देषिफि दाहैनैंनये, अजबअदाहैंअंग ॥ ६ ॥ प्रेमगलीबिचरूपकी, पंदा षसीव्हैंपूर ॥ लोचनदुर्बलवापुरे, भयेजातहैंचूर ॥ ७ ॥ न्याजऔं डसौंपैंडदैं, निजरिनिजरिसौंजोरि ॥ अजबअदबसौंनिजरकरि, लीनैंप्रानमरोरि ॥ ८ ॥ उडिनजायनाजकनिपट, उरजउठौंहैं पीन ॥ बनकबनेमनौंकनकके, मीरफरसधरिदीन ॥ ९ ॥ चलत नचतसीहसतसी, पलटतसीलैंतांन ॥ चातुरपातुरसीभई, तेरीभौं हसुजांन ॥ १० ॥ भीनैंविमलकपोलपर, लगीछूटिलटसाफ ॥ षुसनवीसमुनसीमदन, लिष्योकाचपरकाफ ॥ ११ ॥ कुचकुरसी बिचउरबसी, ऊंचीलसीसुतोर ॥ पियमनपातिसाहीकरन, रचीअदा लतठौर ॥ १२ ॥ गउरसरीरादेषिछबि, भएअधीरालाल ॥ वीरा सीकटिलपटिरही, हीराबंदनमाल ॥ १३ ॥ आननभूषनआन कैं, ऐसीसोभादूर ॥ आइजेवजैसीजगी, पायजेदपयपूर ॥ १४ ॥ तनऊंचैंअंगियांतनी, सुंदरसाफतरास ॥ पियदृगबिहरनकौंकरी, मनमथफरसफरास॥१५॥ अंगनाअंगआंगीतनी, ओपीलालसुरंग॥ मनौंमैंनपतिसाहके, षेमापरेउतंग ॥ १६ ॥ चरनहरनमानिनहनिमैं, दीमंहदीसुषदान ॥ बैटेपंकजदलनिमनौं, मंगलमंगलमान ॥ १७ ॥

रुचिररूपकोमलबिमल, सहजअरुनईपाइ ॥ मनुअनुरागीदृगनि को, रंगरह्योलपटाई ॥ १८ ॥ पाइनफूलीसांझसी, चित्रतजावक कीन ॥ मलिनभयेलषिनलिनमुष, सोतिनकेछबिछीन ॥ १९ ॥ तनबिवेकबगतरकस्यो, धरमढालल‍इवोट ॥ तऊलागिनिकसी परैं, चषचितवनिकीचोट ॥ २० ॥ घावअवैंनाहिंनैंकहूं जायरुधिर तनसूकि ॥ जबजूटैंफूटैंपरैं, नैंनाअनींअचूक ॥ २१ ॥ चाहभरी चितवनिचतुर, चितवतभामिनअंग ॥ उततैंअद्भुतव्हैंपरत, भौंह भंगमैंरंग ॥ २२ ॥ चितवनिमैंझुकिझांकतैं, तियदृगदुतिदरसाय ॥ मनौंजालअनुरागके, षंजनअरुझेआय ॥ २३ ॥ अंतराहितघृतप कमहा, ऊपररूषेमीत ॥ सोइनलोइनमैंलही, मोइनकीसीरीत ॥ ॥ २४ ॥ कांनीकीनोंकीलगैं, कांनीकीउनिहारि ॥ तुपकचलावत सैंनकी, एकनैंनकीनारि ॥ २५ ॥ चटकमटककरिटहारिया, ओ ढिलहरियाचीर ॥ गईसहरियाकरिदृगनि, मारिमहरियातीर ॥२६॥ नैंनकथकबांचतकथा, मोहनसैंनसिलोक ॥ पीवतश्रोतानागरी, इहरसइकटकओक ॥ २७ ॥ टाटीऔझिलपारधी, करनहरनकौं लोट ॥ ज्यौंपांपियनकीओटसौं, अंषियनकरहीचोट ॥ २८ ॥ अच्छीआंपियांदच्छिनी, कच्छीमनमथस्वार ॥ नेजाफेरिकटा च्छिके, गईकरेजाफार ॥ २९ ॥ कबहुउठैंअधाबिचरहैं, निपटझु कैंबसलाज ॥ मनुमुरीदव्हैमैंनके, नैनयेकरतानिवाज ॥ ३० ॥ दि गभौंहैंमहराबकैं, झुकिकरनैंननिवाज ॥ बरुनीहाथउठाइकैं, मांग तहैंकहाआज ॥३१॥ मुषमूंदैंहौंहसतअति, करैंनदसनउद्योत ॥ बा हिरजाहिरहोयतो, दवैंजंवाहरजोत ॥ ३२ ॥ तनकनसौंहींहोतहैं,

नवलनेहदृगकोर ॥ घूंघटहीमैंरंगभरी, मुसकतिलजातिलजोर॥३३॥ बलगनभुवमदतरुनई, रुचिररूपअभिमान ॥ मचकनिमैंरमजे जकी, मगजभरीमुसक्यान ॥ ३४ ॥ सिलमदाजसेदृगनिसव, स्याममोरझलकाय ॥ देषैंस्याममयूरतव, द्रवीभूतव्हैजाय ॥ ३५॥ पहिलैंएआंषैंमिलत, तनमनअंपियनसंग ॥ हिलनामिलनकीचाह को, झलकतअंषियनरंग ॥ ३६ ॥ मिलेसजातीनैंनहसि, सैंनउर निउरजोर ॥ करतसलौनैंरूपकी, मिझमांनीदुहुंओर ॥ ३७ ॥ काचैंहितचितनवलतिय, सकैंनइकटकहेर ॥ भजैंलजैंदृगदवि उठैं, कवहुकरैंभटभेर ॥ ३८ ॥ इकटकरहिरहिजाहिदृग, दियैंदीठ मैंदीठ ॥ नेहपूररनसूरज्यौं, चलैंनदैकैंपीठ ॥ ३९ ॥ मोहिकहततू स्यामसौं, मिलीनतनमनबैन ॥ कहारह्योमिलिबोतबैं, मिलेनैंनसौं नैन ॥ ४० ॥ अरुननैंनबूंनीपरे, करतमैनउतपात ॥ धुकिधुकिमो हीपैंचलैं, रुधिरलपेटेगात ॥ ४१ ॥ दृगपायकसेकरनगहि, हाव भावकिरपान ॥ घावजातकरिदावसौं, पावफुरतसीठान ॥ ४२ ॥ मनहरिमेरौलैंगयौ, तवनभयोचितचेत ॥ ज्यौंदिल्लीबाजारठग, जे बकतरधनलेत ॥ ४३ ॥ नावनासिकाबदनसर, वंसीगुंजघुमाव ॥ मोदृगउरझेमीनज्यौं, नहिंछुटिवेकौदाव ॥ ४४ ॥ अकलविकलभ इप्रीतसौं, सकलसपिनकेमांझ ॥ नकलपरैंयातैंकरैं, नकलभौरअरु सांझ ॥ ४५ ॥ इतपैंचतमनकीलगन, उतपैंचतकुलकान ॥ पैंचापैं चीजातहैं, तूटेप्रानसुजान ॥ ४६ ॥ नेहअनलबहुदिननिको, कछु किरह्योहियजागि ॥ पांतीदैफूंकैंकहा, दवीदवाइआगि ॥ ४७ ॥ रहतगगननहिंठहरिससि, डोलनिहींकीवांनि ॥ फिरैंचकोरनिहेर

तो, दरसउपासिकजांनि ॥ ४८ ॥ प्रेमप्रबलसबतैंबडो, यातैंकौंन विसाल ॥ जाहिनचायोजगतसब, ताहिनचायोबाल ॥ ४९ ॥ जापैंचितचिकनायनहिं, ताकीरूषीवान ॥ कटीलगावतचटपटी, नकटीनकटीजांन ॥ ५० ॥ कजरौंहीअंषियानमैं, बस्योरहैंदिनरात ॥ प्रीतमप्यारोहेसषी, यातैंसांवलगात ॥ ५१ ॥ दीठहाथलीनैं रहत, नहिंछाडतदिनजाम ॥ मेरेभोरेदृगनकौं, रसिकपिलौंनास्याम ॥ ५२ ॥ जबउरतैंचाहतकह्यो, तबमुषआवतमौंन ॥ नेहरूपनेहाँनकौं, बरनिसकैंकहिकौंन ॥ ५३ ॥ सपीलषीनंदलालजू, कहतबालहसिगाथ ॥ तुमजोयाकेरिपुभये, यातैंमींडतहाथ ॥ ५४ ॥ ताजिदवातधरिग्रतरढिग, छाडिमानचलिसाथ ॥ अजबड्लमलीनौंसषी, रहैंकलमनितहाथ ॥ ५५ ॥ गहगहाटभोवदनपर, मदनकंपायोगात ॥ रसनादसनानिदाबिकैं, तिरछैंतकिरहिजात ॥ ५६ ॥ चमकिचौंपमुखहसनिमैं, नैंनाझमाकिलजाय ॥ तमकिमैंनतनकंपिव्है, यौंचितईअलसाय ॥ ५७ ॥ ओटतओठहिश्रमितमुख, चिहुंटिलगिलटभीजि ॥ पुभेनैंननैनानिमहीं, मुसकावतिहैंरीझि ॥ ५८ ॥ यहक्यौंलीनैंजातअब, मानदानदयोभाम ॥ आनदांनफिरिमदनकी, पांनदांनकिंहिंकाम ॥ ५९ ॥ मिलेमीतदोउजीतचित, भरिभुजदृढअंकवारि ॥ वैनीकीदिसवीचितैं, हारगयोहैंहारि ॥ ६० ॥ पियदेपततियहारको, फूलगिरयोकहाभेव ॥ छातीछातीमिलनकी देतहैंपातीदेव ॥ ६१ ॥ चौंपचतुरईचाहचित, लगैंनैंनतनमैंन ॥ इनगुनगनविनतनवसैं, मजलसरंगवनैंन ॥ ६२ ॥ आलसनींदउचाटचित, क्रोधईरपालाज ॥ दबकानिहियमैंधकधकी, मेटतरंगस

माज ॥ ६३ ॥ महलआयनैंविचपरी, समाझिमांयनैंसांच ॥ हसिमु
पअंचरदैंरही, छातिलग्योलपिकाच ॥ ६४ ॥ मसनंदक्यारीकाम
की, प्यारीगुलरंगीन ॥ संकमानतसुपलेतमैं, प्रीतमभंवरप्रवीन ॥
॥ ६५ ॥ अरीजोरछलपियकियो, लियोमोरछलबोल ॥ भौंरउ
डावनमिसछुवत, दूरहितैंजुकपोल ॥ ६६ तिलकछरीगहिकनक
की, स्यौंरीतेजजसोल ॥ करतअनषइतमांमकौं, पियनहिंसकैंसको
ल ॥ ६७॥ पीकदांनबीनांबनी, मीनांरंगसुढार ॥ याहूकौंलखिसुं
दरी, प्रीतमदेतउगार ॥ ६८ बनिवैठीजगमगतद्युति, पातुरचतुर
सुहांति ॥ जोयधरीमनमथमनौं, सिमैंदानकीपांति ६९ ॥ गईताव
महताबकी, मुखद्युतिउदितमनोज ॥ तनसुगंधउठिकैंदबैं, किस्त
सोजकीओज ॥ ७० ॥ सबचौगांनचलाकसी, उमडीतांननिओ
र ॥ आपआपकोलेतहैं, मनगैंदकबरजोर ॥ ७१ ॥ पैंच्योआवतनां
हिनैं, मनमत्तंगबलवान ॥ ताहिमिंहनिप्रवीनकी, तानलेतहैंतान॥
॥ ७२ ॥ ढीलेअंगआलसबलित, कछुकनवायैंनारि ॥ देतबुलावन
सैंनसी, चातुरऊंघानिहारि ॥ ७३ ॥ तनकबातअनमिललगैं, रस
मजलसकौंसाल ॥ देतमुंईहूदुषअमिल, मुषमृदंगकीपाल ॥ ७४ ॥
घूमैंसीसनमनघुमैं, सुनतउटौंहिंतांन ॥ ताकेतननांहिनविंधैं, अर्जु
नहूकैबांन ॥ ७५ ॥ सिरअंचरपिसवाजके, छुटेवंधउरहार ॥ ढिग
भौंहैंमहरावकैं, मुखनैंचाकजदार ॥ ७६ ॥ पीवतहुक्काहोजपर, पि
यासहितरसझूम ॥ विरहअनलमनौंबरिवुझी, कढतधुवांकीधूम ॥
॥ ७७ ॥ अललअंगभौंहैंचढी, नैंनछकौंहैंलाल ॥ अतिगतिलेतगु
मांनकी, नवगरबीलीबाल ॥ ७८ ॥ औरहुतियवीनानिकुसम, ज

तहैंबनकीओर ॥ पैंमेरेहींपैंडैंपरे, शुकपिकमोरचकोर ॥ ७९ ॥ आं गनगुलबाजीरची, पियसंगरंगरसाल ॥ बाजीज्यांबाजीकरैं, दृगबा जीमैंबाल ॥ ८० ॥ बुरेकहावैंआपतैं, बुरेकियेतैंकाम ॥ औरनकौं आंधेकरैं, यातैंआंधीनाम ॥ ८१ ॥ भलोबुरोनांहिनलखैं, सबही सौंभटभेर ॥ यातैंआंधीकहतहैं, हियमैंबडोअंधेर ॥ ८२ ॥ मोती मूंगापाटके, फूंदाफबिनप्रकास ॥ हरिराखीअंखियांनकौं, कारिरा पोविसिपास ॥ ८३ ॥ पाईचितकीचातुरी, सुनौंकुंवरव्रजनाथ ॥ नीलपीतरंगपाटकी, रापीरापीहाथ ॥ ८४ ॥ हरिकररापीलालरंग, धूंमकरतबडभाग ॥ झूंमिरहेमनौंकमलढिग, भंवरभरेअनुराग ॥ ॥ ८५ ॥ रंगरंगरापीरुचिर, रहीप्रियाकरझूल ॥ रूपलतालागेम नौं, बरनबरनकेफूल ॥ ८६ ॥ लैंरहिपांनापांनिमैं, लगैंननैंननिमे प ॥ चित्रलिखीसीव्हैंरही, मित्रचित्रकोदेप ॥ ८७ ॥ पूरेजेबादन करैं, करैंअधूरेबाद ॥ बादजहांतोस्वादनाहिं, स्वादजहांनाहिंबाद ॥ ८८ ॥ कविकैंअरुतियनबलकैं, दोहाछबिसरसात ॥ दोहासिर वेंदीदई, सुनिचतुरनियहबात ॥ ८९ ॥ बहोगुनगनतनमैंभरे, जो ननेहकोलेस ॥ नीकोऊफीकोलगैं, बिनांनृपतिज्यौंदेस ॥ ९० ॥ मनतनकौंकाटैंजवैं, कविताअरुकरवार ॥ जबगुनतिनमैंतीनव्हैं, सारधारअरुभार ॥ ९१ ॥ जिरमआंनरससंगबिन, तजिकुडोलछं दभंग ॥ लीजैंकवितारतनमैं, संगढंगअरुरंग ॥ ९२ ॥ जद्यपिनी कीवस्तुहू, विनओसरनसुहाय ॥ पोसमाहमैंचांदनी, कोऊनदेपैं जाय ॥ ९३ ॥ जोप्रभुफिरमानुपरचैं, तोविनतीसुनिकांन ॥ वहो रिमोहिमतिदीजिये, रीझबावरीबान ॥ ९४ ॥ गुनहीतैंएकामके, गु

नहींतैंसनमान ॥ बिनगुनकाहूकामनहिं, मानुषगुडीकमान ॥९५॥ धनजोबनअरुरूपये, दिनांच्यारहीजांन ॥ जनमसंगातीहैंसदा, कृष्णकीरतनगांन ॥ ९६ ॥ तांननिसौंमनतांनिकैं, प्राननिकरतअधीर ॥ बाजैंबनबंसीअरी, सुनिरीसुनिवहबीर ॥ ९७ ॥ यामुरलीतैं मोहनी, दीनीब्रजबगराय ॥ कौंनओटदीजेदई, कीजैंकहाउपाय ॥ ॥ ९८ ॥ बहोतरहींसमझायहौं, समझतनाहिंइहिंबेर ॥ बैंनसुनतचितरहतनहिं, किहिंबिधिरापौंघेर ॥ ९९ ॥ दसनअंगुरियादेंरहैं, कबहुचलैंललचाय ॥ नागरसुनिसुनिमुरलिया, उठिउठिफिरिसुरछाय ॥ १०० ॥ लोकबडाईहैंजहां, लगैंभक्तिकौंरंग ॥ तिनकैंमनबसकीजिये, तजिअधमनिकोसंग ॥ १०१ ॥ मनतूऊंचीठौरलगि, तहांनपहुंचैंऔर॥जहांबैठैंनीचीलगैं, सबऊंचीऊंचीठौर॥१०२॥किहिंकीनौंफिरिआयकैं, जगदुषमांझनिबाह॥ जोझांक्योउततनैंकहु, चढिदिवालकहकाह॥१०३॥नागरन्यारीरीतजहां,नेहनृपतिकोराज ॥ लाजकियेंलाजनरहैं,लाजतजैंरहलाज॥१०४॥रागरूपअच्छरलगैं, जांनिपरैंरिझवारि॥सूरातबहीजांनिये, जवनिकसैंतरवार॥१०५॥मनगजरोकैंनहिंरुक्यौ, गुरजनबचननितीर॥लोकवेदकुलकांनिकी, तोरिचल्योजंजीर ॥ १०६ ॥ जिहिंमनमोहनरूपको, कीनौंमदरापांन ॥ भयोअयांनौंछिनकमैं, उडिगौसबैंसयांन ॥१०७॥ ज्यौं ज्यौंदृगनिकटाच्छिके, मनकैंलागतघाव ॥ त्यौंत्यौंरनछकसूरज्यौं, धरतअगौंहैंपाव ॥ १०८ ॥ त्रिपरिपरचोमननिरापिकैं, नवनागरनंदनंद ॥ ज्यौंबालकलडवावरो, चहतपिलौंनांचंद १०९॥ घूमैंसीसनमनघुमैं, रूपसहितलगितांन ॥ ताकेतननांहींविधैं, अ

जुनहूकेवांन ॥ ११० ॥ नागरियानितततवैं, लषिलागतमुषमौंन॥ भईजातमनकीकुगति, गतिबरनैंसोकौंन ॥ १११॥ कहूंरहतकहूंवै चलत, डोलतकाहूओर॥ प्यारीजूकैंहाथहैं, लालगुडीकीडोर११२ रूपभारनहिंसहिसकत, बीततमहाअचैंन ॥ रीझरोगदुषदूवरे,द वेजातहैंनैंन ॥ ११३ ॥ ज्यौंबंदूकदारूदबैं, सहसगुनोंव्हैगौंन ॥ त्यौंदृगलाजदबेनकी, चोटसहारैंकौंन ॥ ११४ ॥ दोहा ॥ भगी कबिनकीचतुरई, लगीरूपकीलाय ॥ रसनाकोबसनाचलैं, नैंनपु कारैंहाय ॥ ११५ ॥ अंगअंगरूपअनूपमैं, लपटीआनिअदाय ॥ रसनाकोबसनाचलैंनैंनपुकारैंहाय ॥ ११६ ॥ समझिसराहकसुघर मनि, चाहककाव्यसुठौंन ॥ हरिगुनगाहकआपबिन, प्रीतनिबाह ककौंन ॥ ११७ ॥ ईश्वरचाहैंसोकरैं, काढिसकैंकोव्यंग ॥ महादे वसब्रजगतपैं, प्रगटपुजावतलिंग ॥११८॥ छोटीचंचलरंगसरस, रहैं चितौंनाचितचाह ॥ दक्षीउत्तमलालमुनि, वाहवाहफिरवाह॥११९॥ सर्वोपरब्रजचंदब्रज, ब्रजगोपीब्रजगोप॥ जहांतहांजगमगरही,ब्रजा नंदकीओप ॥१२०॥ मंगलवपुब्रजलोगनिति, नितिब्रजमंगलचार॥ नितिदलहमंगलमई,श्रीब्रजइंद्रकुंवार॥१२१॥औरठौरकीआसतैं,हो यजगतमैंहास॥आसनरापूंऔरकी, ब्रजबासनिकीआस॥१२२॥ब्रज मैंसुखकोलूटनर, लूटतभरिअनुराग॥यहीलूटलूटनसकैं, ताकेबडेअ भाग ॥ १२३ ॥ (रासअनुक्रमके दोहा )॥ नागरन्यारीरीतजहां, नेहनृपतिकोराज ॥ लाजकियैंलाजनरहैं, लाजतजैंरहैंलाज ॥ ॥ १ ॥ नागरियागतिलेततव, प्यारीसुलपसुघंग ॥ पियकेमन लोचनाफिरैं, अरुझेपायनिसंग ॥ २ ॥ नागरियाप्यारीनचत, पि

यमनउपजतसंक ॥ लचकेजातहैंप्रानउत, जबइतलचकतलंक ॥३॥ नागरियादीसतदोऊ, वानैंबंधअपार ॥ सूरैंरनमेंजानियैं, रासमांहिरिझवार ॥ ४ ॥ नागरियानितततवैं, लषिलागतमुपमौंन ॥ भईजातमनकीकुगति, गतिवरनैंसोकौंन ॥ ५ नागरसैंननिसैंनमिलि, वनीजुनैंननिनैंन ॥ वनतवनतऐसीवनी, कहतवनैंनहिवैंन ॥ ६ ॥

## अथ अरिल्लाष्टक लिष्यते ॥

टौंनासोपढिदीनठटौंनानंदकैं ॥ रह्योपरतनहिंदियेंदृगानिआनंदकैं ॥ जोकछुबोतैंमोहिसुकहतिबनैंनहैं ॥ इतघरघेरोहोइलगेउतनैंनहैं ॥ १ ॥ घरीघरीघुटिप्रानउसासनिजातहैं ॥ अरीजरीयहप्रीतिभरीनहिंजातहैं ॥ घरबनपरतनचैंनगईभजिनींदहैं ॥ सासछुटावतबासवीरवहनींदहैं ॥ २ ॥ कन्हूंनिकसिनहिंसकतगेहकेकौंनतैं॥ नेहआपदासहौंकहौंदुषकौंनतैं॥ उरअंतरकेमांझनिरंतरपीरहैं॥अचिरजकीयहबातनपावतपीरहैं॥३॥मिलीछैलकौंबालगैलजहांसांकरी॥ घूंघटलाजकपाटलगीकरसांकरी ॥ वलनिउघारतवदनरंगदुहूंधांरह्यो ॥ व्हैंगयोरूपउजासस्यामइकटकरह्यो ॥ ४ ॥ दूरिरहोजिनछुवोअवैंइतनायहो ॥ लियोचहतरसवराहिंवांहगाहिनायहो ॥ भूलिनेहनहिंकरूंयहैंजियआंवहीं ॥ तुमलैंजानतचित्तनदेवोआंवहीं ५॥ तुमसौंलागेनैंननसूझतऔरहैं ॥ तुमस्वारथरसमगनलगनकछुऔरहैं ॥ तुमछिनदेपैंविजांदृगनिअंसुवापरैं ॥ तुमसौंअटकैंलालतिन्हैंकलक्यौंपरैं ॥ ६ ॥ सुधिनलेतहोलालसुक्यौंफिरमोहिये ॥ यहैंअंदेसोसदारहतहैंमोहियैं ॥ छिनहूविसरतनांहिंहमैंनिसभोरई ॥ कहर

करतहैंहायतिहारीभोरई ॥ ७ ॥ लषिसुधिभूलतभूलतउरउपरैंनियां ॥ अजूस्यामहमहरीरंगकीरैंनियां ॥ लालविहारीआपमोहितन पीतकी ॥ नागरीदासनजायकहीगतिपीतकी ॥ ८ ॥

## अथ सदाकीमांझैं लिष्यते ॥

इस्कछकीअंषियांअलसौंहींव्हैंइकटकमुसवयावैं । धीरजधरम सरमकींकैसीसुधिकौसुधिविसरावैं ॥ भायभरीभौंहैंमदमातीइतराती फिरजावैं । नागरीदासरौंमरौंमतबहायहायरटलावैं ॥ १ ॥ छरीछबीली गहैंहाथमैंअरीछैलइतआयो । गौंहनिमैंकाहूमिसिफिरिकैंकछुमोह नमुसकायो ॥ नैंननिसौंउरझायनैंनउंहिंमनसौंमनउरझायो । अ बनागरिसुरझावतिहौंचितसुरझतनहिंसुरझायो ॥ २ ॥ सबमैंग्वाल सांवलाअच्छाभायगयामुझकौंभी । दोइचस्मौंकोइऐसादेखाकस्मौं हैंतुझकौंभी ॥ करीनिगाहैंअजबइस्कसौंतबहिइधरमुहफेरा । नाग रीदासखडेसबदेखैंचोरिलियादिलमेरा ॥ ३ ॥ सौंहनामुपसिरसुरप लपेटाधरैंमोरकीपांषैं । गरबभरीमदरूपअमानीअजबजरबकीआं पैं ॥ हसनैंमैंघाइलकरिडारीदरदहमेसांसाहिये । नागरीदाससरमकी वातैंअबक्याआगैंकाहिये ॥ ४ ॥ निधरकप्रानइस्करनसूरेमुतलक नांहिडराहैं । वारकरैंमहबूबखूबजबहोयसुमारगिराहैं ॥ मुसकनाचित वनसौंघायलव्हैंमायलपरेकराहैं । नागरीदासवाहवाहकहिलागीचो टसराहैं ॥ ५ ॥ जिसकौंवहीफिराकफिकरतिसऐसनहींदिनआनी । नागरियालगिचस्मचोटफिरऔरनचौटसुहानी ॥ सरईवांननलगी लगौंहींसुनिकैंइस्ककहानी । फहमिंदाईजतनाहिंपाईमजलसतहां

दिवानी ॥ ६ ॥ सेतडोरियेकादुपटासिरखुलेबारबिथरैंहैं । सूंघत फूलगुलाबसहजदृगझुकिझुकिजातछकैंहैं ॥ नेहसनींचितवनचित वतहैंमोहनसोहनसौंहैं । नागरिदासछुवावतछबिसौंफूलतैंअधरहसौं हैं ॥ ७ ॥ जेदिवारकहकाहकेबासीआयपरेहैंबाहिर । मुषमैंमौननतो रनैंनौमैंकुछनकरिसकैंजाहिर ॥ जकिथकिरहैंजरदतनजडज्यौंबूझि बूझिसबहारे । नागरिदासऔरलोगौंकेवेकिसकामबिचारे ॥ ८ ॥ गायरोयजेसकैंनकबहीदुषउसासकैंसंग । आयगयेहैंजगकुपेचमैंप रिगयेकैंदफरंग ॥ भईजग्यपसुदसादुहेलीकहानिमात्ररह्योअंग । ना गरियाकहिबेकौंमनकीमनकीगतिभइपंग ॥ ९ ॥ गांवनिरोवनिमौं नाहिमैंहैंमौनाहिंमांझसराहनि । रोकतउर्धउसासमौनमैंयहदुषकठि ननिबाहनि ॥ बुरेबिजातीनिकटकाठसेलगेरहैंहियदाहनि । नागर सुखसागरकिनमेटोयहअबदुषअवगाहनि ॥ १० ॥

## अथ बरषा रितुकी मांझ लिष्यते ॥

ठाढेदोउअटाअपअपनींघटाजुरींचहुंधांतैं ॥ गावतरागमलारप रसपरआवतश्रवनसुहांतैं ॥ चिहुंटेपटपानपतनउघरेनेहमेहसरसां तैं ॥ नागरियानागरलषिउरझेदृगनहिंटरततहांतैं ॥ भीजतदोऊए कछतनांतरलगिलपटायरहेहैं ॥ मधुकरमत्तबासरसभूलेलगिलपटा यरहेहैं ॥ गउरस्यामतननीलपीतपटलगिलपटायरहेहैं ॥ नागरिया तवतैंइननैंननिलगिलपटायरहेहैं ॥ २ ॥ रमकतरंगहिंडोरैमोहनमु रलीमधुरबजावैं ॥ सुरमलारसुनिसुनिचहुंधांतैंबदराघिरिघिरिआं वैं ॥ मुकटझलकबनमालहिलोरतपीतांबरफहरावैं ॥ नागरियातिं

हिंछिनब्रजब्रालाअंकभरानिललचांवैं ॥ ३ ॥ रसघातनिद्रुमपातानि कैंतरवातनिमैंउरिझेहैं ॥ बरसतमेहनेहरसदंपततउनतहांसुरिझेहैं ॥ भीजेकचकपोलचहुंटलपिरातिपतिमनमुरिझेहैं ॥ नागरियानागरचि तयेंयौंमनलोयनजुरिझेहैं ॥ ४ ॥ स्यामाजूझूलतझूलेपरमोहनकर तपवासी ॥ लियेंमोरछलपरेजमींपरटहलचतुरसुपरासी ॥ बूंदपरैं तांनतपीतांवरसोभितव्याहसभासी ॥ नागरसपीनिरषरहिइकटक कोतककुंजविलासी ॥ ५ ॥ जरीजवाहिरजुगजेहरढिगलांवनलगी किनारी ॥ निकसीहुतीअबहिइतव्हैंकैंपहरिकसूंभीसारी ॥ फिरी वहुरिवनवनतैंभीजतओढैंकामरिकारी ॥ मैंनागरिजांन्यौंजान्यौंज हांव्हैंआईयहप्यारी ॥ ६ ॥

## अथ होरीकी मांझैं लिष्यते ॥

केसरिरंगरंगीपगियांमुषजोबनजोतिषुलीहैं ॥ तैंसियभालगुला ललालअलकैंझुकिझूंमिझुलीहैं ॥ भौंहकसीमृदुहसीउरबसीमैंननिसैं नतुलीहैं ॥ नागरिदासनवलजुवतिनकीमनसादेषिडुलीहैं ॥ १ ॥ चलतललितगतिलैंलैंदंपतिअद्भुतनृत्यरचीहैं ॥ बीननवीनपगानिनू पुरधुनिसुलफसुधंगसचीहैं ॥ आयआयभरभरपलटतछविसौंअति धूंममचीहैं ॥ नागरियालषिमोजहोजपरमनमथफोजलचीहैं ॥ २ ॥ छविसौंछैलछोरतपिचकारीप्यारीओटवचावैं ॥ दुहुंदिसचतुरषेलर सनायकचाचरिचहोलमचावैं ॥ हावभावअरुदुरनिमुरनिकोरंगक होक्यौंजावैं ॥ नागरियानैंननिकीदेषीवैंननिमैंनहिंआवैं॥३॥छुटी अलकभुववंकजुटीउरमोतिनमालतुटीहैं ॥ चलिअंचलचंचलनैंननि

गतिपियमतिदेषिलुटीहैं ॥ भलीगुलालबालपुलिषेलतआंगनकुंज कुटीहैं ॥ नागरिनवलकेलिअलबेलीरतिजियदेषिघुटीहैं ॥ ४ ॥ दिठाग्वारगारिसुरमिठागावतइस्कलपेटा ॥ मदअलसौंहींनैंनसैंनदैं मारतमैंनचपेटा ॥ पियगोरींदाछैलहोरींदासुंदरअंगअंगेटा॥ नागरिदासादिवानीहुइयांदेषिअजवमहरेटा ॥५॥ इतिहोरीकीमांझैंसंपूर्ण ॥

## अथ सरदकी मांझ ॥

ठाढ़ेदोउदर्पनमंडलपरविमलकलपतरुछहियां ॥ झुकिझुकिकैं प्रतिविंवनिहारतछविसौंदैंगरबाहियां॥निरषिरूपनिजसंपतिदंपतिरीझतहैंमनमाहियां।रासरसिकनागरनागरितहांचमकिचंद्रिकाराहियां१

## श्रीठाकुरके जन्म उछवके कवित्त ॥

हरीभईभूमिद्रुमफूलिफलझूमिआयेफरहरमोरनचैंआनंदभोभारो हैं ॥ नानामणिधाततेगिरिंदनिप्रगटकीनीगायद्रवैंदूधतनभारवढ्यो न्यारोहैं ॥ गोपीगोपनागरयेकुमदसेफूलेफिरैंगोकुलकोचंद्रमांसव नलग्योप्यारोहैं ॥ सींचैहैंमरीचैंसुषसंपदाअमंदआजनंदकैंदुलारो भयोव्रजउजियारोहैं ॥ १ ॥ सुतहोतजसुधाकेंआनंदउदोतभयो नंदहूकैंआनंदउठ्यौहैंउफनायकैं ॥ नागरसुगोपगोपीआनंदभरीहैं गावैंबनमोरमृगरहेआनंदलुभायकैं ॥ व्रजभूमिजमुनांगोवर्द्धनश्रीवृंदावनसोभादेतआनंदमैंआनंदसमायकैं ॥ स्यामसुषधामअभिराम कामहरैंमनरूपधरैंआनंदप्रगटभयोआयकैं ॥ २ ॥ सुंदरसांवरो बालकहोतनचेसबनागररंगरचाये ॥ जेजनजाचकतेउठिनाचतदे तवेलेतनवेललचाये ॥ नाचतगोपिकागोपभरेहरदीदधिदूधतैंपेलम

चाये ॥ ग्वायेबधायेजसोमतिपैंमिलिआंगनमैंगहिनंदनचाये ॥ ३ ॥ गरवीलेडोलैंगोपओपश्रतिआनंदकीव्रजपतिजूकैंबेलिसुकृतकीफ लीहैं॥ पुत्रउदैंहेतहेमरतनअनेकलच्छिभिच्छुकनदेतदेहदारिदकोद लीहैं॥ नागरकुसमदामराजतसदनसोभातोरनपताकाद्वारसोहैंभांति भलीहैं ॥ नंदघरआवतहैंगावतबधाईअलीगोकुलकीगलीगलीआ जरंगरलीहैं ॥४॥ जसुदाकैंसुतभयोसुनिसुनिगोपिनिकीबाढीहैंचह लचहूओरनिकलीनकी॥ टूटीमोतीमालउरअंचरउसरगयेछूटेकेसपा ससोभाकुसमकलीनकी ॥ आननअमितभालकुंकुमतिलकफैलेछबि वरनीनजातचंचलचलीनकी ॥ नागरमगनमनतनकीसह्मारभूलीगो कुलगलीगलीनभीरयौंअलीनकी ॥ ५ ॥ नंदगोपराजसुनऔरैंव्र जओपआजतेरैंपुत्रभयोभैयापुंन्यफलजापको ॥ ब्रह्मरिषद्वारबहोदे वताविमाननिपैंछायोसुरबेदगांनभेदकेअलापको ॥ घरघरसंपदा अपारबढीदेपियतहमपैंनकीनौंजातवर्ननप्रतापको ॥ नागरयौंब्रेरबे रग्वारकहैंटेरटेरतेरोघरमांनौंपरमेसुरकेबापको ॥ ६ ॥ एहोब्रजराज एकभेषधारीकोऊआजपुत्रकोजनमसुनिआयोतेरैंभौंनहैं ॥ मोती मणिमालपटकंचननचाहैंरंचहयगयभूमिग्रामलेतहमसौंनहैं ॥ नाग रअहोटैनांहिंव्रजरजलोटैंवहिअलषलण्योहैंयौंउचारैंतजिमौंनहैं ॥ बालककेपायलैलैंजटासौंछुवायनाचैंजोगीतीनआंषिकोकहांतैंआ योकौंनहैं ॥ ७ ॥ सवैया ॥ नंदकैंपुत्रभयोयौंआनंदकीआंनिअचां नकवातसुनाई ॥ फूलउठेरसझूलसबैंसुउमंगनिअंगसह्मारिभुलाई ॥ नागरमंगलमादिककीनरनारिनकेमनमैंछकिछाई ॥ लायचलेरटए कहीएकबधाईबधाईबधाईबधाई ॥ ८ ॥

# श्रीठकुरानीजीके जनमउछवके कवित्त॥

राधाकैंजनमआजरावरअगाधाओपहोतगांनमंगलमृदंगतारषंजरी॥ औरैंछबिढरेनरनारीडोलैंमोदभरेभानुसुतासुनिकैंप्रफूलेमुषकंजरी ॥ कीरतिकीकीरतिकिकाढीचंदचीरतज्यौंउपमांश्रमलकीलैंडारीगतिगंजरी ॥ सोभाव्रजनागरीप्रकटभईरूपगोभाकैधौंनंदनंदनकेआनंदकीमंजरी ॥ १ ॥ कीरतिकैंकन्याहोतमाचीदधिकादौंअतिमानौंलोपितीरकौंचल्योसमुद्रछीरको ॥ बेदधुनिगांनधुनिनागरनिसांनधुनिब्रह्मलोकगईपुरभोदिसुनांसीरको ॥ मोतिनकैंभारभरीमोतिनकेहारदेतजुरीहैंरमासीगोपीपारहैंनभीरको ॥ देवताबिमाननबिलोकिकहैंबारबारधन्यआजअवनिमैंभवनअहीरको ॥ २ ॥ काननकुंजसबैंउमगेउमगीजमुनांसुनिकैंसलतारी ॥ यौंउमगीअवनीबनकीरचिहैंमिलिरासनिसाउजियारी ॥ नागरिगोपिसबैंउमगीफिरैंआनंदआननवोपसंवारी ॥ कीरतिकैंभईकन्याअनूपममोहनकोमनमोहनहारी ॥ ३ ॥ उठिनागरनंदजसोमतिमोदसौंधायेवधायेलैंगोकुलसैं ॥ अतिआनंदअंगनिवोपचढीचलिगोपनदीजियेकातुलसैं ॥ व्रजमैंनरनारिउछाहछकेछबिनाचतगावतमंजुलसैं ॥ वृपभानकेकन्याभईसुनिकैंललनांपलनांमैंहसैंहुलसैं ॥ ४ ॥ चोगुनौंचाववढ्योव्रजमैंयहकीरतकन्याअनूपमजाई ॥ चौगुनेदानविधानऔगांनचहूंदिसचौगुनीयेधुनिछाई ॥ नागरपुत्रभयेंहुतैंचौगुनीमोदभरीहैंजसोमतमाई ॥ चौगुनीनाचतगोपीआनंदसौंचौगुनिनंदकैंबाजैंबधाई ॥ ५ ॥ भईवृपभानजूकैंरूपकीनिदानसुताबाजतनिसांन

धुनिछाईचहूंकोदमैं ॥ देवताअकासवृष्टिफूलनिकीकरैंठाढेभूमिव्र
जवासीजुरेभरेमहामोदमैं ॥ आयेनंदरायलैवधायेसंगरनवासनाग
रियामिलिरानीरानीयौंविनोदमैं ॥ कीरतनैंललीलैदईहैंगोदजसुधा
कैंजसुधानैंलालादयोकीरतकीगोदमैं ॥ ६ ॥ ललीकैंजन्मदिनबर
सांनैंसोभाभलीमहलनिउतंगधुजाव्यौमपरसतहैं ॥ दामिनीघटांनि
मैंअटांनिमैंज्यौंभामनीहैंइनकीसुदेहद्युतिदूनीदरसतहैं ॥ भादौंघन
घोरनितैंपौरिवृषभानजूकीनागरानिसांननिकोघोपसरसतहैं ॥ इंद्र
अमरावतीकोनीरवरसतह्यांभयानेकौंमहिंद्रहीरचीरवरसतहैं ॥ ७ ॥
कवित्त ॥ कीरतकैंकन्याभईसुनिसुनिव्रजवधूलैलैभेटधाईसवआनं
दवहवही ॥ थारउरहारनिकैंभारवेसह्यारपगधरैंडिगुलातलगेलंक
निलहलही ॥ नूपुरनिनादसौंरह्योहैंपूररनवासनागरसुवासअंगअत
रमहमही ॥ रूपकीघटासीकरिगानकीगरजउठिवाजिपरीसिंघद्वार
नौवतगहगही ॥ ८ ॥ राधाकोजनमसुनिआनंदअगाधारानीजसुम
तआईवेगदौरिदरवरहैं ॥ कीरतकैंआंगनभवनभीरलछमीसीलछन
जुरीहैंगोपीउछवकौंभरहैं ॥ फूलनिकेहारओसुगंधनिकेउदगारवट
तकपूरपाननागरअतरहैं ॥ नितंगांनतांनकेविधानसनमांनहोतआ
जसपीरावरिमैंलाग्योरंगझरहैं ॥ ९ ॥ लपिकैंवृषभानसुताकौंजसो
मतिलायलईहियमोदमहा ॥ मुषचूंमकैंचापिसुवायदईभइमोहमई
अवकैसीअहा ॥ जियमैंइकआवैंअचंभोयहैंकहिनागरीयावलिमो
सौंहहा ॥ अरीउंचैंनिहारिकैंझोरीपसारिनजांनियेरानीजूमांग्योक
हा ॥ १० ॥ कीरतदारानीवृषभानआदिगोपगोपीकैंसैंधन्यधन्य
व्हैंकैंजगजसपावते ॥ कौनतपकरतोयाव्रजवासकरिवेकौंकौनवड

कुंठहूकेसुषविसरावते ॥ नागरियाराधेजूप्रगटजोनहौंतीतोवस्याम परकामहीकेविपतीकहावते ॥ छायजातीजडताविलायजातेकवि सवजारिजातोरसओरसिककहागावते ॥ ११ ॥ राधेकैंजनमसमैंगो पिकासमूहमिलिबैठीवृषभांनभौंनबातंवतरावैंहैं ॥ कौंनहैंचतुर्मुषसो भिछुकनिमांहिंठाडोकौंनजटाधारीयहबीनाहिंवजावैंहैं ॥ कौंनतीन आंपनिकोबाघंबरओढिआयोकौंनच्यारबालकरीनागरसुहावैंहैं ॥ कौंनबदरांनिमैंवेदुंदभीबजावैंगावैंकौंनएकहांतेंदैयाफूलबरसावैंहैं॥ ॥ कवित्त ॥ जनमसुताकैंहोतताकैंमणिमोतिनिकीभिछुकनिदैंनल च्छलागीतकसतहैं ॥ विसमैंवरूथहौंहिंदेवादिगपालनिकेऐसीमौज कौंवकोऊकटिनकसतहैं ॥ राजनिकेराजामहाराजावृषभानजूके दानकीउमंडनिकुमेरअकसतहैं ॥ रथमारतंडगहैंसुंडबलवंडऐसेना गराबितुंडनिकेझुंडबकसतहैं ॥ १२ ॥ ॥ सवैयो ॥ कैसीअलोकि कभानजूकैंप्रगटीनिधिसुकृतपुंजकियाकी ॥ देवताओनरनागनिकी सबकन्याश्रीराधापैंवारिछियाकी ॥ कीरतअंकमेंअंचरओटदिपैंद्युति नागरिठौराहियाकी ॥ जैसैंबयारमैंदांपिलईझलकैंमनुनिर्मललोय दियाकी ॥ १४ ॥ ॥ कवित्त ॥ कीरतिकेकीरतप्रगटभईराधेआ जजिततितछाईहैंबधाईसुपदाइयै ॥ जगमागिउठ्योव्रजवदीओप आनंदकीवरनीनजातसोभाअतिसरसाइयै ॥ भामिनीजुरीहैंभौंन आंगनमैंगोपगनभीरवृपभांनजूकैंनागरसुहाइयै ॥ द्वारैंदेवारिपै ठाढेकहैंपायछीवनिकौजीवनिकेजीवनिकीजीवनिदिपाइयैं ॥ १५॥ ॥ सवईयै ॥ कन्याभईवृपभानजूकैंउरअमृतधारिकरूपविसे षा ॥ फूलेकमोदनिज्यौंकुलदेपिसुलागतहैंनाहिंनैंननिमेषा ॥ कीर

तकूपदिसातैंउदैंजाकोसीतलतेजलसैंलघुवेषा ॥ नागरियाजगबंदनकौंप्रगटीमनुहैंजकेचंदकीरेषा ॥ १६ ॥ कवित्त ॥ मांचीदधकादैंवृषभानजूकैंसुताहोतभयेनरनारिअंगआनंदअगमगे ॥ नैकनसह्मारतनबसनरसनछूटैंछूटैंनांहिपेलतमैंरंगानिरंगमगे ॥ बीरनिकेवृंदअरुहीरनिकेहारनगननागरगिरेहैंवेप्रस्वेदानिसगमगे ॥ जैसैंनभमंडलमैंतरइनकीसोभाऐसैंपरेव्रजमंडलमैंभूषनजगमगे ॥ १७ ॥

## अथ सांझीके कबित्त ॥

रंगसरसांनैंबरसांनेंबनवागस्यामापेलैंसांझीसांझबहोसाथनिसिंगारकैं ॥ नूपरनिनादपूररह्योहैंद्रुमनिमांझजहांतहांलेतकलीकुसमउतारिकैं ॥ सांवरीनवेलीबालनीलमनिबेलीसीअकेलीफिरैंवांहांजोरीसंगसुकुवांरिकैं ॥ डारिहिनवावैंमिलिवीनैंफूलपावैंफलनागरियावारैंमनकोतिकानिहारिकैं ॥ १ ॥ सोहैंमुषकमलपैंभौंहैंलटभृंगपांतिनैंनलमछौंहैंकलगाकीजनुपंषियां ॥ नांसिकासरूंसीक्यारीअधरदुपहरियाकीमुसकनिमंदमकरंदसीमैंलाषियां ॥ प्रीतसांझीकाजकीनीकामकाछीछबिआछीऔरसाछीकोहैंताकीसाछीसबसषियां ॥ फूलीवयसंधिसांझराधारूपबागमांझडोलैंआजफूलभरीनागरकीअंषियां ॥ २ ॥ फूलनकेउरहारहमेललियेंकरपंकजफूलफिरावैं ॥ फूलनकीनवलासनिसौंकईफूलनकीगुहिगैंदचलावैं ॥ फूलहियैंबिचपीयलियेंअलिनागररंगअलेलसौंगावैं ॥ मेलिकैंअंसभुजासुपझेलयौंपेलकैंसांझीयैंस्यांमाजूआवैं ॥ ३ ॥ सांझीफूललैंनसुपदैंनमननैननिकौंश्यामाजूसाथजूथजुवतिनकेधाएहैं ॥ चलतअधिकछबि

छाजतछबीलनिरंगीलानिकेरंगरंगपटफहराएहैं ॥ नागरिनिसांनना दनूपुरसमूहबाजैंअंगकीसुवासनिभ्रमरछूटआएहैं ॥ वृंदावनबीच धायधरतउठीयौंगायमानौंघनस्यामैंजानिमोरकुहकाएहैं ॥ ४ ॥

## अथ सांझीफूलबीननिसमैं संवाद अनुक्रम लिष्यते॥

॥ सांझीकेकवित्त ॥ अथ सषीनिप्रति नंदकुमार बचन कबित्त ॥

ऐसेयासघनबननिर्जनकेमांहिंमैंतोआवतीयजानीनांहिंजानीज बगाईहो ॥ औरहैंनसंगकोऊएकजातजुवतीहोविनहींबिचारैंजोर जोबनकैंधाईहो ॥ अबफिरजाहुआपआपकैंभवनसवठौरसुइको सीफिरेमदनदुहाईहो ॥ कैंधौंतुमनागरिहोहमैंसमझायकहौकौनकी पठाईइहांकौनकाजआईहो ॥ १ ॥ उत्तर ॥ सषी बचन कवित्त ॥ फूलनिकेबींनबेकौंआईइहिंबनमिलिबूझिबेकोहियैंऐसीधरनिबक्यौं धरी ॥ टेढीयेचितौंनदीसैंटेढीटेढीबातैंकहोटेढेहैंकैंठाढेछलीछैलरो पिकैंछरी ॥ उचितनहींह्यांअकेलेरहोजुवतिनिमैंनागरनिकासिजाहु याहींसांकरीगरी ॥ नांतोअनबोलेरहोछांडिमगमेरहमआवैंगीहजा रबेरतुमकौंकहापरी ॥ २ ॥ उत्तर नंदकुमार वचन कवित्त ॥ ह महींकौंचिंताइहिंबनकीरहतनितिनितिरषवारेरहैंलाग्योचितचेतुहैं ॥ हमआठौंजांमसेवैंकामनृपधामयहसहैंघनघामअतितातेंहियहेतुहैं ॥ हमहींतैंगहबरहरयोंहैंरह्योहैंमहानागरियाप्यारोमीनकेतरसपेतुहैं ॥ हमहीकौंदेकैंकछुलैंनीहैंसुलेहुयौंपरायेफलफूलनिकौंकौनलैंनदेतु हैं॥उत्तर सषी वचन कबित्त ॥ कहाहैंपरायोसवदीसतसोराधेहीको विनहीबिचारैंझूठेबचनउचारेजू ॥ राधेहीकीभूमियहराधेहीकेपगन्ट

गराधेहीकोनांवरटैंसांझ्रओसंवारेजू॥ राधेहीकेसरवरयेतरवरहैंराधेके राधेकेफूलफलनागरनिहारेजू॥ राधेकीदुहाईफिरैंराधेहीकोवृंदावन तुमकौंनलालावीचहटकनिहारेजू ॥ ४ ॥ उत्तर नंद कुमारबचन कवित्त॥ राधेजूकेहमहीहैंहमैंअपनायलेहुज्यौंबमुषसुधाधरदेषिदेषि जीजियें ॥ निकटबुलायमोहिपायनिलगायराषोसषीहोकुंवरिजूकी षुनसिनषीजियें ॥ हारेतुमआगैंबनद्रुमएतिहारेअबनागरियादुहूं औररसवनभीजियैं ॥ नीकेंसनमानकछूकरिरषवारनकोपाछैंबहो फूलनिसौंफूलनिकौंलीजियैं ॥ ५ ॥ उत्तर सषीबचन कवित्वं ॥ फूलहैंहमारेहमलैंहगीबतुम्हैंकहाऔपैंअैसैंटोकिबोनकीजैंबलिहारी जू ॥ दीनताकरतब्रजराजकेकुंवरअबपहिलैंजेबातैंकहीवेसब बिसारीजू ॥ नीकेहीहोनागरहोबिमनेनहोहुतातैंव्हैंकरिनिसं कदिसआइयेहमारीजू ॥ वनकेबिहारीवारीलीजैंद्रुमरखवारी लालयेतिहारीमनुहारनिसौंहारीजू ॥ ६ ॥ कविबचन ॥ ॥ साहससम्हारिस्यामआगैंआयेप्यारीजूकैंरूपकोअतुलभारपरत नसह्योहैं ॥ बीचनीलअंबरकेंबदनमयंकलषिचकृतचितौंनमैं चकोरव्रतलह्योहैं ॥ पायडिगुलातजातपीतपटछूटगयोनागरपरत हियेधीरजनगह्योहैं ॥ पगेरूपचैंनानिमैंबैननफुरतमनालियोचहैहाथ मनहाथमैंनरह्योहैं ॥ ७ ॥ फूलनिकौंगईउतसषीमिलिजहांत हांइतकौंरंगीलेकछुऔरैंढारमैंढरे ॥ रसिकरसालबालदयोचाहैंउर मालजबनंदलालहसिआगैंहाथलैंकरे ॥ उरझीचितौंनकंपस्वेदसुर भंगभयेनागरियानागरअनंगरंगसौंभरे ॥ राधेजूदयोहैंहारमोति नकोमोहनकूंमोहनजूहारहोयराधेकेगरैंपरे ॥ ८ ॥ राधामनमोहन

अगाधारूपरंगभरेभुजभरिझोलिकामकेलिसरसायदी ॥ पगशु
कसारिकादिजाकिथकिकरिडारेनूपुरओकिंकिनीकीझनकसुनाय
दी ॥ दूरहीहटकराषीकुंजद्वारअलिसैंनीस्वेदअंगमिलीलैंसुवासपहुं
चायदी ॥ हुतीललितादिजेलतानवोटनागरितेदेपनसकतप्रेमछक
निछकायदी ॥ ९॥ जेतेद्रुमकुंजनिकलपवृच्छएप्रतच्छदुहुनकोंवां
छितदईहैंनिधिभलियां ॥ स्यामास्यामकरैंकेलिआनंदअलेलमत्तवे
लनयेनेहकीअछेहफूलफलियां ॥ दंपतिकोसुषसोईसंपतिहैंनैंनानि
कीनागरियादेषिदेषिजीवतहैंअलियां ॥ नैंकदिनरातकेविहातकी
नजानीजातवृंदावनहोतनितिनईरंगरलियां॥ १० ॥ वृंदावनआ
नंदबिहारचारुदंपतिकेताकीदिनरातबातसोसुनिजियोकरो॥ललित
हिंडोरासांझीरासरंगदीपमालाफूलनिकीकुंजरुचिरचनाकियोकरो॥
नितिहीवसंतइहांहोरीरचितचोरीचावनागरियाकेलियेसकेलिकैंलियो
करो ॥ दियोकरोयेईअरुयेईसुपलियोकरोयेईदिनरैंनरसरासिक
पियोकरो॥ ११ ॥

## अथ रासके कबित्त ॥

राधानंदलालरासमंडलरसालनचैंएकतनव्हैंकेंएकफूलनकेहार
मैं ॥ एकजारीदारसेतओढनीकोंओढिदोऊनृत्ततिसुधंगगतिमिलि
ततकारमैं ॥ मुषनैंनभूषनचिकुरकरकांतिपुलीचांदिनीसरदसुच्छसा
गरकेवारमैं ॥ नागरमयंकमीनमानौंमनिगनसिंवारकंजकामधींवर
गहेहैंरूपजारमैं ॥ १ ॥ सरदसुहाईनिसप्रफुलितवल्लीबनवहोछवि
छाईचारुचंद्रिकापुलनिमैं ॥ गानकेविधानतहांनृत्तभेदहावभाव

च्योहैंबिलासरासमंजुलपुलनिमैं ॥ लेतगतिनागरियानागरसुमंडल मैंकोरिकमदननांहिआवततुलनिमैं ॥ बेरबेरझूलैंमोतीमालाकोझु लनिमनदेपिदेपिडुल्योजातकुंडलडुलनिमैं ॥ २ ॥ एकरातहींमेंक ईकलपअलपजानैंऐसीकेलिकवनीयइनहींसौंहोसकैं ॥ एकबांसुरी कीधुनिथिरचरमोहिडारोत्रिभुवनकौंनसुनिधीरगहिजोसकैं ॥ एकन टनागरकीमुकटलटकमांझअटकिपरचोहैमनछूटिनांहिसोसकैं ॥ ए कभुवभंगमेंअनंगमानभंगहोततताकेरासरंगकोबषांनकरिकोसकैं॥३॥ उदितसरदचंदचंद्रिकाकिरनकढीदिनमानितापतनमेटतकहलहैं ॥ ऐसेसमैंअ ईव्रजबालानंदलालढिगातिन्हैंदेषिकोटिरतिलागतिसह लहैं ॥ गांवैंगीतमीतमिलिनागरिसंगीतनचैंचंचलताचितैरहीमो मतिहहलहैं ॥ मिलीघनस्यामैंमानौंधाईनभमंडलसौंबीचिरास मंडलकैंदामनीलहलहैं ॥ ४ ॥

## अथ चांदनीके कवित्त ॥

पूरनसरदससिउदितप्रकासमानकैसीछबिछाईदेषोबिमलजुन्हा ईहैं ॥ अवनिअकासगिरकाननओजलथलव्यापकभईसोजियला गतसुहाईहैं ॥ मुकताकपूरचूरपारदरजतआदिउपमायेउज्जलकी नागरनभाईहैं ॥ वृंदावनचंदचारुसगुनबिलोकबेकौंनिरगुनकीजो तिजनूकुंजनमैंआईहैं ॥ १ ॥ छाईजुन्हाईनिकाईचिताचितैंनागरकैं सुपत्राढचोनवीनौं ॥ जोतिजगीरुपहैंरीजहांतहांदैकबियैंउपमाजु प्रवीनौं ॥ चंदमरीचानिकीवरकैंभरिकैंभुवओनभहूमंढिदीनौं ॥ मा नुहुकामकारीगरनैंवसमैंकारिकैंवसमैंमनकीनौं ॥ २ ॥ आईनिसस

रदसुहाईलगैवृंदावनजगमगजोतजगीअमलअपारहैं ॥ नवललतां निबीचस्वेतफूलफूलेसोईललितहलितहियैंहीरानिकेहारहैं ॥ चांदनी बिमलवोढैंतासकेरूपैरीपटनागरसुगंधअंगअतरबयारहैं ॥ भरीरू पसंपतिसौंदंपतिकेसुषकाजकीनौंसषीआजनवकुंजनिसिंगारहैं ॥३ कढतनिसाकरदिवाकरसोदीठपरिडरिअंधकारएकपलमैंपलायोहैं ॥ भोरभयोजानिकैंबिहंगनिमैंसोरमच्योअवनिअकासमैंप्रकाससरसा योहैं ॥ परीचलचालबालचमूंचतुरंगनीमैंनागरतपततेजब्रजपरआ योहैं ॥ चांदनीनहोययहमाननीकेजीतबेकौंमैनमहारथीब्रह्मअस्त्र हिचलायोहैं ॥ ४ ॥ छाईछिपादिनज्यौंदरसीमिलिकैंचकवानिबि योगबिसारचो ॥ सौगुनौबाढयोप्रकासदिसानिमैंचौगुनौंचावनजा तउचारचो ॥ कैसीपिलीहैंअलोकिकचांदनीनागरताकोबिचारबि चारचो ॥ राधेजूऊंचीअटाचढिकैंकहुंआजनीलांबरघूंघटटारचो ५

## अथ दिवारीके कवित्त ॥

कुहुकचचूंनरीसितारेदारसोईनभसहजअंगआभाप्रकासपुंजधा रीहैं ॥ मनिगनभूषनसुदीपकजगीहैंजोतिमोतिनिकीआवमहताबउ नहारीहैं ॥ फूलझरीहासमैंनिवासमहामोहनीकोकुंजनकैंपुंजचपचौं धिबिसतारीहैं ॥ औरठौरदीपनकीदुतिसौंदिवारीहोतनागरबिहारी कैंदिवारीनितप्यारीहैं ॥ १ ॥ जसुदाकैंफिरैंमुकतांनकीवेलीसीना गरिराधेसिंगारकरैं ॥ वरवैंनीकेभारऔहारनिकेडगपाइनकीडिगुला तधरैं ॥ अतिआननजोतिमईअंगनांभयोरूपकथाकहिकोउचरैं ॥ जितजायसंवारतबातबिधूतितदीपनकीदुतिफीकीपरैं ॥ २ ॥ जहां

तहांदीपनिकीदीपतदिपतदूंनीज्यौंजरीसजीवनिकेपौधालैलगाए हैं ॥ कैधौंदेषिदंपतिकीसंपतिविहारचारइंद्रपारजातकेपहुपबरपाए हैं ॥ कैधौंपुषरागनिकेनागरपरेहैंओलाकैधौंअंगअवनिसुनैंनसरसा येहैं ॥ कैधौंनभमंडलतैंबृंदावनचंदजूपैंव्हैकैंपांतिपांतिनिनछत्रजुरि आएहैं ॥ ३ ॥ नवकुंजकैंचौकदिवारीकीरातिसुप्यारीजहांअतिसो भासची ॥ जरतारीकीसारीओअंगजवाहिरसीसमुकेसकीषौररची॥ इहिंबांनकनागरिसंगसषीलखिलालनिकीमनसाललची ॥ सवपांति व्हैछोडतफूलझरीतहांहोजपैंरूपकीमोजमची ॥ ४ ॥

## अथ गोरधनधारनका कबित्त ॥

कुंवारिकिसोरिकहूंदरसीकुंवरकान्हजाछिनतैंमिलिबेकीरीतियह ठांनीहैं॥ गोपनकीमतिफेरिमघवाकीबलमेटीवरप्योपुरंद्रतबप्रलैपौन पानीहैं॥ छूटिगईसहजैंबिपतिमांझलोकलाजराषीगिरधारीनी रैंराधा रससानीहैं ॥ नागरविषमविषसींचीहितबेलीऐसैंलगनलगेकीहेली अकहकहानीहैं ॥ १ ॥ जांनैंरीबलैयाकितबरषैंप्रबलपांनीकितपरैं ओलाकितमेघमालाअनी की ॥ पायोप्रानपीतमनिहारैंछबिगिरधरैं चंदहिचकोरीजिमनेहचितवनीकी ॥ नीरीमुषबीरीदेतलेतरूपनैंन सुधापगिरहेबातानिपरमाहितसनीकी ॥ नागरदिनसातरैंनचैंनमैंन जानीजातघनीघनब्रषांमैंबनीबनांबनीकी ॥ २ ॥ मत्तमोरचंद्रिका रतनपेचपगियांपैंसुंदरसुमनगुच्छसोभानवमालकी ॥ घूर्नितनयन वंकभुवमुषमंदहासपरसतपौंनजुगअलकसचालकी ॥ ठाढोव्हैत्रिभं गनिसौंगिरराजकरधरैंनागरझुलनिझुकिसोभाबनमालकी ॥ होत

मदभंगमनमथराजसुरराजदेपसपीदेपिआजछबिनंदलालकी ॥३॥ गोवर्द्धनकरधरैंबीचठाढेनंदलालचहूंओरबालसुपसमैंसरसतहैं ॥ राधेजूचितौंनमैंभरतअंकमोहनकौंमोहनचितौंनअंगअंगपरसतहैं ॥ दूरहीतैंदुहुनकेस्वेदरौंमकंपहोतनागरनिहारिनेहदसादरसतहैं ॥ उतइंद्रकोपिकोपिबरसतमेहअतिइतगिरधारीप्यारीरंगवरसतहैं ॥ ४ ॥

वारिहौंतोआजब्रजराजकेकुंवरजूपैंनीकैंकैनिहारिकैसैंठाढेहैंसुढारसौं ॥ एककरगिरधारैंएककरकटितटनाचतज्यौंनिर्तकारीनागरसह्मारसौं ॥ गोवर्द्धनतरैंचंदमुषकैंउजारैंबंधीरूपरिझवारिनिकीदीठइकतारसौं ॥ आयआयसबकीभईहैंइकटौरीआंखैंयाहीतैंत्रिभंगअंगव्हैंरहेहैंभारसौं ॥ ५ ॥ सुरओअसुरनरनागजेबलीतैंबलीतिनकीनचलीमनीमनकौबिसारीहै ॥ रावअमरावतीकोधूरिमैंलुटतइंद्रऐसीरजधानीघोषमोषहूतैंभारी हैं ॥ भारीहैंगोवर्द्धनआतपत्रफेरयौंसबऊपरलैंनागरअटलराजदीनौंसुभकारीहैं ॥ औरछत्रधारनिकेकईछत्रभंगहोतएकरससदाब्रजवासीछत्रधारीहैं ॥ ६ ॥

## अथ होरीके कवित्त ॥

ठौरठौरचाचरचहुलमचीचंगनकीअंगनकीऔरैंदसाऔरैंरूपछायोहैं ॥ आनंदउरनिअतिअमितअखंडबाढ्योनागरमिलनिदिनदावदरसायोहैं ॥ लाजओरुषाईतियसंगलैंविवेकपतिभाज्योब्रजमैंतैंमारबाननिदबायोहैं ॥ पौढीप्रीतजागानिनवलनेहलागानियौंफागुनसनेहिनकेभागनिसौंआयोहैं ॥ १ ॥ आईबरसांनैंतैंअकेलीकोऊजसुदापैंगवारनिभिजोइडारीषेलबीजबैंगयो ॥ सुनिपुरभानतैंदुलारी

चलीकीरतिकीधूममचिपरीभारीगारीघोषछ्वैगयो ॥ नागरीचमकि रहीचहूंवोरचपलासीघेरेघनस्यामसब्दहोहोलोकहैंगयो ॥ घरलाल तरलालकेकीसुकपिकलालघुमड्योगुलालब्रजलालमईव्हैंगयो ॥२॥ षेलताबिहारीजूसौंप्यारीआजुकुंजनिमैंबूड्योमनआनंदमैंहेरचोनाहि रतुहैं ॥ नागरगुलालधूमधूंधरिगगनचढीछूटैंपिचकारीधारधारसौं भिरतहैं ॥ नूपुरनिनादसौंरह्योहैंपूरिबृंदाबनधावतधरनिनगभूपन गिरतहैं ॥ लागीमुखरोरीउरतोरीमालबोरीरंगहोरीमांझगोरीझकझो रीसीफिरतहैं ॥ ३ ॥ षेलैंमनमोहनसौंहोरीब्रजगोरीआजमैंनसैंनरैं नधूमधूंधरसीउठीहैं ॥ केसरिसौंभीजेपटनिपटमिहीनतामैंहीरनके हारचारचमकैंअंगूठीहैं ॥ छुहूंवोरचतुरसमाजअतिरंगरह्योउपमां बिलोकिहावभावभईझूठीहैं ॥ लैलैंओटघूंघटकीनागरिगुलालभरेंउ तउठैंमूठीइतमुरतिअनूठीहैं ॥ ४ ॥ नागरिषिलारऔटपाईकौंअके लीमिलीडारिपिचकारीगहिराषीकरकामिनी ॥ केसरिदुकूलभेदभू षनकिरनकढीथहरानित्यागिथिरठाढीमनौंदामनी ॥ षेलबोबिसरि मनमोहनविबसभयेहौहूंछकिरहीलषिसोभाअभिरामनी ॥ भौंहन कसौंहैंठाढीवदनहसौंहेदेत्तसौंहैंअलसौंहैंगातसौंहैंभीजीभामिनी॥५॥ केसरिकेहोजनिपैंमोजमचीआनंदकीनागरियाषलैंसबसंगसुकवारी की ॥ धायकैंचलावनिबचांवनिअदायनिसौंदुरनिमुरनिओटभीजी तनसारीकी ॥ रसियाकुंवरजूकेहाथनकीलाववताकहांलैंसराहौंउ तपेलनपिलारीकी ॥ सघनजघनकटिकुचनिकपोलनिपैंमनकीपर नितहांभरनिपिचकारीकी ॥ ६ ॥ मनहीमैंरीझरीझरीझातिहूंरीझ हीपैंगतिनकहतबनैंमेरीहेलीहालकी ॥ हीयोभरिगरोभरिनैंनभरिढ

रैपैनेटरैहैनैनैंनहूतैंसोभातिंहिंकालकी ॥ होरीमैंनागरिमातिचोरीचि तैंचातुरीसौंआतुरीसौंआंवनिझमकिपगबालकी ॥ बांएपांनघूंघट कीगहानिचहानिहासिदांहिनैंतैंटेढैताकिभरनगुलालकी ॥ ७ ॥ होरी मैंरूपठगोरीसीडारतवारतप्रानललामतभावन ॥ षेलिकैरंगअलेल चढीछबिकैसीलगैंगहिघूंघटआवन ॥ दामिनसीदविअंबरमैंमुरि जातउतैताकिमूंठिउठावन ॥ धीररहैंनहिंनागरकौंलषिचीरकोओट अबीरबचावन ॥ ८ ॥ थोरीसीबैसमैंनागरिगोरीकरैंचित्तचोरीरुहो रीमचावैं ॥ कुंडमैंतारीवजाइउठैकहिहोहोजबैंउतकौयहधावैं ॥ जां हिसबैंअवसांनजकीलगिनागरकैंकरकंपउपावैं॥ नांहिअवाईसह्मारि सकैंजबरूपहवाईसीछूटिकैंआवैं ॥९॥ षेलपेलचायनचतुरचौंकिचा चरिमैंठाढेथकिइतउतैभीरसपियांनकी॥ मंदमंदपवनडुलावतनवेलि यांजुहीकीपीतफूलनगुहीलैंपषियांनकी ॥ चाहैंनवनागरबदनराधा रंगभरचोदोऊनेहनददोऊगतिझषियांनकी ॥ बिनहींगुलालरंगर सियाउठावेंमूंठदेखनकौंझझाकिरंगीलीअंषियांनकी ॥ १० ॥ देव नकेरुरमापतिकेदोऊधामकीबेदनकीनीवडाई ॥ संपओचक्रगदाअ रुपझसरूपचतुर्भुजकीअधिकाई ॥ अमृतपानबिमाननिबैठिवोना गरकेतीकहीयैंनभाई ॥ स्वर्गवैकुंठमैंहोरीजोनांहितोकोरीकहालैंक रैठकुराई ॥ ११ ॥ आईहोरीषेलिमैंनवेलीकोऊनंदगेहस्यामैरहीदे षिरूपकौतकलुभायकैं ॥ गोरैंअंगरंगभरीग्रीवहिनिहारैंठाढीजोरैंदृ गनागरसौंथोरैंमुसिकायकैं ॥ चाहतगुलालडारचोलालपैंनडा रैंसांकिरसनांदसनदाविरहैसकुचायकैं ॥ लाजकीलपेटमैंअंगेट हिलपेटैंपटनिपटमसुसैंमरैंरीझिअकुलायकैं ॥ १२ ॥ लालगुलाल

कीधूममचायकैंधूंधरधामअंध्यारोकरोहो ॥ तामधिधावतहोछिपकैं छलिसौंकछुऔरहीढारढरोहो ॥ नैंकतोलोककीलाजधरोजियनां हिडरोबरजोरीअरोहो ॥ हारगैंपहनावतनागरआयपरायेगरैंहीप रोहो ॥ १३ ॥ षेलिकैंवाढीरहीसबनागरिअंगउमंगनिआंनिअरी जे ॥ गोरीनकीश्रमसौंछबिबाढीगुलालनिबालसनीसिगरीजे ॥ अं चरषूटिसिंगारषसेमनूमैंनकीलूटिकेमांझपरीजे ॥ केसछुटेउरमाल टुटीनंदलालानिसंकनिअंकभरीजे ॥ १४ ॥ आवतहेनंदगांवतेंगा वतेसंगसषाडफलीनैंनवीनैं ॥ रंगनिसौंभरिडारेसबैंहमहाथमरोरकै चंगहैंछीनैं ॥ आपुनकेकरबांधिकैंहारसौंप्यारीकेपायनिपारेअधीनैं ॥ काल्हिकीबातैंयेभूलिकैंनागरआजहुवेईभलेढंगलीनैं ॥ १५ ॥ सिर तैंसरकढीलेपेचढिगझूलैंबैंनांअंचरउतरगयाकौंनहाललाजका ॥ आं षौंमैंगुलालडाललयायेहोरूमालअबकहालौंबयांनकरौंतुह्मारीरिवा जका ॥ ऐसीबरजोरीकितबदीहोरीषेलबीचटुकभीनतुह्मैंसकसुघर समाजका ॥ दीजैमुझैंजांवनपरौंहौंप्यारेपावनमैंछोडोमनभावन जीदावनापिसवाजका ॥ १६ ॥ कीनीअंध्यारीगुलालउडायकैंमो मतिताछिनतैंभरमीहैं ॥ कैसैंदुरैंतिनसौंछलसांवरेरावरेजेमनकेमर मीहैं ॥ फीकोभयोअधरांनिकोरंगअनंगकीआननपैंगरमीहैं ॥ ना गरदेषोजूप्यारीतिहारीकौंवेअबहीअबक्यौंसरमीहैं ॥ १७ ॥ औंच कांहींआयप्यारीसौंधौंबगरायजातदुपटामुकेसीसीसअंचलसुभाय सौं ॥ जरीदरदावनमैंपायदरसायजातरहीजेबपायपन्नापायजेवपाय सौं ॥ तनकौंनछवायजातआपकौंबचायजातधीठचोदैंधिरायजातना गरसुचायसौं ॥ नैंननिमिलायजातकछुमुसकायजातगैंदलैंचलाय

जातअजबअदायसौं॥१८॥गांसगसीलीयेबातैंछिपाइयेइस्कनगाइये गाइयेहोलियां ॥ गैंदबहांनैंनबीराचलाइयसूधैंगुलालचलाइयेझोलि यां ॥ लोगबुरेचतुरेलषिपांवैंगेदाबैंरहोदिलप्रीतकलोलियां ॥ पायप रूजीडरोटुकनागरहायकरोमतबोलियांठोलियां ॥ १९ ॥ वसंतव र्ननं ॥ कवित्त ॥ फूलेद्रुमबल्लीबनझूलेअलिगंधवोलैंमदनसदनमां नौंमंगलबधांवनौं ॥ जहांतहांआवतधुनिगानहिंडोलतैसोकोकिलां निकोयलकोसोरमनभांवनौं ॥ उमहींसकलबालआईवृषभानजूकैं किसलैकलससंगसोहैंमहरांवनौं ॥ हियेहुलसंतविकसंतकंजातिय मुषनागरवसंतबरसानैंमैंसुहांवनौं ॥ २० ॥ सवैया ॥ काननकेसू षिलेसुभलेद्रुममंजरीमौरानिदीहिंदिषाई ॥ झौंरनिझौंरनिभौंरनिको रवआतुरकोयलकूकमचाई ॥ क्यौंनामिलैंप्यारेनागरसौंउठिकामउ देगभरीरितुआई ॥ रूपकोगर्वरहैंगोनहींरीवसंतकीआंनिपरीहैंअ वाई ॥ २१ ॥ हैघटकंचनकेपैंमनौंनवपल्लवलाललसैंअधरारी ॥ ना सिकारूपकीमंजरीसीमृदुस्वाससमीरसुगंधमहारी ॥ मौररुमाव लिकोकिलबानीहरचानीलतातुवनागरियारी । रीझिरहेरसवंतलि कंतवसंतसोवैसहैंप्यारीतिहारी ॥ २२ ॥

## अथ फागषेलसमैं अनुक्रम ॥

सखांनि प्रति नंदकुमार वचन ॥ कवित्त ॥ आवो सबासिमाटिरचावोमिलिफूलफागसुबलसुबाहुरुश्रीदामाआंनिअरो रे ॥ गावोगारिधूंमाहिंमचावोलैवजावोडफ‌अैसीफिरिपावोकववा तमनधरोरे ॥ दरवरदौरिदौरिहोहोकहिरौरिकारि‌‌ऽहैंकैंइकठौर

वारनिकौंसोवतननंदनीरैंचौकसरहतचितचौंकियेभरभरात॥नागरइ तेपैंउघरारैंव्हैंअंध्यारैंछैलअछनअछनआयोप्राननिफरफरात।वंधेभु जपासनिवेस्वासनिकौंरोकैंतउलगिकैंहियेसौंहियेसुनियेंधरधरात २

## अथ फागबिहार ग्रंथ लिष्यते॥

॥ श्रीव्रजछैलजू ॥ मंगलाचरनप्रार्थना ॥ दोहा ॥ फागबावरे दिननिके, रूपबावरेछैल ॥ रंगभरेरसबरसिये, मोरसनांकीगैल॥ ॥ १ ॥ नवमैंमुष्यसिंगाररस, रसिकनिहियेंसुहात ॥ सोमतवारो फागमैं, ताकीवरनौंबात ॥ २ ॥

## अथ फागुनमास समय॥

॥ दोहा ॥ ग्यारेनहिप्यारेलगैं, सादेसहजउदास ॥ प्रेममत्तम दरापियें, कैफीफागुनमास ॥३॥ फागमासरितुउठतवहो, नवद्रुम पल्लवलागि ॥ जडहूकैरौमांचव्हे, बिथामदनतनजागि ॥ ४ ॥ हियेरंगीलेफागमैं, कियेरंगीलेअैंन ॥ महारंगीलेदिनसबैं, महारंगी लेरैंन ॥ ५ ॥ गृहकोनैंजातनरह्यो, परतअगौनैंपाव ॥ इंहिंहोरी केषेलमैं, चितचोरीकोचाव ॥ ६ ॥ बैकुंठादिकलोकजेव्रजपरिडा रूवार ॥ उत्सववारूफागपरि, जेप्रसिद्धसंसार ॥ ७ ॥ अथ सवै या ॥ देवनिकेरुरमापतिकेदोऊधामकीबेदनिकीनीबडाई ॥ संष ओचक्रगदाअरुपद्मसरूपचतुर्भुजकीअधिकाई ॥ अमृतपानवि माननिबैठिवोनागरकेतीकहींपैंनभाई ॥ स्वर्गबैकुंठमैंहोरीजोनांहि तोकोरीकहालैंकरैंठकुराई ॥ दोहा ॥ व्रजतैंसोभाफागकी, व्रजकी सोभाफाग ॥ दवेदुहूंदिसप्रगटिहीं, अंतरकेअनुराग ॥ ९ ॥

## अथ ब्रजफागआगमानि ॥

॥ दोहा ॥ इंहिंरितुऔसरफागकैं, भयोलगनकोराज ॥ डफ मोहनमुरलीसुनैं, बधुनिडगमगीलाज॥१०॥ जथा कबित्त ॥ लागी हीबसंतैंसरसआसजुवतिनिकौफागरसलागभरचोवहिदिनआजहैं ॥ उमगेसकलब्रजवासीसुषरासीमहाफिरतसुहाईयैंदुहाईरतिराजहैं ॥ होरीडांडोरोपतहींदुंदुभिस्हैनायभेरनागरसमूहडफउठेबाजबाजहैं ॥ हल्चलपरीहैंधूमिधीरजढहनलागेदहलांनेमानगढहहलांनीलाजहैं ॥ ॥ पुन कबित्त ॥ ठौरठौरचाचरचहुलमचीचंगनिकीअंगनिकीऔरैंद साऔरैंरूपछायोहैं॥ आंनंदउरनिअतिअमितअषंडबाढयोनागरमि लिनिदिनदावदरसायोहैं ॥ लाजओरुषाईतियसंगलैंबिवेकपतिभा ज्योब्रजमैंतैंमारबांनानिदबायोहैं ॥ पौढीप्रीतजागनिनवलनेहलाग निकौफागुनसनेहिनिकेभागनिसौंआयोहैं ॥ १२ ॥

## अथ नित्य सहजषेलि आरंभ ॥

॥ दोहा ॥ सबैफागरसरगमगे, ब्रजओप्योअभिराम ॥ होरी चितचोरीकरत, घरघरषेलतस्याम ॥ १३ ॥ जथा कबित्त ॥ रचि कैंकपटबेषडोलैंब्रजबापरनिछलिआवैंछैलजेछबीलीनवन्नामहैं ॥ क बहूसिमटिगहिलेतगोपवधूवृंदआंषिआंजिमांडमुषछांडैंगहिदामहैं ॥ उतदेतगारीइतभंडकुटहोतभारीनागरकतूहलवढतधामधामहैं ॥ आनंदनिवासनित्यफागकोहुलासऐसैंहोरीबिनहासमुक्तवासकौंन कामहैं ॥ १४ ॥

## अथ अनायासबहौषेलिव्हैं परनि ॥

दोहा॥ कढीअथांईनिआयकोउ, बरसांनैंकीबाल॥नागरिसिरढ
यदी, फागमत्तसबग्वाल॥१५॥जथा कवित्त॥ आईबरसांनैंतैंअ
कोउजसुदापैंग्वारनिभिजोयडारीषेलिबीजबैंगयो॥ सुनिपुरभा
लरीचलीकीरतकीधूमभचिपरीभारीगारीघोषछ्वैंगयो॥ नागर
करहीचहूंओरचपलसींघेरेघनस्यामसब्दहोहोलोकद्वैगयो॥धर
तरलालकेकीसुकपिकलालघुमडचोगुलालब्रजलालमईव्हैंगयो
६ ॥ पुन कवित्त ॥ षेलतबिहारीप्यारीआजकुंजपुंजानिमैंबू
मनआनंदमैंहेरचोनहिरतुहैं ॥ नागरगुलालधूमधूंधरिगगनच
छूटैंपिचकारीधारधारसौंभिरतुहैं ॥ नूपुरनिनादसौंरह्योहैंपूरिवृंदा
धावतचपलनगभूषनगिरतुहैं ॥ लागीमुषरोरीउरतोरीमालबोरी
होरीमांझगोरीझकझोरीसीफिरतुहैं ॥ १७ ॥ पुन कवित्त ॥ षे
नमोहनसौंहोरीब्रजगोरीआजुमैंनसैंनरैंनधूमधूंधरिसीउठीहैं ॥
रिसौंभीजेपटनिपटमिहिंनतामैंहीरनिकेहारचारुचमाकिअंगूठी
॥ दुहूंओरचतुरसमाजअतिरंगरह्योउपमाबिलोकिहावभावभईझू
हैं ॥ लैलैंओटघूंघटकीनागरगुलालभरैंउतउठैमूठीइतमुरनिअनू
हैं ॥ १८ ॥ दोहा ॥ बरसांनैंनंदगांवके, मुरतनदलदुहुंओर ॥
मरषेतसंकेतमैं, मच्योफागजुधजोर ॥ १९ ॥ पटछूटतछूटतनहीं,
पेलरसभोय ॥ हारटूटिपायनिपरत, हारनमानतकोय ॥ २० ॥

## अथ बिबिधिषेलि बर्ननं कबिबचन ॥

॥ दोहा ॥ करतषेलिमैंषेलिबहौ, आंनंदप्रेमअलेलि ॥ सोवर

नौंत्रिचपेलकैं, न्यारेन्यारेपोलि ॥ २१ ॥ इकइककाढिकाढिझुंडतैं, आवतमूठउठाय ॥ बिसरिपेलिछबिनिरषिपिय, इकटकरहतलुभाय ॥ २२ ॥ सवैया ॥ होरीमैंरूपठगोरीसीडारतवारतप्रानललामनभावन ॥ पेलिकैंरंगअलेलचढीछबिकैंसीलगैंगहिघूंघटआवन ॥ दामिनसीदबअंबरमैंमुरिजातउतैंतकिमूंठिउठावन ॥ धीररहैनाहिंनागरकौंसपिचीरकीओटअबीरबचावन ॥ २३ ॥ पुन सवैया ॥ थोरीसिबैसमैंगोरीकिसोरीकरैंचितचोरीरुहोरीमचावैं ॥ झुंडमैंतारीबजायउठैंकहिहोहोतबैंउतकौंयहधावैं ॥ जाहिसबैंअवसांनजकीलगिनागरकेकरकंपउपावैं ॥ नांहिंअबाईसह्यारिसकैंजबरूपहवाईसीछूटिकैंआवैं ॥ २४ ॥ दोहा ॥ कबहूदुरिइतधुंधमैं, परसजातपियबाल ॥ जबअनषौंहेवैनकहि, हुयेलषौंहैंलाल ॥२५॥ सवैया ॥ लालगुलालकीधूंमिमचायकैंधूंधरधामअंध्यारोकरोहो ॥ तामधिधावतहोछिपकैंछलसौंकछूऔरहीढारढरोहो ॥ नैंकतोलोककीलाजधरोजियनांहिंडरोबरजोरीअरोहो ॥ हारगरैंपहिनावतनागरआयपरायेगरैंहींपरोहो २६ ॥ पुन सवैया ॥ कीनौंअंध्यारीगुलालउडायकैंमोमतिताछिनतैंभरमीहैं ॥ कैसैंदुरैंतिनसौंछलसांवरेरावरेजेमनकेमरमीहैं ॥ फीकोभयोअधरांनिकोरंगअनंगकीआननपैंगरमीहैं नागरदेषोजूप्यारीतिहारीकौंवेअबहीअवक्रै सरमीहैं ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ केतेपेलिगुलालबिच, पेलेरसिकरसाल ॥ फिरिपिचकारीकरलई, रूपलालचीलाल ॥२८॥ कवित्त ॥ केसरिकेहौजनिपैंमोजमचीआनंदकीनागरियापेलैंसबसंगसुकुंवारीकी ॥ धायकैंचलांवनिबचांवनिअदायनिसौंदुरनिमुरनिओटभीजीतनसारीकी ॥

रसियाकुंवरजूकेहाथनिकीलाघवताकहांलौंसराहौंउतषेलनिपिला रीकी ॥ सघनजघनकटिकुचनिकपोलनिपैंमनकीपरानितहांभरनि पिचकारीकी ॥ २९ ॥ नागरषिलारिऔटपाईलैंछबीलीभांतिडारी पिचकारिगहिराषीकरकामिनी ॥ केसरिदुकूलभेदभूपनकिरनक ढीथहरनित्यागिथिरगढीमनौंदामिनी ॥ षेलिबोबिसारिमनमोहन बिबसभयेहौंहूंछकिरहीदेषिसोभाअभिरामिनी ॥ भौंहनिकसौंहैठा ढीबदनहसौंहैदेतसौंहैअलसौंहैगातसौंहैभींजीभामिनी ॥ ३० ॥ इ तिषेलि ॥ अथ दोहा ॥ फागमांझव्रजमैंवढी, हरियारीसुषसा रि ॥ गउरघटाअरुसांवरी, बरसथँभीरसबारि ॥ ३१ ॥ कवित्त ॥ षेलिषेलिचांयनिचतुरचौंकिचाचरिमैंठाढेथाकिइतउतैंभरिसाषियांनि की ॥ मंदमंदपवनडुलावतनवेलियांजुहीकीपीतफूलनिगुहीलैंपषि यांनिकी ॥ चाहैंनवनागरबदनराधारंगभरयोदोऊनेहनददोऊगति झपियांनिकी ॥ बिनहींगुलाललालरसियाउठावैंमूठिदेपनिकौंझझ करंगीलीअंषियांनिकी ॥ ३२ ॥

## अथ षेलांतव्रजवल्लवी समूह सरूप बर्ननं ॥

सवैया ॥ षेलिकैंठाढीरहीसबनागरअंगउमंगनिआंनिअरीजे ॥ गोरिनिकीश्रमसौंछबिबाढी ( औकेसरिनीर ) गुलालनिवालसनों सिगरीजे ॥ अंचरषूटिसिंगारषिसेमनुमैंनकीलूटिकेमांझपरीजे ॥ केसछुटेउरमालातुटीनंदलालनिसंकनिअंकभरीजे ॥३३॥ इति ॥

## अथ षेलांत स्यामसरूप वर्ननं ॥

सवैया ॥ सुंदरफैटारह्योझुकिकैंव्रजबल्लवीरंगनिकेघटटोरे ॥

भींजकपोललगीअलकैंरंगकेसरिसौंभयेस्यामतैंगोरे ॥ छूटिगिरयो पियरोपटनागरटूटिकैंहाररहेउरथोरे ॥ रूपकोराजाभिषेकसोपाय कैंठाढेललासुपसिंधुझकोरे ॥ ३४ ॥ इति ॥

## अथ षेलांत स्यामासरूप बर्ननं ॥

सवैया ॥ केसरिरंगरंग्योचहुंटचोपटटूटिरहीमुकतानकीमाला ॥ ग्रीवपैंवैंनांरह्योझुकिझूलिषयोंनिपरेपुलिवारविसाला ॥ वेसरिसौंउर झीअलकावलिनागरिसोछबिबाढीरसाला ॥ षेलिकैस्यामाभरीश्रम सोहतव्हैंरहेतापैंलटूनंदलाला ॥ ३५ ॥ इति ॥

## अथ दंपति प्रीतरीत प्रगटि हौंन ॥

कवित्त ॥ होरीषेलिठाढेदोऊकेसरिकीकीचबीचमोतीबेसुमारप रेहारनिरलकमैं ॥ रंगनिवसनभीजेअंगनिलपटिरहेसरकोसिंगारदे षिविसरीपलकमैं ॥ स्यामाकेसह्मारतहैंनागरियाभूषनकौंत्योंहीस षीस्यामकीसुआनंदललकमैं ॥ लालनकवेसरिसुपाईप्यारीवेसरिमैं प्यारीकर्नफूलपायोलालकीअलकमैं ॥ ३६ ॥

## अथ षेलांत कुंजप्रवेस बर्ननं ॥

॥ दोहा ॥ दंपतिअंसनिमेलिभुज, षेलिलटपटैवेस ॥ समरपेतसं केतमिलि, कीनौंकुंजप्रवेस ॥ ३७ ॥ गउरस्यामअभिरामतैं, चहत औरकछुनांहि ॥ फागषेलिगहगडसहित, वसोनित्यहियमांहि ॥ ॥ ३८ ॥ फागलागकीएकहू, बातकहीनहिंजाय ॥ जैसैंचातगचौंच पुट, सवघनकहांसमाय ॥ ३९ ॥ जोशुकतैंनकहीगई, ब्रजहोरीकी

बात ॥ सोमोपैंनदवीरही, ओछैंवटउफनात ॥ ४० ॥ कृष्णाकेलि सिंगाररस, ताकीकथाअनेक ॥ पैंप्राचीनधमारिकैं, होतनसमकोउ एक ॥ ४१ ॥ कह्योधमारनिमैंकछू, रसिकनिजोरससार ॥ सिलो कियोउनकोजुयह, मोमतिकैंअनुसार ॥ ४२ ॥ नागरियागतिरीझ की, क्यौंहूंजातकहीन ॥ दंपतिफागबिहारसर, भयोलीनमनमीन ॥ ॥ ४३ ॥ जाकौंइंहिरसफागसौं, तनकहुहुवोनहेत ॥ षालओढसोम नुषकी, भयोसुलम्मप्रेत ॥४४॥ धन्यब्रजधन्यब्रजबासिया, धन्यब्र जपरमउपास ॥ धन्यफागरसरीतब्रज, नागरहियेंनिवास ॥ ४५ ॥ नागरबैष्णावजोग्ययह, ग्रंथजुफागबिहार ॥ रहसिउपासिकरसभरे, समझवाररिझवार ॥ ४६ ॥ कबित्त ॥ ब्रह्मलोकआनंदब्रजआनं दसमकहैंलैकैंवहिनीरसकीरसनांदहायहूं ॥ जबहीरहसिरसबाढतब हसपेलिनागरहीजानैंऔरकौंनपैंकहायहूं ॥ दोऊओरघुंमडिघटा ज्यौंबरसतरंगतासमैंकौध्यानमेरेहियतैंनहायहूं ॥ स्यामअरुगोरीपरि एकब्रजहोरीपरिकोटिकबैकुंठनिकेसुपाहिंबहायहूं ॥ ४७ ॥ इति ॥ अथ दोहा ॥ समतअष्टदससतजुपुनअष्टवर्षमधुमास ॥ ग्रंथगंगतट कृष्णपक्षकियोनागरीदास ॥४८॥ इतिश्रीग्रंथफागबिहारसंपूर्ण॥१॥

## अथफागगोकुलाष्टकलिष्यते ॥

सवैया ॥ जाउंकहांजितहींनिकसौंतितहीलषियेअतिऊधमभा रो ॥ गावतगारीठठोलठगीसुतनंदकोछंधभरयोहैंधुतारो ॥ रंगनि सौंभरिदेतहैंअंगनिनागरियाबसनांहिहमारो ॥ औरहुगांवसपीव हुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोहिन्यारो ॥ छैलछछंदीछलीअटक्योहट

क्योनपरैमगमैबटपारो ॥ आयोकहींतैंजुफागदईनितलाजकोहेरी एवैरीहमारो॥ होरीकेडोलैंहुरचावयेनागरकैसैंवचैंतुमहींधौंबिचारो ॥ औरहुगांवसपीबहुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोईन्यारो ॥ २ ॥ डोलत ग्वारियाफागभरेमनमैंधनजोवनकोअतिगारो ॥ नागरसांवरोहैंतिनकैंमधिसोऊमहाठगियाबटपारो ॥ कैसैंरहैंदुरिभौंनकेकौंनउडाइगुलालधकेलतद्वारो ॥ औरहुगांवसपीबहुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोहिन्यारो ॥ ३ ॥ ठाढेहींदेपियेरीठगसेमगमैंनटरैंकरतेजुबिगारो ॥ पेलिबधूनकेघूंघटकौंलपटावतिहैंमुषकुंकुंमगारो ॥ नागरिकापैंपुकारियेहोसबकोमनप्रानहैनंददुलारो ॥ औरहुगांवसपीबहुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोहीन्यारो ॥ ४ ॥ लायरहैंटकघूंघटकीदिसलोभकीआंपिननंददुलारो ॥ जातछलीमुषसौंमुषछ्वाग्रउडायगुलालकैंकैंआंधियारो ॥ हारनसौंउरझायदेहाररहीहोतहैनागरन्यारोअंवारो ॥ औरहुगांवसपीबहुतैंपरगोकुलगांवकौपैंडोहीन्यारो ॥ ५ ॥ आयअचांनकमींडतहैंमुषरौरीकहाअवलानिकोचारो ॥ पोलतहैंअंगियाकीतनींउरलावतकेसरकोकारिगारो ॥ नागरअैसोभयोनंदरायकैंआहावडेनकोपुन्यनिहारो ॥ औरहुगांवसपीबहुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोहीन्यारो ॥ ६ ॥ आंषिनमांझगुलालदेनागरहेररहैंहियहारढरारो ॥ लाजकीवातकहीनपरैंमुषकैसैंकहूंवहनामउघारो ॥ वाटतैंवैरीटरैंनकहूंवितयामगअैवोरुजैवोहमारो ॥ औरहुगांवसपीवहूतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोहीन्यारो ॥ ७ ॥ गावतऔरधमारिधमारिरुग्वारनकैंमुषधुंधंधमारो ॥ लेतहैंनामवुरेउघरेव्रजमाच्योहैंफागडंदंगलभारो ॥

धूरऔछारकीमारबढीनहिंसूझतनागरिव्हैंअंधियारो ॥ औरहुगांवस
पीबहुतैंपरगोकुलगांवकोपैंडोहीन्यारो ॥ ८ ॥

## ॥ अथहिंडोराकेकवित्त ॥

जमुनांकैंतीरभीरभईहैंहिंडोरनापैंदूरहीतैंगहगड़कीगातिदरसतुहैं
गानधुनिमंदमंदआवतिहैंकांननिमैंबीचबीचबंसीप्रानपैंठिपरसतुहैं ॥
देषिकारेद्रुमकीलतानिमांझिदामनीसोपटफहरातपीतसोभासरसतु
हैं ॥ हाहाचलिनागरपैंहीयौंतरसतहेलीआजवाकदंबतररंगबरसतहैं
सषीसांवरीगोरीयेझूलतकौंनहैंझूलनिदेषिहियोहहरैं ॥ ढरक्योअ
तिस्वेदरोमांचभयेंलषिनैंननिलाजछटाछहरैं ॥ थहरैंतनफूलदुकूल
षिसैंनसंभारैंदोऊअंचराफहरैं ॥ करकंपतडोरीनजाईगहीनहिंनाग
रपापटुलीठहरैं ॥ २ ॥ स्वेतब्रह्मफूलनिसौंफूलिरह्योवृंदावनठौरठौ
रसरसोकहीनकछुवैपरैं ॥ एकओरघटाकारीएकओरउजियारीसो
भाभईभारीप्रतिबिंबनिसह्वैपरैं ॥ ऐसेसमैंस्यामास्यामहरषिहिडोरैं
झूलैंगानधुनिजीलकीतरंगरंगच्वैपरैं ॥ बढैंझोटात्यौंहींतहांनागरत्र
धरधरैंइतबाजैंबंसीउतमोरसोरव्हैंपरैं ॥ ३ ॥ हरेहरेद्रुमषरेसुमनानि
भारभरेझुकिकैंकदंबअंबजमुनांपरसहीं ॥ झूलैंजहांस्यामअभिराम
कोटिकामहूतैंदेषिव्रजबालाअंकमालाकौंतरसहीं ॥ बासरसभूलेभौं
रहारकीहिलोरनिमैंलपटतआवैंसोभासिंधुसौंसरसहीं ॥ पीतपटना
गरअरझिरह्योपातनिमैंलगिकैंमुकटलताफूलनिबरसहीं ॥ ४ ॥ र
तनजटितकलकंचनकेराजेंषंभतैंसीबरबांनिकमयूरमरवांनकी ॥ झू
लतनवलीअलबेलीराधारंगभरीपन्नापटुलीपैंछबिछाजैंतरवांनकी ॥

चलैंदुहूंवोरमोरछलनिसौंभौंरभीरहलैंछोरबादलेकेगतिगरवांनकी॥ नागरचितलीनौंचौरझोटाकीझकोरमैंछूटचोउरछोरझकझोरहरवांन की॥ ५ ॥ बैठीहैंहिंडोरैंबीचतषतमुरसैकारीजेवसरदारीकीमजेज नभुलांवहीं॥ दुहूंओरचंवरचलांवैंसषीचौरदारसायेवांनसंगसोझुका यैंहीजुलांवहीं ॥ फुलेबारहारानिजवाहिरजगमगातदेषिसौंहैंलालठा ढेदीठनडुलांवहीं ॥ नागरिअतरकीसुगंधउठैझोटासंगझूलैंस्यामा साहिबमुसाहिबझुलांवहीं ॥ ६ ॥ झूलतरंगाहिंडोरनैंस्यामाजूसंगसु देससषीवहुभांयनि ॥ भूमहरीउनईवरपासुरऊंचैंछकीछविगांवैगुसां यनि ॥ रापतनांहिनिहोरैंहूतैंसुबढीरमकैंतरुनाईकेचांयनि ॥ किंक निनागरिकीरनकैंझनकैंबिछियांनकीपंकतपांयनि ॥ ७ ॥

## ॥ बरषाकेकवित्त ॥

लगिकैंप्रचंडपौनद्रुमलतालहरातझूमिझहरातनीरकारीअतिजामि नी ॥ सोरनदीजलजोरघोरघहरातघननांहिंठहराताछिनदमकतदा मिनी ॥ ऐसेसमैंप्यारीमिल्योचाहैंविहारीजूसौंद्वारलगिजायरुकै नागरिअभिरामिनी ॥ कवहूअनंगअंगथहरायआगैंचलैंकबूहहराय रहैंभीतवसभामिनी ॥ १ ॥ घनभीजतहीवनओरचलीतियकामत हांचटसारपढैं॥ चहुंटेपटपानिपसौंउघरेतनलालचितैंचितचाहवढैं॥ दइनागरचूंनरीलैंकमरीसुपकोकविकुंजकुटीकोरढैं ॥ उतसारीनि चोवतरंगचुवैंइतनेहनयोत्यौंत्यौंरंगचढैं ॥ २ ॥ आवतनांहिकहींघ नस्यामकीमाधुरीमोमनकौंवहरूदैं ॥ भीज्योपीतांवरओतनमैंवनमैं परेमालतीमालहिगूंदैं ॥ फैंटासुढारझुक्योजलभारसौंपेचपुलेचुवैं

गनिकूदैं ॥ भौंहनिकुंतलपैंबरुनीनपैंनागरनीकीलसैंजलबूंदैं ॥ ३ ॥ पावसनिकुंजराधामोहनविहारचारुआनंदअपाररसढारनि ढरतुहैं ॥ जागैंनिससांवनमैंलागैंमनभावनसोंबाजैंद्रुमपातनिपैंबूंदैंजे परतुहैं ॥ श्रमकीसुबासतनमहकतमालतीहूनागरभंवरभरिधीरनध रतुहैं ॥ दामिनीउज्यारैंरूपमाधुरीनिहारैंरीझभीजेअंगअंगदोऊअं कनिभरतुहैं॥४॥राजतकिसोरदोऊघोरघनजोरआयोपरतसजोरधर नीपैंधूमकरकर ॥ च्वैचलेपनारेओकिनारेतटनीकेपरैंतूटतविटपढ़ा रसब्दहोततरतर ॥ मोरसोरचहूंओरव्हैरह्योकुतूलभारीतररितदामि नीउठतधरपरपर ॥ ऐसेसमैंनागरबिहारिसिंगभायभरीलपटतलाडि लीभुजानिवीचिडरडर ॥ ५ ॥ बरसनलाग्योमेहमदनदुहाईफिरी आईधाइब्रजपरछाईघटाकारीहैं ॥ तामैंचलीप्यारीउतआवतविहा रीइतदुहुनिकेमिलिबेकीचाहचितभारीहैं ॥ सूझतनपंथद्रुमलतारही झूंमझूंमसबजलमईभूमिझुकीअंधियारीहैं ॥ दामिनीदमाकिगईतामैं भटभेरभईनागरदुहुनिहंसिभरीअंकवारीहैं ॥ ६ ॥ भादौंकीकारीअं ध्यारीनिसाझुकीबादरमंदफुहींबरसावैं ॥ स्यामाजूआपनीऊंचीअ टापैंछकीरसमीतमलारहिंगावैं ॥ तासमैंनागरकेद्दगदूरितैंआतुररू पकीभीपयोंपावैं ॥ पौंनमयाकरिघूंघटटारैंदयाकरिदांमानिदीषदि षावैं ॥ ७ ॥ दसौंदिसघोरिघोरिकीनौंहैंघटानिघेरोकुहकतमोरमहा आनंदअछेहसौं ॥ झुकिगिलिलितलताकिगीडगरसबभईजलमई भूमिवरसतमेहसौं ॥ ऐसेसमैंठाढ़ेदोउलगिकैंकदंबमूलनागरियाना गरहैंविवसविदेहसौं ॥ रसभीजेबैंनतहांनैंनरूपरीझिभीजैंतनभीजे बूंदनसौंमनभीजेनेहसौं ॥ ८ ॥ तरनितनूजातीरतरवरतठाढ़ीविरह

वसायवीरवृंदनवढैंलगी ॥ वदरनवृंदवढिघुकिधरआनधायेकुंजन कदंवकेकोकूकनकढैंलगी ॥ चौंकिचौंकिचातकचहूंतेंचितचोरैलेत लहरलहरनदनैंरनचढैंलगी ॥ छल्यनविलोकोवलिवृच्छनिमढैंलगी सुकोककारिकानिकारीकोकिलपढैंलगी ॥ ९ ॥

## अथ छूटक कवित्त लिष्यते ॥

व्हैंगयोअचानकउजासबनगहवराघिरिआयेपंछीमृगभूलेगौंनगे हरी ॥ छायगईसौरभओधायचलीअलिसैंनानाचिउठमोरमहाआ नंदअछेहरी ॥ आगमकैंहोतहीलतानिमैंनिहारीकोऊनागरिवरासि गईरूपकोवमेहरी ॥ कहाजांनूकौंनहीकहांतैंआईकितैंगईघनसेबस नतामैंदामिनींसीदेहरी ॥ १ ॥ देष्योमैंसुपनाकिधौंसांप्रतिहीहुतो आलीभोरकीहूंठाढीवनवासराबितैंगयो ॥ नूपुरझनकअजौंकांननतें कढैंनांहिकहाजानौंकौंनमेरोमनलैंकितैंगयो ॥ एकवेरलतानैंकहा लिकैंउठिहीफिरनागरिसपीनजांनूंचित्तलैंतितैंगयो ॥ हायमेरीवी रमनव्याकुलअधीरअतिसांवरोसोकोउमंदहसानिचितैंगयो ॥ २ ॥ स्यामरूपसागरमैंनैंनपैरवारथकेजोवनतरंगअंगअंगरगमगीहैं ॥ गा जतगहरधुनिबाजतललितवैंनराजतसिंवारलटसौंधैंसगमगीहैं ॥ भं वरात्रिभंगताईपांनिपलुनाईजामैंमोतीमनिजालनकीजोतिजगमगी हैं।प्रेमयौंनप्रबलझकोरानिसौंनागरियाआजराधेलाजकीजिहाजडग मगीहैं ॥ ३ ॥ देषिसषीआनंदअगाधापलवाधामेटिराधारूपउद धिअपारकौंनपारहैं ॥ चितवनिभौंरमैंभ्रमतमनप्रीतमकोलहरिअ दायनितैंनांहिननिकारहैं ॥ एतेपरनागरिफिरावैंकरकंजसोईकाम

कीझकोरजोरवहतबयारहैं ॥ धीरजउपावनिकीनावकोनदावतहां आजब्रजराजकोकुमारवेसम्हारहैं ॥ ४ ॥ एकतोतिहारोहेलीरूप हीहरतमनतामैंएछकेसेनैंनमुसकिमिलाइहैं ॥ हारनकेभारलंकलच कतनागरीसुगागरीलियेतैंसीसतनथहराइहैं ॥ ल्यायवोरीनीरतूंनि वारितीरजमुनाकोउतहीमैंऔटपाइनंदकोजोआइहैं ॥ बनिजैहैंऔर फिरिपरिजैहैंझोरब्रजपनघटजायजाकोपनघटिजाइहैं॥४॥ चाहतदु रायोतोसौंकोलगिदुरांउदैयासाचहीकहूंरीबीरसुनिसबकानदैं॥ सांव रोसुनागरनिकटतीरजमुनांकैंमोतननिहारिनीरभरिअंपियानदैं ॥ता छिनतैंमेरीहुदसाकौंकछुपूछैंमतिचाहैंतोजिवायोमोहिवहरूपदानदैं। हाहाकरौंपायपरिरह्योहूनजायघरपनघटजांनदैंरीपनघनजानदैं॥५ घूंघटझीनैंदुकूलकोझूलैंझुकेदृगवंकितकाननछ्वैं ॥ जुगभौंहनिवीच थक्योमनगौंहनहोठनलालरह्योरंगच्वै ॥ मंदहसैंसुषनागरकौंमुषचौं पनकीउपमातबन्हैं ॥ तिमरावलिसांवरेदंतनिकौंहितमैंनधरेमनोंदी पकन्हैं ॥ ६ ॥ हसिहेरीरहीपृथप्रीतमकौंलपिचौंपनिचौंपकेपुंजब ढे॥ उपमादसनांनिकीसोधितनागरऔरनपांवैंविचारमढे॥ मुषमंजु लकंजसुवासितयौंमधुपावलिबातनिठाटगढे ॥ सुनिआएहैंकीरति काननसौंमनौंजीगनुभौंरनिपीठचढे ॥ ७ ॥ धीरतोहमारोहरिलीनौं वाचितौंनचारुधीरबिनवीरहमैंबौरीलपिरोकीभौंन ॥ वाहिराविम लचंदचांदनीचमकिरहीजैसीकूलकुंजनिकीसीतलसुगंधपौंन ॥ सु धिआयैंस्यामसुधिनागरिरहतनांहिपाइपरिराषीहाइअबसोकरतगौं न ॥ तूहीकहिरैंनिकौंन्हिहारिकैंविचारिअबएतेपरबंसीबिनबाजैंतोउ पायकौंन ॥ ८ ॥ जाहीछिनधुनिश्रांनिकाननमैंपरैंबीरछुटिजाय

धीरअरुकिजायसांसुरी॥ मोहमईहोतमतिवारीमतिमैंनपागिजागि जागीउठैकछुन्यारीहीरपांसुरी॥ लेतहैंहमारोलगिनागरअधररसला जगृहकाजसुपसाजकीनैंनांसुरी ॥ मंत्रहैंकिजंत्रहैंकिमोहनीकिमा दिकहैंसोतिहैंकिसालहैंकिबैरानिहैंबांसुरी॥१०॥ आईधुनिआवनदैंव जैहैंबजावनदैंतूतोउतपावनदैंदृढकैंसुभावरी ॥ मुरलीकौंसुनैंमतिसु रभेदचुनैंमतिसीसहूकौंधुनैंमतिरीझकौंरुकावरी॥ नागरियाधूमैंमति झुकिझुकिझूमैंमतिधुकिगिरैंभूमैंमतिधीरठहरावरी॥ अवसवसहनौंहै पाइरोपिरहनौंहैंफिरिवासौंकहनौंहैंवाजैंमतिबावरी॥११॥ केउनिहा रिसुमारभईलगिनैनप्रहाराहियेसुधिमोचन॥केउहियेलगिढोरीरहीके उबौरीव्हैताघरकीपरसोचन ॥ केउभईमननैंनमईतजिलाजदईत उरंचसंकोचन॥मोहिषरेरेहियेउरझेरेसुनागरतेरेअनोषेएलोचन १२ पोइकैंकोइनसौंमनडारयोसुलाजकीवैरानिबावरीपेषी ॥ रूपीभईअ बभूपीएप्रानकीआंनकीऐसीअनीतनलेषी॥नागररूपहिकैंअभिमा नषरोलडबावरीबांनिविसेषी ॥ मारैंघरीकघरीकउवारैंएआंपैंअनौं पीतिहारैंहींदेषी ॥ १३ ॥ तरफैंछविसांवरीदेपैंविनाजुळुटीजलज्यौं थलमैंझाषियां ॥ पलचैंननदेतपरीविपरीओकछूसृद्रुहासचपीचाषि यां ॥ अरबीलीअनोपीउचाटभरीअरीनागरिनांहिंरहैंराषियां ॥ दुप चायनिसौंअररानीपरैंअतिवैरनिवावरीएआंषिय ॥ १४ ॥ एरेलो भीग्नसुनिदौरिदौरिजातहुतोरूपकोलुभायोसमुझायोहोदरदमैं ॥ देतहोनचैनवसकीनैंआपनैंनपरयोआधिकवाधिकपांनिआंनिमैंनमद मैं ॥ पायोफलनागरफसायोमुसकांनभौंहकसनिकसायोलैमिलायो रेगरदमैं॥ काटिकैंकटाछिनसौंवेधितीपेकोयनसौंचूरकरिलोयनसौं

डारयोनेहनदमैं ॥ १५ ॥ पावकप्रजारिलगोअंगकैंनिसंकबीरछूटत नधीरपीरपावतनदेहरी ॥ मारोबांनतांनतनतरलगरलभारितऊमा नैंसुषघटहोतसमसेहरी ॥ यहैंदुषदारुननकाहूपैंसहारयोजायहाय हायरटिरटिकीजैंद्योसछेहरी ॥ नागरनिहोरिकरजोरिमांगौंबि धनासौंलागोसेलसरपैंनलागोजिननेहरी ॥ १६ ॥ लोचनकटाछि वांनहसनिकृपानतेरीहूलअंगरानिसूलसाल्योईकरतहैं ॥ लगैंसेलस रअसिपागैंसुपमनअैपैंतनकरुषाईज्वालमालासौंजरतहैं ॥ वारपार बरछीदुसारतीरतनकईसीसकटिलटक्योपैंनैंकनटरतहैं ॥ नेहरनछ क्योसूरघावनसैंपूरचूरतऊदेपिअरिपैंडआगैंहीपरतहैं ॥ १७ ॥ भ रौंजोउसाससुनिघूरिरहैंसासननदीकेत्रासभईगतिपंगहैंपगनकी ॥ चलूंउठिपौरओरकरझकझोरधरैंभौंनदुरिबैठौंपौंनलहूंनगगनकी ॥ लि षूंजोपतउवापैंपातीआंसूंअंजनसौंफिरिपहुचांउकैसैंपंषदैंषगनकी ॥ कापैंकरूंरीसयहोलिषीविस्वावीसमेरैंएरीआईसीसअैसीआपदाल गनकी ॥ १८ ॥ गोरीगनैंगनपैंढधरैंगतिमैंगजमत्तकेमानकौंमो रत ॥ पायनमांझअदायनकेवहौभेदभरेमनरंगमैंबोरत ॥ छीनमहा ल्चकीकटिजातनिघातसौंहोतहैंग्रीवकेढोरत ॥ नागरकेदृगतीषेन कीतबडीठगडैंजवपीठमरोरत ॥ १९ ॥ राजतरानीजसोमतिपैंदुलही पियछैलछिलैंहितजोटैं ॥ कैसैंनिसंकनिहारैंछकेछबिबीचपरीकुल कांनिकीपोटैं ॥ लाजझुकेदृगनागरिकेतिरछैंचलिचूरैंदुकूलकीओ टैं ॥ दोऊमैंहोतनकोऊलपैंवेसनेहसौंभीजीचितौंनकीचोटैं ॥ २० ॥ चंचलताज्यौंलतालहकैंगुनकीसलितारसरंगाभिजावत ॥ हारनिवा रछुटैनकेभारनिलंकलग्योलचिकैंबचिजावत ॥ अंसतमूराफव्यो

छबिसौंचटकीलीअंगेटअदाहैंदिषावत ॥ कांननिभावतनैंनछकावत नागरिसुंदरस्यामैंरिझावत ॥ २१ ॥ आईगांवगौंनैंतनसौंनैंसेसलौं नैंनैंनभीररूपकौतिगकीव्हैरहीसुव्हैरही॥ दिनकंजमालसीहैरैनिकौं मसालसीहैंफूलीद्रुमडालसीहैंनैंरहीसुनैंरही॥ जौंन्हजोतिजामिनीसी नागरियादामिनीसीदेषिघनस्यामैंमनदैंरहीसुदैरही ॥ षोलैंमनमूं दैंसुषनीचीरुषभीनीसुषहरिहूकोहरिमनलैंरहीसुलैंरही ॥ २२ ॥ तेरे नैंनमेरेनैंनमेरेनैंनतेरेनैंनऔरठौरचलिबेकौंदीठकैंनपगहैं ॥ तेरीप्रीति मेरीप्रीतिमेरीप्रीतितेरीप्रीतिप्रीतकीप्रतीतदोऊवोरबैठीलगहैं ॥ तेरेप्रा नमेरेप्रानमेरेप्रानतेरेप्राननागरियाएकप्रानजानैंसबजगहैं ॥ तेरोमन मेरोमनमेरोमनतेरोमनमेरोमनठगिवेकौंतेरोमनठगहैं॥२३॥नैंणसौंनैं णमिलायाजद्यांहीकोकालिजोसोक्यौंहीकाढिलियोहैं ॥ एकघडी भीघरांनहींआलगैंआवैंभरचोभरचोझांरोहियोहैं ॥ सावलीसूरति देषैंबिनांबाईहायछिणेकनजायजियोहैं ॥ हौसांमरांमिलवाकीक रांकांईकांन्हजीकांमणमौंनैंकियोहैं ॥ २४ ॥ फैंटासीसकेसरीसुदे सरीजरीयबांध्योतापररतनपेचसोभानवभालकी ॥ बदनमयंकवं कभौंहैंबिचबैंदीलालकरतविहालसैंननैंननिबिसालकी ॥ लटघुंघ रारीनटनागरकपोलनिमैंरांजितकिरनवीचकुंडलकेहालकी ॥ ऊंची नासाबेसरिसुअधरानिमंदहासबसीउरऐसीरूपमाधुरीगुपालकी २५ कालिंदीकेतीरलतापरसतनीरतहांठाढेपरछैयांस्यामललिततमाल को ॥ लकुटीलपेटपायछबिसौंलटकिरहेछुटेबंधहियसोभामोतिनके जालकी ॥ उटीभौंहैंझुकेनैंनप्रियाध्यानआसवसौंरलकैंअलकजुग पवनसचालकी ॥ मुषसोभालसीप्रेमगसीजियनागरकैंवसीउरऐ

सीरूपमाधुरीगुपालकी ॥ २६ ॥ नीलवनराजतबरनतनसोभादेत रंगरंगआभानगअभरनजालकी ॥ कंचनदुकूलछोरदुहूंओरफहरा ततैसीझुकिझूलनिललितबनमालकी ॥ संगसुरभीनअंगरंजितपौ होपरैंननागरलटकिगतिगंजतमरालकी ॥ कंवलफिरावनिओआंव निअनूपलसीबसीउरऐसीरूपमाधुरीगुपालकी ॥ २७ ॥ आवैंघरी ज्यौंभरीहींघरीघरीदेषतरूपरहैंउघरीहैं ॥ मूंदीमुंदैंनहींरूंदैंहीमार तवावरीरीझकैंरंगभरीहैं ॥ टारीटरैंनडरैंनागरएपरैंउररांनीअमांनी परीहैं ॥ जातनहींरापियांसपियांअंषियांरिझवारनपैंडेंपरीहैं ॥ २८॥ देपतहीअटकीअतिहीहठकीनटनागरसैंनटरीहैं ॥ जोहूघरीकनदेषैं हरितोषरीअंसुवांनकीहोतझरीहैं ॥ मोहूकीव्हैंकारिमोसौंसषीनरहैंरी रषीअरिव्हैंकैंअरीहैं ॥ जातनहींरापियांसपियांअंषियांरिझवारनपैं डेंपरीहैं ॥ २९ ॥ रूपकीरीझमैंभीजिगईअतिरीझहीरीझमैंरीझभ री.हैं ॥ रीझनदीउमडीरहैंढीठमैंलाजहूरीझिगरीसगरीहैं ॥ आपुन रिझिरिझाईहैंमोहूकौंनागरमोमातिरीझढरीहैं ॥ जातनहींरापियां रापियांअंषियांरिझवारनपैंडेंपरीहैं ॥ ३० ॥ भांतिकितीसमझायर हीपैंनमांनतयेउनमादभरीहैं ॥ नांहींरहैंउररैंउतजाइपिलाजजंजीर नसौंजकरीहैं ॥ नागररूपकीरीझकैंचावरीव्हैलडबावरीसीविषरी हैं ॥ जातनहींरापियांसपियांअंषियांरिझवारनपैंडेंपरीहैं ॥३१॥ कैंसे घरीकहौंरूसरहौंएतोनैंननिमेपकीओटसहैंनां ॥ नागररूपकेआग रसौंचितनैंकहूअंतरधीरलहैंनां ॥ देपतहीमुसक्यायपरौंरुषमेरीरुषा इकीटेवगहैंनां ॥ जाछिनव्हैंभटभेगचितौंनकीताछिनमानकोमानर हैंनां ॥ ३२ ॥ भालमहावरओठनिअंजनसौंहैंहसौंहैंसोआनन

आंनैं ॥ आवैंझुकीपलपीक्भरीरिसप्राननभौंहकीतांननतांनैं ॥
रैनकेजागेतैंरूपजग्योमुकरैंकपटीहठठांननठांनैं ॥ नागरस्याम
सौंमानकरौंपैंअमानएिलोयनमांननमांनैं ॥ ३२ ॥ तेरेनैंनवानउर
मोहनकैंलगेआनतवतैंनवाकैंवीरधीरठहरायहैं ॥ पलकानिमूंदिमूंदि
गहरेउसासलेतहोतनसचेतमुपरटैंहायहायहैं ॥ जमुनांकोकूलकुंज
सीतलकुसमपुंजलगैंतनतातेतेजविषमवलायहैं ॥ एरीचलिनागरी
तूसींचिसुधाचाहनिसौंआंषिनिकेघायनकौंआंखैंहीउपायहैं ॥ ३३ ॥
विछुरेहैंमोहनहमारेफिरवादिनतैंअंषियांपियूषिमुपपांनहूनकीनौंरी।
रौंमरौंमरोवैंकहिसोवैंकौनकैंसीभांतिछूटचोरंककरतैंरतनरंगभीनौंरी
॥ एकबेरआयतैंहूंदीनौंहोसुपनाफिरिफूंकिनेहआगिसुदुपतमनमीनौं
री ॥ अहेबजमारीबहुबैरानिनिगोडीनींदनागरमिलायतैंउघरदुपदी
नौंरी ॥ ३४ ॥ मनहीकीथिरतासौंसूरतागंभीरताईमनहीकीथिरता
ईसर्वदुखकौंदहैं ॥ मनहीकीथिरताईचहियतुधर्ममांझमनहीकीथिर
तासौंकाजसवहीलहैं ॥ मनहीलगायथिरकीजैंहरिभक्तिमांझनागर
चरनचितजबथिरव्हैंगहैं ॥ कलिकालपवनझकोरजोरझिकुरातइहम
नदीपककीलोयथिरक्यौंरहैं ॥ ३५ ॥ (अथ अष्टक ) बोलतैंहतुत
रातहरैंमनचंदकौंमांगतहैंकरिआरो॥ कंदुककौंघुटरूंमनिआंगनधा
वैंजसोमतिप्रानअधारो ॥ केसरिचित्रकपोलनिमैंदृगकंजनअंजन
हैंअनियारो ॥ याछबिसौंमेरेनैंननिमांझवसोनितनागरनंददुलारो॥
॥ ३६ लालकेकौतिकमांझपगीललनामिलिआवतहोतसंवारो ॥ दैं
चुटकीचुचकारतहैंबिहसैंहुलसैंतनसांवरोवारो ॥ कंठलसैंवघनांमनि
भूषनचंदसोआननकोउजियारो ॥ याछविसौंमेरेनैंननिमांझवसो

नितनागरनंददुलारो ॥ ३७ ॥ छत्रकियोगिरकौंकरबामधरयोछि
गुनीव्रजकोरपवारो ॥ मोदमईसबगोपबधूमघवाजलढारिमहापाचि
हारो ॥ चंद्रिकाचारुबनीवनमालविलोकतआवतमैंनतवारो ॥ याछ
बिसौंमेरेनैननिमांझबसोनितनागरनंददुलारो ॥ ३८ ॥ जैंवतछाक
कतूहलसौंहरिलेतहसैंकरकोपनवारो ॥ आयोहुतोअभिमानधरैंबि
सरयोसबग्यानबिरंचिबिचारो ॥ मंडलगोपकुमारनकैमधिसोहतहैं
वनसेघटवारो ॥ याछबिसौंमेरेनैंनानिमांझबसोनितनागरनंददुला
रो ॥ ३९ ॥ चित्रतिहैंतनधातबिचित्रधरैंसिरमोरकिरीटसुढारो ॥
गौरजसौंमुपमंडितयौंअरबिंदपरागभरयोजनुभारो ॥ भावतगोपकु
मारनमैंवहआवतलालजसोमतिवारो ॥ याछबिसौंमेरेनैनानिमांझव
सोनितनागरनंददुलारो ॥ ४० ॥ लालसैंपगियांनवलालकैंपीतझ
गातनघूंमघुमारो ॥ मालमनोहरमोतिनकीउरकैंउरकैंमाधिआनंद
भारो ॥ गोरिचकोरनिकेचितकौंमुसकायहरैंव्रजचंदपियारो ॥ या
छबिसौंमेरेनैंनानिमांझबसोनितनागरनंददुलारो ॥ ४१ ॥ मोतिन
कीसुथरीदुलरीगरसोंहतसुंदरसीसाटपारो ॥ आननपाननरंगरच्यो
निरखैंचखचंचलल्लोचनतारो ॥ गोकुलगांवगलीबिहरैंलियेंकजक
लीकररूपलजारो ॥ याछबिसौंमेरेनैननिमांझबसोनितनागरनंददु
लारो ॥ ४२ ॥ ठाढोत्रिभंगानिसौंमुरलीमुपसुंदरताहरैंकामकोगारो ॥
सांवरेअंसनिपैंपियरोपटुवेसरिकेसरिषोरिनिहारो ॥ गुच्छनकेअवतं
समनोहरगुंजनकोहियहारदरारो ॥ याछबिसौंमेरेनैंनानिमांझबसो
नितनागरनंददुलारो ॥ ४३ ॥ सबैदेवदानवप्रकोपैंमिलिएकओर
सातसिंधुहूज्यौंदयोचाहतवहायहैं ॥ आवतपहारचलिचूरकारिवेकौं

कायधावतदिसानितेजेदिग्गजकहायहैं ॥ नागरमहारथीनिकेवरू थचहूंघांतैंबीरताबलगिब्रह्मअस्त्रनिदहायहैं ॥ एतेपचहारिरहैंतऊन पिसतब्रारज्याकैंएकअर्जुनकोसारथीसहायहैं ॥ ४४ सर्पीफूलतोसू लसेसेझकेलागतजागतवासुररैंनगई ॥ सुपपांनओपानहलाहलसें लगैवैरीसबैंगृहभामभई ॥ हितनागरकैंनिकरैंजियराफिरआवतआ सतैंरीतनई ॥ चितचाहिसरैंनगरैंपरीरूपसुनोजलगोयहनेहदई ॥ ॥ ४५ ॥ एरेमनमेरेतोहिचंचलहीसंगदेकैंनीकैंवहरांउरेवहरिवह रांनिमैं ॥ चंचलहीचंद्रिकारुचंचलहीनूहैंतहांरहिकैंछबीलीवाफ हरिफहरांनिमैं ॥ कंपतहैंकुंडलदृगंचलकटाछिनतैंउनिहीमैंनूहूव्हैंह हरिहहरांनिमैं ॥ नागरमुपारबिंदमांझनकवेसरिकेमोतीमतवारेकीथ हरिथहरांनिमैं ॥ ४६ ॥ बदनहसौं हैंबैठीसोंहैंप्यारीप्रीतमकैंउरज उठौंहैंसोभाहारनसमेतहैं ॥ मंदसुरगावतसुप्यावतसुधासौंश्रौंनाकि धौंमंत्रधुनिमीनकेतकैंनिकेतहैं ॥ अधरनिरंगभरेच्चौकाकीचमकहेत अछिनअलच्छनकटाच्छसरदेतहैं॥नागरियावोटदैंतबूराहसिहेरिहेरि फेरिफेरितानननिफिरांयैंमनलेतहैं ॥ ४७ ॥ सीतलसुगंधपौंनमनकौंह रनलाग्योचंद्रमाडरनिलाग्योसूचिंतब्रिहानकौं ॥ रहीरैंनथोरीरंगवो रीकौंननींदपरीउठीअकुलायकैंरिझांवनसुजानकौं ॥ चातुरपरम प्रीतआतुरयानागरिकैंकंठकैसैंदांजैंकहोकोकिलासमानकौं ॥ आ यगीअटारीपरछायगीसुगंधतवगायगईतांननिरिझायगईप्रानकौं ॥ ॥ ४८ ॥ जावनकौंसवलोकरटैंहरिकेलिबिधानपुरांनपुकारैं ॥ कुं जगलीनिगलीअजहूंजहांगावतानृत्तनवीनविहारैं ॥ नागरतापनसैं मनकेतुलसीबिनकेद्रुमपुंजनिहारैं ॥ यागृहमैंजोवनैंनवनैंकहियोहम

कौंवावनैंनविसारैं ॥ ४९ ॥ सीपेकुलछनव्हैंलडवावरेमैंसमुझायजु केझिझकारे ॥ मूंददयेपलवीचकिंवारानितोऊरहेनाकितोपचिहारे ॥ सुंदरताईकौंजीततजूपमैंहारतहैंमनसेधनभारे ॥ नागरपेलैंबिनांनर हैंभयेएट्टगरूपजुवारीहमारे ॥ ५० ॥ आगैंकह्योसमुझायकितोजि यनावेरषूंनकरैंइनिआगैं ॥ आगैंनमानीअमानीमहारनमूरज्यौंपाय दैंआगैंहींआगैं ॥ आगैंविध्योसररूपकटाच्छनिताछिनतैंचितचैंनन आगैं॥आगैंलगेसोतोसालतहैंअवलागतनागरसालिहैंआगैं ॥५१॥ मं दहोतचंद्रिकाचिराकैंलपिफीकीलैंगैंमुषपटटारकैंअगौंहींजवबढहीं ॥ सोरपरैंसुघरनिकेजोरपरैंजीवनपैंकबिनकैंमोंनहोतउपमानपढहीं ॥ तबरंगदेवीसीसुगायगतिलैंकैंचलैंनागरजकीसीलगिमादकसौंचढहीं नैंननतैंनीरकढैंधीरकढैंहियतैंसुवाहवाहहायहायमुषमैंतैंकढहीं ।५२। रूपनिकाईमहासुधराईदुहूंनतैंलैंसबकेमनलूटे ॥ जानैंलषीछबिरास सषीतबताहियेंप्रेमकपाटसेपूटे ॥ वाकीसवीहुलिषीनगईगुनिनांहिं सकेकहिहारीअहूटे ॥ चित्रलिषैयाकितेकविनागरकाननहाथलगा यकैंछूटे ॥ ५३ ॥ गुनिसलितासीरासरंगनिविलासीचारुचंपकलता सीचपलासीस्यामघनकी ॥ ग्रीवकीढुरांवनिडुलांवनिसुबाहुनकीमं दधुनिगांवनिभुलाईसुधितनकी ॥ पारदज्यौंथारथहरातनृत्तअवनी मैंदेपीरवनीमैंकछूवातनकहनकी ॥ ठोकरनिठेलिठेलिपायतररूंद रूंदगतिमैंकुगतिकरीनागरयामनकी ॥ ५४ ॥ एविधनांयहकी नौंकहाअरेमोमतप्रेमउमंगभरीक्यौं ॥ प्रेमउमंगभरीतोभरीहुती सुंदररूपकरयोतैंहरीक्यौं ॥ सुंदररूपकरयोतोकरयोतामैंनागर एतीअदायेंधरीक्यौं ॥ जोपैंअदायेंधरीतोधरीपरयेअंषियांरिझवार

करीक्यौं॥५५॥गानकियोवहैंपाननिपातछुटीलट आननरंगभरचोई॥ मौनहीमैंझलकीसुघराईहियेगुनकोसनसोउघरचोई ॥ पीचितचंच लकौंप्यारीनागरिघेरिअदायानिमैंपकरचोई ॥ लैंनितमूराहीकोमैल यौमनगायत्रोधौंरह्योआगेंधरचोई ॥ ५६ ॥ दीठकीलाजजंजीरानि तोरिपरेंविपरेपकरेऊरहैंनां ॥ धीरविनांभहरायउठैंठहरैंनकहूंजक जीवपरैंनां ॥ नागररूपहिरूपलगीरटनांहिकछूकहिजातहैंवैंनां॥ला गैंनऔपदग्यानकहूंभयेरीझकीबायसौंबावरेनैंनां ॥ ५७ ॥ दासकी छापदईतुमहींतुमहींसतसंगतैंदेतक्यौंटारैं ॥ जांनिकैंआपनिवारत मोहिसुकौंनपैंरावरीचूकपुकारैं ॥ हौंतोसदाहरिचाहतयौंअरपौंचि तपंकजपायतिहारैं ॥ नागरऔरहिंसौंपतवेबिगरेमनकेमनमेरोबि गारैं ॥ ५८ ॥ ज्यौंज्यौंइतदेपियतमूरपविमुपलोगत्यौंत्यौंसुपरासी व्रजवासीजियभावैंहैं ॥ पारेजलछीलरदुपारे अंधकूपचितैंकालंदीकैं काजमहामनललचावैंहैं ॥ जैसीअबवीततसुकहतनआवैंवैननागर नचैंनपरैंप्रानअकुलावैंहैं ॥ थोहरफरासदेपिदेपिकैंबंबूलवुरेहाय हरेहरेवेतमालसुधिआवैंहैं ॥ ५९ ॥ भूमिहरीद्रुमझूंमिरहेलपिटौंररहैं दृगठौरसुहांतैं ॥ न्यारेसेलोगरंगीलेतहांकोमिलैंहासिप्रेमहियेसरसातैं नांवनआवैंरूआवैंगरोभरिनागरनांवहिलेतहैंयातैं ॥ सांवरीएकन दीपैंबसेंहैंकहोकिनकोऊवागांवकीबातैं ॥६० ॥ नांहितुलैंवइकुंटहू कोसुषघोषकीजोकवहूसमतोलैं ॥ जेउंहिंठांसवआनंदमैंगिरधारी केवांहकीछांहकलोलैं ॥ नागरटारिदयेंजिनकौंअववेभटकैंमनमा रिमलोलैं ॥ देसबिदेसअभागीफिरैंवडभागीजोईव्रजभूमिमैंडोलैं ॥ ॥ ६१ ॥ व्रह्मकमंडलीव्रह्मसरूपकहांलौंकहौंगुनकेगनभारे ॥ ला

येभगीरथजूतुमकौंतबतैंतुमजीवअनेकउधारे ॥ नागरकीसुकितीक हैबातकरूंबिनतीपरूंपायतिहारे ॥ जेरहेआडेव्हैंकैंब्रजबासकैंगंगातेकाटियेपापहमारे ॥ ६२ ॥ जननीउंहिंपुत्रपुनीतकीहोरनसोएलगैंवहोतीरथकौं ॥ भुवमांझलैंआयेभगीरथजूताकैंदीजैंबडाईकितीरथकौं ॥ करियेलैंकृपाअबनागरपैंसुकहूंतुमआदिकतीरथकौं ॥ तुलसीबनछाडिभ्रमौंनकितैंअबहौंजमुनाजलतीरथकौं ॥ ६३ ॥ आईतूपरिकतैंवसांझबीतैंऔरैंदसामोसूंकाहिसांचीजिनरापैंमनअरस्यो॥ पाननिकोरंगमिटिआननपैरंगचढ्योतूटीमोतीमालउरआनंदहूसरस्यो ॥ स्वेदहैकिनीरतनचहूंटतचीरतेरैनागरियाआजकहूंमेहहूनबरस्यो ॥ तोकुलकीसौंहकहिआजुमदमोकलयागोकुलकीजीवनिगुपालकहूंपरस्यो ॥ ६४ ॥ सवैयो ॥ इतआवतहैवहरंगभरीनितऔरतियांनकैंसंगरली ॥ पटअंगलपेटैतऊवेअंगेटैंदुरैनाहिंसांचैढरीज्यौंभली ॥ लपिनागरकौंमगआगरमैंबदलैंगतिनारिनवायअली ॥ दबिलाजमैंआपैंछिपायबडीमुरिदूरसौंदेषिकैंजायचली ॥ ६५ ॥

## ॥ अथनीतकेकवित्त ॥

हीराहीकेफूटेतैंबिकानीकनीहाटहाटजानताजिहांनगुनफूटैतैंसबैगयो ॥ फूटभईलंकामैंविभीषनमिल्योहैरामैंरावनसहतकुलनासप्रानकोठयो ॥ कहैंकबिसंतजेदुजोधनसेमहाबलीफूटकेपरेतैंअभिमानमनकोनयो ॥ नरदकेफूटैंउठजायबाजीचौपरिकीआपसकेफूटैंकहोकौनकोभलोभयो ॥ ६६ ॥ ॥ कवित्त ॥ केकईकेकहेतैंउदंगलअमंगलभोदसरथप्रानदैकैंउर्द्धलोककौंगयो ॥ मुंथरीकेकहेतैंजुसबै

सगमायोरानीताकोअपवादसदालोकनमेंहैनयो ॥ जांनकीकेकहेतें गएहैंऊठदेवरजूभएबिनभाभीदसकंधहरिलैंगयो ॥ नागरानिपटक थाजगमेंउजागरहैंनारिनकेकहैंकहोकौंनकोभलोभयो ॥ ६७ ॥ सवैया ॥ जातकेहैंहमतोब्रजबासीसुनांहिरहिऔरजातकीबाधा ॥ देसहैंघोषनचाहतमोपकौंतीरथश्रीजमुनासुषसाधा ॥ संतनिकोसतसंगआजीवकाकुंजबिहारअहारअगाधा ॥ नागरकेकुलदेवगोवर्द्धन मोहनमंत्ररुइष्टहैंराधा ॥ ६८ ॥ कवित्त ॥ ऊग्योउडराजकैसोसमयो हैंआजप्यारेसुनियेंजूकहतसुजांननिकेनाथमैं ॥ लालमुरलीसौंसुधाअधररलीसौंकछुधूरतकरोलैंरागरंगभरीगाथमैं ॥ तबहैंतृभंगअंग नागरबजाईबैंनगायउठीप्यारीतहांप्रीतमकेसाथमैं ॥ पायडिगुलांने स्यामरहेससवांनेसेपैंहाथमैंरह्योलमनबंसीरहीहाथमैं ॥ ६९ ॥ आवतहीलषेजेहरिकौंमनजेहरिलैंगएहेलगिगोहन ॥ घूंघटमोहन लैसकोजासमैंमोहनकेमनकीयहमोहन ॥ नागरनागरिभेंटकैं कौतिकनागरिऔरहूठाढीहैंजोहन ॥ देषिरहीनहिंदेषिरहीसुरि सौंहींहसौंहींकसौंहींसीभौंहन ॥ ७० ॥ कवित्त ॥ औरबंगला जोकुम्हिलातधरचोधूपमांझयहबंगलासुमेहहीमेंकुम्हिलांवे हैं ॥ औरुबंगलापैंभंवबैंबापुरेभंवरअरुइंहिंबंगलापैंवृद्धबालकभ्रमांवेंहैं ॥ औरुबंगलाकेहितमालनिसुषीन्हेंजातइंहिंबंगलातैंहलवाईसुषपावेंहैं ॥ औरुबंगलपैंअतिआपैंललचावैंसंतसीतलकेबंगलापैंजिभ्यालललचावेंहैं ॥७१॥ सवैया ॥ अंपियांनिकेधर्मनिबाहकभोरामिलेजमुनाजगजोरनिसौं ॥ तहांन्हायगुपालओबालहूबाटमैंबैठेबंधेहितडोरनिसौं॥ मुषमौंनव्हैंनागरमालालियैंतिरछेचितवैंहंकोरनिसौं ॥ परमेसुरकेज

पकोफलसोजपक्यौंनिबैरैंदोउऔरनिसौं ॥ ७२ ॥ मंजनपंजनने नीकियोतनमोतीसेधोतीफबीहैंतियाकी ॥ मोहनगोहनमैंललचेल लनालहकातिज्यौंलोयदियाकी ॥ नागरिजूरादियैंगडुवाकरपंकति पायनिमैंबिछियाकी ॥ न्हायचलीजमुनांजलमैंकिलगायचलीसंग आंषैंपियाकी ॥ ७३ ॥ त्यागिसबैंपनिहारनिकोसंगआवतजातअ केलीभईक्यौं ॥ काहेउदासउसासभरैंचितचक्रतसीतनमांहितई क्यौं ॥ नागरकारेबिस्यारेसौंपायबचायनदीनौंतैंहायदईक्यौं ॥ दी सतहैंअबऔरहीघाटसुघाटकौंछोडिकुघाटगईक्यौं ॥ ७४ ॥ पाछैं गुपालआगैंगुरुलोगरहीअतिलाजनिसौंदबिनोठमैं ॥ ग्रीवफिरायन चाहिसकीसुरिसैंहैंनआएवेमेरीयेदीठमैं ॥ नागरप्यारेकेदेषनिकौं सपिवासमैंआंनीयहैंउरईठमैं ॥ आंषैंभईमुषपैंकिहिंकाजयाबेरक्यौं आंषैंभईनहिंपीठमैं ॥ ७५ ॥ गोकुलगांवगलीमैंमिलीगोरीऊजरीसा रीउठीतनमैंलसि ॥ आवतदेषिकैंमोहनकौंरहिगोहनसौंहनजौंन्हज न्हूंबसि ॥ नागरनीरैंकढ्योनटरीव्हैंनिसंकतबंकजुटीभ्रुकुटीकसि ॥ पातरेलंककीलंगारिग्वारिसुआंगुरीगालगडायगईहसि॥७६॥कवित्त॥ सुनीहींकहावतसोसांचीकीनीमाछरनिछोटेइतेपोटेमहादसनकराल हैं ॥ सूइनिकीसज्ज्याहैंकिबिपकीफुंहारैंपरैंकिधौंलेपकैंवचकोकरैं तनलालहैं ॥ सुरनरनागरयेसबैंनाकआयेतनकाटिकाटिपायेभ येनिपटबिहालहैं ॥ विष्णुदुरेजलमांझब्रह्माकंजनालमधिमहादेवहा रमानिओढेंगजपालहैं ॥७७॥ सवैया ॥ वेबनवासकुठोरकरैंइनवा समुपांबुजकोपनपारचो ॥ वेषसिआगिबढावतहैंइनकांननमैंरसअ मृतडारचो ॥ नागरवेनहिंआनंददाइनआनंदलैब्रजमैंबिसतारचो ॥

देपोअरीहारिकोबंसुरीइनकैंसेकुबंसकोनांवसुधारचो ॥ ७८ ॥ वन
बेलनिमांझअकेलीगईआजुबीननिकौंनवकुंदकली ॥ तहांमोहनमो
हेभरैंअंसुवांनिरहीलपिहौंद्रुमछाडिगली ॥ पटपीतगिरचोसुधिभूले
हैंनागरअंतररूपसमाधिरली ॥ कदलीकौंरहेपररंभनदैंअलीजांनि
कैंवेव्रपभानलली ॥ ७९ ॥ कवित्त ॥ आगेंहुतीऔरअबऔरसौंभईतू
औरटौरनरहतछिनछाडीसंगसपियां ॥ मोहनकोनांवसुनिरूपीन्हैल
जौहिंहोतजाततिरछौंहिंटाढ़ीरहतनरापियां ॥ ऊंचीभौंहैंनीचींदीठदी
ठनमिलातसौंहैंनागरनवलनेहचापीरसचपियां ॥ भौंडीभलीजांनि
बेकौंडौंडीतोनफेरैंकोऊऔंड़ीबातकहतकनौंडीतेरीअंपियां ॥ ८०॥
ललितपठाईपातीद्वारकाकन्हाईजूपैंइतैंकुसरातबातचाहैंसुभधुरकी
दूसरोबिबाहकीनौंमोमनउछाहभीनौंलीनौंसुपसारनारिडारिरूपभु
रकी ॥ बिवरसुसरारिमैंपधारिकैंबिहारकैंल्यायेब्रवधूजसभयोसौं
हशुरकी ॥ कामदुतिचूरतकीअबैंमृदुमूरतकीनागरपठैहोलिपिसूरत
ससुरकी ॥ ८१ ॥ कहतबिसाषावादिबडीआंपैंप्यारीजूकीजिंसीपासिं
धुकेझकोरनिकीझपियां ॥ ललितानमानैंहठठानैंयौंवपानैंआंपैंला
लकीबडीहैंजनुपंकजकीपपियां ॥ नागरवहांसिसुनिनैंननैंनजोरिवे
कौंसरकेहैंनोरैंझूमिआईसबसपियां ॥ रीझिप्रानवारेनसम्हारेअंगरं
गभरीजात्तमैंमपीहैंलगिअपियांसौंअपियां ॥ ८२ ॥ मोहनीलतातैं
मधुमंजरीश्रवतकैंधौंकाननमैंरीझकीदुहाईसीफिरतरे ॥ मादिकसौं
भरीपरीकोमलमिहींनमहालहलहातहरईसुकंठमांझअतरे ॥ सांच
भरीसौंहनोंचटकदारचिकनौंहोंवीनहूकोलगतकटोरसंगगतरे ॥ ना
गरमैंजानिकैंकहींहीफिरजांनिलेहुतांनयासुजांनकीसुजांनसुनौंमत

रे ॥ ८३ ॥ ग्रीषमबिहारभौनसांवरेकैढिगगोरीक्रीडतसभासरसहे लीलियेंसंगकी ॥ होतजलकेलनिकेबिविधिबिधानतहांबाढीहैललकउरआनंदउमंगकी ॥ जासमैंभईजोसोभाबरनीनजातमोपैंदमकिउठीहैदुतिढूंनीअंगअंगकी ॥ नागरिवेकैसीलगौतिरततरंगानिमैंपानीपरपावकज्यौंफिरतफरंगकी ॥ ८४ ॥ राधामनमोहनकरतजलकेलिजहांछींटनिकौखेलिसुपंझेलिबिसतारैंहैं ॥ कैधौंब्रजचंदकौकमोदनिकेमंडलमैंअविलपितारागनतननसम्हारैंहैं ॥ कैधौंसुरवृंदबैठेअलछविमाननितैंनागरवेपारजातफूलनिकौडारैंहैं ॥ कैधौंकिकालिंदीजूकेदंपतिपधारेतातैंउच्छवमगनमनमुकताउछारैंहैं ॥ ८५ ॥ तीरथसनांनीअरुवडेबडेमहादांनीजिनकीकहांनीजगजौंन्हजिमछैरही ॥ जपियांनिजपलीनेंभोजनअलपकीनेंकीनेंतपतपसीनिबुद्धिब्रह्ममैंरही ॥ सुरओअसुरनरनागपुनदेवरिषजिनकीचलावैंकौनरमाह्नरितैंरही ॥ नागरबताएतत्वातिनहूंकोतत्वचारुसुपनिकोसारब्रजनारिलूटिलैरही ॥ ८६ ॥ सेजसुपसिंधुकेझकोरनितैंझिकुरातकमलकलीसीरसबिलसीअलिंदकी ॥ दुहूंओरदीनैंकरकापियांसपीओस्यामबीचअभिरामप्यारीमूरतआनंदकी ॥ टूटेहारछूटेबारअंचरहूबेसह्मारनागरिचलनिनीकीलागैमंदमंदकी ॥ बासवसभौंरभीरआवतहैंपाछैंपाछैंआगैंआगैंफैलतउजारीमुषचंदकी ॥ ८७ ॥ सुंदरसुघरस्यामराधाठकुरायनजूजोरीजगभूषनसुआनंदअगमगी ॥ तारकसीवसनजवाहिरकीजेवलसीबैठेकुरसीपैंप्रीतनौतनसगमगी ॥ जरवफतीसमियांनेंसमेंदांनकिस्तसोजनागरअगरधूमिधूंधरिरगमगी ॥ दिपैंदीपमालछविछूटैंअग्नजंत्रजालअजबजलूसजोतिजीनतजगम

गी ॥ ८८ ॥ सवैया ब्रह्मपुरीसिवजूकीपुरीअरुइंद्रपुरीहूकहांजिय धारौं ॥ देवअदेवनिकीजेपुरीपुनिनागपुरीमुखतैंननिकारौं ॥ औरु पुरीभुवमंडलकीतिनकेबकितेकहौंनांवउचारौं ॥ नागरयेज्जुकहीसो पुरीसबगोकुलरावरऊपरवारौं ॥ ८९ ॥ मांगौनमोपभयोबासवोप मैंऔरअबैंनकछूजियधारौं ॥ यारजकैंबिनजोजगमैंसबसोसुपलो भहितुच्छबिचारौं ॥ लछनछत्रपतीनकीलच्छमिनागरनैंननिहूननि हारौं ॥ राजसबैंभुवमंडलकेब्रजमंडलऊपरवारिकैंडारौं ॥ ९० ॥ कवित ॥ हासीहैंतिहारैंभायेऔरनकेघरजातनाहकपरायोमनलैंन क्यौंउमहियैं॥ तुमहींकैंबडीब्रडीलालएअनोषीआपैंवरजोजूकसैंलो कलाजलैंनिबहियैं ॥ दोऊकरजोरजोराबिनतीकरतहहानागरहोनैंसु कदथाकीरीतगहियैं ॥ डारतहैंमारैंपरीगोहनहमारैंइहिंरावरीचितौंन कौंसह्मारैंनैंकरहियै॥९१॥सवैया॥घूंघटओटकियैंहूरहेनहिंहैंउतपाती मोछातीकेदाहक ॥ न्यायकियेबिधनासुपकारेमहासठयेहठकेजुनि बाहक ॥ चारबिचारनजानैंकछूअतिआतुरनागररूपकेगाहक ॥ मे रेइनैंननिगोडेबुरेमनदीनौंफसायबिचारोअगाहक ॥ ९२ ॥ कवित॥ सुंदरअंगेटाहिंलपेटैंपटलाजभरीआधैंमुषघूंघटकीसोभासरसातहैं ॥ ग्रीवकौंझुकायैंओझुलायैंबांहलियैंमौंनसंगसंगनागरिकैंभौंरभहरात हैं ॥ मोहनमैंमोहनजूनिकसेहैंआयकरितिरछीचितौंनचोटचलीमस क्यातहैं ॥जैसैंभलेभटहथछूटककेहाथकीसुओछैंपैंअलछिड़कहत्थी बहिजातहैं ॥ ९३ ॥ सवैया ॥ नागरमैंनसरोवरमीनकिपंकजकोपं पियांअनियारी ॥ स्यांनैंमांटौहिरणांनीवतावियैंजूब्रोतमेसहूसोचि बिचारी ॥ गोयामममोलेयासंजनपासेतारीफकरेंक्याजुबांनहमारी ॥

बीजीनमेंढलागैंकाईओपमांकांन्हजीरीआंष्यांकांमणगारी ॥ ९४॥ कालिंदीकेतटहाटकबेलिसीन्हायकछूकढिठाढीयेहोती ॥ भीजिकैं बारलगेसटकारेओतामेंदिपैंदुतिज्यौंतनमोती ॥ देखिगुपालहिंबेर लगावतनागरऐसीप्रबीनहैंकोती ॥ जोरतनैंनमरोरतभौंहनिचोरत चित्तनिचोरतधोती ॥ ९५ ॥ लैंचुबकीजमुनांतैंकढीतहांअंगनकोदु तिदूनीयैंवाढी ॥ भीजेमिंहीपटकीजुलपेटमैंआछीअंगेटरहीफबिगा ढी ॥ औरलईतनधारिकैंधोवतीबारनिचोवतचित्रज्यौंकाढी ॥ दे षिकैंनागरईठफिरीवहिपीठदैंअंगअंगोछतठाढी ॥ ९६ ॥ कवित ॥ न्हायबडैंभोरवहअपसरसोईकौंहैंसौंहैंमोहिगोधनकीचोरिचितलैग ई ॥ चटकीलीधोवतीमैंजूराकीउचानिआछीपावरीपहरिपगपायल वजैंगई ॥ पातुरीअंगेटभलीभरतभरीसीगोरीपींडुरीदुरींनिमतिमेरी ललचैंगई ॥ नागरियाकौंनकेंसेगोपकीवधूटीहायआईआगिलैंनकौं पैंदूनींआगिदैंगई ॥ ९७ ॥ सवैया ॥ हैंयहनायकदछनछैलसुतैंअ नकूलकियोचितचोरहैं ॥ हैंअभिमानीसुआपनैंरूपकोदीनव्हैंतोसौं रह्योनिसभोरहैं ॥ हैंतनसांवरोगौररंग्योमनतेरेईप्रेमपरचोझकझोर हैं ॥ हैंसुखदायकनैंननिनागरहैंब्रजचंदपैंतेरोचकोरहैं ॥ ९८ ॥ चं चलनातजिषंजननैंनभयेथिररावरेरूपकीओरहैं ॥ लायरहैंटकघूंघ टकीदिसबांधतप्रेमचितौंनकीडोरहैं ॥ तोमुषअमृतपांनछक्योछिन जानतनांहिकितैंनिसभोरहैं ॥ नेहअमंदप्रकासितनागरहैंब्रजचंदपैं तेरोचकोरहैं ॥ ९९ ॥ कवित्त ॥ प्रातपुन्यकाललालकालिंदीकेकू लआपपरमपुनीतनीतऐसेंधारियतुहैं ॥ अवलाअकेलीएकगोपबधू न्हायबेकौंआईअनजांनैंसोवयौंनिहारियतुहैं ॥ तांपेनैंनबांनानिकेघा

यनिसौंघूंमैंपरीतापैंधौंअनेकधनधामवारियतुहैं ॥ नागरनिपुनवडे कामकेहोबीरऐपैंतीरथकैंतीरकहूंतीरमारियतुहैं ॥ १०० ॥ सवैया ॥ सषिआवतआजअकेलीहरैंहरैंपायनिगाढीगडैकंकरी ॥ तहांमोहन सौंभटभेरभईउहिंगोहनबीचगईनंकरी ॥ गाहिमोहिलईइंहिंभांतिभटू निधिपाईहैंनागरज्यौंरंकरी ॥ सुनिसोईकहावतसांचीहुईइतमारनौं बैलगरीसंकरी ॥ १०१ ॥ कवित ॥ आसनजाटितनगबैठेरीजुग ललगिजगमगभूषननिजोतिफैलीचारती ॥ दर्पनकेमंदरमैंचहूंओ रजानीपरैंछांहधरैंवांहगरैंझुकतकुंवारती ॥कहीनपरतमोपैंआरतीकी प्रभाभटूहौंतोभईलटूलखिसोभाउहिंवारती ॥ नवलसखीसरूपल हलहीछबिवारीकीनीलाजघूंघटसौंनेहभीनीआरती ॥ १०२ ॥ कव बइकुंठमांहिगायनचरायआएकौंनरिझवारिउहांबंधीप्रेमपासतैं ॥ क बबइकुंठमांहिमोहनींबजीहैंबैंनप्यारिनकैंहेतरासरंगकेविलासतैं॥ क बबइकुंठमांहिकेलिकीनीइहांजैसीकहूंकैसीकैसीजियनागरहूलासतैं ब्रजहीसमंधीरूपलीलासबजगगाईपाईपरमेसुरहूसोभाब्रजवासतैं ॥ ॥ १०३ ॥ ब्रजहीमैंमोरनकेपच्छकोमुकटधारयोब्रजहीमैंरासकेलि करनहूलासतैं ॥ ब्रजहीमैंजूरादेंवनायोनटवतरूपब्रजहीकेलोगन कौंबांधेप्रेमपासतैं ॥ ब्रजहीकेफूलनिसिंगारेरहैंनिसद्योसब्रजहीके नागरकहांवैंगुनरासतैं ॥ ब्रजहीसमंधीरूपलीलासबजगगाईपाईप रमेसुरहूसोभाब्रजवासतैं ॥ १०४ ॥ छप्पय ॥ जहांवेणुवनसघ नतहांकहाअनलनब्रजरैं ॥ जहांमिलतमंजारिकहाककंसनाहिंउच रैं ॥ जहांलुहारघरतहांकहाचिनगैंनहिछूटैं ॥ जहांहलैमिलिकाच पात्रतहांकहानफूटैं ॥ कलहकलपतरुसीसवैंवहुतवसैंजुवतीजहां ॥

नागरियाउहांकलहबिनकहोचैननिवहैंकहां ॥ १०५ ॥ मत्तवारु नीपानमदविघूर्नितदृगघूमैं ॥ लीलांवरतनगौरश्रवनकुंडलइकझूमें॥ दुविदप्रलंबादिकजुदुष्टगतप्रानकरनकर ॥ कैरवक्रूरमदंधनप्रअति कियेकरपिहर ॥ जादवेंद्रकुलकमलरविवकतृनवनपावकप्रलय ॥ प्रणवतनागरिदासनितिजयजयजयवलदेवजय ॥ १०६ ॥ जक्त भक्तिहैंवैरसुनीयहप्रकटकहावत ॥ जक्तकहतकछुऔरभक्तकछुऔ रहिगावत ॥ जक्तभक्तिमेंवडोभेदलैंप्रभूकियोसो ॥ जक्तकहोजिं हिंकियोछियोनहिंभक्तिहियोसो ॥ कृष्णभक्तिसुपछाडिकैंजगकोभ लोमनाइयैं ॥ नागरियाइंहिंभांतिसोंकहोक्यौंनदुपपाइयैं ॥ १०७ ॥

## अथ बनबिनोद ग्रंथ लिष्यते ॥

श्रीनंदलालगोपालवालजयति ॥ चौपई ॥ ब्रजवासनिकीपद रजध्यांऊं ॥ नंदकुंवारकतूहलगांऊं ॥ बनकीलीलालालुभाये ॥ लागतगायनसंगसुहाये ॥ १ ॥ कटिमुरलीलकुटीलियैंहाथ ॥ ब्रज बासनिकेलरिकासाथ ॥ पेलतपेलतगयेत्रटोर ॥ हरेचनांचितयेउ हिओर ॥ २ ॥ षेतषेतसौंलागिरहेषेत ॥ डहरभरेलहिरैंसीलेत ॥ दे षिदेषिकतरायेग्वाल ॥ वातवताईनंदकेंलाल ॥ ३ ॥ बालकएक वारतरकूक्यो ॥ ताहिदेषिरषवारोकूक्यो ॥ सुनतसपासब्रगयेपला य ॥ विचहरिपीतांवरफहराय ॥ ४ ॥ वरसांनेकेग्वैरयेंआये ॥ दे षिचनाकेषेतलुभाये ॥ पैठेंअछनधरतपगआछैं ॥ बूंटउपारतचित वतपाछैं ॥ ५ ॥ तहांरपवारनिलषिललकारे ॥ गारीदेंदैंसवनिनि कारे ॥ भाजेलरिकालैलैंवूंट ॥ न्यारेन्यारेअपनीजूंट ॥ ६ ॥ गव

दाग्वालभजननिनहिंपायो ॥ मिलिब्रजवासनिपकरिमुकायो ॥ सहि
तगुपालहसैंफिरिफिरिसब ॥ गारिदेतहैंगवदरायतब ॥ ७॥ इन
काहूनहिंवाहिछुटायो ॥ हाहाषायपगनिपरिआयो ॥ फिरिमिलि
भाजेदिससंकेत ॥ पीतांबररहिगोडहिंषेत ॥ ८ ॥ उपरेचनांउहीं
पटबांधैं ॥ चलीपुकारनिधारिकैंकांधैं ॥ जहांबैठेकीरतवृषभान ॥
बकीतहांरषवारनिआन ॥ ९ ॥ षेतउजारिकैंगयेपलाय ॥ नंदगां
वकेलरकाआय ॥ पटपहिचांनिहियेअतिहुलसे ॥ महरमहरिदोऊ
देषिकैंहसे ॥ १० ॥ बहोतबात्सलभावसौंभरे ॥ पुलकितअंगकंठ
गहबरे ॥ पीतांबरकीओढनीकीनी ॥ सोलैंकैंराधाकौंदीनी ॥११॥
अंगसुबासरौमांचितभई ॥ कुंवरिकीसलजन्हैंअंपियांनई ॥ किते
कबेरपीछैंउठस्यामा ॥ षेलनिचलीसहजअभिरामा ॥ १२ ॥ आई
जबसंकेतसघनमैं ॥ जहांछैलाछिपषातहेवनमैं ॥ सुनिआहटजा
न्यौंसबग्वारनि ॥ आईवहीपेतरषवारनि ॥ १३ ॥ भाजेदिसनंदी
सुरग्वाल ॥ रहिगयेइकलेनंदकेलाल ॥ मिलबैठेदोउमीतमनोहर ॥
बातैंकहतभईहीज़ोघर ॥ १४ ॥ नावलैंलैंवतरानिसुहाई ॥ कछूस
यांनपकछुभुराई ॥ राजतलालललीकैंसाथ ॥ मनलियेंहाथहाथ
लियेंहाथ ॥ १५ ॥ मोहनलालनेहसौंसने ॥ छीलछीलअपनेंकर
चनें ॥ राषतप्रियाअधरनिबिचहरे ॥ मनौंविद्रुमपरपन्नांधरे ॥१६॥
पातपवावतहसतहसावत ॥ फूलनकेभूषानिपहरावत ॥ गउरस्याम
वातनिरसघुरे ॥ बैठेसघनद्रुमनिमैंदुरे ॥ १७ ॥ कबहुकमोरओच
कउडभागैं ॥ कुंवरिचौंकिडरिउरसौंलागैं ॥ गावतडोलतदैंगरबां
हीं ॥ दोऊबसोनागरमननांहीं ॥ १८ ॥ दोहा ॥ दहीचपटिया

चोरिकैं, चोरेचीराकिसोर ॥ लालमननकेचोरअब, भयेचननिके चोर ॥ १॥ मथुरालीलाद्वारका, डारीमनपगपेलि ॥ बसीनागरीदा सहियएव्रजग्वैईकेलि ॥ २ ॥ समतअठारासैंजुनव, कृष्णपक्षमधु मास ॥ बनबिनोदकलग्रंथयह, कियोनागरीदास ॥ १ ॥ इतिश्रीव नविनोदग्रंथसमाप्तं ॥

## श्रीनंदकुंवारजयति अथ बालविनोद ग्रंथ लिष्यते॥

दोहा ॥ सोरठा ॥ हियधरिनंदकुंवार, बरनौंबालबिनोदइक ॥ नंदमहरकेद्वारचहलपहलनितषेलिकी ॥ १ ॥ अथ अरिल्ल ॥ बैठेमोहनलालअथांयनिआयकैं ॥ चहुंदिसबालकवृंदरहेछबिपायकैं ॥ पढततहांमधुमंगलसुषदसुभायको ॥ हसिहंसिपरतगुपालकुंवरनंदरायको ॥ २ ॥

## अथ नायकामुष वर्ननं ॥

मधुमंगलवाक्य दोहा ॥ बैंनीआईउलटिकैं, रहीभालपरिझूलि ॥ मनौंजतीकेसीसपैं, बैठेबगुलापांति ॥ ३ ॥ फटकरंगकीभौंहहैं, धूंमधौंरहरनैंनि ॥ मनमांनकचहलैंपरचो, देपतचंचलकांन ॥ ४॥ पटकोलीसीनासिका, अधरावलिरहिझूल ॥ दसनजीभरहिलटकिकैं, लषिअटक्योमनमोर ॥ ५ ॥ ऊगेचिबुककपोलपरि, पीतरंगकेकेस ॥ मानौंकलीअनारपरि, भंवररहेलपटाय ॥६॥ अरिल्ल ॥ मुषवरन्यौंमधुमंगलसोकहियेकहा ॥ अबतनबरनतसुबलजुहैंकैंकविमहा ॥ बाढचोकउतकचावसुबालसुभायको ॥ हसिहंसि०॥७॥

## अथ नायकातन बर्ननं ॥

सुबलबाक्य ॥ दोहा ॥ रनिशृंगासीग्रीवपरि, ऊगेहाथअनूप ॥ ज्यौंमुरगाबीछांनिपरि, बैठीपांपिपसारि ॥ ८ ॥ कुचसोहतल हिंगातरैं, ज्यौंवृच्छनिकेमीन ॥ नाभमनौंमुपासिंघको, कटहलसींक टिजांनि ॥ ९ ॥ गुप्तअंगझूलतरहैं, अनंनासकेरूप ॥ कंचुकिछी ननितंबबिच, दियेंदमामोजाय ॥ १० ॥ चरनानिकीसोभाकछूब रननकरीनजाय ॥ चोवाकैंचहलैंपरेमनौंकाछवादोय ॥ ११ ॥ इति ॥ अथ अरिल्ल ॥ भूपनबरनतयाकेअबैंसुबाहुजू ॥ सुनियेंसुंदर स्यामबढैंचितजाहुजू ॥ वाढ्योकउतकचावसुबालसुभायको॥ हसि हसि० ॥ १२ ॥

## अथ याकेभूषन बर्ननं ॥

सुबाहुबाक्य॥ दोहा ॥ सीसफूलसोभानिरपि, इकटकरहिगये दांत ॥ मानौंकांमरिगंठरिया, धरैंमूंडपरिदोय ॥ १३ ॥ नथमोती जगमगरहे, रसटपकततिहिंसंग ॥ ज्यौंहाथीकेसींगपरि, करततप स्याऊंठ ॥ १४ ॥ करनफूलदादुरमनौं, करतहैंसोरअकास ॥ सबदांतनिकीचौंपतरि, घंटावलिछविदेत ॥ १५ ॥ सोहतकंकनकं ठको,तामैंघूघरनाद ॥ कारेधुरवाकुचनिबिच,बाजूबंधविसाल१६॥ पौंचीमुद्रावलिललित, कांपनिमैंफहरात ॥ बाजितकिंकनीपीठप रि गुफासिंघघुररांन ॥ १७॥ नूपरजेहरबीछिया, जंघनिपरिछवि देत ॥ मानौंपंभपिजूरकैं, लपटिरहेहैंनाग ॥१८॥ इति ॥ अथ अ रिल्ल ॥ श्रीदामालच्छनकहत, सुनौंइहिंनारिके ॥ परमाविचच्छनश्रो

तामोहनयारके ॥ बाढचोकउतकचावसुबालसुभायको ॥ हसिह सिपरत० ॥ १९ ॥

## अथ या नायकाके लच्छन बर्ननं ॥

श्रीदामावाक्यं दोहा ॥ रंगभरीचितवनिचलत, मनौंदवानल आहि ॥ मुसकिफिगगफूपवन, लहिंगाकीकरिओट ॥ २० ॥ मृदुबोलनिसंगश्रवतजल, हियहहलतसबकोय ॥ सुघरसहजमैंरसभरे, घुरकतजनौंबाराह ॥ २१ ॥ चतुरचलतराहदारडग, पगपगाछि रकतगैल ॥ मनौंसलीताडारिकैं, कोयलकूदतजात ॥ २२ ॥ सिर लहिंगालावनउलटि, ठनगनठनकअलोल ॥ ऊंचेल्पायनितंबझुकि, भजीकटाछैंमारि ॥ २३ ॥ इति अथ अरिल्ल ॥ गवदरायसुनि बोल्योमोहिदिषाइये ॥ वहैंनायकाबेगतहांचलिजाइये ॥ बाढचोक उतकचावसुबालसुभायको ॥ हसिहसिपरत० ॥ २४ ॥

## अथ गवदराय वाक्य ॥

दोहा ॥ गवदरायभोरोसपा, चकितरह्योनिहारि ॥ फिरिबोल्योहठिसवनिसौं, मोहिदिषावोनारि ॥ २५ ॥ रेभइयाचलिनंदके तोकौंमेरीसौंह ॥ अतिसुंदरवहिनायका, देषूंगोरेहौंह ॥ २६ ॥ तब गुपालहसिउठिचले, सषालियैंसबसंग ॥ गवदरायआगैंतहां, आतुरअद्वदअंग ॥ २७ ॥ गवंदाकौंसबारिंदमिलि, लैंगयेबनबाहिकाय ॥ कीचबीचइकलोटती, दीनीभैंसदिषाय ॥ २८ ॥ स्यामसहित भागेसपा, किलकीदैंकरिपेलि ॥ गारीकाढतगवदवा, लियैंहाथमैंडेलि ॥ २९ ॥ गवदरायपाछैंलग्यो, डेलिचलावतजात ॥ स्वासस

मातनअतिहियें, श्रमितासिथलभयेगात ॥ ३० ॥ करीपुकाराहिजायजहां, बैठेहेब्रजराज ॥ वाबाजूइनसबनिमिलि, हौंवहिकायोआज ॥ ३१ ॥ तबहसिनंदमंगायदये, बहौपकवानप्रकार ॥ सुपीभयेकारिगबदवा, भोजनभीमअहार ॥ ३२ ॥ वालकेलिकहांलगिकहौं, जेजेकरतगुपाल॥ब्रह्मादिपछितावही, हमनभयेब्रजग्वाल ३३॥ नंदगांवब्रजबालकनि, देषतबढ्योहुलास ॥ कीनौंवालविनोदयह, ग्रंथनागरीदास ॥ ३४ ॥ समतअष्टदससतजुनव, मासअश्विनभृगुबार ॥ तिथषष्टीअरुशुकलपष, रच्योग्रंथविस्तार ॥ ३५ ॥ इतिश्री बालबिनोदग्रंससंपूर्ण ॥ १ ॥

## अथ सुजनानंद ग्रंथ लिष्यते ॥

श्रीनंदनंदनवृषभाननंदिनोजयतां ॥ मंगलाचरन ॥ दोहा ॥ बंदौंब्रजकेचंदद्वै, गौरस्यामसुपरास॥ सिगरोब्रजजगमगरह्यो, जिनकैंरूपउजास ॥ १ ॥ इनहीकोपरकरसबैं, एब्रजवासीजानि ॥ तिनकीइच्छातैंकहूं, ग्रंथश्रवनसुषदानि ॥ २ ॥ ॥ चौपाई ॥ ब्रजबासिनिकीपदरजध्याऊं ॥ब्रजहीकीकछुलीलागाऊं॥ जोदेषीमैंअपनेनैंना ॥ सोबजथामतिवरनौंवैंना ॥ ब्रजसबअतिआनंदनिझिल्यो ॥ सूरजसमैंकमलज्यौंपिल्यो ॥ सुषीदेपियतसबहीलोग ॥ तिनकैंधनगोधनकेभोग ॥ वहीसमैंजोनंदराइकी ॥ प्रगटीफिरिसुभदिनसुभाइकी ॥ उतनंदीसुरनंदसुथान ॥ इतवरसांनैंश्रीवृषभानएदोऊयाब्रजकेभूप ॥ तिनकेगृहद्वैरतनअनूप ॥ इनअपनेपरकरकौंहेरि ॥ रूपरामकोमनदियोप्रेरि ॥ नंदराइबोलेबरसांनैं ॥ इहं

दिसिघरघरमंगलठांनैं ॥ सनमुपलेनचलेव्रजबासी ॥ हयगयरथसें नांछबिरासी ॥ उततेंनंदमहरिचलिआए ॥ बजनलगेवाजित्रसुहाए ॥ छप्पैं ॥ व्रजवासीथटनिकटबीरवरछनिगहिआगैं ॥ ठहकि ढालढिगढालघटाकारीजिंमिंलागैं ॥ घमसिवटनिघटपूरधूरिउडि लगीअकासैं ॥ गरजिनौबतनिवोपसक्तिदलदामिनीभासैं ॥ मचि भीरसोरनागरमहापरीसुनतनहिंकानसौं ॥ श्रीनंदगोपमहाराजजव चलेमिलनवृषभानसौं ॥ १ ॥ ॥ चौपाई ॥ आगैंनंदऔपाछैंज सुधा ॥ तिनकीयहसवव्रजकीवसुधा ॥ तापीछैंदोऊभैयाचले ॥ गौरस्यामआनंदरसरले ॥ चंवरछत्रछबिअतिसरसात ॥ नरनारीम गमेंनसमात ॥ घहरतगजफहरतपटवांने ॥ दरसनहितनरवहुउर रांनें ॥ इतमगजोवंतहोवरसांनौं ॥ लष्योदूरितेंनंदकोआंनों ॥ व्रजजुवतीआनंदसरसाई ॥ लैलैकलससनमुपीआंई ॥ गहमहभीर भईमिलिभारी ॥ कईद्वारातियकईअटारी ॥ फूलभरीफूलनिवर सांवैं ॥ समधांनेंकीगारीगांवैं ॥ पाछेंतहांकुंवरदोउसंग ॥ तिनमें छोटेसांवरअंग ॥ सोआंनंदिततननसंभारैं ॥ इकटकमहलनिऔर निहारें ॥ योंव्रजराजगांवविचआए ॥ घरघरमंगलकलससवंदाए॥ चहलपहलअतिआनंदरली ॥ भरिगइफूलनिसौंसवगली ॥ बरसां नेंसोभाउफनात ॥ महाभीरनिकस्योनहिंजात ॥ हरैंहरैंआएनिज ठौर ॥ श्रीनंदरायगोपसिरमौर ॥ दोहा ॥ जोमगमेंसमयोभयो, रह्योहियैंमंडराइ ॥ मनमेंनांजानैंदोऊ, कह्योकौंनपैंजाइ ॥

## अथ भवन प्रवेस ॥

॥ चौपाई ॥ नंदभवनजवकियोप्रवेस ॥ जरीपांवडेपरेसुदेस ॥

वरपेफूलरजतकंचनके ॥ लुटतभिछुकनिगनवहुधनके ॥ श्रीवृष भांननंदमहाराज॥ निकटकुंवरमनहरनसमाज॥पढतवंसवंदीजनह रषैं ॥ भानओरतैंवहुधनवरपैं॥ नाचतगुनीगवैयागावैं ॥ वीनमृदंगसुधंगवजावैं ॥ सुरधुनिप्रेमानंदछकाए ॥ इंहिंसमयेमेंएपदगाए॥ ॥ १ ॥ रागपंभावची ॥ नंदवृषभानइकभवनराजैं ॥ भईभटनट निकीभीरवृषभानपुरपौरअतिमत्तगजराजगाजैं ॥ दुहूंकुलदीपकेकुलहिंमंगदभनैंजुरेगनगुनीसंगीतसाजैं ॥ समधीसमधीमिलनिगोपगरईसभाप्रभाआनंदकछुऔरआजैं ॥ गारिगावतसकलमिल्योमह रावनौंकियेंघूंघटलियेंहियैंलाजैं ॥ महलमहलनिचहलपहलमंगल महाद्वारसहनाइनीसांनबाजैं ॥ वटततहांपानकपूरअरुअरगजागोपकुलकरतसनमांनभ्राजैं ॥ नागरीदासतहांफिरतउच्छवटहलपरम आनंदछकचढेछाजैं ॥ ॥ चौपाई ॥ कीरतिजसुधाएइकठौर ॥ सबव्रजकीदोऊसिरमौर ॥ जहांभीरव्रजजुवतिनिकरी ॥ सनमुपगारीगावतिपरी ॥ नंदहूगौरगौरतुमरानी ॥ कुंवरस्यामयहहमसव जानी ॥ आजकोदिनधनिधनिसुपदाई॥ नूवृषभानकेघरमेंआई ॥ योंकहिकरतकुतूहलनारी ॥ गावतहंसतदेतकरतारी ॥ भावकजन यहसमयनिहारे ॥ वहतप्रेमकीदृगजलधारैं ॥ जेविरक्तवनवासी संत ॥ पगनितियनिकेलुटतअनंत ॥ व्रजवासिनिआंगननहिंमावत लैलैभेटगांवतीआवत ॥ कांनपरीसुनियतनहिंकही ॥ गहमहरावरमैंव्हैरही॥ समधनिमिलीउच्छवसरसांनौं॥जगमगरह्योरूपवरसांनौं यहउच्छववढिपरचोअपार॥ कुंवरिलाडिलीकैंप्योसार ॥ इंहिंसुपव हुदिनपलभरिजानैं ॥ श्रवननैंनमननांहिअघानैं ॥ वहुमनुहारैंवहु

ज्यौंनारैं ॥ दानमानदएबहुतप्रकारैं ॥ मांगतनंदविदाकरजोरि ॥ रापतश्रीवृषभाननिहोरि ॥ यौंवृषभानरापिदिनघनें ॥ कियेविदाव्है कैंअनमनें ॥ छप्पै ॥ करिकरिलोचनसजलबचनहितअम्रतभाषे ॥ पांनसुगंधबिधानआंनिमुपआगैंरापे ॥ पहराएनरनारिबहुतकंचन धनबरसे ॥ नेगिनिदीनेनेगसबैंआनंदहियसरसे ॥ गजराजबाजि पटरतनबहुनागरहठकरिसंगदिये ॥ श्रीमहेंद्रवृषभाननैंपुनिऐसैं नंदबिदाकिये ॥ १ ॥ दोहा ॥ नंदासिधाएनिजभवन, रहिगएजकिसबहेरि ॥ जगतकहानीरहिगई, रहिगईसुपऔ सर ॥ १ ॥ यहउच्छवअद्भुतरच्यो, धन्यधन्यअनुराग ॥ भली करीसंपतिसफल, रूपरामबडभाग ॥ २ ॥ सबबिधिनांहींकहिस क्यो, बहुतरहीअवसेष ॥ कहीजथामतिरीझबस ॥ नागरउत्सव देपि ॥ ३ ॥ संमतअष्टदससतजुदस, बरसानेकेबास ॥ ग्रंथसुजना नंदयह, कियोनागरीदास ॥ ४ ॥ इतिश्रीग्रंथसुजनानंदमाहाराजना गरीदासजीकृतसंपूर्ण ॥

## अथ रासअनुक्रमके कवित्त ॥

ठौरठौरवृंदाबनमुकलितमालतीयौंउलहेकदंबकेलिनउतनतूति का ॥ चंद्रमाकिरनद्रुमरंध्रनिव्हैंआईसोबमांनौंछबिदेलछरीकामक लधूतिका ॥ ऐसेसमैंमोहनलगेहैंमुरलीकैंकांनदईलैपठायमंत्रपढि कैंअभूतिका ॥ नागरियाजहांतहांश्रवननिरलीआयबोलितियलैंच लीसुबंसीब्रजदूतिका ॥ १ ॥ उदितसरदचंदचंद्रिकाकिरनकढोदि नमनितापदलमेंटतकहलहैं ॥ ऐसेसमैंआईब्रजबालानंदलालाढिग

तेन्हैंदेषिकोटिरतिलागतसहलहैं ॥ गावैंगीतमीतामिलिनागरिसंगी
ानचैंचंचलताचितैंरहीमोमतिहहलहैं ॥ मिलीघनस्यामैंमानौंधाइ
ाभमंडलसौंबीचरासमंडलकैंदामिनीलहलहैं ॥ २ ॥ वृंदाबनकान
ापैंभीरहैविमाननिकीदेवबधूदेपिदेषिभईहैमनंचला ॥ बंसीकलगा
ाकैंबितानधुनिबायबंध्योरमालोकलोभितव्हैंभूलीउरअंचला ॥ है
ाबिचगोपिनिकैंललिततृभंगीलालनागरियापदंन्यासबाजैछनछंछ
ा ॥ रासरंगमंडलअषंडनितहौनलाग्योसंगव्हैंभ्रमतमानौंमेघचक्र
ांचला ॥ ३ ॥ सरदसुहाईनिसप्रफुलितबल्लीबनवहोछबिछाईचारु
ांद्रिकापुलनिमैं ॥ गानकेबिधानतहांनिर्तभेदहावभावरच्योहैंबिला
ारासमंजुलपुलनिमैं ॥ लेतगतिनागरियानागरसुमंडलमैंकोरिक्रम
ानांहिंआवततुलनिमैं ॥ बेरबेरझूलैंमोतीमालाकीझुलनिमनदेपि
ाषिडुल्योजातकुंडलडुलनिमैं ॥ राधानंदलालरासमंडलरसालन
ाएकतनव्हैंकैंएकफूलनिकेहारमैं ॥ एकजारीदारसेतओढनीकों
मोढिदोऊनिर्ततसुधंगगतिमिलिततकारमैं ॥ मुपनैंनभूपनाचिकुरक
कांतिपुलीचांदनीसरदसुच्छसागरकेबारमैं ॥ नागरमयंकमीनमा
ौंमनिगनसिवारकंजकामधींवरगहेरूपजारमैं ॥ ५ ॥ एकराति
ामैंकईकलपअलपजानैंऐसीकेलिकंवनीयइनहींसौंहोसकैं ॥ एक
ांसुरीकीधुनिथिरचरमोहिडारेतृभुवनकौंनसुनिधीरगहिजोसकैं ॥
ाकनटनागरकीमुकटलटकमांझअटकिपरयोहैमनछूटिनांहिंसोसकैं
ाकभुवभंगमैंअनंगमानभंगहोतताकेरासरंगकोवपानकारिकोसकैं ॥
। ६ ॥ ठाढीअभिरामास्यामाबीचरासमंडलकैंआगैंस्यामनिर्ततहैं
ुलपसुधंगमैं ॥ नूपुरमृदंगबीनतारसुरसांचलीनपैरतप्रवीनगुनसा

गरतरंगमैं ॥ नागरियाराधेरीझिभृकुटीनचायतबदईमनमानीमौज
ग्रानंदउमंगमैं ॥ प्रीतमकेअंगनिअनंगचलचालपरीभएतालभंगला
लबालभौंहभंगमैं ॥ ७ ॥ थेईतात्थेईथुंगधमकटतक्काधलांगड़घट
सुघटघाटठटक्योसुठटक्यो॥ देषिनवरंगीकीललितकटिभंगीतहांक
टयोहैंनिकटभूलिभटक्योसुभटक्यो ॥ नागरनवलनटनिर्तकारीकौं
निहारिलोकबिधिबेदवादपटक्योसुपटक्यो ॥ पीतपटचटकरु
लटमैंलपटिमनमुकटलटकिमांझअटक्योसुअटक्यौ ॥ ८ ॥
नितैलनवेलीअलबेलीप्यारी मंडलमैंसारी जरतारीरहीझींनींझलम
लिकैं ॥ सषियांनिहारैंप्रानवारैंरिझवारैंरीझिउठतआनंदउरप्रे
प्रेमकलमलिकैं ॥ नागरियास्वामिनीकीउरपतिरपदेषिदामिनीबि
चारीरहैहाथमलमलिकैं ॥ प्रीतमकेलोयनलगायलयेपायनसौं
मनतरवायनसौंडारयोदलमलिकैं ॥ ९ ॥ नटराजभेपधरैंर
तिराजरंगभरयोनिर्तसुघरस्यामतालनिअटपटी ॥ ठाढेचहूंओरजू
थचतुरचकोरिनिकेचितैंब्रजचंदपरमदनसटपटी ॥ किंकिनीकुंणि
तकलनूपुररुणितपायनागरछुटयोहैंपटभांतानिलटपटी ॥ गतिलेत
ललितसलोलमालाकुंडलहैंललनिलगायराषीलोयनचटपटी ॥१०॥
प्यारीजूकीसुलफसुधंगदेपिरंगभरीकैसीनीकीलागतहैंगुनगरवांनि
की ॥ चंचलसमीरवसचंद्रकारुअंचलहैंछूटेकेसपासनिकुसमझरवां
निकी ॥ नागरियापन्नानिकीपायजेबसोहैंपायप्रीतमकोमनलाग्यो
छवितरुवांनिकी ॥ वेसरिकोमोतीझूलिझूलतहैंझूमकहैंतैसीगतिलैं
निमैंहलनिहरवांनिकी ॥ ११ ॥ रासकेश्रमितआवैंकुंजकैंनिवासदो
ऊललितादिछांवैंआगैंपंकजकीपपियां ॥ स्यामदुहूंहाथनिपैंधरैंहाथ

स्यामाजूकोतहांभईसबहीकीआंखैंमधुमषियां ॥ नागरियानागरवनकबनींसैनींपरबैठेहासिचतुरचितौंनचषैचषियां ॥ प्यारीमुषस्वेदहिंसुखावैंपियफूंकदैंदैंत्यौंत्यौंउतभीजीजातसुषमांहिंसषियां ॥१२॥

नवलनिकुंजमंजुकालिंदीकेकूलजहांरहीझुकिझूलिलताफूलनिकेभारहीं ॥ स्यामासुपदाईतहांअमलजुन्हाईआईऔरैंछबिछाईछितसेव्यकोटमारहीं ॥ नागररसिकलालप्रेममतवारेप्यारेराधारूपदेपिदेषितोरितृणडारहीं ॥ चंद्रमांकीडीठडारिकरतमुकटछांहपीतांवरगहिठाढेभंवरनिवारहीं ॥१३॥ लहकिलहकिजातलगिकैंपवनलतामहकिमहकिउठैंमालतीसुबासहैं ॥ गहकिगहकिगावैंकोकिलातरनिचढीकुंजछबिपुंजकामसेवतनिवासहैं ॥ नागरियास्यामास्यामसोहैंसुखसैंनीपरदेपैंद्रुमरंध्रनिनकोऊसषीपासहैं ॥ दोऊमनहरैंदोऊरीझिरीझिअंकभरैंअंगनिअनंगबाढ्योरंगमैंबिलासहैं ॥ १४ ॥ तनकतनकबाजैंझनकचुरीनिकीओगरैंहरवाईबातभनकसुहांवती ॥ टूटेहारफूलनिकेछूटेउरबंधनिमैंदोऊमुषचंदनिमैंसोभासरसांवती ॥ लटपटायमूरतगुलावजलभीजिरहीविगलतिबारबासमदनबढांवती ॥ रूपवसनागररसिकहसिहेरिहेरिफेरफेरभेटतभुजानिभरिभांवती ॥१५

छीनकटिछूटेबारआएफैलिआननपैंआधेसीसमसीसफूलत्रैंनांझुकिगोमहा ॥ टेढीभईवेंदीहारसरकेसिंगारलपिमोहूसौंन्हैंन्यारेमेरेलोयनकरैंहहा ॥ बदनगुराईमांझअरुनाईपियराईनागरियाकैसैंनैंनसिथलहुरैंअहा ॥ रूपहैंकिडौरीहैंकिनैंननिठगौरीहैंकिस्वपनौंकिसंभ्रमाकिसांचहैंकिहैंकहा ॥ १६ ॥ मर्गजीसुबासवसआसपासभौंरभीरभ्रमतअधीरभईधीरहूनताहिकैं ॥ चांदनीमैंसोएमिलिसुरतिश्रमितअंग

आनंदतरंगलीलासिंधुअवगाहिकैं ॥ झींनौपटफारिफैलीवाहिरबद नकांतमानौंजोन्हजीतिबेकौंचलेहैंउमाहिकैं ॥ नागरियाअरझांनैं ग्रीवनिमृनालभुजपुलिजातिआंखैंजबरहिजातिचाहिकैं ॥ १७ ॥

## अथ निकुंजबिलासग्रंथ लिष्यते ॥

श्रीविहारनिविहारीजूजयति ॥ दोहा ॥ श्रीगुरुनेहसरूपससि, हियमैंकरोप्रकास ॥ अष्टप्रहरकीकेलिको, जानिपरैंआभास ॥ १ ॥ श्रीस्यामाअरुस्यामके, अमलकमलपदचार ॥ तिनकौंबंदनकरि कहूं, तिनकोकछूविहार ॥ २ ॥ गउररस्यामानितिएकरस, नउतनने हअछेह ॥ एकवयक्रमएकमन, एकप्रानद्वैदेह ॥ ३ ॥ पियप्या रीवृंदाविपुन, नितिविहाररसएक ॥ बिछुरतनांहींपलकहू, बीतत कलपअनेक ॥ ४ ॥ नवनिकुंजमनकौंअगम, सेवतकोटअनंग ॥ जुगलकेलिआनंदको, तहांअखंडितरंग ॥ ५ ॥ नैंननैंनासियरांव हीं, बैंनसजीवनिमंत्र ॥ मुंहांचहींजियज्यांवहीं, स्यामास्यामसुतं त्र ॥ ६ ॥ लालकैंसबंसबालहैं, बालकैंसबंसलाल ॥ दुहुनिकैंवृंदा विपुनके, सर्बसतालतमाल ॥ ७ ॥

## अथ श्रीवृंदाबन सोभा बर्नन ॥

दोहा ॥ सोभासंपतविपुनकी, बरनतबनैंनबैंन ॥ दंपतिहूछाकि रहतलपि, वढतमैंनकैंमैंन ॥ ८ ॥ लताफूलफलसंकुलित, कामकु टीअनयास ॥ कदलीअंबकदंबमिलि, बानिबानिरहेअवास ॥ ९ ॥ तालतमालनिजालविच, सुभगसरोवरनीर ॥ अमलकमलप्रफुलि ततहां, रोचकत्रृविधिसमीर ॥ १० ॥ जलवूंदैंरहिठहरिकैं, कंजदल

निआधार ॥ दंपतिकैंहितसरलियें, मनुमोतानिकेथार ॥ ११ ॥ सुकसारिकअरुकोकिला, मत्तमधुपकलहंस ॥ नितिअपनीबानीनिसौं, करतहैंकेलिप्रसंस ॥ १२ ॥ हरितकूलजमुनांसरित, कहूंपुलनिमृदुठौर ॥ ठौररहतलषिठौरमति, होतऔरकीऔर ॥ १३ ॥ बृंदावनभुवअंकुरित, सबैंहरितनवरंग ॥ जुगलकमलपदपरसकैं, भईरोमांचितअंग ॥ १४ ॥ हरितभूमिपररतनकी, वारौंअवनिकठोर ॥ द्रुमसोभासमलगतनाहिं, महलजरावकरोर ॥ १५ ॥ प्रभुताकर्कसक्रांतहू, मननलगतअभिराम ॥ कर्नफूलमनिकनकके, मधुकरकैंकिहिंकाम ॥ १६ ॥ हरितअंकुरितभूमिवन, कनकमईहूनित्त ॥ जाहीकोबरननकरैं, जोभावैंजिहिंचित्त ॥ १७ ॥ हरितभूमिनवअंकुरित, निकरसरनिजलजात ॥ बनद्रुमनीकेलगतमोहि, भरेफूलफलपात ॥ १७ ॥ बिपुनकुसमरजधुंधरित, ज्यौंसरपंजरकाम ॥ तहांबिछौनांफूलके, परेरहैंअभिराम ॥ १९ ॥ सदाएकरसबनअवनि, हरितद्रुमनिकीभीर ॥ कुंवरिकमलदलदृगनिकी, चितवनिसींच्योनीर ॥ २० ॥ ऐसेवृंदाविपुनमैं, नितिबिहाररसएक॥ कहूंजथामतितनकही, कौतुककेलिअनेक ॥ २१ ॥

## अथ प्रातसमैं बर्ननं ॥

चौपाई ॥ कछुकभुरहरीसषियांआई ॥ बीनबजायमधुरसुरगाई ॥ कोउकोउहसिडारतहैंफूल ॥ दोउपौढेंइकओढिदुकूल ॥ लटपटायसोवततैंजगे ॥ अरसौंहैंदृगदृगनिमैंपगे ॥ बैठेलपटिलटकिफिरिसोवैं ॥ यहसुषसषीद्रुमनिमैंजोवैं ॥ वहुरिपरसपरदर्पनदेखैं ॥ नि

जमुपलपिनहिंलगतनिमेषैं ॥ पौंछतपियप्यारीकीपलकैं ॥ प्यारी सुघरसंवारतअलकैं ॥ हारबारअरझेसुरझात ॥ तामैंअरझेआपही जात ॥ प्रेमरूपकैंचहलैंफसे ॥ नीठिनीठिनिकसेलजिहसे ॥ आंग नमैंभईठाढीबाल ॥ पवनढुरावतरसिकरसाल ॥ पियरैंपटपौंछतापि यश्रमकन ॥ प्यारीहसततवैंमनहींमन ॥ स्यामकरनिकंचुकीकासि वांधैं ॥ स्यामाचितवनिफिरिफिरिसांधैं ॥ पुनगरबहियांमिलिकैंच ले ॥ आयतबैंसपियनिमैंरले ॥ स्नानकुंजमैंआयेदोऊ ॥ तहांज लटौरऔरनहिंकोऊ ॥

## अथ स्नानकेलि ॥

दोहा ॥ नीरसदनलषिमदनकी, उमगिउठीफिरिफौज ॥ ला जगईतहांताजिमनी, बनीहौजपरमौज ॥ २२ ॥ प्यारीन्हातन्हवा तपियरसलंपटरिझवार॥ भीजेतनलपटांनिको, लेतदोऊसुपसार २३ मंजनकुंजमैंहोतसुख, बरनतबनैंनवैंन॥मौंनहींमैंताकीकहनि, जांन तमनकेनैंन ॥ २४ ॥ भयेजुठाढेन्हायदोऊ, चुवैंछबीलेवार ॥ मनौं स्याममपतूलतैं, मुक्तागिरैंसुढार ॥ २५ ॥ चौपई ॥ भीजेवारब डेछबिदैहीं ॥ दुहूंदिसछुटेवांधिमनलैंहीं ॥ विमलस्वेतपटतनहिंल पेटैं ॥ तामैंछिपतनसुछबिअंगेटैं ॥

## अथ सिंगार ॥

चौपाई ॥ आयेकुंजसिंगारमैंजबैं ॥ जिहिंठांसौंजधरीहैंसबैं ॥ पहिलैंल्याईसपीमहाउर ॥ पियकैंआंनंदबढ्योमहाउर ॥ मुदितला लजवलगेलगावनि ॥ पौंछपौंछपीतांवरपावनि ॥ कंपतकररंगभ

रचोनजाय ॥ रहोरहोकहतकुंवरिमुसक्याय ॥ प्यारीकरतापिछौंहौं पांवहिं ॥ तबपियनैननिहाहापांवहिं ॥ पियझुकिनैननिछ्वावनिला गैं ॥ ढांपतप्रियपगधरतनआगैं ॥ सतरव्हैस्यामभौंहचढावत ॥ त-बप्रीतमइतसींसहिनावत ॥ रंगभरनिमैंबाढ्योरंग ॥ लषिव्हैसापिय निकेदृगपंग ॥ पुनदंपतिमिलिदर्पनदेषैं ॥ करतसिंगारनलगतनिमे षैं ॥ तनप्रतिबिंबैंज्यौंदर्पनमैं ॥ ज्यौंदर्पनप्रतिबिंवततनमैं ॥ दर्प नसेतनतनमैंझलकैं ॥ लषिझलकैंलागतनाहिंपलकैं ॥ सषीसुघरभूप नपहिनावैं ॥ बिचबिचकछुकहिहसैंहसावैं ॥ प्यारीकीवैंनीपियगु हैं ॥ सौंहैंदेषतदर्पनमुहैं ॥ जान्हुदवततबसतरतभामिन ॥ मनुमु रिमिल्योचहतघनदामिन ॥ वैंनीगुहीदिषावैंअंसनि ॥ तबस्यामा हसिकरैंप्रसंसनि ॥ पुनघुरिढुरिअरसायकिसोरी ॥ भुजनिबीचमुष लैकैंगोरी ॥ स्यामहिप्यावैंअधरसुधारस ॥ अतिसुषविवसहोयदोउ रसबस ॥ फिरदोउदेतपरसपरअंजन ॥ कंपतकरानियरेदृगपंजन॥ वैंदीदेताचिबुककरतलयौं ॥ नीलकमलपरअरुनकमलज्यौं ॥ प्या रीनिकटनैंनसकुचाय ॥ होयपिछौंहीमुरिहसिजाय ॥ पुनमुषजोरैं देषिआरसी ॥ सषीलिषीराहिचित्रकारसी ॥ लालमालपहिनावतबा लहि॥ बिचबिचकरतचपलकरचालहि ॥ जवैंहोतलोयनअनषौंहैं ॥ करतकुंवरिभौंहैंसतरौंहैं ॥ कहतकिसोरीकहाकरतहो ॥ कौंनलोभ कैंढारढरतहो ॥ बचनरचनयौंचितवनिसरसनि ॥ करतसिंगार होततनपरसनि ॥ पंदरहाबिधिकोहोयसिंगार ॥ सोसववरनतव्है विस्तार ॥ गउरस्यामछबिरहैंनिहारिकैं ॥ सषीदेतमनवारिवारि कैं ॥ गउरचरननूपरसुषकारी ॥ बांधतबैठिकैंरसिकविहारी ॥

दोहा ॥ ऊंचैंस्यामनिहारिहीं, जैसैंचंदचकोर ॥ नूपरडोरजुरीनहीं जुरीहगनिकीडोर ॥ २६ ॥ जोसुषबढयोसिंगारमैं, वरन्योजातनबैं न ॥ रिझवारानिसषियांनिके, जांनतहैवेनैंन ॥ २७ ॥ इतिसिंगार ॥

## अथ भोजन समैं ॥

दोहा ॥ पुनभोजनल्याईसषी, दईजवनकाडारि ॥ कोजनक बिरसनांइकैं, वहिसुषसकैंउचारि ॥ २८ ॥ मिलिजैंवतदोउदरस रस, रसनांरसबिसराय ॥ गईक्षुधासबउदरकी, रहैंहगनिमैंआय २९ अचवनकरिबीरीजुलैं, सोतोकहतबनैंन॥ पंडषंडमनकेकरै, पंडषंड करिलैंन ॥ ३० ॥ इतिभोजन ॥

## अथ आरती समय ॥

चौपाई ॥ सषीझूमिसबानियरैंआई ॥ दंपतिछबिअं.षियांसियरा ई ॥ दीठलगनकैंकाजेंडरी ॥ तबतिहिंसमैंआरतीकरी ॥ दोहा ॥ रूपआरतीसषिकरैं, लियेंआरतीसाथ ॥ आवैंमनुसउदामिनीलैंसउ दामिनीहाथ ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ रूपरतनदीपकमिलिपुंज ॥ ज गमगायरहैंदर्पनकूंज ॥ बीनमृदंगगानधुनिभोय ॥ मंगलधरीमनो हरहोय ॥ इति आरती ॥

## अथ दुपहरी समय द्वतियकुंज प्रवेस ॥

चौपाई ॥ पुनिकियोगवनतहांतैंप्यारैं ॥ प्यारीकेअंसानिभुज धारैं ॥ जलतटसघनकुंजसुषकारी ॥ चहुंदिसफूलरहीफुलवारी॥ बै ठेतहांआयदोऊसंग ॥ गावतसषीरागसारंग ॥ पियहूगावैंमनहिंलु

भांवैं ॥ प्यारीजूकीरुचिउपजांवैं ॥ बैठीसरकिकुंवारितिहिंबेरी ॥ कछुकतमूरातनहसिहेरी ॥ जथासवैया ॥ गानकियोचहैपाननिपातछुटीलटआननरंगभरचोई ॥ मौंनहींमैंझलकीसुघराईहियेंगुनकोसनसोउधरचोई ॥ पीचितचंचलकौंप्यारीनागरिघेरिअदायनिमैंपकरचोई ॥ लैंनतमूराहीकीमैंलयोमनगायबौधौंरह्योआगेंधरचौई॥३२॥

दोहा ॥ नवलकिसोरीचतुरत्यौं, तैसेचतुरकिसोर ॥ गाननतानरसरहसकी, बहसबढीदोउओर ॥ ३३ ॥ होतरागसारंगधुनि, दंपतिकुंजनवीन॥ बिचबिचगायबजांवहीं, बीननिपरनप्रबीन ॥ ३४ ॥ धीरजपगटहिरैंनहीं,सुरगहिरैंगुनगान॥रागरसासबासिंधुकी, लहिरैंउपजततान ॥ ३५ ॥ कहाबीनजडकोकिला, लागतश्रवनकठोर॥ लहलहातनीकीउठैंतांनानिरंगहिलोर ॥ ३६ ॥ अथ कवित्त ॥ नागरिहसौंहैंमुषसौंहैंबिथरांहैंबारउरजउठौंहैंसोभाहारानिसमेतहैं ॥ मंदसुरगावतसुप्यावतसुधासौंस्यामैंकिधौंमंत्रधुनिमोनकेतकौंनिकेतहैं ॥ अधरनिरंगभरेचौंकाकोचमकिहोतअच्छनितिरीछेतैंकटाछसरदेतहैं ॥ बेरबेरओटदैंतमूराहसिहेरिहेरिफोरिफोरितानानिफिरायेंमनलेतहैं ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ जदपिकहावतहेबहुत, प्यारेस्यामसुजान ॥ पैंइनतैंअतिबढिपरचो, प्यारीजूकोगान ॥ ३८ ॥ कबहुचेतिबलिहारिकहि,कबहूहोतविचेत॥प्यारीतांनतरंगमैं, पियमनवूडक लेत ॥ ३९ ॥ धुकेधरनिकौंसांवरे,ललितागहेसम्हारि ॥ रागरूपकी चोटसौं, गिरैंक्यौंनरिझवारि ॥ ४० ॥ जीतीमेरीस्वामिनी, गुननिधिराधानाम ॥ मीनकेतरसपेतमैं, पोंढेमूर्छितस्याम ॥ ४१ ॥

## अथ रहसकेलि ॥

चौपई ॥ कहैंसषीतबसुनियैंप्यारी ॥ हमसबओटहोतहैंन्यारी॥ यौंकहिउठिललितादिकसषियां ॥ द्रुमनिलगिरहीज्यौंमधुमषियां॥ भुजभरिपियकौंकंठलगाये ॥ अधरसुधारसप्पायजगाये ॥ मग्नभयेदोउरतिरसगहिरैं ॥ कामउदधिकीबाढीलहिरैं ॥ टूटेहारबारबरछूटे ॥ कटितटग्रंथिबसनषुलिफूटे ॥ लटपटायलपटायकैंरहे ॥ रसमसेरूपनआवतकहे ॥ मिलेअधरमिलिबहियांबहियां ॥ सुरतिश्रमनिपौंछैंद्रुमछहियां ॥ कोकिलसुकसारिकमृदुबानी ॥ तिहिंछिनकामकोकहतकहानी ॥ ठीकदुपहरीसुषबिश्राम ॥ पौढेरसनिधिस्यामास्याम॥वहुरिपहरदिनपिछलोरह्यो॥दोऊचलेउठिकरकरगह्यो

## अथ जमुनाकूलकुंजबिहरनि ॥

चौपई ॥ सीतलसमयेजमुनाकूल ॥तहांद्रुमलताझुकीफलफूल॥ सीतलमंदसुगंधपवनतहां ॥ सषियनिजुतदोऊकियोगवनजहां ॥ हसैंहसावैंमिलिमिलिगावैं ॥ फूलनिगहनैंगेंदबनावैं ॥ द्रुमपूरितमधुपनिकीगुंजनि ॥ तहांदंपतिफिरैंकुंजनिकुंजनि ॥ चहुंदिसडोलैंसषीउमहियां ॥ दुहुनिकीबिचिछुटतनगरबहियां ॥ दोहा ॥ फूलेफूलनिस्वेतबिच, अलिबैठेमधुलैंन ॥ दंपतिहितवृंदाबिपुन, धारेअगनितनैंन ॥ ४२ ॥ वनफूलेफूलेजुमन, फूलवेसअभिराम ॥ सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिमिलिगोरीस्याम ॥ ४३ ॥ रंगरंगभूषनफूलके,रहेफूलतनझूल॥ अंतरकीबाहिरसनौं, प्रगटीअंगअंगफूल॥४४॥ मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥ इतउतबाढीदुहुनिमन,

फूलनिबीनतफूल ॥ ४५ ॥ झूमिझुकावतद्रुमलता, उघरतउरउ रमाल ॥ फूलनितोरतदेतफल, मनमोहनकौंबाल ॥ ४६ ॥ धरत प्रियाकेश्रवनपर, लालकुसमकवनीय ॥ बहुरिबलइयालेतपिय, निरषिबदनरमनीय ॥ ४७ ॥ छ्वैंकपोलछबिसौंरहे, नाहिंउपमाको उतूल ॥ हालहालकैंहालमन, करनफूलपरफूल ॥ ४८ ॥ फूल निसौंबैंनीगुही, रचेफूलकेहार ॥ फूलभरेलपटातदोऊ, भुजभरिट्ट ढअंकवार ॥४९॥ लालचलागेबालकैं, संगडोलतहैंलाल॥छुवतजुही केफूलकौं, होतजुहीकीमाल ॥५०॥ दोउलटकिकलहंसगति, निस आगमगतसांझ ॥ आयेबिपुनबिहारकरि, कुंजजुन्हइयामांझ॥५१॥

## अथ कुंजजुन्हइया बर्नन ॥

दोहा ॥ स्वेतफूलफूलेद्रुमनि, फटकमननिकीटौर ॥ बिमलचं द्रिकाजगमगत, तहांमदनकीरौर ॥ ५२ ॥ कुंजसर्बव्यापकभई, अमलजुन्हाईहोत ॥ आईदेषनिसगुनमनु, निर्गुनब्रह्मकिजोत॥५३॥ नवनिकुंजराकारुचिर, अतिसितअमलउजास ॥ लसतफटकफा नूसनभ, बिचससिदीपप्रकास ॥ ५४ ॥ फैलीचमकतचंद्रिका, बि चनिकुंजबनबाग ॥ कतरिस्वेतमुक्केसमनु, रतिपतिपेल्योफाग॥५५॥ छईछिपाछबिदेतछित, पत्रबिपुनइहिंभाय ॥ ससिकारीगररुपहरी, अफसांकियोबनाय ॥ ५६ ॥ स्वेतफूलफूलेलतनि, बिलुलितहीरा हार ॥ जौंन्हओढिपटरुपहरी, कुंजनिकरेसिंगार ॥ ५७ ॥ इति अथ दोहा ॥तहांभोजनकरिमिलिदोऊ, राकारैंननिहारि ॥ वसन रुपहरीअरुमुकट, साजेबहुरिसिंगारि ॥ ५८ ॥ निकसिकुंजटाढे

रहे, आंगनभरेहुलास॥ दंपतिचंदमयूषमिलि, जगमगरहेप्रकास५९ प्यारीमुषपियनिरषिहीं, अमलउज्यारीमांह ॥ तहांचंदकीदीठडारि, करतमुकटकीछांह ॥६०॥ चितैंचंददंपतिबदन, रीझिचंदभयोचूर ॥ छिपाकिधौंवाहिजोतिमय, कुंजनिबिषरचोनूर ॥ ६१ ॥ स्वेतफूल रहेफूलिकैं, उडगनमनौंअमंद ॥ उभयचंदकिरनावली, चहुंदिसजु वतीबृंद ॥ ६२ ॥ ललितादिकसबसहचरी, दंपतिकीपरछांह ॥ रूपचंद्रिकासीपरी, बिमलचंद्रिकामांह ॥ ६३ ॥

## अथ नृतगान सुषसमैं वर्ननं ॥

दोहा॥ तहांपियप्यारीमनकियो, निरषिउजारीरैंन॥ निर्तगान आरंभमिलि, कीजैंसबसुषदैंन ॥ ६४ ॥ रसबिलासनवकुंजसुष, रासकरनिकैंकाज ॥ कितिकसहचरीकरनिलये, अपनेअपनेसा ज ॥ ६५ ॥ बीनतमूराषंजरी, बाजनिलगेसुधंग ॥ एकतालसुर सांचमिलि, मिलिमृदंगमहुचंग ॥ ६६ ॥ बडेबारछबिसौंछुटे, अं सवीनकटिछीन॥ सबरिझवारिनिकेमनौं, मनभरिकावारिलीन ६७ ललिततमूराबालढिग,सोहतहैंइहिंभाय॥समरजीतिदृगसरनिसौं,तर कसलियोछिनाय ॥ ६८ ॥ सषीरूपकीमंजरी, पंजरीटसेनैंन ॥ बजैंकरनिमैंषंजरी, लजैंपरेवाबैंन ॥ ६९ ॥ मुषमृदंगउपमाकछू, यहआवतमनमांहि ॥ दृगपुतरीकैंबैंनभये, रोकेरुकैंजुनांहि ॥७०॥ कटितटिसुंदरवालकैं, हैंमृदंगयाहिंभाय ॥ मनौंलयोरतिमूरछित, दुहुंकरकामउठाय ॥ ७१ ॥ चंगैंमुंहमुंहचंगतिय, बजवतहैंगतिका र ॥ बैठ्योकमलदरारिविच, मनुअलिकरतगुंजार ॥ ७२ ॥ चौप

ई ॥ येबादित्रमिलेसबइकधुनि ॥ अतिरसउमग्योदंपतिमनसुनि ॥ गानकियोमिलितानविधाननि ॥ पैठिपैठिछुयअवतप्राननि ॥ सहचरिचहचरिचहुलमचाई ॥ गानरंगवरषावरषाई ॥ नितसुधंगरंगबढ्योभारी ॥ दुहुंदिससषीबीचपियप्यारी ॥ उततैंस्यामाइततैंस्यामहि ॥ लईपरसपरगतिअभिरामहि ॥ हस्तकभेदग्रीवकीढोरनि, मृदुमुसकनिभौंहनिकीमोरनि ॥ रससागरसंगीतहिलोरैं ॥ सषिनिकेमननैंनानिझकझोरैं ॥ हावभावमैंथहनपावैं ॥ गतिकौतकगतिमतिबिसरावैं ॥ दोहा ॥ नूपरकंकनकिंकिनीं, बहोबादित्रप्रकार ॥ चल्योझमकिझंकारमिलि, पायनिगतिबिस्तार ॥७३ ॥ चितैंचितैंचपलातवैं, सीषनिकौललचात ॥ लगेलंकललनांतवैं, अलगलागलेजात ॥ ७४ ॥ फुरतहरवईपगनिकी, नांचतयौंदरसाय ॥ सकैंतोलालाफूलपर, बालागतिलेजाय ॥ ७५ ॥ चतुरसिरोमनिभांवती, अतिगतिलेतसुधंग ॥ पियकेमनलोचनफिरैं, अरुझेपायनिसंग ॥ ७६ ॥ ज्यौंज्यौंनिर्तभांवती, करिकरिटेढीभौंह ॥ त्यौंपियटेढहोतहैं, एरीतेरीसौंह ॥ ७७ ॥ उरपलेतप्यारीतवैं, पियमनउपजतसंक ॥ लचकेजातहैंप्रानउत, जबइतलचकतलंक ७८ बैनीचलानितंबपर, छनकछलाअंगुरीन ॥ नचैंचंचलासीकला, कोबिदप्रियाप्रबीन ॥ ७९ ॥ लाललेतउरलायलपि, रीझैंगतिरसरसानि ॥ मंडलमैंसुरझैंनहीं, अंकमालउरझांनि ॥ ८० ॥ गरबांहियांगतिलेतमिलि, श्रमबससिथलतपाय ॥ डारेमनलैंसषिनिके, डगमगडगनिडुलाय ॥ ८१ ॥ उतउरझीकुंडलअलक, इतबेसरिबनमाल ॥ बहियांबहियांसौंअरुझि, अरुझेनैंनबिसाल ॥ ८२ ॥ लेत

वलइयारीझिदोऊ, दोऊपौंछतश्रमबारि ॥ नचतसनीअतिरंग सौं, वनीमदनमनुहारि ॥ ८३ ॥ उतैंझुकौंहौंनवमुकट, इतैंचंद्रिकाचार ॥ भयेरासरसमग्नतन, सरकेसकलसिंगार ॥ ८४ ॥ पूटिपूटिअंचररहे, छूटिछूटिरहेवार ॥ श्रमितरासरसरंगमैं, टूटिटूटिरहे हार ॥ ८५ ॥ कहतकहतकहांलगिकहैं, कविमतिमंदप्रकास ॥ तिनकेभौंहविलासमैं, कोरिकोरिव्हैरास ॥ ८६ ॥ इति नृत्तगांन ॥

## अथ निभ्रतनिकुंजरहसि बिहार सैंन समय ॥

चौपई ॥ निर्तषेदतनव्हैंरसमसे ॥ गउरस्यामगरवहियांलसे ॥ उरझेतनमनप्यारीपीयहि॥आयेनिभृतकुंजसयनीयहि ॥ सेवतकोरिककामनिवास॥महकिरहीजहांफूलनिवास॥रससंपतिदंपतितहांलूटी॥ लाजगढोदृढतिहिंछिनटूटी तनउरझेउरझेहैंनैनानि ॥ गउरस्यामउरझेरसबैंनानि ॥ अधरउचयसैंननिदैंआछें ॥ अधपुलिअंषियनिकरतकटाछैं ॥ छुटैंकेसश्रमकनिमुषझलकें ॥ लोयनमांझकामरसललकैं॥ गरवहियांमुषमुषपरझुकें ॥ प्रेमविवसरसमननाहिंरुकैं॥ आधेआधेनिकसतबैंन ॥ चढ्योमहामादिकमनमैंन ॥ कंपतअंगहोतसुरभंग ॥ छिनछिनवाढतरंगअनंग ॥ दुहुंदिसबाहुकसनिसौंकसे ॥ अधरबिंबअधरनिबिचवसे ॥ अतिरसवससुषतंद्रालगी ॥ अधपुलिदीठदीठमैंपगी ॥ कछुसीकरैंकरैंभुवभंग ॥ अंषियनिलगिअंषियांव्हैंपंग ॥ चनकमूंदद्रुमकुंजउछीर ॥ सोरकरताकिंकिनिमंजीर ॥ सवरतिसुषकहिसकतनवैंना ॥ पंगहोतलषिमनकेनैंना ॥ दोहा ॥ उरझेहारसिंगारमैं, लषिअंषियांउरझांहिं ॥ सुरझैंतनसुषसुरतसौं, पैंमनसुरझैंनांहिं ॥ ८७ ॥

## अथ निज मन प्रति प्रीतमउक्ति सुरतांत समय ॥

कबित्त ॥ छीनकटिछूटेबारआयेफैलिआननपैआधेसीससीस फूलवैनांझुकिगोमहा ॥ टेढीभईबेंदीहारसरकोसिंगारलपिमोहूसौंव्है न्यारेमेरेलोयनकरेंहहा ॥ नागरियास्वेदमुषअरुनईपियराईआई अबकैसेनैनसिथलहुरैअहा ॥ रूपहैंकिदौरीहैंकिनैननिठगौरीहैकि सुपनौकिसंभ्रमकिसांचहैकिहैंकहा ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ जुरैंजुरैंफिरि हसिमुरैं, घुरैंढुरैंरहिजांहिं ॥ लोयनलहिरैंनिरषिपिय, धीरजठहिरैंनां हिं ॥८९॥ अरसांनैंघूमतझूकत, सरसांनैंछविऐंन ॥ विहसिढुरांनैं पीयपैं, नीदघुरांनैंनैंन ॥९०॥ जबपलआवैंझुकतपिय, दर्पनदेतदि षाय ॥ तबअपनीअंषियांनिपैं, अंषियांरहतलुभाय ॥ ९१ ॥ नींद भरीपलनिरषिपिय, देतहैंपानबनाय॥ उतनैंननिकैंषुलतहीं, इतवीरी छुटिजाय ॥९२॥ भौंरनिवारतबदनलपि, मनधनवारतजात ॥ फूं किजगावतलालतव, षुलैंनैंनमुसक्यात ॥९३ ॥ सषीलपैंढुरिद्रुमानि मैं, व्हैरांहिचित्रसरीर॥निसउनदोहैंद्दगनिपैं, भईद्दगनिकीभीर॥९४ अरसांनीनिरषतप्रिया, जाततिहांनारैन ॥ नैननिलपिपियकेंभये, रौंमरौंममैंनैंन ॥ ९५ ॥ धरैंचिवुकतरहाथद्दग, देषतनींदषुमार ॥ लगेरूपकेरहचटैं, नहिंपोढतरिझवार ॥ ९६ ॥ लषिउरझेसुरझेंन हीं, सवनिसगईबिहाय ॥ आरसउरझेद्दगनिमें, पीयरहेउरझाय ९७

## अथ सैनसमैं ॥

दोहा ॥ रहीरैनथोरीजवैं, सोयेगोरीस्याम ॥ नागरिसपिसहरां वहीं, चरनकमलअभिराम ॥९८॥ एकैंस्वेतदुकूलविच, पौढेलगि

लपटाय ॥ सुपज्ञोंनैंबदरातरैं, हैंससिसेदरसाय ॥ ९९ ॥ चनकमूं दभइनोदवस, कुंजज्जुन्हइयामांहिं ॥ बाललालतनपरलसी, पातनि कीपरछांहिं ॥ १०० ॥ कियोदोऊसुपसैंनजहां, छुटीछिपातहां आनि ॥ ढरानिलग्योजवचंद्रमा, सूचतसमैंबिहानि॥१॥ इतिसैन ॥

## अथ कविबचन ॥

दोहा ॥ यहवृंदाबनयहसमैं, यहदंपतिकीप्रीत ॥ नागरियाकैं हियबसो, नितिविहाररसरीत ॥ २ ॥ उचितनहींकहनींइती, रह सकेलिरसकाम ॥ नागरियाकौंदोसकहा, प्रेरकस्यामास्याम ॥ ३॥ श्रीराधेकीजैंकृपा, चहतनागरदास ॥ अपनैंवृंदाबिपुनको, देहु वाससुपरास ॥ ४ ॥ सतरासैंचौरांनवां, पून्यौंअगहनमास ॥ ग्रंथ निकुंजबिलासयह,कियोनागरीदास॥५॥इतिग्रंथनिकुंजबिलाससं०

## ॥ अथ गोविंद परचईलिष्यते ॥

रागकालहरो॥तिताल॥श्रीवल्लभसुतबिठलराय॥जिनकोसुजसजग तरह्योछाय॥गोविंदस्वामीतिनकोदास॥गिरगोवर्द्धनवाकौबास॥गुरु विठलवलकृपाअछेह॥गिरधरसंगपेलनइंहिंदेह॥कृपाकछूआवतनहिं कही ॥ मुक्तसमीपइंहींतनलही ॥ एकदिवसगोबिंदबनमांह ॥गयो दिसाआकानिकीछांह ॥ जग्यभूमिहारिआवतनहीं ॥ बहिर्भूमिचलि आएतहीं ॥ उतगोविंदइतनंदकुमार ॥ अकडोडिनिकीमांचीमार॥ गोविंदसौंहैंकरैंचोट ॥ लगैंस्यामकैंतनाबिनओट ॥(जहां)॥ नाग रीदासपेलीहितहोय ॥ लघुदीरघतागनैंनकोय ॥ १ ॥ एकदिवस गोविंदगोपाल ॥ गिल्लीडंडापेलतप्याल॥ दावमारिभाजेदिसधाम॥

पाछगोबिंदआगैंस्याम ॥ पैठ्योगोविंदमंदरिमांझ ॥ जहांआरती समयोसांझ ॥ दौरिदईगिल्लीकीजाय॥ काढ्योलोगानिपकरिमुक्या य ॥ परानिलगेझापटकेझुंड ॥ गयोगोबिंदागोविंदकुंड ॥ वैठ्योरू सिअकेलोजाय ॥ इतगिरिधरभोजननहिंषाय ॥ कह्योगुसांईसौं लाडिलैंलाल ॥ लैंआवोगोविंदाग्वाल ॥ नौंठमनायलैंआयेताहि ॥ मंदरिमांहिंमूंदिदयोजाहिं ॥ नागरमिलिभोजनकियोमीत ॥ प्रीत कैंआगैंरहतनरीत ॥ २ ॥ इकदिनभोरसमैकीबार ॥ जायभींतरि यनकरीपुकार ॥ श्रीगोस्वामिसुनौंकरिचेत ॥ यहगोबिंदाजीवत प्रेत॥हैंअपराधीपठवोगंग ॥ आजुकरीमजोदाभंग ॥ छलसौंछिपमं दरमैंआय ॥ गलीबीचदुरिबैठ्योजाय ॥ आवतलीनौंभोगउतार ॥ बीचअमनियांषायोथार ॥ ताडनिकोमान्यौंनहिंत्रास ॥ बिनचाव हीनिगलेग्रास ॥ पूछ्योवाकौंपकरिमंगाय ॥ जबवहिकहिदइसबनि सुनाय ॥ भोरसमैंगिरिधरबनजात ॥ हौंफिरौंसंगभूषोबिललात ॥ यहसुनिकैंहियलयोलगाय ॥ कृपासिंधुश्रीविठ्ठलराय ॥ नागरीदा सप्रीतहियमांहिं ॥ रहनिदेतमर्जादानांहिं ॥ ३ ॥ इकदिनआयो गोबिंदग्वाल ॥ मंदरमेंजहांगिरधरलाल ॥ टेरादूरकियौंजिहिंवेर ॥ रह्योमाधुरीइकटहेर ॥ देषीपागियांसूधीसीस ॥ उपजिपरीमनमैंअ तिरीस ॥ चारविचाररह्योचितनांहिं ॥ दौरिकैंपैठ्योमंदरिमांहिं ॥ पागियांमोरिदईलैंगारि ॥ परिगइझटपटझापटमारि ॥ रूपलपेटमां हिंजोपरयो ॥ सोकबहूनकाहूतैंडरयो ॥ मानतसुपजारिबेकोअंग ॥ दीपकपरज्यौंपरैंपतंग ॥ जायनगह्योनआवतकह्यो ॥ रूपअमल जाकौंचढिरह्यो ॥ इंहितनसपादुतियतनसषी ॥ निितिदेषतलीलाम धुमषी ॥ नागरीदासभएइंहिंभाय ॥ जेअपनायेश्रीविठ्ठलराय ॥ ॥ ४ ॥ इतिश्रीगोविंदपरचईसंपूर्ण ॥

इति
सिंगारसागर समाप्त ॥

श्रीः

# नागरसमुच्चय।

तत्रादौ

## पदसागर प्रारंभः।

अथ कृष्णगढाधिपति श्रीमन्महाराजाधि
राजमहाराजाजी श्री श्री श्री १०८
श्री श्री सावन्तसिंहजी द्वितीय हरि
संबंध नाम नागरीदासजी कृत,

ताकौं

मुंबईमें.

ज्ञानसागर छापखानेमें

छापके प्रसिद्ध किया.

# श्रीराधाकृष्ण प्रसन्न.

श्रीः ।

# अथ पदसागर प्रारंभः ।

## बनजन प्रसंसग्रंथ पदप्रबंध लिष्यते ।

### प्रथम श्रीबृंदाबन स्तुति बर्ननं ॥

॥ श्रीराधाकृष्णौजयति ॥ चर्चरी ॥ जयतिवृंदाविपनबिस्वबंदनमहीमहिमाअद्भुतनिगमगाजगाजैं ॥ बनानिबनराजब्रजराजसुतप्रियतहांसहजसुषनित्तरितुराजराजैं ॥ कथतश्रीमुषकथाकृष्णबलप्रतिजथाफूलफलझूंमिछबिछाजछाजैं ॥ कोसदसदोयअनुरागरैंनीरचीपरसिमनबिरंगताभाजिभाजैं ॥ दासनागररंगवागराधासदानिरपिहगकामरतिलाजलाजैं ॥ १ ॥ तथा पद ॥ धनधनश्रीगुरुदेवगुसांईं ॥ वृंदावनरसमगदरसायोऊवटबाटछुटाईं ॥ भूलेहेबहुतेजनमनकेफिरतअंधकीनाईं ॥ नागरीदासबसायेकुंजनिसबैंछुडायदांहिनीबांईं ॥ २ ॥ धन्यधन्यहैंजोईपुरान ॥ ताकैंमध्यश्रीवृंदाबनकीकथापरमसुषदान ॥ बिनवृंदाबनबानीमेरैंकबहुपरोजिनकान ॥ नागरब्रजवृंदाबनबिनकोनहींभावतभगवान ॥ ३ ॥ धनधनवृंदावनयहनांउ ॥ सबतत्तनिकोसाररसाररसुषपरमपियारोटांउं ॥ सोवतसुपनैंनितिनिसबासुरयाहीकौंनितिगांउं ॥ नागरियाजाकैंसुषप्रगटैंतासुषकीबलिजाउं ॥ ४ ॥

## अथ समस्त वृंदाबनबासी प्रसंस ॥

पद॥ धनधनवृंदाविपुनगुसांईजेते ॥ जिनदछ्यासिछ्याकरकैंनर हरिसनमुषकियेकेते ॥ परमपुनीतपूज्यकुलसवकैंकृपाभक्तिफलदेते ॥ नागरभएरुहैंअवहौंनैंसबजगबंदिततेते ॥ ५ ॥ धनधनवृंदाबनकेसंत ॥ कहाबिरक्तकहाकुंजनिवासीवडडेमहामहंत ॥ जिनसुदेसउपदेसनितैंवनवसिरहैंलोगअनंत ॥ जहांतहांऊसरतैंसरकीनैंनागरियारसवंत ॥ ६ ॥ धनधनवृंदाबिपुनबिरक्त ॥ संग्रहभजनकियोतजिसंग्रहछांडिवांतज्यौंजक्त ॥ कृष्णकथामकरंदकेमधुकरवृत्तिआसक्त ॥ नागरफिरतछौंनतनकुंजनिभयेपुष्टहरिभक्त ॥ ७ ॥ धनधनवृंदावनकेकुंजनिवासीसाध ॥ हरिगुरुसनिसेवनिसंग्रहउच्छवकरतअगाध ॥ सवनिदेतबिश्रांमधामवनमेटततनमनव्याध ॥ नागरीदासलेतएसवसुपहरिराधाआराध ॥ ८ ॥ धनधनवृंदावनके महामहंत ॥ वृंदावनअधिकारभारभरभक्तिकृपाउलहंत ॥ वृंदावासिप्रतापतेजअनमांनरानिकरनवांवैं ॥ उपदेसकनृपसिंधमदंधनिवृंदावनदरसावैं ॥ सर्वोपरवृंदावनदिग्गजमहतसभासमुदाय ॥ नागरीदासवासवृंदाबनरहेनिसांनबजाय ॥ ९ ॥ धनधनवृंदावनके पंडित ॥ विद्यावंतबोधदानतीरथमैंदेतपरमगुनमंडित ॥ परमारथस्वारथकोसंपतसंचितहियेअपंडित ॥ नागरभयेकितेनरइनतैंदोऊलोगअपंडित ॥ १० ॥ धनधनवृंदावनकेबक्ता ॥ उपदेसकहरिबिमलभक्तिकेपरमप्रेमअनुरक्ता ॥ तुलसीवनअमृतरसलीलाश्रवनद्वारलैप्यावैं ॥ नागरीदासरसिकश्रोताजेअलिमकरंदलुभावैं ॥ ११ ॥

धनधनवृंदाबनकेकबिजन ॥ वृंदाबनकीलीलाबरनतवाहीमैंनितर हैलग्योमन ॥ रचतरुचिरअतिअच्छररचनांजथारूपदरसावैं ॥ देव वांनीतैंब्रजबांनीकरिश्रवनसुधासोप्यावैं ॥ हरिलीलासास्त्रभाजन केद्रवीहैंसबलोग ॥ इनहींतैंनवरसबिंजनकेकरतरासिकजनभोग ॥ इ नबिनसबहीकोरेरहतेगतरसरूषीछाती ॥ इनबिनदंपतिरससंपतिकी नहिंप्रवीनताआती ॥ एतुलसीबनबसिकुंजनिमैंकुजकेलिविस्तारैं ॥ नागरीदासभागइनकेकौंकहांलगिकोऊउचारैं ॥ १२ ॥ धनधन वृंदाबिपुनगवइया ॥ तांनतालबंधांनगांनमैंजुगलरूपदिपवइया ॥ मनलैंनीबांनीपैंनीकेसरअमोघचलवइया ॥ भजनकरनचितहरन चतुरअतिहियैंभावभरवइया ॥ नागरीदासप्रकासिकउच्छवनैंनानिनी रढरवइया ॥ १३ ॥ धनधनवृंदाबनकेदुजवर ॥ एकसंपअरुपीर भरेपुनिराषेयारजमैंधर ॥ सबैंपूजिबासीतीरथमैंपावनकरताघरघर ॥ जमुनांतटजमुनांकेजाचिगनागरीदाससुघरनर ॥ १४ ॥ धनधनवृं दावनकेलिषिया ॥ जिनउत्तमलेषकव्रतधारीसुंदरअक्षरानीसिपिया ॥ सहजसिमटिकैंरहैंनैंनमनचंचलताछुटिजाय ॥ हरिगुनकथालिष तहींतिनकौंसबदिनजातबिहाय ॥ सिद्धिकरनपरमारथस्वारथवासि तुलसीबनमांहीं ॥ नागरीदासभागइनकोकोउबरनसकतहैंनांहीं ॥ ॥ १५ ॥ धनधनवृंदाबनकेतिलकिया ॥ भक्तिचिह्नमुषछापरचित करपरमपुनीतामिलकिया ॥ बैठतघाटघाटपरसहजहींचितवतरूप चिलकिया ॥ नागरियाजजमांनश्रीजमुनांलैंहरिनामकिलकिया ॥ ॥ १६ ॥ धनधनवृंदावनकेभाट ॥ राधाकृष्णजनमउच्छवमैंपढतबं सकेठाट ॥ ब्रजबासनिकेजसकौंबरनतनहिंबरजतबैराट ॥ नागरी

दासवडेघरकेएकौंनकरसकैंनाट ॥ १७ ॥ धनधनवृंदाबनमहाडुकारि
या ॥ निर्बिकारनिर्दूसततनव्हैंअतिक्रसकूबसुकारिया ॥ पूसमासमैं
जमुनांन्हावैंडरतनहींमरवेसौं ॥ कालहुकोबसचलतनतिनपैंपरमभ
क्तिकरवेसौं ॥ लैलठियाकरकटिनवायकैंवडेभोरहीधावैं ॥ च्यारकों
सपरकर्मादैंकैंनितिनागरघरआवैं ॥ १८ ॥ धनधनजेवृंदाबनवाई॥
तिनकौंश्रीराधाकरुणाकरअपनैंबागबसाई ॥ दंपतिगांवैंजमुनांह्वा
वैंतनलोईलपटाई ॥ कथाकीरतनदरसनकैंहितरहनितनागरमंडरा
ई ॥ १९ ॥ धनधनबृंदाबनकेबजाज ॥ मोटेमिहींपटनघटढांपत
रापतसबकीलाज ॥ बिग्रहरूपजुगलकैंतनमैंसृढुतनजेबिसाज ॥
नागरीदासवासकुंजनिकरकरतआपनौंकाज ॥ २० ॥ धनधनवृं
दाबनकेमोदी ॥ जिनआसाजात्रीआवैंलेतजिनसभरिगोदी ॥ इन
तैंसहवासीसुपपावैंसबकौंअनधनदेत ॥ क्षुधितनरहनदेतहैंकाहूदया
मयाहियहेत ॥ इनहींतैंहैंचहलपहलह्यांइनहींतैंआनंद ॥ नागरीदा
सवसायेइनकौंश्रीबृंदाबनचंद ॥ २१ ॥ धनधनवृंदाबनकेमधुमयत
ईचढनियां ॥ बिबिधिभांतिकेमधुरपाकवेरचतहैंभोगअमनियां ॥
गूंझागूंदीमोदिकमठरीषाजापुरमापासे ॥ रसढुरकीसुरकीरुजलेवी
पूवापुरीपतासे ॥ सक्करपारेपेरेमिश्रीमावामोहनभोग ॥ पांड़पिलौ
नांपांडसठेलीबालबिनौदीजोग ॥ फैंनीमधुरतृकौंनसुहारीसेतगुला
बीघेवर ॥ षिलौपिजूरपूरिघृतपावैंरेवंतीकोदेवर ॥ मौंजीपाकचि
रौंजीपाकपेठापाकनये ॥ तिनगनीतेजइलाचीदांनेपरसुगांधितठये ॥
फुलीफुलोरीसेवसलौंनीगरमागरमकचोरी ॥ बरनौंकहानिकाईतिन
केदरसनमांझठगोरी ॥ इत्यादिकसुंदरसामग्रीसबमंदरनिपठावैं ॥

नागरीदासदासअतिरुचिहिंउंहिंप्रसादकौंपावैं ॥ २२ ॥ धनधनवृंदाविपुनकसेरा ॥ बडेपात्रपात्रनकौंदेंहींकरकरअमलउजेरा ॥ सबकोधर्मचलतइनहींतैंझांझनिरवझनकेरा ॥ नागरीदाससौंजसेवाकीबरनतसांझसवेरा ॥ २३ ॥ धनधनवृंदाविपुनपसारी ॥ तिनकीसौंजमंदिरनिपहुंचैंसहबासनिसुपकारी ॥ केसरअगरओचंदनवंदनहरितनलेपलगावैं ॥ मिरचलवंगमसालेनांनांभोगनिमांझमिलावैं ॥ अंगरागअरुरसनापोपकसबरोगनकेहंता ॥ नागरीदासवसतबडभागीजहांराधिकाकंता ॥ २४ ॥ धनधनवृंदाबनकेवैद ॥ साधसंतकोतनदुषमेटतमेटषाटकीकैंद ॥ स्वारथमैंपरमारथकरहींभेषजकैंउपचार ॥ नागरीदासनहींसमइनकैंस्वर्गअश्वनीकार ॥ २५ ॥ धनधनवृंदाविपुनष्वांनचावारे ॥ हरिउच्छवमेलामंगलमैंलगतसवनिकौंप्यारे ॥ षटीमीठीटूंगसलौंनीथैलनिभरिभरिलेत ॥ नागरीदाससाधसंतनकीरसनाकौंसुपदेत ॥ २६ ॥ धनधनवृंदावनकेचतुरतमोरी ॥ तिनकीबीरीभोगलगततहांगउरस्यांमकीजोरी ॥ सबकैंरंगरचतइनसौंजहांउच्छवमंगलगान ॥ तहांप्रसादीपावतहैंवडभागीनागरपान ॥ २७ ॥ धनधनवृंदावनकेमालीमालनि ॥ उच्छवभवनद्वारसोभितएकरफूलनिकीडालनि ॥ इनहींतैंरचनाफूलनिकीफूलनहरषउछालनि ॥ मंगलरूपावृंदावासीनागरभागविसालनि ॥ ॥ २८ ॥ धनधनवृंदावनकेवारी ॥ इनकौंकलपवृच्छपत्रनकीदेतजीवकाभारी ॥ रुचिररचतपनवारेदौनासाधनकौंसुपकारी ॥ नागरीदाससुफलकरकीयेबडेभागव्रतधारी ॥ २९ ॥ धनधनवृंदावनकेरांज ॥ करनीबलकुंजनिकीरचनांकरतपरमसुभकाज ॥ निसकर

मांहरिमंदिरकेबांधतश्रीजमुनांपाज ॥ नागरीदासलियैंगजवाजीनि तरहैंजुरेसमाज ॥ ३० ॥ धनधनवृंदाबनकेसुनार ॥ जुगलरूपसे वाकेभूपनदेतहैंसदासंवार ॥ काजइहांकोबडभागनतैंद्योतिहैकर तार ॥ नागरीदासबसततहांतिनकीमिहिमाकोनहिपार ॥ ३१ ॥ धनधनवृंदावनकेतेली ॥ तिनकोनेहप्रकासतघरघरदिनगतजोति नवेली ॥ हरिमंदिरनितीरजमुनांकैंदीपगपुन्यबढावें ॥ नागरीदास महातमइनकोकोऊकहांलगिगांवैं ॥ ३२ ॥ धनधनवृंदाबनकेगंधी कुंजगलिनकौंकरतसुवासतसंगअलिफिरतमदंधी ॥ सेवास्यामास्या मसेजसुषसदासुगंधसुबासे ॥ नागरइहैबसायेदंपतिवृंदाविपुननिवा से ॥ ३३ ॥ धनधनवृंदावनकेदरजी ॥ सिसरहेमरितुकारनअपनें विपनवसायेहरिजी ॥ होततनसुपीतीरथबासीइनकेहाथनिकरजी॥ नागरनिपुनफारकैंजोरत ॥ पटरचनाकेघरजी ॥ ३४ ॥ धनधनवृं दावनकेजोटेरटेरफलदेंहीं ॥ अंबअनारजंबूनींबूपिरनीरसअमृतमें हीं ॥ आडूसफतालूरुफालसेकेलापुनिअंजीर ॥ कुंजगलिनमेंटेरत डोलतसुनिसिसुहोतअधीर॥स्यामास्यामप्रेरमनजनकोफलनिपिया रेपावैं ॥ नागरीदासभागइनकोकोऊसुकविकहांलगिगावैं॥ ३५ ॥ धनधनवृंदावनकेपटुवा ॥ रसिकजननिकेपोवतमालाकंठीबटुवा ॥ पाटस्यामअरुपीतकनकरंगरचनांरुचिरसंवारे ॥ ब्रजभूषनकेभूषन साजतनागरभागअपारे ॥ ३६ ॥ धनधनवृंदावनकेरंगिया॥ मनमो हनकोफैंरंगहांउतकोसारीअंगिया॥ वरषाव्याहगृहस्थतरुनजनपट घटरंगेसुरंग ॥ यावनकोरंगसर्वोपरइचनागरबिबिधिप्रसंग ॥३७॥ धनधनवृंदावनकेग्वार ॥ गऊचरावतजहांचराईमोहननंदकुंवार ॥

गोरजगंगान्हातन्हातपुनजमुनांजातहैंपार ॥ त्रिपुनवासदइटहलगउ नकीनागरपरमउदार ॥ ३८ ॥ धनधनवृंदाबनकेकोली ॥ सबही मैंअतिआनंदकरताइनमृदंगत्रितजोली ॥ लेतबजायनौछावरिहरि कीअरुप्रसादभरिझोली ॥ नागरियाइहैंमिलकदईकोरिजनमोत्सव अरुहोली ॥ ३९ ॥ धनधनवृंदाबनकेनाई ॥ संतजननिकेभद्रहेतए बसतयहांसुपदाई ॥ सैंनबंसपांवनकियोबनबसिबरनौंकहानिकाई॥ नागरीदासदासदासनिकेभलीटहलइनपाई॥४०॥धनधनवृंदाबनके बढई ॥ हरिसिंघासनसंतपावरीतिनकौंनितिप्रतिगढई॥ रचतकपाट कुंजकीरिच्छाबडेद्रुमनिकेनाई ॥ नागरीदासकहांलौंकहियैंइनकी भागबडाई ॥ ४१ ॥ धनधनवृंदाबनकेकुम्हार ॥ वृंदाबनरजजीव नाजिनकेवृंदावनरजसार ॥ वृंदाबनरजतनमंडितरहैंमनरजलगत सुप्यार ॥ वृंदावनरजभाजनलैंसुपनागरलहतअपार ॥ ४२ ॥ धन धनवृंदाबनकेचुहरा ॥ तिनकीसमताआदिसापमैंकहतहैंलोकसमूह रा ॥ बेचतसूपधूरधूसरतनगलियांझारतभले ॥ नागरीदासबसतया भूमैंसंतसीतसोंपले ॥ ४३ ॥ धनधनवृंदाबनजेबसैं ॥ न्यारेन्यारे कहाबरनौंसबस्वर्गमुक्तकौंहसैं ॥ कहाआयककहाजायकहांकेअति वडभागीलसैं ॥ नागरएदेपतऔरनकैंपापसकलतननसैं ॥ ४४ ॥ धनधनवृंदाबनजेआवैं ॥ सुंदरकरतप्रीतसंतनसोंनितिप्रतिनौंताजि मावैं ॥ मनबचक्रमसौंसेवतसाधनचरननिलगिलपटावैं ॥ नागरीदा सभागतिनकोकोऊकहांलगिबरनसुनावैं ॥ ४५ ॥ धनधनवृंदाबन जिनकोमन ॥ वृंदावनहितितरफतव्याकुलपरबसदूरधरयोतन ॥ वृं दाबनकोध्यानहियेमैंवृंदावनकौंगावैं ॥ वृंदाबनबासिनसौंनागरप्रे मपुलकिलपटावैं ॥ ४६ ॥

## अथ इनबृंदावनबासीनिके ब्यौहारसहायक बर्ननं ॥

धनधनबृंदाबनब्यौहारकेरच्छक ॥ राजाहाकिमधर्मसहायकब नबासिनिकेपच्छक ॥ बृंदाबनकीनांवछापसिरपूरबपुन्यप्रतच्छक ॥ नागरीदाससबनिसौंसूधेंदुष्टनिकौंनाहरसेभच्छक ॥ ४७ ॥ धनध नबृंदाबनकेभूमियांलोग॥जैसेंबारबनीकांटनकीरचेस्यामत्यौंरछ्या जोग॥ ह्यांहींउपजपपतहैंह्यांहींअनतजायनहिंकरैंवियोग ॥ नागरी दाससुषीयारजमैंतिनकैंदूधदहीकेभोग ॥ ४८ ॥

## अथ पसुपच्छी जंतु बर्ननं ॥

धनधनबृंदाबनकीगइयां॥ बृंदाबनमैंचरतहरेतृणबृंदाबनकीछइ यां ॥ बृंदाबनगोपालफिरेसंगजिनकीजगतप्रसंस ॥ एसुरभीबृंदाबन कीसोहैंउनहींकोअंस ॥ बृंदाबनमैंबसतनिरंतरबृंदाबनजनछीवैं ॥ नागरबडभागीसोइनकोदूधप्रसादीपीवैं॥४९॥ धनधनबृंदाबनकेबां दर ॥ अपनेंभुजबलभोजनकरहींमांगतनहींपायनपर ॥ गोपिनके घरवालकेलमैंलियैंफिरेगोपाल ॥ माषनचोरपवायोमांषनअरुपक वानरसाल ॥ तिनकौंवंसवसतएकुंजनकुंजकलपद्रुमध्यावैं ॥ नाग रियानितअनायासहीमनवंछितफलपावैं ॥ ५० ॥ धनधनबृंदाबन केस्वान ॥ संतसीतकीकरैंजीवकाजमुनांजलकोपान ॥ कुंजद्वारचौ कीमैंचौकसइहिंरजकरतसनान ॥ नागरियाजेबिमुखमनुषहैंतेइनके नसमान ॥ ५१ ॥ धनधनबृंदाविपुनविलइया ॥ महाप्रसादछलसौं छिपिलैहींघरघरकीजुहिलइया ॥ ह्यांउपजतअरुलीनहोतह्यांवाहि रनहिंनिकलइया॥ नागरियाजेजंतहांकेसबतनरेणमिलइया ॥५२॥

धनधनवृंदावनकेगदहा ॥ चूंनमाटीईंटकेढोहकसाधनकेसुषसध हा ॥ हरिमंदिरअरुकुंजवाटसवइनाहिंपीठनिवनें ॥ नागरएपरमार थीपूरेयादुर्ल्लभरजसनें ॥ ५३ ॥ धनधनवृंदावनकेकाग ॥ मापनचो रकेकरतैंरोटीलैभाजैंबडभाग ॥ कुंजनिमांझवसेरोकरहींकुंजनिसौं अनुराग ॥ नागरषेसुभवोलतहैंनितिसंतसौंलाग ॥ ५४ ॥ धन धनवृंदावनकेपच्छी ॥ कोयलकीरकपोतकोकिलामोरचकोरानिल च्छी ॥ वोलतकलवांनीकुंजनिमैंदंपतिकेमनभाए ॥ नागरानित्तवि हारजुगलकैंकविरसिकनिएगाए ॥ ५५ ॥ धनधनवृंदावनकेजंत ॥ छोटेमोटेकहांलगिवरनौंतिनकीजातअनंत ॥ उपजतषपतइहांएई सबअधिकारीहोंनेंहैंअंत ॥ नागरीदाससकलवडभागीजेंइहरेणवसं त ॥ ५६ ॥ कितेदिनाबिनवृंदावनषोये ॥ योंहींवृथागएतेअवलौंरा जसरंगसमोये ॥ छांडिपुलिनिफूलनिकीसज्जासूलसरानिपरसोये ॥ भीजेरसिकअनन्यनदरसेविमुषनिकेमुषजोये ॥ हरिविहारकीठौररहे नाहिंअतिअभाग्यवलवोये ॥ कलहसरायवसायभिठारीमायारांड विगोये ॥ इकरसह्यांकेसुषताजिकैंह्यांकभूहसेकभूरोये ॥ कियोनअप नौंकाजपरायेभारसीसपरढोये ॥ पायोनहींआंनंदलेसमैंसवैदेसटक टोये ॥ नागरीदासबसेकुंजनिमैंजवसवविधिसुषभोये ॥ ५७ ॥ कृष्णकृपागुनजातनगायो ॥ मनहूंनपरसकरिसकैंसोसुषइनहींदृग निदिपायो ॥ गृहब्योहारभुरटकोभारोसिरपरसौंउतरायो ॥ नाग रियाकौंश्रीवृंदावनभक्तितष्तवैठायो ॥ ५८ ॥ हमारीवांहगहीवृंदा वन ॥ राष्योअपनीसीतलछांहियांजगदुषघामतच्योतन ॥ मोमैंक छूकृपावलनांहींहौंजानूंअपनेंमन ॥ नागरीदासनांवहितसौंकरिकै

पाकरायौंधनधन ॥ ५९ ॥ देहधरैंकोअवफलपायो ॥ वीतेवहुतव वरसअसमंजसमायानाचनचायो ॥ थोहरवनतैंमोहिकाढिथिरवृं दाविपुनवसायो ॥ कौंनकृपाआनियासमईहौंनिजमनहेरिहिरायो ॥ निसदिनपहरघरीछिनछिनंनितिआनंदरहैंसरसायो ॥ नागरीदास दासव्है कैंजोइहांनआयोसोपछतायो ॥ ६० ॥ अवतोयहीवातमन मानी ॥ छाडौंनहींस्यामस्यामाकीवृंदाबनरजधानी ॥ भ्रम्योवहुत लघुधामबिलोकतछिनभंगुरदुषदानी ॥ सर्वोपरआनंदअषंडितसो जियठौरसुहानी ॥ हरिभक्तनिमैंरक्तातिव्है हौंनिंदामुषअभिमानी ॥ नागरियानागरकरगहिहैंरहिहैंजक्तकहानी ॥ ६१ ॥ हमारीसवही वातसुधारी ॥ कृपाकरीश्रीकुंजविहारनिअरुश्रीकुंजबिहारी ॥ रा ख्योअपनैंवृंदाबनमैंजिहिंठांरूपउजारी ॥ नित्तकेलिआनंदअपंडि तरसिकसंगसुपकारी ॥ कलहकलेसनब्यापेइहिंठांठौराविश्वतैंन्या री ॥ नागरीदासइहिंजनमजितायोवलिहारीबलिहारी ॥ ६२ ॥ हम तोवृंदावनरसअटके ॥ जबलगिइहिंरसअटकेनाहींतवलगिवहोवि धिभटके ॥ भयेमगनसुषसिंधुमांझह्यांसवतजिकैंजगपटके ॥ अव विलासरसरासाहिनिरपतनागरिनागरनटके ॥ ६३ ॥ भयेहमवृंदा वनरसभोगी ॥ जारसभोगहिंकरनसकतजेजगतविपतकेरोगी ॥ रासविलासरुकथाकीरतनहरिउच्छवआनंद ॥ निसदिनमंगलमई समयतहांनटनागरव्रजचंद ॥ ६४ ॥ नितिआनंदवृंदावनमाहियां ॥ नित्तकेलिकउतकरसलीलानिरषिनिरषिदृगहारतनाहियां ॥ नित्तद्रुमफूलफलनिजुतजमुनातटअतिसीतलछाहियां ॥ नितिनउतनस वलोगसनेहीप्रीतरीतयहऔरनकाहियां ॥ नित्तिरासनितिकथाकीर

तननितिप्रतिगतिमतिरहतउमहियां ॥ नित्तबासतहांनागरिदासहि स्यामास्यामदयोगहिबहियां॥६५॥बृंदावनसुवसतजमुनातीर॥सदा रूपकीपैठलगीरहैंकबहुनहोतउछीर ॥ प्रेमनदीसीफिरतरगमगीग लिनिगलिनिबिचभीर ॥ नागरियानितिमिलेदोपियतसांवलगउरस रीर॥६६॥हमारीअबसबबनीभलीहैं ॥ कुंजमहलकीटहलदईमोहिज हांनितिरंगरलीहैं॥साहिबस्यामास्यामउसीलीललितालतिअलीहैं। नागरियापैंकृपाकरीअतिश्रीवृषभानललीहैं ॥ ६७॥ बृंदाबिपुनर सिकरजधानी॥राजारसिकबिहारीसुंदरसुंदररसिकबिहारनिरानी॥ ललितादिकादिगरासिकसहचरीजुगलरूपमदपानी ॥ रसिकटहल नीबृंदादेवीरचनारुचिरनिकुंजरवानी ॥ जमुनारासिकरसिकद्रुमबे लीरासिकभूमिसुपदानी ॥ इहांरसिकचरथिरनागरियारासिकहीरसि कहीरासिकसबैंगुनगानी ॥ ६८ ॥ रायगिरधरननवकुंजरजधानिबि चसंगश्रीराधिकारानिराजैं ॥ मोरचहुंऔरहयहींसहलचलचमृगहर जलघोषनिसानबाजैं ॥ कोकिलाकीरकलहंसबंदीवहुतवडेनितिके लिकेबिरंदगाजैं ॥ प्रेमपरधानमतिमदनमंत्रीमहादेतरसमंत्ररुखसु पनिसाजैं ॥ मत्तमधुमाधौकुतबालकेदूतअलिफिरतकुसमसौरंभके काजैं ॥ सुफलफलदेततरुदेववहोभांतिअरुनगरकुलदेवीबृंदाबि राजैं ॥ रूपउत्सवसदासहजमंगलदृगानिउभैंआसक्तलपिलाजला जैं ॥ दासनागरनिकटललितललितादितहांराजआनंदछकिचढि यछाजैं ॥ ६९ ॥ कुंजछविपुंजवहोवितनसेवतसदाजुगलआसक्त रसएकआनंद ॥ लिवदिरहिद्रुमलतामत्तअलिकुसमप्रतिपलहुनहिं घामरविबिरहदुपदंद ॥ मधुरकलकंठललितादिपूरितमहारंगमय

रागसारंगधुनिमंद ॥ दासिनागरितहांस्यामस्यामानिकटठाढीइक टकजुरहीनिरपिमुषचंद ॥७० ॥ दोहा ॥ अष्टादससतदसजुनव, संवतमाघसुमास॥बनजनप्रसंसकलग्रंथयह, कियोनागरीदास॥७१॥ इतिश्रीबनजनप्रसंसपदप्रबंधग्रंथसंपूर्ण ॥

## अथ पदमुक्तावली लिष्यते॥

श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेनेंए दोहा ॥ सषीभोरलषिछाकिरही, स्यांमास्यांमसुजांन ॥ मुंदीपल कअलकैंपुली, अधरथकितमुसक्यांन ॥ १ ॥ पोहापियरीसियरी समैं, लषिदंपतिसुकंवार, ॥ रंगभरीलपटानितन, अरुझेहारसिंगार ॥ २ ॥ लताभवनललितादिसषि, बजवतबींनाविधांन ॥ मुंदेनैंनमुसकांवहीं, सुंनिसुंनितांनसुजांन ॥ ३ ॥ नींदभरेतनलटपटे, छकेदृगनकीहेर ॥ नागरियाकेहियबसो, कुंजभुरहरीबेर॥४॥ पदरागभैरूं ॥ इकतालचर्चरी ॥ देषिसषीदंपतिपौढेहैंरंगभीनें ॥ पोयभियारीप्यारीजीवनिभुजनबीचलीनें ॥ बोलतबोहोचिरियां चतुरभोरभयोजांनें ॥ त्योंत्योंचंदवदनदेषिफिरिफिरिरतितांनें ॥ बाजतकटिकिंकनीकलनूंपुरधुनिआवैं॥ पाईहैंपियरंकसुनिधिछोडी क्योंभावैं॥नागरीदासउरझेतनसुरतिसुरझिछूटे॥ चलेहैंउठिसनांन कुंजमदनसैंनलूटे ॥ २ ॥ इकताल ॥ भोरहीनिकुंजतेंउठिचलीहैं कुंवरिराधा॥अरुननैंनसिथलवसनरूपछबिअगाधा॥ बिथरेबारहारअरुझिआलसबसगोरी॥मनहुमधुपकनकलतानिधरकझकझोरी॥ सारदासचीसीलुठतिसहचरीनचरनैं॥ तिनकीचारुचूडामणिकैंसैंक

हिवरनैं ॥ रंगभरीभांमिनसबसंगसुवरसुपसमाज ॥ कमलासीकरन लियैंअपनौंअपनौंसाज ॥ काहूपैंअतरबरगुलाबजुतसुगंधसीसी ॥ काहूपैंविमलदर्पनकलकांतचंद्रकीसी ॥ काहूपैंसुठिसुगंधसहितपां नदांनबीरा ॥ काहूपैंहारधरेउतारझलमलातंहीरा ॥ काहूपैं चंवरचारुचपलभँवरनिनिरवारैं ॥ काहूपैंकुसमकलितविजनां मंदमंदढारैं ॥ काहूपैंमालमरगजीहैंसुरतसेजटूटी ॥ ध्या वतिसुधिसमैंबासमदनपुरियलूटी ॥ काहूपैंबनकबनीयटानियक नकपीकदांनी ॥ काहूपैंधूपदांनबरतबहोसुगंधसांनी ॥ काहूपैंसूर जमुषियसुच्छमोरपिच्छवारी॥मुकटभावउदैंहेतनहिंनकरतन्यारी॥ काहूपैंसुघरसारसूवामधुरबचनबोलैं ॥ काहूपैंअंसबीनसोनबीनवर अमोलैं ॥ आवतधुंनिजंत्रमैंनमंत्रसेवजावैं ॥ रैंनिकेबिहारगायमादि कसौंप्यावैं॥रंगरागनवसुहागआनंदरसबोरी ॥ नागरियाहृदैंबसोभां नकीकिसोरी ॥३॥ यापदकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेनेए दोहा ॥ निसिबीतीसबरंगमैं, उठेभोरसुकंवार॥ आयसँवारतसहचरी, भूपन बसनसिंगार ॥ १ ॥ लगेलगेहगआवहीं, बैठेपगेकिसोर ॥ नीलपी तपटपलटगे, जगेरगमगेभोर॥२॥अलसौंहींआंपियांनकी, चितवनि बलगवनैंन ॥ नागरियादोउभोरलपि, भुरयेमेरेनैंन ॥ ३ ॥ पद रागबिभास॥ तालचर्चरी ॥आलसरसरंजितरमनीयरूपरासिमिथुन लटपटातप्रातजगेविथुरितबरबैंनीं ॥ चंचरीकचहूंओरविचरतिसुप गतिमदंधमहकतसुगंधअंगछलकतरंगरैंनी ॥ प्रबलपवनरवनकोलि बिलुलितपियकनकवेलिविव्हलहगसिथलसुलसतसुपसैंनीं ॥ बिस्मैं व्हैंरहतकुंवरानिरापिवदनछबिअभूतपौंछतपलपीकपांनप्रीतमस्रृगनैं

नी ॥ घुरतढुरतजुरतमुरतनैंनमीनासिंधुसुरातिथकिछकिचकिचलत चारुचितवनिमनलैंनी ॥ नागरियानेहउरझिविवससकतनहिंनसु रझिउठिउठिचलिमिलितमगनमुरिमुरिढुरिचैंनी ॥ ३ ॥ तालचरचरी ॥ चलेहैंभोरनवकिसोरसंगलगेललचिताहिरसबसअधपुलिय पलकचितवतमुषमोरिमोरि ॥ मंदमंदचलतचारुचरननमंजीरसव्द डगनिडगनिकउतगलषिमदनलुटतकोरिकोरि ॥ ठाढेआयकुंजभूमिझूमिझूमिललितादिकलतनिओटदेषतढुरिडारतत्रिनतोरितोरि ॥ नागरियासंगमसुषस्वेदषेदचिहुटिचीरसुषवतपियछबीलीपीठबिजनापौंनढोरिढोरि ॥४॥ तालचर्चरी ॥ पियकेसुषसंगतैंचलीभोरकुंजआवतप्रियामरगजेउरहारहियेवारपीठछूटे ॥ सिथलरसनवसनहसनमंदमंदअधरनिमनौंचंचलदृगरंजनपियषंजनजुगजूटे ॥ अस्तविस्तअभरनवरबाजूबंदढरनतैंसेलगिलगिरहेकरनिनिकरबलयषंडफूटे ॥ नागरीचहूंओरभीरभैंवरानिटारतअधीरकीरओचकोरमोरनिरषिपरतटूटे ॥५॥ यापदकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैंनेएदोहा ॥ बाहियांसीसअदाहसौं, धरिपौढेमिलिमित्त ॥ सोवनकीसोवनमहीं, जगैंलगोंहौंचित्त ॥ १ ॥ भईभुरहरीकरनदैं, कुंजछांहसुषसैंन ॥ केलिपगेसवनिसजगे, अवहिलगेहैंनैंन ॥ २ ॥ कैसैंनींदनिवारिये, अरुअंगनिउरझांनि ॥ भोरभयोदिनकरकिरन, आईरंध्रलतानि ॥३॥ छुटतनआरसरसपगे, जांनतभयोजुप्रात ॥ ओढैंपियरोपटदोऊ, फेरिफेरिलपटाति ॥ ४ ॥ चहतनिवारयोसैंनसुष, लोकलाजडरचित्त ॥ नागरियादोउक्यौंऊठैं, तनमनअरुझेमित्त ॥ ५ ॥ पदरागरामकली ॥ इकताल ॥ अबहीनैंकसोयेहैंअलसाय ॥ कांमकोले

अनुरागरंगभरेजागतरैंनबिहाय ॥ वारवारसपनैंहूमूचतसूरतरंगके भाय ॥ यहछबिनिरषिसषीजनप्रमुदितनागरीदासबलिजाय ॥ १॥ तिताल ॥ आंवनिमैंउरझ्योमनमेरोसोधौंबहुरिनआयो ॥ रसिक कुंवरकीसोभासंपतिलोभीदेषिलुभायो ॥ सीसलटपटीपगियांअल कैंचिहुंटिकपोलनिलागी ॥ अलसौंहींअलबेलीअंपियांझपकतपल निसजागी ॥ छुटेबंधउरमालमरगजीभंवरभीरचहुंओरैं ॥ मनौंग जराजमत्तगतिआवतमैंनमवासहितोरैं ॥ गहवरकुंजकुटीतैंनिकसे सुरतसमरछिततनमैं ॥ नागरियालियैंरैंनचैंनकीवहैंभावनांमनमैं ४ तिताल ॥ अरिइनअंपियानिकैंसैंसमझांऊं ॥ एउतजायमिलतवर जोरीहौंगाहिंगहिलैंआंऊं ॥ तुमजुकहतयहनिडरभईहौंविनदेपैंअ कुलांऊं ॥ नागरीस्यामगईहूंदेषनिवादिनकौंपछितांऊं ॥ ५ ॥ ति ताल ॥ पलकपरनिहींगनतकलपसी ॥ भोरहिविछुरनिभईअलप सी ॥ आयमिलेदोऊदैंगरबांहियां ॥ जमुनांकूलकदमकीछहियां ॥ अस्तविस्तसिंगारलसौंहैं ॥ निसजागेनैंनांअलसौंहैं ॥ ललितादिक सहचरिझुरिआई ॥ गांनरंगवरषावरपाई ॥ विहरतमादिकप्रेमपपि यैं ॥ संगनागरिनागरियाहिलियैं ॥ ६ ॥ रागरामकली ॥ तिता ल ॥ अबदेषोदेषोरीदोऊप्रातरंगीले ॥ हगउनमीलेवसनरसनढी लेढीले ॥ गउरस्यांमरसीलेसोहतलटपटीले ॥ छुटिरहेचिकुरछबी ले ॥ लताभवनतैंनिकसतनहींसकुजीले ॥ तनमनउरझीले नाग रिसपीसुसीले ॥ सौंहैंठाढीआरसीले ॥ लपिमुपलजतलजीले ॥७॥ इकताल ॥ रीदोउउठेभोरलपिलताभवनमैंआरसअरुझेअंग॥ रैंनरसमसेआननराजतपांननिकेफीकेरंग ॥ स्यांमांसोहैंनैंनलजोहैं

भौंहैंचापअनंग ॥ चिबुकउठायनिरषिरहेनागरभइदीठगतिपंग ८॥
तिताल ॥ प्रफुलितकमलतरुनजातीरे ॥ बिचरतअलिमकरंदअ
धीरे ॥ कूजतहंसबंसकलकीरे ॥ कुसमितद्रुमतटिधीरसमीरे ॥ क्ष
णक्षणक्षीणतिमिरगंभीरे ॥ सूचतप्रातप्रभानभपीरे ॥ हरिराधास्थि
तकुंजकुटीरे ॥ गतनिद्रारसवलितसरीरे ॥ रतिरणछितछविमंडित
बीरे ॥ तंद्रितलोचनबिगलितचीरे ॥ पश्यतअलछततजिमंजीरे ॥
नागरिसपीपुलकट्टगनीरे ॥ १२ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदूजे
एदोहा ॥ अलसौंहैंनिसिकेजगे, सरबरसौंहैंमैंन ॥ इकटकसौंहैंअ
धषुले ॥ सहजहसौंहैंनैंन ॥ १ ॥ आननसौंआननछियैं ॥ पांननर
चेकपोल ॥ लषिरीझेछबिआरसीविहसैंलोयनलोल ॥ २ ॥ आरस
सौंअरुझीपलक ॥ अलकजुबेसारिमांहि ॥ अरुझ्योबैंनांदेषिकैंपि
यमनसुरझ्योनांहि ॥ ३ ॥ पचपौंछतपटपीतसौं ॥ प्रियाकपोलनि
पीक ॥ नागरिपौंछतलालके, अधरनिअंजनलीक ॥ ४ ॥ पदरा
गललित ॥ तिताल ॥ नींदभरीअंषियाजुवडीवडी ॥ लाललाल
डोरेकजरौंहींकोरैंपियहियमांझअरीयेगडीगडी ॥ सूचतरैंनिचै
नकीवातैंरंगपीकछबिछायमंडीमंडी ॥ नागरिदासमदनमोह
नकैंवहोभांतिनिनिसलाडलडीलडी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ राधेतेरेनैं
नमहामतवारे ॥ मोहनरूपबारुनीपीकैंमत्तभयेछबिभारे ॥ घूमत
झुकतधुकतउघटतसेरुकिरुकिचलतअवारे ॥ देषिछकनिछकिगये
छबीलेपियनागरनटवारे ॥ ४ ॥ रागललितकाण्याल ॥ तिताल ॥
अवतोवांधिडारयोमेरोमनहसिहसिहसिहसि ॥ मोहनइतअविलो
कितरसबसकहाकरौंभौंहैंकसिकसि ॥ लोकलाजअरुधीरजअंतर

ल्यावतहौंगाहिजातहैनासिनासि ॥ नागरियाइसौंकहिहाहाजिन चितवोजूवसिबसि ॥ ५ ॥ इकताल ॥ रेमोहनांमोततैंतोमन हरिलीनौं ॥ हौंनांजांनौंलौंनाप्यारेतैंटोनांकहाकीनौंदुरिहैनां हिप्रीतनागरअवइनसोचनितनभयोछीनौं ॥ करिहैंचारचवाव अथांइनिइहगोकुलमतिहीनौं ॥ ६ ॥ तिताल ॥ जीनैंणांनीं दघुलैंछैं ॥ आयरहीछैंथोडीरात ॥ कांइकेडैंलाग्याछोनंदलाल ॥ अतिअलसायोम्हांरोगात ॥ घरघरचारचवावचलैंलोंनिपटबुरीछैंय। बात ॥ रसिकबिहारीथेरसलुब्धाव्हैंआसीपरभात ॥७॥ तिताल॥ हो कांन्हजीरातराउणींदारंगराता ॥ निसरैंध्यांनएमुंदीपलकआवें ललकमदनमदमाता ॥ अलकमांहिअणवटप्यारीरोल्यायाथेउ लझाता ॥ रसिकबिहारीलागोछोप्यारामुसक्याताअलसाता ॥ ॥ ८ ॥ तिताल ॥ तिहारीहसिचितवनिघरघालनि ॥ तैंसियमेरीए जुनिगोडीअंषियांरूपजंजालनि ॥ दिननांहिंचैनरैननींदनआवैं हियेमैंनचलचालनिनागरनवलरूपअभिमांनीक्योंकरीहमैंइनहाल नि ॥ ९ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैनेंएदोहा ॥ आव तभावतलालछबि, छैलअदाहैंअंग ॥ कंवलफिरावतफिरतमन, य हकछुहुंनराफिरंग ॥१॥ अरीछैलइहिगैलव्है, अवहीनिकस्योआय॥ नैंननिनैंनामिलायकैं, लैगयोमनवहराय ॥ २ ॥ भौंहतननिमैंतनत मन, मोहनरूपरसाल ॥ होतचालमैंचालचित, मालहालमैंहाल ॥ ॥ ३ ॥ छुटेवंधअलकैंछुटी, जुटीभौंहमुसकाय ॥ आयछकोंहैनैंन मन, डारचोछैलछकाय ॥ ४ ॥ पीतफूलादियैंअलकपर, लियैंहाथ चकडोर ॥ गयोछैलकैंहाथमन, हाथरह्योनाहिंमोर ॥ ५ ॥ नागरि

यानंदलाललपि, रहींहियैंहहराय ॥ छलीछैलईहिगैलन्है, अलीलि यैंमनजाय ॥ ६ ॥ पदरागबिलावल ॥ इकताल ॥ हूंहरिहेरानिमां झठगी ॥ सौंहीमदअलसौंहांअंपियांहियमैंआंनिषगी ॥ नांहींकछू ग्रहकाजवनतजियढौरोरहतलगी ॥ नागरियामोहनमिलिवेकीचिं ताज्वालजगी ॥ ७ ॥ इकताल ॥ अरीवहिसुंदरछैलछली ॥ कब हूटाढोपनघटकबहूंघटघटबीचअली ॥ काहूकीडोरीगहितोरतचोर तईडुरियाजुभली ॥ नागरियावहोछंदबंदकरिकरतहैरंगरली ॥ ८॥ इकताल ॥ इंडुरियालैंगयोकोऊकस्यांमसरीर ॥ कैसैंसीसधरौंरीग गरीजकिरहिजमुनातीर ॥ तवतोमैंकछुजान्यौंनाहींत्तनकतउठीहि पीर ॥ नागरियाअववाधोटाबिननांहिरहतहैंधीर ॥९ ॥ इनदानली लाकेअनुक्रमकी अलापचारीमैं दैनें ए दोहा॥ दांनकेलिजोमनवसैं, ताहिनकछूसुहाय ॥ तजिवृंदावनमाधुरी, अनतनकवहूजाय ॥ १॥ मेरेनितचितमैंवसौ, दंपतिदानविहार ॥ मुपपरऊठीझगरई, नैननि करतजुहार ॥ २ ॥ मोमनलागीदुहुंनिकी, दांनकेलिबतरांनि ॥ नैं ननिहाहापांनिइत, उतभौंहैंसतरांनि ॥ ३ ॥ गउरघटाअरुसांवरी, उनईनीरसनेह॥ पौरिसांकरीगिरतहां, दांनरंगझरमेह ॥ ४ ॥ गोरस मांगतकरतदोऊ, नैंनसैंनसनमांन ॥ नागरियाकेहियवसो, दांनरं गवतरांन ॥ ५ ॥ पदरागबिलावलकाष्याल ॥ तिताल ॥ मांगैंघन स्यांमदांनदई ॥ गोरसदांनसुन्यौंनहिंकवहूंयहअबकैसीभई ॥ दि योनहिलेतहायहसिहेरतनैंकनकरतगई ॥ नागरीदासकौंनविधिब निहैंयहव्रजरीतिनई ॥ १ ॥ तिताल ॥ नितदांनमांगैंगहवरगैलमैं कितजांउरी ॥ सांवरोसोधोटाअरवीलोहैंमनमोहनतांउरी ॥ अं

चरगहिहसिचाहिरहैमुषहूंजियमैंसकुचांउरी ॥ नागरीदासउतै उरझेरोइतैचवइयागांउरी ॥ २ ॥ याअनुक्रमको अलापचारीमें दैंनेए ॥ दोहा ॥ हरिमूरतिचितमैंचुभी, नैंनबिपुलकतनीर ॥ सोसगगरियागिरतसी, जकिरहीजमुनांतीर॥२॥धैरुहोतजांन्यौंनउर, उडतनजान्यौंचीर ॥ गिरतनजांनीगगरिया, रहतनछांनीपीर ॥ ३ ॥ हरीहरीकहिलेहुरी, बिसरीदधिकोनांव ॥ कृष्णमईग्वारनिभई, कौतुगलाग्योगांव ॥ ४ ॥ महारूपमदिराछकी, चलतडगमगतपाय॥ जोदेषतग्वारनिछकी, तिन्हैंछकनिचढिजाय ॥ ५ ॥ गिरैंनग्वारनिधुकिउठैं, घायलमनरिझवार ॥ नागरियारनसुभटज्यौं, रहतसह्मारिसह्मारि ॥ ६ ॥ पद रागदेवगंधार ॥चौताल ॥ मोहनमुषलषिमोहिरह्योनपरतघरीहूनघरमाई ॥ बीथनिमैंफेरीकरैंहरैंहरैं पैंडभरैंसीसपैंदहेरीधरैंप्रेमरसछकनिछकाई ॥ संगभौंरभौंरचलैंनैंननिमैंनीरबीरपीरहियैंनेहविषलहरिदवाई ॥ नागरियाकृष्णरूपभईभूलीदेहदधिनांमभूलीकहैंटेरलेहुरीकन्हाई ॥ २ ॥ तिताल ॥ हरिसौंअटकीग्वारनिगोरीलगिरहीरूपसुरतचितडोरी ॥ मदमोकलगजज्यौंगोकुलमैंकुलसंकुलगहितोरी ॥ बिनदीधहीदधिबेचतबीथनिकछुसुधिरहीनथोरी ॥ बिरहबिबसजांनीनगईकछूंसिरतैंगिरतकमोरी ॥ नागरियाकौतिकसबलागीबालकदैसाकिसोरी ॥ षुलिगयेबारसुधिनअंचरकोफिरतप्रेमझकझोरी ॥ ३ ॥ या पदके अनुक्रमकोअलापचारीमें दैंने ए दोहा ॥ अंसुवनिजलतैंबुझतनहिं, हियेस्यांमघनगेह ॥ यहकौनैंकीवेदवा, लगीदवानलदेह ॥ १ ॥ तुमबिनतनग्रीपमतपत, कलनपरतादिनरैंन ॥ उर

निवासपियरावरो, छिरकतभिस्तौनैंन ॥ २ ॥ बिरहबांनबेधीगई, नांहिनलगतउपाव ॥ स्यामसुघरजरराहविन, मिलैंनउरकेघाव ॥ ॥ ३ ॥ तनकादिषाईदैंगये, पीतांबरफहराय ॥ सरसौंसीफूल्योक रैं, तवतैंनैंननिझराय ॥ ४ ॥ तिरतसेतघरनावज्यौं, नैंननिकेजल मांहें ॥ इंहींनीरमैंबूडिवो, जोपियमिलिहैंनांहि ॥ ५ ॥ बिनदेषैंन हिंकलपरैं, धीरकौंनठहराय ॥ जोजानैंजाकैंलगैं, दृगविसहारेघा व ॥ ६ ॥ नैंनलगेलागैंनहीं, वकैंमौंनिमैंहाय ॥ नागरपियढिगनां हितऊ, नितआगैंदरसाय ॥ ७ ॥ पदरागआसावरी ॥ तिताल ॥ पीयपीतकरींहमैंवोरी ॥ सुनतनादमुरलीश्रवननिमैंताजितजिलाज हिआवतदोरी ॥ जोघरसांझरहैंतोइकटकठाढीजोवतपोरी ॥ नाग रियाछिनकलनपरतहैंडारीकहाठगोरी ॥ १ ॥ तिताल ॥ लगनि कीपीरनजातभरी ॥ रातिद्यौसतलफतहीबीतैं ॥ चैंननहींजियएक घरी ॥ विनांमिलैंघनस्यामवरनतनतपतिबुझैंनांजातजरी ॥ ना गरियाव्याकुलवनवीथनिटेरतडोलतहरीहरी॥२॥इकताल ॥मैंकोजां णूंकमलीपैरणांवोइस्ककहरदारियाव ॥ मुजधीरजदीबिचुपईझकझौ कापांदीनांव ॥ बेपरवाईयारदीचलैंब्रुरापवनपरवाव ॥ नागरएकम लाहविहूंणांसवहीदावकुदाव॥३॥ तिताल ॥ पनघटमोहनरीमेरैंकि नदयोगौंहनलगाय॥ जवझुकिजमुनांजलभरौंएरीमोहिछींटानिदैचौ काय॥चाहौंसिरगागरिधरयोएरीमेरीइंढुरियालेतचुराय ॥ जवमेरोश्रं चराछुटैंएरीवहिविनकहैंउरसतआय॥घूंघटदिसटकवांधिकैंएरीरहैंइ कटकनैंनमिलाय ॥ नहिंमानैंसैंननिपिज्योएरीवहिढद्योपरतअकु लाय ॥ नागरियाकहिकहाकरूंएरीमनमेरोहूललचाय ॥ ४ ॥ ति

ताल ॥ कहियेकौनसौंकोमांनैं ॥ जोहैंबिथाहियेमैंहेलीसोमनकीम नजांनैं ॥ सबबेपीरपीरनहिंसमुझैंदेतअनापिमोहितांनैं ॥ नागरिया मोहनबिनदेषैंमनलोचनउररानैं ॥ ५ ॥ तिताल ॥ मनकीमुपतैंक हाजातबषांनीं ॥ कौनैंकहीकहैंगोकोअबलगीलगनिकीअकथकहां नी ॥ मौंनिहूसौंनहिरह्योपरतरीनिकसतहैंहियतैंउररांनी ॥ वारूमु ठीअनलबिचदारूनागरिदासरहैंकहांछांनी ॥ ६ ॥ तिताल ॥ मन मोहनहूकौंनींकनौंड़ी ॥ दोसयहैंमोहीकौयेरीमेरीबैरानिआपियांभौं डी ॥ प्रीतिबेलिफैलीउरअंतरअबलागीदुखबौंडी ॥ नागरियाब्रज बगरबगरमैंबजींनेहकीडौंड़ी ॥ ७ ॥ तिताल ॥ जोगनिरूपसुधाकी प्यासी ॥ अंगबिभूतरच्योमुषपांननिआंननचंदकलासी ॥ अ टकीनवलजोगियासौंसुषपूरनप्रीतिप्रकासी ॥ नागरदोऊनेहनगर केमनमथनाथउपासी ॥ ८ ॥ तिताल ॥ कोइयकजोगीरूपकियैं॥ भौंहैंबंकछकौंहैंलोयनचलिचलिकोयनिकांनाछियैं ॥ देपिस्यामतन बेसमनोहरबारबारजलवारिपियैं ॥ नागरमनमथअलपजगावतगा वतकांधैंबीनलियैं ॥ ९ ॥ तिताल ॥ प्यारेयेइनिगलियांआव ॥ नैंननिजलसौंधोयसंवारीअछनअछनधरिपाव ॥ व्याकुलतृषतच कोरदृगनिकौंवदनचंददरसाव ॥ रसिकबिहारीलालसलौंनेंजिनक रिनिठुरसुभाव ॥ १० ॥ यापदकेअनुक्रमकोअलापचारीगैंदनेंएदो हा ॥ जूराबांधतदेषिकैं, भएमजूरांनैंन ॥ रहैंहजुराहीपरे, दरसअ जूरालैंन ॥ १ ॥ बैठीन्हायसुगंधजल, दुरिदेखतनंदनंद ॥ इकट कदृगषंजनफसे, जूराबांधानिफंद ॥ २ ॥ मंजनकरिपंजननयन, बैठीयौंरतिवार ॥ कचअंगुरिनबिचदीठदैं, निरषतनंदकुवार ॥३॥

नीठसंभारतसांवरो, नागरचितवतईठ ॥ जूरावांधतपीठदै, लईवां धिपियदीठ ॥ ४ ॥ पदरागतोडीचौताल ॥ मुरलीबजाईस्यांमसघ नविपुनजायतासमैंवैठीहीबालकरिकैंजुमंजन ॥ सुधिबुधिभूलीग्रा लीहियैंवनमालीवस्योहाथरह्योकजरासकीनभरिअंजन ॥ कहतअ धीरवैंनभरिआयेनैंनमांनौंप्रेमजलभीजेतरफतजुगखंजन ॥ नागरि यासपीढिगथांमैंओसंवारैंबारधुलिगयेतारजेसिंवारछविगंजन ॥ १॥ तिताल ॥ देखोरीजायनटवररूपकीयैं ॥ प्रेममदमादिकसौंपीयैं ॥ ठाढोरीकदंवतरैंमुरलीअधरधरैंश्रवननिकुंडलजगमगातबांमबरभुज छीयैं ॥ फूलफलमंजरीप्रवालनकेगुच्छास्वच्छबीचचारुचंद्रिका यौंजूरासीसदीयैं ॥ नटकाछकाछैंआछैंचलतकटाछैंजाकीगुंजमाल लहलहाताहियैं ॥ धुववंकनैंनलटमंडितपहुपैंनवेसरिधुदेसषौरिकेस रिकीकियैं ॥ नागरीदासअैसोमोहनत्रिभंगीलालचालिसपीवनबोगि देपिदेपिजीयैं ॥ २ ॥ रागतोडीकाख्याल ॥ इकताल ॥ मोकौंग योरीटागिग्वार ॥ कटितटपीतपिछौरीबांधैंसांवरेअंगसुढार ॥ मद नमंत्रसेवैंनबोलिकछुनैंनाबंकनिहार ॥ नागरीदासमिलैंफिरिमोहन करिराखोंउरहार ॥ १ ॥ इकताल ॥ जरदटुपटेवालनौंसांवला ॥ कैफभरीसीभौंहैंचढियांसिरकलगीउरमाला ॥ बिनदेषैंदुपदेतअमां नीमोहनसौंहनग्वाला ॥ नागरीदासदिवानीअंषियांफिरिपीयाइस्क पियाला ॥ २ ॥ इकताल ॥ हौंकहांजांऊरीकौनघाटकौनबाट कितपांऊनंदनंदन ॥ हरिगयोरीमनमांनिकमेरोकरिगयोधीरनिकं दन ॥ मंदहासिहसिकैंकसिभौंहैंवासिकीनीरसफंदन ॥ नागरीदास बचैंकोऊकैसैंवाटगकेछंदवंदन ॥ ३ ॥ इकताल ॥ पीयाकोऊअै

सोनकरिहैंजैसीतुमकीनीं ॥ पहलैंप्रीतकरिवैसैंअवऐसोआनांकां नींदीनीं ॥ तुमतोकपटअधीननंदसुतहमनैंननिआधीनीं॥ नागरिया देपीनसुंनीकहूंयहहितरीतनवीनीं ॥ ४ ॥ तिताल ॥ कहाकरौंहेअं पियाअमांनी ॥ हठकनमांनतरूपलालचीढहींपरतअकुलांनी ॥ गो कुलचंदचकोरिदृगनकीघरघरचलतकहांनीं ॥ नागरीदासनेहकीउ रझानिक्यौंहूंरहतनछांनी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ मैंड़ादरदनजानैंहोत्र्या पवेदरदी ॥ सोफीनूंकीपवरअसाढेगाढेइस्कअसरदी ॥ मैंनहिनेह कियापहिलैंवहचलिआयादिसघरदी ॥ नागरीदासनंददेनागरमन लीतामरदौंमरदी ॥ ६ ॥ इकताल ॥ नितदांनमांगैंगहवरगैलमैं कितज़ांवरी ॥ सांवरोधोटाअरवीलोहैंमनमोहननांवरी ॥ अंचरग हिहसिकाहिरहैंमुपहूंजियमैंसकुचांवरी ॥ नागरीदासउतैंउरझेरोइतैं चवईयागांवरी ॥ ७ ॥ याजुगलभोजनकेपदनकेअनुक्रमकी अला पचारीमैंदैने ए ॥ दोहा ॥ मिलिजैंवतदोऊदरसरस, रसनांरसाविस राय ॥ गईछुधासबउदरकी, रहीदृगनिमेंआय ॥ १ ॥ जोव्यंजन करपल्लवनि, छुवतछबीलीबाल ॥ ताकौंरुचिसौंलेतहैं ॥ नवलरंगी लेलाल ॥ २ ॥ देतगसामुषतीयकैं, चितईकरिभुवभंग ॥ रह्योकौं रहीहाथमैं, भईदृगनिगतिपंग ॥ ३ ॥ सरसपरसकौंतरसजिय, लालकौंरकरलेत ॥ चतुरचौंकितबलादिली, अधरछुवननाहिंदेत ॥ ॥ ४ ॥ कौंरलेतकरकंपव्है, देतबीचछुटिजात ॥ स्वेदसिथलसिय रायतन छुवतअधरमुसकात ॥ ५ ॥ जैंवतस्यांमास्यांमदोऊ, नाग रियासुखदैंन ॥ कोजनकाबिवरननकरैं, वहमिलिभोजनलैंन ॥९॥ पदराग सारंग चौताल ॥ जैंवतरासिकरासिकनीसंग, पियहटिकौंर

देतप्यारीमुपपरसतअधरहोतभुवभंग ॥ वीचिवीचिनतरानिमधुरई अतिरसभोजनवाढयोरंग ॥ नागरिसषीसौंजलियैंठाढीइकटकभई हगनिगतिपंग ॥ १ ॥ चौताल ॥ अरीएजैंवतहूंनहिंपाये ॥ इकटक रहेवदनचितवतहीअंपियनहाथाबिकाये ॥ जबकछुकौरपरसपरदीं नैंतवतवमैंसम्हराये ॥ अतिआसक्तस्यांमस्यांमाकीनागरियालषि नैंनसिराये ॥ २ ॥ या अनुक्रमकी अलाप चारीमैं दैने ए दोहा ॥ हरिराधावृंदाविपुन, नितविहाररसएक ॥ विछुरतनांहींपलकहू, बी ततकलपअनेक ॥ १ ॥ प्रेमरासिदोऊरासिकवर, विलसतनित्यबि हार ॥ ललितादिकनितलेतहैं, तिंहिंसुषकोरससार ॥ २॥ नवनिकुं जमनकौंअगम, सेवतकोटिअनंग ॥ जुगलकेलिआनंदको, तहांअ पंडितरंग ॥ ३ ॥ नैंननिनैंनासिरांवहीं, बैंनसजीवनिमंत्र ॥ मुहांच हींजियज्यांवहीं, स्यांमास्यांमसुतंत्र ॥ ४ ॥ नित्तकेलिआनंदरस, विचवृंदावनवाग ॥ नागरियाहियमैंवसो, स्यांमास्यांमसुहाग ॥ ॥ ५ ॥ पद रागसारंग ॥ तालचर्चरी ॥ रायगिरधरननवकुंजर जथानिविचसंगश्रीराधिकारानीराजैं ॥ मोरचहुंओरहयहींसहल चरुचमूंगहरजलधोपनीसांनवाजैं ॥ कोकिलाकीरकलहंसबंदी वहोत वडेनितकेलिकेबिरदगाजैं ॥ प्रेमपरधानमतिमदनमं त्रीमहादेतरसमंत्रसबसुषानिसाजैं ॥ मत्तमधुमाधोकुतवालके दूतअलिफिरतकरकुसमसौरंभकैंकाजैं ॥ सुफलफलदेततरुदेव वहोभांतिअरुनगरकुलदेविवृंदाविराजैं ॥ रूपउतसवसदासहजमं गलटगनिउभयआशक्तलपिलाजलाजैं ॥ दासनागरनिकटलालि तललितादितहांराजआनंदछकचाढियछाजैं ॥ १ ॥ चौताल ॥ वृं

दाविपुनरासिकरजधांनो ॥ राजारसिकाबिहारीसुंदरसुंदररासिकाबि
हारानिरांनों ॥ ललितादिकढिगरसिकसहचरीजुगलरूपमधुपांनीं ॥
रसिकटहलनीवृंदादेवीरचनारुचिरनिकुंजरवांनो ॥ जमुनांरसिक
रसिकद्रुंमबेलीरसिकभूमिसुषदांनि ॥ इहांरसिकचरथिरनागरियार
सिकहीरसिकसबैंगुनगांनी ॥२॥ तालचर्चरी ॥ कुंजछबिपुंजबहो
बित्तनसेवतसदाजुगलआशक्तरसएकआनंद ॥ लिबढिरहीद्रुंमलता
मत्तअलिकुसमप्रतिपलहुनहिंघांमरविविरहदुपदंद ॥ मधुरकलकं
ठललितादिपूरितमहारंगमयरागसारंगधुनिमंद ॥ दासनागरतहां
स्यांमस्यांमानिकटठाढीइकटकजुरहीनिराषिमुषचंद ॥ ३ ॥ ताल
चर्चरी ॥ करतसुषसंगनवरंगललनाललन ॥ स्यांमजुगभुजनिवि
चगउरतनभांमिनीसजलघनमांझमनौंदांमिनीझलमलन ॥ छुटत
बरबारअरुतुटतहारावलीषोलिहींबिमलबिधुवदनघूंघटबलन ॥ नैंन
हसिहसिमिलतरसछकीदृष्टसौंतैसीयेछबिभरीबंकभृकुटीचलन॥ म
हकिरहीमालतीकुंजकुसमितमहलटहललितादितहांभूलिलागतप
लन ॥ नागरीदाससुषरासलीलाललितकोरकोरकानिमदमदनदल
दलन ॥ ४ ॥ तालचर्चरी ॥ कुंजरसकेलिकवनीयदंपतिकरत॥
परसपरहितबिबसरूपमादिकछकेदूरिककरिबसनउरदृढअंकानिभ
रत ॥ पियतमधुअधरसुषासिंधुमैंमगनमननिकटतिंहिंसमैंचपच्यारपं
जनलरत ॥ कबहुभुवभंगजुतसीकरतरंगसौंअंगप्रतिअंगापियपरस
दैंमनहरत ॥ बिथुरेबिचकचनमुपगउरानिकसतश्रमितचंदतैंसघनम
नुंस्यांमबादरटरत ॥ सुरतसुषस्वेदतैंमहकिकेसरिचलीवासलहिना
गरीदासधीरनधरत ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैंने ए ॥ दोहा॥

नवलकिसोरीचतुरत्यौं, तैसेचतुरकिसोर ॥ गांनतांनरसरहसिकी, बहसिबढीदुहूंओर ॥ १ ॥ होतरागसारंगधुनि, ॥ दंपतिकुंजनवीन ॥ बिचबिचगायबजांवहीं, बीननिपरानिप्रबीन ॥२॥ धीरजपगठहरैंनहीं ॥ सुरगहरैंगुनगांन, रागरसासवसिंधुकी ॥ लहरैंउपजततांन ॥ ३ ॥ संगमृदंगसुधंगगति, रागरंगअभिराम ॥ स्यामैंरिझई नागरी, नागररिझयेस्यांम ॥ ४ ॥ पद ॥ रागसारंग ॥ बनेमाधुरीकेमहल ॥ कूलजमुनांफूलफलभरिभँवरचहलापहल ॥ सघननवसंकुलितडारैंमिटतादिनमनिकहल ॥ बिछयेजलछींटनिछिरकिबिचकदलीदलकेपहल ॥ तहांबिहरतिप्रियाहरिसंगतजिसुरतरनदहल॥ दासनागरसपीफूलीफिरतआनंदटहल ॥ १ ॥ इनछाकलीलाकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेने ए दोहा ॥ तजिरतननिकेथारकौं, करधरिजैंवतछाक ॥ हरिकौंभावैंभवनतैं, याव्रजकेबनढाक ॥ १ ॥ लकरीधोवैंभैंपनैं, विधिसौंकरैंजुपाक ॥ जाकारनषटपटकरैं, ताकोभावतछाक ॥ २ ॥ आवैंनहिंसुरमुनिनकैं, कीयैंजग्यजंजाल ॥ सोग्वारनकेबीचमैं, जैंवतछाकगुपाल ॥ ३ ॥ जैंवतहरिलरिकांनिमैं, द्रुमछहिंयांजलकूल ॥ देषिमंडलीछाककी, रह्योकमंडलभूल ॥ ॥ ४ ॥ हरिवनभोजनकेलिलपि, बिथकीबांनीबाक ॥ नागरियानितचितरहैं, चढीछाककीछाक ॥ ५ ॥ पद ॥ रागसारंग ॥ ॥ चौताल ॥ छोटेछोटेग्वालनिमैंछोटेनंदछइया ॥ राजतदोऊकुंवरअतिसुंदरगिरधरस्यांमगउरबलभइया ॥ लयेबनायढाककेदौनांएकवैससबग्वारपिलइया ॥ नागरीदासतहांमधुमंगलमाथिमाथिदेतदूधकोघइया ॥ १ ॥ तालचर्चरी ॥ नवलगोपालमिलिकरन

भोजनलगे ॥ तीरजमुनांबिपुनभीरवहोबालकनिहृदैंआनंदभरिपेल
रसरगमगे ॥ छाकलीलललितकूलकोलाहलनिदिवसभयोजांनिम
नुकोकिलागनजगे ॥ चहूंदिसिकुंडलाकारग्वालावलीचारुब्रजचंद
उडगननिबिचजगमगे ॥ कईकछींकांनकईफूलफलसिलनिपरकई
कदधिमधुधरनबकुलकललैंनगे ॥ किसलैदलकदलिदलजलजद
लजघनिपरधरतव्यंजनबिबिधिपरमकौतिकपगे॥ स्यांमकरबांमपर
भातधरिपातफिरनागरीदासहसिजातबातनिपगे॥ निरषिबिधिकहत
मनकहांजगिभोगयेजूठपसुपालकनकीजुतैंनहिंभगे ॥ १ ॥ तालच
र्चरी ॥ आजुबरबिपुनमैंछाकलीलारची ॥ गोपबडडेनकेकंवरउड
गनलसतबीचब्रजचंदअतिसरससोभासची॥उरसिबनकैंकिधौंचारु
चमकतभईइंद्रमणिनीलकलकनककुंदनगची ॥ परसपरकरतमि
लिमोदजुतचपलताबदनलपटातदधिमारमोदकमची॥लेतझुकिझप
टिकरकौंरहारिसबनितैंदेतगंडूकतकितकअंपियांनची ॥ नागरीदा
सभयेबहुतबिस्मैंनिरषिचित्रलौंपांतिसुरगगनमंडलपची ॥ २ ॥
याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥ ठाढोहरिगिरकोंसिपर
चरनलकुटिलपटाय ॥ पीतांबरफहरातलषि, त्यौंत्यौंमनफहराय
॥ १ ॥ करगहैंडारकदंबकी, ठाढेअतिछबिअैंन ॥ प्रियाध्यांनमा
दिकछके, रहेलालझुकिनैंन ॥ २ ॥ व्हैंठाढेछबिसौंरहे, चढिगिरसि
परकिसोर ॥ जबहीमुरलीधुनिकरत, कुहकउठतबनमोर ॥ ३ ॥
लषिऊंचैंब्रजचंदकौं, तियअंगुरीनिबतांहि ॥ नागरियामनगिरसि
षर, चढयोसुउतरतनांहि ॥ ४ ॥ पद ॥ रागसारंग ॥ इकताल॥ठा
ढोनंदकोगोपाल ॥ बांमभुजतरलकुटिदीयैंचरनपरसतमाल॥ रूप

अद्भुतजोतिकोचहुंऔरमंडलजाल ॥ दासनागरदृगरहेझुकिप्रिया ध्यांनरसाल ॥ १ ॥ इकताल ॥ गईहूंआजदुपहरीवरियां ॥ सुंदर स्यांमगहैंकरठाढोजमुनांकूलकदंबकीडरियां ॥ पीतांबरबनमालअ लकजुगमंदपवनकैंबसफरहरियां ॥ नागरियालपिजकिरहिगईफि रनहिंसपीपिंडीथरहरियां ॥ २ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैं दैने ए ॥ दोहा ॥ जबतैंचितयेनैंनभरि, तबतैंछिननहिंचैंन ॥ मनमोहनगोहनपरचो, जागतसुपनैंसैंन ॥ १ ॥ मोहनलपिमोह नभई, कहालग्योयहहौंन ॥ सबसूझतमोहनमई, दईभईगतिकौंन॥ ॥ २ ॥ सुधिबुधिसबहीहरिलई, मनमोहनमुसकाय ॥ येदइयाकै सीबनी, लागीबिरहबलाय ॥ ३ ॥ लगिलगनिहरिमुपानिरपि, डा रयोसबसुपरूंद॥ जोहूंऐसोजानती, रहतीनैंननिमूंद॥ ४ ॥ कौंनघ रीकीलगनियह, अरीभरीनहिंजात ॥ मिटतनांहिदिनरातिजिय, स्यांमरूपउतपात ॥ ५ ॥ घरबनहूनहिंलगतमन, रहतस्यामतन लीन॥अरीढटौंनांनंदकैं, कछुटौंनापढिदीन ॥ ६ ॥ नैंननिदुपनें ननिलगैं, तनमनदुपदुपगेह ॥ एदइयाकौंनैंदयो, दुपकोनामसनेह ॥७ ॥ हरिसौंलगानिलगायकैं, भरीरहतनितनीर, रिझवारनअंपियां निसौं, हौंहारीरीबीर ॥ ८ ॥ नागरसैंननिसैंनमिलि, बनीजुनैंनानि नैंन ॥ बनतबनतऐसीबनी, कहतबनैंनहिबैंन ॥ ९ ॥ पद रागसारं ग ॥ इकताल ॥ नैंननिसैंनतैंहूथकी ॥ देपिपंकजदृगनिकीदिशदृ गनिलागीजकी ॥ टरतनहिंछिनचुभीचितवनिप्रेमगहवरछकी ॥ दासनागरिरूपहरिकीमिटतनाहिंधकधकी ॥ १ ॥ इकताल ॥ भई रीस्यांमसौंपहिचांन ॥ ताहिदिनतैंसुपासिगरोबिदाभयोलैंपांन ॥

कौनघरीउतगईहुतीहौंजमुनाकरनसनांन ॥ गागरियाबिनचाहैंमैं बनिगईबातअजांन ॥ २ ॥ यापदकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैनेए दोहा ॥ अरेषरेचितवतवदन, कहासरीजियआस ॥ गाइगईबछ रासहित, मोहनदुहतअकास ॥ १ ॥ परीषरिकगोपालकैं, निजगौं हनतजिभौंन ॥ सौहैंलषिभौंहैंरहे, दोहैंगइयांकौंन ॥ २ ॥ इकटक रहिरहिजांहिदृग, दयैंदीठमैंदीठ ॥ नेहपूररनसूरज्यौं, चलैंनदेकैंपी ठ ॥ ३ ॥ लालगिरतग्वालनगहे, पियलइतियनसंभार ॥ इतउत दोऊसरभररहे, व्हैंदृगसरनिसुमार ॥४॥ धेनुदुहतमोहनठगे, राधा रूपनिहारि ॥परतदौंहनीतौंनिकासि, अैंडीबैंडीधार ॥ ५ ॥ मुषचि तवतगइयांदुहत, परतधरनिपयसोत ॥ मांनौंमंगलदृगनिमनौं, दू धनिबरषाहोत ॥ ६ ॥ धेनुदुहतस्यांमहिठगे, रूपसौंहनीदीस ॥ गिरिगोदतैंदोहनी, परीमोहनीसीस ॥ ७ ॥ देतसौंहनीदौंहनी, लेतलालमुसकाय ॥ भूलिहाथउतहीरहे, दोठदीठहराय ॥ ८ ॥ धेनुदुहतजांनीसबनि, गउरस्यांमकीप्रीत ॥ नागरियाकेहियवसो, षरिकटहलकीरीत ॥ ९ ॥ पदरागसारंग ॥ तालचपक ॥ देषतव दनदसाभईऔर ॥ दौंहनींलेतरह्योकरउतहीचितवतचाकितरसिक सिरमौर ॥ डगमगायपगधुकेधरनिकौंभुजभरिलयेग्वारविचदौर ॥ आयगयोश्रमजलआंननपरकंपिततनमनमथकीरौर ॥ मदनमो हनकोमनताहीछिनव्हैंगयोरूपअसनिकोकोर ॥ नागरीदास स्यामकरिघायलपलटिचलीनागरिनिजठोर ॥ १ ॥ चर्चरीडक ताल ॥ ॥ चलीहैंकुंवरिराधिकानिकुंजभवनरवनपाससजि सुवामत्तभंवरसंगसंगसंग ॥ आयरसिकरायनिकटलईहैंभुजनि

झोलमेलिकरतकेलिपरसतसुषअंगअंगअंग ॥ जुरतनैंनतुटतहार अंचलउरछुटतवारचलिकटाछिभृकुटिभंगरंगरंगरंग ॥ ताघरिया देषिदुहनिनागरियालतनिओटतनमनगतिश्रवननैंनपंगपंगपंग॥२॥ ॥ याअनुक्रमकी अलापचारीमैंदैने एदोहा ॥ दांनकेलिजो मनवसैं, ताहिनकछूसुहाय ॥ तजिवृंदावनमाधुरी, अनतनकब-हूजाय ॥ १ ॥ मेरेनिताचितमैंबसो, दंपतिदांनविहार ॥ मुपपर झूठीझगरई, नैंननिकरतजुहार ॥ २ ॥ मोमनलागीदुहुंनकी, दांन केलिवतरांनि ॥ नैंननिहाहापांनइत, उतभौंहैंसतरानि ॥ ३ ॥ गउरघटाअरुसांवरी, उनईनीरसनेह ॥ पौरिसांकरीगिरतहां, दांनरंगझरमेह ॥ ४ ॥ गोरसमांगतकरतदोउ, नैंनसैंनसनमांन ॥ नागरियाकेहियवसो, दांनरंगवतरांन ॥ ५ ॥ पदरागसारंग ॥ ॥ तिताल ॥ तजिदीजैंगोहनसोहनमनमोहनगुमांनी ॥ परीवुरीय हटेवानिडरअतिअंचरछुवतलयेदधिदांनी ॥ झूटैंझगरतडगरतजतन हिंअहाकहालंगराईठांनी ॥ नागरकुंवरतिहारेमनकीमैंअवसब जानीजूजानी ॥ १ ॥ तिताल ॥ जोतोअवइनहिंछुवोगेदधिदांनी॥ तोएगोपकुंवारिहमहूतैंनांहिंरहैंगीसतरांनी ॥ ज्यौंतुमनंदनंदनत्यौं एऊअपनेकुलअभिमांनी ॥ जाहुचलेनागरगुणआगरसूधैंगैलगु मांनी ॥ २ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने एदोहा ॥ तियअ धीरद्रुमभीरतहां, डोलतजमुनांतीर ॥ कीरपढावतनीरदग, स्यांम मिलनहियपीर ॥ १ ॥ छुटेवारडगमगतपग, श्रमवससिथलअं गेट ॥ फिरतदुपहरीद्रुमनिमैं, मोहनमिलनसहेट ॥ २ ॥ सघन कुंजअतितिमरतउ, मगपावततिहिंवेर ॥ राधारूपउजासकों,

व्हैमंडलचहुंफेर ॥ ३ ॥ फुलिवैनोसुभवासवस, लईआलिसैंनीघेर॥ सारंगनैंनीफिरतवन, सारंगहीकोवेर ॥ ४ ॥ नागरियाद्रुमलत निमैं, दमकतगऊरसरीर ॥ मनुहेरतघनस्यांमकौं, दामिनिफिरत अधीर ॥ ५ ॥ पदरागसारंग ॥ इकताल ॥ तरवरछांहतीरजमु नांकी, कीरपढावतडोलैं ॥ रूपरासिकोऊनवलकिसोरी, मोहन कहिकहिबोलैं ॥ झमकिझुकावतिडारकुंजकीबैंनीपीठभवंगकलो लैं॥ नागरीदासध्यांनरसमातीमूंदिमूंदिदृगषोलैं ॥ १ ॥ इकताल ॥ भूलीसघनबनफिरतअकेली ॥ स्यांमस्यांमकहिटेरतहेरतदेषिद सारोवतद्रुमबेली ॥ व्हैगयोबदनकंवलकुमिलौंहौंठीकदुपहरीसंग नसहेली ॥ नागरियाअकुलायमनोहरआयअचांनकभुजभरि झेली ॥ २ ॥ तिताल ॥ चलेजातगहबरबनकौंमिलिगरबांहींदी नैंदोऊजन, ठीकदुपहरीश्रमितजांनिमनमुरलीसौंलपटायपीतवसन छांहकरतमुष घरस्यांमघन ॥ झलकतस्वेदअरुनईतियमुपफूंकदेत पियसुंदरअधरनिप्यारीजूहसततवैंमनहीमन ॥ नागरियामृगवृंद मनोहरनिरषतरूपफिरतसंगवनवनइकटकव्हैमनौंचित्रलिखेतन ॥ ॥ ३ ॥ चौताल ॥ वैठेआयकुंजकीछहियां ॥ ढुरवतपवनपीत पटसौंपियप्रियागहतहसिबहियां ॥ तनमनसिथलकरतस्यांमघनछ बिबाढीतिहिठहियां ॥ नागरीदासद्रुमनिढुरिदेपतरीझतहैंमनमहियां ॥ ४ ॥ रागसारंग ॥ इकताल ॥ चलत ॥ रीकपटकीप्रीतिसौंड रियैं॥मनऔरसुषऔररूपछिनऔरऔरलपिहियमांहिहहरियैं॥ नाग रियागुनसमझिस्यांमकेअबपरबसक्यौंपरियैं ॥ अरीजानदेवहो नायकसौंभूलिनेहनहिकरियैं ॥ ५ ॥ इकताल ॥ ब्रजकेलोगहैं

कपटी॥ चलेजानदैंवातकरैंमतिकहापरतरपटी॥ सुपनैंहूनपतइयेइन कौंसांवरेललावडेझपटी॥नागरियायादेसनवसियेयेश्रंपियालपटी ॥ ॥ ६ ॥ इकताल ॥ कहूंकैंसैंकैंमोहिभावतनंदढटौंनां॥ करतउपाय मरमविनजांनैंहौंजुरहौंगहिमौंनां॥ दिनदिनहौंदुवरीदइयाकियोमंद हसिटौंनां ॥ नागरीदासनैंनअतिभूपेचाहतस्यांमसलौंनां ॥ ७ ॥ इकताल ॥ सैंननिसमझावहींतोहीश्रजहूसमझिनादांनपियकरैं श्रप नो॥ सैंननिहींदैंउत्तरतूलपिचितवनिचाहसनी॥काजबिगारतिलाज वावरीसीषमांनिइतनी ॥ नागरीदासमिलायमनोहरनैंननिनैंन अनौं ॥ ८ ॥ तिताल ॥ होसांवरेग्वारमेरीसौंइतआय॥ गरईगगरि याउठतिनमोपैंताहिनूदैहुउठाय ॥ कँवलपत्रलैमोमुपऊपरछांहकि यैंनूजाय ॥ नागरीदासचतुरपनिहारनिसंगलयेस्यामलगाय ॥ ९ ॥ तिताल ॥ चलत ॥ कदमकीछांहगहरीसीतलसुपदैंनीं ॥ टी कदुपहरीघामघनेरीघरींकरहोनैंमृगनैंनी ॥ सुनिमुसकायफिरि छविसौंवलिवैठीहैंचलिगजगैंनीं ॥ नागरियाहरिपवनदुरावत पोलिपीतउपरैंनीं ॥ १० ॥ इकताल चलत ॥ झूम तमालतीगाहिरंगभरीअलबेली ॥ वैंनीवडीहिलोरतछविसौंपिस तहैंफूलचंवेली ॥ श्रंचलउलटिसीसपैंडारैंप्रीतमप्रेमगहेली ॥ गा वतमधुरकंठसारंगधुनिगहवरकुंजअकेली ॥ नागररसिकस्यांमसु निस्यांमांश्रायभुजनभरिझेली ॥ ११ ॥ आंनकविकृत तिताल ॥ मैंअपनौंमनभावनलीनौं ॥ इनलोगनिकोकहाकीनौं ॥ मनदैंमोल लयोरीसजनीरतनअमोलकनंददुलारोनवललालरंगभीनौं ॥ कहा भयोसवकैंमुखमोरैंमैंपायोपीयप्रवीनौं ॥ रसिकविहारीप्यारोप्रीतम

सिरविधनांलिषदीनौं ॥ १२ ॥ तिताल ॥ बीरारेषेवटियाल्याव ल्यावनावरियापाररेउतार ॥ दैहूंतोहिकंकनाहाथकोस्यामविनव्या कुलभइहौंनकरिरेअवार ॥ वहिधुनिसुनिबंसीबनवाजतकहाकरौंद इयाबिचगहरीधार ॥ जैहौंपारचलिभेटिहौंभांवतोअबहौंरहौंगीनां हिनागरियावार ॥ १३ ॥ तिताल ॥ मनमोहनाहोलागीछूटतनां हिं ॥ तुमतोनषसिषकपटभरेपैंनैंननिसौंनवसांहि ॥ जिततितचारच वावचलतजबसुनिसुनिमनपछितांहिं ॥ नागरइनअंखियनकीघाली तुमहिकहोकितजांहि ॥ १४ ॥ तिताल ॥ कँवलकेपातमैंलैआयेप्री तमपांनी॥ अंजुरनिपीवतहैंप्यारी ॥ गईप्यासआईनैंननिमैंदोऊदीठ टरतनहिंटारी ॥ ठीकदुपहरीनिरजनबनजलकूलछांहसुषकारी ॥ नागरियाश्रममेटतमोहनमहामदनमनुहारी ॥१५॥ इकताल ॥ अ रीपियचंदनलगावैंतबप्यारीसतरावैं ॥ मिसहीमिसरसफंदडारिकैमं दमंदबतरावैं ॥ पुनगुलावसीसीकरलैंलैंतनछिरकैंछिरकावैं ॥ नाग रियादंपतिग्रीषमरितुसषीनिकेनैंनसिरावैं ॥ १६ ॥ चौताल ॥ दंप तितनचंदनपटपहिरैं ॥ चंदनपौरऔरलेपचंदनकोउरचंदननहिंट हिरैं ॥ दोउमुषचंदनमैंछिरक्योगुलावमांनौंसोहतसुधाकीबूंदैंअति छबिछहरैं ॥ नागरियानागरबिहारचारुचंदनकैंचहलैंपरचोहैंमेरो निकसैंनमनगजगहिरैं ॥ १७ ॥ तिताल ॥ महलटसीरदोऊवैठे मोजमैंहोजमैंपायझुलायैं ॥ गरवाहियांझुकिलेतफुंहारानिमुपढिगमु षहिंझुलायैं ॥ स्वेतमिहीउपरैंनांनिमैंछबिसोहतबारषुलायैं ॥ नागरि यादंपतिग्रीषमरितुसषियनकेनैंनसिरायैं ॥ १८ ॥ इकताल ॥ स षिसुंदरमंदिरसीरोबिछौनांसमीरसुबासनहींहरषै ॥ तहांदंपतिरंग

विनोदकरैंललितादिप्रमोदनिसौंपरपैं ॥ छविसौंजहांछूटतहैंजल जंत्रसुयौंमनकौंउपमांकरपैं ॥ यहनागरबादरकैंबदलैंअवनीमनौं ऊरधकौंवरपैं ॥ १९ ॥ इकताल ॥ अरीघूंघटमैंतेरेमनमोहनमंडरा वेंरी ॥ मुषमैंमौंनिनीरनैंननिमैंपीरनकाहूजनावैंरी ॥ नवतननेहसुगं धकीचोरीकोकिहिंभांतिदुरावैंरी ॥ नागरियातरवनितैंलागीलगन आगिदरसावैंरी ॥ २० ॥ इकताल ॥ रेरेपैरइयातनकरांहिभारिदेमे रीगगरी ॥ रहिगईओघटघाटअकेलीगईऔरसगरी ॥ भूलीमग आवनद्रुमनिजलपूरितविपमगरी ॥ नागरपीयभीजेतनभेटी भुजभरिरूपअगरी ॥ २१ ॥ चौताल ॥ सोहतरंगभरेदोऊम हलउसीरमधिभीजेहैंफूहारनिगुलाबनीर ॥ बरुनींअलकभौंहबूंदें फवीहैंमांनौंसरदकंमलपरओसजैसैंगौरस्यांमअंगनिलपटेचीर ॥ गावैंतहांदंपतिवजावैंहैंबिसाषावीनवैठीहैंप्रबीनसषीसभासरतीरती र॥नागरीदाससुपानिवासग्रीषमविहारचारुसांवनसोलगिरह्योरसझर पुंजकुंजधीरसमीर ॥ २२ ॥ इकताल ॥ ढौरीलागीरहैंइनअंषियन कौंनपरीयहवांन॥ नीरभरीतऊप्यासीचहैंछविसागरस्यांमसुजांन ॥ वासरगतरजनीआगमरहैंआसाअरुझेप्रांन ॥ नागरमुषससिसुधा लोभलगिछुवतनहींकछुआंन ॥ २३ ॥ तालचौताल ॥ हमदेषिआ वतक्योंआएकतराइतैंठाढेअवरोकिकैंकदंबानिकीछांहींहो ॥ क हांधौंभयोज्योव्रजराजकेकुंवरतुमसुनौंजूकाहुकेपरमेसुरतोनांहीं हो ॥ हमतुमएकजातिपांतिकेहैंव्रजवासीकौनकेंभरोसैंलालाभूले मनमांहीहो ॥ नागरमांगतदानरापतहैंमांनयांतैंबाबाव्रषभानह्यां वसायेदेकैंवांहीहो ॥ २४ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए

दोहा ॥ मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥ इतउत बाढीदुहुंनिमन, फूलनिबीनतफूल ॥ १ ॥ झूंमिझूकावतद्रु मलता, उघरतउरउरमाल ॥ फूलनितोरतदेतफल, मन मोहनकौंबाल ॥ २ ॥ दोऊमिलिफूलनिबीनहीं, जमुंनाकूलनि सांझ ॥ रंगरलीअतिव्हैरही, कुंजगलिनकेमांझ ॥ ३ ॥ फूलनि सौंबैनींगुहत, रचतफूलकेहार ॥ फूलभरेलपटातदोउ, भुजभरिदृढ अंकवारि ॥ ४ ॥ कौतिकलागेबालके, संगडोलतनंदलाल ॥ छुव तजुहीकेफूलकौं, होतजुहीकीमाल ॥ ५ ॥ दुरिदुरिभेटतद्रुमनिमैं, फूलभरीसुकँवार ॥ लंपटमधुपनवांवहीं, पीतजुहीकीडार ॥ ५ ॥ वनफूल्योफूल्योजुमन, फूलवेसअभिरांम ॥ सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिकैंगौरीस्यांम ॥ ७ ॥ फूलनिमिसुतियसौंमिलत, सषीरूपर चिछैल ॥ नागरियाकेहियबसो, फूलरंगीलीसैल ॥ ८ ॥ पद राग फूरबी ॥ इकताल ॥ आईहैंगेहस्यांमांउपबनतैंलियैंभांवतोसंग ॥ डोलनिकोश्रमदूरिकरनहितमंजनकाजचलाकुंजकौंएरीवगरायेहैं बारसिंवारपीठपरकारेसाचिक्कनरंग ॥ न्हावतअहाकहाछबिपावतगो रीढिगनईबालसांवरीटहलकरतश्रीअंग ॥ नागरिसषीओटलैयें ठाढीकंवलचरनकीचंदनपावरीएरीदुरिदेषतवावरीसीरहीजकिभई नैंननिगतिपंग ॥ १ ॥ अरीयहकौंनजमुनांकूल ॥ जुवतिमंडलम ध्यमांडित ॥ द्रुमनिबींनतफूल ॥ १ ॥ ललितभालबिसालबैंनीगु हीसिथलसंवारि ॥ ज्यौंवचंदनलताप्रतिराहिअरुझिपन्नगना रि ॥ २ ॥ हावभावकेभवनभूद्दिगदुरिमुरतलजात ॥ जालघूंवटमैंप रेजुगमीनज्यौंअकुलात ॥ ३ ॥ उच्चनासापरिसुवेसरिविमलमुक्ता

लोल॥ निरषिमोमनसंगताकैंरह्योआतुरडोल ॥४॥ अरुनअधरनिद सनदमकतकरतजबवतरांनि ॥ मनहुविद्रुमआलबालमैंप्रगटिहिरा पांनि ॥ ५ ॥ कामक्यारीसुभगश्रवननिप्रतिप्रसूंनझराय ॥ अलक ढिगासिंगारिबेली ॥ पवनलगिडिगुलाय ॥ ६ ॥ रतनझांईबिबकपो लनिपरीनहिंठहरात॥किधौंमेरीदीठिवहठांफिरतपगरपटात ॥७॥ चि वुककूपकैंरूपपांनिपपरतलोयनमीन॥ देषिमुषसोभावढीगोभासुकां मनवीन ॥ ८ ॥ कंठकंचननालउपमांयहसमहैंन ॥ जलजलरछ विसिंधुलहरनिधारपगठहरैंन ॥ ९ ॥ अैंचअंचरलेतआंननलाजछि नछिनभोय॥वदनविधुपटनीलघनदुरिदुरिप्रगटपुनिपुनिहोय॥ चाल चितइनपरतजबउतहोतबांहसचाल ॥ पीतनवलासीकिधौंहैंकनक कमलमृनाल ॥ ११ ॥ सर्बअंगसुढारसुखमांकहीनआवतबैंन ॥ नंदकीसौंज्यौंववीततजांनैंहैंमनमैंन ॥ १२ ॥ हारभूषनभारभां मनिडुलतचारुसरीर ॥ मनहुंदीपकलोयलहकतपरसमंदसमीर ॥ ॥ १३ ॥ स्वासवसआमोदतैंचहुकोदआलिभंकार ॥ तैंसियैंफेरनि कंवलछविपगनिझंझंकार ॥ १४ ॥ भेदगतिसंगीतसहजईपायपद्म निवास ॥ चरननखमनिचंद्रिकावनिअवनिकरतउजास ॥ १५ ॥ कौंनहैंकहानांवइनकोहरयोमोमनबांम ॥ कह्योनागरीदासतबहसि कुंवरिराधानांम ॥ १६ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने एदोहा॥ नटनागरकलगांवहीं, वीचरागनटबैंन ॥ सुंदरतननटवरचलत, न टचेटकसेनैंन ॥ १ ॥ नटानटीतूकरतही, अबलपिरूपरसाल ॥ समैंभईनटरागकी, आवतनटवरलाल ॥ २ ॥ नटनागरलषिकैंउतै, वेऊगुनसरसात ॥ घूंघटहीमैंनैंननट, उलटपलटकरिजात ॥ ३ ॥

जूराचूरापीतपट, लसतिकाछकटिलाल ॥ नागरियाकेहियबसो, नटवररूपरसाल ॥ ४ ॥ पदरागनट ॥ तालचरचरी ॥ सषीदेपिन वनटभेषधरैंगुपाला ॥ गावतनटरागमुषकंवलधरिमुरलिकापरसिचर ननिकँवलकँवलमाला ॥ नटनअरीचालिसुफलकराहिंकिंनट्टगानिकौं नवलनटनागरअतिरूपजाला ॥ नागरीदासछबिदेषिइकटकरहींब हुरिलगींनटहिनटरटरसाला ॥ १ ॥ इकताल ॥ एअंषियांकाहूकी नभई ॥ हैंप्रसिद्धसंसारकहांनीकहतहौंनांहिंनई ॥ कहियेकहामहा अरबीलीबरजीतितहीगई ॥ नागरीदासलालगिरधरकरमोकौंबांधि दई ॥ २ ॥ इकताल ॥ गईहुतीबेचनगोरसकैंरोकीआंनिदांनमिस मोहनवाकीचितवनिमेंरेहियमांझकसकैं ॥ अंचरागहिफिरिबहियां गहीरीकरमेरोमसक्योसुअबलौंचसकैं ॥ नागरीदासकठिनमोहिवी ततउंहितोमनलीनौंहसिहसिकैं ॥ ३ ॥ या अनुक्रमकीअलापचा रीमैं दैंने ए दोहा ॥ सांझभोरचितचोरको, तहांदुरिमिलन बिहार ॥ पौरिसांकरीसुपदगिर, गहवरवनअंधियार ॥ १ ॥ मिलतछैलभुजभरिप्रिया, पौरिसांकरीसैल ॥ कबहूनछाडतानि तपरैं, उहांगैलकीगैल ॥ २ ॥ फिरतगउश्रीरागकी, होतबंसु रियानिटेर ॥ गहवरगिरदुरिमिलतदोऊ, सांझसमैंतिंहिंबेर ॥ ३ ॥ अंकमालहृढदुहुनिमैं, परीसुछूटतनांहि ॥ महाप्रेमगहवरछके, गहवर गिरकैंमांहिं ॥ ४ ॥ गहवरगिरकेतिमरमैं, परीचमकिचकचौंधि ॥ सही स्यामघनसौंमिली, भामिनिदांमिनकौंधि ॥ ५ ॥ इतआवतिबररासिकि नी, उतैंरसिकसिरमौर ॥ नागरियादुरिमिलतदोऊ, गहवरगिरकी ठौर ॥ ६ ॥ पदश्रीराग ॥ तालचपक ॥ गहवरगिरसांकरीगली ॥

रहीनसंभारदेहसुधिविसरीमिलीऔचकव्रषभांनलली ॥ दच्छिन करगेंदुककुसमनिकीबांमअंसभुजसुहृदअली॥ अंचरडारैंआधैंसिर छबिमत्तदुरदगतिआवतिचली ॥ गुनप्रयोगसहचरिसंभरावतिहृदैं रूपमूर्छासुचली ॥ नागरीदासमिटायललकरतिमिलतउरजउरग तिवदली ॥ ७ ॥ चौताल ॥ व्हैंगईभैंटअचांनकबनमैंगहबरठौरावि पममगमाई ॥ गिरतरुसघनसांझअंधियारोतहांदोउलपटांनैंभुजभ रनिसुहाई ॥ सुपनौंसमझिनैंनमूंदिरहेइतउतछुटीतिनअंकमालसुधि विसराई ॥ अतिआशक्तअमलमूर्छितमनकंपितदेहसिथलसियराई॥ आयसपीसंभरायनिवारेतवलोकलाजगुरजनसुधिआई॥नागरियाच लेचितवतफिरिफिरिलगनिअगाधाराधाकुंवरकन्हाई॥८॥या अनुक्र मकीअलापचारीमैंदेंनें ए दोहा ॥ दांनकेलिजोमनबसैं, ताहिनक छूसुहाय ॥ तजिवृंदावनमाधुरी, अनतनकबहूंजाय ॥ १ ॥ मेरे नितचितमैंवसो, दंपतिदांनबिहार॥ मुषपरझूठीझगरई, नैंननिकरत जुहार ॥ २ ॥ मोमनलागीदुहुंनिको, दांनकेलिवतरांनि ॥ नैंनानि हाहापानइत, उतभौंहैंसतरांनि ॥ ३ ॥ गउरघटाअरुसांवरी, उन ईनीरसनेह ॥ षोरिसांकरीगिरतहां, दांनरंगझरमेहैं ॥ ४ ॥ गोरस मांगतकरतदोऊ, नैंनसैंनसनमांन ॥ नागरियाकैंहियबसो, दांनरंग वतरांनि ॥ ५ ॥ पदरागगौरी ॥ तिताल ॥ दांनदैरीव्रषभांनकुंवा रि, छाडिदेहुअवचारविचारकरतझगरईहोतअवार ॥ हाहागोरस प्यारीकरतझगरईहोतअवार ॥ हाहागोरसप्यारीपाय ॥ क्यौंझुकि झिझकतहैंअनपाय ॥ नागरिनैंननिकरिसनमांन ॥ हसिवसकरि लयेस्यामसुजांन ॥ ३ ॥ तिताल ॥ लालनैंकमारगदीजैंएतीनकी

जैंवराजोरी ॥ ठाढैंझगरतसांझभईअवहारिपसारतझोरी ॥ थहरत देहनठहरतसिरपरगरईलगतकमोरी ॥ टरतनहींहोडरतनहींहोकरत नहींहोथोरी ॥ जिनकौंतुमयहअंचरागहतहोसोहैकुंवरिकिसोरी ॥ हियेओरकछुलालचललकैंपलकैंकरतनिहोरी ॥ प्यारेकुंवरछवीले नागरपाईचितकीचोरी ॥ ४ ॥ तिताल ॥ छांडिछांडिदैरेअंचल चंचलछैला ॥ इतीकरतलंगराईललाक्यौंरोकिमहीकोगैला ॥ जां ननदेतदांनमांगतहठिठाढोव्हैआडोअरैला ॥ सीपेकहांत्र्यनोपेना गरएजोवनकेफैला ॥५॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेने ए दोहा ॥ कंवलमालहियकरकँमल, कँवलनैंनसंगधैंनु ॥ प्रफुलितकँवलपरा गजुत, यौंमुषमंडितरैंन ॥ १ ॥ घटकीसटकीलाजसव, गोधनसंग लषिलाल, अटकीनटकीदृगनिमैं ॥ वहलटकीलीचाल ॥ २ ॥ आ छैंकाछैंवेषनट, गायनिपाछैंलाल ॥ चलैंकटाछैंफूलसर, भूलतिसु धिव्रजबाल ॥ ३ ॥ आवतलषिनंदलालकौं, झूंमिझरोषानिझांक॥ कलीफूलडारतअली, लिषिलिषिहितकेआंक ॥ ४ ॥ गोधूरिकवि रियांभई, मिटयोविरहदुषदंद ॥ प्रफुलिततियकुमदावली, लषिना गरव्रजचंद ॥ ५ ॥ पदरागगौरी ॥ तिताल ॥ गोवर्द्धनगिरसिपर स्यांमचढिफेरतपीतपिछोरी ॥ बोलीवहुरिगऊवंसीमैंलैंलैंनांमधूम रिधोरी ॥ सुंनिधुनिधैंनुवैंनश्रवननिमैंमोहँमगनआतुरउठिदोरी ॥ बिबिधिभांतिभूपननिअलंकृतरुंनकझुंनकवनसव्दछयोरी ॥ उतरि गिनतगोधनअपअपनौंबोलतमोहनवचनठगोरी ॥ नागरीदासच लेनंदीसुरगोपकुंवरिमिलिगावतगोरी ॥ १ ॥ इकताल ॥ रूपसिंह जीकृत ॥ वनतैंवांनिकवनिव्रजआवत ॥ वैनवजायरिझायजुवति

जनगौरीरागनिगावत ॥ वारिजबदनलालगिरधरकोनिरषिसषीस
चुपावत ॥ रूपकटाछिकरतप्यारीपररूपसिंहअलिभावत ॥ २ ॥
तिताल ॥ आवतसषाअंसपरधुके ॥ फेरतकँवलकँवलदलसेट
गमदआलसवसझुके ॥ उरझतचरनमालबैजंतीचलतमंदगतिरुके ॥
नागरियामनलोचनसबकेहरिहीकेव्हैचुके ॥ ३ ॥ इकताल ॥ सब
ब्रजकीजीवनिसांवरोसषिआवतहैंचलिदेषिरी ॥ जोनिरषतसोरहत
ठगीसीदृगनहिंलगतानिमेषरी ॥ नैंनकुसमसरभौंहधनुषसीतापैंकन
कक्तरेपरी ॥ नागरीदासगउनकैंपाछैंकाछैंनवलनटबेषरी ॥ ४ ॥
॥ इकताल ॥ लालमनमोहनरी ॥ आवतगोधनसंग ॥ लाल ॥ ल
लितअमैंठाझुकिरह्यो ॥ मन० ॥ फैंटापियररंग ॥ लाल० ॥ फैंटा
पियरैरंगरंगभरे ॥ अंबुजनैंनबिसाल ॥ छविसौंकरचकडोरफिरावैं॥
आवैंमदगजचाल ॥ सोहतसषासमूहचहूंदिसएकदेतमुषबीरी ॥ गो
कुलवधूनिरषिरहिइकटकलागतपलआधीरी ॥ १ ॥ देषिपौरिहिय
हिलगकी ॥ मन० ॥ जहांठाढेठहिराय ॥ लाल० ॥ मुक्तमालतो
रीतहां ॥ मन० ॥ सबकीदृष्टबचाय ॥ लाल० ॥ सबकीदृष्टिबचा
यकियोमिसस्यांमसुघररंगभीनैं ॥ चितवतआपपरोषिरकीदिसऔर
मोतियनिबीनैं ॥ स्वेदकंपघनस्यांमपुलकितनफुरतनहींकछुबैंना ॥
इतगईगइयांउतैंउरझिरहेनागरनागरिनैंना ॥ २ ॥ राग गौरीका
ख्याल ॥ तिताल ॥ वडडेमोतिनवारीलालमेरीबेसरिदै ॥ घरसासु
लरैंगीमतिहीनी ॥ बेसरिअतिरंगभीनी ॥ कहिकौंनकारनतैंलीनी ॥
परतहैसांझकन्हाई ॥ मनकीमैंसबपाई ॥ चाहोसोनाहिंहौंनां ॥ प्या
रेनागरस्यांमसलौंनां ॥ ३ ॥ तिताल ॥ अरीइनबंसीवारेमेरोमनली

नौं ॥ मोतनमृदुमुसकायभायसौंचितवनिमैंकछुकीनौं ॥ इतउतच लतनचरनथकीबिचटौंनांसोपढिदीनौं ॥ नागरियाग्वारनिमोंहीमग प्रगटचोहैंनेहनवीनौं ॥ ४ ॥ इकताल ॥ आयआयहरिगलीहमा री ॥ गायगायनिकसतगौरीसुनिबौरीमतिनहिंजातसंभारी ॥ राग रूपकीडारिठगोरीलयोसुलयोमनमांनिकभारी ॥ नागरियाहमतो अतिभोरीबेजगतकेबठगियाबडेबटपारी ॥ ५ ॥ इकताल ॥ आजु सषीभेटभईमोहनसौं ॥ आयअचांनकभुजभारिलीनीफिरनसकीगौ हनसौं ॥ अजहुंकंपधकधकीहियमैंकहततोहिसौंहनसौं ॥ अबकैसें नितिबचूंरोकिमननागरवृजजौंहनसौं ॥ ६ ॥ तिताल ॥ आजुसषी यातैंभईअबेर ॥ गईहुतीहूंषरिकनंदकैंगोदोहनकीबेर ॥ तहांठाढो हुतोकुंवरसांवरोभईदृगनिभटभेर ॥ घूंघटबिसरिगईरहिइकटकनट नागरमुखहेर ॥ ७ ॥ या पदके गायबेकेबीचबीचमैंदैने ए दोहा ॥ मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥ इतउतबाढीदुहुनिमन, फूलनिबीनतफूल ॥ १ ॥ दोऊमिलिफूलनिबीनहीं, जमुंनाकूल निसांझ ॥ रंगरलीअतिव्हैरही, कुंजगलिनिकेमांझ ॥ २ ॥ वन फूल्योफूल्योजुमन, फूलबेसअभिरांम ॥ सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिकैंगोरीस्यांम ॥ ३ ॥ नीलपीतपटछोरछवि, उरझेद्रुमकीभी र ॥ सुरिसुरझांवनिदुहुंनिकी, मेरैंउराझिवीर ॥ ४ ॥ फूलनिमिस तियसौंमिलत, सषीरूपरचिछैल ॥ नागरियाकेहियबसो, फूलरं गीलिसैल ॥ ५ ॥ पद ॥ जमुंनांकैंकूलकूललतारहीझूलरी ॥ तहां हैंसषीहैंनीलेपियरेदुकूलरी ॥ गोधूलकबेरहूतैंव्हैगईअबेरमैं ॥ देष तठगीसीरहीदोऊतिहिंबेरमैं ॥ सांवरीओगौरीछबिसोहैंअलबेलीहैं॥

सवहीसौंन्यारीन्यारीडोलतअकेलीहैं ॥ बीनतहैंफूलफलहिलहतुहैं॥ झमकिझुकावैंझूंमिडारनिगहतुहैं ॥ बेसरिअलकमालउरझतपातुरी॥ वाकीसुरझांवनिमैंउरझीहीजातुरी ॥ मेरीसौंकपटतजिपोलिमुपमौं नहैं ॥ नागरियामोसौंकहिसषीनेकौंनहैं ॥ १ ॥ तिताल ॥ अणीमें जोगनहोयकित्थांजावांमनलैगयाबंशीवाला ॥ इनगैलरियांआय कैं ॥ मुजपरफूलचलाय ॥ इस्कलपेटीबातसौंकछुकहिगयामुरिमु सक्याय ॥ १ ॥ जवतैंकलपावांनहींपलनलगैंदिनरैंन ॥ कहरकले जेमैंलगीउननैंनौंदीसैंन ॥ २ ॥ मनमोहनदेकारनैंफिरांउवाहिनपा य ॥ ढूंढांगभरूसांवला ॥ गयामनमथअलखजताय ॥ ३ ॥ रूपउजागरयारविन ॥ रहिदानहींसयांन ॥ आवगलैंलगि भावते ॥ येनागरदिलज्यांन ॥ ४ ॥ इकताल ॥ जोगियाते रेकौंनटेवपरी ॥ भिछादैंदीलैंदानाहींआवतवरीघरी ॥ पलन हिंटारतहेरिरहतमुपआंपैंलोभभरी ॥ नागरस्यांमचवावचलैंगो यहजुवुरीनगरी ॥ ६ ॥ १६ ॥ या अनुक्रमकी अलापचारीमैं दै ने ए दोहा ॥ रूपधारघनस्यांमकी, छवितरंगकीझोक ॥ प्रेम प्यासकैसैंमिटैं, नैंननिनांन्हीओक ॥ १ ॥ पतिकुटंबदेपतसवैं, घूं घटपटदियैंडारि ॥ देहगेहबिसरेतिन्हैं, मोहनरूपनिहारि ॥ २ ॥ दृगपौंछतअंतरअधिक, सहीनजातनिमेप ॥ पलपलजलभरिआव हीं, रूपमाधुरीदेपि ॥ ३ ॥ वडोमंदअरिबिंदसुत, जिहिंनप्रेमप हिचांनि ॥ पियमुखदेखतदृगनिकौं, पलकरचीविचआंनि ॥ ४ ॥ मनमोहनमुपनिरपिकैं, अंपियांनांहिअघात ॥ नागरिदृगनिचको रकैं, सवससिकहांसमात॥५॥पदरागकल्यांण ॥ तिताल ॥ रूपसिं

हजीकृत ॥ अनियारेलोयनमोहन ॥ माधुरीमूरतिदेषतहीलालच लागिरह्योमनगोहन ॥ हटकतमाततातयौंभाषतलाजनआवततोंह न ॥ हौंअपनैंगोपालरंगरातीकाहिदिवावतसौंहन ॥ संध्यासमैंपरि कतौंनिकसीलियैंदूधकोदोंहन ॥ रूपसिंघप्रभुनगधरनागरवसकी नैंभौंहन ॥ २ ॥ तालचपक ॥ इनअंषियनहौंहरिकौंबेची ॥ परब सभईदईकहाकीजैंपरिगईबातकुपेची ॥ प्रेमदांमतैंबांधिलईहौंआ तुरमदनंदलाल ॥ क्यौंछूटौंब्रजचारुचौंहटैछापदईकरभाल ॥ ना गरीदासजगतसुषियारोमोहिनांहिछिनचैंन ॥ जानैंसोईलगीहोयजा कैंमुसकनिचितवनिसैंन ॥ ४ ॥ इकताल ॥ फिरिफिरिजातहैंलो यनभारे ॥ रूपगरबसौंभरेछबीलेप्रीतमाहितमतवारे ॥ मृदुमुसक निसौंभीजिरहेबिचघूंमतमदनअपारे ॥ नागरियारहिजातचित्रसे चितवतनंददुलारे ॥ ४ ॥ या अनुक्रमकीअपचारीमैंदैने ए दोहा ॥ षिलतकमोदनिकुसमज्यौं, निरपिचंदकीकोद ॥ त्यौंजियसुनत प्रमोदव्हैं, मधुमयरागकमोद ॥ १ ॥ छैलछलीपनघटरह्यो, रागक मोदहिगाय ॥ मगमोहीपानिहारिनी, प्रेमवारुनीपाय ॥ २ ॥ प निहारीहारीपनहिं, लपिमोहनमुसकात ॥ पनघटिगोसबकोसपी, इंहिमगपनघटजात ॥ ३ ॥ बिषसनियांदृगसरनिजिय, हरतचिक नियांलाल ॥ कनियांव्हैंआवतसषी, जातसुपनियांबाल ॥ ४ ॥ ना गरिसिरगागरिधरत, हरिलषिरहीलुभाय ॥ परीरूपबेरीपगनि, दृगभरिचल्योनजाय ॥ ५ ॥ पदरागकमोद ॥ इकताल ॥ मतवा रोठाढोबाटमांझ ॥ कठिनभयोघरजैबोसजनीडरलागतत्यौंत्यौंप रतसांझ ॥ सोहतसीसलटपटीपागियां,छुटेबंदउरमदकेफैल ॥ नाग

रियाअतिनिडरनंदको, नवजोबनछकिरह्योछैल ॥ १ ॥ इकताल॥
कैसैंकैंजांऊंपनियांभरनमगबिचठाढोकन्हैया ॥ भरीगगरियाआ
इकैंरितवैडरतहैंनांहिजुदैया॥ हौंभोरीवैसीनहिंजांनौंउतवहछैलछलै
या ॥ नागरियाडरधरकतछातीहैंब्रजलोगचवैया ॥ २ ॥ इकताल॥
पनियांभरनगईऐसैंपनघटपनिहार ॥ ठाढोईरहैंजहांअरीनितलंग
रनंदकुंवार ॥ छलसौंछलीचुराईइंढुरियादईसलिलबिचडार ॥ स
कीनधरिकैंसीसगगरियाअतिव्हैगईअवार ॥ आयनिकटउरलाय
लईकरिअधरपांनतिहिंबार ॥ नागरियामनलैमोहनकोव्हैआईउर
हार ॥ ३ ॥ इकताल ॥ अरीआजमोहिमोहनअतिभायेउन्हैंहौंहीं
गईरीझुभाय ॥ हौंहूंरहीलपिथकितइतैंउतवेऊरहेलुभाय ॥ लोगकु
टंवसवकछुकहोअवजियधरिभावकुभाव ॥ नागरियाहृगलगनिला
लसौंलगिगईसहजसुभाय ॥ ४ ॥ इकताल ॥ मीतपियारोमेरैंचोरी
चोरीआवैं ॥ जोसोऊंढुरिअपनीअटातऊअचांनकआंनिजगावैं ॥
लोकलाजडरडरीजातहौंमतिकोऊलपिपावैं ॥ नागरियानिधरक
मोहनजियरसवसरैंनिचितावैं ॥ ५॥ रागईमनकाष्याल ॥ तिताल॥
मींतमिलनकीमोहिपुमारीलगीरहैंदिनरैंन ॥ अंगअजकजकपरत
नहींजियभरिभरिआवैंनैंन ॥ जबतैंमनमोहनभेटीहूंबिसारिगईसुप
सैंन ॥ नागरियाफिरिअधररसासवपियैंविनांनाहिंचैंन ॥ ३ ॥
इकताल ॥ वाठगियाकाहिवातमेरोमनबांधिलीनौंसाथ ॥ नेहडोरि
दृढवंधीगरैंइतउतमोहनकैंहाथ ॥ मनपरवसपरिगयोविचारोजैसैं
कोऊअनाथ ॥ नागरियाकहतनबनैंकछुकाठिनाहिलगकीगाथ ॥४ ॥
तिताल ॥ जालिमयारहोअैसीकिनअदी॥इस्कलगायषवरनाहिलीती

अबकरदेमुठमरदी॥अपनेसुषस्वारथकेलोभीनजांनतऔरकदरदी॥ नागरीदासमोहनांप्यारेभलेकढेबेदरदी ॥ तिताल ॥ नैंनांयौंहीलगेरीआछेनीकेजीयराकौंपरचोरीजंजाल ॥ काहेकौंगईआजुपनियांहूंहसिचितयेनंदलाल ॥ बिनजांनैंभईभेटअचांनकलिपीटरतनहीं भाल ॥ नागरियामेरेदृगनिकरीअबसबसुषकीहठनाल ॥६ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेने ए ॥ दोहा ॥ अंधियारीघूंघटलियैं, नव जोबनछकपूर ॥ गजगौंनीचलिकैंकरत, गजगरूरकौंचूर ॥ १ ॥ अतिगतिरूपसकौंनकहि, मत्तअदांहनिगौंन ॥ पीठिकटाछिनसौं गिरैं, दीठसहारैंकौंन ॥ २ ॥ ललनारिझायेचलनिमैं, कलनपरत दिनरैंन ॥ गतिकउतगलागेफिरैं, पाइनकेसंगनैंन ॥ ३ ॥ लांवनि ढिगचमकतजरी, पायजेबपन्नांनि ॥ बसीपीयकैंहीयपग, ठुमकि धरनकीबांनि ॥ ४ ॥ जहांजहांपगप्यारीधरत, तहांपियनैंनाविछाय ॥ नागरियासुधिस्यांमकी, चलनिदेषिचलिजात ॥ ५ ॥ पद रागईमन॥चौतालताल॥ आलीमदनमोहनतैंमोहेरीवाकेनैंनानितैंचलतनतेरीयेचलनि ॥ मंदमंदहसिपगधरनिरहीहैंपागिहालिहालिउठैंलटकुंडलहलनि ॥ हौंहीआईतेरैंगतिकौतिगकैंहितप्यारीछाडिअैंडदैरीपैंडगलनिगलनि ॥ नागरीदासलालतलपरचतसघनिकुंजमांझकंवलदलनि ॥ २ ॥ चौताल ॥ सोयेदोऊसुपसेजरगमगेस्यामास्यामपरमसुपदाई ॥ नेहबिबसघुलिनींदघरीघरीचौंकिपरतभुजभरतकहाई ॥ मुंदिमुंदिपुलतिमहाछबिपावतदंपतिअंपियांअतिअलसाई ॥ नागरीदासरैंनियोंबितईनाहींबितईछविहियमैंछाई ॥ ३ ॥ इकताल ॥ वृंदाबनसरदरैंनराकाअभिरांम ॥ रचिहैंरुचिररसिकके

लिराधासंगभांम ॥ वैंनावीनवलयमिलेकिंकिनीमृदंग ॥ नूपुरादि गांनघोपछयोहैंसुधंग ॥ अंसअंसबाहुबंध्योमंडलअषंढ ॥ गोपिनि विचिबिचगुपालधरैंसिषीसिपंड ॥ निर्तहोतअंचलचलतलसतपहुप रैंन ॥ ज्यौंधुजासमूहफहरातमैंनसैंन ॥ मनहुंपवनप्रेरकामिलिगउर स्यांमसंग ॥ मेघचक्रचंचलाबिलासरासरंग ॥ वासवसअधीरसंग संगभौंरभीर ॥ झुलतहारषुलतबारनहींसह्मारचीर ॥ गिरतकुसमकव रिनितैंविवसरसावेस ॥ लटपटायलगतकंठपुलकतनसुदेस ॥ नींवी कुचपरसपांनचुंबनउगार ॥ हावभावलहरबढ्योसिंधुरसअपार ॥ मु रछपरयोमदनवजीदुंदुभीअकास ॥ पहोपवृष्टिहौंनलगीजहांबिला सरास ॥ विथकतलपिरहींरैंनहोतहैंनभोर ॥ नागरनटनिरपिभयो चंद्रमाचकोर ॥ १ ॥ तिताल ॥ थेईतथेईथेईथेईथेईथेईथेईथेई ॥ उघटतलालरसिकमनमोहनरंगभरीनिर्ततहैंप्यारी ॥ मुरजमृदंगट कोरमिलावतगावतसपीसुघरदैंतारी ॥ ललितअंगभुवभंगचितैंपिय विवसभयेबोलतबलिहारी ॥ जगमगरहीरासमंडलमैंनागरियामुषचं दउजारी ॥ २ ॥

## अथ राग कानराका ष्याल ॥

॥ तिताल ॥ राधाप्यारीतैंसांवरेकोमनहरचो ॥ तेरैंहींरसलीन रहतनितज्यैंजलमीनपरचो ॥ मदनमोहनपरतैंजुमोहनीमोहनमं त्रकरचो ॥ इतउतचितनांहिचलतनागरीरूपजालजकरचो ॥ १ ॥ ॥ तिताल ॥ एहोप्यारेनंदलालरसियाकौंनबालउरवसीतिहारैं तुमजुकौंनउरवासिया ॥ इतीरैंनिबितईजुकहांपियप्यारीबाहुजुगक

सिया ॥ मोहिभलेलगतइतेपैंनागरअंगअंगरसमासिया ॥ २ ॥
॥ तिताल ॥ माईइनिअंषियनिलगानिलगाई ॥ पहलैंआपजा
इकैंउरझीफिरिमोकौंउरझाई ॥ बिनदेपैंमुपकँवलकान्हकैंअबन
हिंपरतरहाई ॥ नागरीदासआगिरुईबिचिकैंसैंदबैंदबाई ॥ ३ ॥
॥ तिताल ॥ सांवरेमोहितेरीसौंरे ॥ बिनदेपैंछिनकलनपरतहैंनैंननि
हाथबिकांनीहैंरे ॥ ठगताफिरतगोरीभोरनिकौंकछुहसिचितैंयौंयौंरे ॥
नागरियाअपनैंबसकरिकैंबहुरिचलततूअपनीगौंरे ॥ ४ ॥ तिताल॥
एरीनैंनाअटकेहटकनमांनैं ॥ घूंघटओटलाजगुरजनकीतनकनहीं
जियआंनैं ॥ जबहीदृष्टिपरतमोहनमुषइकटकन्हैंउररानैं ॥ नागरी
दासप्रीतिअंतरकोरहनिदेतनहिंछांनैं ॥ ५ ॥ तालचपक ॥ येरी
कांह्नैंजुकहाकरिजान्यौंतरकितरकिउत्तरदेतउतावरी ॥ घोपराज
श्रीनंदसुवनसौंझुकिझुकिझमकतहैंतूंबावरी ॥ कोटिकांमबिजईमन
मोहनताकीतूबलिजावरी ॥ नागरियाअनभावनिकोछिनछाडि
छाडिसुभावरी ॥ ६ ॥ ताल ॥ कह्नइयातुमराधेजूकैंआवतहोनिक
टनिकटचलेऐसेकबतैंभयेहोधीट ॥ याबनघनबिचरोकिरहतानित
अंगुरीगहतफिरिगहतहौं पहुंचाचालिनदेतमगनीठ ॥ ऊपररिस
अंतररसपूरतमुखझूठीबातैंजुरेनैंनबसीठ ॥ नागरीदासाहालिमिलि
दोऊएकभएरहेहैंकुंजनिनिसरच्योअतिरंगमजीठ ॥ ७ ॥ इक
ताल ॥ दुरतनहींपटवोटआंपैंकनांवडी ॥ मोहनतनदैरहीपीठयहईठ
पंगपगपांवडी ॥ झुकीलाजकैंभारपरतहैंउमडिनिनेहअमांवडी ॥
सबदिसिसूधैंचलतनागरीउहिंदिसिआंवडीबांवडी ॥ ८ ॥ याअनु
क्रमकीअलापचारीमैंदैंने ए दोहा ॥ लगेरूपकेलोभसौं, रोकेनैंक

रुकैंन ॥ कहाकहौंइनकीदसा, महाललचीनैंन ॥ १ ॥ रूपरा शिधनपांवहीं, छिनकनतऊअघांनि ॥ नागरियाद्दगलालची, तजतनलालचवांनि ॥ २ ॥ पदरागनायकी ॥ तालचपक ॥ अहोनैंनमेरेरूपमदिरापियें ॥ इकटकश्रौंकरहतहैंलायैंपरतनांहि विनचैनलियैं ॥ नंदनंदनरसछकेरैंनिदिनऔरतनकछबिनांहिंछि यैं ॥ नागरीदासमहामतवारेहोयकहातिन्हैंअटकाकियैं ॥ १ ॥ तिताल ॥ नवलनिकुंजकांन्हरचितहैंसज्याइतउतकौंरहेरीलगि सुरतिश्रवननैंन ॥ नूपुरकीझांईसुनिबनकेचकोरमोरकुहकिकुहकि सबलागेहैंबधाईदैंन ॥ स्यांमचलेसौंहैंस्यामालईहैंभुजानिभरिटरत ननैंननैंनश्रधरश्रधरलैंन ॥ आनंदश्रपारकेलिकोककीकलानि बढ़ीनागरीदासमोपैंकहीनपरतबैंन ॥ २ ॥ ताल चौताल ॥ वारसिवारसेमांझचंदमुषहारनबीचबंदहैंछूटे ॥ लटपटायदोऊरहे लपटिकैंअस्तविस्तपटभूषनपूटे ॥ पौढेस्यामास्यामश्रमितसुषबल यपंडविपरेकहूंफूटे ॥ नागरियाएकांतविपुनमौंनिसवटपारमदनल रिलूटे ॥ ३ ॥ याअनुक्रमकोश्रलापचारीमैंदैंने ए दोहा ॥ नैंनभंव रभयभारतें, बैठिनसकतिनिसांक ॥ नवतदीठिकैंलगतही, लौंगल तासीलांक ॥ १ ॥ दुरेदुरायेंक्यौंकुंवारि, भौंनअंध्यारैंसांझ ॥ दिपैंअंगफानूसज्यौं, संगसषिनकैंमांझ ॥ २ ॥ नषसिषलौंअति सौहनी, नांहिनकछुसमतूल ॥ रूपलतालागेमनौं, मुसकनिचित वनिफूल ॥ ३ ॥ नागरियालषिथकितद्दग, मतिवरनतभईपंग ॥ छबिउलहनिजातनकही, नवदुलहनिकेश्रंग ॥ ४ ॥ पदरागनाय की ॥ चौताल ॥ मोमनकुंवरिदेषिवेकीलागिरहीअतिढोरी ॥

बहोछंदबंदकरिल्यावरीकिसोरीअंषियांरहतनहिवोरी ॥ ल्याइब होदाईनलिवाईअलीगलीगलीधरकतउरलोकलाजभोरी ॥ नागरी दासराधामोहनचकितदोऊपरीहैंरूपठगोरी ॥ १ ॥ ताल चपक॥ प्यारेहसिभेटीदुलही ॥ किहिंबिधिछूटैंमधुपपीयसौंतियलताफूल उलही ॥ बदनदुरावतघूंघटपटमैंझलकतअंषियांछबिझुलही ॥ नागरियामोहनमुषपोलतसुंदरतातुलही ॥ २ ॥ इकताल ॥ आ जुरंगहैंनिहोरनांपैंछहरिछहरिउठैंलहरिनेह ॥ प्रथममिलनप्यारी मुषघूंघटापियपोलतनिजकंपदेह ॥ झीनेचीरझुकौंहीअंषियांसकुच भरीसुषस्यामगेह ॥ ताहिनिरषिइकटकमनमोहननागरीदासवलइ यालेह ॥ ४ ॥ इकताल ॥ आजुसुषरैंनविहाई ॥ घूंघट षोलनिकामकलोलनिरासिगईनिसातिहाई ॥ सुरतरंगरसबसअल सौंहीमुदतिपुलतिअंषियांरिझहाई ॥ स्यामास्याममिलायसुवायसे जनागरिसषीसिहाई ॥ रागअडाणौं ॥ अपनीअटारीपरिप्यारी छूटेबारठाढीबासबसभुलेभौंरभ्रमतहैंकोरकोर ॥ मोहनचकोररहेदे षिमुषचंदवोरचंदमुषिराधाझुकीदेषतचकोरओर ॥ उतपीतपटगि रिगईबनमालइतनीलपटउरउडतनजांनैंछोर ॥ नागरियानागर निहारैंरसरूपमातेसैंननितैंहाहाकारिडारैंतृनतोरतोर ॥ ५ ॥ ताल॥ सीतलसुगंधपवनमनकौंहरनलाग्योचंद्रमाढरनलाग्योसूचतविहांन कौं ॥ रहीरैंनिथोरीरंगवोरीकौंननींदपरीउठीअकुलायकैंरिझांवन सुजांनकौं ॥ चातुरीपरमप्रीतआतुरचितनागरीसुजाकेकंठदीजैं कहाकोकिलासमांनकौं ॥ आयगीअटारीपरछायगीसुगंधतनगाय गईतांनानिरिझायगईप्रांनकौं ॥ चौताल ॥ आजुराधेजूमोहन

संगरंगभरीगावैं ॥ सुनितांननिकीझांईकहाकांननिकौंआवैं ॥ आधीरातचनकमूंदिविमलचंदचांद्रिकामैंव्हैरहीथकितकुंजकोकिला लजावैं ॥ तैसियैंमृदंगकीटकोरव्हैंसुधंगरंगदेवीजूकेहाथकीसोभ्र वनसुहावैं ॥ नागरियानागरकेजीलकीतरंगनिसौंरंगभरेवृंदावन मोरकुहकावैं ॥ ७ ॥ इकताल ॥ नवलनिकुंजअटारीपरवृंदाव नकीसोभादोऊगावत ॥ निसउजियारीकहादूरतैंरागअडानेंकी धुनिआवत ॥ सुनतगांनविथकतद्रुमवेलीपवननपातडुलावत ॥ पियनागरहूतैंप्यारीकीतांनरंगसरसावत ॥ ८ ॥ इकताल ॥ नंदनंदनचंद्रमाबल्लवकुलकुमदवृंद ॥ जलदसघनकुंजचारुभ्र वतसुधावेणुगानविपुनविपुनप्रतप्रकासअनुपमछविदुतिअमंद ॥ अद्भुतस्वयंरूपदिव्यविमलजौन्हभ्रवतरासकेलिकलाकोविदआनंद कंद ॥ नागरव्रजपतिकुमारपस्यतमुपसंबरारिविस्मयज्ञुतनम्रग्रीव चरनकमलवंदवंद ॥ ९ ॥ इकताल ॥ हरिसंगहुतीसोअकेलीवह ठाढी ॥ दामिनिसीदेहकोप्रकासआसपासदेषिरहीद्रुमवेलनिमैंचि त्रकीसीकाढी॥कासिकासिपियपियपियकहिकहिटेरतमहाविरहकी वेदनिवाढी ॥ नागरीदासरासरसवरसायहायहायकितदुरेघनस्यांम दुपितहैंगाढी ॥ १० ॥ ताल ॥ वैठेजायपुलिनमैंरासिकाविहारी ॥ वीचिआपव्रजचंदमनोहरउडमंडलव्रजनारी ॥ नवनिचोलअपअ पनैंसवमिलिआयविछायदये ॥ तनथिरदामिनसेनिकसेपटवदराउ तरिगये ॥ वंकभौंहनैंनारसमातेछुटिअलकैंअलवेली ॥ प्रेमविवस वूझतापियकौंतियहसिहसिप्रेमपहेली ॥ इकभजतेकौंभजतएकविन भजतेभजई ॥ कहोकुंवरतेकौंनजेवडनिदुहुनिकौंतजई ॥ समझिभ्र

थेमुसकायनैंनभरिकहतजोरिकरप्यारो ॥ नागरियाहितसौंनाहिंऊ रनहौंनितरिनीतिहारो ॥ ११ ॥ तिताल ॥ रासरच्योनंदलाला ॥ लीनैंसंगसकलव्रजबाला ॥ अदभुतमंडलकीनौं ॥ अतिकलगांनस रससुरलीनौं ॥ लीनौंसरससुररागरंजितबीचमिलिमुरलीकढी ॥ हौं नलाग्योनृत्यबहुबिधिनूपुरनिधुनिनभचढी ॥ डुलतकुंडलपुलतवैं नीझुलतमोतिनमाला ॥ धरतपगडगमगाविवसरसरासरच्योनंद लाला ॥ चितहावभावनिलूटैं ॥ अभिनयदृगभौंहानिसरछूटैं ॥ ललितग्रीवभुजमेलत ॥ कबहुकअंकमालभरिझेलत ॥ झेलतभुज निभरिअंकनिसंकतमगनप्रेमानंदमैं ॥ चारुचुंवनअरुउगारहिघर ततियमुखचंदमैं ॥ उडतअंचरप्रगटकुचवरग्रंथपटकसिछूटैं ॥ व ढ्योरंगसुअंगअंगचितहावभावनिलूटैं ॥ पगनिगतिकउतिगमचैं ॥ कटिमुरमुरिमध्यलचैं ॥ सिथलाकिंकिनीसोहैं ॥ मुकटलटकमनमो हैं ॥ मोहैंजुमननटमुकटलटकनिमटाकिगतिपगधरनकी ॥ भंवरभर हरचहूंदिसिछबिपीतपटफरहरनकी ॥ गिरयोलषिमनमथमुराछिलै भजिरतिमुषमधुअचैं ॥ नचतमनमोहनतृभंगीपगनिगतिकउतिग मचैं ॥ बृंदावनसोभावढ्यो ॥ तापरव्यौमाबिमांनानिसौंबढ्यो ॥ दुं दभीदेवबजावैं ॥ फूलनिअंजुलिवहोवरषावैं ॥ वरपैंजुफूलनिअंजु लीबहोअमरगनकउतगपगे॥ बिवसअंकानिजवधूहियानिरापिमनमथ सरलगे ॥ व्हैगयेचरथिरसुथिरचरसरदपूरनससिचढ्यो ॥ दासना गरिरासऔसरबृंदाबनसोभाबढ्यो ॥ १२ ॥ इकताल ॥ रह्योरंगपे लतरासरसाला ॥ तूटिगयेहारछूटिगयेअंचरुश्रमडगमगनिमराला ॥ जुवातिजुथजुतधसेजमुनांविचिमदनमोहनातिहिंकाला ॥ क्रीडतजनु

करनीसंगलीनैंमत्तद्विरदनंदलाला ॥ गौरैंअंगमहाछविपावतभीजे वारिविसाला॥मनौंसीतलचंदनपुतरीनसौंलगीलपटिअहिमाला॥ छविसौंछीटनिषेलमचावतप्रेमविवसब्रजबाला ॥ जनुउच्छवकालिंद्री ग्रहउछरतमुक्तनिकेजाला ॥ बाहुसुंडअवगाहिनीरवलबीरचलेगज चाला ॥ नागरीदासब्रह्मरात्रीरमिआयेगेहगुपाला ॥ १३ ॥ याचोप रिकेअनुक्रमकीअलापचारीमैंदने ए दोहा ॥ प्यारीपियसषियनस हित, चोपरिषेलतबैठ ॥ मनौंमदनपुरचोहटै, लगीरूपकीपैठ ॥१ ॥ छलाझनकचुरियांझनक, पासेठनकतसंग ॥ बजवतगुनीअनंगमनु, जलतरंगजुतरंग॥२॥ स्यांमसारिगोरीचलत, चांपिचहुंटियनिचार॥ मनहुंकंवलकेअग्रव्हैं, आवतभृंगकुमार ॥३ ॥ जरदनरदघनस्यांम पिय, द्वैअंगुरिनगहिलेत॥मनौंकोयलकीचंचुमैं, पीतअंबछबिदेत॥ नागरिपासेपरानिकी, इहउपमादरसांन ॥ हाथरूपसरतैंमनौं, लह रैंनिकसतजांनि ॥ ५ ॥ तिताल ॥ रागपरज ॥ मैंजांनेहोसुघरजैसैं चोपरिषेलतरावरे ॥ सीपेहोकहांतुमसारिपासेएदेतअटपटेदावरे ॥ मांनतएकसारजुगव्हैबोअपनीचौंपकेचावरे ॥ नागरपियवरजोरी जीत्योचहोरंगीलेछवीलेअरवीलेलालकरिकारिकपटउपावरे ॥ २ ॥

+ परजतिताल ॥ चौपरिचतुरनिपेलकीबाजीरंगलेरही ॥ कुंजमहलरसकउतकसषियांसबमनअंपियांदेरही ॥ १ ॥ यौंसुषहीसुषवीतिगईनिससूचतसमैंसवैंराहि ॥ नागरियापासनिउरझेपियक्यौंसुरझैंइहिवेरही ॥ २ ॥ दोहा ॥ रगमगरहींचौपरिचहुल, प्रीतमरहेनिहारि ॥ दीपकढिगजागेमगिरही, लडकीलीसुकुंवारि ॥ १ ॥ नथलटकनिकुंडलहलनि, हारनिझुलनिनिहारि ॥ जबझुकिपासेडारहीं, लडकीलीसुकुंवारि ॥ २ ॥ दोहा ॥ रूपलोभपकेपिया, कच्चेहोतहैंसारि ॥ त्यौंत्यौंचितवतसतरव्हैं, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ॥ ३ ॥ बचननिरादरपेलमैं, लालहिंलगतसुप्यार ॥ चलिरुगटीहंसकहतयौं, लड़कीलीसुकुंवारि ॥ ४ ॥ दोहा ॥ समझिदावपियचूकिकैं, सारिहिचलतसह्मारि ॥ पकरिपिछौंहींदेतकर, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ५ ॥ बेसरिबंसीपीतपट, हारदयेपियहारि ॥ मनहूंलीनौंजीतिकैं, लढकीलीसुकुंवारि ॥ ६ ॥ दोहा ॥ लालचलेजुगजोरि

---

सूचना-

+ यह चिन्ह किया है सो (परज तितालका) पद ओर १ से लगाके ८ तक आठ दोहे इस पदके चौफेर चौपडकी आकृतिमें मूल ग्रंथमें था. परंतु स्थानके अभावसे इस पुस्तकके इस पृष्ट मे स्पष्ट आशका नहीं इस लिये सीधा लिया सो इस मुजबहै विचमें परज तितात उस्के ऊपर १-२-अंकका दोहा. वामे तर्फ ३-४ का दोहा दहने तर्फ ५-६ का दोहाओर नीचे ७-८ का दोहा इस मुजब जानना चाहिये ।

कैं, नीलपीतरंगसारि ॥ समुझिसकुचिहसिझुकिरहीं, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ७ ॥ वाजीबाजीउठिचली, बाजीलगनिविचारि ॥ हियवाजीनागरिमिली, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ८ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारिमैंदने ए ॥ दोहा ॥ नितदुलहनिनवनागरी, हरिदूलहनितहेत॥ नितविवाहवृंदाविपुन, नितचौंरीसंकेत ॥ १ ॥ दूलहदूलनिकंवलमुष, रहतनिहारिनिहारि ॥ अलिदृगचितवनिभावरैं, भरतदोऊरिझवार ॥ २ ॥ दुलहनिझीनैंचीरदृग, झांईछविझलकात ॥ लालजालघूंघटरुके, पंजरीटअकुलात ॥ ३ ॥ रसविवाहसुषनिरषिकैं, लोचनसमझिसिहात॥ मनामनीहीरापिये, बनाबनीकीबात ॥ ४ ॥ फूलनकेसिरसेहरे, झलकतप्रगटसुहाग ॥ वसनसहांनेतनफवे, मनुपहरयोअनुराग॥५॥मंगलरैंनिसुहागको, गावतसषीप्रवीन॥व्याहविलासअनंगरस, वाढयोरंगनवीन॥६॥मंगलकुंजाबिबाहनित, दंपतिवितनविलास ॥ व्हैअलिनितिप्रतिलहतसुष, नवलनागरीदास ॥६॥ पदरागविहागरो ॥ श्रीवृंदावनसुषदाई ॥ तामधिनवलनिकुंजसुहाई ॥ झुकिरहेवहोद्रुमफूलनिफूले ॥ डोलतमधुपवासवसभूले ॥ भूलेमधुपवसवासडोलतत्रिविधिवहतसमीरहैं ॥ घुमंडिरहीघुंधरिकुसमरजमनहूमंडपचीरहैं ॥ कोकिलाकलकीरगावैंनित्यविहारनिकाई ॥ नृत्तकारीमोरतहांश्रीवृंदावनसुषदाई ॥ १ ॥ ललितादिनिरषिलुभांनीं ॥ अतिछविपुंजकुंजदरसांनीं ॥ आनंदउरनसमावें ॥ मिलिमिलिगीतमनोहरगावैं ॥ गावैंमनोहरगीतमिलिजहांवनीचौंरीचारुहैं ॥ परममंगलरैंनराकारच्योव्याहविहारहैं ॥ मोरमोरीसीससजिकैंजोरसुंदरआंनी ॥ वसनसूहेतनलसनललिता

दिनिरषिलुभांनी ॥ २ ॥ सबकोपलकलागतनांह ॥ आएतियमंड
लकैंमांह ॥ पियमुषफैंटाछौरिदियैं ॥ प्यारीघूंघटझुकनिलियैं ॥
लियैंघूंघटझुकनिलषिमतिथकीकरनिप्रसंसकी ॥ नंदसुतनृपभांनत
नयाचलतगतिकलहंसकी॥लेतभांवरिगउरसांवरकलपद्रुमकीछांह॥
दुलहीदूलहदेषसबकोपलकलागतनांह ॥ ३ ॥ दोऊव्याहानिसकेर
समसे ॥ सषीनिकेनैंननिमांझबसे ॥ राजतजुगलनेहकेभरसौं ॥ जो
रनिअंचरअरुकरकरसौं ॥ करसौंजुकरजोरैंपरसपरपहुपबरपावैंस
षी ॥ कुंजकौतकरूपगहमहभईअंपियांमधुमषी ॥ रचीफूलनितल
पदिसचलिचितैंचितवनिमैंहसे ॥ रहोनागरहियवसेदोऊव्याहनिस
केरसमसे ॥ ४ ॥ इकताल ॥ चितवनिहीयहऔरपरमअनुरागकी ॥
उमडीहैंमैंनसैंनसैंनानिमैंबनीबनाकेभागकी ॥ अवचलिओटनिरषि
येनीकैंलीलालोचनलागकी ॥ नागरीदासधन्यवृंदावनधनियहरी
तिसुहागकी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ गिरधरदूलहपरमसलौंनां ॥ वाकीह
सिचितवनिमैंटौंना ॥ दूलहदुलहनिरूपलुभाये ॥ प्यारीजूकछु
कांचितैंमुसकाये ॥ प्रीतमअंकमालकरिलीनी ॥ बाढीहैंमनमथकेलि
नवीनी ॥ टूटेहारउरडोरी ॥ दुलहनिसुरतिसिंधुझकझोरी ॥ दोऊश्र
मितसेजामिलिसोये ॥ अधषुलेनैंनमैंनरंगभोये ॥ प्यारीजूनिद्रावसि
व्हैंजावैं ॥ तबउठिपियपायनिसहरावैं ॥ इहिंविधिसुपहीसुपनिस
बितई ॥ नागरीनवलकेलिदुरिचितई ॥ ६ ॥ या अनुक्रमकी अ
लापचारीमैं दैने ए दोहा ॥ नितदुलहनिनवनागरी, हरिदूलह
नितहेत ॥ नितविवाहवृंदाबिपुन, नितचौंरीसंकेत ॥ १ ॥ दूलह
दुलहनिकँवलमुष, रहतनिहारिनिहारि ॥ अलिदृगचितवनिभांवर,

भरतदोऊरिझवार ॥ २ ॥ दुलहनिझीनैंचीरहग, झांईछबिझलका त ॥ लालजालघूंघटरुके, पंजरीटअकुलात ॥ ३ ॥ रसविवाहसुष निरषिकैं, लोचनसमाझिसिहात ॥ मनांमनिहींराषिये, वनांवनी कीवात ॥ ४ ॥ फूलनकेसिरसेहरे, झलकतप्रगटसुहाग ॥ बस नसहांनैंतनफव्यो, मनुपहरचोअनुराग ॥ ५ ॥ मंगलरैनिसुहा गको, गावतसषीप्रवीन॥व्याहविलासअनंगरस, वाढ्योरंगनवीन ॥ ॥ ६ ॥ मंगलकुंजविवाहनित, दंपतिवितनविलास ॥ व्हैअलिनि तप्रतिलहतसुष, नवलनागरीदास ॥ ७ ॥ राग ॥ तालचपक ॥ रहसिमंगलरा ॥ आजप्रगटयोहेहरिराधानेहवृंदाभवनवधाईयां ॥ रचनायेमाईरचीहैंविवाहव्रजदेवीपधराईयां ॥ गावैंहेमाईमंगल गीतजुवतीसवैंउमाहियां ॥ फूलेहैंद्रुमनानाभांतिवनपरागघुमडाई यां ॥ नाचैंयेमनमगनमयूरकोकिलकोहकसुनाईयां ॥ दूलहयेन वदुलहनिजोररुचिरासिंगारवनाईयां ॥ मौरीयेनवमंजुलमौरदुहूं निसीसछविछाईयां ॥ ल्यायोहेवरविप्रमनोजलगननछत्रमिला ईयां ॥ चौरीयेनवनिभ्रतकुंजसुवनसेजवैठाईयां ॥ तहांनयेको ऊऔरसमीपसवसषीसमझिदुराईयां ॥ करसौंयेकरिपांनग्रहनअंचर प्रीतिजुराइयां ॥ भांवरियेदईकुंजकुटीरजमुनांसाखिकराईयां ॥ चुंवनयेकरदयोउगारमदनदच्छिनांपाईयां॥ विथुरेहैंवरबारविशाल मनहुंचँवरफहराईयां ॥ किंकनीयेकलवजतनिसांननूपुरधुनिमन भाईयां ॥ सुंनिसुंनियेललितादिकओटलेनहैंअलछवलाईयां ॥ इहिं वनयेनितराधाकृतलीलाकरतसुहाईयां॥ नागरियाकहींवातनजातपैं उरमैंउरराईयां ॥ २ ॥ रागपंभावचीचर्चरी ॥ सषीदेषिनवकुंजछ

बिपुंजकुसमितमहाकरतअलिगुंजमनुरुंजबाजैं ॥ जौंह्नजगमगसुम नवासरगमगतहांमदनडरडगमगतलाजभाजैं॥ कमलसैंनीयपरकम लनैंनीकमलनैंनचैंनीरंगेरंगरैंनी ॥ लालकीअलकपरवालफूलहिध रचौफूलसौंलालरचीबालबैंनी ॥ हारमैंहारपियकरतमनुहारकर हारटूटैंबिथुरिबारछूटैं ॥ सुरतसुखसुभटदोऊलिपटहींनिपटहृढकं चुकीपटकपटग्रंथचूटैं ॥ गउरसांवरअंगसंगअतिरंगभुवभंगहृगहृग निमैंपंगकीनैं ॥ मंदबतरानिमैंदामिनीरदनदुतिछविसदनबदनर समदनभीनैं॥ मधुरमधुअधररसनांरसतहसतमुषहसततांबोलदैंहीं॥ बंधेभुजपाससुभवासपुलकितअंगनागरीदाससुषरासलैंहीं ॥ ४ ॥

## मंगल चौरी ॥

+ रागपंभावची ॥ताल॥ नवलरंगभीनीराति ॥ देषिदेषिमंगलकुंज सिहाति ॥ राधामोहनब्याहचाहजुतमुषसोभाउफनात ॥ देषिथकी निससमैंमनोहरभयोनचाहैंप्रात॥ नागरीदासकुसमद्रुमफूलेमनहुजौ

---

## सूचना–

यह मंगल चौरीका पद तथा दोहे मूल ग्रंथमें गोलाकार प्रका-रथा. बिचमें पद राग पंभावची ताल और चाहुं ओर गोलाकृतिमें दोहे ६ थे सो स्थाना भावसे आया नहीं सो इस प्रकार जानिये इस पदके आस पास जो जो अंक सो सोही दोहे ।

| ४ | १ | २ |
|---|---|---|
| | पद | |
| ५ | ६ | ३ |

न्हमुसक्यात दोहा ॥ दुलहनिगोरीराधिका, दूलहस्यामसुजांन ॥ ब्याहसमैंसंकेतमैं, ललितारचतवितांन ॥ १ ॥ दोहा ॥ चहलपहल आनंदमहल, रंगरलीसुषहेत॥नेहग्रंथजोरैंबसन,दोऊभांवरैंलेत॥२॥ दोहा ॥ पवनपरसघूंघटहलत, रुचिररूपदरसात ॥ दुलहनिकोमुषनिरषिकैं, पियइकटकव्हैंजात॥३॥ दोहा ॥ दूलहदुलहनिकंवलमुष, रहतनिहारिनिहारि ॥ अलिदृगाचितवनिभांवरैं, भरतदोऊरिझवार ॥ ४ ॥ दोहा ॥ करसौंकरजोरेदोऊ, करतहंसगतिगौंन ॥ गावतमंगलगीतमिलि, चलेभांवतेभौंन ॥ ५ ॥ दोहा ॥ कुसमसेजविहरतदोऊ, तहांनकोऊपास ॥ व्हैंभँवरीदेपतजुगल, नवलनागरीदास ॥ ६ ॥

आंनकविकृत ॥ रागषंभावची तिताल ॥ कुंजपधारोरंगभरीरैंन ॥ रंगभरीदुलहनिरंगभरोपियस्यांमसुंदरसुखदैंन ॥ रंगभरीसैंनीरचीजहांरंगभरथोडलहतमैंन ॥ रसिकबिहारीप्यारीमिलिदोऊकरोरंगसुषसैंन ॥१॥ आंनकाविकृत ॥ या पदके बीच बीचमैं दैने ए दोहा ॥ गहगडसाजसमाजजुत, अतिसोभाउफनात ॥ चलिबिलसोमिलिसेजसुष, मंगलगलतीरात ॥ १ ॥ रहीमालतीमहकितहां, सेवतकोटिअनंग ॥ करोमदनमनुहारमिलि, सबरजनीरसरंग ॥ २ ॥ चलेदोऊमिलिरसमसे, भैंनरसमसेनैंन ॥ प्रेमरसमसीललितगति, रंगरसमसीरैंन ॥ ३ ॥ रसिकाविहारीसुखसदन, आयेरससरसात ॥ प्रेमबहुतथोरीनिसा, व्हैआयोपरभात ॥ ४ ॥ रागपरजतिताल ॥ सषीआजुनिरषिसुषपुंजरी ॥ तहांमैंनगांनअलिगुंजरी ॥ दंपतिहियफूलनिदिठैंयहा॥वहुफूलनिसौंफूलीनवकुंजरी॥ फूलनिकीसैंनीपरदी

नैंगरबांहीतनफूलनिकेसोहतसिंगाररी ॥ फूलनिकीफूंहीहालिवरषैं लताहैंहोतेंसीफूलनिकीवहत्तबयाररी ॥ फूलीहैंजुन्हाईफिरीमदनदु हाईरहेअरुझिगउरस्यांमगातरी ॥ फूलनिसफलकरीनागरियाआ जभईपरमसलौंनीयहरातरी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ आंनकविक्त ॥ सु रंगीसेजांरंगमगरह्यासुपसैंण ॥ हारांउलझ्याहारहियारानैंणांउल झ्यानैंण ॥ मनमथअमलअगाधावोलैंआधाआधावैंण ॥ रसिकवि हारिप्यारीमिलिआनंदमैंसोहतवितईछैरैंण ॥ ६ ॥ या अनुक्रमकी अलापचारीमैं दैने ए दोहा ॥ रापेनैंनाबिछायकैं, लालपहोपदलगो द ॥ पायमहावरदैनकौं, बढ्योमहाउरमोद ॥ १ ॥ रमापलोटतच रननित, जाकेसहजसुभाय ॥ सोवृषभांनकुमारिकैं, देतमहाउरपा य ॥ २ ॥ कंवलचरनापियचतुरलपि, इकटकरहेलुभाय ॥ लियैंम हाउरहाथमैं, रंगभरयोनहिंजाय॥३॥रंगभरतपगदुहुनिअति,वाढ्यो रंगअनंग॥ नागरियाकेदृगनिवह, लग्योसुछुटतनरंग॥४॥पदरागवि हागरो॥तालचपक॥बीनबीनफूललालजावकवनायराप्योंअैहैंप्यारी राधारंगपायनिमैंलगैहैं॥ मंदपौंनपातकुंजआहटतैंचौंकपरैंजानैंकब देषिनैंननैंननिमैंषगैहैं॥आयमिलीबालअंकमालभरिवैठेलालपौंछत चरनआछैपीतांवरछोरसौं॥ आधैंमुषघूंघटमैंआंगुरीदसनधरिनागरि निहारिरहीनैंननिकीकोरसौं ॥ १ ॥ इकताल ॥ लालरंगेरंगजावक सौंचरननिहारैं ॥ लीनैंकरकँवलमैंभीनैंरंगपायप्यारोताहिदेषिरीझि रीझिमनधनवारैं ॥ तवपियसीसनायनैंनानिछुवायोचहैंदोऊमुपझे लिपगननिकारैं ॥ नाहिंनसम्हारैंअंगनागरनिहारैंरंगआधीरातकुंज वोरचंदउजियारैं ॥ २ ॥ तिताल ॥ दोऊमिलेपगेप्रेमरसघातनि॥ हं

सिहांसिकरतभांवतीवातनि ॥ दोऊचितचतुरलगावतचोरी॥दैहैंपगभूपनचोरीगोरी ॥ दुहुनिमैंप्रीतझगरैंयैंपरहीं ॥ प्रियजियप्रेमउमगिभुजभरहीं ॥ दुहुंनिमैंरसद्दुरिघुरिघुरिआवत ॥ मुरिमुरिअधरानिसैंनवतावत ॥ दुहुंनिकेउरझेतनमननैंना ॥ कहाकहूंनैंननिकैंनाहिवैंना ॥ दुहुंनिकौंअंगसह्मारभुलांनी ॥ रंगमैंसबनिसिजातनजांनी॥ दोऊजहांआईअमलज्जुन्हाई ॥ सोएलपिनागरिकुंवरकन्हाई ॥ ३ ॥ रागपरजकाष्याल ॥ इकताल ॥ एअंषियांनहिंदुरैंदुराई ॥ क्यौंरहैंदबीप्रीतिअंतरकीहोयकहाकीनैंचतुराई ॥ हटकीरहतनांहिलाषनिमैंप्रेमछकीउरझैंरीमाई ॥ औरहीदसाभईतेरीसौंसुंदरसांवरैंरूपलुभाई ॥ प्रगटहौंनकैंहेतसषीमैंएअंषियांबहौबिधिसमझाई ॥ नागरीदासअंतमोमनकौतैंपाईसोपाईहीपाई ॥ ४ ॥ तिताल ॥ एरीमनसुंदररूपलुभायो ॥ गयोहुतोताहीछिनहूतैंवहूरिनमोपैंआयो ॥ घरघरघैरुसह्योयाकाजैंसबग्रहकाजछुटायो ॥ नागरियामनजनमसंगातीहैंगयोमीतपरायो ॥ ५ ॥ तिताल ॥ चतुरहसिचितवनिमैंमोही ॥ गिरतसंभारिलईहूंभुजनिभरिसोसुधिनांहिंनकोही ॥ ताछिनतैंचितवढीचटपटीनिपटअटपटीगांस ॥ नागरीदासचुभीक्यौंनिकसैंवंकाबिलोकनिफांस ॥ ६ ॥ इकताल ॥ भुराईहौंरैठगोरेनैंना ॥ देपतिहीरांहिजांऊंभूलिकैंउडतउरजउपरैंना ॥ करतबिबसमोहभरीद्दगनिमैंमदनमोहनीसैंना ॥ नागरीदासरूपकीआतिगातिकहीनपरतकछुवैंना ॥ ७ ॥ इकताल ॥ काहितनबनैंनिपटअटपटीवातहेली ॥ चि तैंछिनइतउतजुटरतनाहिंमोहनछबिअलवेली ॥ चढीनेहचितवनिकीलहरैंधीररहतनाहिंपीरनवेली ॥ नागरीदासनवरनिसकौंकछुम

नकीप्रेमपहेली ॥ ८ ॥ तिताल ॥ होमेरोमनमोहिलयोस्यांमसुजां
न ॥ नैंननिनैंनामिलायभायसौंचितवनिकरिसनमांन ॥ तवतैंकलन
परतव्याकुलनितभावतषांननपांन ॥ नागरीदासप्रीतिकीवेदनिजा
नैंनलोगअजांन ॥ ९ ॥ इकताल ॥ कन्हैयानांजांनौंकहाकीनौं ॥
तेरोमुषदेषतहीतेरैंव्हैंगयोमनआधीनौं ॥ भौंहनिमैंकिनैंनवैंननिमैं
टौंनासोपढिदीनौं ॥ नागरीदासमोहनांप्यारेमोमनतैंहारिलीनौं १०॥
आंनकबिक्कत ॥ इकताल॥ तिताल॥ रतनालीहोथारीआंषडियां॥
प्रेमछकीरसबसअलसांणींजांणिकंवलकीपांषडियां ॥ सुंदररूप
लुभाईगतिमतिहोइगईज्यूंमधुमाषडियां ॥ रसिकबिहारीवारीप्य.री
कौंणबसीनिसकांषडियां ॥ ११ ॥ आंनकबिक्कत ॥ ताल ॥ मोह
नजीह्मारैंथेकांईहठलाग्याछोजी ॥ जावाद्योघरछोडोछेहडोथेरसवा
तांपाग्याछोजी ॥ आंप्यांथांकीछैरतनालीसारीनिसराजाग्याछो
जी ॥ रसिकबिहारीप्याराह्मांनैंथेओरांसूंअनुराग्याछोजी ॥ १२ ॥
आंनकाबिक्कत॥ तिताल ॥ रंगिरह्याजुगलरूपरंगमांहीं ॥ कुंजमह
लमैंदर्पणसाह्मैंदियांरहैंगलबांही ॥ कदेकसंभ्रमव्हैंस्यामारैंनेडैस्यां
मछतांहीं ॥ कदेकरीझिरहैंरासिकबिहारीदेषिदेषिपडछांहीं ॥ १३ ॥
आंनकाविक्कत ॥ तिताल ॥ चिरतालीतैंनंदकुंवरमनमोह्योहेकांमण
गारी ॥ बसिकरिवारामंत्रतोजिसासीषीकुंणवृजनारी ॥ दिनअर
रैंणसैंणरैंकारणअंगअंगरहैंसंवारी ॥ भलोकियोआधीनआपणैंप्री
तमरसिकबिहारी॥१४॥आंनकबिक्कत ॥ तिताल॥ येबांसुरियावारे
ऐसैंजिनवतरायरे ॥ यौंनबोलियेअरेघरवसेलाजनिदविगड़हायरे॥
हौंधाईयागैलहीसौंरेनैंकचल्योधौंजायरे ॥ रसिकबिहारीनांवपायकैं

क्योंइतनौंइतरायरे ॥ १५ ॥ रागसोहनी ॥ इकताल ॥ अमांनीअं पियांदरसदिवांनी ॥ रूपआगबिचबेसकहूईगिरदीहैंउररांनी॥इस्क अमलसौंझुकीरहैंदीछिनछिनबरषतपांनी ॥ नागरनवलइतेपरादिल वरहूवारहतगुमांनीं॥१६॥तिताल॥ मनमेरोरीवरज्योनहिंमांनैं॥प्रगट करतहैंअंतरकीसबरहिनदेतनहिंछानैं॥ नेहबायबौरांनेकीगतिजोजा नैंसोजानैं ॥ पैंच्यौरहतनजायलगतहैंनागररूपनिसांनैं ॥ १७ ॥ ॥ चौताल ॥ अरीइनिअंषियनसौंपचिहारी ॥ एमेरैंबसनांहिभई हौंअपनैंवसिकरिडारी ॥ इतउतझकतरहतचकितव्हैंदेषैंबिनां दुष्यारी ॥ जबहींदृष्टपरतमोहनमुषजातननतनकसह्मारी ॥ कवल गिलैंनिबहौंइनिभांतिनगृहकुलकांनिबिसारी ॥ नागरिदासभईये वैरनिदैंहुंकहाकहिगारी ॥ १८ ॥ आंनकविकृत ॥ तिताल ॥ प्यारीजीरासाल्हूडामैंआवैंछैंसुगंधीरूडीबास ॥ अंगमरगजीगंधलु भायांभंवरभवैंआसपास ॥ लटपटैबेसआणिऊभारह्याआंगणाकुंज निवास ॥ रसिकविहारीपवनढुलावैंषासाहोयषवास ॥ १९ ॥ आ नकविकृता ॥ तिताल ॥ होरंगीलीबाजीलगिरहीछैंनैणांमैं ॥ जांणींकामकटाछांहींकादेपिदावदैंणांमैं ॥ कांपैंअंगअनंगरंगसुर भंगहुवोवैणांमैं ॥ रसिकविहारीमनफूलबढीहुईहारजीतसैंणांमैं ॥ ॥ २० ॥ तिताल ॥ देषोसषीरीदेषोदोंऊबैठेनावमैं ॥ गावतआवत चपलचलावतसहचरचंपाचावमैं ॥ स्यामास्यामदियैंगरवहियांन वकाविचरसभावमैं ॥ नागरनवलसषीनिकीअंपियांलगिलपटोल पटावमैं ॥ २१ ॥ तिताल ॥ आंनकविकृत ॥ आजकीरात आछीलागैंछैंउजारी ॥ विहरैंस्यामास्यामचावसौंसुंदरनावसिंगारी

॥ जमुनांविचझिलमिलकीसोभाकँवलकूलसुपकारी ॥ नावडगमगैं डरलपटावैंरासिकबिहारीजीसौंप्यारी ॥ २२॥ याअनुक्रमकीअल पचारीमैंदेने ए दोहा ॥ करिभौंहैंवांकीकहौं, तनगौंहैंक्यौंबैन ॥ इतराजीअबकीजियैं, इतराजीकेनैंन ॥ १ ॥ चितचिंताचाहत धरनि, चितवतनीचीनारि ॥ कहोसपींकिहिंकारनैं, पहरेपलटि सिंगारि ॥ २ ॥ तुमहीसर्वसकान्हकैं, मांनकरोबेकाज ॥ राधा वल्लभनांमकी, प्यारीनिबहोलाज ॥ ३ ॥ छाडिइत्तोअनषावरी, अहेबावरीबांम ॥ नागरियाभुवभंगमैं, भयेतृभंगीस्याम ॥ ४ ॥ पदरागपरज ॥ इकताल ॥ मानगयोहैंछूटिसुंदरसांवरेसौंनेह ॥ सषीवचनसुनिगवनकीनौंमंगलरवनअछेह ॥ रूपकीआगरीनाग रियावलिपुंहचीहैंआनंदैंगेह ॥ मिलीहैंगोकुलचंदसौंचंद्रिकाकीौति ककुंजबिदेह ॥ १ ॥ तिताल ॥ कुंजतैंआवतहैंजमुनातटिनागरना गरिसंगलियैं ॥ चंदकीचांदनीछायरहीहैंतैसेईस्वेतसिंगारकियें ॥ गावतरागजमावतसहचरिआवतआसवप्रेमपियैं ॥ देषिलगींनवका सलितातटनागरियाआनंदहियैं ॥ २ ॥ ति० ॥ विहरतनवकाबैठि बिहारी ॥ जमुनांजगमगजौन्हिजामिनीकैंवलकूलसुपकारी ॥ मिलवतबीनप्रवीनसहचरीगावतपरजपियारी ॥ कवहुकनीरनीरज करलेतहैंभांमिनस्यांमसहारी ॥ उरकरपरसतचौंकिचाहिमुपनैंननि कांमकेलिबिसतारी ॥ अदभुतसुपसलितामैंपेलतनागरियावलि हारी ॥ ३ ॥ तिताल ॥ वृंदावनकीतलहटीडोलैंजमुनातीरतीर ॥ जटितश्वेतनगनाववैठिदोऊसांवलगौरसरीर ॥ चलवतचपलचारु चंपावलिसजिसहचरितनसपाचीर ॥ गावतजातस्यामसुंदरगुनपूरि

रहौउरप्रेमपीर ॥ निसउजियारीफूल्योबनद्रुमलतारहीझुकीपरासि नीर ॥ मुदितस्यामलषिवैंनवजावतसुनिकुहकिउठतमोरनिकीभीर ॥ नवलविहारनवलनवकाविचनवलप्रियागिरधरनधीर ॥ नागरी दासरैंनिकछुवितईवहुरिवसेमिलिधीरसमीर ॥ ५ ॥ याअनुक्रमकी अलापचारीमैंदंने ए दोहा ॥ जबतैंचितयेनैंनभरि, तबतैंछिननहिं चैंन ॥ मनमोहनगोहनाफिरत, जागतसुपनैंसैंन ॥ १ ॥ मोहनल पिमोहनभई, कहालग्योयहहौंन ॥ सबसूझतमोहनमई, दईभईग तिकौन ॥ २ ॥ सुधिबुधिसबहीहरिलई, मनमोहनमुसकाइ ॥ एदइयाकैसीबनी, घरअंगनानसुहाइ ॥ ३ ॥ लगीलगनिहरिमुष निरषि, डारचोसबसुषरूंद ॥ जोहूंऐसोजानतीरहतीनैंनानिमूंद ॥ कौनघरीकीलगनियह, अरीभरीनहिंजात ॥ मिटतनांहिंदिनराति जिय, स्यांमरूपउतपात ॥ ५ ॥ घरवनहूनहिंलगतमन, रहत स्यांमतनलीन ॥ अरीढटौनानंदकैं, कछुटौनांपढदीन ॥ ६ ॥ नैंन निदुपनैंननिलगैं, तनमनदुषदुपगेह ॥ एदइयाकौनैंदयो, दुषको नांवसनेह ॥ ७ ॥ हरिसौंलगनिलगायकैं, भरीरहतनितनीर ॥ रिझवारानिअंखियांनिसौं, हौंहारीरीबीर॥८॥ नागरसैंननिसैंनमिलि, वनीजुनैंननिनैंन ॥ बनतबनतऐसीबनी, कहतबनतनहिंबैंन ॥ ॥ ९ ॥ पदरागपरज ॥ तिताल ॥ घाइलमारसुमारभईहियम दनमोहनदृगबानलगे ॥ सुधिनरहीहैंघटपटकीकछुइकटकनैंन निनैंनपगे ॥ मूर्छितहोतागिरतगहिभुजभरिअधरसुधारसपांनप गे ॥ नागरियाआसक्तअमलमैंदोऊमिलिकैंसबरैंनिजगे ॥ ॥ १ ॥ या अनुक्रमकी अलापचारीमैं दैंने ए दोहा ॥ नवनिकुं

जंमनकौंअगम, सेवतकोटिअनंग ॥ जुगलकेलिआनंदको, तहांअ पंडितरंग ॥ १ ॥ प्रेमरासिदोऊरसिकवर, बिलसतनित्तविहार ॥ ल लितादिकनितलेतहैं, तिहिसुषकोरससार ॥ २ ॥ नैंननिनैंनसिराव हीं, बैंनसजीवनिमंत्र ॥ मुहांचहींजियज्यांवहीं, स्यामास्यामसुतं त्र ॥ ३ ॥ कहूंउजारोचंदको, कहुंपातनकीछांह ॥ रंगभरेराजतत हां, पियप्यारीगरबांह ॥ ४ ॥ नित्तकेलिआनंदरस, विचवृंदावन बाग ॥ नागरियाहियमैंबसो, स्यामास्यामसुहाग ॥ ५ ॥ पद राग परज तिताल ॥ राजतदोऊदीनैंगरबांही ॥ रहीछायनिससरद जुह्नैयानवनिकुंजकैंमांही ॥ अरुझिरहेतनमनआनंदमैंआधीराति द्रुमानिकीछांहीं ॥ नागरीदासलतारंध्रनिलपिरीझिरीझिवालेजा हीं ॥ ६ ॥ तिताल ॥ सोहतहैंअलसौंहैंनैंना ॥ लटकिलटकिपियपर अरसावतसिथलकहतमुपआधेआधेबैंना ॥ बहोतगईनिसिप्रियाजं भावतचुटकीदेतलालसुपदैंनां ॥ नागरीदाससपीछविदेपतविसरि बिसरिजातउरउपरैंनां ॥ ७ ॥ तालतिताल ॥ अंपियनिभावभरचो हैंरसको ॥ घुरिघुरिसनमुषरहतरसीलीरूपबढ्योआरसको ॥ आधे आधेवचनकहतकछुमंत्रपढतमांनौंपियवसको ॥ नागरिनवलरसि कनहींपौढतनींदभरींदेपनकोचसको ॥ ८ ॥ तिलाल ॥ आईअबदु हुनिपैंजौंह्निजगमगरी ॥ गईपरछांहीपाछैंदेतहैंदिपाईआछैंह्नांईरहो चंदआगैंधरोजिनपगरी ॥ तनतनसौंमनमनसौंअरुझेदेपिअघपुले नैंनरहेनैंननिमैंपगरी ॥ रसबसपागेनवनागरियास्यांमजागेआधीरैं निहुतीसोऊवीतगईसिगरी ॥ ९ ॥ दोहा ॥ चंदचंद्रिकामंदकी, दंप तिअंगउजास ॥ लताकुंजरंध्रानकढ्यो, किरननिनिकरप्रकास ॥

॥ १ ॥ मैंनरंगरसरगमगे, जगेउजारीरैंन ॥ षगेनैंनपियकेतहां, लषिअलसौंहेंनैंन ॥ २ ॥ अंषियानिआरसछविलषैं, अमलउजारी मांहि ॥ वहुरिचंदकीडीठडरि, करतमुकटकीछांहि ॥ ३ ॥ पलकैं पांननपीकसौं, रंगीजुरंगनवाल ॥ रीझिरहेसोईनिरषिनिस, नींदभ रेदृगलाल ॥ ४ ॥ सहजछकेसेरसछके, छकेनींदअरसांन ॥ छके छकावैंपीयकौं, नैंनरूपमदपांन ॥ ५ ॥ जुरैंजुरैंफिरिहसिमुरैं, घुरैं दुरैंरहिजांहिं ॥ लोइनलहिरैंनिरषिपिय, धीरजठहिरैंनांहिं ॥ ६ ॥ श्रवननिछ्वैंछबिसौंफिरैं, लोयनवंकविसाल ॥ षुलैंनआरसअधषुले, करतलालपरहाल ॥ ७ ॥ अरसांनैंघूंमतझुकत, सरसांनैंछविअंन ॥ त्रिहसिदुरांनैंपीयपैं, नींदघुरांनैंनैंन ॥ ८ ॥ रैंनिघटैंत्यौंत्यौंवढैं, आरसरूपझकोर ॥ नींदभरेपियउरअरैं, नैंननिपैंनीकोर ॥ ९ ॥ जवपलआवैंझुकतापिय, दरपनदेतदिषाय ॥ तवअपनीअंषियांनप र, अंषियांरहतलुभाय ॥ १० ॥ नींदझुकीपलनिरषिपिय, देतहैं पांनवनाय ॥ उतनैंननिकेषुलतही, इतवीरीछुटिजाय ॥ ११ ॥ भौं रनिवारतवदनलषि, मनधनवारतजात ॥ फूंकिजगावतलालतव, षुलैंनैंनमुसकात ॥ १२ ॥ सपीलपैंदुरिद्रुमनिमैं, व्हैगईचित्रसरीर ॥ निसउनदौंहैंदृगनिपैं, भईदृगनिकीभीर ॥ १३॥ अरसांनीनिरषत प्रिया, जातविहांनीरैंन ॥ नैंननिलषिपियकैंभये, रौंमरौंममैंनैंन ॥ ॥ १४ ॥ घरैंचिवुकतरहाथदृग, देषतनींदषुमार ॥ लगेरूपकैंरह चटैं, पौंढतनहिंरिझवार ॥ १५ ॥ लषिउरझेसुरझैंनहीं, सबनिस गईविहाय ॥ आरसउरझेदृगनिपैं, पीयरहेउरझाय ॥ १६ ॥ क्यौं सुरझैंआरसभरे, नैंननिउरझेनैंन ॥ नागरियाकेहियवसो, यहरू

पारसरैंन ॥ १७ ॥ नागरिनैंननिरूपन्हैं, दोहापढिनैंनांनि ॥ अछरनहूकेनैंनभये, कहिनसकतबैंनांनि ॥ १८ ॥ यारूपारसरैंनिकौं तवहीसकैंनिहारि ॥ तनकेनैंननिमूंदिदैं, मनकेनैंनउघारि ॥ १९ ॥ नागरिनैंननिजिहिंलख्यो, यहरूपारसरैंन॥ तिनकेनैंनसुनैंनहैं, और नैंननहिनैंन ॥ २० ॥ इतिरैंनरूपारस ॥ १० ॥ तिताल ॥ हेमाती नींदकीअंषियांसोहैंलाल ॥ कांमकेलिकैंरंगरसमसीछुटीअलकतटीमाल ॥ लपटांनेवनवारीप्यारीअरुझेवाहुमृनाल ॥ नागरियाढिगभंवरानिवारतलीनैंहाथरुमाल ॥ ११ ॥ इकताल ॥ अंषियांअरुनरसमसीघुरहीं॥लाजभरीछविभारभरीरूपछकीआलसजुतढुरहीं ॥ अमितवदनपियचिवुकउठावतकहीनपरतजवहसिहसिमुरहीं ॥ रहीघरीद्वैरातिजुह्लैयानागरीछैलतऊनविछुरहीं ॥१२॥ रागसोरठकाप्याल ॥ इकताल ॥ रेसांवलियोसाजनह्मारो ॥ रूपठगोरोकांमणगारो ॥ मोहैंमनसगलांरो ॥ हियमैंबसियोरसियोलोभीमदनमंत्रबैणांरो॥नागरीदासहुवोमनचेडोमतवालानैंणांरो ॥१॥ तिताल॥होसांवलियोह्मानैंसैंनांहींसमझावैं ॥ लाजमरांछांसारांमांहींमनरीवातजणावैं॥प्रेमछक्योप्रीतममतवालोतिणसौंजियसकुचावैं ॥नागरीदासदेषिनैंणाविचपडवादिसीवतावैं॥॥ तिताल॥हेलीह्मारोमोहनमीतमिलाय ॥ अलवलियोसांवलियोसुंदररापौंकंठलगाय॥ पियरसियोउरअंतरवासियोउणविनरह्योनजाय ॥ नागरीदासछैलसुखवागांजागांरैंणविहाय॥३॥तिताल॥कलनपरतादिनरातियांअहोपियनैंननिकीनीवोरी॥ सोवतजागतचलताफिरतअवमोहितलफतहीवीततछिनैंछिनलगीइहिंमुपकीढोरी ॥ इननैंननिकैंहाथविकांनीदेपनकौंउठिदोरी॥

नागरियाघरबरांजितरांजिरहींहौंनरहींजियलराजिडारीतुमसुंदररूपठ गोरी ॥ ४ ॥ आंनकविकृत ॥ तिताल ॥ बहिमनबासियोरसियोरी मोहनलालनगीनौं ॥ बृजकोभूपनरतनअमोलकअतिसुंदररंगभी नौं ॥ मैंपायोमेरैंवडभागनिंसिरविधनांलिषदीनौं ॥ रसिकबिहारी पियसुषकारीकंठलायमैंलीनौं ॥ ५ ॥ आंनकबिकृत ॥ तिताल ॥ बिचव्रजनारयांरझुंडराधारूपहैंरूडो ॥ ग्रीवझुकायांझूमकनाचैसी सकेसांरोजूडो ॥ केसरिरंगरंगीसाडीमैंझलकिरह्योछैंचूडो ॥ देषि छक्यापियरसिकबिहारीरह्याधीरधरकूडो ॥ ६ ॥ सूरफाषत ॥ दई कीजैंकहामेरीअंपियांवैरनिभई ॥ बरजीनरहैंबुरीटेवइनलई ॥ कां न्हमुषचंदमधुपांनमातीरहैंहोतअतिछिनहिंछिनचाहचितनई ॥ ओ टघूंघटदियैंहूंनमांनतहटकतजिदईलाजहरिरूपठगठई॥ नागरीदास उपचारलागतनकछुमाधुरीनिरषिभईकृष्णतनमई ॥ १० ॥ तिताल॥ वहधरीकौंनहीलागेमेरेहोनैंन ॥ जबलागेतबकछुनहिंजांन्यैंअबला गेदुषदैंन ॥ चितवनिबिषकीलहरिचढीरहैंजागतसुपनैंसैंन ॥ नाग रनवलरूपकोबेदनिमिटतनहींदिनरैंन ॥ ८ ॥ याअनुक्रमकीअलाप चारीमैंदैने ए दोहा ॥ रूपधारघनस्यामकी, छबितरंगकीझोक ॥ प्रेमप्यासकैसैंमिटैं, नैंननिनांन्हीओक ॥ १ ॥ पतिकुटंबदेषतसबैं, घूंघटपटदियैंडारि ॥ देहगेहबिसरेतिन्हैं, मोहनरूपनिहारि ॥ २ ॥ द्रगपौछतअंतरअधिक, सहीनजातनिमेप ॥ पलपलजलभरिआव हीं, रूपमाधुरीदेष ॥ ३ ॥ वडोमंदअरबिंदसुत, जिहिंनप्रेमपहिचां नि ॥ पियमुषदेषनद्रगनिकैं, पलकरचीबिचिआंनि ॥ ४ ॥ झल ककपोलनिकहाकहौं, मुषपांनिपवहोभांति ॥ अंषियांरपटतांचितैं

तहां, दीठनहींठहरांति ॥ ५ ॥ मनमोहनमुषानिरापिकैं, आंपियांन हींअघात ॥ नागरिदृगनिचकोरकैं, सबससिकहांसमात ॥ ६ ॥ ॥ पदरागसोरठ ॥ तिताल ॥ रीमुषअंबुजअटकहमारी ॥ लगीरह तितहांसौंतिमुरलियादेहिंकहाकहिगारी ॥ वहसुनिछकीअधरआस वसौंआवतधुनिमतवारी ॥ नागरियासहनौंनपरैंजियदैंहिउराहनौं भारी ॥ १ ॥ तालचर्चरी ॥ आतरवैंनधुनिसुनिचली ॥ करनिकुं जनिवारतद्रुमलतागहवरगली ॥ दृगनिदेष्योदूरिपियवनातिमरमां झप्रकास ॥ श्रवनधुनिनूपुरनिछाईनासिकासुभवास ॥ ब्रजचंदनि यरैंझूमिआईनवचकोरीबाल ॥ दासनागरिरहीइकटकलपितृभंगी लाल ॥ २ ॥ इकताल ॥ बोलैंत्ततथेईतथेईतथेईरसरासरसरदरैंन ॥ निरपतभयोचंदचाकितथकितरह्योगैंन ॥ गांनतांनमांनपरनिमिलि मृदंगबीन ॥ उरपातिरपअलगलचकतकटिछीन ॥ नचतरवनीरव नमदनमथतअंगअंग ॥ चलिकटाच्छभृकुटिभंगरंगरंगरंग ॥ प्रेमम गनभरतअंकलंकलगिनिसंक ॥ छाडतनहिंलालहिंतिहिंकालहिं निधिरंक ॥ उरविहारतुटतहारछुटतबारबास ॥ विवसरस बिलासदासनागरिसुपरास ॥ ३ ॥ तिताल ॥ दोऊमिलिमंडल नृत्यतडोलैं ॥ इकादिसकुंडललोलएकादिसलगेकपोलकपोलैं ॥ गर बहियांतनअरुझेपियरेनीलनिचोलैं ॥ नागरियागतिमैंगतिवदलैंवद लैंवदनतमोलैं ॥ ४ ॥ तिताल ॥ मनमोहनतृभंगीनवरंगीनंदलाल॥ हसिलीनीहैंभुजनिभरिनवदामिनिसीवाला ॥ तनमनहिलनिमिलनि बननबाढीहैंरंगरलियां ॥ तहांफूलपुंजफूलेअलिगुंजकुंजगलियां ॥ उ रहारवंदडोरीजियलाजटूटिटूटैं ॥ पुलिअंचरसुवनासिरवरवैंनीछूटैं

छूटैं ॥ मचीहैंरंगभीनीआनंदकेलिहेली ॥ सषीदुरिदेषतनागरिया मनदेहसौंअकेली ॥ ५ ॥ इकताल ॥ आवरीदेषिजोरीपियसांवरो राधागोरी ॥ सुरतश्रमितदोऊमिलिसोये ॥ अधषुलेनैनमैंनरंगभोये॥ अरुझिरहीबाहियांमैंबहियां ॥ फूलेतरवरकीपरछहियां ॥ इहिंबनये बिलसोइनचैंनानि ॥ नागरियाकेबसोहियनैंननि ॥ ६ ॥ याअनुक्रम कीअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥ नीलपीतमनिक्रांततन, नाहिंदुरेइं हिंरात ॥ बदनउजेरैंरूपकैं, सघनकुंजमैंजात ॥ १ ॥ तनसुगंधडो रैंलगी, भँवरभीरचहूंओर ॥ देषिदुहुंनिधोषैंपरे, बोलतमोरचकोर ॥ ॥ २ ॥ नीलपीतपटछोरछबि, उरझेद्रुमकीभीर ॥ सुरिसुरझांवनि दुहुनिकी, मेरैंउरझीबीर ॥३॥ चलिहुसंगनागरसषी,नूपुरझांईपाय॥ सुपदपैंदुरिद्रुमानिमैं,अपनौंअंगदुराय॥४॥रागसोरठ ॥ रीहौंचाहिरही दोऊइतनिकसेआय ॥ पियघनस्यांमअंगढिगभामिनिदामिनिदुति दरसाय ॥ अतिसुंदरमुषचंदकिरनबनडारचोतिमरमिटाय ॥ नाग रियाचलिकुंजओटदुरिदेषैरैंनाविहाय ॥ १ ॥ तालचपक ॥ प्यारी जूकोबदनआनंदकंद ॥ पियकिसोरचकोरहितनितप्रगटपूरनचंद॥ गंभीरकारेचिकुरबरबदरानिबीचअमंद ॥ पीवतइकटकवोकअमृत नवनागरनंननंद ॥ २ ॥ ताल ॥ अबसुनिकांनदैदैबतरांन ॥ नूप रकिंकिनीकंकनरनकतझनकहोतबलयांन ॥ मैनमंत्रसेवैंननसुनि सुनिछुटतधीरठहरांन ॥ नागरियाहियमांझरहोनितियहसुरतसनमां न ॥ ३ ॥ तिताल ॥ पुलिगएसौंधैंभीनैंवार ॥ देषिसषीयहरीतिअ नोपीबंधिगयोमनरिझवार ॥ झूलिरह्योबैंनोग्रीवाढिगटूटिरहेउरहार॥ नागरयहछविहिएबसोबिचमनमथरंगबिहार ॥ ४ ॥ ताल ॥ अहो

पियप्यारीनसह्मारीपरैंआजुयाहीकुंजरहोनैं ॥ सुरतासिथलगतिमत वारीसीमोहनबहियांगहोनैं ॥ बिथुरिअलकआईआंननपरियहछ बिद्दगनिचहोनैं ॥ रहीरैंनथोरीनागरामिलिअबसुषसैंलहोनैं ॥ ५ ॥ तिताल ॥ रह्मादेपिपियचिबुकउठायवोनैंणामैंअलसांणघणीछैं ॥ घुलिरहीनींदलोयणांलालीकाजलरेपबणीछैं ॥ अलकांसिथलसिथ लहुईपलकांभौंहांबंकतणीछैं ॥ रसिकबिहारीप्यारीजीरीचितवनि मिलिरहीअणीअणीछैं ॥ ६ ॥ ताल ॥ प्रीतमसंगपौढीप्यारीअर सांनी ॥ पलकैंमुंदीपुलीढिगअलकैंअधरथाकितमुसिक्यांनबेसरपर सांनी ॥ बैंनासिथलललितमोतीलरढरकिबदनपरआईछबिसरसां नी ॥ नागरियाहियमांझबसोयहकौतिककेलिअनंगजोरीरंगवरसां नी ॥ ७ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदने ए दोहा ॥ करिभौंहैं बांकीकहौं, तनगौंहैंक्यौंबैंन ॥ इतराजीअबकीजियैं, इतराजीके नैंन ॥ १ ॥ चितचिंताचाहतधरनि, चितवतनीचीनारि ॥ कहोसें पीकिंहिंकारनैं, पहरेपलटिसिंगार ॥ २ ॥ तुमहीसवेसकान्हकैं, मांनकरोबेकाज ॥ राधावल्लभनांमकी, प्यारीनिवहोलाज ॥ ३ ॥ छाडिइतोअनषावरी, अहेवावरीबांम ॥ नागरियाभुवभंगमैं, भये तृभंगीस्यांम ॥ ४ ॥ पदराग रायसो ॥ इकताल ॥ विलसतकुंजसद नसुषसुंदरिनायकनंदनंदनरंगभीनौं ॥ सरदचंदप्रफुलितद्रुमबेली बिबसमदनमनकीनौं ॥ छूटेवारहारउरटूटेषुलेवंदविगलितपटझी नौं ॥ लटपटायदोऊरहेलपटिकैंतनगुलावजलमहाकिनवीनौं ॥ या रसहीरसवीतिगईनिसिफिरफिरिअधरसुधारसलीनौं ॥ इहिंविधिकूट तनहिंमैंसैंनागरियाजैसैंजलमीनौं ॥ १ ॥ तिताल ॥ कुसमकँवल

दलसज्यारचीहैंकुंजकैंआंगनचंदकेसौंहैं ॥ मिलिपौढेतहांप्रीतम
प्यारीसुरतरंगरसबसअलसौंहैं ॥ गौरस्यांमतनसौंतनउरझेसुंद
वांहनिवांहगसौंहैं ॥ नागरीदासरहिगएइतउतइकटकनैंनानिनैंन
सौंहैं ॥ २ ॥ रागकाफीकाख्याल ॥ तिताल ॥ अरेहूंबाटनजांनूं
कोइबतावैंवाकोधांम ॥ यावनमांझअचांनकहूंउरलाइलईआभिर
म ॥ मनलैगयोनांमनहिंजांनौंहोसुंदरतनस्यांम ॥ नागरीदासठगं
हौंअवलाअवनकछूबसवांम ॥ तनभयोसिथलचरनकांपतसरमा
तानिदईकांम ॥ ३ ॥ तिताल ॥ एरीआलीसुंदरनंदकुंवारठाढोललित
कदंबतरैंजमुनांतटनवघनस्यांमसरीर ॥ सोहतहैंबनमालमोहातिमः
किमालतीरहीचहूंदिसभईभँवरनकीभीर ॥ चलिरीचलिबलिआइ
नैंननिरूपअमीरसपांनकराहिंकिनहराहिंबिरहउरपीर ॥ तूंगौरिं
स्यांमजोरीजगतबिभूषननवलनागरीबासियेधीरसमीर ॥ ४ ॥ ति
ताल ॥ गौरीलटकंदीचलैंजोवनादेभार ॥ करदेकहरकमरनाज
कपरसिरसटकारेवार ॥ मतवालीअंषियांज्ञनिमांणीकरैंजनरब
छीदीवार ॥ नागरीनवलअजवमहरेटीमोहनदीदिलचंगीयार ॥५॥
तिताल ॥ वांकेनैंनाविंदुरातीभाल॥ छुटीलटफंसीलटकीलीचाल ॥
फूलनकीबधियापतरौंहीबाल ॥ नागरीकटिकीपटलीपैंफुंदियांकं
हाल ॥ ६ ॥ तिताल ॥ यारीदाकुपेचमैंडेनैंनूंदीकमाइयां ॥ देषिं
पिमैंहुईदिवांनीउसदीबेपरवाइयां ॥ रैंनिदिनांसमझायरहीहौंटुव
दिलविचनहिंआइयां ॥ नागरियामोहनसौंहनपरतोभीघोलघुमा
यां ॥ ७ ॥ तिताल ॥ जासौंलाईप्रीतितासौंओरानिबांहीचहियैं
भलीबुरीसिरधारिजगतकीकहीसुनीसबसहियै ॥ सबमैंबडोनेहकं

नांतोहांतोकारिकितरहियैं ॥ नागरीदासमीतकपटीभयैंकहूंठौरनां लहियैं ॥ ८ ॥ तिताल ॥ नैंनालागेवेपरवाहीदेनाल ॥ एकपलकभीकलनहिंपावांरहदाहरदमहाल ॥ दिनांदिनजीदाज्यांन असाढाउसनागरदेण्याल ॥ नागरियावंसीवालेदाइस्कनहीं जंजाल ॥ ९ ॥ तिताल ॥ अंपियांलागिगईमोहनप्यारेसौं ॥ तवगरजीबरजीनरहीरीअवकहाहोयपुकारेसौं ॥ पीवनकौंपियवदनमाधुरीलगीरहैंसांझसवारेसौं ॥ नागरीनवचकोरज्यौंअटकीपियव्रजचंदउजारेसौं ॥ १० ॥ तिताल ॥ रेलगनिकोपैंडोन्यारो ॥ चातिगस्वातिवूंदरुचिमांनैंसरसारिताजलपारो ॥ नेहनगरकीडगरनपावैंनैंमीअंधविचारो ॥ नागरीदाससीसवकसीसैंतऊनांहिनिरवारो॥११॥तिताल ॥ रीकासौंकहियैंवीररीपीर ॥ विनदेपैंतलफतयेअपियांनांहिधरतचितधीर ॥ निकसनहूदूभरभयोअंगनाघरगुरजनकीभीर ॥ नागरीदासप्रेमबसजाकैंसोधौंनिपटवेपीर ॥ १२ ॥ तिताल ॥ नवजोबनलाडगहेलीप्यारीनूरहतमदनमदछाकी ॥ रूपरंगरसश्रवतमाधुरीबदनबिलोकनिवाकी ॥ अतिआशक्तअमलमोजैं प्रेमपियालेपीयैंरहतलालमदछाकी॥नागरीदासनवरंगाविहारीविहारनिनेहनिसाकी ॥ १३ ॥ तिताल ॥ अलमस्तभयेअलबेलेलालला डलीकेरसमाते ॥ छकीछबिसौंपलकैंवरवसनींनैंननिमैंमुसकाते ॥ मुषअंबुजवरस्यांममधुपमकरंदपीवतनअघाते॥दासनागरीरूपरंगरसअंगपीयालेराते ॥ १४ ॥ तिताल ॥ लीनौंहठहेरीमेरोकान्हमहीरी ॥ आवतदेपिवैठिमारगमैं अचांनकआंनगहीरी ॥ दीनौंनहींमोलकीनींबरजोरीकहाकरौंसवहीसहीरी॥ नागरीदासभईसुभई

अवबातनजातकहीरी ॥१५॥ तिताल ॥ सांवरेकेनैंनसलौंनें ॥ जबहीदृष्टपरतमेरैंमगपरिनसकतपगपैंडआगौंनैं॥ कांननलौंअनियारे चंचलरंगभरेअतिरीझरिझौंनैं ॥ नागरियाजिनकीचितवनिबिचिचे टकनाटकटावकटौंनौं ॥ १६ ॥ रागकाफी तिताल ॥ हौंतोरहीदेषि छबिमदनगुपालकी ॥ कहाकहूंसोभाअहारासिकरसालकी ॥ सीसपैं सुमनभीरअलिनकेजालकी ॥ एकऔररहीधुकिलालपावलालकी॥ हसतअधरदुतिलसतप्रवालकी॥मोहिलईहेरनिहौंनैंननिबिसालकी ॥ मेरोमनझूलनिझुलायोबनमालकी ॥ चलतललितगतिगंजनमराल की॥नागरियामेरीमतिमदनसचालकी॥ कहाकरौंकितजांऊंकासौंक हौंहालकी ॥१७॥ तिताल ॥नैंननिमिलायमिलायमनलीनौंहेलीसौंह नैंसलौंनैंस्यांममंदमुसकायकैं॥ भूलिघरडगरियागगरियागिरीमुषमो हनकोदेषिदेषिरहीहौंभुलायकैं ॥ पनघटभीरभईलोकलाजभूलिगई अंचरबिसरिरहीतनथहरायकैं ॥ तबतैंनचैंनपरैंलाग्योदुपदैंनमैंन नागरियाऊटौंअकुलायअकुलायकैं ॥ १८ ॥ तिताल ॥ अणीपेच दारजुलफैंवाला ॥ मैंतोरहीदेषिहैरतमैंअजबतरजकाग्वाला ॥ चा वतपांनछैलकांनपरधरैंफूलगुललाला ॥ नागरनवलसांवलासुंदरक रिगयादिलबेहाला ॥ १९ ॥ आंनकाबिक्त ॥ तिताल ॥ मनला याक्यौंकान्हअनोपेसौं ॥ अबपाछितायैंक्याहौंदांणिभूलिप्रीतकरी ओपेसौं॥निसदिनघुटिदीनूघरअंदरसासननददेहोधोपेसौं ॥ गुरजन हुरेरसिकविहारीनूंबेपणदेतनगोपेसौं ॥ २० ॥ आंनकाबिक्त ॥ व हिसौंहनांमोहनयारफूलहैंगुलाबदा ॥ रंगरंगीलाअरुचटकीलागुल होरनकोईजवाबदा ॥ उसबिनभँवरज्यौंभवदाहैंयहदिलमुजबेताव

दा ॥ कोईमिलावैंरसिकविहारीनूंहैंयहकांमसबावदा ॥ २१ ॥ ति
ताल ॥ रीकोऊअपनीअटापरगुडीउडावतछैलसांवरैंअंग ॥ गुडिय
उडावतदेषिसषीमनउड्योफिरतहैंसंग ॥ जियरारीगोतपातमेरोत्यैं
त्यौंदेतहैंगोतपतंग ॥ नागरीदासऊंचीनीचीचितवनिदैंझकझोरत्र
नंग ॥ २२ ॥ तिताल ॥ वारीस्यामाइहींकुंजमगआयजा ॥ प्रीतम
नैंनचकोरतृषतहैंबदनचंददरसायजा ॥ मुपतैंनैंकानिवारनीलपटछ
बिसौंमुरिमुसकायजा ॥ नागरनवलकिसोरलालपरचितवनिरसवर
सायजा ॥ २३ ॥ आंनकबिकृत ॥ तिताल ॥ मुरलीवारोमोहनांव
हिकहिहेलीकहांपाउंरी ॥ घरवनमनलागैंनहींहौंबावरीभईकितजा
उंरी ॥ सिथलअंगपगथरहरैंहौंउठिउठिकैंमुरझांउंरी ॥ रसिकविहारि
बनवारीबिनकैसैंजीवाजिवांउंरी ॥२४॥ तिताल ॥ मोहनामनभावना
मेरावो ॥ आंषडियांउदमादियांईरहैंमुषवेषणदाचावथनेरावो ॥ उ
ठदीदिलबिचदुपकलमालियांजबगलियांटुकआवैंअबेरावो ॥ नाग
रदिलदादरदनवुझदाकौंनकरैंयहन्यावनवेरावो ॥ २५ ॥ तिताल॥
राजबनरोमैंवासीह्यामैंकांईजांणैं ॥ गायचरावणहारग्वालियोसो
क्यौंरतनपिछाणैं ॥ दधिदांनीचंचललोभीजीजैंरौंमननहोरहैछैंटि
कांणैं॥ नागरीदासकहोकपटीनैंकुंणथांसूंरंगमाणैं॥२६॥ तिताल ॥
तोपेनैंनकह्लाइतैंडेपलपलपूंनकरंदे ॥ भौंहैंतोकमांनतनींपलकैंतीर
परंदे ॥ कित्तेघायलपरेकराहैंदिलनहींधीरधरंदे ॥ रसिकविहारी
नितिवारकरंदेटारेनर्हीटरंदे॥२७॥ तिताल ॥सबकीहैंचोटानिसांनेपैं॥
नैंनांबांनछुटैंचहुंघांतैंचांद्रिकाबहरकबांनेपैं ॥ लापनिहूकीभीरलगीर
हीमनलोचनपरसांनेपैं ॥ जानागरपरयहब्रजअटक्योसोअटक्यो

वरसांनेपैं ॥ २८ ॥ तिताल ॥ होप्यारीजूमोहिदीजैंयहदीजैं ॥ हा
हावारीगायगायकैंगातिलीजैंअबतोगातिलीजैं ॥ दीयोबिछायपीय
पीतांवरसुलपकीजैंयापैंसुलपकीजैं ॥ बढ्योनिर्तनागररसभीजत
निसभीजैंत्यौंत्यौंनिसभीजैं ॥ २९ ॥ रागछायानटतिताल ॥ बो
लतथेइतथेईथेईरंगभरेनिर्ततहैंपियप्यारी ॥ बजवतबीनप्रबीनलीन
धुंनिगुनसलितालतारी ॥ अरझीअलकछबिसौंबेसरिमैंअरझी
पीतपटसारी ॥ नागरनागरीरीझिपरसपरकहतवारचोहौंवारी॥३०॥
रागअडाणोतिताल ॥ आजुसषीप्यारीजूस्यामहिंसिषावहींलैलैंग
तिभेदहिबतांवहीं ॥ चतुरसिरोमनिजांनिअजानिभयेललितसुल
पसरसांवहीं ॥ तालिमकौंदेतस्यांमनाचतमैंरंगबढ्योसषीसुपनि
रषिसिहांवहीं ॥ नागरिकटाछनिकीलगतचमोठीचोटत्यौंत्यौंपिय
गतिहिंभुलांवहीं ॥३१॥ आंनकाविकृत ॥ तिताल ॥ होस्यामप्या
रीवोमैंडीजिंदलगीहैंतैंदेनाल ॥ जवहसिवेषैंतवतवजीवांरहिंदाहो
यनिहाल ॥ तुहींअसांढेनैंनप्रांनवसपयातुसाढेवाल ॥ यौंकहिंदाक
रजोरिकुंवरिसौंरसिकविहारीलाल ॥ ३२ ॥ तिताल ॥ वोमोहना
सोहनयारदेनैंणांदीझोकां ॥ सीनैंदेबिचुलगीअसाढेवारपारभईनो
कां ॥ रुकदीनहीरोकिमैंहारीलाजघूंघटदेरोकां ॥ रसिकबिहारी
दानांवलेलेकरैंसवब्रजनोकांटोकां ॥ ३३ ॥ तिताल ॥ नैंनोंदामा
रयापंछीमरजांदामांनसकौंनविचारा ॥ दोहा ॥ पंडितपूजापाक
दिल, येदिमागमतल्याय ॥ लगैंजरबअंषियांनिकी, सवैंगबउडि
जाय ॥ १ ॥ चस्मजरबसौंक्यारहैं, दीनगरबकीताब ॥ छूटिगिरैं
सवपासतैं, तसबीअसाकिताब ॥ २ ॥ लगिवरछीतिरछीनिगह,

होयबादिलबेहाल ॥ रहैंधरेंहीजहांअवस, चिलतैंबगतरढाल ॥ ३ ।
गर्बउडावैंसबके, अजबजबैकेनैंन ॥ लगैंसोईकहिकहिउठैं, हाय
हायदिनरैंन ॥ ४ ॥ चस्मतेगनागरचलैं, इस्कतेजकीधार ॥ और
कटैंनाहिंवारसौं, कटैंकटेरिझवार ॥ ५ ॥ तिताल ॥ अरीग्यारीरा
धागतिलेतअलबेलीयसुजांन ॥ रंगभरीयौंहैंमनमोहैंचितवनिअल
बेलीअलबेलीमुसकांन ॥ वदनचंदआनंदसुललकैंअलकैंअलबे
लीअलबेलीबतरांन ॥ कमलनैंननागरपियमोहेरासमैंअलबेली
अलबेलीलेलेतांन ॥ ३४ ॥ तिताल ॥ श्रीराधेराधेनांमठाढेस्यांम
कहैं ॥ अरीअकेलेकालिंदीतटछबीलीभांतिद्रुमलतागहैं ॥ मूंदत
दृगनिध्यांनमनभेटतषोलतहीमगओरचहैं ॥ नागरपुलकिप्रेमजल
नैंननिफिरिफिरिडारिडसासरहैं ॥३५॥ तिताल ॥ यहमेरोरूपभयो
मेरेजियकौंजंजालदुषभरयोनहींजावैं ॥ दुतियाकससिलौंदेषनिआ
वैं ॥ मिलिमिलिमोहिअंगुरीनिबतावैं ॥ घूंघटमैंनैंककहूंनैंनदरसावैं
जबआंषिनपैंआंषिनकीभीरउररावैं ॥ सांवरेकोनांवलैलेंश्रवनसु
नावैं ॥ दियासुनिसुनिबोलीठोलीहीयोसकुचावैं ॥ नागरियागोकु
लमैंबसिबोनभावैं ॥ अबभईहौंतमासोजियलाजनलजावैं ॥ ३६ ।
याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदेने ए दोहा ॥ कारिभौंहैंवांकीकहौं,
तनगीहैंक्यौंबैंन ॥ इतराजीअबकीजियें, इतराजीकेनैंन ॥ १ ।
चितचिंताचाहतधरनि, चितवतनीचीनारि ॥ कहोसपीकिहिंक
रनैं, पहरेपलटासिंगार ॥ २ ॥ तुमहीसर्वसकांन्हकैं, मांनकरोबेक
ज ॥ राधावल्लभनांमकी, प्यारीनिबहोलाज ॥ ३ ॥ छांडिइतोअ
नषावरी, अहेबावरीवांम ॥ नागरियाभुवभंगमैं, भयेतृभंगीस्यांम

## मानमवास ॥

+दोहा ॥ वहोभांतिनफूलीलता, भौंरनकीअतिगुंज ॥ तहांतु लावतसांवरो, चलिरीनवलनिकुंज ॥ १ ॥ फुलकंवलकेदलनिहरि, निजकरसेजवनाय॥तुवआगमआवनअरी, रापेनैंनविछाय॥२॥

इकताल ॥ मेरोकह्योमांनिमानिनी ॥ तजिअयांनछांडियेमां नजांतिजामिनी ॥ प्यारीलालसंगबालवहुतअतिसुहामिनी ॥ १ ॥ तोसमकोऊनांहिऔरजोकिभामिनी॥प्यारीदीनजांनिबीततीमांनमंदगामिनी ॥ उठिचलिहिलिमिलिये॥ जायमतिरामकीस्वामिनी२॥

दोहा ॥ तूहीजीवनिलालकी, तोबिनरह्योनजाय ॥ उत्तरहूनहिंदेतवालि, इतीनिठुरक्यौंहाय ॥ १ ॥ भूल्योहसिबोपेलिबो, परतसपिनकेपाय ॥ तुवमिलापकीआसमुप, राधाराधानांम ॥ २ ॥

दोहा ॥ नीचीचितवनिकरिरही, मांनतनांहिंअयांन ॥ उतैंसांवरोविवसव्हैं, यहकहालीनींबांनि ॥ १ ॥ सुनिरीकछुनूपुरभनक,

---

## सूचना–

+ मानमवास इकतालवाले पदके चौफेर प्रत्येक दो दो दोहा मूल ग्रंथमें हैं. परतु स्थानाभावसे उस मुजब आया नही इस लिये सीधा लियाहै सो इस मुजब, बीचमें इकतालका पद और उसके ऊपर को ( वहोभातिन फूलीलता, ) ये दो दोहा है, वामे तर्फ ( तूही जीवनि लालकी, ) ये दो दोहा है, दहने तर्फ ( नाची चितवनि करिरही, ) ये दो दोहा है. और नीचे ( ये आये नंदलालइत, ) ये दो दोहा है इस मुजव जानना.

गौंहनमोहनलाल ॥ कुंजद्वारहसिभेटिये, उठिगजगामिनिबाल २॥
दोहा ॥ येआयेनंदलालइत, देषोग्रीवउठाय ॥ करजोरैंविनती करत, मुकटछुवावतपाय ॥ १ ॥ चितईकछुमुसकायकैं, लईअंक भरभांम ॥ नागरियाहियसेजपर, विहरतस्यामास्याम ॥ २ ॥

॥इकताल॥ रचीपियमोहनकलकेलिनवेली ॥ मचीभुजनिविच कलहमनोहरटूटतहारहमेली ॥ परिरंभनअरुझेनाहिंसुरझतज्यौंद्रुम कंचनबेली ॥ नागरीदासदुरायअपनपौंयहसुपलपतअकेली ॥१ ॥ ॥ इकताल ॥ अबपौढनकोसमैंभयो ॥ इतआईद्रुमकीपरछांहींउत ढरिचंदगयो ॥ इंहींभांतिनिवहौंनिसबासरनितिप्रतिरंगनयो ॥ सुनि सोयेनागरियानागरअतिसुषदगनिदयो ॥२॥ रागमलारकाष्याल। तिताल ॥ बाजैंबाजैंबाजैंसुवंसीवनबाजैंरी ॥ रैंनअंधेरीघटारहीझ कितैसीपरीगरैंलाजैंरी ॥ मोरउठतकरिसोरघोरसुनिनवमलारसुरग जैंरि ॥ नागरीदासस्यांमसुंदरसौंकैसैंमिलौंचलिआजैंरी ॥ ३ ॥ इ कताल॥ आजुघनगरजगरजबरसैंसरसैंनेहमिलिदंपतिकलगांवहीं। कुहकतमोरमलारसुरनिसुनिवदराघेरिघारिआवहीं ॥ कांननश्रव तसुधातानमिमैंमूर्छितमदनजिवावहीं ॥ नागरियानागरनिकुं जरसरीझनिभीजिंभिजावहीं ॥ ४ ॥ तिताल ॥ कहाकरैं रेकहाकरूंदइयालाग्योबरसनिमेह ॥ जोहूंऐसोजांनतीतोछाडर्त नगेह ॥ बंसुरियावारेतेरीकमरियादेह ॥ भीजैंगीचुनरियामेरीचुह हैरंग ॥ छतनांवनायलेकैंचलिमेरेसंग ॥ आयनरिस्यांमभीजिगा लपटात ॥ नागरियाबनगयैंबनिगईवात ॥ ५ ॥ तिताल ॥ मेरैंअ एभीजेहोगात ॥ रिमझिमरिमझिममेहबरसैं ॥ येरीआलीसांवन

हावनौंरात ॥ रंगमहलरंगहीरंगमैंएरीआलीरैंननजांनीजांत ॥ कही कहांलैंजायनागरीएरीआलीस्यांममिलनकीवात ॥ ६ ॥ इकताल लुहरा॥इहिंरितुऔसरआजुसमैंसुपदाईहैं ॥ प्यारीरीघुमंडियघटाघहरा यकैंव्रजपरआईहैं ॥ रह्योदिवसअंधियारिजनूंयहजांमिनी ॥ प्यारीरीकरिरहीबदरनिमांझझमाझमदामिनी ॥ हरितभूमिपरझूंमिझूंमि द्रुमफूलेहैं ॥ प्यारीरीबोलतमधुकरमत्तवासररसभूलेहैं ॥ तैसोईमोरनसोरचहूंऔंरलायोहैं ॥ प्यारीरीसीतलमंदसुगंधसमीरसुहायोहैं ॥ मंदमंदअववरसतमेहकीबूंदैंरी ॥ प्यारीरीतोबिनापियकोआजुमदनमनरूंदैंरी ॥ डारतलालउसासधीरनांहींधरैं ॥ प्यारीरीदामिनिकीदुतिदेपिदेपिदृगजलभरैं ॥ हौंपठईअवलैंनिवेगिचलिभांवती ॥ प्यारीरीछिनछिनआवतहैंवरपासरसांवती ॥ वहिसुनिमिलीमल्हारवैंनधुंनिआवहीं ॥ प्यारीरीकहिकहिराधेतोहिबुलावहीं ॥ सुनतअंगअंगरायकछूमुसकायकैं ॥ प्यारीरीभीजतहीघनमांझचलीअकुलायकैं ॥ सनमुषआएस्यामभुजनिभरिझेलीहैं ॥ प्यारीरीलपटीतरुनितमालमनूंछबिवेलीहैं॥ यौंदंपतिनितिकरतहैंतहांविलासकौं॥ प्यारीरीवृंदावनदयोबाससोनागरीदासकौं ॥ ७ ॥ आंनकबिकृत॥ ॥ तिताल ॥ आयाव्रजपरछायाजीजलवादलझारिया ॥ हरियातरवरचूवैंपाणीवहोसरवरभरिया ॥ इणसमयेसुपलेणमनोरथदंपतिहियधरिया ॥ मिलियारसिकविहारीप्यारीसहुकारजसरिया ॥ ८॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैं दैने ए दोहा ॥ जडअवनीरतवतव्है, रसमैंनीरसठौर ॥ भीजीपावसरितुरची, रूपीरितुसवऔर ॥ १ ॥ आवैंवदराकांमदल, मोरनकीवअवाज ॥ फिरैंदुहाईसवसदन, हो

तमदनकोराज ॥ २ ॥ बरिषाघनघहराततव, धीरनहींठहराय ॥ उ
ठैंज्जहियहहरायमुनि, तपतारीछुटिजाय ॥ ३ ॥ कौनौमैंनिरधारसु
नि, पावसघनघहरांन ॥ सबकेमनजीतेमदन, वाजतसदननिसां
न ॥ ४ ॥ घुंमडिमेहचुंवतधरनि, अंधकारबाढिगैंन ॥ बिछुरिगयेच
कवाचमकि, समझिघौसकौरैंन ॥ ५ ॥ कनकमालदामनिहलैं, श्र
मजलकनबरषांन ॥ कांममेघरतिभूमिकौं, देतमनोरतिदांन ॥६॥
घनधाराझरहरिकरत, अवनोफारिप्रवेस ॥ चलेवहोसरसमरमनौं,
करनमूर्छितसेस ॥ ७ ॥ उतझरलाग्योमेहको, इतसैंननिझरनेह ॥
गउरस्यांमचढिचाढिअटा, भीजतरीझिविदेह ॥ ८ ॥ घटाव्रतावैंभां
व्रती, छटाबतावैंस्यांम ॥ रसभीजेसैंननिकरैं, जलभीजेचढिधांम॥
॥ ९ ॥ भुवधनुकचधुरवाछुटे, दसनदामिनीवृंद ॥ रूपघटाराधेअ
टा, गानगराजिधुंनिमंद ॥ १० ॥ घनतनदामिनीपीतपट, वगमु
क्ताअभिरांम ॥ मुरलीगरजनिरंगझर, वरसतहैंघनस्यांम ॥ ११ ॥
हरिमलारपूरितअटा, घुंमडीघटाअछेह ॥ ज्यौंज्यौंवाजैंमुरलिया,
त्यौंत्यौंबरपैंमेह ॥ १२ ॥ स्यांमघटाव्रजस्यामघन, गउरघटासु
कुंवारि ॥ नागरियाहियभूमिबिच, नितवरसोरसवारि ॥ १३ ॥
॥ पदरागमलार तालचपक ॥ रूपसिंहजीकृत ॥ कैसैंआंऊदा
मिनिमोहिडरावत ॥ जवजवगवनकरौंदिसिप्रीतमचमकनिचक्र
चलावत ॥ वेचातुरआतुरअतिसजनीरजनीयौंविरमावत ॥ गाजत
गगनपवनचलिचंचलअंचलरहननपावत ॥ सुनिपियवचनचतुर
चलिआयेभामनिसौंमनभावत ॥ रूपसिंहप्रभुनगधरनागरमिलिम
लारसुरगावत ॥ तिताल ॥ कुंजमहलकेंआंगनमधिपियप्यारीवा

हांजोरीविहरतरगमगे ॥ अरुनबसनधारैंमोतिनकीमालगरैंचिंहुटे सरीरचीरनीरसौंसगबगे ॥ छुटेबारभींजिलगेललितकपोलनिसौंकुं डलविमलनगभूषनजगमगे ॥ नागरीदासघनबरषतपांनीतामैंरूप केजिहाजमांनौंडोलतडगमगे ॥ २ ॥ पुनः मलारकोअनुक्रम ॥ ब रसतमेहआतिआईघटाकारीहैं ॥ तामैंचलीप्यारीउतआवतविहारीइ तदुहुंनिकेमिलिवेकीचाहचितभारीहैं ॥ सूझतनपंथद्रुमलतारहीझूं मिझूंमिसबजलमईभूमिझुकीअंधियारीहैं ॥ दांमिनीदमकिगईतामैं भटभेरभईनागरियादोऊहांसिभरीअंकवारीहैं ॥ ३ ॥ इकताल ॥ एकछतनांतरैंदोऊरहेलपटिलपटाय ॥ कियेमनोरथसांचाविपुनब सिराधामोहनराय ॥ वरषतजलधरधारअषंडितरवरचलेचुचाय ॥ नागरियातनमनउरझेसोकिंहिंविधिसुरझेजाय ॥ ४ ॥ ताल ॥ रा जतवंसीबटकैंनिकटदोऊरंगभरेपियप्यारी ॥ सीतलसुगंधमंदपवन गवनतहांतैंसीलूंमिझूंमिआईघटाकारी ॥ बरसतघोरिघोरिदामिनी कौंघतिजोरव्हैंरह्योचहूंओरमोरसोरभारी ॥ ऐसेसमैंनागरबिहा रीसंगप्यारीउरलपटिलपटिजातसुरतसुघरसुकुंवारी ॥ ५ ॥ पुनः मलारकोतृतीय अनुक्रम ॥ ताल चपक ॥ देषिराधेअवछविवृंदा वनकीहरीभूमिद्रुमहरेभरेसरबोलनिपिकमोरनकी ॥ ठौरठौरस्वेत फूलनिविचसांवलतामधुपनकी ॥ मनहुंविपुनधरनैंनकरोरनिसोभा लषतस्यांमघनकी ॥ चलिभामिनदामिनतनतूदुतिगिरधरमेघवरन की ॥ नागरियासुंनिमिलीलालसौंछहियांनवकुंजनकी ॥ ६ ॥ ॥ ताल चपक ॥ कहाकहूंसुंदरताकीसोंव ॥ रसबसनवनागरनाग रियाधरैंदोऊभुजग्रीव ॥ वरपतसघनवढतातिमरनिसिदेतसुरतसुष

नौंव ॥ फिरिदेषेदामिनिकैंझमकैंसोरसनांसकतनहिछींव ॥ ७ ॥ ॥चौताल॥सोयेदोऊमिलिमूलकदंबकैंकालिंदीकूलहैंभायो॥एकओरघनघटाआईझुकिएकऔरपुलीचंदचांदिनींवृंदावनछविछायो ॥ बोलतमोररहींनिसिथोरीअदभुतसमैंसुहायो॥नागरीदासराधामोहन विपुनवसिपावसरितसुपपायो ॥ ८ ॥ पुनःमलारकोचतुर्थअनुक्रम॥ गउरस्यांमबिलसतसुषसैंनी ॥ बाजतबूंदैंद्रुमपातनिपरश्रवनलगत सुषदैंनी ॥ सीतलपवनतनपरसतत्यौंत्यौंभुजदृढहोतगहैंनी ॥ नागरियापावसनिसराजतरंगेसुरतरंगरैंनी ॥ ९ ॥ पुनः मलारकोपंचम अनुक्रम ॥ सोयेसुरतसेजअरसाय ॥ कांमउदधिअवगाहिप्रियापियनेहमेहबरसाय ॥ पुलीअलकअरुपलकअधपुलीरहेरूपसरसाय ॥ नागरिसषीओटकरिठाढीजितघनकीषरसाय ॥ १० ॥ पुनः मलारकोछठोअनुक्रम ॥ बरसतमेहनेहसरसाई ॥ बिछुरीदांमिनघनपैंआई ॥ धाइजायतियकंठलगाई ॥ प्रीतममनहुंरंकनिधिपाई ॥ हंसिह सिरसिकनिचोवतसारी ॥ लईउढायकमारियाकारी ॥ झुकीरैंनिपावसअंधियारी ॥ विहरतनागरनागरियारी ॥ ११ ॥ बाढ्योव्रनघनमैं अतिनेह ॥ कांमरितांनिवितांनवनायोलाललतानितरगेह ॥ सुरतिरंगरसपागतफिरिफिरित्यौंत्यौंआवतमेह ॥ दामिनितिमरमिटावतनिसदृगनागरिचैंनअछेह ॥ १२ ॥ सोयेदोऊमिलिमूलकदमकैंकालिंदीकूलहैंभायो ॥ एकओरघनघटाआईझुकिएकओरपुलीचंद चांदिनीवृंदावनछविछायो ॥ बोलतमोररहींनिसथोरीअदभुतसमैंसुहायो ॥ नागरिदासराधामोहनविपुनबसिपावसरितसुपपायो ॥१३॥ पुनः मलारकोसातमोअनुक्रम ॥ उमगिमिलीइतउतदुहुंदिसतैंगउर

घटाअरुस्यांम ॥ गरजनिमधुरकिंकिनीनूपुरचात्रगवचनरचनसु
घ्वाम॥श्रमजलवरषतफुहीसुहीफविहसानिदसनदामिनश्राभिराम ॥
उडिउडिचलतमनूंबगपंकतिबिलुलितमुक्तादाम ॥ कुसमसेजअ
वनीविचलितभईअतिआनंदहियैंनृपकाम ॥ नागरियाइहिंविधि
नितपावसबृंदावनसुषधाम ॥ १४ ॥ श्राजश्रतिपावसराजतकुं
ज ॥ गउरसांवरीघटारहीमिलिबरसिरसपुंज ॥ तूटिहारबिथुरेओला
सेगजमुक्ताफलगुंज ॥ नागरियातहाँरूपपंकदृगनिकसिसकतनहिं
लुंज ॥ १५ ॥ सरसरसबरसिरहेपियप्यारी ॥ कछुकछुदृष्टिपरतअ
वपौढेसांवननिसिअंधियारी ॥ दामिनिदेपिदिषावतहैंउरझीबांहिं
यांअंपियांश्रनियारी ॥ नागरियाहियमैंयौंरहोनितश्रीबिहारीनिकुं
जबिहारी ॥ १६ ॥ गोवर्द्धनगिरवरकैंऊपरचढिदेपतब्रजसोभास्या
म॥ पीतांबरफहरातपवनबसमंदमंदलहकतबनदाम ॥ तैसीयछूटिर
हीघनमालाठौरठौरसरभरेसुठाम ॥ नागरीदासबिलोकतप्यारोनव
जोवनवृंदाबनअभिराम ॥ १७ ॥ रागहिंडोराकाण्याल ॥ सुंदरनंद
कुंवारझूलतललितकदंबतरैं ॥ जमुनांतटिनवघनस्यामसरीर ॥ सो
हतफहरतमालमोहतमहाकिमालतीरहीचहूंदिसभईभंवरनकीभीर ॥
चलिरीचलिआजुनैंननिरूपअमीरसपांनकरहिंकिनहरहिंमदनतन
पीर ॥ तूंगोरीवेस्यामजोरीजगतबिभूषननवलनागरीबसियधीरस
मीर॥१८॥तिताल॥ झूलतरंगहिंडोरैंनवलदोऊमनमोहनमोहनिछवि
पांवहीं॥द्रुमपरव्हैंव्हैंकढतबढतछबिपरसिपरसिधुरवामनौंआंवहीं ॥
पुलिबैंनीउरहारटूटिपटछूटिछूटिअंचरफहरावहीं ॥ नागरियाबढी
रमकरंगीलीतामैंझुकिझकझोरनिमिसुलपटावहीं ॥ २ ॥ रागमल्हा

र इकताल ॥ होकहारंगभीनीरितुहैसांवनकीफिरिफिरिझमकिझम
किझूंमिमेहआवैं ॥ चात्रिगमोरकरतसोरतैसियेगहरीघनकीघोरका
रेकारेबदरनिबिचबिचबिजुरीचमचमावैं ॥ सीतलसुगंधपवनगवनप
रसपरसदेपिफूलनिसौंभरीभरीहरीहरीडरियांलहिलहावैं ॥ तैसेईवि
लासपुंजनागरियानागरनिकुंजनेहमेहभिजएमिलिमिलिमल्हारगां
वैं ॥ ३ ॥ तिताल ॥ झूलतहैंदोऊसपीझुलावैं ॥ सौंधैंकीझकोरैं
स्यामतनगोरैंआवैं ॥ हिंडोरैंहिलोरैंमांझथोरैंथोरैंगावैं ॥ नागरझक
झोरैंहारडोरैंउरझावैं ॥ ४ ॥ हिंडोराकेइत्यादिपदनकीअलापचारी
मेंदैने ए दोहा॥ उतरिझमकिझूलैंचढैं, रँगरँगपहरिनिचोल ॥ लाल
मुनीयनकेमनौं, झुंडनिमचीकलोल ॥ १ ॥ नीलवसनगोरैंवदन,
झूलततियरसकंद ॥ आवतजातबिमांनज्यौं, घटालपेटैंचंद ॥ २ ॥
रमकतप्रियाहिंडोरनैं, छविदुरिदेपतपीय ॥ वेझूलतवेश्रमितकटि,
लचकनिलचकतजीय ॥ ३ ॥ झूलतठाढीप्रियहिलपि, रहेलालसु
धिभूल ॥ फहरतअंचलचंद्रिका, बैनीवरपतफूल ॥ ४ ॥ झूलतछ
बिउमचीअधिक, मचकतद्रुमचीलांम ॥ उचटैंचोटीपीटमनौं, लगैं
चमोठीकाम ॥ ५ ॥ दांवनलांवनिदुहुंनिके, वाजतआवतजोर ॥ वें
नींहारहिलोरहीं, बढिझोटाझकझोर ॥ ६ ॥ झूलतझोटाचढिगगन,
बैंनगरजसमतूल ॥ गउरघटाअरुसांवरी, दरपतहारनिफूल ॥ ७ ॥
नागरीदासहिंडोरनैं, सोभामनअवरेपि ॥ प्रेमझुलनिझूल्योकरौं,
दंपतिझूलनिदेपि ॥ ८ ॥ रागमलार ॥ ताल ॥ झूलतरसिकमोहन
राय ॥ संगभामिनिदामिनीघनदीचमनौंदरसाय ॥ कटिलचाकिम
चकनिचलतअदभुतलेताचितकौंचोर ॥ वढिगईझूलनिझननझनन

निकिंकनींधुनिसोर ॥ नीलपीतदुकूलफहरततुटीनववनमाल ॥ गयोअंचलछूटिउरडरमिलतझुकिझुकिबाल ॥ छईचहुंदिसिमेवमाला छयोरागमलार ॥ दासनागरिरीतिहिंसमैंसुपवढ्योविपुनाविहार ॥ ९॥ चौताल ॥ भिजहींभिजहींरीझिभिजहींझूलतलालभिजहींनवलनेहरसअटके॥ झोटालेतहरैंहरैंभुजमूलग्रीवधरैंहासिहासिबातैंकरैंनियरैंनिपटलूंविलटके॥ भींजतपटलपटेप्रगटअंगअंगलषिरहेइकटकदृगनागरनटके ॥ नागरीदासमेहबरसतानिसभईचपला चिराकठईतऊनपरतचितहटके ॥ १० ॥ रागअडाणो॥ इकताल ॥ झूलताहिंडोरैंलालनवलवृंदवालसंग ॥ चहूंओरठनकमनकजुवतनितनबानियबनकमनहुंमदनवागवसनसोहतहैंरंगरंग ॥ फूलनकेवरनवरननवलासीलीनैंकरनिप्रीतममनहरनतरुनिदीपतदुतिदामिनीअंग ॥ बजवतवींनानवीनगावततियगनप्रबीनगहगडगतिगांनतां नमांनपरानिमिलिमृदंग ॥ घहरतनभघटाकारीठहरतनाहिंचपलारीफहरतपटनीलपीतानिरषतमनलोचनपंग ॥ रमकनिमैंरंगरह्योजातनांहिमोपैंकह्योनागरियादासरसप्रवाहवह्योअतिउमंग ॥ ११ ॥ तिताल ॥ हौंतोसोभादेषिलुभाईमेरीअंषियांजलभरिआई ॥ झूलतकदंबतरैंजमुनांतटसुंदरकुंवरकन्हाई ॥ झलकतनिकसतमुकटलतनिबिचापितांबरफहरांनिसुहाई ॥ नागरियातबतैंमोजियमैंफिररहीमदनदुहाई ॥ १२ ॥ रागविहागरो ॥ तालचपक ॥ तूंदेषिरीसोभायाबारियां ॥ बढिजुगयेझोटाद्रुमपरसतअरुझिरह्योपीतांबरडारियां॥ तूटिगईबनमालहिलोरतछूटिकिंकनींकटिढरहारियां॥ नागरीदासप्रियाअंचलचलडरिलगिजातदेहथरहारियां ॥१३॥ तालचपक॥उतरेझूलेतैंसोभासिंधुझकझो

रेसे॥ प्यारीछूटेबारबैंनावेसरिसराकिगयेउततूटीवनमालासिथलकिं
कनीकाटिपुलेफैंटापेचसुघसुरतझकोरेसे॥ सँवारतभूपनवसनआयस
पीजनमनवारैंरीझिरूपनिरषिठगोरेसे।नागरीदासदोऊश्रमितव्हैंसो
येसेझदेषिछबिभुरयेरीमेरेनैंनाभोरेसे ॥१४॥ रागसोरट॥इकताल॥
नितिगरजगरजगरजकैंबरसनिघटालगी ॥ पावसरितुव्रजमेंरसरंग
रगमगी॥ हरितभूमिगहबररहेनवकदंबअंब ॥ कुसमकलितभँवर
भारझुकिझुकिरहीझंब ॥ निति० ॥ १ ॥ झूलैंजहांझुंडनिमिलिव
लबकुलनारि ॥ जिनमधिनायकवृषभानकिकुमारि ॥ गांनकरतच
हूंओरजुवतिनकीभीर ॥ पहरैंमनहरानितरुनिबरनवरनचीर ॥ नि
त० ॥ २ ॥ रूपचहलपहलबिचाहिंडोरनांसलोल ॥ मांनूंमुंनियनि
लालकैंझुंडनिमचीकलोल ॥ केकीसुरकुहाकिकुहाकिगावैंनववाल ॥
सुंनिसुंनिमलारमेघघुंमडिआवैंतिहिंकाल ॥ ३ ॥ नित० ॥ द्रुमनि
मांझझूलतबरबैंनीपुलिजात ॥ ज्यौंउडतमोरतरलपच्छपुच्छाफह
रात ॥ छूटिगयेअंचरउरटूटिहारडोर ॥ मचकनिमैंलचकतकटि
झोटाझकझोर॥ ४ ॥ निति० ॥ आईश्रीराधाजवसोभाहैंवढी ॥
सांवरीसहेलीझूलैंसंगलैंचढी॥कहीनपरततासमयकीयरसपरयोरंग॥
नागरियानिरषिभईनैंननिगतिपंग ॥ ५ ॥ नित० ॥ १५ ॥ राग
विहागरो ॥ इकताल ॥ जमुनाकैंतीरवीरजुवातिनकीभीरजहांपरम
रंगवोरनांरच्योहिंडोरनां ॥ वाजतमृदंगवैंनबीनसंगरागरंगपावस
रितुहोतासिंधुरसझकोरनां ॥ झूलतप्रियनवकिसोरझोटाझकझोरजो
रझननननननाकिंकिनीसोरछविहिलोरनां ॥ नागरवदिनेहमेहरमक
निमैंरंगरह्योचालिकटाच्छदुहूंओरदृगनिहोरनां ॥ १६ ॥ रागगोरी

तिताल ॥ नईकौंनयहझूलनिहारि ॥ स्यांमाकैंसंगछबिभरीसोहतस पीनवेलि ॥ अतिसुंदरतनसांवरीअरीमनहुनीलमनिवेलि ॥ स्वेदकं परोमांचव्हैंजांनिपरतकछुतोत ॥ झुकिझुकिझोटामैंमिलैंहसिकुंव रिलजौंहाहोत ॥ निरषैंफूलनिनेहकीसषीचतुरसिरमोर ॥ हमजांनी जांनीसबैंअरीयहझूलनिकछुओर ॥ सबैंछकायेनागरीदृगनिसुधा सौंप्याय ॥ कपटरूपधरिमोहनींअरीप्रगटिभईब्रजआय ॥१७॥ आं नकविकृत ॥ रागसोरठ ॥ इकताल ॥ हूंतोवारिहौंवारीगईदेषिहि डोलैंहेलीरंगरह्योसरसाय ॥ झूलणमैंझुकिझूमिरह्यापियप्यारीजीरैं रूपलुभाय ॥ भीजैंतनतरवरचुवैंलागागलवांहींलपटाय ॥ रसिक विहारीकोयौंझूलिबोम्हारामनमैंझोटापाय ॥ १८ ॥ रागअडाणौ ॥ तित.ल ॥ येहोलालझूलियैंनैंकधीरैंधीरैं ॥ काहेकौंइतनीरमकव ढावतद्रुमडरझतचीरैंचीरैं ॥ क्यौंतुमझुकिझुकिझोटाकैंमिसआवत होनीरैंनीरैं॥ येवरजतत्यौंत्यौंवेनागरलेतभुजनबिचभीरैंभीरैं ॥१९॥ रागसोरठ॥तिताल॥दोऊमिलिझूलतरंगहिंडोरैं॥ नीलपीतअंचलच लचंचलवैनीहारहिलोरैं॥ भंवरभीरलपटतसंगआवतलगिसुगंधकैंडो रैं ॥ नागरियानागररमकनिमैंमिलिगावतथोरैंथोरैं ॥ २० ॥ रागव डहंस ॥ ब्रह्मताल ॥ बालविनोदीमेरेहियमैंझूलतनित्तवसो ॥ रतन जटितकैंललितहिंडोरैंवछियासहितलसो ॥ रमकनिमैंलडुवामांष नकोविचिवि.िलेतगसो ॥ नागरियासुसरारिकीकोऊहसैंसुभलैंह सो ॥२१॥ वांसुरीकेपदगावनेतिनकोअलापचारीमैंदैने ए दोहा॥ वंसवंसमैंप्रगटभइ, सवजगकरतप्रसंस ॥ वंसीहरिमुषसौंलगी, ध न्यवंसकोवंस ॥ १ ॥ जिनमोहीसवब्रजवधू, विसरिगईगृहचैन ॥

तीनलोकमैंगाइयैं, मनमोहनकीबैंन ॥ २ ॥ नेहमुरलियाकोगिनों, रहतजुअधरनिपास ॥ मरिबोजीबोआपको, हरिकैंसासउसास ॥ ॥ ३ ॥ मुरलीकीमालाकरी, नंदलालावसहेंत ॥ राधराधेजपति नित, गूढमंत्रसंकेत ॥ ४ ॥ अलकचँवरचांपतकरनि, अधरउसीसा लाल ॥ कौंनपुन्यकियबांसुरी, यहसुपलहतरसाल ॥ ५ ॥ नागरि यादोऊएकरस, रहतपरसपरलीन ॥ जलमुरलीब्रजमीनहै, ब्रजज लमुरलीमीन ॥ ६ ॥ ब्रजमुरलीनांतोसुहृद, होतनकबहूदूर ॥ नाग रमोहनमुरलिया, ब्रजकींजीवनिमूर ॥ ७ ॥ रागधन्यासरी ॥ तथा भीमपाली ॥ तिताल ॥ तूसुंनिमोहनबैंनबजावत ॥ मनमोहनबैंनब जावही ॥ उरअंतरमैंनजगावहीं ॥ सुंनिधुनिछिनुरह्योनजावहीं ॥ कहाकीजैंआलीबनमालीसैंनसुनावत ॥ सैंनसुनावतबनमालीसुं दरकरपल्लवचलचाली ॥ सुनिकोगहैंधीरतरुनिवाली ॥ कैसैंसचु पावैंफूंकनिमंत्रचलावत ॥ फूंकनिमंत्रचलतबनतैंगिरबरतरुप्रे मद्रवततनतैं ॥ तरुठाढेस्यामत्रिभंगनितैंजलगवनथक्योरीपवन नपातडुलावत ॥ पवनपातडुलावतरी ॥ नागरियाधुनिसु निगावतरी ॥ कहूंखपगमृगधेनुनिधावतरी ॥ घिरिठाढेइक टकमुपतैंनदृष्टिडुरावत ॥ १ ॥ पदबांसुरीकेरागजैजैवंती ॥ ॥ इकताल ॥ बांसुरीसुंनिसांवरेकीबावरीसीभईहूंहेली ॥ बिनबाजैं होंबंसीडरतैंबैठींजायअकेली ॥ आयपरैंधुनिश्रवननिमैंजबलागिउ ठैंतलबेली ॥ बिसरतसुधिनैंननिजलबरपतभींजतहारहमेली ॥ ना गरिदासनबरनिसकौंकछुमनकीदसादुहेली ॥ १ ॥ आलीकौंनैंबन मुरलीबजाई ॥ मोहनमादिकसौंभरीकांननधुनिमंडराई ॥ कांन

नधुनिमंडराईकंपपगडगभारिचल्योनजाई ॥ थिरव्हैनीररह्योजमु
नांकोथथितभईबनराई ॥ थथितभईबनराई रैनिमैंचंदरह्योठहरा
ई ॥ नागरीदासचकितषगमृगकुलमैंनव्यथासरसाई ॥ मैंनव्यथा
सरसाईसषीसुनिनांहिनपरतरहाई ॥ २ ॥ तिताल ॥ एरीमाईदेषि
रीतूदेषिस्यामैंमनकौंहरतुहैं ॥ मुरलीअधरधरैंसोहैंवनमालगरैंठाढो
व्हैंतृभंगीलषिरह्योनपरतुहैं ॥ चहुंओरषगमृगठाढीगऊतृनताजिइक
टकलायैंदृगअंसुवाढरतुहैं ॥ नागरीदासगोपीधुनिसुनिमत्तभईध्यां
नरूपमाधुरीकौंअंकनिभरतुहैं ॥३॥ तिताल ॥ अणीसिरधुंणिधुंणि
रहांकैंनूंकहांसहांपीरजमुनांदेतीरहैंसुनैंदीबंसीबाजदी ॥ सांवलासौं
हनाग्वालालैंदामनमुरलीवालासुनिबीतैंहालासोगलकैंनूंआपांला
जदी॥अधरौंदाअमृतरसलैंदीछिणुभीबैंननमौंनिगहैंदीसुंणिसुणिह
मनसहैंदी ॥ वहसोतिसीसपरगाजदी ॥ नागरियाजिंददुहेलीसीनें
देविचतालाबेलीचैंननुपावांरांनिअकेलीदूभरघरीआजदी ॥४॥ राग
काफी बांसुरी ॥ तिताल ॥ मोहनवंसीधुनिउचरी ॥ शिवसमाधि
छुटिगईश्रवनसुंनिविवसजटाबिषरी ॥ जकिथकिचकिरहिगयोमद
नकरधुनहींछूटिपरीनिभाविमांनभईभीरसुरबधूउरअंचरबिसरी॥ ना
गरियासुंनीतांनकांनजाकीधीरजलाजटरी ॥ ब्रजगोपिनकैंहेतमुर
लियासबजगविजईकरी ॥ ५ ॥ तिताल ॥ बांसुरीबनबाजैंदईको
जैंकौनउपाइ ॥ मैंनतीरबेधीगईहौंधीरबिनांअकुलाइ ॥ सिथलदेह
पगकांपहीमोपैंडगभारिचल्योनजाइ ॥ थक्योपवनरविरथथक्योस
बषगमृगरहेलुभाइ ॥ श्रवतप्रेमजलजडनिकैंरह्योजमुनांजलठहरा
इ ॥ बंकनैंनभुवतरुनतृभंगीपीतबसनफहराइ ॥ नागरियाघरबदत

बिबसमोहिअधरसुधारसप्याइ ॥ ६ ॥ इकताल ॥ बाजैंबाजैंमधुर धुनिवंसीरीबाजैं॥जोसुनिहालहियेमैंबीतैंसोकहतजुआवैंलाजैं।लगी पीयमुषसौंतिमुरलियानिसदिनासिरपरगाजैं ॥ नागरीदासकहांलगि निबहैंइनवातानिग्रहकाजैं॥७॥तिताल॥एरीवंसीअधरसुधारसराची। लायेरहतसुंदरमुषसौंमुपतूंहीसुहागनिसाची ॥ पियकैंसासउसासति हारीतेरेप्रीतिनहिंकाची॥ नागरियाहरिअधरअमृतहितबहोतनाचह मनाची ॥ ८ ॥ निलजवंसीलगीपियमुषगाजैं ॥ लाजभरीनकी लाजछुडावततऊआवतनहिंलाजैं ॥ करनहुतोसुतोपहिलैंकीनौंकर नमतैंकहाआजैं ॥ नागरकुंवरकैंप्रेमगहेलीतूमतिवाजैंरीमतिवाजैं ॥ ॥ ९ ॥ तिताल ॥ दईयाआवैंरीधुंनिवार ॥ बीचिवहैंनदियागहरी रीकैसैंउतरौंपार ॥ यहमुरलीमनलीयैंजातहैंनांहींअंगसह्मार ॥ ना गरियाकछुवसनचलतअवकीजैंकौंनविचार॥१०॥ तिताल ॥हेलीमु रलीधुंनिसंकेतमैंवाहीबरकीछांह ॥ श्रवनसुनतहीमोहिलईरीधी रनहींमनमांह ॥ नवलकह्नाईसांवरोविनदेपैंकलनांह ॥ गुरजनड रजरिजाहुसबैंरीकोऊगहोजिनबांह ॥ मोहिबुलावतकांनदैंरीलेलैं राधानांम ॥ चपलाज्यौंचलिनागरीमिलीजायघनस्यांम ॥ ११ ॥ ॥ तिताल ॥ काह्नवांसुरीबजावैंनिसदिननींदनआवैं ॥ सुनिसुनि रह्योनपरतसदनमैंमदनसंतावैं ॥ हियरैंअचूकनिकेपाढिपाढिफूंकनि केमंत्रचलावैं ॥ नागरियाकरूंमुरलीकीसैंननमैंमोहिबुलावैं ॥१२॥ ॥ इकताल ॥ मुरलियास्यांमकीवाजैं॥इनहिंबरजोरीकोऊआजैं ॥ चढीसिरसौंतिसीगाजैं ॥ लगीदुपदेंनकैंकाजैं ॥ भयोहैंकामहिय छौंहन ॥ करतहैंकरेजासौंहन ॥ लगाईपीयमुषमोहन ॥ परीहैंद

मारैंगोहन ॥ नागरियावहतहैंअंसुरी ॥ उठतहैंकसकबिचपंसुरी ॥ अरीबंसुरीअरीबंसुरी ॥ अरीतूछिमाकरिबंसुरी ॥ १३ ॥ तिताल ॥ गईकरिबीरबांसुरी ॥ गरैंकटीनैंकडरैंनदईतैंढरैंआंसुरी ॥ तांननकेतीरमारतपीरपांसुरी ॥ तूंनागरअधरारसलैंहमलैंउसासुरी ॥ १४ ॥ इकताल ॥ सुनिरीआईधुंनिहैंवनबंसीबाजैं ॥ रुक्योपवनअरुगवनचंदथिरजमुनाउलहतपाजैं ॥ मनमथमनहिमरोरैंमारतअवनरहतकछुलाजैं ॥ नागरनवलतृभंगीसौंसपीकैसैंमिलौंचलिआजैं ॥ १५ ॥ राग वंगालाकी बांसुरी ॥ इकताल ॥ आवैंआवैंहोबांसुरीधुनिआवैं ॥ सुंनिसुंनिमनबौरावैं ॥ अबमोहिगृहअंगनांनसुहावैं ॥ मेरोमिलनप्रांनअकुलावैं ॥ मनमथलहरिघुमावै ॥ हियेहरिमूरतिमंडरावैं ॥ नागरीदासचल्योनाहिंजावैं ॥ उठिउठिफिरिसुरछावैं १६ ॥ तिताल ॥ सीतलकदंबतरैंबंसीबाजैंधरैंधीरैं ॥ सुनियतहैंजमुनांकैंरीजमुनांकैंतीरैंतीरैं ॥ मनहुतृभंगीसमुपठाद्दोसनमुपठाढोनी ... रैं॥ नागरियाभुजबीचनआवैंनभरीभुजभीरैंभीरैं ॥ १७ ॥ तिताल ॥ बनमालियारेबंसीबजाईसुनियतरिजमुनांपार ॥ मुरलीअधरधरीपरीजियपरभरीसुंदरतृभंगीरेरंगकीनौंकौंनउचार ॥ अगमविषमबनबीचजलधाराअनपारलंघईयोंस्वामीमारैंसरमार ॥ चल्योईचहतमगपगनचलतदईनागरीरिसईरोहूंस्यांमैंनाहींअंगसम्हार ॥ १८ ॥ तिताल ॥ गहरैंगहरैंसुरसुलीसुनिदूरिवाजैं ॥ मैंनभरीधुनिसैंनसुनावैंराहिबोनआजैं ॥ तरुननइयातीरवाहीबनछईया ॥ नागरीनवलतृभंगीबनमालीविचअमईया ॥ १९ ॥ [illegible]ताल ॥ सुंनिबंसीबाजैंबंसीबाजैंसरदजुन्हइयारैंन

तनकभनकधुंनिसुनिताबिमलचंदाथाकिरह्योगैंन ॥ आजलौंरहीरी लाजराषीपरिपरिपइयां ॥ नागरीनवसकहाकोजैंगुसइया ॥ २०॥ तिताल ॥ वंसीमनमोहनीबाजैं ॥ बंसीबाजैंसुनिरीआजैंटूटतलाज कीपाजैं ॥ ठाढोहैंरंगीतृभंगीसिषीमुषअंबुजबैंनविराजैं ॥ नागरीनं दललाबनमालीसौंआलीमिलौंकैंसैंआजैं ॥ २१ ॥ तिताल ॥ बैंन बाजैंजमुनांकैंतीर ॥ उमगिचलीसांवनसरिताज्यौंजुवतिनकीभीर॥ हाइदईनिदईमोहिरोकीकितजाऊंवीर ॥ नागरीदासप्रेमपथआगैंपं हुंचीछांडिसरीर ॥ २२ ॥ रागपरजकीबांसुरी ॥ हेलीमोहनमुरली धुंनिसुनीमोहितवतैंकछुनसुहाइ ॥ वहरवविषज्यौंरमिरह्योहोंलहर निलईदबाइ ॥ घायलज्यौंघूंमतफिरौंधरपरतडगमगेपाइ ॥ कुंवर सजीवनिसांवरोवाहीपैंमंत्रपढाइ ॥ वहमुषमोहनमाधुरीनिसदिनउर बिचउरराइ ॥ भरिभरिलोचनआंवहींजियबिनदेपैंअकुलाइ ॥ पी रपूरनपासिपरहीछबिगडीतृभंगीआइ ॥ नागरियाप्रियप्रांनजांनम निजिंहिंतिंहिंभांतिमिलाइ ॥ १ ॥ इकताल ॥ मुरलियाकौंनैंप्याल परी ॥ काजकरनसुंनिथकीहारइतउतपगडगनधरी ॥ मातापितापि तुबंधसबनिमैंप्रीतिहिप्रगटकरी ॥ नागरियाव्रजजुवतीजनसबप्रेम जालकरी ॥ २ ॥ तिताल ॥ वंसीधुनिमनालियैंजाय ॥ विरहव्रिथा कीपीरवढीसुनिधीरनहींठहराय ॥ नैंनजलमईश्रवनवैंनमईहियैंठई हरिमूरतिआय ॥ नागरियामुरलीमोहनकीगोहनलागीहाय ॥ ३ ॥ ॥ इकताल ॥ बनबाजैंमुरलियास्यामकी ॥ सुनतहीहौंजकिरहीस सौंहींसुधिभूलीधामकामकी ॥ घरीएकबीततनांहींदिनरैंनचैंनवि श्रामकी ॥ श्रवनमूंदिहूरह्योजातनहिंनागरमोमतिवामकी ॥ ४ ॥

रागकेदाराकीबांसुरी ॥ इकताल ॥ अरीबांसुरीपरीहैंकौंनटेवतिहा री ॥ पैठतआंनिआंनिकांनानिमगप्रानिगहतकहारी ॥ लोकला जग्रहकाजछुटावतसुधिबुधिहरतहमारी ॥ काहेकौंबैरकरतन्हेंकैंनू नागरपियकीप्यारी ॥ १ ॥ इनपदकीअलापचारीमैं दैने ए ॥ दोहा ॥ नीलांबरसिरचंद्रिका, गउरअंगअभिरांम ॥ सोमेरेहि यमैंवसो, मोहनमोहनभांम ॥ १ ॥ साधोकोरिकजतननतउ, सरैंन एकोकांम ॥ राधाआधोनांमहूं, लियैंहोतबसस्यांम ॥ २ ॥ राधा रजपदपद्मतब, आराधैंसुषरास ॥ जबवृंदावनप्रेमरस, लहतनाग रीदास ॥ ३ ॥ तालचर्चरी ॥ जयतिश्रीकृष्णनवनीलआनंदघन रूपसिंगाररसबनबिलासी ॥ मदनमदमथनब्रजगोपकुलरतनतन परमसुंदरप्रियाउरनिवासी ॥ बेणुमुषधरनचितबधूव्रीडाहरनचंद्रि काधरननिसरासबासी ॥ दासनागरप्रणितनंदसुतरसकंदराधिका चंदमुषदृगउपासी ॥ १ ॥ चर्चरी ॥ जैतिश्रीचंद्रिकाचारुकलधूत केसूतकृतचित्रबहुरंगअंगे ॥ कृष्णाचूडारुचिररूपविस्तारनीवरहित नयामूलमुक्तिसंगे॥ सर्वअवतंसपरउच्चआरूढपदघोषजनदृगकरषि करनपंगे ॥ चढियमजुसिपरासिंगारमंदिरधुजाउठतफरहरनिविचछ वितरंगे ॥ प्रियापदजुगलजावकभरतकरततवइंद्रधनुरंगअभिमान भंगे ॥ नागरीदासचितचढियनैंननिचढीचढीहरिसीससुंदरउछंगे॥ ॥ २ ॥ चर्चरी ॥ जैतिश्रीमुरलीकाबपुधरनभारतीलालमृदुअधरस ज्याबिहारी ॥ कँवलसुषमधुरमकरंदसींचतसदाछिनकाबिनप्रानत जिदैनहारी ॥ कृष्णप्रियपरससंकेतहितदूतिकारासरसकेलिधन कौसतारी ॥ अपिलब्रह्मंडधुनिभेदव्यापकभईअमरनरनारिधृतिम

तिबिसारी ॥ बिस्वविजईबितनगर्बपंडनकरनधरहरनघोषजन कीजियारी ॥ नागरीनवलव्रजगोपिकनिहितकुंवरधराधरधरननित बैंनधारी ॥ ३ ॥ चर्चरी ॥ जयतिवनमालनवलससहुलसतप्रभावस तबिहरतसदाउरबिसाला ॥ फूलफलमंजरानिदलनिमयदेहआनंद आमोदभारंभ्रमरजाला ॥ बिपुनतनयातरुनानितिछबिलहलहाति षिलियसुषझेलिझुकिझुलियमाला ॥ दासनागरिआलीयाकेहितलो चनबिसालीनांवबनमालीभयेनंदलाला ॥ ४ ॥ चर्चरी ॥ जयतिल लितादिदेवीयव्रजश्रुतिरिचाकृष्णप्रियकेलिआधारअंगी ॥ जुगल रसमत्तआनंदमयरूपनिधिसमरसुषसमयजिमछांहसंगी ॥ गउरमु षहिमकरनिकीजुकिरनावलीश्रवतमधुगांनहियहरितरंगी ॥ नागरी सकलसंकेतअधिकारनीगनतगुंनगननिमतिहोतिपंगी॥५॥ चर्चरी ॥ जयतिवृंदाबिपुनबिस्ववंदनमहीमहिमाअद्भुतनिगमगाजगाजैं॥वन निवनराजव्रजराजसुतप्रियतहांसहजसुषनित्तरितुराजराजैं ॥ कथ तश्रीमुषकथाकृष्णवलिप्रतियथाफूलफलझूमिंछबिछाजछाजैं ॥ कोशदसदोयअनुरागरैंनीरचीपरसिमनबिरंगताभाजिभाजैं ॥ जुग लकलकेलिविचकुंजरचनारुचिरनूपुरनिशब्दप्रतिवाजबाजैं ॥ दा सनागररंगवागराधासदानिरषिट्टगकांमरतिलाजलाजैं ॥ ६ ॥ च र्चरी ॥ जैतश्रीगांवगोकुलरमणनंदसुतअवनिउच्छवरूपअतिआभि रांम ॥ भीरआभीरबढिधेनुसागररह्योजितहिंतितहोतगुनगांनस्यां म ॥ रहतधुनिछईतहांमेघमथनांनिकीफिरतहारिहरतदधिवांमधांम॥ सर्वनरनारिगोपाललीलामगनदिवसनिसजातजांनतनजांम ॥ परि कसुषसंपदानिरपिचितचकितसुरलोकतजिचहतभुववासग्रांम ॥ ना

गरीदासधनधन्यसोकुलजहांगांवहींरसनांगोकलसुनांम ॥ ७ ॥ चचरी ॥ जयतिगिरराजकृतछत्रव्रजराजसुतसहजसुरराजगतिगर्वहारी॥ वर्यहरिदासजनघोषसुषरासरितुसर्वदाहरितहुल्लासकारी ॥ सकलरसवर्द्धनंदेवगोवर्द्धनं प्रणतिइंद्रादिसुरलोकचारी ॥ विपुनमधिनायकंभूमिछबिभायकंपायकंनीलमणिपीतप्यारी॥परमप्रियहेतसकेतसुषकंदरातहांनिसदिवसाबिहरतबिहारी ॥ नागरीदासलघुबुद्धिवरनैंकहाउताहिंनगप्रगटजगमाहिमांभारी ॥ ८ ॥ याअनुक्रमकीअलापचारीमैंदैने ए दोहा ॥जपतपसंजमनेमव्रत, जोगजग्यकरिपूर ॥ भक्तिभागवतसंगबिनु, भक्तिनउपजतमूर ॥ १ ॥ सुनैंभागवतभक्तिव्हैं, भक्तिभयेंव्हैचैंन॥ जंक्तमांझआशक्तक्यौं, दुषबितवैंदिनरैंन ॥ २ ॥ संमृतबेदपुरानहैं, सबहीहरिकेअंग ॥ रंगनलागैंभक्तिको, विनाभागवतसंग ॥ ३ ॥ जक्तभक्तबहौभांतिकहि, नानामतकेमांहि ॥ सुकमुषकेबिनफलद्रवैं, ब्रजरसपावैंनांहि ॥ ४ ॥ नागरीदासविचारिजिय, अफलजायनहिंदेह ॥ चाषिभागवतअमृतफल, जनमसफलकरिलेह ॥ ५ ॥ श्रीमत भागवतकी कथाके समैं ए पद गांवनें राग प्रभातकेमैं तथा सारंगमैं गांवनें ॥तिताल॥ आरती श्रीभागौतकीकीजैं ॥ श्रवनसुनतजीवनफललीजैं ॥ गोघृतरचितकपूरकीबाती ॥ निरषतजोतिजोतिभईछाती ॥ जनमजनमकेबंधनजारे ॥ भवसागरमैंबहतउबारे॥ तीनतापकरिडारेमंदे॥ नागरीदासफिरतआनंदे ॥ १ ॥ तिताल ॥ जैंजैंश्रीसुकमुनिमतवारे ॥ कृष्णरूपगुनमत्तवारुनीउनमीलतदृगभारे ॥ सीतलसुषदप्रसन्नबदनाबिधिलपिहियमिटतअंधारे ॥ जगमगातनवक्रांतिमाधुरीप्रेमपुंजउजि

यारे ॥ बिचरतकरतपुनीततीरथनिअगनितजीवउधारे ॥ अबक
रिकृपादासनागरिकहैंमेटोतापहमारे ॥ २ ॥ इकताल ॥ मुनिसब
लोकपावनकरे ॥ प्रगटिश्रीभागौतकीनौंकरुनांसागरढरे ॥ ल्याय
भागीरथसुरसुरीपापपूरबहरे॥ तुमजुसबउरभवनमैंभक्तिदीपकधरे॥
कृष्णचरिताबिचित्ररसमदप्रेमगहवरभरे ॥ सहजश्रीसुकचरननव
कादासनागरतरे॥३॥ रेपता जुबानके इन धुरपदौं पियालौंकी अला
पचारीमैं दैनें ए दोहा॥उसहीकोसुंनिसिफ्तकौं, किसीजुबामैंहोय॥का
दरनादरहुस्नका, कृष्णकहायासोय ॥ १ ॥ उजलेमैलेपलकमैं, फै
लेमज्बअनेक ॥ इस्कबाजसिरताजकौं, इस्कपियाराएक ॥ २ ॥
इस्कबाजवैसानकोउ, वैसासूरतपूब ॥ नागरमोहनसांवला, कद
रदांनमहबूब ॥ ३ ॥ मजामज्बजोपलकमैं, सोदिलकछुनसुहाय
अज्बउसीकेइस्कका, परैंगजबजबआय ॥ ४ ॥ राग इकताल ॥
अज्बसपसजिदबक्सबेनजीरदस्तगीरहितानिबाहवाहसबपूबियौंका
भारासा ॥ इस्कबाजदरदबंदकदरदांनजांनमनजांनप्रानप्याराच
स्मौंकातारासा ॥ नंदकाफरज्यंदपूबनागरसलौंनास्यामफैल
रह्याब्रजमैंउसहुस्नकाउजारासा ॥ कादरअज्बरूपनादरगुसांई
ऐसादेषानसुनाहैंकहूंसाहिबहमारासा ॥ १ ॥ रागइकताल ॥
जिसनैंनहींपीयाहैंउसइस्ककापीयाला ॥ तिसनैंआयपल्कमैंअब
स्कैंपायडाला ॥ दीनवोदुनियांकेदिलदिमाकसौंवहन्यारा॥इस्कसौं
न्यारानहींआसिकनिवाजप्यारा ॥ जुल्फकीजंजीरसप्तदिलकौं
दस्तगीरकीया ॥ उसकौंपुदावंदहरेकफंदसौंछुटायलीया ॥ अब्रू
यदुकजतेगचस्मपंजरमदहोस॥इनसौंकतलहौंनैंबिनजीनांअफसो

स॥ गुलगुलाबसदँसंदलल्याताक्याअंग॥सनमकीहुस्नरोसनींपरहो कैंजलपतंग ॥ नागरहौंउसगलींकापायषाकपूव ॥ सर्वषुसअदाह सौंजहांचलतामहवूव ॥ २ ॥ राग तिताल ॥ सुंदरसलौंनेंवदनकं वलपरएअंषियांहैंभंवरगिरीक्यौं ॥ फेरिरहीमैंनासियतकरकरगज वकीमारीफिरनफिरीक्यौं ॥ हायअबसमैंजायपरीदिलहुस्नलाय कीलपटलगीहैं ॥ इस्ककीआफतलिषीहमनासिरसोंअबहरदमरहैंत गीहैं ॥ छुटैंनजियसौंवजैंललनकीचिमनमैंपुसदिलहोनिकलनकी ॥ कलगीमालाजुल्फहलनकीअदाहउसकेलटकचलनकी ॥ कहौंसंदे सजहांवहपीयातुजाफिराकसौंजलताहीया ॥ जहरजुदाईप्यालादी याजायनहींबिनदेषैंजींया ॥ अरेपीयारेमुझैंजिलारेगलीहमारीतोटु कआरे ॥ तजीसहेलीरहूंअकेलींजिंदडुहेलीदरसदिषारे ॥ करीदि वांनीदरदडुष्यारीजाहरहुईसवनिपरयारी ॥ एमनमोहननागरवारी लाजतजैंकीलाजहमारी ॥ ३ ॥ इकताल ॥ कीहैंहासियारंनिगाह अव्वइमरोजरस्मौं ॥ जीयादैंइस्ककीआमदसराबमस्तचस्मौं ॥ दीयाभरिरुषपीयालौंहीयासरसारवस्मौं॥ कीयादिलनागरवेअषत्या रउसीदिलदारकीकस्मौं ॥ ४ ॥ राग हमीर ॥ तिताल ॥ अजीं मददजिगरइस्कक्याहकीममरजपावैं ॥ चस्मकीदारूनअवसन व्वदस्तलावैं ॥ मनगकदराफिराककुछजिकरपुस्नआवैं ॥ दिलकौंर फाहोयतवनागरदरसदिपावैं ॥ ५ ॥ राग इकताल ॥ फीराकदि लसौंदरहरतरीकजुदानहोस्यायत ॥ लिषीहैंइस्ककीआफतनसी बमन्नकवायत ॥ नहींहैदुकगींदिलदर्दरफायत ॥ सांवलानागरवे परवाहनिहायत ॥ ६ ॥ राग बंगला तिताल ॥ हीयामन्नमहबूब

निसस्तगाहकीया ॥ इककभ्रभीवाहिरकेआयेक्यौंकिजायजीया ॥ नागरदिलपुसनांपुसअषियांदुषजिमैंकरिलीया ॥ आंसूपल्करुमाल इसारतबोलैंबीयाबीया ॥ ७ ॥ राग सोरठ तिताल ॥ उसहुस्नके तकाबलकरनांबयांनक्याहैं ॥ फिरिचस्मोंबिनविचारीसायरजुबांन क्याहैं ॥ महताबमुषकौंदेषैंबेताबहोतदिलहैं ॥ उसआगूंकिसकेम नकारहतासयांनक्याहैं ॥ हररोजवासजनकीमुजमारतीअदाहैं ॥ इसतर्जबेतकुल्लहफजीकाजियांनक्याहैं ॥ नागरअगरगिरफतैं दरदस्ततेगषूंनी ॥ अबइस्कपेतउसकूंलेनांमियांनक्याहैं ॥ ८ ॥ ॥ इकताल ॥ निगाहकेमिलतैंहींचस्मौंपैगांमाकिया ॥ रिसवतमुस क्यायदियादिलकौंलुभायलिया ॥ पुकारतीथीयारकीमिजगांकि बिया ॥ सुरझैंनहींइस्कनजरउरझीमुझबीचहिया ॥ सांवलासाहि बजमालछैलछलनिवालतिया ॥ नागरकहाओपियाउसबिननहीं जायजिया ॥ ९ ॥ इकताल ॥ अंषियौंसौंमैंकहाथाकरोमतहुस्न परस्ती ॥ जबतौंनहीरहीबिचसोपअसरमस्ती ॥ अबबिरहकीअ वाईदिलपरपरीहैताजी ॥ मुजकौंसलाहक्याहैमुस्कलहैइस्कबाजी॥ ॥ १ ॥ दोहा ॥ नैंननबेहुकमींनकौं, वहोतरहीसमुझाय ॥ हायइ स्कआफतअबस, सिरपरडारीलाय ॥ १ ॥ अपनेंजांनिनासिहिन किए, बहोतबहोतदिनरैंन ॥ मैंअपनीसीकरिथकी, अपनेहुएननैं न ॥ २ ॥ मनाकिस्तीहैंसिकस्तीदरियालगनमैंगहरैं ॥ तुजरूहरु यरुपौंहीउठतीहैकहरलहरैं॥ अपसोसकेभंवरमैंरप्यूंसदादियाजी ॥ मुजकौंसलाहक्याहैं ॥ मुस्कलहैइस्कबाजी ॥ २ ॥ दोहा ॥ परीइ स्कदरियावदिल, नावनपावतओर ॥ बेपरवाईरावरी, पुरयाईझक

झोर ॥ १ ॥ परिगईनावकुदावचित, किससैंकरूपुकार ॥ प्रीतम भंवरकेपेचतैं, कौंनउतारैंपार ॥ २ ॥ मेरीदसादुहेलीयहकिसकौं कहिसुनाऊं ॥ परिप्रीतकेसमदमैंकहूंपारभीनपाऊं ॥ नागरनवल पियारेतुमतोहोखुसमिजाजी ॥ मुजकौंसलाहक्याहैंमुसकिलहैइस्क बाजी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ अकथकहांनीप्रीतकी, कहीनमानैंकोय ॥ कोइयकजांनैंषलकमैं, जिससिरबीतीहोय ॥ १ ॥ रहैंहालहरदम लगा, छुटताहैंजियधीर ॥ पीरनपावैंइतेपर, यारनिपटबेपीर ॥ ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ इकताल ॥ अब्रूमहराबषानैंमिजगांअं झवौंकाफरंगफव्वाराकिया॥ पुतलीमसनदमुलायमकाजिनहारकि सीनैंनसफसछिया ॥ तुजइस्कहीकारोसनसमेजहांजिनजुलनातनि कासदिया ॥ पुकारैंनिगाहसबोरोजन।गरबियारेवियाएपियारेपि या ॥१॥ इकताल ॥ लबआबकियाघसषांनांपंषावंधाबाजगस्तीफ हिरैंफहिरैं ॥ परदेदरफरसएसंदलकेसबरंगरंगेगहिरैंगहिरैं ॥ जल चादरहोजजहांआबझारैंफवारेचलैंनहिरैंनहिरैं ॥ इहांनागरिनागर साहिबअैसउठैंसुपकीलहिरैंलहिरैं ॥ २ ॥ राग ललित ॥ तिताल॥ सुनिरीसषीसयांनी॥मुजइस्ककीकहांनी॥ देषामैंस्यामसलोंनां॥ उ सकेहुस्नमैंटोंनां ॥ भौंहैंबुलंदमुषबीरा ॥ सिरजाफरांनीचीरा॥जो बनमैंमस्तआंषैं ॥ गोयाकंवलकीपांषैं ॥ नीमांमिहीनतंग ॥ जिस मैंझलकताअंग ॥ कसैंतनबदनजवांहिर ॥ नैवजवांउमरपुस जाहिर ॥ उसकीअजबअदायैं ॥ दिलडालतीझुलायैं ॥ अबवहि सजनजहांहीं ॥ मुजलेचलोजहांहीं ॥ तलफौंलगीतालाबेली ॥ नागरबिनाजिंददुहेली ॥ १ ॥ रागभैरूं ॥ तिताल ॥ आ

सिकादिलअंषियौंकीजगमैंसबसैंअकहकहांनीहैं ॥ फिरनफिरैंमहबूवकरैंजबहासिचितवानिमहमानीहैं॥ बेसकबदनपरहेजनिहायतइनहिंनलालचहैंजीका ॥ हुस्नजहरकागिजामुकररऐसीअजवअयानीहैं ॥ उनविनसनमऔरनहींसूझैं ॥ हरदमएकउसीकूंबूझैं ॥ इसमतलबमैंनिपटसयांनी ॥ औरनकहूंलुभांनीहैं ॥ मस्तहालसबसुधिविसरांनीप्यासीमरैंपरीबिचपांनी ॥ एगरीबउसरूपदिवांनीउहिनागरअभिमांनीहैं ॥ २ ॥ देषामनमोहनसौंहनप्याराफैंटासिरवासजकजदार ॥ तिसपैंधरेबनायगुलगुलाबनौवहार ॥ हैंरहैंरदुजुल्फवदरौंमैंरोसनमुषचंद ॥ ज्यांनडसैंकालीकालियांसीमतवालियांभौंहबुलंद ॥ महरभरेचस्मौंकीसहरसीनिगाह ॥ स्यामरंगअंगअंगअजवषुसअदाह ॥ बदास्तनीलोफराफिरावताआवताविचउमंग ॥ उसकीकिरनमैंफिरतादिलहैहूंनराफिरंग ॥ चालमौंचितचालडालडालाजंजाल ॥ हुवानिहारनागरछबिइस्कमस्तहाल ॥ ३ ॥ तिताल ॥ कीकरांमैंरौंनिबिहांनीनींदनआवैं ॥ वहीरूपआंपांडियांआगैंआंनिआंनिमंडरावैं ॥ मैंडाहालनबुझदामोहनसौंहनवेपरवाहकहावैं॥ नागरियासांईनकिसीकौंइस्कफंदविचलावैं ॥ इकताल ॥ हुवाहैइस्कदामनगीर ॥ स्यायतभीनरफायतदेतादिलकौंदुगनीपीर ॥ सुबैंस्यामसोतैंजगतैंसंगलगीरहैंविरहवहीर ॥ नागरकुल्फकरीअंषियांअबजकरिजुल्फजंजीर ॥ इकताल ॥ मोहिक्यौंपिलायानींइस्कापियाला ॥ ल्यावल्यावस्याकीमहबूवांहायहायमतवाला ॥ अवधीरजकेपायनठहरैंजायनअमलसंभाला ॥ नागरियावहरूपमोहनदागलविचपयाजंजाला ॥ ५ ॥

## अथ इस्कचिमनके ॥

दोहा—उसहीकीसुनिसिफतकूं, किसीजुवामैंहोय॥कादरनादरहुस्नका, कृष्णकहायासोय ॥ १ ॥ इस्कउसीकीझलकहै, ज्यौंसूरजकीधूप ॥ जहांइस्कतहांआपहैं, कादरनादररूप ॥ २ ॥ कहूंकियानहिंइस्कका, इस्तैमालसंवार ॥ सोसाहिबसौंइस्कवह, करिक्या सकैंगंवार ॥ ३ ॥ सरामिंदाहोयइस्कसौं, सोदेवैंसवखोय ॥ निंदासहदांनैवजैं, सोईचुनिंदाहोय ॥ ४ ॥ दुनियांदारफकीरक्या, हैंसबजितनींजात ॥ बिगरइस्कमस्तीअरे, सबकीषिस्तीबात ॥ ५ ॥ सादेजेप्यादेसबैं, जद्यपिधनअनपार ॥ इस्कअमलमस्तीलियैं, सोहस्तीअसवार ॥ ६ ॥ सबमहजबसबइल्मअरु, सबैंअसकेस्वाद ॥ अरेइस्ककेअसरविन, एसबहीबरबाद ॥ ७ ॥ आयाइस्कलपेटमैं, लागीचस्मचपेट ॥ सोईआयापलकमैं, औरभरइयापेट ॥ ८ ॥ जरबाजीबिनपलकके, कामनसँवरैंकोइ ॥ एकइस्कबाजीअरे,ज्यांबाजीसौंहोइ ॥ ९ ॥ सीसकाटिकरभूधरैं, ऊपररष्षैंपाव ॥ इस्कचिमनकेबीचमैं, असाहैतोआव ॥ १० ॥ जिनपावौंसौंपलकमैं, चलैंसुधरिमतिपाव ॥ सिरकेपावौंसौंचला, इस्कचिमनमैंआव ॥ ११ ॥ कोइनपुंहचाउहांतलक, आसिकनामअनेक ॥ इस्कचिमनकेबीचमैं, आयामजनूंएक ॥ १२ ॥ इस्कचिमनमहबूबका, जहांनजावैंकोय ॥ जावैंसोजीवैंनहीं, जीवैंसोबौराहोय ॥ १३ ॥ अरेइस्ककेचिमनमैं, सम्हालिकैंपगधारिआव ॥ बीचराहकेबूडनां, ऊबटमांहिवचाव ॥ १४ ॥ मारिफिरिफिरिमारिये, चस्मतीरसौंपूब ॥ कि

यैंअदालतजुलमकी, जहांबैठामहबूब ॥ १५ ॥ आसिकपीरहमेस दिल, लगैंचस्मकेत्तीर॥ कियापुदामहबूबकौं, सदासख्तबेपीर॥१६॥ आसिकसिरअपनाअरे, धरिदैंपैंरूलाय ॥ वेनिसाफमहबूबकैं, क रैंदूरअनपाय ॥ १७ ॥ षूनकरैंलडवावरे, महबूबौंकेनैंन ॥ आसि कसिरकीगैंदसौं, षेलैंतवहीचैंन ॥ १८ ॥ सुरपचस्ममहबूबनैं, पंज रकियेसँवार ॥ निकलैंलोहूसौंरंगे, आसिकपंजरपार ॥ इस्कषेतसौं नहिंटलैं, आवैंबेउसवास ॥ चस्मचोटसौंसिरउडैं, घडबोलैंस्यावा स २० ॥ पलककियाषालिकअरे, हसनैंहींकौंपूब ॥ सहनैंकौंआ सिककिये, मारनकौंमहबूब ॥ २१ ॥ चस्मौंसौंजष्मीकरैं, रसग स्मौंबिचषेत ॥ लटतस्मौंसौंबांधिकैं, दिलबस्मौंकरिलेत ॥ २२ ॥ पंडितपूजापाकदिल, ॥ एदिमाकमतिल्याय, लगैंजरबआंपियांन की, सबैंगरबउडिजाय ॥ २३ ॥ पावसकैंनहिठहरिकैं, बुरीचस्म कीपीर ॥ जोजानैंजिसकेलगैं, कहरजहरकेतीर ॥ २४ ॥ तीरनि गाहूकेलगैं, दरदमुकरराहाय ॥ जरराहभीजरराहसौं, मिलैंनउरके घाय ॥ २५ ॥ एतवीबउठिजाहुघर, अवसछुवैंक्याहाथ ॥ चढीइ स्ककीकैफयह, उतरैंसिरकेसाथ ॥ २६ ॥ कस्मौंतुम्हैंकरीमकी, सुनियोसवैंजिहांन ॥ चस्मौंकीलागीगिरह, छूटैंछूटैंज्यांन ॥ २७॥ क्याराजाक्यापातसा, क्यागरीबकंगाल ॥ लागेतैंछूटैंनहीं, नैंननि बडोजंजाल ॥ २८ ॥ लगातीरजमघराछिपैं, छिपैंछिपाईसैंफ ॥ न हिउतरैंनांहिनछिपैं, हैंफइस्ककीकैफ, ॥ २९ ॥ अरेपियारेक्याक रौं, जाहिरहोहैंलाग ॥ क्यौंकरिदिलवारूदमैं, छिपैंइस्ककीआ ग ॥ ३० ॥ आतसलपटैंरागकी, गुंहचीदिलबिचजाय ॥

दवीइस्कवारूदकी, भभकानिलागीलाय ॥ ३१ ॥ उठैआगि उरइस्ककी, जलैंअैसअरांम ॥ चलैंनकैफीचस्मविच, घुटैंधुवें केधांम ॥ ३२ ॥ गिरेरहैंभीजेरहैं, मुतलकभीसह्मलैंन ॥ हुस्न पियालेपीयकैं, हुयेहैंमदवेनैंन ॥ ३३ ॥ गिरेतहांहीगिरिरहे, प लभीपलउघरैंन ॥ पूरेमदवेहुस्नके, मजनूंहींकेनैंन ॥ ३४ ॥ चली कहांनीषलकमैं, इस्ककमायाषूव ॥ मजनूंसेआसिकनहीं, लैली सीमहबूव ॥ ३५ ॥ मजनूंकौंकहैंसबअसल, औरनकलकेमाय ॥ कछूहोयदिलमैंअसल, तबसकैंनकलभीलाय ॥ ३६ ॥ नकलसांच सौंसरसकरि, करिलीनैंदिलदस्त ॥ हरीदासकेहालमैं, दरदिवाल भीमस्त ॥ ३७ ॥ इस्कसांगसांचाकिया, दिलकौंदियाछकाय ॥ हरीदाससबकौंगया, चेटकरूपदिषाय ॥ ३८ ॥ इस्कहुस्नकीबात क्यौं, सकैंसुषनमैंआय ॥ दिलचस्मौंकेजुबानहोय, तबकछुकहैं सुनाय ॥ ३९ ॥ कहोजायकहांइस्ककी, कहेनमांनैंकोय ॥ जा नैंसोजांनैंअरे, जिसासिरबीतीहोय ॥ ४० ॥ पलकनमांनैंएकभी, अवसाकियैंबकवाद ॥ षूबकमावैंइस्ककौं, तबकछुपावैंस्वाद ॥ ४१ ॥ मजाअजायवहुस्नका, चष्षैंचस्मजुबांन ॥ इस्कचिमनरष्षैंसोई, आवादांनसुजांन ॥ ४२ ॥ चस्मौंकेचस्मांझरैं, झरनाआवफिराक ॥ इस्कचिमनतबसब्जरहैं, दिलजमींनहोयपाक ॥ ४३ ॥ इस्कचि मनआवादकरि, इस्कचिमनकौंगाव ॥ नागरघरमहबूबकें, इस्क चिमनमैंआव ॥ ४४ ॥ जिगरजष्मजारीजहां, नितलोहूकाकीच ॥ नागरआसिकलुटिरहे, इस्कचिमनकेबीच ॥ ४५ ॥ चलैंतेगनाग रहरफ, इस्कतेजकीधार ॥ औरकटैंनहिंवारसौं, कटैंकटेरिझवा

र ॥ ४६ ॥ इतिश्रीपुस्तकश्रीमहाराजकुंवारश्रीसांवतसिंहजीदुती यहरिसमंधनांमश्रीनागरीदासजीकृतपदमुक्तावलीसंपूर्ण ॥

कवित्त ॥ छप्पै ॥ परमधर्मप्रतिपालसमरपंडितअतिभारी ॥ गुनमंडितमतिविमलभक्तिनवधाअधिकारी ॥ रसिकनिमनकौंमंत्र विमोहितसिंहवाहादर ॥ स्यामास्यामसनेहगेहकरिराष्योउरवर ॥ धुरधरनिभांनससिसप्तरिषचिरंजीवजोलौंसुपद ॥ नृपराजराजन्नृगराजसुवधन्यधन्यजगजसविसद ॥ १ ॥ यापदकेगावनेमैंदेने ए दोहा ॥ परमपुष्टिरसजलअमित, उर्मीप्रेमावेस ॥ नागरप्रगटिआनंदनिधि, वल्लभसुतविठलेस ॥ १ ॥ वलभाचारजकलपतरु, फललाग्योविठलेस ॥ याफलकोरसरूपहैं, गोकुलनाथव्रजेस ॥ २ ॥ धनवल्लभविठलेसधन, धन्यसातसुतवंस ॥ भवनिस्तारनिहितप्रगटि, नागरजक्तप्रसंस ॥ ३ ॥ राग ॥ श्रीवल्लभाचारिजकुमारकुमदकुलनिसेस ॥ भक्तिजनप्रसंसितश्रीमतविठलेस ॥ विष्णुस्वामिसंप्रदायचूडामणिचार ॥ नागरप्रणमाम्यहंअंघ्हिकल्हार ॥१॥ राग ॥ क्रीडतरासिकरासरसरंगे ॥ प्रफुलितविपुनवहतमलयानिलउदयतिसासिसवंगे ॥ सरदविमलराकानिससुपक्तकलरववेणुतृभंगे ॥ रासारंभव्यौमधुंनिपूरतमहुवरमुरजमृदंगे ॥ गउरस्यामभुजग्रीवरचितपदसंगीतसुधंगे ॥ अंदोलितअलकावलिकुंडलगुनिमुक्तावलिभंगे ॥ रसानंदआवेसविवसपटनीवीसिथलसुअंगे ॥ रूढविमांनअमरप्रेमातुरमुर्छितअवनिअनंगे ॥ श्रीवृंदावनराधामोहनकेलिकल्पबहोसंगे ॥ नागरियागोलोकअपंडितकथतकथासुकभृंगे ॥ २ ॥ राग ॥ मधुरितुमल्यसमीरमंदगतिवहतिपरासिद्रुमफूलं ॥ चंद्रोदय

लपिलताभवनमैंआरसअरझेअंग ॥ रैंनरसमसेआननराजतपांनन फीकेरंग ॥ स्यामासोहैंनैनलजौंहैंभौंहैचापअनंग ॥ चिबुकउठाय निरपिरहेनागरभईदीठगतिपंग ॥ १४ ॥ राग ॥ भोरहीनिकुंजतैंउ ठिचलींहैंकुंवरिराधा ॥ अरुननैंनसिथलबसनरूपछबिअगाधा ॥ बिथुरेबारहारउरझिआलसबसगोरी ॥ मनहुंमधुपकनकलतानिधर कझकझोरी ॥ सारदासचीसीलुठतसहचरीनचरनैं ॥ तिनकीचक्र चूडामनिकैसैंकहिबरनैं ॥ रंगभरीभांमानिसबसंगसुघरसुपसमाज ॥ कमलासीकरनिलियैंअपनैंअपनैंसाज ॥ काहूपैंअतरबरगुलाबजुत सुगंधसीसी ॥ काहूपैंविमलदर्पनकलकांतिचंद्रकीसी ॥ काहूपैंसु ठिसुगंधसहतपांनदांनबीरा ॥ काहूपैंहारधरेउतारिझलमलातहीरा ॥ काहूपैंचँवरचारुचपलभँवरनिनिरवारैं ॥ काहूपैंकुसमकलितबिजनां मंदमंदढारैं ॥ काहूपैंमालमरगजीहैंसुरतसेजटूटी ॥ श्रावतसुधिसमैं वासमदनपुरीलूटी ॥ काहूपैंवनकवनियठनियकनकपीकदांनी ॥ काहूपैंधूपदांनजरतबहुसुगंधसांनी ॥ काहूपैंसूरजमुपीसुच्छमोरपि च्छवारी ॥ मुकटभावउदैंहेतनाहिंनकरतन्यारी ॥ काहूपैंसुघरसारो सूवामधुरबचनबोलैं ॥ काहूपैंवीनअंससोनवीनबरअमोलैं ॥ आवत धुनिजंत्रमैंनमंत्रसेबजावैं ॥ रैंनकेविहारगायमादिकसोपावैं ॥ रंग रागनवसुहागआनंदरसबोरी ॥ नागरियाहृदैंबसोभांनकीकिसोरी ॥ ॥ १५ ॥ राग ॥ देषिदेषिचितवततोंही ॥ इतउतदृष्टिनहोतनिरंत रबातकहतहासिगोंही ॥ मालसुधारतकेससंवारतचोजमनोजनयेल सचोंहीं ॥ बसिश्रीनागरीदासकिस्वामिनीस्यामैंदेसुषस्यामायौं हीं ॥ १६ ॥ राग ॥ एकसरचूराअरुघुघरुजावकजुतलागतपगनी

के ॥ गौरगरबगंभीरगुनवतेंमंडनममउरमंगलजीके ॥ उदितउदो तनैनमनसषीरीनपछविपरवलिनगरंगफीके ॥ नागरीदासिचरणजु गर्जीवनिप्यारीकेरोंमरोंमप्रांननिपीके ॥ १७ ॥ राग ॥ अलमस्तर हैंअलबेलेलालडिलेकिरसमाते ॥ छकीछविसौंपलकैंवरवरुणीं नैंननिमैंमुसिकाते ॥ मुषअंबुजवरस्यांममधुपमकरंदपिवतनअघा ते ॥ दासिनागरिरूपरंगरुचिअंगप्रीतिभएराते ॥ १८ ॥ राग ॥ प्यारीकेपाइलगेलालजावकदेंनचरनकमलचितहितलगाइ ॥ सी कसनेहसंवारिस्यामघनलिषतचित्रबहुविधिवनाइ ॥ नषमनिजो तिनिरषिथकितभयेसिथलभयेरंगरंग्योनजाइ ॥ नागरीदासिह सिकहतिकुंवरियौंरहौंजूरहोजूरहोपगरहीहैंछिपाइ ॥ १९ ॥ राग ॥ जवतैंजावकचरणदयो ॥ तनमनचितवितितिहकौंजुभयौ ॥ हियरा हिलगाफिरतसंगलाग्योजियराललकिरह्यो ॥ नागरीदासितनमनध नजीवनिमंगलयहबिढयो ॥ २० ॥ दोहा ॥ अद्भुतपदपल्लवप्रभा, मृदुसुरंगछबिऐन ॥ छिनछिनचूंवतप्यारसौं, रहतलाइउरनैंन ॥ ॥ २१ ॥ ठीकरहतनहिंलीकपर, फैलतरंगसुजांन ॥ व्हैंअवेरउरमें रपिय, जियजितीकललचांन ॥ २२ ॥ प्रथममाधुरीकुंजलैं, छहर सभोजनपांन ॥ पुनिइहिंरसगसिसेजलस, करहुसैंनसुपदांन॥२३॥ जैंवतस्यामास्यामामिलि, नागरियासुपदैंन ॥ कोजनकाविवरननक रैं, दौंजनभोजनलैंन ॥ २४ ॥ देतगसामिलिपीयकैं, चितईकरिभु वभंग ॥ रह्योकौंरहीहाथमैं, भईदृगनिगतिपंग ॥ २५ ॥ सरसपर सकौंतरसजिय, लालकौंरकरलेत ॥ चतुरचौंकितवलाडिली, अध रछुवननहिंदेत ॥ २६ ॥ कौंरलेतकरकंपव्हैं, देतवीचछुटिजात ॥

स्वेदसिथलसियराततन, छुवतअधरमुसकात ॥ २७ ॥ राग ॥ जैंवतरासिकरासिकनीसंग ॥ पियहठिकौंरदेतप्यारीमुषपरसतअधरहोतभुवभंग ॥ बीचिबीचिबतरांनिमधुरईअतिरसभोजनबाढयोरंग ॥ नागरिसपीसौंजालियैंठाढीइकटकभईदृगानिगतिपंग ॥ २८ ॥ राग॥ गांनकियोचहैंपांननषातछुटिलटआंनिकैंरंगभरयौंई ॥ मोनहींमेंझलकीसुधराईहियेगुनकौंमनकौंसौंधरयौंई ॥ पीचितचंचलकौंप्यारीनागरिघेरिअदायनमैंपकरयौंई ॥ लैंनतमूराहीकीमैंलयोमनगायबोधौंरह्योआगैंधरयौंई ॥ २९ ॥ दोहा ॥ नवलकिसोरीचतुरत्यौं, तैसेचतुरकिसोर ॥ गांनतांनरसरहसिकी, बहसिबढीदुहुंओर ॥ १॥ होतरागसारंगधुंनि, दंपतिकुंजनवीन ॥ बिचिबिचिगायबजांवहीं, बीनानिपरमप्रवीन ॥ २ ॥ धीरजपगठहरैंनहीं, सुरगहैंगुनगांन ॥ रागरसासवसिंधुकी, लहरैंउपजततांन ॥ ३ ॥ कहावीनजडकोकिला, लागतश्रवनकठोर ॥ हलहलातनीकीउठैं, तांननिरंगहिलोर ॥ ४ ॥ ३० ॥ नागरिहसौंहैंमपसौंहोंबिथरीहैंबारउरजउठैंहैंसोभाहारनिसमेतहैं॥ मंदसुरगावतसुप्यावतसुधासौंस्यामकिधौंगंत्रधुनिमीनकेतकोनिकेतहैं ॥ अधरनिरंगभरेचोकाकीचकहोतअछिनितिरीछैंतैंकटाछिसरदेतहैं ॥ बेरबेरओटदेतंबूराहसिहेरिहेरिफेरिफेरितांननिफिरायमनलेतहैं ॥ ३१ ॥ श्रीराधामोहनकुंजभवनमैंकरतनिहसिकलगांन ॥ छायरह्योसारंगरंगमैंलेतपरसपरतांन ॥ अनाघातआवतदुहुंघातैंजैसीसुनीनकांन ॥ कोघटिबढिगुननिधिनागरिगुनआगरस्यामसुजांन ॥ ३२ ॥ राग ॥ दोऊसीसजूरासौंहैंहाथनितंबूराबीनपरमप्रवीनगोरीगांनलैंउचारयोहैं ॥ छायो

सुरकांननिछकायेपियप्रांननिओछूटिगिरचोअंसजंत्रस्यामनैंसंभा रचोहैं ॥ रीझमुरिछावैंमुरछायठहरावैंअंगनागरितरंगतांनमनवोरि डारचोहैं ॥ जाहिकियोबिवसधुजायगतिमतिडारीजाकोवांसुरीनैं ब्रजबडोसोरपारचोहैं ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ संगमृदंगसुधंगगति, राग रंगअभिराम ॥ स्यांमरिझाईनागरी, नागरीरिझयेस्यांम ॥ ३४ ॥ ॥ राग ॥ प्यारीजूप्रवीनबीनमधुरबजावैं ॥ तांनकीतरंगनिचित स्यांमकौंघुमावैं ॥ १ ॥ रागरसमादिकसौंचढिगईभौंहैं ॥ रीझिरी झिनावैंसीसलालप्रियासोहैं ॥ २ ॥ कुंजकेविहंगमसवजाकिथाकि सुनैं ॥ नागरियामौंनिगहैंसपीसीसधुनैं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जदपिक हावतहैबहुत, प्यारेस्यामसुजांन ॥ पैंइनतैंअतिवढिपरचो, प्यारी जूकोगांन ॥ १ ॥ कवहुचेतवलिहारकहि, कवहूहोतअचेत ॥ प्या रीतांनतरंगमैं, पियमनवूडैंलेत ॥२॥ ध्रुकेधरनिकौंसांवरे, ललिता गहेसंभारि ॥ रागरूपकीचोटसौं, गिरैंक्यौंनरिझवार ॥ ३ ॥ जी तीमेरीस्वांमिनी, गुननिधिराधानाम ॥ मीनकेतरसषेतमैं, मुरछि तपौढेस्याम ॥ ४ ॥ ३६ ॥ राग ॥ कुंजमैंमूर्छितस्यांमजगाए ॥ आतुरआयपियायअधरमधुभुजभरिकंठलगाये॥ अलकमालसुरझा वतपौंछतनैंननिनैंनपगाए ॥ नागरियाचितएवडभागनिइहरसप्रां नपगाये ॥ ३७ ॥ राग ॥ लाडतलाललडैतेसौंलाडिलीरीदेपिवैठे हैंभरिअंक ॥ निकुंजभवनरसिकरवनप्रांनप्रियप्रेमभरेमुदितमदन मयंक ॥ हसतविलसतपरस्परसुपमुपविलोकतवंक ॥ वलिनागरी दासिकीस्वामिनीस्यांमसदाविहरैंरसनवनेहनिसंक ॥ ३८ ॥ राग गौरी ॥ दोहा ॥ मिलतनवावतनवलता, अंचरछुटतदुकूल ॥

इतउतबादीदुहुंनमन, फूलनबीनतफूल ॥ १ ॥ झूंमिझुकावतद्रुमलता, उघरतउरउरमाल॥फूलनतोरतदेतफल, मनमोहनकौंबाल॥२॥ दोऊमिलफूलनबीनहीं, जमुनांकूलनिसांझ॥रंगरलीअतिव्हैरही, कुंजगलीकेमांझ॥३॥फूलनसैंबैंनीगुहत, रचतफूलकेहार॥फूलभरेलपटातदोऊ,भुजभरिदृढअंकवार॥४॥कौतिकलागेबालकैं, संगडोलतनंदलाल ॥ छुवतिजुहीकेफूलकौं, होतजुहीकीमाल ॥५॥ दुरिदुरिभेटतद्रुमनिमैं, फूलभरीसुकुंवारि ॥ लंपटमधुपनवावहीं, पीतजुहीकीडार ॥ ६ ॥ वनफूल्योफूल्योजुमन, फूलबेसअभिरांम ॥ सबैंकरीफूलनिसुफल, मिलिकैंगौरीस्यांम ॥ ७ ॥ धरतप्रियाकेश्रवनपर, लालकुसमकमनीय ॥ बहुरिबलैयालेतपिय, निरपिबदनरमनीय ॥ ८ ॥ छवैंकपोलछबिसौंरहे, नहिंउपमांकोऊमूल ॥ हालहालदिलहालकारि, करनफूलपरफूल ॥ ९ ॥ फूलनकीबैंनीगुही, रचतफूलकेहार ॥ फूलभरेलपटातदोऊ, भुजभरिदृढअंकवारि ॥ १० ॥ दोऊलटककलहंसगति, निसआगमगतसांझ ॥ आयेबिपनबिहारकरि, कुंजजुन्हैयामांझ ॥ पद ॥ रागकामोद ॥ आजउजियारीरैंनफुलीहैं ॥ जागिरहीउज्जलदुतिजिततितकोउउपमांनतुलीहैं ॥ तैसीयेफूलफूलद्रुमसापाजमुनांकूलझुलीहैं ॥ नागरियाब्रजचंद्रचंद्रकातहांभरिभुजनझुलीहैं ॥ ३८ ॥ रागपरज ॥ कुंजतैंआवतहैंजमुनांतटनागरनागरिसंगलियैं ॥ चंदकीचांदिनींछायरहीहैंतैसेइसेतसिंगारकियैं ॥ गावतरागजमावतसहचरिआवतआसवप्रेमापियैं ॥ देषिलगीनवकासलितातटनागरियाआनंदहियैं ॥ ३९ ॥ राग ॥ बिहरतनवकावैठिबिहारी ॥ जमुनाजगमगजोन्हजांमिनीकंवलकूल

सुषकारी ॥ मिलवतबीनप्रबीनसहचरीगावतपरजापियारी ॥ कव
हुकबहुझुकिनीरनीरजकरलेतहैंभांमिनिस्यांमसहारी ॥ २ ॥ उरक
रपरसतचौंकिचाहसुषनैंनानिकांमकेलिबिस्तारी ॥ अदभुतसुषसलि
तामैंषेलतनागरीदासनिरषिबलिहारी ॥ ३ ॥ ४१ ॥ राग ॥ देषो
सषीरीदेषोदोऊबैठेनावमैं ॥ गावतआवतचपलचलावतसहचारिचंपा
चावमैं ॥ स्यामास्यामदियेगरबहियांनवकाबिचरसभावमैं ॥ नाग
रनवलसषीनकोअंपियांलगिलपटीलपटावमैं॥४२॥ राग॥आंनकवि
कृत ॥ आजकीरातिअछीलागैंछैंउजियारी॥बिहरैंस्यामास्यामचा
वसौंसुंदरनावसिंगारी॥ जमुनांबिचिझिलिमिलिकीसोभाकंवलकूल
सुषकारी॥नावडगमगैंडरिलपटावैंरसिकानिहारीजीसौंप्यारी४३ राग
॥ सरितासैंरप्रवाहमाधिउज्जलमंडलदेष॥ उतरेनवकालगायचितचढे
उचावबिसेष ॥१॥ तहांपियप्यारीमनकियो॥ निरषिउज्यारीरैंन ॥
नृत्तिगानआरंभमिलिकीजैंसबसुषदैंन ॥ २ ॥ रसविलासनवकुंज
सुपरासकरनकैंकाज ॥ कितियकसहचरिकरालियैंअपनेंअपनेंसा
ज॥३॥बीनतमूरापंजरीबाजनलगेसुधंग॥ एकतालसुरसांचमिलिमि
लिमृदंगमुहचंग॥४॥ अंगसजीलेछरहरे ॥ वंकलजीलेनैंन॥मनउम
हेछबिलहलहे॥रंगगांनगतिलैंन॥कबहुकप्रियमंडलकढत॥ अतिगति
बढतसुधंग ॥ हरिकेमनलोचनफिरत, उरझेपायनसंग ॥ ६ ॥ ला
ललईउरलाइलपि, रीझेगतिसरसांनि ॥ मंडलमैंसुरझेंनहीं, अंकमा
लउरझांनि ॥ ७ ॥ उतअरुझीकुंडलअलक, इतवेसरिवनमाल ॥
गउरस्यांमअरुझेदोऊ, मंडलरासरसाल ॥ ८ ॥ गरबहियांगतिलेत
मिलि, श्रमवससियलतपाय ॥ डारेमनलैंसबनिके, डगमगडगनिहु

लाय ॥ ९ ॥ लेतबलइयारीझिदोउ, दोउपौंछतश्रमबारि ॥ नचत सनीअतिरंगसौं, बनीमदनमनुहारि ॥ १० ॥ उतैंझकौंहैंनवमुकट, इतैंचंद्रिकाचारु, ॥ भयेरासरसमगनतन, सरकेसकलसिंगार ॥ ॥ ११ ॥ षूटिषूटिअंचरगये, छूटिछूटिगयेवार ॥ श्रमितरासरससरंगमैं, टूटिटूटिगयेहार ॥ १२ ॥ नागरियाकहांलगिकहैं, कबिमति मंदप्रकास ॥ तिनकेभौंहबिलासमैं, कोरिकोरिव्है रास ॥ १३ ॥ रागकेदारो ॥ रासमंडलमधिछकेस्यामास्यामलैंलैंगातिलपटिलपटि जातभरेरंग ॥ गांनधुनिनूपुररह्योहैंरंगपूरितैसैंमधुरमधुरबीनांबाजत मृदंग ॥ चंद्रिकासिथलइतमुकटझुकौंहौंउतव्हैंगयेबिबसरससुधिन रहीहैंअंग ॥ नागरीदासगतिनैंननिकीभईपंगमुरछिगिरचौंहैंरतिसहितअनंग॥१॥राग परज॥थकेरासकेचावलषि,छकेआसकेभाव॥सैंनमहलकीश्ररजसुन, पुनचढिचालेनाव॥२॥राग॥बृंदाबनकीतलहटीडोलैंजमुनांतीरतीर॥ जटितस्वेतनगनावबैठिदोऊसांवलगौरसरीर॥१॥ चलवतिचलपचारुचंपावालिसजिसहचारितनसषाचीर ॥ गावतजात स्यांमसुंदरगुनपूरिरहीउरप्रेमपीर ॥ २ ॥ निसउजियारीफूलेद्रुम लतारहीझुकिपरसिनीर ॥ मुदितस्यामलषिबैंनबजावैंसुनिकुहाकि उठतमोरनकीभीर ॥ ३ ॥ नवलबिहारनवलनवकाविचनवलप्रिया गिरधरनधीर ॥ नागरीदासरैंनकछुबितईबहुरिबसेमिलिधीरसमीर ॥ ४ ॥ रागकेदारो ॥ पियाकेलोभछोभउपजायो ॥ धीरजकहां मधुपकौंमधुतैंकैसैंजातझुठायो ॥ इतलजिबाकीमनतनदुहुंदिसारि सपरतनधायो ॥ नागरीदासहासमुषरोक्यौलैंउसासासिरनायो ॥४॥ ॥ राग ॥ परतप्रेमनिधिपाइरुचिरजहां ॥ सुनिरीसषीमेरोज्योजां

नतजीभधरोकिधौंआंषिनितहां ॥ चितबिततरुवनितरातिरीछौंतनत किकियेंफिरतछहां ॥ नागरीदासिचरनजुगजीवनियहसुषमोकौंअ नतकहां ॥ ५ ॥ राग ॥ मोहिकाजयाहीइकजियसौं ॥ सर्वसुअर्पि निपटमनअटक्योप्रानभांवतीप्रियसौं ॥ मर्मबिथाममउरकीसजनी गुदरिचतुरबरातियसौं ॥ सुनतसजललोचननागरीदासउमगिलगा वताहियसौं ॥ ६ ॥ राग ॥ मोपरकरतहैंसपिनेहु ॥ हौंतोउरजवधरौं मृदुलपटमांनतधनिकारिदेहु ॥ तूकहिमोअनुचरआतुरकौंअधरसु धादैलेहु ॥ नागरीदासअकुलायअंकभरीआंपियनवरष्योमेहु ॥ ७ ॥ ॥ राग ॥ मेरेनैंनाहींयहजांनैं ॥ जेतिकभौंरपरतअवलोकतठौरठौर छबिमांझबिकानैं ॥ रूपअगाधअवधिसपीअंगरसनावपुरीकहाव षानैं ॥ तनमनबूडिजातदेषतहीकहाहोयउरभीतरआंनैं ॥ सुधिबुधि बलबितचतुरचातुरीकछुनसरैकोटिकजोठांनैं ॥ प्रांनप्रियासंभराये समुझियैंकहाकहायेंआपसयानैं ॥ हौंतोदारुपुतरीयाकरनचवतहित करजैसेंजांनैं ॥ सरबसुसुषथितजीवनिबलत्रितनागरीदासहमहाथ बिरानैं ॥ ८ ॥ राग ॥ छूटीचुरीएकसिरचूरानूपुरमंडितजावकजुत पग ॥ अबअबअमितरूपगुनसागरछबिआगरमेरेमनहिलगैं ॥ गौ रचरनजुगचालचंद्रनपअतिरुचिराचिपचिचितचातुरपग ॥ नागरी दासिज्यौंफानिमनिजीवनिपाइप्रियापरकासकममजग ॥९॥ राग ॥ रूपनिधांनभांवतीअतिलडजोईछिनजोइपलनिकटपाईयतुदैजीव निजनसोईभागनिवड ॥ भांतिभांतिकीठौरठौरछबिममआंपियांनमैं परीरहतगड ॥ नागरीदासयहअकहवातहैहियहसमुझैचौपचायच ड ॥ १० ॥ राग अडानो ॥ ललितसुडोरीकासिउकसोहैंनाभिठौर

लचकतलंकलोललहगाकोघेरहैं ॥ सारीसेतपटलीचुनावटचुनीहैं चोटमानौंपीरसागरतरंगकीउरेरहैं ॥ कंचुकीकेकसकीकसनउकस नकुचनचलमनोज़कोटदामनीउजेरहैं ॥ मंदगतिआवतठठकिहसि हेरहेरपीयमनहोतमहाआनंदकेढेरहैं ॥ ११ ॥ रागपरज ॥ हेआज रंगहैंनिहुरनापैं ॥ चिहुरचिहुरउठिलहरिलेह ॥ प्रथममिलनप्यारीमु षघूंघटपियषोलतानिजकंपदेह ॥ झीनैंचीरझुकोहिअंपियांसकुचभरे उरस्यांमगेह ॥ ताहिनिरषिइकटकमनमोहननागरीदासबलइयाले ह ॥ १२ ॥ रागबिहागरो ॥ आंनकबिक्रत ॥ दंपतिरंगमहलमधि गावत ॥ तांननमैंहांननकीबातियांसुनतसषीसुषपावत ॥ कबहुकअ धरनिअधरछुवाकेंमंदमंदमुसकावत ॥ विवसहोयमोहनप्यारीकूंभु जभरिउरलपटावत ॥ श्रीरसिकविहारीकौंसुषरंगीनिरपतनैननसिरा वत ॥ १३ ॥ कजराघुरिरह्योऔरबैंदीरौरीकी ॥ पियसुहागकीझल कनिमुषपरललकनिनेहदसागौरीकी ॥ सहजसिंगारसलौंनीभामि नकहाकहौंबातनिभौंरीकी ॥ नायकनंदनंदनकीजीवनिनागरियाब लिरसबौरीकी ॥ १४ ॥ राग ॥ हसिहसिदोऊबातनिकरहीं ॥ अध रपुलनिचमकनिचौकाकीलाडभरीबतरांनिउचरहीं ॥ कबहुकबहुर हिजातएकटकबहुरिछकीअंषियांढुरहीं ॥ नागरीदासमोहनीमोहन रीझिपरसपरअंकनिभरहीं ॥ १५ ॥ राग ॥ छबीलेदृगघुरिघुरिह सिमुरिजांहि ॥ नेहरूपचितवनित्यौंनारोंपियदेषतनअघांहि ॥ इककरलेतबलइयाबिथकतइककरचिबुकउठांहि ॥ बलिहारीकहत बिहारीनागरजबप्यारीमुसकांहि ॥ १६ ॥ राग ॥ सोहतहैंअलसोहैंनैंना ॥ लटकिलटकिपियपरअरसावातिसिथलकहतमुषआधेआधेबैंना ॥

बहुतगईनिसिप्रियाजंभावतचुटकीदेतलालसुपदैंनां॥ नागरीदाससपीछबिचितवताबिसारिबिसारिजातउरउपरैंनां ॥॥ १७ ॥ राग ॥ यहजोबनयहरूपमनोहरयहसमांनजोरीरंगबोरी ॥ यहबृंदावननवनिकुंजयहकुसमितपवनबहतथोरीथोरी ॥ यहअनुरागरागपूरितधुनिसर्पीसुघरबिथकतचहुंओरी ॥ यहलडकीलीविधिनागरकैंग्रीवधरिरहनिबहियांगोरी ॥ १८ ॥ राग ॥ झुकिझुकिरहीद्रुमडार ॥ चहुंदिसतातरबिछईसुंदरसैंनी ॥ ललिताजूलतानिओटदुरिदेषतपांढेहैंकंवलनैंनमृगनैंनी ॥ तनसौंतनमनसौंमनउरझेमिलिरहीअंपियनिअंपियांपैंनी ॥ नागरियासुषदेतहगनिकौंसांवरगउरजोरमनलैंनी ॥ १९ ॥ रागपरज ॥ राजतदोऊदीनैंगरबांहीं ॥ रहीछायनिसिसरदजुन्हैयानवनिकुंजकेमांही ॥ अरुझिरहेतनमनआनंदमैंआधीरातीद्रुमनिकीछांहीं ॥ नागरीदासलतारंध्रनिलपिरीझिरीझिबलिजांहीं ॥ २० ॥ राग ॥ अंपियानिभावभरयोहैरसको ॥ घुरिघुरिसनमुपरहतरसीलीरूपबढ्योआरसको ॥ आधेआधेवचनकहतकछुमंत्रपढतमांनौंपियवसको ॥ नागरियापियरसिकनपोढतनींदभरीदेपनकोचसको ॥ २१ ॥ राग ॥ आईअबदुहुंनिपैंजोंन्हिजगमगरी ॥ गईपरछांहींपाछैंदेतहैंदिपाईआछैंझांईरहोचंदआगैंघरोजिनपगरी ॥ तनतनसौंमनमनसौंअरुझेदेपिअधपुलेनैंनरहेनैंनानिमैंषगरी ॥ रसबसपागेनवनागरियास्यांमजागेआधीरैंनिहुतीसोउबीतिगईसिगरी ॥ २२ हेमातीनींदकीअंपियांसोहैंलाल ॥ कांमकेलिकैरंगरसमसीछुटीअलकतूटीमाल ॥ लपटांनैंबनवारीप्यारीअरुझेबाहुमृनाल ॥ नागरियाढिगभँवरनिवारतलीनैंहाथरुमाल ॥२३॥

राग ॥ अंषियांअरुनरसमसीघुरहीं ॥ लाजभरीछबिभारभरीएरू पछकीआलसजुतढुरहीं ॥ अमितबदनपियचिवुकउठावतकहीन परतजबहंसिहंसिमुरहीं ॥ रहीघरीद्वैरातिज्युन्हैयानागरीछैलतऊन त्रिछुरहीं ॥ २४ ॥ राग ॥ नवजोबनलाडगहेलीप्यारीतूरहतमदन मदछाकी ॥ रूपरंगरसश्रवतमाधुरीबदनविलोकनिबांकी ॥ अतिआसक्तअमलमोजेंप्रेमपीयालेपीयैंरहतलालमदछाकी ॥ नागरीदासनवरंगबिहारीबिहारनिनेहनिसांकी ॥ २५ ॥ अलमस्तभयेअलवेलेलाललाडलीकैंरसमाते ॥ छकीछबिसौंपलकैंवरवरुनीनैंननिमैंमुसकाते ॥ मुषअंबुजवरस्यांममधुपमकरंदपीवतनअघाते ॥ दासनागरीरूपरंगरसअंगपियालेराते ॥ २६ ॥ रागकछुमोपैंकह्यो जातनहेलीरमिरह्योरागसुहात ॥ पियप्यारीतांनानिरसबरसतनव निकुंजमैंभीजरहीअधरात ॥ चनकभूंदमैंबीनझनकधुनिमंदमधुर सुरगात ॥ नागरनागरिगांनकरतहीरीझिरीझिलपटात ॥ २७ ॥ राग ॥ तनकतनकबाजैंझनकचुरीनकीओगरैंहरवाईबातभनकसुहांवती ॥ टूटेहारफूलनकेछूटेउरबंधनिमैंदोऊमुषचंदनिमैंसोभासरसांवती ॥ लटपटीमूरतिगुलाबजलभीजिरहीबिगलितबारबासमदनत्रढांवती ॥ रूपबसरसिकबिहारीहासिहेरिहेरिफेरिफेरिभेटतभुजांनभरिभांवती ॥ २८ ॥ राग ॥ मेरीतूचतुरचिंतामनि ॥ सुनिसकुंवारिममसुख[illegible]नपुंजफलपलकनिकीओटहोहुतिनि ॥ सर्वसुप्रांनअधाररसिकनीयाहि[illegible]तैंमांनतआपुनधानि ॥ नागरीदासियहमंत्रमनोरमिरसनांश्रीराधानाम[illegible]चिरगानि ॥ २९ ॥ सुनिसपिउरजअन्यारेकोर ॥ ममवछस्थलभेदि[illegible]दिकैंनिसरतपैंलेओर ॥ कहि

क्योंप्रेमसुमाररसमारेचपलनैंनचितचोर ॥ अधरसुधाप्यावतहीचे
त्योऔरहीनहीनिहोर ॥ हौंन्यौंछावरिवेगिसुन्यौंनूपुरकिंकिनकी
घोर ॥ देषौंमदगजचालछवीलीअलवेलीवैशकिशोर ॥ मृदुमुस
क्यानचुभिरहीजियमैंनांकजलजमनिढोर ॥ नागरीदासिउठिमि
लीअचांनकपोषेपियतृषितचकोर ॥ ३० ॥ रागपरज ॥ रचीपिय
मोहनकलकोलिनवेली ॥ मचीभुजनिबिचकलहमनोहरटूटतहारह
मेली ॥ परिरंभनअरुझेनहिंसुरझतज्यौंद्रुमकंचनवेली ॥ नागरी
दासदुरायअपनपोयहसुषलषतअकेली ॥ ३१ ॥ राग ॥ मेरोझू
मतहाथियामदको ॥ पियहियहिलगपरीपगसांकलमैंमतअपनींसद
को॥सुरतनदीमरजादाढाहतमांनगुमांनअनुरागउलदको ॥ नागरी
दासिविनोदमोदमृदुआनंदवरबिहारबेहदको ॥ ३२ ॥ राग ॥ जी
वतपरसपररूपरहचटैं ॥ बिव्रसभूषनजुतअवअवछविपरससरससेझ
समाजठटैं॥ भोगसंजोगभोगविलसतप्रमुदितपुलकिअनुरागअटैं॥
चुंबनचषमुषमधुपीनागरीदासलोभीलाललकनघटैं ॥३३॥ राग॥
पलपलपांनिपअधिकबढीरी ॥ हासहुलासआलिंगनचुंवननवनव
चाइचढीरी ॥ बरबिहारकेरससमाजसजिगुनगनफेरगढीरी ॥
नागरीदासिवलिकोतिककोविदयहविधिकहौंघौंपढीरी ॥ २४ ॥
राग ॥ लाडगरबकीफूलगातमैं ॥ ईषदस्यांमदसनमुपदमकतउदि
तउदोतसुभगउरजातमैं ॥ चंचलहारअलकदृगकुंडलमत्तहोतमन
इष्टपातमैं ॥ नागरीदासिलालउरआसनवैठीविचामिलिअनेकया
तमैं ॥ ३५ ॥ राग ॥ नैंननिमैंनैंनामिलिमनसौंमनसपितनसौं
तनरूपछयो ॥ जियसौंजियाहियसौंहियलसिगासिहासिहासिमुष

मधुपांनदयो ॥ रीझिभींजिछबिदरसिपरसपरनेहसहजसबढांकि लयो ॥ विमलबिनोदमोदमतिदोऊनागरीदासिगुनपलटुभयो ॥ ॥२६॥राग॥ विलसतकुंजसदनसुषसुंदरनायकनंदनंदनरंगभीनौं ॥ सरदचंदप्रफुलितद्रुमवेलीविबसमदनमनकीनौं ॥ छूटेवारहारटूटेपु लेवंदविगलितपटझीनौं ॥ लटपटायदोउरहेलपटिकैंतनगुलावजल महकिनवीनौं ॥ यारसहीरसबीतिगईनिसिफिरिफिरिअधरसुधारस लीनौं ॥ इहिंनिधियेछूटतनहिंऐसैंनागरियाजैसैंजलमीनौं ॥ २६ ॥ ॥राग सोरठ॥षुलिगयेसोंधैंभीनेबार॥देषिसषीयहरीतिअनोषीबंधिग योमनरिझवार ॥ झूलिरह्योबैंनाग्रीवांढिगटूटिरहेउरहार॥ नागरयह छबिहियेबसोबिचमनमथरंगबिहार ॥२७॥ राग ॥ अहोपियप्या रीनसह्मारीपरैं ॥ आजुयाहीकुंजरहोनैं ॥ सुरतसिथलगतिमतवारी सीमोहनवहियांगहोनैं ॥ बिथुरिअलकआईआंननपरियहछविदृग निचहोनैं ॥ रहीरैंनथोरीनागरामिलिअबसुषसैंनलहोनैं ॥ २८ ॥ ॥ राग ॥ रह्यादेषिपियचिबुकउठायवोनैंणामेंअलसांणाघणांछैं ॥ घुलिरहीनींदलोयणांलालीक्राजलरेषबणीछैं ॥ अलकांसिथल सिथलहुईपलकांभौंहांबंकतणीछैं ॥ रसिकबिहारीप्यारीजीरी चितवनिमिलिरहीअणीअणीछैं ॥ ३९ ॥ राग ॥ सौंधैंसगब गीरगमगीसेझसुषकैसीफवीहैंफैलीआंननपैंअलकैं ॥ नीकेमुषचंद मैंश्रमीकेमनुश्रमकनफीकेभयेअधररंगीहैंपांनपलकैं ॥ अंषियांझु कौंहीव्हैलज्यौंहीतिरछौंहीदीठचितवतस्यांमतनअतिछबिछलकैं ॥ हियरेआनंदभीनेनियरेनागरतहांपवनढुरावैंपियपियरेअंचलकैं ४० ॥ राग भैरुं ॥ अबतोस्यामसोवनदैंहोतहैंप्रहापियरी ॥ यहसुगंधमं

दपवनलागतहैंसियरी ॥ द्रुमनकुंजकुंजनमैंपंछीहू जागे ॥ हार नकेमोतीतनसीतलकछुलागे ॥ करनकरपिकंचुकीकसनैंकबांधि दीजैं ॥ देहुमेरोनीलवसनपीतवसनलीजैं ॥ तुमतोमगनस्वारथस नैंकहूंनअरसौं ॥ काहेकुंवरकंवलसेदृगपायनसौंपरसौं ॥ बहुतप्रेम थोरीनिसिसुरझिसकतनांहीं ॥ नागरियारंगबढ्योपातनकीछांहीं ॥ ॥ ४१ ॥ राम कली ॥ प्यारीजुतैंमोहिमोललियो ॥ तेरीकृपामद नदलजीत्योतेरोजिवायोजियो ॥ उमडीसैंनमहामनमथकीतैंअधरा मृतदियो ॥ श्रीरसिकविहारीकहतदीनव्हैंधनिस्यांमाकोहियो ॥ ॥ ४२ ॥ राग ॥ अलकलडीअलबेलीनवरंगछवीली ॥ सुरतरंगअं गासिथलअलवेलेलालसंगपेली ॥ अलवेलीमौजाविलोकेविहारीवि हारनिनेहनवेली ॥ श्रीनागरीदासतबकुंजमहलअलवेलीसंगसहे ली ॥ ४३ ॥ कवित्त ॥ छीनकटिछूटेबारआयेफैलिआंननपैंआधें सीससीसफूलवैंनांझुकिगोतहां ॥ टेढीभईवेंदीहारसरकेसिंगारलपि मोहूसूंव्हैंन्यारेमेरेलोयनकरैंहहा ॥ नागरियास्वेदमुपअरुनाईपिय राईआईअवकैसैंनैंनसिथलदुरैंअहा ॥ रूपहैंकिडोरीहैंकिनैंननिठ गोरीहैंकिसुपनौंकिसंभ्रमाकिसांचहैंकिहैंकहा ॥ ४४ ॥ राग ॥ मरग जीवासवसआसपासभौंरभीरभ्रमतअधीरभईधीरहूनताहिकैं ॥ चांद नीमैंसोयेमिलिसुरतअमितअंगआनंदतरंगलीलासिंधुअवगाहिकैं ॥ झीनौंपटफारिफैलीवाहरिवदनकांतिमानौंजोन्हिजीतिबेकौंचलीहै उमाहिकैं ॥ महारूपसीवग्रीवअरुझेमृनालभुजपुलिजातआपेंजब रहिजातचाहिकैं ॥ ४५ ॥ तिताल ॥ प्रीतमसंगपौढीप्यारीअरसां नी ॥ पलकैंमुंदीपुलीढिगअलकैंअधरथकितमुसकयांनबेसरपरसां

नी ॥ बैनांसिथलललितमोतीलरढरकिबदनपरआईछाविसररसांनी ॥ नागरियाहियमांझवसोयहकौतिककेलिअनंगजोरीरंगभरसांनी ॥ ॥ ४५ ॥ राग ॥ भोरव्हैंआयोनभायोदुहूंनिकौंबोलेबिहंगमवांनी सुहाते ॥ वीननिमांझप्रवीननिरागबिभाससुनायजगायेजहांते ॥ बैठेतबैंउठिआरसअंगकहाकहूंरूपमहाउफनाते ॥ नींदभरेलगिआवतलोचनरूपकेलोभपुलैंरसमाते ॥ ४७ ॥ राग बिभास ॥ तालचर्चरी ॥ आलसरसरंजितरमनीयरूपरासिमिथुनलटपटातप्रातजगेविथुरतबरबैंनी ॥ चंचरीकचहूंओरबिचरतसुषमदंधमहकतसुगंधअंगछलकतरंगरैंनी ॥ प्रवलपवनरवनकेलिबिलुलितपियकनकबेलिदृगसिथलदेहसुलसतसुषसैंनी ॥ बिसमयहुयरहतकुंवरनिरषवदनछविअभूतपौंछतपलपीकपांनप्रीतमम्रृगनैंनी ॥ घुरतढुरतजुरतसुरतनैंनमीनासिंधुसुरतिथकिछकिचकिचलतचारुचितवनिमनलैंनी ॥ नागरियानेहउरझिबिबससकतनहिंनसुरझिउठिउठिचलिमिलतमगनमुरिमुरिढुरिबैंनी ॥ ४८ ॥ राग ॥ व.निदुकूलबैठेपरजंक ॥ कमलनैंनअंगअंगछबिनिरषतप्यारीभरेंझुअंक ॥ धन्यधन्यापियमांनिअपनपौज्यौंनिधिपायेरंक ॥ श्रीरसिकबिहारीयहसुषबिलसततहांनिकटनिरसंक॥४९॥ तालचर्चरी॥पियकेसुषसंगतैंचलीभौरकुंजआवतप्रियामरगजेउरहारहियैंबारपीठछूटे॥ सिथलरसनवसनहसनमंदमंदअधरनिमनौंचंचलदृगरंजनपियषंजनजुगजूटे॥ अस्तविस्तअभरनवरबाजूवंधढरनतैंसेलगिलगिरहेकरनिनिकरबलयषंडफूटे॥ नागरीचहूंओरभीरभंवरनिटारतअधीरऔरचकोरमोरनिराषिपरतटूटे ॥ ५० ॥ तालचर्चरी ॥ चलेहैंभौरनवाकिसोरसंगलगेललाचिताहिरसबसअधषु

लियपलकांचितवतमुपमोरिमोरि॥ मंदमंदचलतचारुचरननमंजीरश ब्दडगनिकउतकलषिमदनलुटतकोरिकोरि ॥ ठाढेआयकुंजभूमिझूं मिझूंमिलल्तिा दिकलतनिओटदेपतदुरिडारततृनतोरितोरि ॥ नाग रियासंगस्रुपस्वेदपेदचिहुंटिचीरसुपवतप्रियछबीलीपीठिविजनांपव नढोरिढोरि५१॥ अनिकाविकृत॥लूर॥पावसरितवृंदावनकीदुतिदिन दिनदूनीदरसैंहे ॥ छविसरसैंहे ॥ लूमझूंमसावनघनोघनबरसैंहे ॥ ॥१॥ हरियातरवरसरवरभरिया ॥ जमुनानीरकलोलैंहे ॥ मनमो लैंहे ॥ प्यारीजीरीबागसुहावणोमोरबोलैंहे ॥ २ ॥ आभाआभा बीजचीमकैं ॥ जलधरगहरोगहरोगाजैंहे ॥ रितुराजैंहे ॥ स्यामासु रमूरलीरली ॥ बनबाजैंहे ॥ ३ ॥ रसिकविहारीजीरोभीज्योंपितां बर ॥ प्यारीजीरीचूनरसारीहे ॥ सुपकारीहे ॥ कुंजांकुंजांझिलर यापियप्यारीहे ॥ ४ ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ रिझवारनकेंबससदा, रीझ वारासिरदार ॥ बातरीझहारेनपैं, रीझहारव्हैंहार ॥ १ ॥ विधिबात नपुहुंचतनहीं, विधिबातनपुहुंचात ॥ विधेबातवल्लभरसिक, ति न्हैंबातकीबात ॥ याबोलनकेंरसबसे, याहीमैंदिनरात ॥ डोलैंडुलैं नऔरदिस, मोलअमोलसिहात ॥ ५२ ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ रा गनायकीकाप्याल ॥ तथा पद छूटक तिताल ॥ आजमोहनमिलेरी मगसहियां॥येरीतरुनिकरसवनपरछहियां ॥ सुगरसलौनैंपियनंददु लारेहंसिलीनीगहिबहियां ॥ परगईपरवसबसनचल्योकछुभलीबुरी सबसहियां ॥ नागरियाकीनींमनमांनींहोंकरतरहीनाहियांनहियां ॥ ॥ १ ॥ तिताल ॥ अरीहूंलईलगाय ॥ लालनउरदेपिदेपिललचाय ॥ दिनअरुरैंनचैंननहिंअबमोहिबिनमिलैंरह्योनजाय ॥ जिंहिंतिंहिं

भांतिमिलायमोहनकौंतिहारीलैंहूंबलाय ॥ नागरिदुपदेतसुपनमैं
बैरीउरलपटाय ॥ २ ॥ तिताल ॥ आधीरातिउजियारीगावतरंगी
लीचढिअपनीअटारी ॥ सुनतहींतांनगयोचैंनसुषभींनीरैंनसोवत
हीचौंकिपरेचतुरबिहारी ॥ तूटीफूलमालगयोगिरिउपरैंनाआली
लीनौंबैरबांसुरीकोबिवसकियेहैंप्यारी ॥ नागरीदासबृजमोहनी
सीपूरिरहीसुनींजींहितिंहिंतवसुधिलैंबिसारी ॥ ३ ॥ इकताल
तथा चौताल तथा चपक ॥ अरीयहकौंनहैंठगवारठाढोआगैंतापैं
तुमोहिलैंआई ॥ कहाकहौंमेरीयामतिकौंतेरेकहैंबौराई ॥ उल
टिजाहुंगीघरअपनैंबीरहौंइनबातांनैंधाई ॥ नागरियाइहिंचौंथचंद
कीभलीकलादरसाई ॥४॥ रागअडाणो ॥ तिताल ॥ आंषियांमेरीभ
ईसांवरेरूपकीचेरी ॥ इकटकदरसटहलमैंअटकीतनकनहोतअने
री ॥ पावतरीझिअधिकमनमांनीमृदुमुसकानिधनिढेरी॥नागरियाल
गिआपलोभवसमनहूकीगतिफेरी ॥ रागअडाणो ॥ तालचपक ॥
अरीमोहिब्रजगोपिनरिझयो ॥ उनकीरीतिप्रीतिअंतरकीविनगथें
मोलिलयो ॥ जिनकैंरूपवदनबारिजपरमोमनअलिगिधयो ॥ ति
नमैंराधानामकुंवरिजिहिंटौंनांदृगनिदयो ॥ ताकोनांममंत्रमुरलीमैंर
टरटादिनबितयो ॥ नागरियानागरिबिनभेटैंसबसुषबिसरिगयो ॥६॥
तालचपक ॥ अरीतोहितनकहूसुधिनरही ॥ डगमगाततनदेषीबि
व्हलतबमैंदौरिगही ॥ जोगतिभईनिराषिमोहनमुषसोनाहिंपरतकही॥
नागरियामोहींतासौंचलितोहिमिलाऊंसही ॥ ७ ॥ तिताल ॥ अ
छनपगधरतअंधेरीरात ॥ ललिताकैंकरपरकरधरैंकरतहरैंहरैंबात ॥
झांकीकरउचावहासिप्य,रीलताकुंजद्रुमपात ॥ नागरियापाछैंव्हैंप्री

तमआंनिगहीकिरघात ॥ ८ ॥ तिताल ॥ अटकेराधारूपकन्हाई ॥ हाथचिवुकधरिवदनविलोकतसगरीरैनविहाई ॥ नैंननैंनमिलिरहेर समांतेफिररहीमैंनदुहाई॥ नागरियाद्रुमतरदोऊराजैंजिंहिंठांअमलजु न्हाई ॥ ९ ॥ इकताल ॥ अनोषीमांननीमांनैंकाहूकेप्रीतकीनजां नैं ॥ सहजकहुंकोईबातरावरीत्यौंत्यौंआतिरिसठांनैं ॥ रुषरूपीसौंहैं नाहिंचितवतफिरिफिरिभौंहैंतानैं ॥ नागरीकांन्हतिहारीप्यारीकोब हियांगहिआनैं ॥ १० ॥ चौताल ॥ आतुरलालरसिकसुषदायक ॥ सषीबचनसुनिचलेचपलगतिपीडतमनमथसायक ॥ कहूंउरझिरहि गयोपीतपटकहुंबनमालमुरलिकाभायक ॥ नागरियाढिगआयकहत पियपरमप्रेमभीजेवायक॥ रागतिताल॥अरझिरहेहैंविहारीप्यारीरंग मैं॥पंगभईअंपियनिबिचआंपियांअधपुलीअमलअनंगमैं॥तंद्रारूपनैं नदेषनिकौंनैंनभयेसबअंगमैं ॥ अतिरसछकनिछकीछबिउछरतअ धरदबनितैंनागरियाभुवभंगमैं॥ तालजात्रा ॥ आजसखीरासिकनीर सिकनित्तंतभलभलैं॥जुवतिजनमंडलाकारवृंदाविपुनवीचघनस्यांम प्रियदामिनीझलमलैं॥वींनरसलींनव्रजिरुणितकलाकिंकनीमैंनकेमंत्र सीजंत्रधुनिधुनिरलैं॥भ्रमततनचपलमिलिपरतनाहिंद्वष्टजवदरसहित परसमननैंनदोऊकलमलैं ॥ मुकटसिरझलकअरुरलकहारावलीझुल तबिबअलकलपिपरतनांहिनकलकलैं ॥ नागरीदासभुजअंसधरि दोऊचलतकोटिकंदर्पतबचरनतरदलमलैं ॥ १२ ॥ इकताल ॥ अ रीरासमैंरंगभरीनचतसरसस्यामाप्यारी ॥ चितवतचक्रतरहिगईच पलामोंडतहाथविचारी ॥ गांनसुनतपगमृगमनमोहेलज्जितभईको किलानारी ॥ नागरीदासचकोरसांवरोदेषतइकटकबदनचंदउजि

यारी ॥१४॥ राग ॥ तालचपक ॥ अलछलषेदोऊकुंजकुटीमैं ॥ भँवरानिभीरछायरहीऊपरनूपुरसुनिमैंनसैंनजुटीमैं ॥ गउरस्यांमतनजोतिबिमलकेसोतरहेकांढिछिपाछुटीमैं ॥ नागरीदाससुरतबांनीकीभनकपरतहीधरनिलुटीमैं॥१५॥ इकताल॥ऋरीमोहिठगिगयोछैलकन्हाई ॥ तोसौंकहाडुरांऊसषीरीडुरतनकळूदुराई ॥ हौंअबलावसकहारीमेरोवहिकीनोंमनभाई॥ नागरियाअबवापियाबिनछिनन्नांहिनपरतरहाई ॥ १६ ॥ राग षंभायची ॥ ताल ॥ आज बरसांनैंअतिओपवाढीनई ॥ देषिसषीव्याहकीरीतमंगलमई ॥ मिलनिसमधांनिकीभीरगहमहठई ॥ गांननीसांनधुनिभेदसुरपुरगई ॥ परमसुंदरसुघरस्यांमदूलहबन्यौंदुलहनीरूपनिधिकुंवरिकीरतजई ॥ सेहरासीसनगजटितजगमगरहेछोरसुपादियैंदुहूओरऋतिछविछई ॥ भरतभांवरभलेलगतसांवरगउरचलेकलहंसगतिसबनिमनकीभई ॥ दएमहाराजवृषभांनबहोदांनतहांनागरीदासिकौंमहलकीटहलदई ॥ १७ ॥ ॥ ताल ॥ऋाइहैं सरदसुहाई॥ फूलनिबिपुनमाल्लिकाछाई॥ सीतसुगंधपवनबहेंमंद ॥ निसमुषप्रगटितपूरनचंद ॥ चंदनिसप्रगटतद्रुमनिमैंअरुनकिरनैंरगमगी ॥ छईवृंदाबनछिपाछबिपुलिनजलतटजगमगी ॥ निरषिसोभासमैंवेबरदैंनवीतैंसुधिकरी ॥ मदनमोहनतनत्रभंगीवेणबिंबाधरधरी ॥ सुनिबंसीवनबोलैं ॥ जियरातानननकैंसंगडोलैं ॥ कांननअमृतसौंप्यावैं ॥ प्रांननमुरछितमैंनजगावैं ॥ मैंनमुरछितकौंजगावैंमधुरमादिकसुरालिया ॥ भौंनैंछुटावतभरीटौनैं ऋरीमोहनमुरलिया ॥ लोकबेदबिसारिकैंसबउठीतजिसुधिनेमकी॥ दासनागरिकौंनरोकैंनदीउमडतप्रेमकी ॥ १८ ॥ तिताल ॥ आज

सषीकुंजमहलमैंरंगभरीरातडलीहोसुहाई ॥ सेजडिलीरगमगिरह्यो दंपतजालरंध्रजहांआईजुन्हाई ॥ नहींसुलझैंतनमनआनंदमैंसगलेरैंणविहाई ॥ रसिकविहारीग्यारीप्यारीप्राणसूंमनमांनीनिधिपाईसुषदाई ॥ दोहा ॥ आवतराधेसपिनमैं, निरपरसिकासिरमौर ॥ परनिलगीडगडगमगत, गतिवदलीकछुऔर ॥ १ ॥ २० ॥ दोहा ॥ आलीकालीतैंअधिक, वंसीविषउतपात ॥ वहकाटेतैंचढतहैं, यह फूंकैंचढिजात ॥ १ ॥ २१ ॥ दोहा ॥ अहेबांसकीवंसुरिया, तैंतपकीनैंकौंन॥अधरसुधापियकौंपियैं, हमतरफतविचभौंन॥१॥२२॥ अथ वंसीका दोहा ॥दोहा॥ अहेवांसकीवंसुरियां, तैंतपकीनैंकौंन॥ अधरसुधापियकोपियैं, हमतरसतविचभौंन ॥ १ ॥ अरीछिमांकरिसुरलिया, परततिहारेपाय॥औरसुषीसुंनिहोतसब, महादुषीहमहाय ॥ २ ॥ कियोनकरिहैंकौंननहिं, पियसुहागकोराज ॥ अहेवावरीवंसुरिया, मुंहलागीमनिगाज ॥ ३ ॥ तोकारनगृहसुपतजे, सह्योजगतकोवैर ॥ हमसौंतोसौंमुरलिया, कौंनजनमकोवैर ॥ ४ ॥ एअभिमांनीमुरलिया, करीसुहागनिस्यांम ॥ अरीचलायेसवनिपैं, भलेचांमकेदांम ॥ ५ ॥ मुषमूंदैंरहुमुरलिया, कहाकरतउतपात॥ तेरैंहांसीघरबसी, औरनकेघरजात ॥ ६ ॥ हरिचितलियोचुराइकैं, रह्योपरतनहिंभौंन ॥ तापरिवंसीवाजमति, देतकटेपरलौंन ॥ ७ ॥ तूहूव्रजकीमुरलिया, हमहूव्रजकीनारि ॥ एकवासकीकांनिकरि, पढिपढिमंत्रनमारि ॥ ८ ॥ मतिमारैंसरतांनिकैं, नांतोइतोविचारि॥ तीनलोकसंगगाईये, वंसीअरुव्रजनारि ॥ ९ ॥ सवकोमनलेहाथमैं, पकरिनचाईहाथ ॥ एकहाथकीमुरलिया, लगिपियअधरानि

साथ ॥ १० ॥ पीयहमारेकौलियो, अधरसुधातैंछीन ॥ हमतलफ
तसुंनिबांसुरी, ज्यौंबिनजलकीमीन ॥ ११ ॥ बोलचलावतमुरलि
या, कहासुहागकोतोत ॥ तोसौंपियटेढेरहैं, हमसौंसूधेहोत ॥
॥ १२ ॥ हमहींकीनूद्रूतिका, मुरलीसबजगसाषि ॥ हमहींपर
गाजतभली, जूठहमारीचाषि ॥ १३ ॥ बाजैंमतिमातिबांसुरी,
मतिपियअधरनिलागि ॥ अरीघरबसदितक्यौं, रौंमरौंममैंआगि ॥
॥ १४ ॥ फूंकनिकेचलतीरतन, लगैंपरतनहिंचैंन ॥ अँगअँगआ
पविधायकैं, हमहूवेधतबैंन ॥ १५॥ हाहाअबरहुमौंनगहि, मुरली
करतअधीर ॥ मोसीव्हैंजोतूसुनैं, तबकछूपावैंपीर ॥ १६ ॥ सब्द
सुनावतहमाहिंतू, देतनहींछिनचैंन ॥ अनबोलीरहुतनकतो, एबक
वादीबैंन ॥ १७ ॥ अमलचलायोआपनौं, मुरलीगरजगुमान ॥
हियसूंनंकरतियनिके, कौंनबसायेप्रान ॥ १८ ॥ घूमैंभूमैंधुकिउठैं,
तुवबंसीसुरलाग ॥ कहरजहरलहिरैंचढी, डसीभुवंगमराग ॥ १९ ॥
जिहिंमोहीसबव्रजवधू, ॥ मोहनमृदुमुसकाय, ॥ सोमोह्योतैंमुर
लिया, वनघनमैंलैजाय ॥ २० ॥ अहेमुरलियामोहनी, तोसौंकहा
बसाय ॥ अधरसुधारसपायकैं, प्रीतमलियोछिनाय ॥ २१ ॥ पीय
लियौपियमनलियो, लियोअधररसझूंम ॥ इतोलियोतैंकहादियो,
बैरनबंसीसूंम ॥ २२ ॥ बंसीबंसीनामयह, काहूधरयोप्रबीन ॥ तां
नतांनकीडोरसौं, बेधतहैंमनमीन ॥ २३ ॥ बडेकढेगुंनबांसुरी, बां
वनसीलघुवेस ॥ भलीनचाईनाचहम, तोकौंहैंआदेस ॥ २४॥ आ
पपुदीतूकरतरी, भईसुसद्दीमैंन ॥ गुद्दीपरक्यौंचढतहैं, मुद्दीव्हैंकरि
बैंन ॥ २५ ॥ कहाजानैंतूबांसुरी, भीजेमनकीपीर ॥ कोरीमूकेहीय

की, अनबोलीरहुबीर ॥ २६ ॥ गांठगंठीलेवंसकी, महाद्रोहकीषां
न ॥ मतिमारैंरीमुरलिया, तांननिविषकेबांन ॥ २७ ॥ हमहारीगा
रीझुदैं, जडसौंकहावसाय॥ मौंनगहतनहिंमुरलिया, हायहायफिरि
हाय, ॥ २८ ॥ मुरलीसुनितनमैंभई, आसूदृगानिविसाल ॥ मुपत्र्या
वैंसोईकहैं, प्रेमबिबसब्रजबाल ॥ २९ ॥ नागरिहियहरिहिलगकी ॥
दारूधरीदवाय ॥ आगरागवंसीलपटि, पुहचिउठीभभकाय॥३०॥
रागसोरठ॥इकताल॥ इस्कबाजीमुसकिलहैंवोज्योकोईइस्ककमाया
लोडै ॥ सिरधरिसूलीअंगनमोडै ॥ १ ॥ ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ इतैंउतैं
इकटकरहे, फसेनेहकेपंक ॥ नागरनैंनानिमीतदोऊ, अंकानिभरत
निसंक ॥ ३२ ॥ रागचौताल ॥ उज्जलमहलउच्चसुच्छचंद्रकाप्रका
समंदगतिसीतलबयारसुपकारीजू ॥ कसतसुडौरीसेझचौसारिचमे
लीबेलीफैलिरहीफूलनिकीवासमनुहारीजू ॥ चौकीचारुअतरगु
लाबसीसेचमकतससिकीमयूषैंमिलीकौतकउजारीजू ॥ पूरनसरद
रैंनिबिलसतसुपसैंनीकोककलानागरबिहारानिविहारीजू ॥ ३३ ॥
॥ इकताल ॥ उरांहनौंदेहसिंचितैंरही ॥ मनमोहनसैंहनप्यारेतव
सुंदरवांहगही ॥ करतकेलिकलअमलअटाचढिसुपसलिताजुवही ॥
नागरियादंपतिहितकीगतिनैंकुंनजातकही ॥ ३४ ॥ तिताल ॥ उ
णींदाछैजीरातरा ॥ बैंणसिथलअरनैंणझुक्याहीआवेलगिवैठापरभा
तरा ॥ पलकांपीकअधरफीकैरँगरसअलसायागातरा ॥ रसिकबि
हारीप्यारीपूरणकरीमदनदेवरीजातरा ॥३५॥ दोहा ॥ उभैंसरोवर
रूपके, हंससपिनकेनैंन ॥ अद्भुतमुक्ताचुगतहैं, मुसकनिचितवनि
सैंन ॥ ३६ ॥ उर्हींगलीठाढोअली, छलीछबीलोछैल ॥ ति

यअंपियांकौतिगझुकी, रुकीपरिककीगैल ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ उं हींगलीटाढोअली, छलीछबीलोछैल ॥ तियअंपियांकौतिगझुकी, रुकीपरिककीगैल ॥ ३८ ॥ तिताल ॥ एकब्रजवसतमोहनीबाल अरीजिहिंकीनैंलालबिहाल ॥ मोहनहूकौंमोहिलयोहसिचितवनि नैंनबिसाल ॥ अतिअभिमांनीभएरहतहैफसेरूपकैंजाल ॥ ताहित नकदेपैंबिनव्याकुलबढतबिरहजंजाल ॥ मुरलीमैंताकेगुनगावतलै लैनांमरसाल ॥ निसदिननहींसुरझतनागरवेपरेरसिकरसप्याल ॥ ॥ ३९ ॥ राजसिंहजीकृत ॥ तिताल ॥ एअंपियांप्यारेजुलमकरैं ॥ एमहरेटीलाजलपेटीझुकिझुकिघूमैंभूंमिपरैं ॥ नगधरप्यारेहोहुनन्या रेहाहातोसौंकोटिररैं ॥ राजसिंघकोस्वामीश्रीनगधरताबिनदेपैंदिन कठिनमरैं ॥ ४० ॥ तिताल ॥ एरीराधेतैंरिझयेनंदनंद ॥ हौंसुनि आईउनकेहियकीबतियांमधुरसुछंद ॥ याहीरूपपगिरहेआलीमद नमोहनरसकंद ॥ नागरियातेरोमुपदेपैंफीकोलगतहैचंद ॥ ४१ ॥ ॥ राग ॥ कीनकुसमसज्यासैंन ॥ गउरसांवरोअंगमिलिरहेमहाछ बिकेअैंन ॥ खुलीअलकैंमुदीपलकैंबदनललकैंचैंन ॥ सषीनागरि निकटचरननिकहैंकहांनमैंन ॥ ४२ ॥ तिताल ॥ कैसीलागतसमैं सुहाई ॥ दोऊजहांकुसमछबिछाई ॥ महकिगुलाबरहीभिजएउरतै सीयैअमलजुन्हाई ॥ भौंरभीरगुंजतचहुंओरानिफिररहीमदनदुहाई ॥ नागरियातनगउरस्यांमकीउरझनिहियउरझाई ॥ ४३ ॥ इकताल ॥ कुंजसदनवढीविमलचांदिनीमिलीचंदसौंचांद्रिकारी ॥ कोमलस्वेत सुपेसलसज्याविहरतमृगरथपरपियप्यारी ॥ दरपनभूमिअकासवि मलविचविथुरितउरमुक्तातारारी ॥ नागरीदासछुरतिरसदोऊश्रम

जलकानिमुखश्रवतसुधारी ॥ ४४ ॥ रागकेदारो ॥ तिताल ॥ किन विरमायोमनमोहनासुंदरसुघरातियायेरी ॥ परीविरहकीरौरपिया बिनठौरनहींमतिमेरी ॥ हाहाकहिमोसौंरीहेलीलैंऊवलैयातेरी ॥ को नागरिश्रैसीरूपकीआगरिजिहिबसिस्यांमकेरी ॥४५॥ रागविहाग रो॥इकताल॥कठिनलगनदाहालनीमैंकैनूंआषां॥ जेहींकुछदिलअंद रबितैंसोदिलदीदिलहीविचराषां ॥ मोहनदीगल्लांविनकहियांघूंटघु टनदोचाषां ॥ नागरियाकोईमहरमनांहींवेमहरमहलाषां॥४६॥ताल चपक ॥ कुंजसदनकीकनकभूमिविचसहचरिचौपरिचारुरची ॥ हंसिहंसिपेलतहाथकगहिठेलतदांवनिचांवनिचौंहलमची ॥ स्यामा स्यामइहींरसअटकेफिरिफिरहोतहैंनरदकची ॥ नागरियाचतुरनि कोषेललषिहौंजकिरहीजैसैंचित्रपची ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ कंजनहूतें डहडहे, विनअंजनछविऐंन ॥ षंजनगतिगंजनमहा, पियमनरंज ननैंन ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ कुंजसर्बव्यापकभई, अमलजुन्हाईहोत ॥ आईदेषनसगुनमनु, निगुनब्रह्मकीजोत ॥ ४९ ॥ कीनीमृगमदआड रचि, गोरैंवदनमयंक ॥ मनुपियमोहनमंत्रकी, राजतअवलीअंक ॥ ॥५०॥ दोहा ॥ कीनीमृगमदआडरचि, नागरियानवबाल ॥ मानौंर ससिंगारकी, लहिरैंउपजतभाल ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ परोपरिकमुपसां वरो, चरनलकुटलपटाय ॥ मोमनलीनौंफेरिकैं, कंवलफिरायफि राय ॥ ५२ ॥ इकताल ॥ गोकुलगांवकोपैंडोन्यारोयहसांचकहा वतहौंदरसाई ॥ कौनैंदांनलयोव्रजमैंतुमऊवटवाटचलाई ॥ अंचर छुयोकुंवरिकोतोअवनिकसैंगोठकुराई ॥ समझिजाहुनागरजियअप नैंरापैंहैंनैंकबडाई ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ राहरेरूपनवीचवत, स्वेतअटा

छबिदेत ॥ कढततहांतैंगांनधुनि, प्रांनहरैंहीलेत ॥ ५४ ॥ गांनक लानागरदोऊ, दूररहेहैंगाय ॥ सुरधारानटवरतज्यौं, चढिमनपहुं च्योजाय ॥ ५५ ॥ गहगहाटवरबदनपर, स्यांममिलनकीचाड ॥ बातकरतहसिहरतचित,परतकपोलनिगाड॥५८॥तालचर्चरी॥चली हैंभोरभांमिनउठिनवकिसोरसंगताहिरसबसअधखुलीयपलकांचितव तसुपमोरिमोरि॥ मंदमंदचलतचारुचरननिमंजीररवडगनिडगनिक उतिकलपिमूर्छितरतिकोरिकोरि ॥ ठाढेआयकुंजभूंमिझूंमिझूमिल लितादिकलतनिओटदेषतदुरिडारततृनतोरितोरि ॥ नागरियासंग मसुपस्वेदपेदचिंहुटेचीरसुषवतपियछबीलीपीठबिजनांपौनढोरिढो रि ॥ ५७ ॥ चौताल ॥ चुभेईरहतपीयहियमैंअरीतेरेनैंनअैसेअ तिअनियारे ॥ नवजोबनपरसांनचढायेबिनकाजरकजरारे ॥ दि नअरुरैंनचैंननहिंदेंहींमहामैंनबिसहारे ॥ नागरीदासमदनमोहन कौंइनघाइलकरिडारे ॥ ५८ ॥ चर्चरी ॥ चलीसिंगारसजिसहज अभिरांमिनी ॥ हारअरुबारकैंभारलचकतलंकडगनिडिगुलात आनंदभरिभामिनी ॥ सुनतझंकारनिजदाबिरसनांदसनसकुचि फिरधरतपगमंदगजगामिनी ॥ उरसिअंचलउडतसरसपरसतपवन रवनपैंगवनबिचपिलियमधुजामिनी ॥ कुंजघनद्रुमनकीपांतितर जातिछिपिछांहछाडतनहींचतुरिमानिस्वामिनी ॥ नागरीदाससुप रासमाधवमिलीअंगप्रतिअंगछबिमनहुंघनदामिनी ॥ ५९ ॥ तालच पक ॥ चलीराधानिकुंजभवन ॥ ठटकिठटकिद्रुमडारगहतफिरिमदग जराजगवन ॥ घूंघटपटउघरतअंधियारीपरसतमंदपवन ॥ नागरी दासमदनगढतोरनिजोरनिप्रीतरवन ॥ ६० ॥ तिताल ॥ चौपारिषे

लतरह्योरंग ॥ दोऊहरिदोऊतनमनजीतेवाजीरसनिसवितईसंग ॥ सेजबिसांतसलौटरसमसीभईठईकलकेलिअनंग ॥ सोईसारैंनागारियासोयेजुगमिलिगउरसांवरैअंग ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ चलतदायरेपैंचपलचारूंअंगारियनिरूप ॥ अछियांमछियांसीनचैंमनौंअमृतकेंकूप ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ चंगैंमुंहमुंहचंगातियबजवातिहैंगातिकार ॥ वैठयोकँवलदरारबिच, मनौंअलिकरतगुंजार ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ चितैंवदनब्रजचंदको, रीझिचंदभयोचूर॥ छिपाकिधौंवहिजोतिमय, कुंजनिबिखरयोनूर ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ चितवतइकटकहीरहैं, नागरियाएनैंन ॥ कीनौंचेटकचंद्रिका, परननदैंचितचैंन ॥ ६५ ॥ दोहा॥ चौंपरामिससंकेतराचि, करतझगरईतोत ॥ हितपक्केनांहींउठैं, फिरिफिरिकच्चेहोत ॥ ६६ ॥ तालचपक ॥ छईवनचंद्रचंद्रकाचार ॥ पत्रपत्रप्रतिचंद्रचांद्रिकाभयोबिस्तार ॥ गोकुलचंदकीगउरचंद्रिकाचितैंकियोअभिसार ॥ तनभूपनजगमगतचंद्रिकाचंद्रिकासीससुढार ॥ मिलतलालसौंबढयोकुंजमेंचंद्रिकापुंजअपार ॥ नागरियाबातनिमेंफैलतदसनचंद्रिकाजार ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ छबिसौंठाढोसांवरो, हौंनिकसीतहांजाय॥ परीरूपवेरीपगनि, गिरीअंधेरीआय॥६८॥ छईछिपाछविदेताछित, पत्रीवपुनइहिंभाय ॥ ससिकारीगररूपहरी, अफसांकियोबनाय ॥ ६९ ॥ छुटीअलकमालातुटी, मैंनलुटीसीअंग ॥ एसपिफीकेअधरक्यौं, लग्योकपोलनिरंग ॥ ७० ॥ छविझलकैंअलकैंसिथल, सबतनासिथलसिंगार॥ सूचततेरीसिथलता, निसदहलगनबिहार ॥ ७१ ॥ पद ॥ जैसेहोमोहनतुमचातुरएसीनामिलीकोऊतुह्मैंनारि ॥ यहमहरेटीलाजलपेटीकोऊछछंदनिगो

पकुंवारि ॥ नैंनबैंनतुमबाढतपरतनकाहूकेफंद ॥ जदपिचको रीएसबगोरीआपप्रकासीचंद ॥ रीझभीजकरिदयाछबीलेतरफतहैं व्रजबाल ॥ राजसिंघकोस्वामीश्रीनगधरकाहियतहैंप्रतिपाल ॥७१॥ दोहा ॥ ज्यौंज्यौंधुनिकांनानिपरैं, त्यौंत्यौंछूटतधीर ॥ नागरियासु निबांसुरी, बाजैंजमुनांतीर ॥७२॥ दोहा ॥ ठाढोव्रजकीपौरि हरि, कीनेचंदनपौरि॥ उहींठौरलषिहियपरी, अरीमदनकीरौरि७४ तिताल ॥ तोसौंनबोलूंगीहोनंददुलारे ॥ काहेकौंइतनीबातबनावत काहेकौंकरतहाहारे ॥ तोहिपियारीओरुभांवतेहोओरनिकेप्यारे ॥ नागरमोहनसौंहतिहारीजांनतसबैंकलारे ॥७५॥ चौताल ॥ तेरे नैंनबांनउरमोहनकेलगेआंनितबतैंनवाकेबीरधीरठहरायहैं ॥ पल कनिमूंदिमूंदिगहरैंउसासलेतहोतनसचेतमुपरटैंहायहायहैं ॥जमुनां कोकूलकुंजसीतलकुसमपुंजलागैंतनतातेतेजबिषमबलायहैं॥ एरीच लिनागरीतूसींचसुधाचाहनिसौंआंपिनकेघाइनकौंआंपैंहींउपायहैं ॥ रागकेदारो ॥ तिताल ॥ श्रीवृंदाबनसुपदाई ॥ तांमाधिनवलनिकुं जसुहाई ॥ झुकिरहेद्रुमबहौफूलनिफूले ॥ डोलतमधुपबासबस भूले ॥ भूलेमधुपबसवासडोलतत्रिबिधिबहतसमीरहैं ॥ घुमडि रहीघूंधरिकुसमरजमनहुंमंडपचीरहैं ॥ कोकिलाकलकीरगावैंनित्य बिहारनिकाई ॥ नृत्तकारीमोरतहांश्रीवृंदाबनसुपदाई ॥ ललिता दिनिरषिलुभांनी ॥ अतिछबिपुंजकुंजदरसांनी ॥ आनंदउरनसमा वैं ॥ मिलिमिलिगीतमनोहरगावैं ॥ गावैंमनोहरगीतमिलिजहांब नींचौंरीचारुहैं ॥ परममंगलरैंनराकारच्योव्याहबिहारहैं ॥ मौर मौरीसीससजिकैंजोरसुंदरआंनी ॥ बसनसूहेतनलसनललितादि

निरखिभांनी ॥ २ ॥ सबकीपलकलागतनांह ॥ आयेतियमंडलकैंमांह ॥ पियमुपफैंटाछोरादियैं ॥ प्यारींघूंघटझुकनिलियैं ॥ लियैंघूंघटझुकनिलपिमतिथकीकरनिप्रसंसकी ॥ नंदसुतवृपभांनतनयाचलतगतिकलहंसकी॥ लेतभांवरगउरसांवरकलपद्रुमकीछांह ॥ दुलहनीदूलहदेपिसवकीपलकलागतनांह ॥ ३ ॥ दोऊब्याहनिसकेरसमसे ॥ सपीनिकेनैंननिमांझवसे ॥ राजतझुगलनेहकेभरसौं ॥ जोरनिअंचरअरुकरकरसौं ॥ करसौंजुकरजोरैंपरसपरपहुपवरपांवैंसपी ॥ कुंजकौतकरूपगहमहभईअंपियांमधुमपी ॥ रचीफूलनितलपदिसचलिचितैंचितवनमैंहंसे ॥ रहोनागरहियवसेदोऊब्याहनिसकेरसमसे ॥ ४ ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ तियलपिमगमोहनरही, गोहनपरैंनपाव ॥ दुहूंओरसुरझैंनहीं, नैंननिकोउरझाव ॥ ७८ ॥ तिताल ॥ देपिरीकोऊग्वारनिगोरीनितिजसुमतकैंघरआवैं ॥ जोवनजोतिजगमगैंघूंघटवाहिरव्हैंदरसावैं ॥ ललितअंगगातिदीपकलोयज्यौंपवनलगैंझिकुरावैं ॥ भूलीतनसुधिज्यौंमदपीयेंउरअंचरहिभुलावैं ॥ मोहनकीदिसअंपियांछाकीइकटकरहिरहिजावैं ॥ सुधिआयेंतैंलाजनिभीजतघटपटओटाछिपावैं ॥ फिरवैसैंहींरूपविवसव्हैलोकलाजबिसरावैं ॥ रौंमरौंमचितवानिविपचाढिगयोमनमथलहारिघुमावैं ॥ स्वेदकंपभएसिथलचरनगतिघरलगिकोपहुंचावैं ॥ देपतहसतओरवृजनारीनयोनेहउफनावैं ॥ इतयहउतवेनंदनंदनरासियारसरूपलुभावैं ॥ औंडीलगनकनौंडीअंपियांडौंडीप्रगटवजावैं ॥ नागरियायहप्रीतनिगोडीतनकदत्तनिनहींपावैं ॥ ७९ ॥ चौताल ॥ दोनैंगरवांहींगतिलेतडोलैंमंडलमैंवोलैंतत्तथेईथेईमुपरूपललकैं ॥व्हैं

गयेबिवसमनश्रमितभयेरीतनषिसैंफूलसीसतैंसिथलभईअलकैं ॥ इ
तकिंकनीछूटीउतबनमालतूटीलोलहारकुंडलकपोलझांईझलकैं ॥
नागरिदासराधामोहननचतदेषिभूलीसषीगांनतांनलागतनपलकैं ॥
॥ ८० ॥ चौताल ॥ देषिस्यामाजूश्रमितभईरासमैं ॥ बहोनृत्तभेद
पेदसरकेसिंगारहारासिथलकुसमकेसपासमैं ॥ रसिकरवनानिजक
रतैंपवनकरैंहरैंहरैंल्यायेनिवासमैं ॥ नागरियासोयेकुंजकंवलनिकी
सैंनीपरबैंनीविथुरैंनीहैंबिलासमैं ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ दंपतिढिगनवकुं
जसषि, करतगांनसारंग ॥ वीनतमूराषंजरी, बजिदायरमुहचं
ग ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ धुकीरहतनितचंद्रिका, मोहनसीससु
ढार ॥ बडीबढाआंषियांनकि ॥ बहोतदीठकैंभार ॥ ८३ ॥
धांमनिमैंबल्लभउन्हैं, तुवसंकेतसुधांम ॥ अतिबल्लभनिजनांममैं, रा
धावल्लभनांम ॥ ८४ ॥ नागरितुवहितकारनैं, बिसरेसुषधनधाम ॥
हांसीघरघरहोतहैं, अहोविसासीस्याम ॥ ८५ ॥ नवनिकुंजराकारु
चिर, अतिसितअमलउजास ॥ लसतफटिकफांनूंसनभ, विचसासि
दीपप्रकास ॥ ८६ ॥ नागरियामुषछबिलषैं, अमलउजारीमांहि ॥
बहुरिचंदकीडीठडारि, करतमुकटकीछांहि ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ निस
सर्दोत्फुलमल्लिका, ककुभकिरणराकेस ॥ गहीबैणहरिनिरषिबन,
रासरवणआवेस ॥ ८८ ॥ नागरिउरझीस्यांमसौं, आरसउरझेवैंन ॥
तेरीउरझीअलकमैं, मेरेउरझेनैंन ॥ ८९ ॥ तिताल ॥ पनघटठाढो
कोऊसांवरोसलौंनौंढोटादीनौंरीउठायघटबिनहींकहेतैंबैंन ॥ हौंतो
देषिवदनबिमोहितठगीसीरहीनागारिकेनीचैंव्हैरह्योरीमिलायनैंन ॥
औरबातकहाकहौंकहतसकुचआवैंदईहसिहोठनिसौंनिलजनईसीसैं

न ॥ ताहीछिनहूतैंभईऔरदसामेरीआलीनागरीदासग्रहनींदनपरत रैन ९० तिताल॥प्यारीजूकीजेतोएकसमैंसिरअवहटनकरियैं॥सुवर सलोंनैंपियस्यामसुंदरसौंरसहीरसढरियैं ॥ यहनिकुंजयहविमलचां दनींऔसरअनुसरियैं ॥ नागरिपियकैंअंसरइंहिंसमैंहासिबहियांधरि यैं ॥ ९१ ॥ चौताल ॥ प्यारीरीजूतुममेरैंमूरतिआनंदकी ॥ तेरोई आनंदरैंनदिनतोविनांछिनदुपदंदकी ॥ यौंकहिकामकेलिविस्तारी जहांचांदनीचंदकी ॥ नागरियाहृढकसेमनोहरकसनवाहुजुगफंद की ॥ ९२ ॥ इकताल ॥ प्यारीनिधिपाईहैंपियारैं ॥ मदनविव सछकेवदनानिहारतगउरअंगउजियारैं ॥ नागरीदासकिंकिनीधुनि सुनिबिधिगयेपगमृगमैंनवांनअँनियारैं ॥ ९३ ॥ तालचपक ॥ प हिरैंकलझूमकसारीझूंमिरह्योपियकोलोभीमन ॥झूंमतकंचनचलदल घूंमतनैननिपलालगनिलीनौंपन॥स्यांमबसनविचचौकासितदुतिफै लिरहीसोभासंपतिघन ॥ नागरीदासतोरितृनप्यारोवारतज्योजोव नसबसधन ॥ ९४ ॥ इकताल ॥ प्यारीनिहारियैंरीरतिमतिवारी ॥ इकदिससषीदियैंकरकापियांइकादिकरसिकविहारी ॥ तूटचोहारछु टचोअंचरछविछकनिवढीहैंमहारी ॥ नागरियाआगेंफलतआवेंवद नचंदउजियारी॥९५॥ तिताल॥प्यारीअलबेलीकैंसेंठाढीव्हैंरहीरी ॥ ललिततृभंगअंगछीनकटिछूटेवारद्रुमडारिगहीरी ॥ हरीलतनिमेंकन कलतासीछविहियैंफूलउलहीरी ॥ नागरपियरहेरीझिलेतफलनैंननि कोअवहीरी॥९६॥दोहा॥पियप्यारीकीमधुरधुनि, आवतसुनिवनओ र ॥ ज्यौंज्यौंगावैंउच्चसुर, त्यौंत्यौंवोलैंमोर ॥९७॥ पीतफूलतुववर नकी, मालापहरिसुजांन ॥ तेरोमगजोवतकरत, तेरोईगुनगांन९८

पूरनससिनिसिसरदकी, चलिबनमलयसमीर ॥ होतबैणरवरास हित, तरुनतनैयातीर ॥ ९९ ॥ परमप्रेमआरूढरथ, बिषमपंथधुनि बैंन ॥ रासकेलिसंग्रामहित, चलीमदनगढलैंन ॥ १०० ॥ पीतसारघनस्यांमकैं, स्यांमसारसुकुंवार ॥ षेलसारललितादिलपि, मन धनडारतवारि ॥ १०१ ॥ पियजीतैंनागरिसलज, चितईज्ञुतअंगरांनि ॥ बाजीबाजीलपिउठी, बाजीठहरीजांनि ॥ १०२ ॥ पद तिताल ॥ फूलेफूलेललितद्रुमनितरकरतस्य मधुपसंग ॥ आईअंतरलतनजुन्हाईदरसाईदुतिअंग ॥ चितवतउजियारीबदननकीऔरैंओपउमंग ॥ दृगनअनंगतरंगबढीभुवभंगभंगमैंरंग ॥ कसेबाहुएकांतकुंजनिसफसेरूपचहलैंमनपंग ॥ नागरीदासकिंकनीधुनि सुनिउठतिहिंबोलिबिहंग ॥ १०३ ॥ रागबिहागरो ॥ तालचपक ॥ फूल्योबहुफूलनिसौंबृंदाबनसोभादेततामैंफूलीराकानिसअतिछाबि छाईहैं ॥ कुंजकुंजफूलगुंजगुंजतमधुपमातेफूलनिमिलीमंदपौंनासियराईहैं ॥ सौंहैंस्यामास्यामपौंसिंगारसजफूलनिकेफूलभईहियेंलपि फूलीबनराईहैं ॥ नागरियाहिलिमिलिफूलनिसुफलकरीभुजधरिअंसफूलेफिरैंसुपदाईहैं ॥ १०४ ॥ तालचपक ॥ फूलमहलफूली जौंन्हजगमगी ॥ तामैंफूलेकरैंकेलिस्यामास्यामसुषझेलिफूलनि मरगजीवासरगमगी ॥ फूलनकीसैंनीपरराजतबिथुरीबैंनीफूलीहैं बदनजोतिमदनअगमगी ॥ फूलसरअरसांनैंफूलरंगभोयेसोयेनागरियामोहेमनरीझनडगमगी ॥ १०५ ॥ दोहा ॥ फैलीचमकतचंद्रिका, बिचनिकुंजबनबाग ॥ कतरस्वेतमुक्केसमनौं, रतिपतिषेल्योफाग॥१०६॥फूलेफूलनिस्वेतबिच, अलिबैठेमधुलैंन॥ दंपतिहि

तवृंदाविपुन, धारेअगनिततैंन॥१०७॥फूलमईसदवनभयो, चंदजोतिमइरैंन॥तीयभईमोहनमई, चलीमिलनसुपलैंन१०८फूलेफूलेफिरतहैं, दोऊदियैंगरबांह॥लषिफूलींनागरसषी, फूलींकुंजनमांह१०९ फटकिसारगहिलटकसौं, धरतछबीलीबाल॥ परतझगरईपेलबिच, होतश्वेततैंलाल ॥ ११० ॥ पद ॥ बदनहसौंहैंवेंठौसौंहैंप्यारीप्रीतमकैंउरजउठौंहैंसोभाहारनिसमेतहैं ॥ मंदसुरगावतसुप्यावतसुधासौंश्रौंनकिधौंमंत्रधुनिमीनकेतकैंनिकेतहैं ॥ अधरनिरंगभरेचौंकाकीचमकहोतअछनिअलछितकीकटाछसरदेतहैं ॥ नागरियाओटदैतंमूराहसिहेरिहेरिफेरिफेरितांनानिफिरायैंमनलेतहैं ॥ ११ ॥ तालचपक ॥ वेदेषिद्रुमगहबरबनकेनीरैंचलिमिलिकहाजोपैंरजनीजुन्हाई ॥ विपुनअंध्यारोपरमपियारोतहांकहौंकहौंकुंजकुटीसुखदाई ॥ सुनतवचनजियमैंरूचिबाढीहियमैंपियमूरतिमंडराई ॥ नागरीदासविहारनिबनिठनिगवनकियोजितरवनकन्हाई ॥ ११३ ॥ रागबिहागरो ॥ ॥ तिताल ॥ बंसीबाजैकालिंदीतीर ॥ भईमैंनमईपरीधुनितहौंसीसदईकछुनबसायबिनधीर ॥ रजनीबिहांनींनबिहांनीधुनिप्रांनहरिलीयैंजायरीबीर ॥ नागरियारंगीमिलिभेटिहौंतृभंगीजायकैसैंरहूंजायउरपीर ॥ ११४ ॥ तिताल ॥ वंसीहमसौंवैराकियो ॥ पियकोअधरसुधारसबनमैंनिधरकजायपियो ॥ यावेदनिकोदुपजानैंजबदेखैंपैठिहियो ॥ नागरियाब्रजजुवतिनकोतैंसरबसछीनालियो॥११५॥ दोहा ॥ बडेवारछबिसौंछुटे, अंसबीनकटिछीन ॥ सबरिझवारनिकेमनौं, मनभरिकावरिलीन ॥ ११६ ॥ बिचबटपारेनागर्‌यौं, कोइककारैंगात ॥ उहींबाटजोजाततिय, खाटधरीघरआत ॥ ११७॥

ब्रजमोहननागरिनिरषि, मगबिचबिसरीदेह ॥ बहुरिदईकागतिभई, कोमोल्याईगेह ॥११८॥बिनांसंवारैंईसहज, बांनप्रहारैंमैंन ॥ नाहिंउबारैंदृष्टमैं, ॥ मारैंडारैंनैंन ॥ ११९ ॥ बंसीधुनिदूतीपठैं, बोलिलईब्रजबाल ॥ समरबिजैंआरंभरस, रासकरनिनंदलाल ॥ १२० ॥ बिमलजुन्हैयाजगमगी, गईबैंनधुनिछाइ ॥ प्रेमनदीतियरगमगीं, बृंदाकांननआइ ॥ १२१ ॥ इकताल ॥ भरीभीरमैंमिलीरीनैंननिसौंदूरजाइफिरचितईकनषिइनकीनैंबिबसजूमार ॥ तबहींतहांतैंलाईकुंजमांझसषियांसुहाथदीयैंकपियांडगमगचरनसुमार ॥ नामसुनिराधेराधेपोलतहैंनैंनआधेकहांतैंमंत्रसाधेमूर्छितनंदकुमार ॥ नागरीदाससुनितेरोक्ततेरेकांनऔरहूकहैंगीआंनिबाढीदृगबांनपुमार ॥ १२२ ॥ दोहा ॥ भलेप्रहारततियनकौं, बांनतिहारेनैंन ॥ हायहायकहिकहिउठत, स्यांमानेसासुपसैंन॥१२३॥भामिनिदामिनिस्यांमघन, गावतसमैंसुहात ॥ बरसरहेहैंरंगए, भीजिरहीहैंरात ॥ ॥ १२४ ॥ भांनभवनभइभीरमिलि, झुंडनिझूलतबाल ॥ सषीवेषतहांदेषिहीं, रूपलालचीलाल॥१२५॥ तिताल ॥ मनमोहनसौंहनरिझवार ॥ गौंहनलाग्योनंदकुंमार ॥ बाटघाटव्हैंआडोआंन ॥ नैंननिकरतमैंनसनमांन ॥ छौंहनव्हैंचितऊंउहिंओर ॥ तोहुनरहतचतुरचितचोर ॥ अपनींअलकछुवनकैंभाय ॥ इककरसैंननिलैतबलाय॥कहाकरूंदैयाकितजाऊं ॥ चंचलकुंवरचवाईगाऊं ॥ मेरैंहूउपजतललचांनि ॥ नागरियारोकतकुलकांनि ॥ १२६ ॥ इकताल॥ मेरीइंदुरियालैंराषीऔरहूकीनींलँगरायौंस्याम ॥ गईहुतीतैंसोफलपायोबहुरिनलैंहूंपनघटकोनांम ॥ डारिदईहैंधरांनिमटुकियाअरुतोरे

मुक्ताहलदाम॥ नागरीदासहौंनलागव्रिजमैंयेअतिगातिकितजैहवाम ॥१२७॥तिताल॥ मेरोमनआपवसिकरलीनौस्यांमसलौंना ॥ देपिव दनमनगयोहाथवाकैंहसिचितवनिमैंटौंनां ॥ सुंदरपियमनमोहनसौ हनअंगअंगरूपरीझौंनां ॥ नागरियाकछुऔरनभावतभावतनंदढ टौंनां ॥ १२८ ॥ तिताल ॥ मेरीमतिसुंदरस्यांमहरीहैं ॥ चितैंचतु रमुसकायभायसौंदृगडौरनिजौरनिजकरीहैं ॥ अबछिनहूछूटतनहिं हेलीनिपटदुहेलीगतिपकरीहैं ॥ नागरियांहरिललितरूपकीअतिदृ ढवेरीपरीहैं ॥ १२९ ॥ तालचपक ॥ गीतमिलनिमैंरंगरह्योरी ॥ न नानिनैंनबैंनबैंननिसौंमनसौंमनतनतनहिंलह्योरी ॥ कोककलांनि कुंवरकोविदअतिलीलासिंधुप्रवाहवह्योरी ॥ नागरीदासरहसिरसदं पतिसुपमोपैंनहिंजातकह्योरी ॥ १३० ॥ तालचपक ॥ मोरबोल हींबिमलचंदउजियारी ॥ पुनप्रतिसब्दहोतवृंदावनगरजतागिरकंदि रासारी ॥ अतिआनंदभयोकोलाहलरहीपाछिलीपहरनिसारी ॥ नागरीदासस्यामस्यामारतिसमैंअनूपमऊंचीअटारी ॥ १३१ ॥ इ कताल ॥ मोहनमोहलईब्रजबाला ॥ गईहुतीजलभरनिअकेलीसुंदर नैंनविसाला॥ नागरचलीसीसलैंगागरिउतआयेनंदलाला॥ थकितर हीलपिवदनमाधुरीभुलिगईगजचाला ॥ १३२ ॥ दोहा ॥ मनलूट तअवलांनिको,अहेचंद्रिकामीत ॥ सोसचढाईस्यांमतू, यातैंकरतअ नीत ॥ १३३ ॥ मनमोहनसिरचंद्रिका, मंदमंदफहरात ॥ परस तलोयनबालके, कंपभयोमनुगात ॥ १३४ ॥ मुपतेरोईनामराटि, तोछबिहियसुकुँवार॥तोतनआवैंपरसिसो, आंकौंभरतबयार १३५ मृगमदआडलिलाटतिय, कीनीसरससुधारि ॥ मनुमधुपावलिकैंव

लपर, वैठीसभासंवारि ॥ १३६ ॥ मृगमदआडसुनीलमैंनि, मनु
वारिकैंसाज ॥ वदनरूपसरपररची, पैरीमनमथराज ॥ १३७ ॥
गमदआडलिलाटतिय, कीनीहैंछविअैंन ॥ वदनरूपसरवीच
मनूसतेसामैंन ॥ १३८ ॥ मतिमारैंसरतांनिकैं, नातोइतोबिचारि
तीनलोकसंगगाइये, वंसीअरुब्रजनारि ॥ १३९ ॥ मनहींमनझ
हातसी, मनहींमनमुसकात ॥ तूमनमोहनसौंमिली, पाईमनकी
न ॥ १४० ॥ यहजमुनावृंदाबिपुन, यहउजियारीरैंन ॥ यहदंप
कलगांनधुनि, बरनतबनैंनबैंन ॥ १४१ ॥ पद ॥ इकताल ॥ रा
काआनंदरूपपियकौंआनंददीनौं॥ रचीहैंअतिआनंदकेलिवाहु
निझेलिझेलिमेलिमेलि उरसौंउरआनंदभीनौं॥ आनंदसषीश्रवननै
आनंदनिकुंजअैंनमिलिकैंआनंदघनसौंदामिनआनंदकीनौं॥ पूर
नंदवढ्योजातिनांहिमुषतैंकढ्योनागरियादासिभयैंआनंदरसलीन
॥१४२ ॥तिताल ॥ रेकांन्हांजबतबछबिनिरषतहींहूंतोबावरीभई
तनकलपैंजाकीजायलाजछुटियहगतिकाठिनदई ॥ बनतनभवन
जमोपैंछिनसुधिबुधिबिसारिगई ॥ नागरीदासभईयेअंषियांमोहन
पमई॥१४३॥चोताल॥राजतहैंजोरीघनदामिनीबरनकी ॥ केलि
लाकुसलकांन्हकेलनिकीकुंजबीचबातैंकरैंघातनिसौंमनकेहरनकी
सुषहिंसकेलिबेकौंबैठेहैंअकेलेदोऊबनीविधिआजलाजगढबिषर
की ॥ नागरीदासरतिकेलिकेलिकेनिकेतउभैंउरनिमैंचाहकलको
केकरनकी ॥ १४४ ॥ ताल चर्चरी ॥ रसिकरसरासनवरंगनित
लला ॥ संगउरंगगरबांहछबिदेतप्रियसजलघनमांझमनुचमकिर
चंचला ॥ वलयकंकनकुणितछीनकटिकिंकिनीपगनिछिगुनींनि

छोरछनकतछला ॥ नागरीदासदोऊनिर्तश्रमडगमगेरगमगेवारगुलि उरनिचलिअंचला ॥ १४५ ॥ इकताल ॥ रासरंगवरसुधंगनिर्ततहैं प्यारी ॥ तत्तरंगधुमकटितकथेइतथेइतथेईथेईथेईथेईउघटतजुवतीस मूहबाजतसमतारी ॥ वीनपरनआवतमिलिगावतललिताप्रवीनछीन सुकटिभंगसौंव्हैंभंगभुवअँन्यारी॥ नागरिछबिलपिरसालइकटगपिय दृगबिसालवारतमनमालगलबोलतबलिहारी ॥ १४६ ॥ तिताल॥ रेकन्हैयनैंनानिकोपैंडोन्यारो॥ ज्यौंज्यौंहटकतत्यौंत्यौंअटकतचल तनचारौंहमारो ॥ दीसतहीकछुऔरनदोसैंदीसतरूपतिहारो ॥ ना गरियाहमकौंतुमप्यारेतुमकौंकपटपियारो ॥ १४७ ॥ इकताल ॥ रंगीलीसबप्रेमभरीबृजनारि॥ अतिआतुरचितनंदनंदनपरिरिझईफि रतरिझवारि॥ बिसरिबिसरिघूंघटनैंननिसौंभरतरूपअंकवारि॥ अट कपरीहियनागरनटकोसकैंकौननिरवारि ॥ १४८ ॥ इकताल ॥ रीनूपुरधुनिप्यारीश्रवनपरीसुपदैंन ॥ हरबरायआतुरउठिआयेपिय मोहनमनमैंन ॥ कुंजद्वारहसिलईभुजनिभरिमिलेमोतद्दढहितकेअैं न॥नागरियादैचलेअंसभुजकरनिकुंजसुपसैंन॥१४९॥ दोहा ॥ रस संपतिमिलिविलसहीं, दंपतिदैंगरबांह ॥ढिगवीनांवीनांसषी, बज वतिद्रुमकीछांह ॥ १५० ॥ रैंनजातहैंचैंनकी, चलिनागरिसुकुंवा रि ॥ नैंनमईपियव्हैरहे, तेरेनैंननिहारि ॥ १५१ ॥ रचेलालपलपां वडे, तुवआंवनिकैंहेत ॥ नागरियाहियसेझपर ॥ त्रिहरोमिलिसंके त ॥ १५२ ॥ रँगरँगभूपनफूलके, रहैफूलतनझूल ॥ अंतरकोवाहि रमनौं, प्रगटीअंगअंगफूल ॥ १५३ ॥ इकताल ॥ लग्योरहैंअंपि यनिमैंपररंभनपलअंतरनपरैं ॥ अधपुलीचितवनिअधरउचैंहासिनैं

ननिसैंनकरैं ॥ मुषनियरैंमुषसुषफूंकनिसौंसात्विकस्वेदहरैं ॥ नागरिनागररूपअमलवसमंनतंद्रानटरैं ॥ १५४ ॥ रागपरज ॥ तिताल ॥ लोइननींदभरैं॥अधपुलीपलकनिमैंमुसकातेझुकिपियऔरपरैं॥ हरिटारतमपतैंपरछांहींकरपरलताधरैं॥ नागरीदासचंदउजियारैंदृगनितैंदृगनिटरैं॥१५५॥दोहा॥ ललिततमूराबालढिग, सोहतहैंइहिंभाय ॥ समरजीतिसरदृगनिसौं, तरकसलियोछिनाय ॥ १५६ ॥ लोंनींतिरछौंनैंनचलैंकौंइनकौंनैंसाछि ॥ लगतलजौंनैंदृगनिकौ, टौंनैंभरीकटाछि ॥ १५७ ॥ लोकबावरेकहतसब, भईबावरीबाल ॥ तियनकरीक्योंबावरो. रूपबावरेबाल ॥ १५८ ॥ पदतिताल ॥ सजनीनियेनेहकीबातकहाकहंहुायरी ॥ गहबरिआवतकंठकहीनहींजायरी ॥ मोदिसरहेलपिलालरसिकरसष्यालमैं ॥ तवउरझेयेनैंनरूपकेजालमैं ॥ मेरैंजियअकुलांनित्यौंहींउतस्यामकैं ॥ मिलनिविनांदिनरैंनघुटैंबिचधामकैं ॥ घूमतघायलप्रांनजैसैंमदरापियैं ॥ लोकलाजगृहकाजकोबिसरीसुधिहियैं ॥ आजअचांनकभेटव्हैंगईबाटमैं ॥ गईइकौसैंन्हांवनजमुनांघाटमैं ॥ सघनद्रुमनकैंमांहिलैगयोमोहिरी ॥ मिलेदोउलपटायकहाकहौंतोहिरी ॥ नागरियारसमगनअधरआसवछकी ॥ मिटीनअबलौंदेषिहियेमैंधकधकी ॥ १५९ ॥ तालचर्चरी ॥ सुनतधुनिबैंनमधुरागगोरीरुचिरचाढियनिजभवनतियरवनहितअगमगी ॥ जांनिघनस्यांमआगमनगोकुलवधूअटनिदुहुंदिसानिमांनूंदामिनीजगमगी ॥ सांझसुषसमैंआनंदगहमहठईउडिरैंनधैंनवहुगलिनबिचरगमगी ॥ संगगोपालनटवेषरहीदेषिसवपलकनांहिंलगतमुषअलकरजसगबगी ॥ कइ

कहासिफूलडारतकइककांकरीकइकमगछाडिरहीसांकरीलगमगी ॥ नागरीदासहरिमाधुरीपांनकरिरहिनकछुठौरमतिमदनवसडगमगी ॥ १६० ॥ चौताल ॥ सपीरीअंपियनिसौंअंपियांमिलीबतियनिसौंबतियांमिलीअतिरसबसरसिकलालबाल ॥ सवतननतनामिलेमनसौंमनमिलेरीभुजानिसौंभुजमृनाल ॥ फूलनिकोसैनीसौंमिलीहैंबैनीविथुरैनोनूपुरनिनादसौंमिलीहैंकिंकिनीजाल ॥ नागरीदाससुपसुरतिमिलनिमांझलैलैउरबीचतैंबिहारीप्यारीन्यारीकरीमुक्तमाल ॥ ॥ १६१ ॥ तिताल ॥ स्यामतलपरचीहैंसुपसुरतिसचीहैंतामेंकोककीकलानिकेलिमोहनमचीहैं ॥ हावभावअंगसंगअमलअनंगमातेअधपुलेनैंनसैंनभृकुटीनचीहैं ॥ अधरनिहरैंहरैंवचनविलासहोतदसननिजोतिदेपिदांमिनीलचीहैं ॥ नागरीदासजुगवाहुबिचघनस्यांममधांनौंनीलमनिकलकुंदनपचीहैं ॥१६२॥ तिताल ॥ सोयेस्यामास्यामसेजसुपअंगअंगसुरतिरंगललकैंहो ॥ तैसोहीसनमुपअमलचंद्रमावदननिदुतिझलकैंहो ॥ टूटिरहीगजमोतिनकोलरफैलिफबीआंननअलकैंहो ॥नागरियामनरंगडारचोड़नपीकरंगीलीपलकैंहो१६३॥तालचर्चरी॥सरससुघरनवकिसोरगतिसुधंगनांचैं॥नूपुरादिमिलिमृदंगवीनलीनअनुपमधुनिसहचरिकलगानरंगचहचरिव्हैंमाचैं ॥ कहिनपरतभुवविधांननवघनतनलहलहांनिबिलुलितवनमालसृंगलपटातिसंगआवैं॥ अभिनयजुतउरपतिरपधरनचरनचपलचारुमंजुलझुकिमुकटसीसगतिमतिबिसरावैं॥ दांवनविचपवनपरासिफैलफैलपरतफिरतगतितरंगसागरवाढिरंगमांझबोरैं ॥ नागरियानिरपिवदनश्रमजलकनझलमलातप्रेमबिवसवालनीलअंचरसुपछोरैं ॥

॥ १६४ ॥ तिताल ॥ सरदनिसरासासिंधुबढ्योअनूपमउपजततां नतरंग ॥ सुघटसंगीतसुधंगसुलफगतिहोतदुहुनिमैंहावभावभुवभंग ॥ मधिमंडलश्रीराधामोहनलषिमुरछितरतिअवनिअनंग ॥ नागरीदासअकासचंद्ररथचलतचक्रगतिपंग ॥ १६५ ॥ तिताल ॥ सिगरीनिसाबितईरीकुंजकुटीकेंद्वार ॥ करतसैंनषुलिजातनैंनतबइकटकरहतनिहारउरझेबाहुमृनालपरसपरउरहारनमौंहार ॥ नागरीदाससोयेरसभोयेहरिब्रषभांनकुँवारि ॥ तालचपक ॥ सषीसुषदाईस्यामामिलायेफेरिकैं ॥ सघनकुंजछत्रिपुंजकीछाहियांलीनैंरंगभीनैं हरिहेरिकैं ॥ मिलनहीबाललालसौंबांकेबैंनकहततिहिंबेरिकैं ॥ नागरियातबतैंअबपायेकौंनैंबिरमायेघरघेरिकैं ॥ १६७ ॥ इकताल ॥ सुनिमुरलीकीटेरचपलचली ॥ निरजनबनतहांऔरनकोऊश्रीब्रषभांनलली ॥ मिलीजायघनस्यामलालसौंदामिनरंगरली ॥ लताओटरंध्रनिअविलोकतनागरीदासअली ॥ १६८ ॥ तिताल ॥ सषीसुनिबांसुरीबनबोलैं ॥ समरषेतसंकेतमैंहेलीरहीहैंनिसांनवजाय अकेलीहमारेपउरषप्रेमहिंतोलैं ॥ लोकलीकसबश्रुतमर्जादारहनिदेतनहिंआज ॥ लाजकियैंअबलाजनराहिहैंलाजतजैंरहैंलाज ॥ नागरियासुनिबैंनचलीयोंवृजजुवतिनकीभीर ॥ ज्यौंदुंदभिसुनिसनमुषनिकसैंमहासुभटरनधीर ॥ १६९ ॥ दोहा ॥ सषीरूपकीमंजरी, षंजरीटसेनैंन ॥ बजैंकरनिमैंषंजरी, लजैंपरेवाबैंन ॥१७०॥ सिंघपौरिठाढेकुंवर, नैंननिसरबरसात ॥ उहींबाटआवतजोई, षाटधरीघरजात ॥ १७१ ॥ श्रवनलगायोबैंनरव, दृगनरूपसंताप ॥ घेरबढायोघरोनिमैं, निठुरइतपैंआप ॥ १७२ ॥ सरसाईवृंदाविपु

न, अमलजुन्हाईरैंन ॥ लगतसुहाईहगानिकों, कुंजनिछविसुपदे न ॥ १७३ ॥ श्वेतफूलफूलेलतानि, विलुलितहीराहार ॥ जौन्हओढिपटरुपहरी, कुंजनकरोसिंगार ॥ १७४ ॥ सुनतवैनबनतियचली, मुनिमनभयेअधीर ॥नागरलषिरसरासनभ,भईविमानंननिर्भीर१७५ पदतिताल ॥ होलालझूठीझूठीबातनिचितचोरयो ॥ मनओरसुप ओरकहतओरकीओरडारतक्यौंमोपैंतुमकपटनेहउरझेरो ॥ सीपे कहोकहांठगहौंनांबैंननमांझघनेरो ॥ नागरियासबजानतहौंतउरह तनांहिभनमेरो ॥ १७६ ॥ रागअडाणो ॥ चौताल ॥ होकाजर बिनकारेरीतेरेनैंनमतवारेभारेढरारेहावभावचातुरींनिमदनसंवारे॥सुं दरताछायेछकेजोबनमदअरसायेरसनिधिस्यामरिझायेलागेनैंननि नैंनपियारे ॥ पंजनअरुमीनमृगअमलकँवलकलइनहूतैंआलीअति सरससुढारे ॥ नागरीदासपियसाहिनसकतस्यामपलकनिओटभये न्यारे ॥ १७७॥ चौताल ॥ हौंतोदोऊदेपतदेपरही ॥ स्यामतमा लप्रियाछबिबेलीलगिलपटायरही ॥ फूलपरैंहलिलतालजितऊपर झुकिझूमिरही ॥ नागरीदासकुंजविचैतैसीजगमगजौन्हरही ॥ ॥ १७८ ॥ दोहा ॥ हरिचितलयोचुरायकैं, रह्योपरतनहिभौं न ॥ तापरवंसीबाजमति, दतकटेपरलौंन ॥ १७९ ॥ राग ॥ ॥ तिलाल ॥ झूलतहैंदोऊसपीझुलावैं ॥ सौंधैंकीझकोरैंस्याम तनगोरैंआवैं ॥ हिंडोरैंहिलोरैंमांझथोरैंथोरैंगावैं ॥ नागरझकझो रैंहारडोरैंउरझावैं ॥ १८० ॥ राग ॥ वंगालाकी ॥ तिताल ॥ वैनबा जैंजमुनांकैंतीर ॥ उमगिचलीसांवनसरिताज्यौंजुवतिनकीभीर ॥ हायदईनिदईमोहिरोकीकितजाऊंवीर ॥ नागरीदासप्रेमपथआगैंप

हुंचीछांडिसरीर ॥ १८१ ॥ दोहा ॥ मैंनरंगरसरगमगे, जगेउजारीरैंन ॥ षगेनैंनपियकेतहां, लषिअलसौंहैंनैंन ॥ १८२ ॥ राग ॥ ॥ तिताल ॥ प्यारीराधेजूअहाकहाछबिपावतगावंतचंदकैसौंहैंकियेमुष ॥ सिरजूराढिगफब्योहैंतंमूराकरमुंदरीचूराचमकतचमकतचौकापानरंगमुष ॥ प्रीतमभँवरानिवारतनियरैंपियरैंपटछाविछोरगहैंकरदृगचकोरअरझेहैंसासिमुष ॥ नागरव्हैंरहेरूपमईमुष ॥ १८३ ॥ ॥ दोहा ॥ उदौंफैंटासिरफबैं, जरतारीकीभांति ॥ सोहतअलबेलीकुंवरि, हसतिलसतिकिलकांति ॥ १८४ ॥ दोहा ॥ लालधरैंअलिबेषमुष, अग्रनचतसुषदैंन ॥ देतरीझमुसकानिप्रिया, जगमगायरहिरैंन ॥ १८५ ॥ दोहा॥ लेतउछंगानिभुजभरैं, सषीसांवरीगात ॥ अद्भुतकउतकमाचिरह्यो, देषैंहींवनिआत ॥ १८६ ॥ दोहा ॥ रतनषचितकुरसीलसैं, नागरियाअवरेषि ॥ कहाकहूंछबिआजकी, सषीदेषिरीदेषि ॥ १८७ ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ तिताल ॥ आजसषीदेषिरीदेषिनैंननिभरिभरिकैसीलगतहैंजगमगायरहीरात ॥ हीरनपचितकनककुरसीपरलसीहैंकुंवरिराधेजरतारीफैंटावांधैंसिरकलगीछविसरसात ॥ १८८ ॥ रहैंनीरीललितावीरीदैंवातकरतप्यारीमुसकात॥ नागरस्यामसषीनिर्त्ततआगैंगांनघुमांडिरह्योकडांतिगकुंजसुहात॥ ताल चंपक ॥ जुन्हैयाआयरहीहैंदुहनपरअवदुतिनिरषिअमंद॥ इतएहैंपरछांहद्रुमनकीफिरउतजैहैंहरिचंद ॥ मंदमंदकलगांनकरतसुनिछकेमदनआनंद ॥ नागरिनागरवसेकुंजानिसलसेसेजमैंकसेजुगलभुजफंदे ॥ १८९ ॥ दोहा ॥ ठीकरहतनहिंलीकपर, फैलतरंगसुजांन ॥ व्हैंअवरेउरझेरपिय, जियजितीकिललचान ॥ १९० ॥

॥ दोहा ॥ गतधीरजवढिचौंपअति, परतनांहिचितचैंन ॥ व्हैं आतुरचातरलगे, पायमहावरदैंन ॥ १९१ ॥ कँवलचरनपियच तुरलषि, इकटकरहेलुभाय ॥ लियैंमहावरहाथमैं, रंगभरचोनाहिंजा य ॥१९२॥ रंगभरतपगदुहुंनअति, वाढयोरंगअनंग ॥ नागरियाके हगनवह, लग्योसुछुटतनरंग ॥ १९३ ॥ होतरागसारंगधुनि, दंप तिकुंजनवीन ॥ विचिविचिगायवजावहीं, वीननिपरनप्रवीन॥१९४॥ ॥ दोहा ॥ धीरजपगठहरैंनहीं ॥ सुरगहरैंगुनगांन ॥ रागरसासव सिंधुकी, लहिरैंउपजततान ॥ १९५ ॥ कहावीनजडकोकिला, लागतश्रवनकठोर ॥ लहलहातनीकीउठैं, तांननिरंगाहिलोर॥१९६॥ नित्तकेलिआनंदरस, बिचवृंदावनवाग ॥ नागरियाहियमैंवसो, स्यामास्यामसुहाग॥ १९७॥ राग सारंग ॥ ताल चपक ॥ प्यारी जूबजावैंबीनगावतहैंपियप्रवीनप्रीतमबजावैंतबगावैंसंगप्यारी॥प्या रीजूसराहैंजबप्रीतमनँवावैंसीसप्रीतमसरांहैंतबमुसक्यातप्यारी ॥ प्यारीजूरिझायैंप्रियरंगभरीतांननसौंप्रीतमरिझाईरूपगुनभरीप्यारी ॥प्यारीजूदईहैरीझचितबनमांनमांनीपियलईलायउरनागरियाप्या री ॥ १९८ ॥ इतीश्रीनागरीदासजीकृतपदमुक्तावलीसंपूर्ण ॥

॥ राग सोरठ ॥ होझालोदेंछैरसियानागरपनां ॥ सारादेंपैला जमरांछांआंबांकिणजतनां ॥ छैलअनोपाकह्योनमांनैंलोभीरूपस नां ॥ रसिकविहारीनणदवुरीछैंहोलाग्योह्मारोमनां ॥ १ ॥ राग ॥ अरीयहकौंनजमुनांतीर ॥ द्रुमलतागहिदेपिठाढोललितस्यामसरी र ॥ चरनपरचरनसोभितवहुनपनकांतउदोत ॥ मनहुपंकजदलि नपरजगमगतजगनूजोति ॥ लपटरहीहैंपगानिव्हैंव्हैंजलजलरछविपुं

ज ॥ ढिगमहावरस्यांमतामिलहोतमुक्तागुंज ॥ ३ ॥ लसतपटकंच
नतरैंजुगजानजंघसुढार ॥ ज्यौंब्रजमुनांनीरपररविझलकाकिरनन
जार ॥ ४ ॥ वज्रकनहाटिकजटितकटिकिंकनींयहभाय ॥ जांनि
कैंव्रजचंदउडिगनचढेकाटितटिजाय ॥ ५ ॥ उरसपीनउतंगपरनग
त्रिविधिहारबिहार ॥ नीलगिरमनिसिषरतैंनिरझरतत्रिवेनीधार ॥
॥ ६ ॥ बाहुजुगसांचेभजीसीलेपचंदनगरैं ॥ जुवतिधीरजधर्मकोब
लदूरहीतैंहरैं ॥ ७ ॥ कामध्वजफहरातअंचलपीतपटफहरात ॥ नि
रषनहिंठहरातहैंमनलाजहियहहरात ॥ ८ ॥ कंठद्योतसुदेसमोतील
रनबिचदरसाय ॥ गिरचोलषिछतचिबुकऊपररूपतृषतसुभाय ॥
॥ ९ ॥ अधरमृदुमुसक्यातसेबिचदसनकीचकचौंध ॥ अरुनफूली
सांझमैंजानौंउठतचपलाकौंध ॥ १० ॥बिमलदर्पनसेकपोलनलग्यो
मनललचाय ॥ अलकमनमथफांसकुंडलपरीझांईआय ॥ ११ ॥
उच्चनासापरसुबेसररह्योमुक्ताझूल ॥ ताहिलषिउपमानआवैंपरतम
नभ्रमभूल ॥ १२ ॥ मदविघूर्नितनैंनसौंहैंसहजभौंहैंबंक ॥ जुवति
मनवसमंत्रकीलषिभालअवलीअंक ॥ १३ ॥ फब्योफैंटासीससुंदर
दाहनेदिसढरचो ॥ निरषपेचकुपेचमैंमनजातहैंधौंपरचो ॥ १४ ॥
रतनअवलीमोरचंदासुमनगुच्छसुरंग ॥ बासवसचहुंधांमधुपलबिलु
टतकोटिअनंग ॥ १५ ॥ निकटमूरकदंबकैंतरमहामूरतमैंन ॥ दास
नागरनिरषइकटकरहतनांहिंननैंन ॥ १६ ॥ राग सोरठ ॥ लाडी
हठमाडचोजीमांझलरात॥ तिरछीलपैलजीलानैंणांवैंणाबांकीबात॥
छिपीसौंहसुणिभौंहांझिझकैंबिझकिदुरावैंगात॥ नागरीदासआसउ
मंगैपियहियैंऊकलापात ॥ दोहा ॥ आउजियालीऐंमहल, आस

रिताऐंसैल ॥ होपिणाछिणआडीहुवां, आलाडील्योछैल ॥ १
ओंसरइणनरपंचसर, चौंसरहरपरधार ॥ सतरअतरवशकरअ
कंवरभँवरबरवार ॥ २ ॥ कंवरिकेलिरीकामिसी; कोमलवैसश
छांदैंलाडलडीतणैं, होलैंझालौधीर ॥ ३ ॥ दुजतीछणतासहिर
गहैंचरणमृदुबोल॥करसणप्रतिसुपजोगकारि, भोगलहैंवहुतोल४॥

---

श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥

# अथ श्रीनागरीदासजी कृत उत्सवमाला ॥

## प्रथम श्रीकृष्ण जन्मोत्सव ॥

दोहा ॥ जसुदाकैंसुतहोतभयो, गहगडगाननिशान ॥ गयोछा यपुरमोपलौं, मंगलघोषवितान ॥ १ ॥ व्रजथिरचरआनंदमय,

आनंदाविस्वअमंद ॥ आजप्रगटभयोनंदग्रह, रूपधरैंआनंद ॥२॥ दीपकप्रगटयोनंदघर, निर्मलज़ोतिअभंग ॥ उडिउडिपरनलगेज हां, दानवदुष्टपतंग ॥ ३ ॥ श्रीजसुदाकैंसुतभयो, नपासिपसुंदर सर्व ॥ रससिंगारकैंवरनतन, करनकांमगतिगर्व ॥ ४ ॥ नागरसुत भयोनंदकैं, मनमोहनसुकचांर ॥ यामोहनहितमोहनी, अबब्रजप्र गटनिहार ॥ ५ ॥ पदरागपट्ताल जात्रा ॥ आजब्रजराजकैंसुत भयोसुनिसखीउमगिउपहारलैंलैंचल्योमहरांवनौं ॥ थारकरहारभ रिभारलचकतलंकबसनअतिभारउरफब्योफहरांवनौं ॥ इतहिंधुनि गानअरुमंगलनिशानधुनिउतहिंनींकोलगतघननघहरांवनौं ॥ ना गरीदासब्रजचंदप्रगटतभयोनंदनिधिहियैंआनंदलहरांवनौं ॥ १ ॥ ॥ राग गौरी ॥ तिताल ॥ आजभयोनंदभवनआनंद ॥ ब्रजजन उमंगिचकोरचलेमिलिप्रगटयोपूरनचंद ॥ गावतमंगलगीतगलिनमैं आवतियुवतीबृंद ॥ नागरीदासउत्साहछकेसबमिटजुगयेद्रुपदंद ॥ ॥ २ ॥ राग अडाणौं चौताल ॥ नंदगोपराजअहोऔरैंब्रजओप आजतेरैंपुत्रभयोभैयापुन्यफलजापको ॥ ब्रह्मारिषद्वारबहोदेवताबि माननपैंछायोसुरवेदगांनभेदकअलापको ॥ घरघरसंपदाअपारब ढीदेखियतहमपैंनकीनौंजातबर्ननप्रतापको ॥ नागरियाबेरबेरग्वा लकहैंटेरटेरतेरोघरमानोंपरमेश्वरकेबापको ॥ ३ ॥ राग परज ॥ति ताल ॥ वाजैंबधाईब्रजमैंनंदघरनिसुतजायो ॥ गोपीगीतमनोहर गावतआवतभावतनभतानतरंगनिछायो ॥ कौतिगमोहेदेखिदेव गनदेवलोकविसरायो ॥ नागरीदासउछाहछकेअतिआनंदउरसर सायो ॥ ४ ॥ तिताल ॥ आजअतिब्रजमैंबढ्योहैंआनंद ॥ ज

गमगरह्योनंदग्रहपूरनप्रगटोहैंगोकुलचंद ॥ लोचनतृपितचकोरनके चितमिटिजुगयेदुषदंद ॥ नागरीदासजुरीकमलासीगावतजुवतीवृंद ॥ ५ ॥ इकताल ॥ अवहींनेकपोढीहैंवृजरानी ॥ पुत्रजन्मउत्सवरससानीआनंदितअरसांनी ॥ लालनहूपालनमेंसोयेकमलनैंनपयपांनी ॥ नागरिगोपीगांनमनोहराफिरिकारियोसुषदानी ॥ ६ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ नंदजीरैंचालोनैंधरां ॥ महामनोहरपुत्रहुवोलखिलोयणसुफलकरां ॥ दहीष्यालसोंभरांभरांभरांवाहांसिहंसिफेरिभरां ॥ रसिकविहारीनांवकुंवरजीरोआगमजांणिधरां ॥७॥ रागधमायची तिताल ॥ वधाईवधाईवधाईहोआजवृजछायरही ॥ जसुदाकेसुतभयोसुनिउतकानंदेंदैंमेघसेनिसानवाजिसहनाइरही ॥ ठढीनंदआंगनमेंमंगलकलशलियेमंगलरसओपीगोपीसवगायरही ॥ नागरियासुखसांनीदधषेलनअरसानीपटभीजिअंगरंगझरिलायरही ॥ ८ ॥ आनकविकृतरागसोरठइकताल ॥ कांनपडीनसुणीजैनंदघरआजैं ॥ धुरैंनिसांणघणांमंगलमयजाणैंनभभादौंघणगाजैं ॥ गोपीगीतगावतीआवैंचालंताछविछाजैं ॥ गोकुलरागलियांरांचहुंवांवहुवांरांरमझोलवाजैं ॥ श्यामवरणसुतजायोराणीरूपअनूपमराजैं ॥ होसीरसिकविहारीनांत्र्यांरोअवहीमदनवदनलखिलाजैं ॥ ९ ॥ ताल चर्चरी ॥ गोकुलआजपरमरंगरली॥ भयोहैंसुतनंदरानीजूकैंसुभसुनियेवातभली ॥ वृजवधूनिकैंहियेंतादीमोदमनकलमली ॥ मनुउमगिसलितारूपकीआनंदआतुरचली ॥ लंकलचकतथारकरभरभारहारावली ॥ गांनमंगलनूपुरनिधुनिछायरहीसववगली ॥ छिरककैंदधिनाचतमगनजहांनंद

सदनस्थली ॥ दासनागरछकीउछवकरतकोतिकअली ॥ १० ॥
रागकाफी इकताल ॥ बाजैंबधांइयांबेसईयेनंददेदरबार ॥ हुवा
सुतसोहनांवे ॥ मनदामोहनांसुकुंवार ॥ आईसुनिगोपियांवे ॥
हिलिमिलिगावहींषुसियाल ॥ जुरेसबलोकमंगनवे ॥ गुनीगुनबोल
दैंदैंताल॥गुनीदेतालानाचैं ॥वाहवा॥ आंगनपहपटमाचैं ॥ वाहवा ॥
नंददालालाजीवो॥ वाहवा, दूधांअमृतपीवो ॥वाहवा॥षुसीदिलपाव
झूमां ॥ वाहवा ॥ ललादीनूंनींचूमां ॥ वाहवा ॥ उसदामंगलगावां
वाहवा ॥ दानदुपट्टापावां ॥ वाहवा ॥ पावांपटदानमोतीवो ॥ जा
वांदिलफूलदेघरमांह ॥ असाढाहाथटोडरवो ॥ बाजूबंधझूलदेवि
चुवाह ॥ तुजपरघोलियांवो ॥ जसोदेबोलियांदैंसुनाय ॥ धनिध
निआजदादिनवो ॥ दैंदीदानक्यौंनमंगाय ॥ महरनैंदानमंगाया,
वाहवा॥ कंचनझरबरषाया, वाहवा॥हैंबडभागनतूरी॥ वाहवा ॥करी
मुरादापूरी ॥ वाहवा ॥ बीचषुसीदिलगाढे ॥ वाहवा ॥ मंगलमुषी
तुसाढे ॥ वाहवा ॥ जन्मजनमगुनगावां ॥ वाहवा ॥ नागरदरसन
पावां ॥वाहवा॥११॥तिताल॥ नंदजूकैंबाजतबधाईआजद्वारैं ॥ गह
मह मंगलमहागानधुनिछायरहीव्रजसारैं॥ अतिआनंदभयोसुनिसज
नीबिनतनकछूउचारैं ॥ नागरियाजसुमतिसुतजायोचलोरीबदन
निहारैं ॥ १२ ॥ तिताल ॥ होघरनंदकैंबाजतआजबधाइयां ॥ झां
झझनकमिलिमधुरटकोरनिपूरिरहीसहनाइयां ॥ आंगनझूंमिझूंमक
दैंदैंगोपीगावतआइयां ॥ नागरवृजघनश्यामप्रगटभयोसुषबरषा
बरषाइयां ॥१३॥ आनकविकृत॥रागकाफी ॥ बाजैंआजनंदभवन
बधाइयां ॥ गहमहआनंदरंगरलीअतिगोपीसबमिलिआइयां ॥ मह

रिजसोमातिकैभयोसुतफूलीअंगनमाइयां ॥ रसिकबिहारीप्रानजी बनलपिदेतअसीससुहाइयां ॥ १४ ॥

## अथ राधाजन्मोत्सव लिष्यते ॥

इनवधाइनकीअलापचारीमें देनेये दोहा ॥

दोहा ॥ प्राचीकीरतिकूपतैं, कन्याभईअनूप ॥ भानसिंधुआ नंददा, चंदमंजरीरूप ॥ १ ॥ कुलमंडनवृषभानकी, भूपनजगत अभूत ॥ वारौंकोटिननृपनके, याकन्यापरपूत ॥ २ ॥ वेगवढोआ रोग्यतन, मागवडोउत्साह ॥ नंदरायकेकुंवरसौं, वेगहिहोहुविवा ह ॥ ३ ॥ होवृंदावनईस्वरी, गुनपूरनसुपरास ॥ विधिनासोंमांगत इहैं, जाचकनागरिदास ॥ ४॥ पदरागईमन चौताल ॥ निसमेंसुम नलह्योताकेफलकीविधिबरसांनैंप्रगटीसुपदाई ॥ गउरश्यामइक जोरीअंगतसुपसोवतसुपनैंदरसाई ॥ जनोंबहुकरतविहारविपनमैं गानरंगबरपावरषाई ॥ गिरतरुकुंजपुंजबनवीथनरससिंगारनंदीसर साई ॥ नागरियासुभसुगनहोतहैंघरघरआनंदउरनसमाई ॥ लीला ललितकरनदोउप्रगटेइतराधाउतकुंवरकन्हाई ॥ १ ॥ राग परज ॥ तिताल ॥ ढाढनिनाचैंवृषभानकीमंदिररसमाती ॥ गावतसरस वधाईसुंदरलटकिचलतमुसकाती ॥ नंदसुवनअरुकुंवरितिहारीवेग वढोदिनराती ॥ नागरीदासरंगीलीविचिविचिदेतअसीससुहाती ॥ ॥ २॥ या वधाईके गायवेमें वीच वीच दैनेये दोहा॥ देसदेसके गुनीजन, जाचनआयेद्वार॥ धनधनउनयोंभानजू, वरषतरिद्धअपा र ॥१ ॥ ढाढनश्रीनंदरायकी, वधूवृंदलैसंग ॥ आईश्रीवृषभानकें,

रावरमाच्योरंग ॥२॥ नाचैंगावैंढाढनी, कहैंवधाईपांउ ॥ हुलरावति श्रीराधिका, लैलैंकुलकोनांउ ॥३॥ कीरतिरानीयौंकह्यो, गोपराज सिपमोर ॥ येजाचकनंदरायके, जोदीजैसोथोर ॥४॥ पूछोढाढानि नांवकौं, कहोकीरतिसुषषोलि॥नवलायाकीनांवहैं, विजैंसखीकह्यो वोलि ॥ ५ ॥ तिताल ॥ हेलीआजकीघरीछिनभलियां ॥ घनआ नंदसकलबृजबरपतकीरतबेलसुफलियां ॥ इतप्रगटीगोरीटतश्याम हिहियआनंदकलमलियां ॥ नागरियाजोरीअतिलैंनीहौंनीहेरंगर लियां ॥ ३ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ आजवृषभानकैंवधाई॥ गहमहभीरभईरावरमैंगावतअलीसुहाई ॥ हंसिहंसिगोपीमिलतपर स्परआनंदउरनसमाई ॥ प्रगटभयेउतरसिकविहारीइतप्यारीनिधि आई ॥४॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ वधावणोंहेहेलीआजरली ॥ भईभीरवृषभानभवनमैंकीरतिवेलिफली ॥ जुवतीवृंदघरघरतैंमंग लगावतआवतचली ॥ रसिकविहारीचंदहेतजनुप्रगटीकुमुदकली ॥ ॥ ५ ॥ आनकविकृत राग पमायच तिताल ॥ हौछैवृषभानरैंघर लापांरीबधाईआज ॥ कुंवरिलाडिलीजनमलियोछैमोहनरैंसुपका ज ॥ हुलराबैंमंगलगावैंढाढनिलीयांसुघरसमाज ॥ रसिकविहारीम नआनंदहुवोप्रगटीनिजसिरताज ॥ ६ ॥ आनकविकृततिताल ॥ होछैंवृषभांनरैंघरआनंदरलीवधावणौं ॥ जनमीराधावृजसुखसाधा निरपिनैंणासुखपावणौं ॥ आंगणग्रहमहभीडहुईछैआजकोदिवससु हावणौं ॥ प्रगटीछैंरसिकविहारीकीजोडीहुवोमनोरथभावणौं ॥७॥ रागविहागरोतिताल ॥ कीरतजूकीअवहींपलकलगीहैं ॥ सवदिन उच्छवजनमजगीहैं ॥ पोढीनिकटललीलघुवेसैं ॥ मइयाजागिजा

गिसुघदेपैं ॥ तुममिलितनककरोविश्राम ॥ माईमनवांच्छितभयेका
म ॥ अबभईनिद्रावसश्रीरानी ॥ ढिगसषीनागरिकहतकहानी॥८॥
रागसोरठतिताल ॥ भईभानजूकैंकन्यावधाईवधाईचलिदेपितूनि
करकैं ॥ किधौंकीरतकीकीरतप्रगटीस्वरूपधारिकैं ॥ वरसानैंआ
जुहेलीमहामंगलधुनिछाई॥ सुनिकांनदैंनिसांनसंगबाजतसहनाई ॥
निकसीभवनभवनतैंतियलागतभलीहैं ॥ उपहारथारलैंलैंसबगावत
चलीहैं ॥ नहिंअंचरासंमारैंउरहारडोरटूटैं ॥ गिरैंफूलबहोगलिनमें
सिरकेसपासछूटैं ॥ मिलपेलतऔनाचतदधिकादौंभयेहैं ॥ आनं
दकोकुलाहलबढिव्यौंमलैंगयेहैं ॥ सुषकीचहलपहलअतिव्हैरही
महलमैं ॥ तहांडोलतहैंउमगीनागरसषीटहलमैं ॥ ६ ॥ इकताल ॥
रीवृषभानकैंवधाईसुनिवाजैंधुनिपूरिरहीसहनाय ॥ हैंकहासषीआ
जुरावरमैंरंगरह्योसरसाय॥ वेरबेरपूछतनंदरानीमोहिनीकोवातसुना
य ॥ नागरतुवसुतश्यामकीजोरीप्रगटीहैंगोरीआय॥१०॥राग भैरूं
तथा सोरठ इकताल ॥ बाजैंवधाईवधाईवृषभानजूकीपोरि ॥ रा
वरिमेंरंगहोतदेषिसषीदोरि ॥ भईकीरतिकैंकन्यकासुलोचनाविसा
ल मनहुंचंद्रजोतिरूपमंजरीरसाल॥१॥ जसुधाअरुनंदहुवेआनंद
मैंअधीर ॥ आयेरनवासकैंनिवासभईभीर ॥ सुनतनाहिंतहांतन
ककानिलगिरह्यो ॥ गोपिकासमूहगानगरजिवृजरह्यो ॥ २ ॥ हौं
नलगेमंगलकौतूहलनिविधान ॥ सवहीआवेसचितभूलेहैंसयान ॥
नाचतवृषभाननंदजोरैंदोउवाह ॥ पुलतपैंचहलततोंदआनंदहिय
मांह ॥ ३ ॥ महरांनीहस्तसवैंकोतिगनिहार॥दोरिदोरिदुहुंनिपैंघट
ढोरतवृजनारि ॥ दधिकादौंमांझनिकरभांमिनीसलोल ॥ मनौंक्षीर

सिंधुमध्यदामिनीकलोल ॥४॥ झूंमिझूंमिझूमकतियनाचतीसुहात ॥ घूंमिघूंमिलंहगनिकीलावनिलहरात ॥ जूरासिरषुलतडुलतमोतिन कीमाल ॥ चूरारहेचमकिचमकिकुंडलकीहाल॥५॥उत्सवरसमत्तमि टतनाहिंउरउमंग॥छुटतबसनतुटतहारबेसझ्झारअंग॥ आनंदकैंआनं दहुवैंआनंदरह्योपूरि ॥ नागरियाप्रगटभई॥ आनंदकीमूरि ६॥११॥ आन कबित्त राग सोरठ तथा मलार तिताल ॥वृषभानकैंमंदलरा बाजैं । सुभघरीदिनसुभमहूरतगहरैंगहरैंगाजैं ॥ गावोमंगलरहसि बधाईपावोंरानोकीरतकैंघरकाजैं ॥ रसिकबिहारीकीयहजोरीभये मनोरथआजैं ॥ १२ ॥ रागकाफीइकताल ॥ हाहामुबारकबादि यां ॥ अरीरानीऐसीयांनितसादियां ॥ राधाचंदमुखीप्रगटीबेटियां॥ औरतारानिसीगोपजादियां ॥ फूलियांअंगनमावैंसलौनियांरंगभरी रसबादियां ॥नागरीदासघुसीदिलमैंआजुगोपीफिरैंउदमादियां१३ तिताल ॥ आजुझबिछाईहैमाईबरसानौंलागतसुहावनौं ॥ भवनभव नकंचनकलशनिधुजाफहरफहरफहरांवनौं ॥ तैसियभादौंउमड़ि घुमड़िघटाघहरघहरघहरांवनौं॥राधाजनमउमगिनागरमनमहरमह रमहरांवनौं ॥१४॥ रागअसावरीतिताल ॥ अरीमाईश्रीकीरतिरां नीकैंकन्याअनूपभई ॥ सुबरिसदनकोतिमरगयोमिटिभयेप्रकाशम ई ॥ महरानैंमंगलघरघरकछुऔरेंओपठई ॥ नागरियाआनंदचंद्रि कासबबृजमांझछई ॥ १५ ॥ रागटोडीचौताल ॥ वृषभांनभवन भईभीरआंगानितनिरह्योमंगलधुनिबितांन ॥ टूटेंहारमोतिनकेछूटैं सीसजूराबारबेसझ्झारआनंदमैंगोपीझूमिकदैंदैंकरतगांन ॥ कीरतज ईहैकन्याअनूपमरूपगोभासकलबृजकोसोभासुषानिधांन ॥ नागरी

दासभुवमंडलअकाशराजतनिसांन ॥२६॥ इनबधाईकेबीचबीचगा यवेमेंदैने ये दोहा॥ बेटीहुईभांनकैं, रुनंदकैंफरजंद ॥ गयेहैंदुषदंद आज, वृजमैंआनंद ॥१॥ हमसेगुनीवृजकेतुमवृजकेसिरताजा हम सेनहींगुनीअरुतुमसेमहाराजा ॥२॥नाचैहैंग्वालिनी, नाचैंहैंग्वाल ॥ कीरतकेकन्याभई, जसोदाकैंलाल ॥ ३ ॥ वेगावेंकौतूहल, करिना चैंखुसियाल ॥ दूधदहीहरदजरद, रंगेसबग्वाल ॥ ४॥ बैठेहैंआयकैं, वृषभांनरायबाहिर ॥ बषसैंदिलखुसीहुवे, जरजरीजवाहिर ॥५॥ नितानितहोस्यादियां, जैसीहैंआज ॥ भांनरायनंदराय, जीयोमहा राज ॥ ६ ॥ अरेलोगौआजइहांसादीसोक्याहैं ॥ गोपियांहुगोप, दांनदेतेल्याल्याहैं ॥ ७ ॥ स्यादीवृजराजजूकैंरोसनीलगाई ॥ फिरिरिरिरिरिरिरिरि, छूटतिहवाई ॥ ८ ॥ गायबखसीबेलबखसे, आंरबखसेघोड़े ॥ हुवेनिहालअमलदार, टूटेअरुपोड़े ॥ ९ ॥ कुसी सबहुए, वृषभानकैंउत्साह ॥ जद्रूजिसकेलठाजो, इनकावदपा ह ॥ १० ॥ ठाढ़ेहैंभट्टथट्ट, देखतेमिसर ॥ सुवासारोमोर मैंनाउड़ते हैंफर॥११॥ तिताल॥ आजवृषभानकेंदरबारखुसबखतियां॥लीया जनमजिहानकीसाहिबघोलियामैंइसबखतियां ॥ परेग्वानभरिभरि कैंआगैंकीहैंफरसफरूस ॥ नागरगुनीगवैयागावैंअजबजलूसजलू स ॥ हुईअजबजलूसजगमगी ॥ आईगोपियांसकलरगमगीगोया घरघरमंगलकाज ॥ बषसतजरीजवांहरआजयेहोऐसीहोयसदा ईसादियां ॥ स्यादियांदिलउदमादियां ॥ लेलेनजरफजरउठि आईबडडीसाहिबगोपजादियां ॥ अगरधूमअरुबटैंअरगजाअतर बगरतम्बोल ॥ नागरअंदरमहलमहलमेंचहलपहलकल्लोल ॥ चह

लपहलकल्लोलनिडोलनि ॥ झनकमनकपगनूपरबोलनि ॥ मनमोतीपटलेहोलेहो ॥ रावरियहधुनिसुनियतएहो ॥ ८ ॥ तिताल ॥ कीरतिकेकन्याहोतमाचीदधकादौंअतिमानौंलोपतीरकौंचल्योसमुद्रछीरको ॥ वेदधुनिगानधुनिपटहनिसानधुनिब्रह्मलोकगईपुरभेदसनासीरको ॥ मोतिनकेभारभरीमोरलिनकेहारदेतजुरीहैंभासीगोपीपारहैंनभीरको ॥ नागरियादेवनभदेषिकहैंबारबारधन्यआजअवनीमैंभवनअहीरको ॥ ६ ॥ तिताल ॥ अरीरानीतेरीचिरजीवोराधासोहनी ॥ होतहीप्रगटमहाआनंदकीडारिदईब्रजमोहनीनंदसुवनअरुकुंवरीतिहारीजोरीबढोजगजोहनी ॥ नागरीदासअसीसतडाढनिमहलमहल सुख बोहनी ॥ १७ ॥ तिताल ॥ तूंसुनिबाजतआजवधाईबाजतआजवधाईरी ॥ मोहनमंगलधुनिछाईरीवहिपूरिरहीसहनाईरी ॥ चलिबेगवधायैकीरतिकन्याजाईरी ॥ १ ॥ छिनछिनउत्सवअबसरसांनैं ॥ उठिबेगबधूजिनअरसानैं ॥ दधकादौंमाचीबरसांनैं ॥ सुषबरसरह्योरीबरानिनजातहीकाई ॥ २ ॥ मिलिचलीचपलगजगामिनी ॥ उपहारलियेअभिरामिनी ॥ आईसालिताज्योंभामिनी ॥ रससागरउमग्योगावतगीतसुहाई ॥ ३ ॥ वृषभानभवनमैंसुपकारी ॥ माच्योकोलाहलअतिभारी ॥ झूमकदैंनाचैंवृजनारी ॥ तननाहिंसह्मारैंनागरियासुपदाई ॥ ४ ॥

## अथ वृषभानजीकी बंशावली ॥

दोहा ॥ मोहनमोहनिपदकँवल, धरउरकरनिप्रसंस ॥ वरनोश्रीवृषभानको, जगतप्रचुरवरबंस ॥ १ ॥ बरीसानपरबतसुपद,

तिहठांवस्योज्ञुगांम ॥ ताहीतैंयाकोभयो, सुपवरसानानांम ॥ २ ॥ विमलमहलऊंचीअटा, रतनकिरनिमिलिजोति ॥ विविधिरंगमणि नगजटित. जगमगजगमगहोति ॥ ३ ॥ भूपतिवन्दीजननकी, भी ररहतिनितद्वार ॥ आननृपतिवंछितरहैंकरैंकृपाप्रतिहार ॥ ४ ॥ ऐ सोवरसानौंप्रगट. गावतवेदपुरान ॥ महाराजवृषभानको, सरवोप रिअस्थान ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ भयेप्रथमनृपनीपउदार ॥ तिनकेजू पप्रसिधसंसार ॥ नृपदयादितिनकेसुतजानौं ॥ अधिकप्रतापजग तजिहिंमानौं ॥ धर्मधीरतिनकेअतिधीर ॥ कुलअवतंसवंशआभीर॥ महीभाननृपतिनकेसागर ॥ सुततिनकेनवभानउजागर ॥ २ ॥ म हीभानमहिमंडलनाथ ॥ जिनकीजगसवपावनगाथ ॥ सत्यभान सुभसत्यकीसीवां ॥ दईजगतमेंजससुकीनीवां ॥ ३ ॥ श्रीगुनभान भानसमराजैं ॥ दुरिततिमरदेखततिहिंभाजैं ॥ धर्मभानधरधर्मधुरं धर ॥ जाकोजससुनिलजितपुरंदर ॥ ४ ॥ श्रीरुचिभानरुचिरजग मंडन ॥ तासमऔरनाहिंनवपंडन ॥ श्रीवरभानमहावरजानौं ॥ वं दीजनपंकजरविमानौं ॥ श्रीसुभांनरतिभांनमहामति ॥ अतिअनू पसमऔरनांहिछिति ॥ ६ ॥ दोहा ॥ चंद्रवंशअवतंसकुल, महारा जवृषभान ॥ सुरनरपगवंदितसदा, गावतवेदपुरान ॥ १ ॥ अष्ट सिद्धिनवनिद्धिजिहीं. टहलकरतनितधाम ॥ कंवलादासीलौंफिर ति, महलटहलदिनजाम ॥ २ ॥ मुक्तिरहतिद्वारैंपरी, आज्ञावसक रजोर ॥ किंकरकेकिंकरसोऊ, चितवतनाहिंदृगकोर ॥ ३ ॥ जवनैं भववडभागसुप, अतिऐश्वर्यउदार ॥ इनवातनकोनेकहू, पावतना हिनपार ॥ ४ ॥ ऐसेश्रीवृषभानकैं, रानीकीरतिनाउं ॥ हौंवाकेवड

भागको, तनकपारनहिंपाउं ॥ ५ ॥ ताकेकन्यापुत्रभए, जनप्रसिद्धहैंनाम ॥ बरणौंअबश्रीराधिका, तिनसोंमेरेकाम ॥ ६ ॥ प्राचीकीरतिकुक्षितैं, कन्याभईअनूप ॥ भानसिंधुआनंददा, चंद्रमंजरीरूप ॥ ७ ॥ कुलमंडनवृषभानकी, भूषनजगतअभूत ॥ वारौंकोटिकनृपनके, याकन्यापरपूत ॥ ८ ॥ वेगबढोआरोग्यतन, भागबढोउत्साह ॥ नंदरायकेकुंवरसौं, वेगहिहोहुबिवाह ॥ ९ ॥ होवृंदावनईश्वरी, गुनपूरनसुषरास॥ विधिनांसौंमांगतरहैं, जाचकनागरीदास॥१०॥ इति वृषभानजीकीबंशावली॥ आन कविकृत राग गौरी ॥ तिताल ॥ आजबरसानैंमंगलमाई ॥ कुंवरिललीकोजनमभयोहै घरघरबजतबधाई ॥ मोतिनचौकपुरावोगावोदेहुअसीससुहाई ॥ रसिकबिहारीकीयहजीवनिप्रगटभईसुषदाई ॥ ११ ॥ आनकविकृतरागनायकीतालचपक ॥ आजबधावोवृषभानकैंधाम ॥ मंगलकलशलियेआवतगावतब्रजकीबाम॥ कीरतिकैंकीरतिप्रगटीहैंरूपधरैंअभिराम ॥ रसिकबिहारीकीयहजोरीहोनीराधानाम॥२॥ इति राधाउत्सव ॥ अथ दान या यापदकी आलापचारीमे देने ए

दोहा ॥ हरिमूरतिचितमेंचुभी, नैंनबिपुलकृतनीर, सोसगगरियागिरतसी, जकिरहीयमुनातीर ॥१॥ घैरुहोतजान्योंनडर, उड़तनजान्योंचीर ॥ गिरतनजानीगगरिया, रहतनछानीपीर ॥२॥ हरीहरीकहिलेहुरी, बिसरादधिकोनांव॥ कृष्णमईग्वारिनभई, कौतगलाग्योगांव ॥ ३ ॥ महारूपमदिराछकी, चलतडगमगतपाय ॥ जोदेखतग्वारिनछकी, निहैंछकनिचढ़िजाय ॥४ ॥ गिरैंनग्वारिनधुकिउठैं, घायलमनरिझवार॥नागरियारनसुभठज्यौं, रहतसह्मारिस

झारि ॥ पदरागदेवगन्धार ॥ चोताल ॥ मोहनमुखलखिमोहिर
ह्योनपरतघरीहूनघरमाई ॥ बीथनिमेंफेरीकरैंहरैं २ पैंडभरैंशीशपै
दहेरीधरैंप्रेमरसछकनिछकाई ॥ संगभौंरभीरचलैंनैननमेंनीरवीर
पीरहियैंनेहविपलहरिदबाई ॥ नागरियाकृष्णरूपभईभूलीदेहदधि
नामभूलीकहैंटेरलेहुरीकन्हाई ॥ १ ॥ यापदकोअलापचारीमें देने
ए ॥ दोहा ॥ दानकेलिजोमनवसैं, ताहिनकछूसुहाय ॥ तजिवृन्दा
वनमाधुरी, अनतनकबहूंजाय ॥१॥ मेरेनिताचितमेंवसो, दंपतिदानि
बिहार ॥ मुखपरझूठीझगरई, नैननिकरतजुहार ॥ २ ॥ मोमनला
गीदुहुंनकी, दानकेलिबतरानि ॥ नैननिहांहाषानइत, उतभौंहेस
तरांनि ॥ ३ ॥ गउरघटाअरुसांवरी, उनईनीरसनेह ॥ पौरिसां
करीगिरतहां, दानरंगझरमेह ॥ ४ ॥ गोरसमांगतकरतदोउ, नैंन
सैंनसनमान ॥ नागरियाकेहियबसो, दानरंगवतरान ॥ ५ ॥ पद
रागबिलावलख्याल ॥ तिताल ॥ मागैंघनश्यामदानदई ॥ गोर
सदानसुन्योंनहिंकबहूंयहअबकैसीभई ॥ दीयोनहिंलेतहापहासि
हेरतनेककरतगई ॥ नागरीदासकौनबिधिवनिहैंयहब्रजरीतिनई१॥
तिताल ॥ नितदानमांगैगहवरगैलमैंकितजांउरी ॥ सांवरोसोधोटा
अरबीलोहैंमनमोहननांवरी ॥ अंचरगहिहसिचाहिरहैंमुषहूंजियमैं
सकुचांवरी ॥ नागरीदासडतैंउरझेरोड़तैंचवइयागावरी ॥ ३ ॥
पदरागसारंगतिताल ॥ तजिदोजैंगोहलसोहनमनसोहनगुमांनी ॥
परीछुरीयहटेवनिडरआतिअंचरछुवतनयेदधिदानी ॥ झूटेंझगरतड
गरतजतनाहिंअहाकहालंगराईठानी ॥ नागरकंवरतिहारेमनकीमैं
अबसवजानीजूजानी ॥ १ ॥ तिताल ॥ जोतोअवइनाहिंछुवोगेद

धिदानी ॥ तोएगोपकुंवरिहमहूतैंनांहींरहैगीसतरांनी ॥ ज्यौंतुमनं
दनंदनत्यौंएऊअपनेकुलअभिमानी ॥ जाहुचलेनागरगुनआगरसू
धेंगैलगुमांनी॥२॥ राग ॥ इकताल ॥ गईहूतीबेचनगोरसकें ॥ रोकी
आंनिदानमिसुमोहनवाकोचितवनिमेरेहियमांझकसकें ॥ अंचराग
हिफिरबहियांगहीरीकरमेरोमसक्योसुअबलौंचसकें ॥ नागरीदास
कठिनमोहिंबीततउहितोमनलीन्हींहांसिहांसिकें ॥ १ ॥ पदरागगो
रीतिताल ॥ दांनदैरीब्रषभानकुंवारि ॥ छाड़िदेहुअबचारविचार
करतझगरईहोतअवार ॥ हाहागोरसप्यारीकरतझगरईहोतअवार ॥
हाहागोरसप्यारीपाय ॥ क्यौंझुकिझिझकतहैंअनषाय ॥ नागरिनैं
ननिकरसनमांन ॥ हसिबसकोरेलयेश्यामसुजांन ॥ ४ ॥ तिताल॥
लालनैंकमारगदीजैंएतीनकीजैंबराजोरी ॥ ठाढ़ेझगरतसांझभईअ
बहारिपसारतझोरी ॥ यहरतदेहनठहरतासिरपरगरईलगतकमोरी ॥
टरतनहींहोडरतनहींहोकरतनहींहोथोरी ॥ जिनकौंतुमयहअंचराग
हतहोसोहैकुंवरिकिसोरी ॥ हीयेऔरकछुलालचललकैंपलकैंकरत
निहोरी ॥ प्यारेकुंवरछबीलेनागरपाईचितकीचोरी ॥ ५ ॥ तिता
ल ॥ छांड़िछांड़िदेरेअंचलचंचलछैला ॥ इतीकरतलंगराईलला
क्यौंरोकिमहीकोगैला ॥ जांननदेतदांनमांगतहठिठाढ़ोहुवैआडोअ
रैला ॥ सीषेकहांअनोषेनागरएजोबनकेफैला ॥ ६ ॥ रागतिताल॥
लीनौंहठहेरीमेरोंकान्हमहीरी ॥ आवतदेषिबैठिमारगमैंअचानक
आंनिगहीरी ॥ दीनौंनहींमोलकोनींबरजोरीकहाकरौंसबहीसहीरी॥
नागरीदासभईसुभहैअबबातनजातकहीरी ॥ ७ ॥ इतिदानं ॥

## अथ सांझीउत्सव ॥

यापदकीचलापचारी में दैने ये ॥ दोहा ॥ मिलतनवावतनव

लता, अंचरछुटतदुकूल॥इतउतवाढीदुहुंनमन, फूलनिवीनतफूल१॥ दुहुंमिलिफूलनवीनही, जमुनाकूलनिसांझ॥ रंगरलीअतिहुवै, कुंजगलिनकैंमांझ॥२॥ वनफूल्योफूल्योजुमन, फूलवेसअभिराम॥ सबैंकरीफूलनिसफल, मिलिकैंगोरीश्याम॥३॥ नीलपीतपटछोरछवि, उरझैद्रुमकीभीर॥ मुरझुरझांवनदुहुनकी, मेरेउरझीवीर॥ ॥४॥ फूलनिमिसतियसौंमिलत, सपीरूपरचिछैल॥ नागरिया केहियबसो, फूलरंगीलीसैल॥५॥ राग गौरी तिताल॥ जमुनाकैंकूलकूललतारहीझूलरी॥ तहांठैसपीहैंनीलेपियरेदुकूलरी॥ गोधूलकवेरहूतैंहुवैंगईअवेरमैंदेपतठगीसीरहीदोऊतिहिंवेरमें॥ वीनतहैंफूलफूलफलहिलहतहैंझमकिझुकावैंझूमिडारनिगहतहैं॥ सांवरीओगोरीछविसोहैंअलवेलीहैंसबहींतैंन्यारीन्यारीडोलतअकेलीहैं॥ वेसरिअलकमालअरुझतपातरीताकोसुरझावनिमैंअरझीहीजातरी॥ मेरीसौंकपटतजिखोलतमुषमौंनहैं॥ नागरियामोंसौंकहिसपीवहिकौंनहैं॥१॥ श्रीराग तिताल॥ रंगसरसानैंबरसानैंवनवागश्यामापेलैंसांझीसांझवहोसाथनिसिंगारिकैं॥ नूपुरनिनादपूरिरह्योहैद्रुमनिमांझजहांतहांलेतलडकीलीकुसमउतारिकैं॥ सांवरीनवेलीवालनीलमनिवेलीसीअकेलीफिरैंवाहांजोरीसंगसुकुवारिकैं॥ डारहिनवावैंमिलिवीनैंफूलपावैंफलनागरियावारैंमनकौतिकहारिकैं॥२॥ श्रीराग॥ तिताल॥ सौंहैंमुखकमलपैंभौंहैंलटभ्रंगपांतिनैंनअलसोहैंकलगाकीजनुपपियां॥ नासिकासरूसीक्यारीअधरदुपेरियाकीमुसकनिमंदमकरंदसीमेलपियां॥ प्रीतसांझीकोजकीनीकामकोछीछविआछीऔरसाछीकोहैंताकीसाछीसवसषियां॥ फूलीवयसंधिसां

झराधारूपबागमांझडोलैंआजफूलभरीनागरकीअंषियां ॥ ३॥ राग
गौरी तिताल ॥ दुहुंनकीअंषियांअषियानिमाझ ॥ अषियांहीसां
झीषेलतहैंअंषियनिफूलीसांझरूपबगीचानिफिरतफूलभरीगरवांहि
यांदैंअंषियां॥ गउरश्यामअंषियनकीउरझनिउरझीनागरसषियां४
॥ तिताल ॥ रूपलालचीलालहुवैरूपमलनियां ॥ छबिबिछियनि
छनकायकैंचलीहैंछलनियां॥तिहिबिरियांडरियांलैंभरियाहारकी ॥
संगअलिंदधुनिमंदमंदगुंजारकी॥पहुंचीजायसुभायसुभायकहतमें॥
मीनकेतरसपेतसुबनसंकेतमैं ॥ उततैंगावतआवतदेषीभावंती ॥ ब्र
जयुवतिनजूथनिंमिलिछबिसरसांवती ॥ तरुतरुअंतरसवैंरगमगीभा
मिनी॥मनुबादरबादरप्रतिदमकतदामिनी ॥ परमप्रवीननवीनसुफू
लनवीनही ॥ द्रुमबंशीउरझीजनुकंचनमीनही ॥ रहिगईकुंवरिइ
कौंसीश्रीवृषभानकी ॥ जगमगरहीमुखजोतिदबीद्युतिआनकी ॥
प्रेमजंजालनिमालनिलषिसुकुवारकौं ॥ निपरैंठाढीआनिलियेउप
हारकौं ॥ लीमालिनिबैनमैनअनकूलियैं ॥ बनदेवीकैंधामचढैयेफू
लयैं ॥ लैंगईबनअंघियारगउरकौसांवरी ॥ बैठिअकेलेनैंननिपरसे
पांवरी ॥ पहराईमालामालिनितिहिकालमैं ॥ उयरचाईसबबातकर
निचलचालमैं ॥ कुंवरिसकुचिमुसकाइदसनअंगुरीधरी ॥ छलीछ
बीलैंछैलरसिकअंकनिभरी ॥ नागरियादोउमीतअधरआसवापियैं॥
गउरश्यामतनउरझिनिउरझीमोहियैं ॥ ५ ॥ ॥ तिताल ॥ कुंवरि
अलबेलीरीअतिसुन्दरसुकुवारि ॥ श्रीराधेकेरूपपरवारौंसुरानिनर
निकीनारि ॥ वारौंसुरनरनारिनिराषिमुषतनकपलकनहिंलागैं ॥ ब
दनविमलराकेसचंद्रिकाजगमगायरहीआगैं ॥ शीसफूलश्रीमंतअल

कभुवबंकछबीलेंनैंननथकीदुरनिअरुनअधरनपरबरनतवैनैंनवैन ॥ चिबुकचारुझलककपोलनिकुंडलरतनसुरंग ॥ उरऊपरपदकनीकी पांतिकटिछीनछरहरैंअंग ॥ १ ॥ मनहूलताअनुरागकीपूजतसां झीसांझ ॥ त्योंउडगनमैंचंद्रमात्योंस्यामाजूसखियनिमांझ ॥ स्यामा जूसपियनमांझछबिभरीआरतीआयउतारैं ॥ सोभारहिसबदेखिति हिसमैंअपनौंमनधनवारैं ॥ बजिउठैंबीनमृदंगमहुवरगीतमहरगायैं॥ अर्चितदेवीगहिगांडिमाच्योतियनपहुपबरपायैं॥ यहसोभादुरिदेखत हेपियधरनिधुकतिहिंबार ॥ नागरिसपीहाथदैकापियांरापेस्यामस ह्मारि ॥ २ ॥ रागपूर्वी ॥ इकताल ॥ रहेदोउवदननिहारिनिहारि फूलनबीनतस्यामसपीउतइतश्यामासुकुवारि ॥ लताकरनिमैंरहिग इतउतसकैंकौनानिरवारि॥ नागरियामिलिनैंनदुहुनिकेवडेटगनिठग वारि॥३॥ आंनकबिकृत इकताल ॥ पेलैंसांझीसांझप्यारी॥ गोपकुं वारिसाथपिलियांसाथेचावसौंचतुरसिंगारी ॥ फूलभरीफिरैंफूलले एज्योंफूलरहीफुलवारी ॥ रह्यांठग्यालषिरूपलालचीप्रीतमरासिक विहारी ॥ ८ ॥ रागकामोद इकताल ॥ अरीआजसांझीमैंजमुनां कैंकूलफूलतफलपाये ॥ हेरतहेरतसघनद्रुमनमैंचितवतहीताहि चायनचिताचिकनाये ॥ महामुदितवृषभानभवनकागावतचलीव धाये ॥ नागरियासांझीकेपूजतइहिंवृंदावनभयेमनोरथभाये ॥ ६ ॥ तिताल ॥ कोऊगोपकिसोरीसांझीपूजनआवैं ॥ सांवरेअंगकवलद लनैंननिसुंदरताऊफनावैं ॥ भानभवनराधेजूकेसंगमिलिमिलिगी तनिगावैं ॥ कारनकौनकुंवरिनागरिदिसिदेपिदेपिमुसक्यावैं ॥ ॥ १० ॥ राग गौरी तिताल ॥ फूलनिबीननहौंगईजहांजमुना

कूलद्रुमनिकीभीर ॥ अरझिगयोअरनीकीडरियांतिहिंछिनमेरोअंचरबीर ॥ तबकोउनिकसिअचांनकआयोमालतीसघनलतानिरवारि ॥ बिनहीकहेमेरोपटसरुझावतइकटकमोदिसरह्योनिहारि ॥ होंसकुचनिझुकिदबिजातइतउतबहिनैंननिहाहापात ॥ मनउरझायबसनसुरझायेकहाकहौंऔरलाजकीबात ॥ नामनजान्योश्यामअंगहैंपियरैंरंगवाकोहुतोइकूल ॥ अबवहीबनलैंचलिनागरिसषीफिरिसांझीबीननिकौंफूल ॥ ७ ॥ तिताल ॥ आजूरंगहैंसांझीमांझि ॥ भईपरमसलौंनीसांझि ॥ दोहा ॥ हरीभूमिसौंझूमिकैं, मिलेकुसमझुकिझौंर ॥ मिल्योजुपवनसुगंधसौं, मिलेलताअरुभौंर॥ ॥ १ ॥ पीतजुहीकुबलैंकुसम, मिलेषेलिझिलिझेलि ॥ मिलेबिंबफलफलभलैं, अरूतमालसौंबेलि ॥ २ ॥ कदलीमिलिजुअंबसौं, अरुकदंबकचनार ॥ मिलामिलीनितहीरहो, इहिवनकरतबिहार॥ ॥ ३ ॥ नागरिमनभायेभये, चलीभवनमिलिबाल ॥ पायोफूलनबीनतैं, रतनअमोलकलाल ॥ ४ ॥ तिताल ॥ आइहैंमालनियांकोऊफूललियैंरंगरंग ॥ नषसिषलौंअतिसोंहनीमानौंमोहनीसांवरैंअंगचलितललितगतिहंसकीतनओढैंझीनीचीर ॥ रूपअचंभोव्हैरह्योधाकेंचहुंदिसमाचीभीर ॥ फूलफूलसौंभेटिकियेजहांसांझीरचैंसुकुंवारि ॥ ताहिलाडिलीरीझिकैंदईमोतिनमालउतारि ॥ बालामालपरसिकैंभयेकंपरोमांचितगात ॥ बिस्मयव्हैंसषियांरहींलषिकनअंषियांमुसक्यात ॥ क्यौंकंपतबूझयोललीउहीकह्योजोरबिबिपांन ॥ तुममहींद्रवृषभांनकुवरिहौंदीनप्रजाभयमांन ॥ ज्यौंज्यौंकरप्यारीगहैंकहैंतूमतिमानैभीत ॥ सांझीचीतनचीतव्हैंसिसकैंन

सांझीचीत ॥ स्वेदसिथिलसियरीभईबहिरहेथाहिरथहराय ॥ छुवत छबीलीकीछांहकौंवाकोतनापवल्योसोजाय ॥ रीझिव्यथाप्रगटन लगीजबस्यामाश्यामनिहारि ॥ निजमंदरलैंआइकैंभरीरंगअंक वारि ॥ नागरियारसरंगरगमगेदोऊकुसमसेझकैंमांझ ॥ सांझीपू जतपियमिलेपरमसलौंनींसांझ ॥ इतिसांझीउत्सवसमासम् ॥

## अथ शरद उत्सव ॥

समयबेणुगीत॥ पद राग विलावल तथा धनाश्री तथा सोरट ता ल फिरती ॥ प्रथम चपक ॥ पाछे इकताल ॥ सुनिरीसपीसुप दाई ॥ देषिअमलसरदऋतुआई ॥ आईसरदगतिपंकभुवभइस्व च्छअंवुअकाशहैं ॥ कुंजकाननअतिप्रफुल्लितछईकुसुमसुवासहैं॥ ठौरठौरसरोवरीविचअमलकमलनिपुंजरी ॥ तहांभ्रमतअलिंदमातै करतआतुरगुंजरी ॥ सुभगवृन्दावनअवनिवहैंत्रिविधिरोचकपवन हैं॥ दासनागरदेखितिहिकरतमोहनगवनहैं ॥ १ ॥ उरमांडितवन माला ॥ डोलैंगायनिसंगगुपाला ॥ संगगायनिकैंगुपालाभेपनव नटवराकियें ॥ मोरपच्छप्रमूनपुंजप्रवालजूराशिरादियें ॥ कंजकरन निकरानिकातनधातगुंजावलिलसैं ॥ दसनिकिरनानिजारकोउरहा रफैलतजबहसें॥ मदनिघूर्णितनैंनसोहैंवंकभौंहैंमनहरैं ॥ दासनागर स्यामवनलखिमुरलिकाअधरनिधरैं ॥ २ ॥ पशुपंछीचहुंदिशिरी ॥ सुनिधुनिगांनदेहसुधिविसरी ॥ बिसरीजुसुधिपगमृगचकितचितसु स्रवनकहूंकनत्रिनछियें ॥ बैंनबरपतनीरनैननिनाहिंबछरापयपियें ॥ थक्योमंदसमीरसुनिद्रुमपातहुनपल्लवहलैं ॥ थिथकिजमुनाजलर

ह्योरथभांननहिंआगेचलैं ॥ नभविमाननिगिरतसीतियपतिउछं गानिवारदी ॥ दासनागरसुनतधुनिसुरबधूदेहबिसारदी ॥ ३ ॥ री तैंकौनपुण्यतपकीन्हौं ॥ पियकोअधरसुधारसलीनौं ॥ लीनौंअध ररससुधाव्रनमेंअरीबैरनबांसुरी ॥ हमभवनतलफतपरीपरीकियो धीरजनासुरी ॥ उडतअंचरउरजउघरतवैनधुनिसुधिहरिलई ॥ क वरिछुटिभइसिथलनींवीमदनपीडतानिरदई ॥ कहसह्यारिसह्यारि कबहूकबहुआवतसांवरो ॥ दासनागरध्यानतनमयभरतअंकनि तांवरो ॥ ४ ॥

## अथ सरद रास बांसुरी ॥ राग केदारो ॥

सुनिधुनिवैंनचलीहैंबृजजुवतिनकीभीर ॥ ज्योंदुंदभिसुनिसन मुखनिखसततसमरसुभटरनधीर ॥ प्रेमपेतवृन्दावनमगरह्योछयोघोष मंजीर ॥ नागरिनागरामिलतहीमैंचलेकामकटाछनितीर ॥ तालच रचरी ॥ चतुरअहदूतिकाबांसुरीस्यामकी ॥ नवलबृजबधुनिकेश्रा यकाननलगीदूरिकरिलाजकुलकानसबबामकी ॥ भवनिप्रतिभव नितैंलैचलीविपनकौंभुरकिदइडारिकैंमंत्रपढ़िकामकी ॥ करिकैंति यअतनमइमिलइनागरिनईदइनसुधिरहनिअपअपनैंसुखधामकी २

## सरदरासोत्सव ॥

या पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ निसिसदोत्फूलिमाल्लि काककुभकिरनराकेस ॥ गहीबेणुहरिनिरषिबनरासरमणआवेस ॥ ॥ १ ॥ पूरनससिनिसिसरदकीचलबनमलयसमीर ॥ होतवेणुरव रासहिततरुनतनइयातीर ॥ २ ॥ बंसीधुनिदूतीपठैंबोललईबृजबा

ल ॥ समरबिजैंआरंभरसरासकरननन्दलाल ॥ ३ ॥ परमप्रेमआ
रूढ़रथविषमपन्थधुनिबैंन ॥ रासकेलिसंग्रामहितचढ़ीमदनगढ़लै
न ॥ ४ ॥ बिमलजुन्हैयाजगमगीगईत्रैनधुनिछाय ॥ प्रेमनदीतिय
रगमगीबृन्दाकाननआय ॥ ५ ॥ सुनतवैंनवनतियचलीमुनिमनभ
येअधीर ॥ नागरलपिरसरासनभभईबिमाननभीर ॥ ६ ॥ पदरा
गबिहागरोइकताल ॥ जुरेकरनिकरकमलतियनके ॥ मंडलहोतनि
र्त्तचलअचलचंचलकुंडलहाराहियनके ॥ वायवंध्योकलगांनवांसुरी
बिबससुरवधूअंकपियनके ॥ अंगअनंगनियरिरंभनिबहोहावभाव
भौंहैंभ्रंपियनके ॥ प्रियासंगलैंदुरिगयेहरिवनहेरतसघनवृंदसापिय
नके ॥नागरियाछविसागरविनमनौंतलफतजूथमैंनमाछियनके ॥१॥
इकताल ॥ हरिसंगहुतीसोअकेलीवहिठाढ़ी ॥ दांमिनिसीदेहकोप्र
काशआसपासदेषिरहीद्रुमबेलिनिमेंचित्रकीसीकाढ़ी ॥ कासिका
सिपियपियकहिटेरतमहाविरहकीवेदनबाढ़ी ॥ नागरीदासरासरस
बरषायहायाकितिदुरेवनस्यांमदुपितहैंगाढ़ी ॥ २ ॥ इकताल ॥ वे
ठेजायपुलिनमेंरसिकबिहारी ॥ वीचआपवृजचंदमनोहरउडमंडल
वृजनारी ॥ नवनिचोलअपअपनेंसबांमिलिलायबिछायदये ॥ तन
थिरदांमिनसेनिकसेपटवदराउतरगये ॥ बंकभौंहनैंनांरसमातेछुटे
अलकैंअलबेली ॥ प्रेमविवसबूझतपियकौंतियहंसिहंसिप्रेमपहेली॥
इकभजतेकोभजतएकाबिनभजतभजई ॥ कहोकुंवरतेकौनआहिजे
इनदोउनकौंतजई ॥ समुझिअर्थमुसकायनैंनभरिकहतजोरकरप्या
रो ॥ नागरियाहितसौंनहिउरनहौंनितरिनीतिहारो ॥ ३ ॥ तालच
पकतथातिताल ॥ रासरच्योनंदलाला ॥ लीनैंसंगसकलब्रजबाला॥

अद्भुतमंडलकीनौं ॥ अतिकलगांनसरससुरलीनौं ॥ लीनौंसरस सुररागरंजितवीचिमिलिमुरलीकढ़ी ॥ हौंनलाग्योनृत्यबहुविधिनू पुरनिधुंनिनभचढ़ी ॥ डुलतकुंडलषुलतबैंनीझुलतमोतिनमाला ॥ धरतपगडगमगाबिवसरससरासरच्योनंदलाला ॥ चितहावभावनिलूटैं ॥ अभिनयदृगभौंहनिसरछूटैं ॥ ललितग्रीवभुजमेलत ॥ कबहुं कअंकमालभरिझेलत ॥ झेलतजुभरिभरिअंकनिसंकितमगनप्रेमा नंदमैं ॥ चारुचुंबनअरुउगाराहिधरतातियमुषचंदमैं ॥ उट्टतअंचल प्रगटिकुचवरग्रंथकसपटछूटैं ॥ बढ्योरंगसुअंगअंगनिहावभावनिलूटैं ॥ पगनिगतिकउतकमचैं ॥ कटिमुरिमुरिमध्यलचैंसिथलकिंक नीसोहैं ॥ मुकटलटकमनमोहैं ॥ मोहैंयमुननटमुकटलटकनिमट कगतिपगधरनकी ॥ भंवरभरहरचहूंदिसछबिपीतपटफरहरनकी ॥ गिरयोलषिमनमथमुरछलैंभजीरतिमुषमधुअचैं ॥ नचतमनमोहन तृभंगीपगनिगतिकोतुकमचैं ॥ वृंदावनसोभावढ्यो ॥ तापरव्योम विमानननिसौंमढ्यो ॥ दुंदभिदेवबजावैं ॥ फूलनिअंजुलीबहोवरषा वैं ॥ बरषैंजुफूलनिअंजुलीबहोअमरगनकौतुकपगे ॥ बिवसअंक निब्रजवधूहियनिरषिमनमथसरलगे ॥ व्हैंगयेचराथिरसुथिरचरसरद पूरनससिचढ्यो॥दासनागररासओसरबृन्दाबनसौभाबढ्यो ॥४॥ इकताल ॥ रह्योरंगषेलतरासरसाला ॥ तुटिगयेहारछूटिगयेअंचर श्रमडगमगनमराला ॥ जुवतिजुथजुतधसेजमुनाबिचमदनमोहनति हिंकाल॥क्रीड़तजनुकरनीसंगलीनैंमत्तद्विरिदनंदलाला॥गोरेअंगम हाछबिपावतभीजेवाराबिसाला ॥ मानौंसीतलचंदनपूतरीनिसौंलगी लपटिअहिमाला ॥ छविसौंछींटानिषेलमचावतप्रेमविवसब्रजबाला॥

जनुउत्सवकालिंदीग्रहउछरतमुक्तानिकेजाला॥ बाहुसुंडअवगाहिनी रवलबीरचलेगजचाला ॥ नागरीदासब्रह्मरात्रीरमिआयेगेहगुपाला ॥५॥ रागकेदारो तालयात्रा ॥ आजसपीरसिकासिरमौरनाचतभलैं॥ जुवतिजनमंडलाकारवृंदाविपिनवीचघनस्यामप्रियदामिनी झलमलैं॥वीनरसलीनबजिरुणितकलकिंकनीमैंनकेमंत्रसीजंत्रधुनि धुनिरलैं ॥ भ्रमततनचपलमिलिपरतनहिंदृष्टिजबदरसहितपरसम ननैंनदोउकलमलैं ॥ मुकटसिरझलकअरुरलकहारावलीझलतावि बअलकलपिपरतनाहिनकलैं ॥ नागरीदासभुजअंसधारिदोउचल तकोटिकंदर्पतबचरनितरदलमलैं ॥ ६ ॥ रागइमनइकताल ॥ वृंदावनसरदरैंनराकाअभिराम ॥ रचीहैरुचिररासिककेलिराधासंग भाम ॥ वैंनबीनवलयमिलेकिंकिनीमृदंग ॥ नूपुराधिगानघोपछायोहैसुपंग ॥ अंसअंसबाहुबंध्योमंडलाअपंड ॥ गोपिनाबिचमध्य बिचगोपालधरैंसिपिसिपंड ॥ नृत्यहोतअंचलचललसतपहुपरैंन ॥ ज्यौंधुजासमूहफरहरातमैंनसैंन ॥ मनहुंपवनप्रेरकमिलिगउरश्याम संग ॥ मेवचक्रचंचलाविलासरासरंग ॥ बासबस अधीरसंगसंग भौंरभीरझुलतहारपुलतवारनहिसम्हारचीर ॥ गिरतकुसमकवरीनितें बिवसरसावेस ॥ लटपटायलगतकंठपुलकतनसुदेश ॥ नीवीकुच परसपानचुंवनउदगार ॥ हावभावलहरवढ्योसिंधुरसअपार ॥ सुर छपरेउमदनवाजिदुंदुभीअकाश॥ पहोपवृष्टहोनलगीजहांबिलासरास॥ विथकितलपिरहारैंनहोतहैंनभोर ॥ नागरनटनिरपिभयोचन्द्रमाचकोर ॥ ७ ॥

# अथ निकुंजरासोत्सव ॥

## या पदकी अलापचारीमें देने ये ॥

दोहा ॥ कवहुकप्रियमंडलकढत, अतिगतिवढतसुधंग ॥ हरिकेमनलोचनफिरत, उरझेपायनसंग ॥ १ ॥ लाललईउरलायलपि, रीझेगतिसरसांन ॥ मंडलमैंसुरझैंनहीं, अंकमालउरझांन ॥२॥ उतउरझीकुण्डलअलक, इतअैसरवनमाल ॥ गउरस्यामउरझेदोऊ, मंडलरासरसाल ॥ ३॥ गरबहियांगतलेतमिलि, श्रमबशसिथिलितपाय॥ डारेमनलेसबनिका,डगमगडगनिडुलाय ॥४ ॥ लेतिवलैयारीझिदोऊ, दोउपूछतश्रमवारि ॥ नचतसर्नांअतिरंगसों, बनींमदनमनुहारि ॥ ५ ॥ उतैंझुक्यौंहैंनवमुकुट, इतैंचन्द्रिकाचार ॥ भयेरासरसमगनमन, सरकेसकलसिंगार॥ ६ ॥ खूटिखूटिअंचरगये, छूटिछूटिगयेवार ॥ श्रमतरासरसरंगमैं, टूटिटूटिगयेहार ॥ ७ ॥ नागरियाकहांलगिकहैं, कबिमतमंदप्रकास ॥ तिनकेभौंहाबिलासमैं, कोरिकोरिव्हैरास ॥ ८ ॥ पद राग ईमन ॥ तिताल ॥ थेईतथेईथेईथेईथेईथेईथेईथेई ॥ उघटतरासरसिकमनमोहनरंगभरीनिर्ततहैंप्यारी ॥ मुरजमृदंगटकोरमिलावतगावतसखीसुघरदैंतारी ॥ ललितअंगभुवभंगचितैंपियविवसभयेबोलतबलिहारी ॥ जगमगरहीरासमंडलमैंनागरियामुपचंदउज्यारी ॥ १ ॥ राग छाया नट तिताल॥ वोलतथेईतथेईथेईरंगभरेनिर्ततहैंपियप्यारी ॥ बजवतबीनप्रवीनलीनधुनिगुनिसलितालिलितारी ॥ अरझीअलकछविसौंबेसरिमैंअरझीपीतपटसारी ॥ नागरिनागररीझिपरसपरकहतवारवारेउहौंवारी॥२

॥ राग अडाणों ॥ चौताल ॥ रासमंडलमधिछबिछकेस्यामास्याम लैलैंगतिलपटपलटिजातभरेरंग ॥ गानधुनिनूपुररह्योहैरंगपूरितैसों मधुरमधुरबीनाबाजतमृदंग ॥ चंद्रकासिथलइतमुकुटझुकौंहौंउतव्है गयेविवसरससुधिनरहीहैंअंग ॥ नागरीदासगतिनैननिकीभईपंग मुरछिगिरयोहैरतिसहितअनंग ॥ १ ॥ तिताल ॥ दोनैंगरवाहियांग तिलेतडोलैंमंडलमैंबोलैंततथेईथेईमुषरूपललकैं ॥ व्हैंगयेविवसमन श्रमितभयेरीतनषिसैंफलसीसतैंसिथिलभईअलकैं ॥ इतकिंकिनीछू टीलोलहारकुंडलकपोलझांईझलकैं ॥ नागरीदासराधामोहननचत देषिभूलीसखीगांनतांनलागतनपलकैं ॥ २ ॥ चौताल ॥ देखिस्या मा जूश्रमित भईरासमैं ॥ वहोनिर्तभेदपेदसरकेसिंगारहारासिथलकुस मकेसपासमैं ॥रसिकरवननिजकरतैंपवनकरैंहरैंहरैंल्यायेनिवासमैं॥ नागरियासोयेकुंजकंवलनिकोसैंनीपरवैंनीविथुरनीहैंबिलासमैं ॥३॥ तिताल ॥ आजुसषीप्यारीजूस्यांमाहिंसिषावहीं ॥ लैलैंगतिभेदनिब नावहीं ॥ चतुरसिरोमानिजांनिअजांनभयेडुलतसुलपसरसावहीं ॥ तालिमकौंदेतस्यांमानाचतमैंरंगवढयोसपीसुपानिरापिसिहावहीं॥ ना गरिकटाछनिकीलगतचमोठीचोटत्योंत्योंपियगतिहिंभुलावहीं ॥४॥ राग केदारो ॥ ताल चर्चरी ॥ सरससुघरनवकिशोरगतिसुधंगनां चैं ॥ नूपरादिमिलमृदंगवीनलीनश्रनुपमधुनिसहचारिकलगांनरंग चहचारिव्हैंमांचैं ॥ कहीनपरतभुवविधांननवघनतनलहलहांनबिलु लितवनमालभृंगलपटतिगतिश्रावैं ॥ अभिनयजुतउरपातिरपधरन चपलचारुमंजुलझुकिमुकटसीसगतिमतिबिसरावैं॥ दांवनविचिपवन परसिफैंलिफैंलिजातफिरतगातितरंगसागरबढ़िरंगमांजबोरें ॥ नाग

रियानिरषिबनश्रमझलकनझलमलातप्रेमविबसबालनीलअंचरमुख ढोरैं ॥ १ ॥ तालचर्चरी ॥ रसिकरसरासनवरंगनिर्तततलला ॥ संग गउरंगगरबांहछबिदेतपृयसजलघनमांझमानौंचमाकिरहीचंचला ॥ वलयकंकनकुणितछीनकटिकिंकिनीपगनिछिगुनीनिकेछोरछनक तछला ॥ नागरीदासदोउनितश्रमडगमगेरगमगेबारषुलिउरानिच लिअंचला ॥२॥ इकताल ॥ रासरंगवरसुधंगनिर्तितहैंप्यारी ॥ तत्त रंगधुमकटितकथेईतथेईथेईथेईथेईथेईउघटतिजुवतीसमूहबाजितस मतारी ॥ बीनपरनआवजामिलिगावतललिताप्रबीनछीनसुकटिभं गसीव्हैंभंगभुवअन्यारी ॥ नागरिछबिलषिरसालइकटगापियदृगबि सालबरसतमनिमाललालबोलतबलिहारी ॥ ३ ॥ राग सोरठ ताल चर्चरी ॥ बोलतत्थेइत्थेईरच्योरसरासससरदरैंन ॥ निरषितभयोचं दचकितथकितरह्योगैंन ॥ गांनतांनमानपरनिमिलिमृदंगबीन ॥ उ रपतिरपअलगलागलचकतकटिछीन ॥ नचतरवनीरवनमदनमथत अंगअंग ॥ चलिकटाछिभृकुटिभंगरंगरंगरंग ॥ प्रेममगनभरतअं कलंकलगिनिसंक ॥ छाडतनाहिंलालहिंतिहिकालहिनिधिरंक ॥ उ रबिहारतुटतहारछुटतबारबास॥ बिबसरसबिलासदासनागरसुपरास ॥ १ ॥ तिताल ॥ दोउमिलिमंडलनिर्ततडोलैं ॥ इकदिसकुंडललो लएकदिसलगेकपोलकपोलैं ॥ गरबाहियांअरझेअरझेपियरेनीलनि चोलैं ॥ नागरियागतिमैंगतिबदलैंबदलैंबदनतमोलैं ॥ २ ॥ रागकाफी तिताल ॥ होप्यारीजूमोहिदीजैयहदीजैं ॥ हाहावारीगा यगायकैंगतिलीजैंअबतोगतिलीजैं ॥ दयोबिछायपीयपीतांबरसुल पकीजैंयापैंसुलपकीजैं ॥ बढयोनितनागररसभीजततिसभीजैंत्यौं

त्यौंनिसभीजैं ॥ १ ॥ तालचचरी ॥ करतसुपसंगनवरंगललनाललन ॥ स्यामजुगभुजानिबिचगउरतनभांमिनीसजलघनमांझमनौं दांमिनींझलमलन ॥ छुटतबरबारअरुतुटतहारावलीपोलिंहीबिमल बिधुवदनघूंघटवलन ॥ नैंनहसिहसिमिलतरसछकीदृष्टसौंतैंसियेछबिभरीवंकभ्रूकुटीचलन ॥ महकिरहीमालतीकुंजकुसमितमहलटहललितादितहांभूलिलागतपलन ॥ नागरीदाससुपरासलीलाललितकोरकोरकनिमदमदनदलदलन ॥ २ ॥ तालचर्चरी ॥ कुंजरसकेलिकवनीयदंपतिकरत ॥ परस्परहितबिबसरूपमादिकछकेदूरिकरबसनउरदृढअंकनिभरत ॥ पियतमधुअधरसुपासिंधुमैंमगनमननिकटतिहिंसमैंचपच्यारखंजनलरतकवहुंभुवभंगजुतसीकरतरंगसौं अंगप्रतिअंगपियपरसदैंमनहरत॥ बिथुरेबिचकचनमुपगउरानिकसतश्रमितचंदतैंसघनमनुंस्यांमबादरटरत ॥ सुरतसुपस्वेदतैंमहकिकेसरिचलीबासलहिनागरीदासधीरनधरत ॥ ३ ॥ इकताल ॥ नंदनंदनचंद्रमांवल्लवकुलकुमदवृंद ॥ जलदसघनकुंजचारुश्रवतसुधावेणुगांनबिपुनबिपुनप्रतप्रकाशअनुपमछबिदुतिअमंद ॥ अद्भुतस्वयंरूपदिव्यबिमलजोहनप्रबतरासकेलिकलाकोबिदआनंदकंद ॥ नागरब्रजपतिकुमारपस्यतमुषसंबरारिविस्मयजुतनम्रग्रीवचरनकमल बंदबंद ॥ ४ ॥ तिताल ॥ अ॑ल्यारीराधागतिलेतअलबेलीयसुजांन ॥ रंगभरीयौंहैंमनमोहैंचितवनिअलबेलीअलबेलीमुसक्यांन ॥ बदनचंदआनंदसुललकैंअलकैंअलबेलीअलबेलीवतरांन ॥ कमलनैंननागरपियमोहेरासमैंअलबेलीअलबेलीलेलेतांन ॥ ४ ॥ राग ॥ क्रीडतरासिकरासरससरंगे ॥ प्रफुलितबिपुनबहतमलयानिलउदयंतिस

सिसबंगे ॥ सरदबिमलराकानिससुषक्तकलरववेणुतृभंगे ॥ रासा रंभब्यौमधुनिपूरतमहुवरमुरजमृदंगे ॥ गउरस्यांमभुजग्रीवराचिपदसं गीतसुधंगे ॥ अंदोलितअलकावलिकुंडलगुनिमुक्तावलिभंगे ॥ रसा नंदआवेसबिवसपटनीवीसिथलसुअंगे ॥ रूढविमानअमरप्रेमातुर मुर्छितअवनिअनंगे ॥ श्रीबृन्दावनराधामोहनकेलिकलपवहोसंगे ॥ नागरियागोलोकअषंडितकथतकथासुकभृंगे ॥ ५ ॥ राग केदारो॥ रासमंडलमधिछकेस्यांमास्यांमलैलैगतिलपटिलपटिजातभरेरंग ॥ गांनधुनिनूपुररह्योहैरंगपूरितैसेमधुरमधुरबीनांबाजतमृदंगचंद्रिका सिथलइतमुकटझुकौहैउतव्हैगयेबिबसरससुधिनरहीहैअंग ॥ नाग रीदासगतिनैंनानिकीभईपंगमुरछिगिरयोहैरतिसहितअनंग ॥ ६ ॥ इकताल ॥ अरीरासमैंरंगभरीनचतसरसस्यामाप्यारी ॥ चितवतच ऋतरहिगईचपलामोंडतहाथबिचारी ॥ गांनसुनतषगमृगमनमोहेल ज्जितभईकोकिलानारी ॥ नागरीदासचकोरसांवरोदेषतइकटकवद नचंदउजियारी ॥७॥ तिताल ॥ सरदनिसरासासिन्धुबढ्यौअनूप मउपजततांनतरंग ॥ सुघटसंगीतसुधंगसुलफगतिहोतदुहुंनिमैंहाव भावभुवभंग ॥ मधिमंडलश्रीराधामोहनलखिमुरछितरतिअवनिअ नंग ॥ नागरीदासअकासचंद्ररथचलतचक्रगतिपंग ॥७॥ चर्चरी ॥ चलीसिंगारसजिसहजअभिरांमिनी ॥ हारअरुवारकैंभारलचकत लंकडगांनडिगुलातआनंदभरिभामिनी ॥ सुनतझंकारानिजदाविर सनांदसनसकुचिफिरधरतपगमंदगजगामिनी ॥ उरसिअंचलउडत सरसपरसतपवनरवनपैंगवनाबिचापिलियमधुजामिनी ॥ कुंजघनद्रु मनकोपांतितरजातिडिपछांहछाडतनहींचतुरिमनिस्वामिनी ॥ ना

गरीदाससुपरासमाधवमिलीअंगप्रतिअंगछबिमनहुंघनदामिनी॥८॥
इति रासोत्सव ॥

## अथ गोवर्धनोत्सव ॥

समय या पदकी अलापचारीमै दैनें ये दोहा॥ प्यारीढिगपियर सपगे, गिरकरधरैंतृभंग ॥ रंगभरेकेसंगमैं, विपतमांझहूरंग॥ १ ॥ जेबंशीकेभारसौं, झुकेजातसुकुंवारि ॥ तिनप्रियव्रजजनकेलियैं, करपरधरचोपहार ॥ २ ॥ गयोतिमरऊपरजहां, बरसतहैंघनजोर॥ गिरतरचंदउदैभयो, भामिनभईचकोर ॥ ३ ॥ नागरिसोंललिता कहत, सबव्रजागिरकीछांह ॥ तुमचितवतपियओरउत, त्योंत्यौं कंपैंबांह ॥ ४॥ रागअडानौइकताल ॥ हमारोगोपाललालवल्लभ कुलतिलकभालवृजजनसुपदाईकुंवरसांवरतनरूपजाल ॥ इंद्रको पिमेघमालपीवतलपिगोपीग्वालरापिलीनौंगिरकरधरछत्रछांहभुज मृनाल ॥ सतघोसगोवर्द्धनतररूपउत्सवभीरबालमनुचकोरमं डलीमधिसरदचंदनंदलाल ॥ नागरीदासनगनिवासइतकतूहल बढ्योरंगमघवाउतमनभंगव्हैंरह्योसमैंरसाल ॥ १ ॥ चौताल ॥ दे पिकैंसैंधौंछबीलोठाढोसुढारसौं ॥ एककरगिरधरैंएककरकटितट नाचतज्यौंनटबांसह्मारसौं ॥ गोवरधनतरैंचंदमुपकैंउजारमांझदीठ नटरतइकतारसौं ॥ नागरियासबकीभईहैइकटोरीआपैंयाहीतैंतृभं गभारसौं ॥ २ ॥ ताल ॥ कुंवरिकिसोरीकहूंदरसीकुंवरकान्हजाछिन तैंमिलिबेकीमातियहठानीहैं ॥ गोपिनकोमतिफेरिमघवाकीबलमे टीबरष्योपुरंद्रतवप्रलयपौंनपानीहैं॥छूटिगयीसहजैंबिपतमांझलोक

लाजराषोगिरधारीनीरैंराधारससांनीहैं ॥ बिपमउपायकरिसींची हितवेलीऐसैंलगनलगेकीहेलीअहकहांनींहैं ॥ ३ ॥ ताल ॥ जांनैं रोबलैयाकितबरषैंप्रबलपांनीकितपरैंओलाकितमेघमालाअनींकी ॥ पायोप्रांनपीतमनिहारैंछबिगिरधरैंचंदहिचकोरीजिमनेहचितवनीं की ॥ नागरीसुषवीरीदेतलेतरूपनैंनसुधापगिरहेवातनिपरमाहितस नींकी ॥ नागरादिनसातरैंनचैंनमैंनजानेजातघनींघनबरषामैंबनीब नांबनींकी ॥४॥ राग ॥ मतमोरचंद्रिकारतनपेंचपगियापैंसुन्दरसुम नगुच्छसोभानवभालकी ॥घुर्नितनयनबंकभुवमुपमंदहासपरसतपौं नजुगअलकसचालकी ॥ ठाढोव्हैंतृभंगानिसौंगिरराजकरधरैंतैसी झूकिझुलनिललितबनमालकी ॥ होतमदभंगमनमथराजसुरराज देषिसपीदेखिआजुछबिनंदलालकी ॥ ५ ॥ राग ॥ सजनीनिरषि नंदकुमार ॥ धरैंगिरकरबढीछबिलषिमदनवोहबलिहार ॥ ललित अंगतृभंगकटितटिकनककिंकिनीजाल ॥ बंकभुवद्रिगअलकथर सतचरनपरसतमाल ॥ उदितबिचबृजचन्दपूरनतिमरमेटयोघोर ॥ तहांगोपीगनतरइयांभानकुंवरिचकोर ॥ उहांबाहिरइन्द्रबरषतप्र बलघनलियेसंग ॥ दासनागरगोवर्द्धनतरइहांबरषतरंग ॥ राग जथासमयअनुसारगावनौतालचर्चरी ॥ जयतिगिरराजकृतछत्र ब्रजराजसुतसहजसुरराजगतिगर्वहारी ॥ बर्यहरिदासजनधोषसु षरासारितुसर्वदाहरितहुल्लासकारी ॥ सकलरसबर्द्धनंदेवगोवर्द्धनं प्राणितइन्द्रादिसुरलोकचारी ॥ विपुनमधिनायकंभूमिछबिभायकं पायकंनीलमानिपीतप्यारी ॥ परमप्रियहेतसंकेतसुषकंदरातहांनिस दिवसबिहरतबिहारी ॥ नागरीदासलघुबुद्धिबरनैंकहाउताहिंनगप्र

गटिजगमहिमाभारी ॥ १ ॥ रागसारंगतिताल ॥ कैसैरहोदेपिवृप भानकीकिसोरीनैननिपलनिलगावैं ॥ वेउकरगिरधरेंसवनिकी चौरीचितैंफिरद्रिगइतठहरावैं ॥ दुहुंनिकैंदुहूंवोरस्वेदरोमकंपहोत चहूंओरभारपैंपरमकौंनपावैं ॥ नागरीदासउतइन्द्रकोपित्ररपत इतागिरधारीप्यारीरंगवरपावैं ॥ १ ॥ रागटोडी ॥ गोवर्द्धनधारीना मकुंवरकोअवहीतैंहमलीनों ॥ सातदिवसगिरिवरकरराप्योंइन्द्रमां नभंगकीनों ॥ भलैंपावोचोरिदधिवृजमेंभलदानदधिछीनों ॥ ना गरियाघरघरकोमांपनआजुसुफलकरदीनों ॥ २ ॥ इति गो वर्द्धनउत्सव ॥

## अथ दीपमालका ॥

या पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ औरटौरदीपावली, धरैंदीवारीहोत ॥ सदादिवारीस्यामकैं, प्यारीजगमगजोत ॥ १ ॥ दीपमालस्यामासहज, विहसजवैंवतरात ॥ हसतलसतऐसेजनूं, फू लझरीछुटिजात ॥ २ ॥ दीपमालप्रियहारउर, लसतसुमुक्ताआव ॥ पियचपलपिचपवोधन्हैं, छुटतमनौंमहताब ॥ ३ ॥ दीपमालनव नागरी, नवनागरसुपरास ॥ उरमैंवसोहियभवनये, नित्यनाग री दास ॥ ४ ॥ रागईमनतिताल ॥ कुहूकचचूनरीसितारेदारसोईनभ अंगआभासहजप्रकाशपुंजधारीहैं ॥ मनिगनभूपनसुदीपकजगीहैं जोतिमोतिनकीआवमहतावउनहारीहैं ॥ फूलझरीहासमैंनिवास मह मोहनी कोकुंजनिकैंपुंजचंपिचोंधिनिसतारीहैं ॥ ओरठौरदीप निकीदुति दिवारीहोतनागरविहारीकैंदिवारीनितप्यारीहैं ॥ १ ॥

इकताल ॥ धरिदैंदीपसंवारोंजिनबाती ॥ दीपनिकीद्युतिफीकीलग तहैंतुवमुखचन्दजोतिसरसाती ॥ निकसिआवदीपकमंडलतैंदीप मालिकातुहीसुहाती ॥ नागरीदासकरीन्यारीप्रियलाइलईउरमोह नघाती ॥ २ ॥ कवित्त ॥ सुन्दरसुघरस्यामराधाठकुरायनजू जोरीजगभूपनसुआनंदअगमगी ॥ तारकसीवसनजवाहिरकीजे वलसांबैठेकुरसीपैंप्रीतनौतनसगमगी ॥ जरवफतोसमियानैंसमैंदा नकिस्तसोजनागरअगरधूमिधूंधरिरगमगी ॥ दिपैंदीपमालछविछूटैं अग्रजंत्रजालअजवजलूसजोतिजीनतजगमगी ॥ १ ॥ कवित्त ॥ जसुदाकेफिरैंमुकतानकीवेलीसीनागरिराधेसिंगारकरैं ॥ वरवेनीके भारऔहारनिकेडगपाइनकीडिगुलातधरैं ॥ अतिआननजोतिमईअं गनाभयोरूपकथाकहिकोउचरैं ॥ जितजायसंवारतवातीवधूतित दीपनकीद्युतिफीकीपरैं ॥ २ ॥ कवित्त ॥ नवकुंजकैचोकदिवारीकी रातिसुप्यारीजहांअतिसोभासची ॥ जरतारीकीसारीऔअंगजवा हिरसीसमुकैसकीपौररची ॥ इहिवांनकनागरिसंगसपीलपिलाल निकीमनसाललची ॥ सवपांतिन्हैंछोड़तफूलझरीतहांहोजपैंरूप कीमोजमची ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ जहांतहांदीपनकीदीपतदिपतदू नोंज्योंजरीसजीवनिकेपोधालैंलगाएहैं ॥ कैंधोंदेपिदंपातिकीसंपाति विहारचारइंद्रपारजातकेपहुपवरपाएहैं ॥ कैंधोंपुषरागनिकेनागर परेहैंओलाकैंधोंअंगअवनिसुनैंनसरसायेहैं ॥ कैंधौंनभमंडलतेंवृन्दा वनचन्दजूनैंन्हैंकैंपांतिपांतिमिनछत्रजुरिआएहैं ॥४॥ या पदकी अ लापचारीमें दैंने ये दोहा ॥ प्यारीपियसषियनसहित, चोपरिपेल तवैठ ॥ मनोंमदनपुरचोहटैं, लगीरूपकीपैठ ॥१॥ छलाझनकचुरी

यांझनक, पासेठनकतसंग ॥ वजवतगुनीअनंगमनु, जलतरंग जुतरंग ॥२॥ स्यांमसारिगोरीचलत, चांपिचहुंटियनिचार ॥ मनहुं कैंवलकेअग्रहैं, आवतभृंगकुमार ॥ ३ ॥ जरदनरदघनस्यांम पिय, हैंअंगुरिनगहिलेत ॥ मनोंकोयलकीचंचुमैं, पीतअंबछबिदेत ॥ ४ ॥ नागरिपासेपरनिकी, इंहउपमादरसांनि ॥ हातरूपस रतेंमनों, लहरेंनिकसतजांनि ॥५॥ दोहा ॥ रगमगराहिचोपरिचहुल, प्रीतमरहेनिहारि॥दीपकढिगजगिमगिरही, लडकीलीसुकुवारि॥६॥ नथलटकनिकुंडलहलनि, हारनिझुलनिनिहारि ॥ जवझुकिपासेढा रही, लडकीलीसुकुंवारि ॥ ७ ॥ दोहा ॥ रूपलोभपकेपिया, कचे होतहेंसार ॥ त्यौंत्यौंचितवतसतरव्हैं, लडकीलीसुकुंवारि॥८॥वचन निरादरपेलमें, लालहिलगतसुप्यार॥चलिरुगटीहंसकहतयों, लड कीलीसुकुंवारि ॥ ९ ॥ दोहा ॥ समझिदावपियचूकिकैं, सार हिचलतसह्मारि॥ पकारिपिछौंहोंदेतकरि, लडकीलीसुकुंवारि॥१०॥ वेसरिवंसीपीतपट, हारदयेपियहार ॥ मनहूंलीनोंजीतिकैं, लडकी लीसुकुंवारि ॥ ११ ॥ दोहा ॥ लालचलेजुगजोरिकें, नीलपीतरंग सारि ॥ समुझिसकुचिहसिझुकिरही, लडकीलीसुकुंवारि ॥ १२ ॥ वाजीवाजीउठिचली, वाजीलगीनिविचारि ॥ हियवाजीनागरिमि ली, लडकीलीसुकुंवारि ॥ १३ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ हो रंगीलीवाजीलागिरहीछैनैंणामैं ॥ ज्यांणीकामकटाछांहीकादेपिदा वदैंणामैं ॥ कांपेअंगअनंगरंगसुरभंगहुओवैंणामें॥रसिकविहारीमन फूलवढीहुईहारजीतनैंणामें ॥ १ ॥ इतिदीपमालिकाउत्सव ॥

## अथ श्रीगुसांईजीको उत्सव ॥

या पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ परमपुष्टिरसजलअमि

त, उर्मीप्रेमावेस ॥ नागरप्रगटिआनंदनिधि ॥ वल्लभसुताबिटले
स ॥ १ ॥ वल्लभाचारजकलपतरु, फललाग्योविठलेस ॥ याफ
लकोरसरूपहैं, गोकुलनाथव्रजेस ॥ २ ॥ धनवल्लभविठलेसधन,
धन्यसातसुतबंस ॥ भवनिस्तारनहितप्रगटि, नागरजक्तप्रसंस॥३॥
राग ॥ श्रीबल्लभाचारिजकुमारकुमदकुलनिसेस ॥ भक्तिजनप्रसं
सितश्रीमतविठलेस ॥ बिष्णुस्वामिसम्प्रदायचूरामडिचार॥नागरप्र
णमाम्यहंअंन्हिकल्हार॥१॥पदचर्चरी ॥यथासमैंराग ॥ वेईगायगो
पवृन्दगोकुलमधिसन्ततसुखसंपदानिघोषमोपपगनिपेलिडारी ॥
वेईनंदवल्लभसुतभएहैंप्रगटिवल्लभग्रहसोभितदुजंकुलललामधामव्र
जविहारा ॥ वेईप्रेमपरकरनितिगोबिंदकुंभनादिसंगललितलुब्धली
लारसपुष्टकोसतारी ॥ वेईदासनागरकेप्रेरकमन्नमनसुवेसवेईविठले
सवेईगोवर्द्धनधारी ॥ १ ॥ राग ॥ प्रगटिविठलेसदिनकर
किरनससुतभक्तकुलकेवलआनन्ददयने ॥ नरनिडरनिविध्वंस
मंगलकरनकृष्णप्रतिबिंवजगमगतनयने ॥ विटपपंडनकठिनका
ठमायावादपुष्टरसबरषहीबिमलबयने ॥ नागरीदासदुजराजजा
नौंवेइसमेंसुरराजगिरराजलयने ॥ छप्पय ॥ धनिश्रीबल्लभवि
दितधन्यधनिकुंवरबिभूषन ॥ बिठ्ठलेससुतसातधन्यहरिअंसबंसध
न ॥ धनचौरासीभक्तजक्तहितपुरुसरूपछित ॥ धनिगोबिंदकुंभ
नादिप्रीतगिरधरनअपरमित ॥ धन्यभानभुवभागवतनागरियाहिय
तमहरन ॥ धन्यधन्यफिरधन्यहैंमहामंत्रकेवलसरन ॥ ३ ॥ इति
श्रीगसांईजाकोउत्सव ॥

## अथ बसंतोत्सव ॥

वसंत उत्सवका या पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ काम ज

नमअभिरामदिन, वृंदाधामलसंत ॥ हरिराधाबंदततहां, मंगलकलसबसंत ॥ १ ॥ सुभकारिकवृंदाविपिन, नवबसंतदिनआज ॥ आगममंगलगानधुनि, होतलगनकोराज ॥ २ ॥ इहिंवसंतरितुउठतवहो, द्रुमनवपल्लवलागि ॥ जडहूंकैंरोमांचव्हैं, व्यथामदनतनजागि ॥३॥ कुसमितद्रुमगहवरनिअति, रितुवसंतअभिराम ॥ छविछाईवृंदाविपुन, मनुसरपंजरकाम ॥४॥ फूलभरेमंजुलकलस, पियप्यारीरसवंत॥नागरनितवृन्दाविपिन, मूरतवंतवसंत ॥ ॥ ५ ॥ रागहिंडोल इकताल ॥ पेलतबसंतव्रजपतिकुंवार ॥ विचवृंदाबिपुनविहारिचार ॥ झुकिद्रुमनवपल्लवकुसमभार ॥ उडिरजप्रसूनविचअलिगुंजार ॥ तहांसषासंगगावतधमार ॥ बाजैंमृदंगडफझांझरतार॥ इतलियेबंदनकलसनारि ॥ मिलिदेतमधुरसुरसगारि ॥ चलैंविदधिरंगपिचकारीधारि ॥ गयेचहूंटिचीरसवतनसुदार ॥ द्रिगपलनलगतलगेसुरहैंमार ॥ भयेरौंमकंपलोयननिवार ॥ रहेललितपररूपरछविनिहार ॥ नागरनागरिनहींप्रीतपार ॥ १ ॥ तिताल ॥ कहिहोहोहोषेलतवसंतपियसंगराधेसुकुमारि ॥ गावतहिंडोलबाजतमृदंगडफझांझरतारकठतार ॥ चलतपीतपहुपनिकीपंगुरीसोमारहीनिहार॥नागरियानागरिवृन्दावनमधुरातिरंगविहार ॥ २ ॥ चौताल ॥ फूलेद्रुमवल्लीबनझूलैंअलिगंधबोलैंमदनसदनमानौंमंगलवधावनौं ॥जहांतहांआवतधुनिगांनहिंडोलतैंसोकोकिलानिकोयलक्रोसोरमनभांवनौं ॥ उमहींसकलबालआंईवृषभानजूकैंसीसलैंकलससंगसोहैंमहरांवनौं ॥ हियेहुलसंतविकसंतकुंजतियमुषनागरवसंतवरसानेमैंसुहावनौं ॥ ३ ॥ तिताल ॥ अतिसुपदाईरीद्रुमनिकोयलि

याकुहकमचाईनवबसंतरितुसरसाई ॥ छईसुवासभ्रमतमधुकरामिलिनूतमंजरनिकीडारियांकदलीकुंजगहबरिआई ॥ ऋंवसोरनवबालबालललैंलालहिंबहसिवंदाई ॥ पियप्यारीनागरिनागरहियफागपेलिसुधिआयछाई ॥ ४ ॥ इकताल ॥ होधुंधुंकारडफबाजततालमृदंगझांझिमिलिविचिमुरलीधुंनिथोरी ॥ बूकाबंदनचंदनाछिरकतकुंमकुंमरंगकेसरिलैंघोरी ॥ दिनवसंतगावतनाचततहांबनितागनिदुहुंवोरी ॥ नागरियाषेलतवृन्दावनपियघनस्यामप्रियातनगोरी ॥ ५ ॥ इकताल ॥ बनमदमातेपियप्यारीषेलतवसंतहसिहसिछकिछकिडारिगरबांही ॥ कँवलपरागलियेकरकंवलनिकँवलबदनलपटाही ॥ परसपरआनदेतमनमाहींसषीकंजकिंजलकनिपेलतगावतसासिसरसांहीं ॥ नागरिनागरबनविहरतफूलमनिनकीछांहीरंगभरेअंगअंगउरझांही ॥ ६ ॥ इतिबसंतसमास ॥

## अथ होरी उत्सव ॥

यापदकी अलापचारी मैं दैने ये दोहा ॥ कुसलनंदवृषभांनकी, तिनकेहैंजगबंद ॥ होरीडांडोआजसुभ, ओप्योव्रजआनंद ॥ १ ॥ नागरिनागरभावतैं, मंगलरूपरसाल ॥ नितमंगलवृन्दाविपन, नित्यफागरसप्याल, ॥ २ ॥ प्यारेनाहिंप्यारेलगैं, सो फीसदाउदास ॥ इस्कश्रेसमदिरापियें, कैफीफागुनमास ॥ ३ ॥ कियैंरंगीलेफागमैं, हियेंरंगीलेअैंन ॥ महारंगीलेदिनसबैं, महारंगीलीरैंन ॥ ४ ॥ फागझुरसिकनहितभयो, रसिकफागकेहेत ॥ चंदाबिनानिससांवरी, निसबिनचंदासेत ॥ ५ ॥ जाकौंहोरीपेलसौं,

तनकहूहुवोनहेत ॥ पालओढिसोमनुपकी, कियोमुलम्मापेत॥ ६ ॥ फागमासरितुउठतवहो, द्रुमनवपल्लवलागि॥जडहूकेरोमांचव्है, व्यथामदनतनजागि ॥ ७ ॥ इहिंरितुओसरफागकैं, होतलगनको राज ॥ डफमोहनमुरलीसुनत, छुटतवधुनकीलाज ॥ ८ ॥ इहिं होरीकेपेलकी, जगसौंउलटीरीति ॥ जीतनहींमेंहारहैं, हारनहींमें जीति ॥ ९ ॥ सुनिरोंड़फवाजनलगे, सिरपरआयोफाग ॥ अव कैंसैंदविहैंदई, अंतरकोअनुराग ॥ १०॥ सुलगीलगनहियेनमें, जु लगीहोरीआय॥ पुलगीग्रन्थविचारकी, मीतमिलनदरसाय॥ ११॥ छिनदेपैंविनदेतदुष, लोयनपरैंजुगैल ॥ फागवावरोदिननमें, रूपबावरोछैल ॥ १२ ॥ ग्रहकोनैंजातनरह्यो, परतअगोनैंपाव ॥ नितहोरीकेपेलमैं, चितचोरीकोचाव ॥ १३ ॥ वरसानैंनन्दगांव अति, उमगेदलदुहुओर ॥ समरपेतसंकेतमैं, आजफागजुधजोर ॥ ॥ १४ ॥ ढोलकिढोलमृदंगवजि, मुरलीडफसहनाय ॥ गहगड गांनधमारधुनि, रह्योकुलाहलछाय ॥ १५ ॥ उडिगुलालआंधीप हल, डफगरजनअभिरांम ॥ रंगधारवरसनलगी, गउरघटाअरु स्यांम ॥ १६ ॥ मचीदुहुंनिमैंफागइत, राधेउतनन्दलाल ॥ जमु नाधरगिरतरुलता, पगमृगभरेगुलाल ॥ १७ ॥ लालमईसबदीपि यत, घुमडयोगगनगुलाल ॥ मनुदंपतिअनुरागको, डारचोव्रजप रजाल॥ १८ ॥ राजतधूंवगुलालमैं, भरिभरिमाजतवाल ॥ मा नौंफूलीसांझबिच, चमकतचपलाजाल ॥ १९ ॥ द्दगहीचाहत लालकौं, तनचहउड़योगुलाल ॥ धूंधरिमैंह्वरिओछकों, भुजभ रिलीजैंवाल ॥ २० ॥ सकैंनद्दगभरिदेपिकैं, तिनकोवदनमयं

क ॥ जिनकौंहोरीपेलमिस, अंकनिभरतनिसंक ॥ २१ ॥ कौंधि उठतज्यौंदामिनी, भरतभांमिनीआय ॥ पियमनलैकैंपलटिफिरि, मिलैंझुंडमैंआय ॥ २२ ॥ आवतमुठीगुलालकी, छविसौंछैलव चात ॥ पैंअचूकिद्रिगलगिहियैं, वारपारभयजात ॥ २३ ॥ रोकतघूंघटश्रोटसौं, मुरिपिचकारीधार ॥ यहैंबचावनदेषउत, बचतनहींरिझवार ॥ २४ ॥ अजूकहाआंषैंभरो, कौनरीतिकोषेल ॥ इनबातनिरहिहैंनहीं, हमसौंतुमसौंमेलि ॥ २५ ॥ लगैंसुफिरनिकसैं नहीं, करिनभावतश्रोटि॥होरीमैंअंषियांनकी, श्रांषनिहीपैंचोटि ॥ ॥ २६ ॥ आंषैंभरतगुलालसौं, यहधौंकौंनसुभाय ॥ मदनमाधुरी पानमैं, अंतरपारतहाय ॥ २७ ॥ चतुराईकरिकैंदयो, पौंछनिद्रिग निगुलाल ॥ कहतचलावतउतगयो, भौंरेछूटिरुमाल ॥ २८ ॥ चलतगुलालनिझोरियां, माचीधूमधमारि ॥ फागकेलिझकझोरियां, फिरतगोरियांग्वारि ॥ २९ ॥ हारछुटतछूटतनहीं, रहे षेलिरसभोय ॥ हारटूटिपायनिपरत, हारनमानतकोय ॥ ३० ॥ नागरियागतिरीझिकी, क्यौंहूंजातकहीन ॥ दंपतिफागविहाररस, भयेलीनमनमीन ॥ ३१ ॥ राग भैरू ॥ ताल चरचरी ॥ होरिषेलिषेलतजबरहीरैंनथोरी ॥ सोयेहैंरसिकलालसंगलैंकिसोरी ॥ पियरीयहजगिलगिदोऊचलेहैंरंगभीनैं ॥ सगवगेगुलालबसनअंसनि भुजदीनैं ॥ श्रस्तविस्तअभरननगटूटेहारहीके ॥ अलकभौंहमूलरंगअधररंगफीके ॥ फागभरेलागभरेरजनीकेजागे ॥ फिरफिररस उरझतनहींसुरझतअनुरागे ॥ गउरस्यामललितअंगभुजलतानिकसिया ॥ नागरियाहीयबसेफागुनकेरसिया ॥ १ ॥ रागरामकली ॥

तिताल ॥ तैंऊवटबाटचलाईबहुतदिनअबक्योंनारिनवइयां ॥ आ
ईहमबरसांनैंवारीनिकसिअरेनंदगइयां ॥ आगेआयरुहाहापायकैंप
रिसषियनिकेपइयां॥२॥ यौंकहिनागरऔचिलयेगहिडडिगुलालनभ
छइयां॥ २ ॥ रागषट तिताल ॥ इतमतनिकसिचोयकेचंदादेपतक
लंकमोकौंलगिजायगोरे ॥ दूरितैंगुलालभरिजिनछुवैछैलमोहिते
रोंस्यामरंगमेरैंलगिजायगोरे ॥ पायपरौंहाहाअवानियरैंनआवक
रनिचवावगांवलगिजायगोरे ॥ नागरतूलोभीफागस्वारथहीकोहैंमी
तमोमननिगोडोभूलिजायगोरे ॥ ३ ॥ तिताल ॥ सांवरेछैलछबीले
षिलारसौंगोरीकिसोरिजूहोरीमचावैंहोहोकहैंइततारीवजायजवैंउत
प्यारीगुलाललैंधावैं ॥ जाहिसवैंअवसांनजकौलगिकंपव्हैंलाल
हियेहहरावैं ॥ नागरिकीनअवाईथंभैंजबरूपहवाईसीछूटिकैंआवैं
॥ ४ ॥ रागटोडी ॥ इकताल ॥ अरीयहकौंनहैंरोनंदगांववारोनिमैं
पेचहीपेचभरीबातैंगावैं ॥ ओटकियेंउतकौंडफकोइतकौंलषिकैंआंपि
यांठहरावैं ॥ सौंवरेअंगकंवलसेनैंननिसैंननिहाहापावैं॥नागरिहोरीभ
ईतोकहाइन्हैंकोऊसषोसमुझावैं ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ इकताल ॥
होरीयाबगरमैंमाचिरहीहैंपानियांभरनिकैंसैंजाउं ॥ लाजलियेमेरीघूं
घटपटसौंकिहिंबिधनिवहानिपाउं ॥ दौरिदौरिरंगभरतपरसपरतिन
सौंकहावसाउं ॥ नागरिकान्हछुवोमोहितोफिरिनांवधरैंसवगांउं ॥
॥ ६ ॥ तिताल ॥ छैलवहिकाहूसौंनडरैं ॥ आधीरातवृंदावनमां
हीठीकदुपहरीकरैं ॥ आयनिकटललचायलालचीऔरहीढारढरैं ॥
नागरीदासरंगभरिभरिफिरिभुजभरिअंकभरैं ॥ ७ ॥ इकताल ॥
मोहनलयेहैंदबायलंगरहोरीकी ॥ मुरलीमालाछीनवहारिडारीसौंज

झटकिझोरीकी ॥ पैंचतझपटिपीतपटिकटिसौंदैंभाजतबैंदीरोरीकी॥ जीतीनांहिजातहैंक्यौंहूंनागरनवनागरओरीकी ॥ ८ ॥ तिताल ॥ पेलैंहोरीमनमोहनां॥ फैंटासीसकेसरीसुन्दरछूटीअलकमुपसोहनां॥ भरतरंगमनहरतफिरतलाग्योरसबसव्हैंतियगोहनां ॥ नागरिकंव लकंवलप्रतिलपटतभंवरकंवरवृजजोहनां ॥ ९ ॥ इकताल ॥ फूटैंकरकीचूरियांमोहिहाहालंगरदैंजान ॥ होरीमैंभलीयेकरतबर जोरीमच्योहैंकांनपेलिहुपदान ॥ तरकतकसदरकतहैंअंगियांधर धरधरकतप्रांन॥दूरिहोतैंजुभलोपियनागरनैंननिकोसनमांन ॥१०॥ ॥ तिताल ॥ छैललंगरघनस्यामभगमेरोरोकिरह्योरी ॥ उरपरडा रिरंगपिचकारीअंचराआनिगह्योरी ॥नैंनलगेअरुदिनहोरीकेयातैंस बैंसह्योरी ॥ नागरियाछिनकलनपरतअबचारबिचारबह्योरी॥११॥ ॥ तिताल ॥ नसहिहोंरीयाकीइतनीएलंगराई ॥ अरीयेअतिहीढीट हैंकान्हहमसोंकरिबरजोरीधूममचाई ॥ सबयाकीलैंलकुटीबंसीउ रमालाछीनलेहुपिचकाई॥ अबतुमसकलसिमटिलैंलैंकरगागरिनाग रिभरोरिकन्हाई ॥ १२ ॥ आनकबिकृतरागपंभायची ॥ तिताल ॥ आजबरसानौंहेलीलागैंसुहांवणौं ॥ फागगातिगीतसुरछायोसुहायो आजुनंदकुंवरआयोपाहुणो ॥ उठोजीकिसोरीगोरील्योनैंगुलाल ओलीभरहोलीअबसुपसरसांवणौं ॥ गहगडपेलधूमधूंधरअबीरमां होंरसिकविहारीकंठलगांवणौं ॥ १३ ॥ आनकविकृत॥तिताल ॥ फागुणियारोघुमडिरह्योछैंप्याल ॥ कुंजभूमिसोलाललालहुइहुवाला लतमाल ॥ उडिगुलालकीलालघूंघरिमैंभलकैंवैणाभाल ॥ संपीला लअरुलालविहारनिरसिकबिहारीलाल ॥१४॥ आनकबिकृत ॥ या

पदकी अलापचारीमें देने ये दोहा ॥ उडिगुलालघूंघरभई, तनर होलालबितांन ॥ चौरीचारुनिकुंजमें, ब्याहफागसुपदांन ॥१॥ फूलनकेसिरसेहरा, फागरगमगेवेस॥भांवरहीयेंचलतदोऊ,लैंगतिसुलपसुदेस ॥२ ॥ भीजेकेसररंगसों, लगेअरुनपटपीत ॥ डोलैंचाचरचौकमें, गहिवहियांदोउमीत ॥३॥ रच्योरंगीलीरैंनमें, होरीकेविचब्याह॥ बनोंविहारनरससनीं, रसिकबिहारीनाह॥४॥ आनकविकृत तिताल॥कुंजमहलमेंआजुरंगहोरीहो॥ फागपेलमेंवनांवनींकीव्हैरहीपटगठजोरीहो ॥ मुदितव्हैंनारिगुलालउडावेंगावेंगारिकुहुंओरीहो॥ दूलहरासिकबिहारीसुंदरदुलहनिनवलकिसोरीहो ॥ १५ ॥ राग धनाश्री ॥ इकताल ॥ मेरेंभाग्याईआवैं ॥ सावरीनंदनंदनमनमोहनां ॥ वृजबीथननिकुंजनिकुंजमेंआननतनद्युतिजोहनां ॥ सैननिहाहापातलालचाछीडतनहींछिनगोहनां ॥ नागरनवलछैलहोरीकोंच्चितलचतलपिसोहनां ॥ इकताल ॥ फागनपेलतफागरश्रोक्योंजायरी ॥ सासननदडरआगेंपरतनहिंपायरी ॥ अरीनंदनंदनसोंनेहसुनेंदुपकोंनरी ॥ क्योंचितवेंदिनरैनअकेलैभोंनरी ॥ सूनोंसदननिहारिमदनपायोदावरी ॥ मारतबाननिसंककरतडरघावरी ॥ डफमुरलीधुनिआंनिपरतजबकांनरी ॥ श्रवनरहतठहरायचलतयेप्रानरी ॥ अरीनांहिंरहूंघरघरीवहुरिकबफागरी ॥ फिरिमोहनसोंभईद्रगनिकीलागरी ॥ तोरिकैंलाजकपाटचलीगजगामिनी ॥ मिलीनागरीदासमनोंघनदामिनी ॥ १८ ॥ तिताल ॥ फेरीदेंदेंबोलहैंराजबैदगुनबैद ॥ विरहविथावसपरवृजबभूतांहिकुटंबकोकैद ॥ दोरिपोरिलैंझांकिसकतनांहिंअयेदिवसदसबीस ॥ डफमुरलीधुनिसुनिसु

निकानंनिपरीधुनतहैंसीस ॥ तापैंल्याईस्यामतवीनैंएकसषीहितपाइ ॥ इतउततैंअंसुवनिजलभरिभरिमिलेनैंनअकुलाइ ॥ छिनंसियरेछिनतातोतनहैंचमकिचल्योमुपस्वेद ॥ कंपतिहाथनारिकैंदेषतकोसमुझैंयहभेद ॥ औषदकैंमिसलैंमुषदीनौंकरतैंपानउगार ॥ बहुरिकह्योयहनीकीव्हैंहैंबतकीलगैंबयार ॥ नागरियाइहिफागमैंहरिसबबिधिपूरेकाम ॥ तपतबुझाईबालकीबनिनयेगुनीधनस्याम १९॥ ॥ राग काफी ॥ तिताल ॥ कोईइकजोगीरूपकियैं ॥ भौंहैंवंकछकौंहैंलोयनचालिचलिकोयनिकांनछियैं ॥ देषिस्यामतनबेपमनोहरवारवारजलबारिपियैं ॥ नागरमनमथअलषजगावतगावतसांधैंबीनलियैं ॥ २० ॥ इकताल ॥ स्यामघनघेरयोनवलकिसोरीदांमिनतनद्युतिगोरी ॥ करिविचारपिलवारनारिसबदुरिसांकरीपोरी ॥ तहांगह्योचितचौरआपुनौंकरतप्रेमझकझोरी ॥ उडतगुलाललालगहबरब्रनधुनिसुनियतहोरीहोरी ॥ मनकौंहरनितहांअंकभरनव्हैंअधरपानकीचोरी ॥ बढिगयोरंगपेलिहोरीमैंक्यौंवरनौंमतिथोरी ॥ ब्रजजीवनिनंदलालनागरीचिरजीवोयहजोरी ॥ २१ ॥ तिताल ॥ नकीजियेंनजरभरिदिलइस्ककीनिगाहैं ॥ देषैंसबखेलिबीचिछूवोमतिबांहैं ॥ क्यापूंछनागुलालकारुमालकीअदाहैं ॥ नागरियानेहकीनजाहरीसलाहैं ॥ लगैंगाकलंकफेरबनैंगीनिवाहैं ॥ २२ ॥ तिताल ॥ जांनदैंतेरैंपईयांपरतहौंरेकन्हइया ॥ टुटिगयेहारछूटिगयोअंचरभींजिगईअंगियारेदइया ॥ यामगमांझनकरबरजोरीहैंगोकुलकोलोगचवइया ॥ नागरियाधननीतितिहारीधन्यपेलितूधन्यकन्हइया ॥ २३ ॥ इकताल ॥ अंपियांरंगरातीजोवनमतवारी ॥ छु

टिलटैंझुकिझूलतवेसरिकेसारिपोरिसंवारी ॥ भौंहैंकसौंहैंहसोहैंसेओं ठांनकैंबिचदामिनकौंधैं ॥ अंचरछोडिचलैंगजज्यौंदरसैंअंगियारंग सौंधैं ॥ होरीमैंरूपठगोरीभरीमुसकायकरीचितचोरी ॥ सांवरेकोल गवारिबडीठगवारिहैंगवारानिगोरी ॥ फागभरीअनुरागभरीनिकसैं जवघूंघटमारी ॥ नागरियालपिलाग्योफिरैंरंगमोहनरिझवारी २३॥ आनकविकृत तिताल ॥ होराजथेछोडोजीकिशोरीजीरोछेहडो ॥ रापोरापोमनमेंचारविचारि ॥ थेफागुणरसवावलाऐलाजभरीसुकुं वारि ॥ कांईहुवोहोलीहुवांसुणहससीसोहसंसारि ॥ थेगायांकाग्वा लियाछौअरऐछैराजकुंवारि ॥ थांहरीयांहरीनहींछैंबराबरीजायपर सोदूजीनारि॥रसिकबिहारीथांरोनांवछैकांईपेलोण्यालगंवारि॥२४॥ तिताल ॥ अणाकोईसांवलापेलनवाल ॥ सोहनांमुपसोभाजगमगि यांलागियांरंगगुलाल ॥ कर्नफूलपरफूलझुलफाविचहालहालकरैंहा ल ॥ नागरियामेरेआगेंअदबसौंलैंआंवदाहाथरुमाल ॥ २५ ॥ इ कताल ॥ सइयोमैंनूंकांन्हबुलावैं ॥ चढिकैंअपनीऊंचीअटारीनैंनौं दीसैनचलावैं॥ केसरिदारंगभीनाचोलाहोरीदाछैलकहावैं ॥ नागरी सासकहाकहौंरोलपिमैंडाभीजीललचावैं ॥२६॥इकताल ॥ पेलिहौं नहींहोरीहौंहोरीरी ॥ लैंउरसौंमसकीकसमैंससकीभरिनाकसकोरी कीनोहैंबरजोरी ॥ छैलकेहाथपरीछलसौंनहिंछूटिसकीविचपोरी रससिंधुझकोरी ॥ वेत्रहोछंदभरेगुनआगरनागरहौंमतिभोरीकोअ धरारसचोरी ॥ २७ ॥ इकताल ॥ नंदकुंवरदेपिकैंकछुभीनरही ताव ॥ छूटिगयाघूंघटपटहुईबेहिजाब ॥ जोवनमदहोसहुस्नजादु हैंनिगाह ॥ लियेंपिचकारीदस्तअजबपुसअदाह ॥ इस्कबाजहोली

बाजसांवलाछछंद ॥ दुदांमीइकतईपोसेवसंतीफैंटाकजवंद ॥ ति
सपैंचलैंमूठउसकीसोहेमस्तहाल ॥ गोयापढिपढिकैंसिरडालतागु
लाल ॥ मुझकौंकछुकियहैंउसनैंषेलिबीचिआय ॥ पायपरौंहायव
हीनागरदिषलाय ॥ २८ ॥ तिताल ॥ हुस्नतमासेकाहैंअजायब
होलीकाषिलवार ॥ पिचकारीदरदस्तअजायबसजिफैंठाकजदार॥
रंगसांवलाजर्ददुपट्टाउरमरवारिदाहार ॥ हैंनागरस्यांमासाहिबकेय
हफरमांबरदार ॥ २९ ॥ इकताल ॥ दइयारेसबलोगजागैं ॥ घर
कैंहियरातनकांपैंजियडरअतिलागैं ॥ मकरचांदनीरातहैंमोहिआ
वतलाजैं ॥ सेझमोहनकीनचढौंपायलमोरीबाजैं ॥ फागरंगीलेरैं
नदईमोहिमैंनसंतावैं ॥ नागरसुन्दरस्यांमकौंअधराससभावैं ॥३०॥
॥ इकताल ॥ रसियातेरेकारनैंनैंनानिभईहौंकनौंडी ॥ अपनैंस्वारथ
रीतिमगनतूप्रीतिरीतिअतिऔंडी ॥ तैंसोईफागनतैंसीयेवृजकीचार
चुवायनिभौंडी ॥ नागरघरघरडगरबगरमैंबजीनेहकोडौंडी ॥३१॥
॥ तिताल ॥ पेलिनजानैंनयोहोरीकोषिलवार॥ उररानौंहांगरैंपरत
नहिंसमझतचारबिचार ॥ पुन्यबडनकैंसीष्योयहढंगयानीतकीहौंब
लिहार ॥ नागरवाघरजाहुचल्योकिनआतुरनिलजउतार ॥ ३२॥
॥ इकताल ॥ चूरियांझनकैंगोरीबाहुबहुरियां ॥ बाजूबंदफफूंदनि
फुंदवाअंगियांगडरहीगाढीमऊरियां ॥ आजारीमिलिसांवरेसोंगो
रीडारेदैंरीदिवरानीलहुरिया ॥ नागरियापियठाढेगरीदुरीभईजात
हैंपरीरीपहुरियां ॥ ३३ ॥ तिताल ॥ तूसुंनिमोहनबैंनबजावैं ॥ मन
मोहनबैंनबजावैं ॥ रितुफागलागसरसांवहीं ॥ मुखनांवतिहारोगां
वहीं ॥ दूतीधुनिसैंनबुलांवहीं ॥ चलबेगछबीलीअबनहींभवनसुहा

वैं ॥ १ ॥ सुनिचलीचपलजवभामिनीं ॥ हांरीअभिसारिकाका मिनीं ॥ बिचपिलीविमलमधुजामिनीं ॥ चलिमिलीस्यामवनदा मिनीं ॥ अतिरसवरस्योहैंफागचैतमिलिगावैं ॥ २ ॥ बिचरचीरा समंडलहोरी ॥ मिलबाहुनिबाहुलताजोरी ॥ पियस्यामसुधरराधा गोरी ॥ गतिलैलैलेपतिमुखरोरी ॥ अतिरंगबढ्योरीकहतकह्योन हिंआवैं ॥ ३ ॥ बजमृदुलमुरजटंकारतार ॥ किंकिनिनूपुरझंझ झंकार॥ चंचलकलकुंडलअलकहार॥ छुटिछुटिअंचरगयेपुलेवार॥ मनुतियछविबेलीपवनलगैंडिगुलावैं ॥ छिरकैंकेमरकुमकुमासंग॥ चिउटेपटउघरेअंगअंग ॥ लपिसुरछिगिरयोआतुरअनंग ॥ रसरा सफागमिलिबढ्योरंग ॥ थकितरह्योचंदनभपवनगवनबिसरावैं ॥ ॥ ५ ॥ उडिगुलालवनभईघुमडानिपलटितगतिलैलैभरिरंगनिबढ़ कामतरंगनपियसंगनि ॥ लपिगउरस्यामउरझेअंगअंगनि ॥ नैंन निगालिभूलेबैंननिमैंनसमावैं ॥ ६ ॥ नितदंपतिसंपतिसुपसुहाग ॥ नितरासरहसिअरुनित्तफाग ॥ नितवृंदावनआनंदबाग ॥ नितके लकनूहलहियअनुराग ॥ नागरियनागरइहिंसुखसमैंबितावैं ॥ ७ ॥ ॥ ३४ ॥ इकताल ॥ रंगहोहोहोहोहोरीडल्ह्योफागसुपलागसंग॥ वेगआवसखीदौरिदौरिकैंदेपिअटाचढिकैंउतंग ॥ सुनियेंगानगहि रीधुनिआवतबरसानैंकीओरआज ॥ यानन्दगांवकेसांवरेऊपरगाउर घटाआईगाज ॥ हैंबिचकुंवारीकिसोरीगोरीदामिनसोद्युतिचमच मात ॥ प्रीतपवनइतप्रेरिचलाईउमडीआवतउत्तरकौंआत ॥ नंदी सुरतैंहैंआनिरगमगीवनउपवननिसरनिकैंफूल ॥ पीतरंगसवरंगोदे पियतसरसौंसीरहीफूलफूल ॥ गलीगलीमैंअलीरलीसबसमच्यानें

कीगारिगाय ॥ रुकीडगरमहरांवनमैंआनंदकुलाहलरह्योछाय ॥ पहुंचिआयराजमंदिरमैंजसुमतिभीतारिलइगेह ॥ उडिगुलालछूटी पिचकारीबरासिपरयोअतिमेह ॥ मिलिमिलिदेतझमकिझूमकतहां वाजतचंगमुहचंगउपंग ॥ छूटतबसनहारउरटूटतिराविरमेंमचिप रयोरंग ॥ दुरेलाललषिलयेसबनिमिलिपकरेतोरिकिंवार ॥ भई मनोहरभीरभुजनबिचभरिलाईअंकवारिनारि॥नंदजसोदाहसतदुरि ठढेदेषिरहेरसरीतप्रीत॥ सुन्दरकुंवरलाडिलोनागरफगुवामेंलैंगईजी त॥इकताल॥ कहाकरौंरेकहाकरौंदइयादिनकठिनाबिहाय॥ जवतैंल ग्योहैंमासफागुनआय ॥ भरननदैंनंदियापनघटपांनी ॥नाहरसी बैठीरहैंबाहरजिठांनी ॥ हौंहीएकरूपवंतवैसकिसोरी ॥ औरहुनको ऊकहागोकुलमैंगोरी ॥ बंसीडफसुनिसुनिहियोअकुलावैं ॥ मेरेघ रआसपासछैलमंडरावैं ॥ नागरिकुंवरआयोतोरिकिंवार ॥ होरीके षेलमिसिमिल्योलगवार॥२६॥ इकताल ॥होरीकेषेलमैंगुमानकैंसोगु मानगुमानकीठोर ॥ कोरांनांकोरंकफागमैंजहांप्रेमकोरोर ॥ हिल गजहांनहींबिलगिमांनिबोलैंअबीरफिरिओर ॥ नागरीदासनिसंक स्यांमकौंभरहुकुंवरिदौरिदौरि ॥२६॥ इकताल ॥ दइयातैंकन्हैंइया करडारीहोंनकबानीकररे ॥ आछैंहाथधोयपाछैंपरयोनैंकदईतैंड ररे ॥ चुरियाफोरगढायोकंकनअंकनिभरभररे ॥ यहनागरताहोरी षेलिकीसीष्योकानैंघररे ॥ ३७ ॥ रागगौरी ॥ तिताल ॥ मानिहार निवानिस्यांमदेतफिरैफोरियां ॥ संगलीनैंवहोरंगचुरिनकाढोरियां ॥ नैंनलगेंजांहिंगलोसुफिराफिरबोलहीं ॥ पीयवचनपहिचांनाप्रियाचि तडोलहीं ॥ भईआतुरीचितरहीनसंम्हारनी ॥ भींतरलईबोलायनव

लमानिहारनी ॥ लालचुरीदुहुँऔरस्यामचुरियांलियैं ॥ कंपतरोमक टयातकरनिजवकरछियैं ॥ चुनिचुनिछोटीचवरिचांपपहिरातरी ॥ कासिकसिकसतरातसुकुचमुसकातरी ॥ थकीदीठमैंदीठाबिथामन मथवढी ॥ समझितबैंयहभेदिसपीढिगतैंकढी ॥ बलयाकरकीरोझि दैंनचितमेंठई ॥ देपिइकौंसीवेरअंकमालादई ॥ भयेमगनसुपसिंधु अधररसपानमैं ॥ तनमनसुरझतनांहिरंगउरझांनमैं ॥ वोहोभांति निचितचोरकरतचितचोरियां ॥ लालरूपआसाक्तिभईव्रजगोरि यां ॥ करतमनोरथसांचसवनिकेफागमैं ॥ नागरियानंदलाल भरेअनुरागमैं ॥ ३८ ॥ राग ॥ दिठाग्वारगारिसुरमिठागावत इस्कलपेटा ॥ मदअलसौंहीनैंनसैंनदैंमारतमैंनचपेटा ॥ पियगोरी दाछैलहोरीदासुंदरअंगअंगेटा ॥ नागरीदासदिवांनीहुइयांदेपिअ जवमहरेटा ॥ तिताल ॥ नैंनासोहनैंरंगपुमार ॥ दोहा—कामकेलि रसरगमगी, सबनिसजगीविहार ॥ हमजानीमनमोहनां, तेरोहैंलंग रलगवार ॥ १ ॥ आवैंआधीरातउठि, अगवारैंपिछवार ॥ तृत्र कंवलअलिसांवरो, रसलंपटरिझवार ॥ २ ॥ रहेतुटेहीहारउर, छूटे छबीलेवार ॥ पीककपोलनिहीरहैं, सबतनसिथिलसिंगार ॥ ३ ॥ हाथपरीनूछैलकैं, नागरियासुकुंवारि ॥ तनझकझोरीसीरहैं, रंगढो रीकीयार ॥ ४ ॥ तिताल ॥ हौंजमुनाजलभरनगईतहांदुहुंदिसरी द्रुमगहवरगैल ॥ निकस्योहैंतहांआयअचानकरंगभीनोंहोरीकोछै ल ॥ चलनिसकीलपिकेपगकंपतराहिजुगईतनहौंमिरनाय ॥ मदग जराजकीचाललालधुकिगहिलीयोरीअंचरमुसकाय ॥ तबघूंघटप टछूटिगयोहैंनिलजरहेनैंनामुपचाहि ॥ मींडतदुहुंनिकपोलगुलाल

निआयोअतिउरमदनउमाहि ॥ लईभुजनिकैंवीचसपीकसिकंपत सीतसिथिलभयोगात ॥ धीरजहरीहरयोमनमेरोकहाकहोंओरला जकीबात ॥ गुरजनलईकछुबातिजानिअवनिकसनदेतभवनकैंवा र॥ अतिव्याकुलजियमरतमसोसनिसुनिसुनिमुरलीडफधुंकार॥ ला जसौंकाजसरयोनहिमेरोस्यांमअंगव्हैहौंवनमाल ॥ जिहितिहिवि धिलैंचलिनागरियाजहांहोरीपेलतनंदलाल ॥ ४२ ॥ तिताल ॥ प नियांनजाउरींआगेंमचिरह्योष्यालरी ॥ वीचवटपारोठाढोमदनगु पालरी ॥ तैसेईउपाधीहैंरीनिलजसंगुवालरी ॥ हाथनिमैंपिचकारी फेटनिगुलालरी ॥ वहिदेपिआवैंछैलामदगजचालरी ॥ अवकित जाऊंरीदइयाडुरिइहिकालरी॥नागरियाकेंपेंपगहोतहैंन्हिालरी ॥ मे रोरूपभयोमेरेजियकोजंजालरी ॥ ४३ ॥ इकताल ॥ सुंदरसांवरी कोउआइहैनइनियांआज ॥ बेंदीदियेंजरायकीहोलियेद्रगनिमैंला ज ॥ घूंघटझीनौंचीरकोपहिरैंहारहमेलि ॥ अंगजोतिजगमगरही मानूंरचीनीलमनिबेलि ॥ झवामहावरउवटनौंलियैंधरतमंदगतिपां व ॥ रूपअचंभोव्हैरह्योवाकेंकौतुकलाग्योगांव ॥ समझिनैनकीसें नमैंघरलईविसापावोलि ॥ नायननायोसीसपायनिकौंकह्योभेदस बखोलि ॥ लैंआईजवनिकटकुंवरिरहीनिरपिरूपअभिरांम ॥ ना गरियाढिगवसीमहलमैंपूरेमनकेकाम ॥ ४४ ॥ इकताल ॥ अरीदे पियेमुरलीवालाप्रानजान ॥ फैंटाजरदअमैंठातिसपरतुररानाफरवां न ॥ जुल्फकेपेचपरेलपिआननपांनचवांन ॥ भौंहैंकसौंहैंचस्मछ कौहैंमारतहैंमुसकान ॥ दिलकूंभावतगैंदचलावतगावतहोरीतांन ॥ डोरीलगीदिलवोरीभईमनमोहनपरकुरवान ॥ होयसदाहैंअंगअदा

हैदेषिफिदाहैंज्यान॥ कियाघरघरइस्कउजागरनागरस्यामसुजान॥

राग ईमन ॥ इकताल ॥

इसहोरीपेलिवीचइतनीइज्तशवीक्या ॥ टुकरोकचलोदिलकों इहांरुकतानहिक्या ॥ छूवोमतदेपतेहैंनिजरवाजलोग ॥ जाहिरजहांनवीचइश्ककरनाहैक्या ॥ आपहीगुलालसाथआतेहोक्या ॥ लिपटेहीजातेहोक्याजीयहक्यामस्तहालसाहिवहोतुमकौंनहीनंग ॥ नागरपियारेजानदेपोइतनाभीक्या ॥ ४६ ॥ राग अडानों ॥ इकताल ॥ गांसगंसीलियेवातैंछिपाइयेइस्कनगाईयेगाईयेहोलियां ॥ गेंदवहानैंनत्नीराचलाइयैं ॥ सूधेंगुलालचलाइयैंझोलियां ॥ लोगवुरेचतुरेलपियांवेगेदावैरहोदिलमीतकलोलियां ॥ पांयपरौंजिनडरोपियनागरहायकरोमतिबोलियांठोलिया ॥ ४७ ॥ तिताल ॥ भरिभाजतइहिंओरसवनिमिलिगहिलीनौंचितचोर ॥ डरझिगयोपियवाहूलतनविचपरेप्रेमझकझोर ॥ अपअपलौंमनभायोकरलईपिचकारीकरनमरोर ॥ नगरियालैआईप्यारीदिगबांधिपीतपटछोर ॥ ४८ ॥ इकताल ॥ जाताकितैंकतरायेंलालरंगहोरीहैं ॥ व्हैंरहेयाव्रजवीचदुवहियांआईनवलकिशोरीहैं॥ठाढेरहोअववचैंवहुतदिनकदाचाचरमैं चोरीहैं ॥ नागरछैलछछंदछलीतुमपैकारियेसोयोरीहैं ॥४९॥ रागविहागरोइकताल ॥ रंगहोहोहोहोरीपेलैंलाडिलीवृषभानकी ॥ दामिनअंगरूपअमिरामिनिस्वांमिनितियरसपानकी ॥ मासमाघसुदिरकानिससुपप्रथमपेलिआरंभहैं ॥ होरीडांडोरुप्योग्वैरवेमनोंमदनरनपंभहैं ॥ वाजतडफदुंदभिसहनाईगोमुपआनकभेर ॥ सरसानौंफागसुखऔसरवरसानौंतिहिवेर॥नवसतअंगासिंगारसाजिजेरंगभरी

षिलवारीहो॥ अपअपनैंभवननितेंनिकसीबिचवृषभांनिकुंवारिहो ॥ कुंवरिकिशोरीजूकीसोभालषिसबहीतृणतोरैं ॥ सूरजमुषीझुकिजा तफिरकंवलमनौंचौंरढोरैं॥ बाबाओकीरतिजूताछिनवारेंरतनअमोल हैं ॥ षेलनचलीराजमन्दिरतेंकुण्डलहारसलोलहैं ॥ देषीप्रियाजबैं आवतउतमनमोहनअतिसुषबनैं ॥ सावधानभयेगोपसिमटिसववा जिउठेबाजेघनैं ॥ दुहूंदिसिआरिघमारिनकोसुरमिलिमंडपगयोछा यकैं ॥ शिवसमाधिछुटिगईश्रवनिसुंनिमुनिमनरहेलुभायकैं ॥ उत नंदनंदनरसिकसिरोमनिइतराधाअभिरामिनी ॥ उडतअबीरगुला लगगनचढिभईदिवसतेंजामिनी ॥ वृजनारीपिचकारीधारादैंरोकी अंचरपांनकैं॥ मुरिमुरिभरनिवचावनिछविसौंकोकरिसकैंबषानकैं॥ रूपलालचीलालवालकौंभरतहैंनियरैंआयकैं ॥ गहिलीनैंघनस्यां मसबनिमिलिदामिनीसीलपटायकैं ॥ अंगपरसिमैंरंगवढचोदोउप रिरंभनिउरझानैं ॥ नागरियाजबफिरीजोतिकैंबजतचलेसहदानैं ॥ ॥ ५० ॥ तिताल ॥ रंगहोहोहोहोरीमची ॥ अगनितछुटतकरनपि चकारीदुहुंदिशिचमकतरतनषची ॥ लालगुलाललयेमुखमीडनि मृगनैननिकीभौंहनची ॥ लिपटिगईघनस्यामलालसौंचमकिचम किचपलाललची ॥ दुरतगहतफिरकरतमनोरथदंपतिअंषियांपीक रची॥नागरीदासमिलनिझकझोरनिहोहाबोलनिकोउनबची ॥५१॥ इकताल ॥ होरीषेलिठाढ़ेदोऊकेसरिकीकीचबीचमोतीबेशुमारपरे हारनिरलकमैं ॥ रंगनिबसननिभीजेअंगनिलपटिरहेसरकेसिंगारदे षिविसरीपलकमैं ॥ स्यामाकेसह्वारतहैंनागरियाभूषनकौंत्यौंहीस षीस्यामकीसुआनन्दललकमैं ॥ लालनकेबेसुरीसुपाइप्यारीबेसरि

मैंप्यारीकरनफूलपायेलालकीअलकमैं ॥ ५२ ॥ तिताल ॥ चले मिलिभावतेरसअैन ॥ षेलिभागभुजअंसमेलिदोऊमत्तहिरदगतिगैन ॥ सोहतवसनगुलालसगमगेअरुआलसवसनैंन ॥ नागरीदासदोऊनमिलिकीनोंनवनिकुंजसुपसैंन ॥ ५३॥ रागपरज ॥ इकताल ॥ आजुहोरीपेलतसांवरो ॥ पिचकारनिधारनिवूकावंदनउड़िछायरह्योनंदगांवरो ॥ निरपिमदनजोरीरंगवोरीआयागिरचोतनतावरो ॥ नागरीदासचतुरहसिडारतचितवनिमेंउरझांवरो ॥ ५४ ॥ तिताल ॥ होरिपेलैंमोहनीमोहनसंग ॥ धांवनिभरानिवचावनिरोरह्योचाचरमेंमचिरंग ॥ बीननिपरनिप्रबीनमिलावैंनूपुरमधुरमृदंग ॥ गावतगारिधमारिनारिनवनित्ततस्यांमसुधंग ॥ रंगभरेलपटातभुजानिविचरुकतनप्रेमउमंग ॥ नागरीदासभईअंषियनिकीनिरपिनिरपिगतिपंग ॥ ५४ ॥ तिताल ॥ रंगीलीगालिनविचहोहोहोरी ॥ इतनंदनंदनरसिकलाडिलोउतवृपभानकिसोरी ॥ उड़तगुलालकछूनाहिंसूझतझकझोराझकझोरी ॥ नागरीदासपरसपरढारतभरभरकनककमोरी ॥ ५५ ॥ इकताल ॥ गलेविचइस्कपयाजंजाल ॥ क्योंमैंगईदिवानीपेषनिनंदनंदनदाण्याल ॥ मुहगुलालपूछणानूंमेरेलायारिंदरुमाल ॥ नागरीदासहुईउसछिणतैंसवसुपदीहटनाल ॥५६॥ तिताल ॥ अरीवृजमंडलपरमसुहावनोंइहांसदासहजरसरीत ॥ नंदगांववरसानैंकीअववोहोविधिवाढ़तप्रीत ॥ उतैंकुंवरनंदरायकोइतश्रीवृपभानकुमारि ॥ लगनलाजउरझौंहैंदोउनाहिसकतनिरवारि ॥ गनतरहतदिनफागकेयहआयोसोफाग ॥ ठौरठौरढफवाजहीअवदवतनहीअनुराग ॥ आजुपेलिआरंभहैंउमग्योहियैंहुलास ॥ येइतउ

तैं आयेदोऊबिचसंकेतनिवास ॥ गांनरंगगहगडमच्योबृजरह्योकु
लाहलछाय ॥ उड़तअबीरगुलालसौंनभदिनमनिनहिंदरसाय ॥ छै
लछलीछिपसांवरोफिरचल्योप्रियाभरिभाजि ॥ तवजुवतनिमिलि
गाहिलयोइतउठीदुंदभीवाजि॥ रोकिदियेबिचकुंजकैंरहीढिगश्यामा
मीति ॥ नागरियाइहिबिधिरहोनितबरसानेकीजीति ॥ ५७ ॥ ति
ताल ॥ रगमगेवसनगुलालरंगदोउछबिसौंलगिलपटायपरे ॥ प्राति
विंविततनमौजहोजपरछुटतफंवारेरंगभरे ॥ कुंजमहलरसफागमनौं
हररूपरीझिभीजिउघरे ॥ नागरिनागरवदनचंदमैंद्रगचकोरफिरि
फिरिनटरे ॥ ५८ ॥ इकताल ॥ दुहुंनिमैंआजुरहसिरसफाग ॥ ता
लतांनबंधांनगांनधुनिपरजगरजिरह्योराग ॥ बीनरवाबमृदंगमुरज
मिलिचल्योझमकिझंकार ॥ सषिनसहितदंपतिगतिलैलैंचलिछोड
तपिचकार ॥ दुहुंघातैंआवनिउलटनिकीछबिवरनीनहिंआवैं ॥ अ
लवेलीसहचरिचाचरमैंचहचरिचहूलमचावैं ॥ नूपुरनादसुनतविथ
कितरहेकोकिलमधुपमराल ॥ उड़तगुलालगगनआंगनसवहरित
कुंजमईलाल ॥ हुईअरुनसगवगेबसनतनरगमगेनेहनवीनैं ॥ लटप
टायलपटानैंतिंहिंछिनगउरश्यामरंगभीनैं ॥ सिथलअलकटूटीउर
मालागरवहियांमुसकातेनागरियाहियवसेमहलमैंहोरीकेमदमाते ॥
रागपंभायची तिताल ॥ आजुफागसुपसरसांनौंवरसांनौंशोभादेत॥
आयेंश्रीवृषभानजूकेंगोपराज ॥ सुंदरसिंगारेसबबीचबलरामश्या
मसोहैंसंगरंगभरयोकुंवरसमाज ॥ कीरतिजशोदामिलिजारिनमैं
झांकैंझूमिमिलेवृजराजादोउउरलपटान ॥ होतरसरीतिनकेविवि
धिविनोदतहांधनधनवरषैंमहिंद्रवादावृषभान॥ ठौरठौरवाजेंडफगा

वैंवृजनारिगारिगहिमाहिंभीरभईउमग्योहुलास ॥ होरीकोत्योंहार फिरिमिल्योसमधानौंतामेंआनंदकुलाहलव्हैवीचरानिवास ॥ नंद कोकुंवरवृषभानगोदलियैंवैठेलीयेनन्दवृषभानकीकुमारि ॥ दुहुनि कैंहाथदैंगुलालहिंपिलायेजवनागरियाबहुतांनदीनैंप्रांनवारि ॥६०॥ आनकाविकत ॥ तिताल ॥ रह्योरंगहोलीसरसाय ॥ एकणादिसि प्यारीहुईहुवाएकणदिसपियआय ॥ गावैंसर्पीसुहावणीसाथेरुंजमु रजसोहैंसाज ॥ कुंजसदनरेंआंगणैंरह्योमदनझुझाउवाज ॥ फागु णसमैंसुहावणौंपेलैंनवलरंगीलापेल ॥ उडिगुलालघुमडीघणौंवहि चलीधरणिरंगरेल ॥ लूंमझूमिलपटाइयादोन्योंमुपमांडणरेंप्याल ॥ रसिकविहारनिलाडिलीपियरसिकविहारीलाल ॥ ६१ ॥ राग सोरठ ॥ कान्हानिलजगारिजिनदेरे ॥ हौंहारिहाहाअबतोसांनैं कलाजमुपलैंरे ॥ अबयाबगरभूलिनहिंएहौंसौंहबबाकीहैंरे ॥ नाग रियानवबधूविगोईहोरीमांझसवेरे ॥ ६२ ॥ इकताल हौंपियनैंनानि कीनीबोरीकहाकहौंकलनपरतदिनरातियां ॥ सोवतजागतचलतफि रतअबमोहितलफतहीवीततछिनछिनलगीइहिंमुपकीढोरी ॥ इननैं ननिकैंहाथविकानींदेपनिकौंउठिदोरी ॥ नागरियायरवरजितर जिरहीहौंनरहींजियलरजिडारीतुमहोरीमैंरूपठगोरी ॥ ६३ ॥ इकताल ॥ मोहनवारीबसिकीजैं ॥ हसिलीजैंहोरीमेंहाहारेएसीगा रिक्योंदीजैं ॥ हाहापायपरतहौंप्रीतममोजियलाजनभीजैं ॥ नागर नवलदिहारीप्यारेजोचाहैंसोलीजैं ॥ ६४ ॥ तिताल ॥ प्यारीजूकेपुलिगयेसौंघैंभीनैंवार ॥ देषिसपीयहरीतअनोषी बंधिगयोमनारिझवार ॥ झूलिरह्योवैनाप्रीवाढिगटूटिरहेंटरहार ॥

नागरियायहछबिहियेंबसिबिचमनमथरंगाबिहार ॥ ६५ ॥
इकताल॥ बोलैंरंगहोरीहोरीहोरीडोलैंरसमत्तगोपवृंद ॥ तामाधिमाधि
नायकवृजचंदनंदनंद ॥ निकसतजहांजहांहोजकेसरिकीकीच ॥
करतहैंकुलाहलवृजबीथिनकैंबीच ॥ भरतहैंनिसंकजायतोरिकैंकि
वार ॥ छांडतमनभायोकरिफागमअग्वार ॥ सुनिसुनिडफदुंदुभिबि
चमुरलिकारसाल ॥ झुंडनिमिलिझूंमिझूंमिआईवृजबाल ॥ गाइ
उठिगारिगराजिरूपकीघटा ॥ उडिगुलालदुहुंओरअटिगईअटा ॥२
होतांबिबिधषेलिबढ्योसिंधुरसहिलोर ॥ गिरिगिरितहांपरतगलिन
मांझहारडोर ॥ नीकैंनाहिंसकतलपिजिनकेमुषमयंक ॥ तिनकौंला
लधूंधिरमैंनिसंकभरतअंक ॥ ३ ॥ छूटिछूटिअंचारिगयेषूटषूटबार ॥
हारटूटपगनिपरतमानतनहींहारं ॥ राधेसैंनपायसिमटिधाईसबबा
ल ॥ कहिहोहोहोरीहोरीपकरेनंदलाल ॥ ४ ॥ पैंचतइककिंकिनी
कटिफिरतसंगसंग ॥ रोरीलपटातएकलपटतअंगअंग ॥ गउरस्यां
मउरझनिछविबढ्यौरंगरंग ॥ नागरियानिरषिनैंनभयेपंगपंग ॥५॥
॥ ६६ ॥ इकताल ॥ रसफागआजुबाजेंडफदुंदभिसहनाई ॥ कल
गारनिधमारनिधुंनिगानरंगछाई ॥ सबषेलनिकोउल्हयेउतकंठतम
ननैंनां ॥ वोहोसाजिकैंचलीहैंमानौंअनंगसैना ॥ उतमोहनारंगी
लोइतराधेरंगबोरी॥ वृजबीथनिपरसपरमांचीहैंरंगहोरी॥पिचकारीरं
गधारावोहोछूटतसुहाई॥घुंमडिगुलालधूंधरिकछुदेतनादिपाई॥ भरि
भाजतपकरिलैंसिरनावतकमोरी॥दुहूंओरव्हैंरहीहैंझकझोराझकझो
री॥पटअंचरउसरिगेउरहारडोरटूटे ॥ झुकिझूलतहैंवैंनावरवारपी
टछूटे ॥ तियदामिनीनघेरयोघनस्यांमरंगभीनैं॥कोऊलैंगईहैंवंसीप

टपीतपैंचिलीनौं ॥ वनमालाकौंउतारतवनमालहोतप्यारी ॥ यह छविनागरियाटरैंनाजियसौंटारी ॥ ६७ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ विचवृजनारयांरैंझुंडराधारूपहैंरूडो ॥ ग्रीवझुकायांझूमकनाचैंसीसकेसांरोजूडो॥ केसरिरंगभीजीसाडीमैंझलकरह्योछैंचूडो ॥ देपिछक्यापियरसिकविहारीरह्याधीरघरकूडो ॥ ६८ ॥ इकताल॥ वृजफागुनआजसुहायो ॥ आनंदरूपधरिआयो ॥ हुल्लासहियेन समावैं ॥ नटनागरिधमारगावैं ॥ इतवधूवृंदसुपरासी ॥ उतरंगभरे वृजवासी ॥ दोहा ॥ वृजवासीरहेरंगभरि, मोहनकैंअनुराग ॥ जुवतिजुत्थसनमुपचले, मुदितमचावतफाग ॥१॥ मुदितव्हैंफागमचावैं ॥ डफकुंजगुंजरितआवैं ॥ भीनैंरंगसौंभातिभलीहैं ॥ मनुकामकीफौजचलीहैं ॥ सबकरतकतूहलग्वाला ॥ माधिनायकनंदकेलाला ॥ २ ॥ दोहा ॥ माधिनायकनंदलालउत, इतराधेसुकुवारि ॥ संगछिपाकरिकैंमनौं, उडगनिसबवृजनारि॥उडगनसबवृजनारी॥ उमडीआवैंगावतगारी ॥ मुपतैंकछूघूंघटटारे ॥ सोहैंसुंदरश्यामनिहारे ॥ चलीअछनिअलच्छकटाछैं ॥ मांच्योनैंनपेलिअतिआछैं ॥ दोहा ॥ नैंनपेलिआछैंमच्यो, दुहुंदिशिचतुरपिलार ॥ रहेजुइतउतरीझिकैं, गउरश्यामरिझवार ॥ ३ ॥ रिझवारश्यामअरुगोरी, मद्मचीपरस्परहोरी ॥ पिचकारिनकोझरलायो, वनसांवनसौंदरसायो ॥ भयोउडिगुलालअंधियारो ॥ विचझलकतलालटिपारो॥ दोहा ॥ लालटिपारोझलकहीं, धूंधरिमांझगुलाल ॥ तिहिंसुधधावतभरनमन, हरनतरुनवृजवाल ॥४ ॥ मनहरानितरुनिवृजवाला॥ मनुपेलतिदांमिनमाला ॥ इकभरतअंकघनश्यामैं॥इकपेचतमुक्ता

दामैं ॥ इकपौंछतिहैंमुषपानन ॥ इकलेतउगारहिंआनन ॥ दोहा॥ आंननलेतउगारइक,घायलबांननमैंन॥ इतउतदोऊरसपगे,पगेनैंन विचनैंन ॥ ५ ॥ पगेनैंनविचनैंना ॥ रंगकह्योपरतनाहिंवैंना ॥ टूटे हारडोरमनिमाला ॥ छूटेछबीलेवारविसाला ॥ फूटिचुरियानीवी पुटीसी ॥ठाढीमैंनकीसैंनलुटीसी॥दोहा॥ लुटीमैनकीसैनसी, थकीपे लिरसफाग ॥ जीतिलालकोंलैंचली, भरीमहाअनुराग ॥ ६ ॥ अनु रागभरीरंगमाहीं ॥ दईगउरस्यामगरबांहीं ॥ सौंहैंफागषेलिगठजो री ॥ मनमोहनसंगकिसोरी ॥ आयेकामकेकुंजनिवासनि ॥ सुष दीनोंनागरीदासनि ॥ ७ ॥ आनकविकृत ॥ राग ॥ मनमोहनसो हनस्यांमनंदढटोनांरो ॥ बिनदेषेपलकलनपरतहैमेरोजीवलगोनां रो॥होरीमैंमोपैठगोरीसीडारीहौंरिझईरीझिरिझोनांरो॥षेलौंगीमिलि रसिकविहारीसौंवाबिनषेलअलोनांरो ॥ ६६ ॥ रागधनाश्री ॥इ कताल ॥ तूहीकहकैसैंकरूंमेरोरूपदुराऊंकिहिंभांतरी ॥ घूंघटमैं नाहिंदवतनिगोडीमेरेगउरबदनकीकांतरी ॥ निकसनसकौंभौंन तैंबाहरकौंनवन्यौंयहजोगरी॥हौंसुन्दरअरुयाबृजकेहैंरूपबावरेलो गरी ॥ मोहनकुंवरलग्योंहैंआतुरअधिकअधीररी ॥ मोहिरूपील पिनारिनायरहोजातनैंनभरिनीररी ॥ विनहोरीयहगतिजासौंकैसैं रहूंबचायरी॥अबनागरडफफागझुझाऊमेरेसिरपरवाजेआयरी७० राग ॥ मोहिहोरीषेलनदेनंदबारेसौं ॥ छाड़िछाडिवहियांननंदीय हउधमदेतसांवरेसौं॥ लैलांवनकेसिलागवंसगहिंषेदओढगीहारेसौं॥ नागरियेअवतोटारेवानाहिंफागुनरंगअपारेसौं ॥ ७१ ॥ राग ॥ सब कीहैंचोटनिसांनेपैं ॥ नैंनांबांनछुटैंचहुघांतैंचंद्रिकावहरंकबांनेपैं ॥

लाधनिहूकीभीरलगिरहीमनलोचनपरसानेपै ॥ जानागरपरयहव्रुजअटक्योसोअटक्योबरसानेपै ॥ आंनकविकृत ॥ रागनाइकी ॥ तिताल ॥ होहोहोरीकहिबोलैंसबवृजकीनारि ॥ नंदगांवबरसांनेपेलमैंगावतइतउतरसकीगारि ॥ उड़तगुलालअरुनभयोअंबरचलतरंगपिचकारकीधारि ॥ रसिकविहारीभानदुलारीमाधिनायकदोऊपिलारि ॥ ७२ ॥ आनकविकृत ॥ इकताल ॥ एजुनीकैंतुमजाहुचलेजिनभरोमेरीसारी ॥ सुंनिस्यांमसुंनिस्यांमसोहैंतिहारीयाहीवेरछिनायलैंहुंकरतैंपिचकारी ॥ अबकछुमोपैंसुन्यौंचाहतहोगारी ॥ घरमैंईसीपेढंगरसिकविहारी ॥ ७३ ॥ तिताल ॥ क्यौंसतरानैंहोरीहैंजूसुकुंवार ॥ गरैंपरैंबिनन्यारोरहौंक्यौंतिहारेहियकोहार ॥ पंडितमदनदयोमोकोंयहफागुनमंत्रविचार ॥गारतिहारीप्यारीप्यारीलागतहैएनागरियाइहिंवार ॥७४॥ रागनाइकी इकताल ॥ सांवरोपेलअटपटोपेलैं ॥ कौंपेलैंवाकैंसंगसजनीबरवटधींटभुजनभरिझेलैं॥ मोहीसोंकछुवैरपरयौंताकिपिचकारीउरविचपेलैं ॥ नागरीदासलाजहौंभीजौंबडडेनैंननैंनसौंमेलैं ॥ ७५ ॥ आनकविकृत ॥ म्हारासाचाकररहस्यांजीम्हेराजराचाकररहस्यांराजकुंवराकिसोरीजी ॥ फूलविछाताजास्यांआगैंलियांपीतपटछोरीजी ॥ सूरजसुपीछाथलियांफिरस्यांछांहिकियांमुखगोरीजी ॥ रसिकविहारीरहाटहलमैंहोसीरंगरलीभारिहोरीजी ॥ ७६ ॥ आनकविकृत ॥ तिताल ॥ भींजैंसारीचूनरीहोनन्दलाल ॥ मतिनापौंकेसरिपिचकारीहाहामदनगुपाल ॥ भीजवसनउघडयासीअंगअंगकौंणनिलजयहप्याल॥रसिकविहारीछैलनिडरथेमानैंतोजंजाल ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ मतिटोकोरोकोमती

चलाजाहुइणगैल ॥ रंगभरोमतिभांवता, मतिजीमतिपियछैल॥१॥ मनहांमैंएरहणद्यो, इसाअटपटाफैल ॥ रंगलग्योछिपसोनहीं, मतिजीमतिपियछैल ॥ २ ॥ चुगलचवाईगांवयो, बुरालोगअणपेल ॥ कांईपेलोप्यालए, मतिजीमतिपियछैल ॥ ३ ॥ रसिकविहारीप्यालए, सीप्याभलाअडैल ॥ पगांपडांछांहाथजी, मतिजीमतिपियछैल ॥ ४ ॥ राग ॥ कन्हैयामाईआंपिनहोरीमचावैं ॥ अंपियनमैंअनुरागअरुनईअंषियानिरंगरचावैं ॥ अंपियनमैंललचायललाकी अंपियनमैंललचावैं ॥ नागरीदासपैठअंषियनिमैंफिरअंपियनतरसावैं ॥ ७८ ॥ राग झंझोटी ॥ राग झुरमटरा ॥ अनीहाहोनंदमहरदानागरमैंनरंगभैरवरबटरा ॥ क्यौंकरपनीयांजाउंसजनीराहठाढोपनघटरा ॥ हाहाकरतभरतजूवतनकौंरसिकविहारीनटरा ॥ आन कवित्त ॥ रागकाफी ॥ कैसेंजलजाउमैंपनघटजाऊं ॥ होरीषेलतनन्दलाडिलोरीक्योंकरनिवहनपाऊं ॥ वेतोनिलजफागमदमातेहौंकुलवधूकहाऊं ॥ जोछुवैंअंचररसिकविहारीतोहुंधरतीफारसमाऊं ॥ ७ ॥ रागकाफी ॥ आन कवित्त ॥ मनमोहनमेरीअंगियांरंगडारीरे ॥ याहोरीमेंलाजरहैंक्यूंसासनणंदडरभारीरे ॥ तुमतोछैलगैलनितरोकोहोंआउंसंगनारीरे ॥ काहेनिडरधीटवटपारेहुवारसिकविहारीरे ॥ ८० ॥ तिताल ॥ हरिसौंअटकाग्वारनिगोरीलगिरहीरूपसुरतचितडोरी ॥ मदमोकलगजज्यौंगोकुलमैंकुलसंकुलगहितोरी ॥ बिनदधिहीदधिबेचतबीथनिकछुसुधिरहीनथोरी ॥ बिरहविवसंजानीनगईकहूंसिरतैंगिरतकमोरी ॥ नागरियाकौतिकसबलागीवालकवैसाकिसोरी ॥ पुलिगयेबारसुधिनअंचरकी

फिरतप्रेमझकझोरी ॥ ८१ ॥ वादणो ॥ प्रथमवीजनैंननिवयेमु
सकनिअंकुरजागेरी ॥ नेहवेलिरहीफूलकैंभरहोरीफललागेरी ॥
पेलोहोरंगीलीहोरीरंगसौं ॥ १ ॥ प्रगटहोनलगियारयांव्रजफागअ
मलसरसानौंजू ॥ नागरियाउरझेनंदीसरसुवसवसोवरसानौंजू ॥
पेलोहोरंगीलीहोरीरंगसौं ॥ २ ॥ वरसानैंनंदगांवमैंफागपेलव्हैगर
वारीजीतिरहीव्रजनागरीहारेहरिभारवाभरवारी ॥ ३ ॥ ८२ ॥ पे
लोहोरंगीलीहोरीरंगसौं ॥ अथ होरी ॥ राग ॥ आजुपेलतहोरी
सांवरो ॥ पिचकारनिधारनिवूकाउठिछारह्योनंदगांवरो ॥ १ ॥ नि
रपिमदनजोरीरंगवोरी ॥ आयगिरचोतनतांवरो ॥ नागरीदासचतु
रहसिडारतचितवनिमैंउरझावरो ॥ २ ॥ राग ॥ होरीपेलेमोहनी
मोहनसंग ॥ धावनिभरनवचावनरीरह्योचाचरिमेंमचिरंग ॥ १ ॥
वीननिपरनप्रवीनमिलावैंनूपुरमधुरमृदंग ॥ गावतगारिधमारिनारि
नर्ततश्यामसुधंग ॥ २ ॥ रंगभरेलपटातभुजनविचरुकतनप्रेमउ
मंग ॥ नागरीदासभईअंपियनकीनिरपिनिरपिगतिपंग ॥ ३ ॥
॥ राग ॥ रंगमोहनकेअनुरागी ॥ लोचनकहादुरावतहेलीनवलरैं
नमिलिजागी ॥ झलकतउरआनंदरंगतुवअंगअंगरसपागी॥याहोरी
मैंनागरियादृगप्रीतश्यामसौंलागी ॥ ३ ॥ राग इमन ॥ मुरवारी
वेसरिकान्हसुधारी ॥ नैंनमिलायसकुचिउरझावतउरझेवालविहा
री ॥ उरझिगयेवनमालपीतकिंकनिउरझीसारी ॥ नागरीदासफा
गमेंउरझेहियउरझेपियप्यारी ॥ इतिश्रीहोरीउत्सव ॥

## अथ फूलरचना ॥

॥ दोहा ॥ फूलेफूलनिस्वेतविच, अलिवैठेमधुलैंन ॥ दंपति

हितवृंदाविपिन, धारेअगनितनैंन ॥ १ ॥ रंगरंगभूषनफूलके, रहे फूलतनझूल ॥ अंतरकीबाहिरमनौं ॥ प्रगटीअंगअंगफूल॥२॥वनफूल्योफूल्योजुमन, फूलवेसअभिराम ॥ सवैंकरीफूलनिसफल ॥ मिलिकैंगौरीस्याम ॥ ३ ॥ फूलेफूलेलसतहैं, दोउदियेगरबांह ॥ लषिफूलीनागरसषी, फूलीकुंजनिमांह ॥ ४ ॥ पद राग बिहागरो ॥ ताल चपक ॥ फूलेवहोफूलनिसौंबृन्दावनसोभादेत ॥ तामेंफूलीराकानिसअतिछबिछाईहै ॥ कुंजकुंजफूलपुंजगुंजतमधुपमाति फूलनिसौंमिलीमंदपौनसियराईहैं ॥ सोहैंस्यांमास्यामपैंसिंगारस जैंफूलनिकेफूलभईहियेंलषिफूलीवनराईहैंनागरियादुहुंफूलनिसफलकरिभुजधारिअंसफूलरहेसुखदाईहैं ॥ १ ॥ इकताल ॥ फूलनिकेवेषनवबसनबनायलियेफूलनकीक्यारीसीकुंवरिअलवेलीहैं ॥ फूलनिकेभूषणबसनभांतिफूलनिकेफूलभरीछबिभरीहरीयेनचेलीहैं ॥ अधरमधुरमकरंदलैंनफूलनिकौंफूलसौंअलिंदस्यामभुजनिसकेलीहैं ॥ फूलीहैंजुन्हाईतामेंफूलपंकवानिनकीनिरषैंअकेलीनागरिसहेलीहैं ॥ २ ॥ ताल चपक ॥ फूलमहलमैंफूलीजोंन्हिजगमगी ॥ तामेंफूलेकरैंकेलिस्यांमास्यामसुषझेलिफूलनिमरगजीवासरगमगी॥ फूलनिकीसैंनीपरराजतविथुरीबैंनीफूलीहैबदनजोतिमदनअगमगी॥ फूलसरअरसांनैंफूलरंगभायेसोवेनागरियामोहेमनरीझनडगमगी ॥ ॥ ३ ॥ राग परज तिताल ॥ सषीआजुनिरषिसुषपुंजरी ॥ तहांमैंनगांनअलिगुंजरी॥ दंपतिहियफूलनिलियैंहैवहोफूलनिसौंफूलीनवकुंजरी॥ फूलनिकीसैंनीपरदीन्हेगरबांहींतनफूलनकेसोहतसिंगाररी ॥ फूलनिकीफूहींहालिबरषैलताहैंहोततैसीफूलकीबहतबयाररी॥ फूली

हैंउह्हांईफिरिमदनदुहाईहोइरहेआरतिगउरश्यामगातरी ॥ फूलनि सफलकरीनागरियाआजुहोभईपरमसलौंनीयहरातरी ॥ १ ॥ राग पंभायची ॥ ताल जात्रा ॥ सपीदेपिनवकुंजछविपुंजकुसमितमहा करतअलिगुंजमनुरुंजबाजैं ॥ जौन्हजगमगसुमनवासरगमगतहां मदनडरडगमगतलाजमाजैं ॥ कमलसयनोयपरकमलनयनोकम लनैंनचैंनीरंगेरंगरैंनी ॥ लालकीअलकपरवालफूलहिधरयोफूल सौंलालरचीबालवैंनी ॥ हारपियकरतमनुहारकरहारटूटैबिथुरबार छूटैं ॥ सुरतसुषसुभटदोऊलिपटहींनिपटद्रढकंचुकीपटकपटग्रंथपू टैं ॥ गउरसांवरअंगसंगअतिरंगभुवभंगद्रगद्रगनिमैंपंगकीनैं ॥ मंद बतरानिमैंदामिनीरदनदुतिछबिसदनवदनरसभीनैं ॥ मधुरमधुअध ररसरसनांरसतहसतमुखहसततांबोलदैंहीं ॥ बंधेभुजपाससुभवास पुलकतअंगनागरीदाससुखरासलैंहीं ॥ १ ॥ राग केदारो ॥ तिता ल ॥ फूलभरेपियप्यारीफूलनिसौंबेलिहीं ॥ फूलनिकेहारझूलतझ वाफूलनिकेफूलनिचलायझुकिझेलिहीं ॥ फूलहिंजुन्हइयाकुंजफूल केबिछौनांतहांदोऊचढेआनन्दअलेलिहीं ॥ नागरियासपीसबफू लभरीआंपिनिमैंफूलनिकीकेलिहिसकेलिहीं ॥ १ ॥ इकताल ॥ महाकिरहीफूलनिकीनवलनिकुंजसुबास ॥ फूलनिकीरचनालपिन्है जहांमहाकिकामहुलास॥फूलनिकेभूपनदंपतितनचंद्रिकारहीप्रकास ॥नागरियागावतकेदारोतहांसपीसघरआसपास ॥ राग अडानों ॥ ॥ इकताल ॥ एकगुलाबकेफूलनिकोपंपुरीबिथुरीसुपसेजअकोरें ॥ एकहीमालागुलाबकेफूलकीझूलिरहीतनसांवरेगोरें ॥ एकगुलाब कोसीसीलसीकररंगसौंअंगसुढारनिढोरें ॥ एकगुलाबकेफूलकोना

गरसूधैंदोउमुपसौंमुपजोरैं ॥ १ ॥ तिताल ॥ फलनिकोसैंनीपैंपि
यप्यारीमदनरंगरगमगे ॥ फूलनिकेहारमरगजेव्हैंरहेउरगुलावसग
मगे ॥ काननफूलऌगिरहेआननपरमप्रेमअगमगे ॥ फूलीसपीना
गरिकेनैंनपुभेदंपतिमैंफिरिनतहांतैंडगमगे ॥ २ ॥ तिताल ॥ फूल
महलकालिन्दीकूलि ॥ फूलभरिद्रुमलताललितजहांजलपरसत
झुकिझूलि ॥ फूलनिमैंफलमैंननिकेदोऊधरैंग्रीवभुजमूलि ॥ नाग
रियानागररसबससषीनिरषिरहीसुधिभूलि ॥ ३ ॥ आंनकविक्रत ॥
॥ राग षंभायची ॥ तिताल ॥ कुंजपधारोरंगभरीरैंन ॥ रंगभरीदु
लहनिरंगभरेपियस्यांमसुन्दरसुखदैंन ॥ रंगभरीसैंनीयरचीजहांरंग
भरयोउलहतमैंन ॥ रसिकविहारीप्यारीमिलिदोऊकरोरंगसुषसैंन
॥ १ ॥ आनकविक्रत ॥ यापदकीअलापचारी मैं दैंने ए दोहा ॥
गहगडसाजसमाजङ्गत, अतिसोभाउफनात ॥ चलिबिलसोमिलि
सेजसुष, मंगलगलतीरात ॥१॥ रहीमालतीमहाकितहां, सेवतकोटि
अनंग ॥ करौंमदनमनुहारमिलि, सबरजनीरसरंग ॥ २ ॥ चलेदो
ऊमिलिरसमसे, मैंनरसमसेनैंन ॥ प्रेमरसमसीललितगति, रंगर
समसीरैंन ॥ ३ ॥ रसिकविहारीसुषसदन, आएरससरसात ॥ प्रे
मवहुतथोरीनिसा, व्हैंआयोपरभात ॥ ४ ॥ आनकविक्रत ॥
॥ तिताल ॥ सुरंगीसेजांरंगमगरह्यासुषसैंण ॥ हारांउरझ्याहाराहि
यारानैंणांउलझ्यानैंण ॥ मनमथअमलअगाधाबोलैंआधाआधा
वैंण ॥ रसिकविहारीप्यारीमिलिआनंदमेंसोहतबितइछैरेंण ॥ १ ॥
इतिफूलरचना ॥

# अथ राम जनम बधाई ॥

॥ दोहा ॥ वडिगहगडगहमहमची, घनसेघुरतनिसांन ॥ उदयाचलअवधेसपर, प्रगट्योरघुकुलभांन ॥ १ ॥ कोलाहलकलगांनलषि, आनंदचहुलउतंग ॥ इतछितकेरहेछकिउतैं, छकेविमानीपंग ॥ २ ॥ जनमसमयआयेजिते, विप्रगुनीवृन्द्ववाल ॥ लोकपालसेतेकिये, दशरथअवधिनृपाल ॥ ३ ॥ बिधिनांतोसौंकहतहौं, एपुरवोममआस ॥ वेगवढोफूलोफलो, जाचतनागरीदास ॥ ४ ॥

॥ राग बिलावल ॥ ताल जात्रा ॥ उदधिअवधेसअर्धंगप्राचीदिसाप्रगटेश्रीराकेसजगतमहरन ॥ गीतवहोवाद्यवेदादिआनंदरवपूरिरह्योनादसुजसक्तगगनमंडलधरन ॥ वरपैंनृपनगरपरअमरपहुपांजुलीकनकमणिमहलकैंसिपरसुपमांपरन ॥ नागरीदासरघुवीरवरजनमदिनडरतविध्वंसबिचाविश्वमंगलकरन ॥ १ ॥ रागबिलावल ॥ ताल जात्रा ॥ अवधिपुरधांमआरामविश्रामसुनिप्रगटेजहांरामअभिरामनयनं ॥ श्यामतनवरनमनहरनमंगलकरनधरनिविचउरनिनितिअमलअयनं ॥ हंसकेवंसमैंहंसहीउदितअवतंसजगयोग्यप्रसंसवयनं ॥ नागररघुनंदसुरवृंदवरवंदसोसच्चिदानंदकरैंपलनांसयनं ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ तिताल ॥ भयोहैंआजअवधिआनंदझरभींजिरहेनरनारि ॥ रामजन्मसुपसिंधुवढ्योसबभूलेअंगसह्मारि ॥ गांननिसानदांनमंगलधुनिछईभवनिप्रतिद्वारि ॥ नागरदेवविमाननिविथकितआयेलोगबिसारि ॥ ३ ॥ इकताल ॥ रामजनमदशरथघरबाजैंवधाई ॥ इतैंअवधिअरुउतैंअमरपुरदुहुंनिकीमिलिधुंनिछाई ॥

षोजतरहेसदाशिवसुरमुनिजाकोरूपरसायनहाथनआई ॥ नागरध न्यअयोध्यावासीसोघरवैठेनिधिपाई ॥ ४ ॥ रागकाफी ॥ तिताल चलिरीआजुहैंमंगलचार ॥ राजादशरथकैंदरबार ॥ अतिसुन्दर श्रीरामस्यामतनप्रगटेराजकुमार ॥ पावतगुनीदानबोहकंचनअरुम निमुक्ताहार ॥ नागरीदासअमंगलमिटिगयेमंगललोकअपार ॥ ॥ रागकाफी ॥ तिताल ॥ अवधिपुरवाजतआजबधाई ॥ भई नगरपरभीरविमानननप्रगटभयेरघुराई ॥ बरषतकुसुमधुजाकलसनि परअतिशोभाउफनाई ॥ नागरीदासगांनमंगलधुनिछायरहीसुषदा ई ॥ ६ ॥ इतिश्रीरामजनमउत्सव ॥

## अथ श्रीमहाप्रभुजीको उत्सव ॥

राग ॥ राधाकृष्णगोवर्द्धनधारी ॥ बृन्दावनयमुनातटचारी ॥ ललितादिकवल्लभबिठलेस ॥ मोमनकरोकृपाआवेस ॥ १ ॥ श्रीन गेंद्रधरनागरनायक ॥ निजबल्लभरसपुष्टिप्रदायक ॥ तस्यकृपाब्र जभक्तउपासी ॥ सांवतेसबृन्दावनबासी ॥ २ ॥ राग ॥ प्रगटेहैंश्री वल्लभदेव ॥ वहोजीवनकैंभयेसुगनसुभसोंसमुझोमैंभेव ॥ गोकुलहर पहरषगिरराजहिव्हैंहीब्रजवईभवसुषसेव ॥ नागरीदासगोवर्द्धनधा रीहरषेनेहलाडकीटेव ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ समैंघोरकलिकालधर्मपद छेदनकीनैं ॥ बिफलक्रोधकंदर्पजीतिजीवनिकौलीनैं ॥ लोभमोह तैंकरीप्रवर्तिमारगमतिपंगी ॥ चितचंचलअतिअजितनीचसंगीविहो रंगी ॥ नागरीदासनऔरकछुत्रिबिधतापसीतलकरन ॥ प्रगटितबल्ल भवदनातिहिंसरनमंत्रकीहौंसरन ॥४॥ इति श्रीमहाप्रभुजीकोउत्सव ॥

# अथ हिंडोराउत्सव ॥

या पदकी अलापचारीमैं दैंनेंये

दोहा ॥ मानभवनभईभीरमिलि, झुंडनिझूलतबाल ॥ सर्षीवेष तहांदेपिहों, रूपलालचौलाल ॥ १ ॥ झूलतझूंडउमंडवहु, रंगरंग पहरिदुकूल ॥ वालालालाकोमनौं, रह्योबगीचाफूल ॥ २ ॥ उत रिझमकिझूलैंचढैं, रंगरंगपहरानिचोल ॥ लालमुनीयनकोमनौं, झुंड निमचीकलोल ॥ ३ ॥ नीलवसनगोरैंवदन, झूलततियरसकंद ॥ आवतजातबिमानज्यौं, घटालघेटैंचंद ॥ ४ ॥ रसकृतप्रियाहिंडोर नैं ॥ छबिदुरिदेपतपीय ॥ वेझूलतयेभ्रमितकटि, लचकनिलचकत जीय ॥ ५ ॥ झूलतठाढीप्रियाहिलपि, रहेलालसुधिभूलि ॥ फहरत अंचरचंद्रिका, बैंनीबरपतफूल ॥ ६ ॥ झूलतछबिउमचीअधिक, मचकतद्रुमचीवांम ॥ उचटैंचोटीपीठमनौं, लगैंचमोठीकांम ॥७॥ दावनलावनदुहुंनिके, बाजतआवतजोर ॥ वैंनीहारहिलोरहीं, वढि झोटाझकझोर ॥ ८ ॥ झूलतझोटाचढिगगन, बैंनगरजसमतूल ॥ गउरघटाअरुसांवरी, बरषतहारनिफूल॥९॥वरजैंदुनींहठचढैं, नाग कुचनसंकाय ॥ तूटतकटिद्रुमचींमचकि, लचकिलचकिवचजाय ॥ ॥ १०॥ नागरीदासहिंडोरनैं, सोभामनअवरोपि ॥ प्रेमझुलनिझूल्यो करैं, दंपतिझूलनिदोपि ॥ ११ ५ रागमल्हार ॥ ताल ॥ झूलतरसिक मोहनराय ॥ संगभामिनदामिनीघनबीचमनौंदरसाय ॥ कटिलच किमचकानिचलतअंशुनलेतचितकौंचोर ॥ बढिगईझूलनिअननानि किंकिनीधुंनिसोर ॥ नीलपीतदुकूलफहरतहुटीनवनमाल ॥ गयो

अंचरछूटिउरउरमिलतझुकिझुकिबाल ॥ छईचहुंदिसिमेघमालाछ
योरागमलार॥ दासनागरतिहसमैंसुपबढयोविपुनविहार ॥ चर्चरी ॥
नवकदम्बअंबकेलिचंपागहवरतमालपरसतझुकिजमुनातीरलगिस
मीरलहर ॥ रच्योहैतहांबरहिंडोलबल्लवीनकृतसलोलनवनिचोलरं
गरंगरमकतरहेफहरफहर ॥ पावसरितबनविहारगानरंगधुनिमलार
वीचरलीमुरलीसुनिआवतघनघहरघहर ॥ राधाहरिझूलतलषिबर
पैंकुसमसुरबिमानछबिनिहारनागरमनरतिपतिरहेहहरहहर ॥ २ ॥
॥ राग गौरी ॥ तिताल ॥ नई कौन हैं झलनि हारि ॥ टेक ॥ दो
हा ॥ स्यामाकैंसंगछबिभरी, सोहतसषीनवेलि ॥ अतिसुन्दरतन
सांवरी, अरीमनहुंनीलमनिबेलि ॥ १ ॥ स्वेदकंपरोमांचव्है, जां
नपरतकछुतोत ॥ झुकिझुकिझोटामैंहसहि, कुंवरलजोंहींहोत ॥ २ ॥
निरषौंफूलनिनेहकी, सषीचतुरसिरमोर ॥ हमजानीजानीसवैंअरी,
यहझूलनिकछुऔर ॥ ३ ॥ सवैछकायेनागरी, द्रगनिसुधासोंप्या
य ॥ कपटरूपधरिमोहनी, अरीप्रगटभईवृजआय ॥ ४ ॥ ३ ॥
राग इमन ॥ चौताल ॥ भीजहींभीजहींरीझिभीजिहींझूलतलाल
भीजहींनवलनेहरसअटके ॥ झोटालेतहरैंहरैंभुजमूलग्रीवधरैंहसिह
सिवातैंकरैंनियरैंनिपटछूंवलटके ॥ भीजतपटलपटेप्रगटअंगलषिर
हेइकटकद्रिगनागरनटके ॥ नागरीदासमेहबरसानिसिभईचपलाचि
राकठईतउनपरतवीचिहटके ॥ ४ ॥ राग अडानौ ॥ इकताल ॥
झूलतहिंडोरेलालनवलवृंदाबालसंग ॥ चहूंओरठनकमनकझुवतानि
तनठनियनकमनहूंमदनबागवसनसोहतहैंरंगरंग ॥ फूलनकेवरन
वरननवलासीलानैंकरनिप्रीतममनिहरनतरुनिदीपतिद्युतिदामिनी

अंग ॥ बजवतबीनांनबीनगावततियगनप्रवीनगहगडगनिगांनतान परनमिलिमृदंग ॥ घहरतनभयघटाकारीठहरतनहिंचपलारीफहरत पटनीलपीतनिरषतमनलोचनपंग ॥ रमकनिमैंरंगरह्योजातिनाहिं मोपैंकह्योनागरियादासरसप्रवाहबह्योआतिउमंग ॥ १ ॥ तिताल ॥ एहोलालझूलियेनैंकधीरैंधीरैं ॥ काहेकौंइतनीरमकबढावतद्रुमउर झतचीरैंचीरैं ॥ क्योंतुमझुकिझुकिझोटाकैंमिसआवतहोनीरैंनीरैं ॥ यहबरजतत्योंत्योंवेनागरलेतभुजभीरैंभीरैं ॥ ६ ॥ तिताल ॥ हौंतौं सोभादेषिलुभाई ॥ मेरीअंषियाजलभरआई ॥ झूलतकदंबतरैंजमु नातटसुंदरकुंवरकन्हाई ॥ झलकतनिकसतमुकटलटनिविचपीतां बरफहरानिसुहाई ॥ नागरियातबतैंमोहिजियमैंफिरिरहीमदनदुहा ई ॥ ७ ॥ राग अडानौ ॥ तिताल ॥ बैठेहैंहिंडोरैंबीचतपतसुरसैन कारीजेबसरदारीकीमजेजनझुलावही ॥ दुहूंओरचंवरचलावैंसपी चौंरदारसाथवानसंगसोझुकायेहीझुलांवही ॥ पुलेवारहारनिजबाहि रजगमगातिदेषिसोहैंलालठाढेदीठनडुलावही ॥ नागरसुगंधकीअ कौरउठैंझोटासंगझूलैंस्यामासाहिबमुसाहिबझुलावही ॥ ८ ॥ इक ताल ॥ सषीसांवरीगोरीयेझूलतकौंनहैंझूलतदेषिहियोदहरैं ॥ दर क्योअतिस्वेदरोमांचभयेलपिनैंननिलाजछटाछहरैं ॥ थहरैंतनफू लदुकूलपिसैंनसंभारैंदोऊअंचराफहरैं ॥ करकंपतडोरीनजायगही नहिंनागरयापट्ठुलीटहरैं ॥ ९ ॥ इकताल ॥ झूलतरंगभरीअलबे ली मानौंपवनपरसतैंलहकतकंचनलतानवेली ॥ छूटिगयोउरअंच रफहरतदरसतहारहमेलो ॥ नागरपियलपिरीझिरीझिकैंवीचभुज निभारझेली ॥ १० ॥ राग विहागरो ॥ इकताल ॥ जमुनांकेंतो

रवीरज्जुवतिनकीभीरतहांपरमरंगबोरनां रच्योहिंडोरनां ॥ बजतमृदं गबैंनबीनसंगरागरंगपावसरितुहोतसिंधुरसझकोरनां ॥ झूलतप्रियन वलकिसोरझोटाझकझोरजोरझननननकिंकिनींसोरछबिहिलोरनां ॥ नागरबढिनेहमेहरमकनिभैंरंगरह्योचलिकटाछदुहुओरादृगनिहोर नां ॥ १ ॥ ताल चपक ॥ तूदेषिरीसोभायाबरियां ॥ वढिजुगये झोटाद्रुमपरसतअरझिरह्योपीतांबरडरियां ॥ तूटिगईबनमालहिलो रतछूटिकिंकिनीकटिढरहरियां ॥ नागरीदासप्रियाअंचलचलिड रिलगिजातदेहथरहरियां ॥ १२ ॥ तालचपक ॥ उतरेझूलेतैंसोभा सिंधुझकझोरेसे ॥ प्यारीछूटेबारबैंनाबेसरिसरकिगएउततूटीबनमा लासिथलकिंकनीकटिपुलेफैंटापेचसुपसुरातिझकोरेसे ॥ सँवारतभू षनबसनआयसपोजनमनवारैंरीझिरूपनिरषिठगोरेसे॥ नागरीदास दोऊश्रमितव्हैंसोसेजदेषिछबिभुरयेरोमेरेनैंनभोरेसे ॥ १३ ॥ रा गसोरठ इकताल ॥ नितगरजगरजगरजकैंबरसनिघटालगी ॥ पा वसरितुब्रजमैंरसरंगरगमगी ॥ हरितभूमिगहबररहेनवकदंबअंब ॥ कुसमकलितभंवरभारझुकिझुकिरहीझंब ॥ १ ॥ नित० ॥ झूलैंज हांझुंडनिमिलिवल्लभकुलनारि ॥ जिनमधिनायकवृषभानकीकुमा रि ॥ गांनकरतचहूंओरज्जुवतिनकीभीर ॥ पहरैंमनहरनितरुानिबरन बरनचीर ॥ नित० ॥ २ ॥ रूपचहलपहलबिचहिंडोरनांसलोल ॥ मांनूंमुनियनलालकैंझुंडनिमचीकलोल॥ केकीसुरकुहकिकुहकिगावैं नवबाल ॥ सुनिसुनिमलारमेघघुंमडिआवैंतिहिंकाल ॥ नित०॥३॥ द्रुमनिमांझझूलतबरवैंनीघुलिजात ॥ ज्यौंउडतमोरतरलपछपुछाफ हरात ॥ छूटिगयेअंचरउरटूटिगयेहारडोर ॥ मचकनिमैंलचकतक

टिझोटाझकझोर ॥ ४ ॥ नित० ॥ आईश्रीराधाजवशोभाहैंबढी ॥
सांवरीसहेलेझूलैंसंगलैचढी ॥ कहींनपरततासमयकीबरसपरथोरं
ग ॥ नागरियानिरषिभईनैंननिगतिपंग ॥ नित० ॥ ५ ॥
॥ तिताल ॥ दोऊमिलिझूलतरंगहिंडेरैं ॥ नीरपीतअंचलचलचंच
लबैनीहारहिलोरैं ॥ भंवरभीरलपटतसंगआवतलगिसुगंधकेडोरैं ॥
नागरियानागररमकानिमैंमिलिगावतथोरैंथोरैं ॥ १५ ॥ आनकवि
कृत ॥ राग सोरठ ॥ इकताल ॥ होप्यारीजीनैंरसियोपीवझुलावें
छैं ॥ रंगभरचाझोटादेसांम्हैंनैणांनैणमिलावैंछैं ॥ वरसरह्योरसरंग
हिंडोरैंमिलिमलारसुरगावैंछैं ॥ यांवातासूंसांवलियोह्यानैंरसिकवि
हारीवरभावैंछैं ॥ १६ ॥ आनकविकृत ॥ इकताल ॥ हिंडोरैंहेली
रंगरह्योसरसाय ॥ टेक ॥ हौंतौंवारीजीवारीगईदेषि ॥ झूलनिमेंझु
किझूमिरह्यापियप्यारीजीरोरूपलुभाय ॥ भीजैंतनतरवरचूवैंला
गागलबांहीलपटाय ॥ रसिकबिहारीजीरोझूलबो ह्यांरांमनमेंझो
टाषाय ॥ १७ ॥ ष्याल ॥ तिताल ॥ सुन्दरनंदकुंवारझूलतललि
तकदम्बतरैंजमुनातटनवघनश्यामसरीर ॥ सोहतफहरतमालमोद
तमहकिमालतीरहीचहूंदिसिभईभंवरनकीभीर ॥ चलिरीचलिवलि
आजनैंननिरूपअमीरसपानकरहिकिनहरहीमदनतनपीर॥ तूगोरी
वेश्यामजोरीजगतविभूषननवलनागरीवसियेंधीरसमीर ॥ १८ ॥
॥ तिताल ॥ झूलतहिंडोरैंनवलदोउमनमोहनमोहनीछाविपावहीं ॥
द्रुमपरव्हैंव्हैंकढतवढतछविपरसिपरसिगुरवामनोंआंवहीं ॥ पुलि
वैंनीउरहारटूटिपटछूटिअंचरफहरांवहीं ॥ नागरियाझोटावढिरम
करंगीलीतामैंझुकिझकझोरनिमिसिलपटावहीं ॥ १६ ॥ तिताल ॥

झूलतहैंदोऊसषीझुलावैं ॥ सोधैंकोझकोरैंश्यामतनगोरैं आवैं हिंडोरैंहिलोरैंमांझथेरैंथोरैंगावैं॥नागरझकझोरैंहोरैंडोरैंउरझावैं २०॥ आंनकविकृत॥राग काफी॥धीरांझूलोजीराधाप्यारीजी ॥ मचकरं गीलीथांरीमानैंबालीलागैं ॥ झुलावतहैंसषीसारीजी ॥ फरहरातअं चलचलचंचललाजनजातसंभारीजी ॥ कुंजतओटदुरेलषिदेषतप्री तमरसिकविहारीजी ॥ राग मल्हारा ॥ इकताल ॥ होकहारंगभी नीरितुहैंसावनकीफिरफिरझमाकिझमाकिझामिमेहआवैं ॥ चात्रिग मोरकरतसोरतैंसियेगहरीबनकीघोरकारेकारेबादरनिविचबिचबि ज्जुरीचमचमावैं ॥ सीतलसुगंधपवनगवनपरसपरसदेषिफूलनिसौं भरीभरीहरीहरीडरियांलहिलहावैं ॥ तैसेईविलासपुंजनागरियाना गरानिकुंजनेहमेहभिजएमिलिमिलिमल्हारगावैं ॥ राग वड हंस ॥ ब्रह्मताल ॥ बालविनोदीमेरेहियमैंझूलतानितवसो ॥ रतनजटित कैललितहिंडोरैंबछियासहतलसो ॥ रमकनिमैंलडवामास्वनकोबि चविचलेतगसो ॥ नागरियाझुसरारिकीकोऊहसैंसुभल्हेहसो ॥२२॥

इतिश्रीमहाराजाधिराजसांवतसिंहजी द्वितीयहरिसंबंधनाम नागरीदासजी कृत उत्सव माला संपूर्णम् ॥

श्री·

# अथ रसिकविहारजी कृत पद लिख्यते ॥

तिताल ॥ नंदजीरैंचालोनैंघरां ॥ महामनोहरपुत्रहुवोलपिलें
णसफलकरां ॥ दहीभ्यालसौंभरांभरांवांहसिहासिफेरिभरां ॥ र
कविहारीनांवकुंवरजीरोआगमजांणिधरां ॥ १ ॥ रागसोरठ
इकताल ॥ कांनपडीनसुणीजैंनंदघरआजैं ॥ धुरैंनिसांणघणांमं
लमयजांणैंनभभादौंघणगाजैं ॥ गोपीगीतगावतीआवैंचालंताछवि
छाजैं ॥ गोकुलरागलियांरांचहुंवांवहुवांरांरमझोलवाजैं ॥ स्याम
रणासुतजायोराणींरूपअनूपमराजैं ॥ होसीरसिकविहारीनांवयांरो
अवहीमदनवदनलपिलाजैं ॥ २ ॥ राग काफी ॥ वजैंआजनंद
भवनवधाइयां ॥ गहमहआनंदरंगरलीअतिगोपीसबमिलआइयां ॥
महरिजसोमतिकैंभयोसुतफूलीअंगनमाइयां ॥ रसिकविहारीप्रान
जीवनलपिदेतअसीससुहाइयां ॥ ३ ॥ तिताल ॥ आजवृपभानकैं
बधाई ॥ गहमहभीरभईरावरमैंगावतअलीसुहाई ॥ हसिहसिगोपी
मिलतपरसपरआनंदउरनसमाई ॥ प्रगटभयेउतरसिकविहारीइत
प्यारीनिधिआई ॥ ४ ॥ तिताल ॥ वधावणोंहेहेलीआजरली ॥
भईभीरवृपभानभवनमैंकीरतिवेलिफली ॥ जुवतीवृंदघरघरतैंमंगल
गावतआवतचली ॥ रसिकविहारीचन्दहेतजनुप्रगटीकुमुदकली ॥
॥ ५ ॥ तिताल ॥ होछैंवृपभानरैंघरलापांरीवधाईआज ॥ कुंवरि
लाडिलीजनमलियोछैंमोहनरैंसुपकाज ॥ दुलरावैंमंगलगावैंदादनि

लियांसुघरसमाज ॥ रसिकविहारीमनआनंदहुवोप्रगटीनिजसिरताज ॥ ६ ॥ तिताल ॥ होछैंवृषभानरैंघरआनंदरलीवधावणौं ॥ जनमीराधावृजसुषसाधानिरषिनैंणांसुषपावणौं ॥ आंगणगहमेंहभीडहुईछैंआजकोदिवससुहावणौं ॥ प्रगटीछैंरसिकबिहारीकीजोडीहुवोमनोरथभावणौं ॥ ७ ॥ राग सोरठ ॥ तथामलार ॥ तिताल ॥ वृषभांनकैंमंदलराबाजैं ॥ सुभघरीदिनसुभमहूरतगहरैंगहरैंगाजें ॥ गावोमंगलरहसिबधाइपावोरांनीकीरतकैंघरकाजैं ॥ रसिकविहारीकीयहजोरीभयेमनोरथआजैं ॥ ८ ॥ तिताल ॥ आजबरसांनेंमंगलमाई ॥ कुंवरिललीकोजनमभयोहैंघरघरबजतबधाई ॥ मोतिनचोकपुरावोगावोदेहुअसीससुहाई ॥ रसिकाबिहारीकीयहजीवनिप्रगटभइसुषदाई॥९॥राग नायकी ॥ ताल चपक ॥ आजबधावोवृषभांनकैंधांम ॥ मंगलकलसलियैंआवतगावतवृजकीबांम ॥कीरतिकैंकीरतिप्रगटीहैंरूपधरैंअभिरांम ॥ रसिकबिहारीकीयहजोरीहौंनीराधानांम॥१०॥इकताल ॥ षेलैंसांझीसांझप्पारी ॥ गोपकुंवारिसाथणिलियांसाथेचावसोचतुरसिंगारी॥फूलभरीफिरैंफूललेणज्यौंफूलरहीफुलवारी ॥ रह्यांठग्यालषिरूपलालचीप्रीतमरसिकविहारी॥११॥ तिताल ॥ होरंगीलीबाजोलागिरहीछैनैंणांमें ॥ जांणींकांसकटाछांहींकादेषिदावदैंणांमें ॥ कांपें अंगअनंगरंगसुरभंगहुवोवैंणांमैं रसिकबिहारीमनफूलवडीहुइहारजीतसैंणांमैं ॥ १२ ॥ रागषंभायची ॥ तिताल ॥ आजबरसानोंहेलीलागैंसुहावणो॥ फागगतिगीतसुरछायोसुहायोआजुनंदकुंवरआयोपाहुणौं ॥ उठोजीकिसोरीगोरील्योनैंगुलालओलीभरहोलीअवसुषसरसांवणौं ॥ गहगडषेलधूंमधूंधरअवी

रमांहीरसिकविहारीकंठलगांवणौं ॥ १३ ॥ तिताल ॥ फागुणियारो घुंमडिरह्योछैम्याल ॥ कुंजभूमिसोलाललालह्वैइह्वैवालालतमाल ॥ उडिगुलालकीलालधूंधरिमैंभलकैंवैंणाभाल ॥ सपीलालअरुलाल बिहारनिरसिकबिहारीलाल ॥ १४ ॥ या पदकी आलाप चारिमें देंने ये ॥ दोहा—उडिगुलालधूंधरभई, तनरह्योलालवितान ॥ चौरी चारुनिकुंजमें, व्याहफागसुखदान ॥ १ ॥ फूलनकोसिरसेहरा, फागरगमगेवेस ॥ भावरहीमेंचलतदोऊ,लैं गतिसुलपसुदेस ॥ २ ॥ भीजेकेसररंगसौं, लगेअरुनपरपीत ॥ डोलैंचाचरचौकमैं, गहिव हियांदोऊमीत ॥ ३ ॥ रच्योरंगीलीरैंनमैं, होरीकोविचव्याह ॥ वनीविहारनरससनी, रसिकविहारीनाह ॥४॥ १५ ॥ तिताल ॥कुंज महलमैंआजुरंगहोरीहो ॥ फागपेलमैंवनांवनीकीव्हैरहीपटगठजो रीहो ॥ मुदितव्हैंनारिगुलालउडावैंगावैंगारिदुहुंओरीहो ॥ दूलहर सिकविहारीसुंदरदुलहनिनवलकिसोरीहो ॥ १६ ॥ तिताल ॥ होरा जयेछोडोजीकिशोरीजीरोछेहडो ॥ रापोरापोमनमैंचारविचारि ॥ थेफागुणरसवावलाऐलाजभरीसुकुंवारि ॥ कांईह्वैवोहोलीह्वैवांसुणह ससीसोहसंसारि ॥ थेगायांकाग्वालियाछोअरअैछैराजकुंवारि ॥ थांहरीयांहरीनहींछैवरावरीजायपरसोदूजीनारि ॥ रसिकविहारीथां रोनावछैकाईपेलोण्यालगंवारि ॥ १७ ॥ तिताल ॥ रह्योरंगहो लीसरसाय ॥ एकणदिसप्यारीह्वैईह्वैवाएकणदिसपियआय ॥ गावैं सषीसुहावणीसाथेसंजमुरजसौंहैंसाज ॥ कुंजसदनरैआंगणैरह्याम दनझुंझाउबाज ॥ फागुणसमैंसुहावणौंपेलैंनवलरंगीलापेल ॥ उ डिगुलालघुंमडीघणींरहिचलीधरणिरंगरेल ॥ लूंमझूमिलपटाइया

दोन्यौंमुषमांडणरैण्याल ॥ रसिकविहारनिलाडिलीपियरसिकविहारीलाल ॥ १८ ॥ तिताल ॥ विचब्रजनारचांरैझुंडराधारूपहैरूडो॥ ग्रीवझुकायांझूंमकनाचेंसीसकेसांरोजूडो ॥ केसरिरंगभीजीसाडीमैं झलकरह्योछैंचूडो ॥ देषिछक्यापियरसिकविहारीरह्याधीरधरकूडो ॥ १९ ॥ राग ॥ मनमोहनसोहनस्यामनन्ददढटोनांरी ॥ विनदेषेपलकलनपरतहैंमेरोजीवलगोनांरी॥होरीमैंमोपैंठगोरीसीडारीहौंरिझईरी झिरिझोंनांरी ॥ षेलौंगीमिलरसिकविहारीसौंवाविनषेलअलोनांरी ॥२०॥ रागन्नाइकी ॥ तिताल ॥ होहोहोरीकहिवोलैंसबब्रजकीनारि ॥ नंदगांववरसानैंपेलमैंगावतइतउतरसकोगारि ॥ उडतगुलालअरुनभयोअंबरचलतरंगपिचकारकीधारि, ॥ रसिकविहारीभांनदुलारीमधिनायकदोऊषिलारि ॥ २१ ॥ इकताल ॥ एजुनीकैंतुमजाहुचलेजिनभरोमेरीसारी ॥ सुनिस्यामसुनस्यामसौंहैंतिहारीयाहीविरछिनायलैंहुंकरतैंपिचकारी ॥ अबकुछमोपैंसुन्यौंचाहतहोगारी ॥ घरमैंईसीषेढंगरसिकविहारी ॥ २२ ॥ ॥ षासाचाकररहस्यांजीह्लेराजराचाकररहस्यांराजकुंवरकिसोरीजी ॥ फूलविछाताजास्यांआंगेलियांपीतपटझोरीजी ॥ सूरजमुषीहाथलियांफिरस्यांछाहिकियांमूषगोरीजी ॥ रसिकविहारीरह्याटहलमैंहोसीरंगरलीभरिहोरीजी ॥ ॥ २३ ॥ तिताल ॥ भीजैंम्हारीचूनरीहोनंदलाल ॥ मतिनांषोकेसरपिचकारीहाहामदनगुपाल ॥ भीजवसनउघड्यासीअंगअंगकौंणनिलजयहण्याल ॥ रसिकविहारीछैलनिडरथेमानेंतोजंजाल ॥ ॥ २४ ॥ दोहा—मतिटोकोरोकोमती, चल्याजाहुइणगैल ॥ रंगभरोमतिभांवता, मतिजीमतिपियछैल ॥ १ ॥ मनहीमेंएरहणद्यो,

इसाअटपटाफैल ॥ रंगलग्योछिपसीनहीं, मतिजीमतिपियछैल ॥
॥ २ ॥ चुगलचवाईगांवयो, बुरालोगअणबैल ॥ कांईपेलोण्यालए,
मतिजीमतिपियछैल ॥ ३ ॥ रसिकविहारीण्यालए, सीण्याभलाअ
डैल ॥ पगांपढांछांहाथजी, मतिजीमतिपियछैल ॥ ४ ॥ राग
झंझोटि ॥ रंगझुरमटरा ॥ अनीहाहोनंदमहरदानीघरमेंतुरंगभरैब
रवटरा ॥ क्योंकरपनियांजांउंसजनीरहेठाढोपनघटरा ॥ होहोकर
तभरतझुवतनिकोंरासिकविहारीनटरा ॥ ५ ॥ २६ ॥ रागकाफी ॥
कैसैंजलजाउंमैंपनघटजांऊ ॥ होरीपेलतनंदलाडिलोरीक्योंकरनि
वहनपांऊ ॥ वेतौनिलजफागमदमातेहौंकुलवधूकहांऊं ॥ जोछुवैं
अंचररासिकविहारीतोहुंधरतीफारसमांऊ ॥ २७ ॥ राग काफी ॥
मनमोहनमेरीअंगियारंगडारीरे ॥ याहोरीमेंलाजरहैक्युंसासनणद
डरभारीरे ॥ तुमतोछैलगैलनितरोकोहोंआवूंसंगनारीरे ॥ काहेनि
डरधीटवटपारेहुवारसिकविहारीरे ॥ २८ ॥ राग षंभायची ॥
तिताल ॥ कुंजपधारोरंगभरीरैंन ॥ रंगभरीदुलहनिरंगभरेपियस्या
मसुंदरसुषदैंन ॥ रंगभरीसैंनीयरचीजहांरंगभरचोउलहतमैंन ॥ र
सिकबिहारीप्यारीमिलिदोऊकरोरंगसुषसैंन ॥ २९ ॥ या पदकी
आलाप चारीमैं दैने ए दोहा—गहगडसाजसमाजजुतअतिसोभाउ
फनात ॥ चलिविलसोमिलिसेजसुष, मंगलगलतीरात ॥ १ ॥
रहीमालतीमहकितहां, सेवतकोटिअनंग ॥ करोमदनमनुहारमिली.
सबरजनीरसरंग ॥ २ ॥ चलेदोऊमिलिरसमसे, मैंनरसमसेनैंन ॥
प्रेमरसमसीललितगति, रंगरसमसीरैंन ॥ ३ ॥ रसिकविहारीसुपस
दन, आएरससरसात ॥ प्रेमवहुतथोरीनिसा, व्हैआयोपरभात ॥

॥३०॥तिताल ॥ सुरंगीसेजांरगमगरह्यासुषसैंण ॥ हारांउलझ्याहार हियारानैंणांउलझ्यनैंण ॥ मनमथअमलअगाधाबोलैंआधाआधाबैं ण ॥ रसिकबिहारीप्यारीमिलिआनंदमैंसोहतबितईछैरैंण ॥ ३१ ॥ राग सोरठ तिताल ॥ होप्यारीजीनैंरसियोपीवझुलावैंछैं ॥ रंगभ रयाझोटादेसांह्मैनैंणानैंणमिलावैंछैं ॥ बरसरह्योरसरंगहिंडोरैंमिलि मलारसुरगावैंछैं ॥ यांबातांसूसांवलियोह्मांनैंरसिकबिहारीवरभावैं छैं ॥ २९ ॥ इकताल ॥ हिंडो रैंहेलीरंगरह्योसरसाय ॥ टेक ॥ हौंतो वारीजीवारीगईदेषिझूलनिमैंझुकिझूमिरह्यापियप्यारीजीरोरूपलु भाय ॥ भीजैंतनतरवरचूवैंलागागलबांहीलपटाय ॥ रसिकबिहारी जीरोझूलबोमांरामनमैंझोटापाय ॥ ३० ॥ राग काफी ॥ धीरांझू लोजीराधाप्यारीजी ॥ मचकरंगीलीथांरीमानैंवालीलागैंझुलावतहैं सषीसारीजी ॥ फरहरातअंचलचलचंचललाजनजातसंभारीजी॥कुं जनओटदुरेलषिदेषतप्रीतमरसिकबिहारीजी ॥ ३१ ॥ रागललित ॥ ष्याल ॥ जीनैंणांनींदघुलैंछैं ॥ आयरहीछैंथोडीरात ॥ कांईकेडैं लाग्याछोनंदलाल ॥ अतिअलसायोम्हांरोगात ॥ घरघरचारचवाव चलैंलोनिपटबुरीछैंयाबात ॥ रसिकबिहारीथेरसलुब्धाव्हैंआसीपर भात ॥ ३५ ॥ तिताल ॥ होकांह्नजीरातराउणींदारंगराता ॥ निस रैंध्यानएमुंदीपलकआवैंललकमदनमदमाता ॥ अलकमांहिअण वटप्यारीरोल्यायाथेउलझाता ॥ रसिकबिहारीलागोछोप्यारामुस क्याताअलसाता ॥ ३६ ॥ राग आसावरी ॥ तिताल ॥ प्यारेयेइ निगलियांआव ॥ नैंननिजलसौंधोयसंवारीअछनअछनधरिपाव ॥ व्याकुलतृपतचकोरदृगनिकौंवदनचंददरसाव ॥ रसिकबिहारीला

लसलोनैंजिनकारीनिंदुरसुभाव ॥३७॥ राग सारंग ॥ तिताल ॥ मैं अपनौंमनभांवनलीनौं ॥ इनलोगानिकोकहाकीनौं ॥ मनदैमोलल योरीसजनीरतनअमोलकनंददुलारोनवललालरंगभीनौं ॥ कहाभ योसवकैंमुपमोरैंमैंपायोपीयप्रवीनौं ॥ रसिकविहारीप्यारोप्रीतमासि रविधनांलिपदीनौं ॥ ३८ ॥ इकताल ॥ तिताल ॥ रतनालीहोथा रीआंपडियां ॥ प्रेमछकीरसबसअलसांणींजांणिकंवलकीपांपडि यां ॥ सुंदररूपलुभाईगतिमतिहोइगईज्यूंमधुमांपडियां ॥ रसिक बिहारीवारीप्यारीकौंणवसीनिसकांपडियां ॥ ३९ ॥ ताल ॥ मोहनजीम्हारैंथेकांईहठलाग्याछोजी ॥ जावाओघरछोडोछेहडो थेरसबातांपाग्याछोजी ॥ आंण्यांथांकीछैंरतनालीसारीनिस राजाग्याछोजी ॥ रसिकबिहारीप्याराम्हांनैंथेओरांसूंअनुराग्याछो जी ॥ ४० ॥ तिताल ॥ रंगिरह्याजुगलरूपरंगमांहीं ॥ कुंजमहलमैं दर्पणसाम्हैंदियांरहैंगलबांहीं ॥ कदेकसंभ्रमव्हैस्यामारैंनेडैंस्यामछ तांहीं ॥ कदेकरीझिरहैंरसिकाविहारीदेपिदेपिपढछांहीं ॥ ४१ ॥ तिताल ॥ चिरतालीतैंनंदकुंवरमनमोह्योहेकांमणगारी ॥ वसिकारि वारामंत्रतोजिसासींपीकुणवृजनारी ॥ दिनअररैंणसैंणरैंकारणअंग अंगरहैंसंवारी ॥ भलोकियोआधीनआपणैंप्रीतमरासिकविहारी ॥ तिताल ॥ येवांसुरियावारेऐसेजिनवतरायरे ॥ यौंनवोलियेअरेघर वसेलाजनिदविगईहायरे ॥ हौंधाईयागेलहोसौंरेनैंकचल्योधौंजाय रे ॥ रसिकबिहारीनांवपायकैंक्यौंइतनौंइतरायरे ॥४३॥ तिताल ॥ प्यारीजीरासालूडामैंआवैछैसुगंधीरूडीवास ॥ अंगमरगजीगंधलु भायांभैंवरभंवैंआसपास ॥ लटपटैंबेसआंणिऊभारह्याआंगणकुंज

निवास ॥ रसिकबिहारीपवनढुलावैंषासाहोयषवास ॥ ४४ ॥ तिताल ॥ आजकीरातआछीलागैछैंउजारी ॥ बिहरैंस्यामास्यामचावसौंसुंदरनावसिंगारी ॥ जमुनाबिचझिलमिलकीसोभाकैंवलकूलसुषकारी ॥ नावडगमगैंडरलपटावैंरसिकबिहारीजीसौंप्यारी ॥ ४५॥ राग सोरठ ॥ तिताल ॥ बहिमनवासियोरीसियोरीमोहनलालनगीनौं ॥ बृजकोभूषनरतनअमोलकअतिसुंदररँगभीनौं ॥ मैंपायोमेरैंबडभागनिसिराबिधनांलिषदीनौं ॥ रसिकबिहारीपियसुषकारीकंठलायमैंलीनौं ॥ ४६ ॥ तिताल ॥ रह्यादेषिपियचित्रुकउठायवोनैंणांमैंअलसांणघणींछैं ॥ घुलिरहीनींदलोयणांलालीकाजलरेषवणीछैं ॥ अलकांसिथलसिथलहुइपलकांभौंहांबंकतणीछैं ॥ रसिकबिहारीप्यारीजीरीचितवनिमिलिरहीअणीअणीछैं॥४७॥ राग काफी॥ तिताल ॥ मनलायाक्यौंकान्हअनोषेसौं ॥ अबपछितांयैंक्याहोदांणीभूलिप्रीतकरीओषेसौं ॥ निसदिनघुटिदीतूघरअंदरसासननददेहोपेसौं ॥ गुरजनबुरेरसिकबिहारीनूंवेषणदेतनगोषेसौं ॥ ४८ ॥ तिताल ॥ वहिसौंहनांमोहनयारफूलहैंगुलाबदा ॥ रंगरँगीलाअरुचटकीलागुलहोरनकोईजबाबदा ॥ उसबिनभँवरेज्यौंभवदाहैंयहदिलमुजवेताबदा ॥ कोईमिलावैंरसिकबिहारीनूंहैंयहकामसबाबदा ॥ ४९ ॥ तिताल ॥ मुरलीवारोमोहनाबहिकहिहेलीकहांपांउंरी ॥ घरवनमनलागैंनहींहैंबावरीभईकितजांउंरी ॥ सिथलअंगपगथररहैंहौंउठिउठिकैंमुरझांउंरी ॥ रसिकबिहारीबनवारीबिनकैसैंजीवजिवांउंरी ॥ ४७ ॥ तिताल ॥ तीषेनैंनकन्हाईतैंडेपलपलघूंनकरंदे ॥ भौंहैंतोकमांनतनींपलकैंतीरपरंदे ॥ कित्तेघायलपरेकराहैंदिलनहीं

धीरधरंदे ॥ रसिकबिहारीनितिवारकरंदेटारेनहींटरंदे ॥ ५१ ॥
॥ राग अडाणो ॥ तिताल ॥ होस्यामाप्यारीवोमैंडीजिंदल
गीहैतैंदेनाल ॥ जबहसिबेपैंतबतबजीवांरहिंदाहोयनिहाल ॥ तु
हीअसांढेनैंनप्रांनबसपयातुसाढेबाल ॥ यौंकाहिंदाकरजोरिकुंवरि
सौंरसिकबिहारीलाल ॥ ५२ ॥ तिताल ॥ वोमोहनासोहनयारदेनैं
णांदीझोकां ॥ सीनैंदेबिछुलगीअसाढेवारपारभईनोकां ॥ रुकदी
नहींरोकिमैंहारीलाजघूंघटदेरोकां ॥ रसिकविहारीदानांवलेलेक
रैंसवब्रजनोकांटोकां॥५३॥तिताल॥ आयाकुंजपरछायाजीजलवाद
लझरिया ॥ हरियातरवरचूवैंपाणींबहोसरवरभरिया ॥ इणसमयेसु
षलेणमनोरथदंपतिहियधरिया ॥ मिलियारसिकविहारीप्यारीसहु
कारजसरिया ॥ ५४ ॥ राग रामकली ॥ प्यारीतुतैंमोहिमोललि
यो ॥ तेरीकृपामदनदलजीत्योतेरोजिवायोजियो ॥ उमडीसैंनम
हामनमथकीतैंअधरामृतदियो ॥ श्रीरसिकविहारीकहतदीनव्हैंन
निस्यामाकोहियो ॥ ५५ ॥ राग ॥ वनिदुकूलवैठेपरजंक ॥ कम
लनैंनअंगअंगछबिनिरषतप्यारीभरैंभुअंक ॥ धन्यधन्यपियमांनि
अपनपौंज्यौंनिधिपायेरंक ॥ श्रीरसिकविहारीयहसुपविलसततहां
निकटनिरसंक ॥ ५६ ॥ लूर ॥ पावसरितवृंदावनकीछुतिदिनादिन
दूनीदरसैंहैंछबिसरसैंहे ॥ लूंमझूंमसावनघनोघनवरसैंहे ॥ १ ॥ ह
रियातरवरसरवरभरिया ॥ जमुनांनीरकलोलैंहे ॥ मनमोलैंहे ॥
प्यारीजीरोबागसुहावणोंमोरबोलैंहे॥२॥ आभाआभावीजचिमंकै॥
जलधरगहरोगहरोगाजैंहे ॥ रिहराजैंहे ॥ स्यामासुरमुरलीरली ॥
बनवाजैंहे ॥ ३ ॥ रसिकविहारीजीरोभीज्योपितांवरप्यारीजीरी

चूनरसारीहे ॥ सुषकारीहे ॥ कुंजांकुंजांझिलरयापियप्यारीहे ॥ ४ ॥ ५७ ॥ तिताल ॥ आजसषीकुंजमहलमैंरंगभरीरातड़लीहोसुहाई ॥ सेजडिलीरगमगिरह्यादंपतजालरंध्रजहांआईजुन्हाई ॥ नहींसुलझैंतनमनआनंदमैंसगलीरैंणबिहाई ॥ रसिकबिहारीप्यारीप्यारीप्राणसूमनमानोंनिधिपाईसुषदाई ॥ ५८ ॥ तिताल ॥ उणींदाछैजीरातरा ॥ बैंणसिथलअरनैंणजुक्याहीअ वैलगिवैठापरभातरां ॥ पलकांपीकअधरफीकैंरंगरसअलसायागातरा ॥ रसिकबिहारीप्यारीपूरणकरीमदनदेवरीजातरा ॥ ५९ ॥ राग सोरठ ॥ होझालोदेछैरसियानागरपनां ॥ सारादेषैलाजमरांछांआंवांकिणजतनां ॥ छैलअनोषाकह्योनमानैंलोभीरूपसनां ॥ रसिकबिहारीनणदबुरीछैंहोलाग्योम्हारोमनां ॥ ६० ॥ जाण्यांजाण्यांरेहोलोभीथाराछिछंदपणां ॥ नैंणलगायदिषायदयासीलेरउदासीमकरघणां ॥ यांवातांपलपलकुंणपडपैंबोलोछोसुणझूटघणां ॥ रसिकबिहारीनावकहावोसोभापावोछोजीराजयहांलषणां ॥ ६१ ॥

॥ इति श्रीरसिकविहारीजी कृत पद संपूर्ण ॥

श्रीनाथजी ।
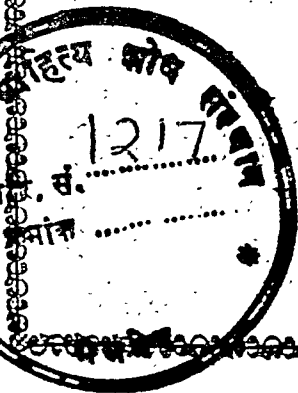
# नागरसमुच्चयका शुद्धाऽशुद्धपत्र ॥

| पृष्ट. | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १ | १७ | ॥ चौपाई ॥ श्रीभागवत | यहचौपाईसि याहीकीचाहिये । |
| २ | ५ | कंप्ल | कल्प |
| ४ | १६ | संप्रदायकैं | संप्रदायकारि कैं |
| ५ | १३ | इहितैं | ईहितैं |
| ८ | ९ | कछु | कऱू |
| ९ | १६ | पक्त | सक्त |
| १० | २१ | मुहि | मुंहिं |
| १२ | १४ | यांतैं | यातैं |
| १३ | १९ | सर मापते | स रमापते |
| १५ | ११ | जीनके | जिनके |
| १९ | २ | श्रुद्रा | शूद्रा |
| २१ | ४ | हतवः | हेतवः |
| २२ | २२ | सिंधु | शंभु |
| २३ | १ | अनी | अमी |
| २४ | १ | राजन | राजन् |
| २५ | १५ | ज्यैं | ज्यौं |
| २५ | १९ | तिनहीपैं | तिनाहिंपैं |
| २६ | ८ | विधिवतर करत | विविक्तक रत |
| २६ | १० | मिटी | मिटि |
| २६ | १७ | सुछम | सुच्छम |
| २७ | १४ | घाम | धाम |
| २७ | १४ | किहि | किंहिं |
| २८ | १ | उटि | उठि |
| २८ | १३ | जनसेवा | जन; सेवा |
| २९ | १० | वास | वासि |
| २९ | ११ | उाठ | उठि |
| २९ | १३ | जान | जानैं |
| २९ | १९ | मेत्यान | मेत्यानि |
| ३० | १३ | क्वचिच्च | क्वचिच्च |
| ३१ | ५ | जोईढिग सोई | जोइढिग-सोइ |
| ३४ | ४ | घुरसौं | धुरसौं |
| ३४ | १५ | अव | ( ध्रुव ) |
| ३५ | १ | तेई | केइ |
| ३५ | ५ | [illegible] | खवारी |
| ३५ | २० | कलोलपै वे कौं | कलोलपैंवे कौं |
| ३६ | ४ | ठेर | टेर |
| ३८ | १८ | मतवार | मतवारे |
| ३९ | १० | धने | घने |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४१ | २१ | ज्यौं | (ज्यौं) | ८४ | १ | तव | (तव) |
| ४२ | १६ | गति | गत | ८४ | ७ | राऊ | राज |
| ४८ | १० | मई | मइ | ८४ | १० | तत्र | तत्व |
| ५० | ४ | परानन | पुरानन | ८४ | १४ | वहौत | वहु |
| ५० | २१ | श्रीष्ण | श्रीकृष्ण | ८६ | ११ | साभिलाख | साभिलाष |
| ५१ | ८ | दूमनि | द्रुमनि | ८९ | ३ | पद्धरी | पद्धरी |
| ५३ | १९ | अघावनौं | अघावनौं | ८९ | १७।१६ | तहांपद॥ गाये | तहांपदगाये |
| ५७ | ९ | ठगन | ठगत | ९० | १ | गनै | गनत |
| ५८ | ५ | तेरी | नेरी | ९२ | १७ | मेत | समेत |
| ५८ | १९ | मृति | मृत्ति | ९९ | १६ | कई | कइ |
| ६२ | २ | विखै | विषय | १०१ | १३ | कै | (कै) |
| ६४ | ८ | हरख | हरप | १०२ | ८ | दुहूं | दुहजु |
| ७१ | २ | धोप | घोष | १०२ | १४ | निपठ | निपट |
| ७१ | २० | चटकरू | चटकरु | १०२ | १६ | कवि | फवि |
| ७२ | १६ | रेचवात | हरेचवात | १०४ | ६ | सुनैं | सुनत |
| ७५ | २१ | वई | वेई | १०४ | ७ | अरू | अरु |
| ७७ | ७ | रुचिरर | रुचिर | १०४ | १७ | चन्दूंधां | चन्दूंधां |
| ७८ | १६ | वसी | वासि | १०६ | ६ | मीरा | मीर |
| ८० | १६ | व्यौहर | व्यौहार | १०६ | १९ | धरि | धीर |
| ८१ | १२ | नहीं | नाहिं | १०७ | ९ | हाल | हार |
| ८२ | १५ | रितु | रितु | १०८ | १३ | पदार्थ | पदार्थ |
| ८२ | १९ | जात्त | जात | १०९ | ९ | अंवु | अंव |
| ८३ | १२ | अमृत | अम्मृत | ११० | १ | तरुनी | तरणी |
| ८३ | १४ | सव | (सव) | १११ | ८ | सिंघ | सिंह |
| ८३ | २० | ल्यौं | लैं | | | | |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ११२ | ६ | नगर | वगर |
| ११२ | १२ | नये ॥ मिले | नये मिले |
| ११२ | २० | सम | समं |
| ११३ | ६ | कौम | कौलं |
| ११६ | ६ | पौकौं | पर्यंकौं |
| ११७ | २ | करान | करनि |
| ११८ | ३ | अनचरनि | अनुचरनि |
| ११८ | २० | पताख | पताक |
| ११९ | १० | पटहि | पटह |
| १२० | १३ | जडावत | जुडावत |
| १२१ | १ | रघुवारे | रघुवीर |
| १२१ | १३ | कव | (कव) |
| १२३ | ३ | रूपको | रूपकी |
| १२४ | ३ | ाम | मि |
| १२४ | १६ | दास चतुर्भुज | चतुर्भुज दास |
| १२७ | १३ | सुप | सुपं |
| १२८ | ९ | भक्तिन | भक्तनि |
| १२९ | १० | कुसंसग | कुसंग |
| १३० | ४ | विनु | विन |
| १३० | १६ | पतिननि | पतनिनि |
| १३१ | ११ | धुराई | घुराइ |
| १३१ | १९ | रित | ललित |
| १३२ | ६ | हिति | हित |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १३२ | १६ | भ्नम | |
| १३५ | १९ | अँवे | |
| १३७ | ६ | धने | |
| १३७ | ९ | स्याम | |
| १३९ | ८ | घट | |
| १४० | १२ | अगर | |
| १४० | १३ | कर्त्तार | |
| १४० | १३ | निर्धारनिर्धार | |
| १४० | १४ | गदद्वारगंज | |
| १४० | १७ | दर विलायत | |
| १४० | १७ | तकिया | |
| १४० | १८ | फरस | |
| १४० | २० | चांर | |
| १४० | २१ | अदवहौत इ- तमाम | |
| १४१ | ७ | विमल | |
| १४१ | १५ | गोकुल | |
| १४१ | १६ | झालर | |
| १४१ | १९ | परक्रमा | |
| १४१ | १९ | हारि | |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| | | | दोनों अक्षरोंका एक गुरु समझनेको है। |
| १४१ | २० | अमरावती | अमूरावती |
| १४१ | २१ | सिर | सिर् |
| १४२ | १ | कंवल | कंवल् |
| १४२ | २ | पुर | पुर् |
| १४२ | २ | अवर | अवर् |
| १४२ | २ | दुजवर | दुज्वर् |
| १४२ | ३ | हरि | हरि् |
| १४२ | ३ | गुनधुनि | गुन्धुन् |
| १४२ | ३ | तनकी | तन्की |
| १४२ | ४ | टहल | टहल् |
| १४२ | ४ | वहो विधि | व्हो विध् |
| १४२ | ५ | कर राय | कर्राय |
| १४२ | ७ | भजन | भज्न |
| १४२ | ८ | उत्सव | उत्सव् |
| १४२ | ९ | प्रथम | प्रथम् |
| १४२ | ९ | अर्पण | अर्पण् |
| १४२ | ९ | हरि | हरि् |
| १४२ | १० | रुचिर | रुचिर् |
| १४२ | १० | तुलसी | तुल्सी |
| १४२ | १० | सहज | सहज् |
| १४२ | १०।११ | सीतल | सीतल् |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १४२ | ११ | रिषि | रिषि् |
| १४२ | १२ | कलि | कलि् |
| १४२ | १३ | विविधि | विविधि् |
| १४२ | १३ | तिनको | तिन्को |
| १४२ | १९ | पंडव | पांडव |
| १४५ | ६ | तथा समय | यथा समय |
| १४६ | १७ | संनि | मुनि |
| १४७ | ८ | वासरे | वासर |
| १४७ | ९।१० | वहुतक | वहुत |
| १४९ | १५ | ज्ञानतन | तनज्ञान |
| १५० | २ | मायाकैं | माया |
| १५१ | २ | हरप | हरष |
| १५२ | १३ | षद | पद |
| १५२ | १५ | कना | करुना |
| १५७ | ६ | नंद गृह | प्रथम नंद गृह |
| १५८ | ६ | पांनादिक | पानादिक |
| १५८ | ७ | पांन | पान |
| १५८ | १९ | अरू | अरु |
| १५९ | ५ | अवरेपिहिं | अवरेपिहीं |
| १५९ | १३ | घामकैं | घामकैं |
| १६१ | ३ | सुधा | सुधि |
| १६१ | १० | रही | रहि |
| १६१ | १८ | जन | जल |
| १६१ | २१ | विहसि | विहसिकैं |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १६३ | १२।१३ | सगीत | संगीत |
| १६३ | १६ | सां | सी |
| १६३ | १७ | पुनिरास-लीलाखंड | यह बडे अक्षरोंमें चाहिये |
| १६३ | २१ | किसत | पिसत |
| १६४ | ४ | पुनिरास लीलाखंड | वडे अक्षरों-में चाहिये |
| १६४ | ९ | गिरिगिर | गिरिगिरि |
| १६४ | १८ | आवई | पावई |
| १६४ | १९ | आवई | आवई |
| १६७ | १५ | अंक | अंश |
| १७० | १८ | उधौ | ऊधो |
| १७३ | ९ | व्है | वह |
| १७३ | १९ | ऊतर | उत्तर |
| १७५ | ११ | छूवावत | छ्वावत |
| १७६ | ४ | धित | धीर |
| १७८ | १३ | निरापि | निरापि |
| १८१ | ९ | मारमा | रमारमा |
| १८१ | १८ | सवामि | वसामि |
| १८२ | २२ | तान्वित | तान्वितव |
| १८३ | ४ | दिनेशं | निदेशं |
| १८५ | ६ | सुप | सुख |
| १८५ | ६ | गति | गत |
| १८५ | १० | पातिते | पताते |
| १८५ | १९ | हृदये | हृदयं |
| १८५ | २१ | रीझि | रीझि |
| १८७ | १९ | पाय निपरे | पायानि परे |
| १९२ | ५ | यह पद | यह पद पुस्तकमें नहीं था जिससे यहां नहीं लिखा |
| १९३ | १ | ईला | इस अनुप्रासकी दूसरी तुक पुस्तकमें नहीं थी जिससे यहां भी नहीं है |
| १९५ | १५ | गिधर | गिरिधर |
| २०० | १८ | मठाई | मिठाई |
| २०८ | ४ | उताारि | उतारि |
| २०९ | १५ | गंघु | गंधु |
| २०९ | १९ | जुको | जूको |
| २१० | ८ | पपप्रसंग | पद्प्रसंग |
| २१० | १३ | नामां | नामा |
| २१२ | १३ | सांजियो | साजियो |
| २१३ | २२ | धान | धातु |
| २१४ | ११ | सुत आगन | सूत आंगन |
| २१५ | १४ | कफूर | कपूर |
| २१६ | १७ | गोघूलिक-वारियां | गोधूलिकारियां |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २१८ | ८ | एक अपनौं | अपनौं |
| २१८ | १९ | तृभंगानिपर | तृभंगति अंगनिपर |
| २२१ | ५ | विवेष | विवेक |
| २२२ | १ | एकौं नहैं | एकौंन हैं |
| २२२ | १७ | वाकीन | वाकी न |
| २२३ | ११ | वैष्णानव | वैष्णवन |
| २२३ | १९ | घाऊं | धांऊं |
| २२६ | ५ | द्रव्य लियो | द्रव्य लियें |
| २२६ | १० | हरि वंसजी | हरिवंसजी |
| २२६ | २० | अनूराग | अनुराग |
| २२७ | ६ | इषद | ईषद |
| २२७ | १५ | एकंठी | ए कंठी |
| २२८ | १३ | अव लौंकरैं हैं | अवलौं करैं हैं |
| २३० | १२ | पर करमैं | परकरमें |
| २३० | १७ | तत्तथेई | तत्तत्थेई |
| २३१ | १७ | निधान | निदान |
| २३१ | २१ | समझाय वेकौं | समझायवे कौं |
| २३२ | २ | अव लौंभी | अवलौं भी |
| २३३ | ३ | परस | परस |
| २३३ | १२ | वहिमाला | वहि माला |
| २३४ | १४ | देपि | देपी |
| २३६ | १७ | झुलावत | झुलावन |
| २३६ | १९।२० | घटां | घटा |
| २३८ | ११ | स्यामनदी | स्यामानदी |
| २३८ | २२ | अथ पद | अथ अन्यपद |
| २३९ | १ | वल्लभ रसिकजू | वल्लभरासिक जू |
| २३९ | ९ | रीझनिवाही | रीझ निवाही |
| २४० | १३ | यारी | यारि |
| २४२ | ६ | यातै | (यातैं) |
| २४३ | ८ | छिनदू | छिनहू |
| २४३ | १९ | नागरन | नागर |
| २४४ | ८ | रमां | रमा |
| २४४ | १४ | व्है | व्हैं |
| २४५ | ७ | करुनामैं | करुनामय |
| २४५ | ७ | करइ | करै |
| २४५ | १७ | सुरभीत | सुरभीन |
| २४८ | १ | जव | जवै |
| २४८ | ३ | भरत | भरन |
| २४८ | ३ | त्यागावहिनैं | त्याग वाहिनैं |
| २४९ | ९ | धूंधिरातिं | धूंधराति |
| २५० | १६ | तदनांतर | तदनंतर |
| २५१ | ३ | प्रत्य | प्रति |
| २५२ | १३ | तदनांतर | तदनंतर |
| २५३ | ४ | पठ | पट |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २५४ | ४ | कवल | कमल |
| २५४ | २० | तदनांतर | तदनंतर |
| २५५ | ११ | घीरज | धीरज |
| २५६ | ६ | तदनांतर | तदनंतर |
| २५६ | १५ | भररि | भरि |
| २५७ | २ | है | ह्वै |
| २५७ | ६ | सुरतात | सुरतांत |
| २५९ | ५ | पाक्षि | पष |
| २५९ | ५ | उडिराज | उडराज |
| २६० | ५ | चित | चित्त |
| २६० | ८ | फारी | फारि |
| २६१ | ८ | ऊचैं | ऊंचैं |
| २६१ | १२ | हाटिक | हाटक |
| २६१ | १५ | जोति | जोती |
| २६२ | १७ | विविस | विवस |
| २६३ | ४ | तीर | नीर |
| २६६ | २२ | वारियां | विरियां |
| २६७ | ११ | झुकाति | झुंकानि |
| २७१ | ६ | पीन | वीन |
| २७२ | २ | वाडी | वाढी |
| २७२ | ५ | छवै | ह्वै |
| २७२ | २० | लपी | लखि |
| २७४ | ४ | लग्नाष्टक | लगनाष्टक |
| २७४ | १५ | वनि | वनी |
| २७४ | २० | सोभाग | सोभाफाग |
| २७५ | ४ | वोढि | ओढि |
| २७६ | १८ | फाग विहार | फाग विलास |
| २७७ | ११ | भीजो | भींजि |
| २७८ | २ | पलटे | लपटे |
| २८० | १५ | वघू | वधू |
| २८३ | ५ | राकिसि | राकेस |
| २८३ | १६ | मति | गति |
| २८४ | २२ | दय | दये |
| २८५ | १ | रासलता | रासरसलता |
| २८५ | ५ | ज्यौन्ह | जौन्ह |
| २८५ | ५ | रूपहरी | रुपहरी |
| २८५ | १७ | छाहि | छांहि |
| २८५ | १८ | रीझिर हे सोईनिरापि निसि | रीझिरहेसो-इ निरापि निस; |
| २८५ | २१ | छवै | ह्वै |
| २८६ | १९ | पक्वे | पक्के |
| २८७ | १ | सुप | सुप |
| २९० | ७ | जुवांहोय | होयजुवां |
| २९० | ११ | रप्यैं | रप्पैं |
| २९० | १२ | सज्त्र | सज्ज |
| २९१ | १७ | रही | रहि |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २९२ | १५ | इह | इंह |
| २९५ | १७ | विंवैं | विंवैं |
| २९५ | १८ | हूकैं | हूके |
| २९५ | २२ | ज | जा |
| २९६ | १ | पैं | (पैं) |
| २९६ | ५ | अंधरे | अंधेर |
| २९६ | २० | कोऊन | कोउन |
| २९७ | ११ | सब | (सब) |
| २९७ | १२ | उततनैंकन्हू | उततनकहू |
| २९८ | २ | कहूंवै | कहुंवै |
| २९८ | १६ | दलह | द्रूलह |
| २९९ | २ | सुरें | सरे |
| २९९ | ११ | कन्हू | कहूं |
| २९९ | १४ | ढुहूंवां | ढुहुंवां |
| ३०० | ३ | नागरी | नागरि |
| ३०४ | ११ | पुंन्य | पुन्य |
| ३०४ | २२ | वधाई वधाई वधाई वधाई | वधाइ वधाइ वधाइ वधाई |
| ३०६ | १३ | राधा | राधा |
| ३०६ | १७ | ॥लषिकैं | सवैया॥ लषिकै |
| ३०६ | १९ | नागरी | नागरि |
| ३०६ | २१ | ॥कीरतदा | कवित्वं॥ कीरतदा |
| ३०७ | ९ | देवा | देव |
| ३०७ | ११ | कुमेर | कुवेर |
| ३०८ | ४ | सम्हार | सम्हारैं |
| ३०८ | १७ | ॥ फूलन | सवैयो॥ फूलन |
| ३०८ | १८ | कई | कइ |
| ३०८ | २० | साझी फूल | कवित्वं॥ सांझीफूल |
| ३०९ | ३ | धाय | पाय |
| ३१० | २२ | होर | हार |
| ३१२ | १८ | ॥ छाई | सवैया॥ छाइ |
| ३१२ | १८ | चितचितैं | चितैं चित |
| ३१२ | २१ | ॥ आई | कवित्वं॥ आई |
| ३१३ | १ | जोत | जोन्ह |
| ३१३ | ९ | ॥ छाई | सवैयो॥ छाइ |
| ३१३ | १४ | कुह | कुहू |
| ३१३ | १८ | ॥ जसुदा | सवैयो॥ जसुदा |
| ३१३ | २१ | ॥ जहां | कवित्वं॥जहां |
| ३१४ | ५ | ॥ नव | सवैयो॥ नव |
| ३१५ | १२ | भारीहैं गोवर्द्धन | गोवर्द्धन |
| ३१६ | १ | छवैं | छ्वैं |
| ३१६ | १२ | अनूंठी | अनूठी |
| ३१७ | ३ | ॥ होरीमैं | सवैया॥ होरीमैं |

| पृष्ठ. | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३१७ | ७ | चित्त | चित |
| ३१७ | ८ | कुंड | झुंड |
| ३१७ | १० | ॥ पेल | कवित्वं॥पेल |
| ३१७ | १४ | ॥ देवनि | सवैयो ॥ देवनि |
| ३१७ | १७ | कहीयैं | कहीपैं |
| ३१७ | १८ | ॥ आई | कवित्वं॥ अई |
| ३१७ | २२ | मसुरैं | मसूरैं |
| ३१७ | २२ | ॥ लाल | सवैयो॥ लाल |
| ३१८ | ४ | वाढी | ठाढी |
| ३१८ | १० | ॥ सिर | कवित्वं॥सिर |
| ३१८ | १२ | रूमाल | रुमाल |
| ३१८ | १३ | कित | किन |
| ३१८ | १५ | ॥ कीनी | सवैया ॥ कीनी |
| ३१८ | १८ | ॥ औंच | कवित्वं ॥ औंच |
| ३१८ | २१ | छवाय | छ्वाय |
| ३१९ | १ | ॥गांस | सवैया ॥ गांस |
| ३२० | २ | वचनकवित्वं॥ | वचन सवैया ॥ |
| ३२१ | ४ | ॥ आवते | सवैया ॥ आवतहं |
| ३२१ | ११ | कवित्त | सवैया |
| ३२१ | १३ | जुवतिनि | जुवतीनि |
| ३२२ | ३ | तउ | तऊ |
| ३२३ | ४ | वहि | वही |
| ३२३ | ७ | हल्चल | हलचल |
| ३२४ | ५ | छवैं | छ्वैं |
| ३२६ | १० | इत उतैं | इतैं उतैं |
| ३२६ | १७ | गोरिनिकी श्रमसौंछ विवादीगु लालनिवा लसनीसि गरीजे । | गोरिनिकी श्रमसौंछ- विवादीओ केसरिनीर सनीसिग रीजे । |
| ३२८ | ७ | धन्यव्रज-धन्य | धनव्रजधन |
| ३२८ | ७ | धन्यव्रजप-रम | धनव्रजपरम |
| ३२८ | २१ | ॥छैल | ॥१॥छैल |
| ३२९ | ७ | पेलि | पोलि |
| ३२९ | ११ | छवाय | छ्वाय |
| ३२९ | २० | धमारि धमारि | धमारि धमारि |
| ३२९ | २१ | उदंगल | उदंगल |
| ३३० | ७ | हीयो | हियो |
| ३३० | ७ | कदंवतर | कदंवतरैं |
| ३३० | ७ | वरसत्तहैं | वरसतहैं ॥१॥सवैया॥ |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३३० | ८ | सषीसांवरी गोरी | साषिसांवरि गोरि |
| ३३० | ११ | ॥ २ ॥ | ॥२॥कवित्वं॥ |
| ३३१ | ३ | मुरसै | मुरस्सै |
| ३३१ | ७ | ॥६॥ | ॥६॥सवैया॥ |
| ३३१ | १२ | जामिंनी | जामिनी |
| ३३१ | १६ | ॥ १ ॥ | ॥१॥सवैया ॥ |
| ३३२ | २ | ॥ २ ॥ | ॥२॥कवित्वं॥ |
| ३३२ | ११ | आई | आइ |
| ३३२ | १४ | ॥६॥ | ॥६॥सवैया॥ |
| ३३२ | १५ | झुकी | झुकि |
| ३३२ | १७ | दोष | दोष |
| ३३२ | १८ | ॥ ७ ॥ | ॥७॥कवि· त्वं |
| ३३२ | २२ | तरवरत | तरवरतर |
| ३३३ | १८ | यौंन | पौंन |
| ३३४ | ७ | साचही | सांचहीं |
| ३३४ | १० | ॥५॥ | ॥५॥सवैया॥ |
| ३३४ | ११ | छवै | छ्वै |
| ३३४ | १४ | व्है | ह्वै |
| ३३४ | १४ | प्रय | प्रिय |
| ३३४ | १७ | ॥ ७ ॥ | ॥७॥कवित्वं॥ |
| ३३५ | २ | जागी | जागि |
| ३३५ | ६ | धूमैं | घूमैं |
| ३३५ | ८ | ॥११॥ | ॥ ११ ॥ सवैया॥ |
| ३३५ | १८ | अंषिय | अंषियां |
| ३३५ | १८ | ॥ १४ ॥ | ॥१४॥कवित्वं ॥ |
| ३३६ | १४ | ॥ १८ ॥ | ॥१८॥सवैया ॥ |
| ३३७ | २ | ॥ २१ ॥ | ॥२१॥ कवित्वं ॥ |
| ३३८ | ५ | ॥ २७ ॥ | ॥२७॥ सवैया ॥ |
| ३३८ | ७ | टारीटरैंनड रैंनागर | नागरटारीट-रैंनडरैं |
| ३३८ | १४ | रिझिरिझा ईहैं | रीझिरिझा-ईहैं |
| ३३९ | ३ | ॥ ३२ ॥ | ॥३२॥कवित्वं ॥ |
| ३३९ | १६ | (अथअष्टक) | (अथअष्टकसवैया ) |
| ३४० | २१ | ॥ ४३ ॥ | ॥४३॥कवित्वं ॥ |
| ३४१ | ३ | ॥४४॥सषी | ॥४४॥सवैया ॥ सषि |
| ३४१ | ७ | ॥४५॥ | ॥४५॥कवित्वं |
| ३४१ | २० | ॥४८॥ | ॥४८॥सवैया ॥ |
| ३४२ | १ | वाव नैन | वा वनैं न |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३४२ | ७ | ॥ ५१ ॥ | ॥५१॥कवित्वं ॥ |
| ३४२ | ११ | ॥ ५२ ॥ | ॥५२॥सवैया ॥ |
| ३४२ | १२ | सुघराई | सुघराई |
| ३४२ | १५ | ॥ ५३ ॥ | ॥५३॥कवित्वं ॥ |
| ३४२ | १९ | ॥५४॥ | ॥५४॥सवैया ॥ |
| ३४३ | ११ | ॥५८॥ | ॥५८॥कवित्वं ॥ |
| ३४३ | १५ | ॥५९॥ | ॥५९॥सवैयो ॥ |
| ३४३ | १७ | अवैरू | आवैरु |
| ३४४ | ६ | ॥६३॥ | ॥६३॥कवित्वं ॥ |
| ३४५ | ९ | तवहैं | तवन्हैं |
| ३४५ | ११ | ॥ ६९॥ | ॥६९॥सवैया ॥ |
| ३४५ | २१ | चंघे | वंवे |
| ३४६ | १४ | हैं | न्हैं |
| ३४६ | १४ | जैसीप | जैसीरूप |
| ३४८ | ९ | उछारैह॥ | उछारैंहैं ॥ |
| ३४९ | ६ | लछन | लच्छन |
| ३४९ | १८।१९ | मुसक्या तहैं | मुसकातहैं |
| ३५० | २१ | परम | परम |
| ३५१ | १३ | हूलासतैं | हुलासतैं |
| ३५१ | १६ | हूलासतैं | हुलासतैं |
| ३५१ | २० | व्रजरैं | प्रजरैं |
| ३५३ | १६ | कढु | कढू |
| ३५४ | ७ | दोहा ॥ सोरठा ॥ | ॥ सोरठा ॥ |
| ३५५ | १५ | ऊंठ | ऊंट |
| ३५५ | १७ | तामैं | तापैं |
| ३५५ | २१ | कहत; सुनौं | कहत सुनौं |
| ३५७ | ५ | व्रह्मादि | ब्रह्मादिक |
| ३५७ | ८ | श्रुकल | शुकल |
| ३५७ | ९ | ग्रंस | ग्रंथ |
| ३५८ | १५ | आंनंदित | आनंदित |
| ३५८ | २० | मनमैना | मननैना |
| ३५९ | १७ | निहारे | निहारैं |
| ३६० | ८ | राहिगईसुप | रहिगईसुप |
| ३६० | २१ | मैंटत | मेटत |
| ३६१ | २ | धांई | धाइ |
| ३६१ | १२ | झुलनिमैं ॥ | झुलनिमैं॥४ |
| ३६१ | १७ | कंवनीय | कवनीय |
| ३६२ | १३ | तालनि | तालनि |
| ३६२ | १४ | किंकिनींकुंणित | किंकिनीकुणित |
| ३६३ | ९ | उठैं | ऊठैं |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३६५ | ५।६ | भई | भइ |
| ३६६ | १ | लखि | लखि |
| ३६६ | ४ | भई | भइ |
| ३६८ | ७ | रहैं | रही |
| ३६८ | १४ | दामिनी | दामिनि |
| ३६८ | १५ | कूंज | कुंज |
| ३६८ | २० | दोऊ | दोउ |
| ३६९ | १२ | विथरां हैं वौर | विथरोहैं वार |
| ३७० | १३ | दोऊ | दोउ |
| ३७० | १६ | की | कि |
| ३७१ | ४ | छवैं | छवैं |
| ३७१ | १३ | ब्रह्म | ब्रह्म |
| ३७३ | २ | अवत | आवत |
| ३७३ | ७ | थह | थाह |
| ३७४ | १ | दोऊ; दोऊ | दोउ; दोउ |
| ३७४ | १३ | छुटैं | छुटे |
| ३७४ | २१ | उरझाहिं | उरझांहिं |
| ३७५ | ८ | झूकत | झुकत |
| ३७६ | २० | षेली | षेल |
| ३७७ | १ | पाछ | पाछैं |
| ३७७ | १४ | सिंघु | सिंधु |
| ३८१ | १६ | घन | धन |
| ३८३ | ३ | सास्त्र | शास्त्रसु |
| ३८४ | १ | वृंदावन | वृंदावनकी |
| ३८४ | ९ | जोवि | जेवी |
| ३८३ | ११ | आसाजात्री | आसामनुजात्री |
| ३८४ | १२ | काह्नू | काह्नूकौं |
| ३८३ | २० | पर | परम |
| ३८५ | २२ | रांज | राज |
| ३८६ | १३ | जंवूनीवू | जंवुफलनीवू |
| ३८६ | १७ | पोवतमाला | पोवतानितप्रतिमाला |
| ३८६ | २० | फै रंगही | फैटा रंगही |
| ३८८ | २१ | हहां | इहां |
| ३९० | १ | वहतव | वहुत |
| ३९० | ४ | सरसायो | सवायो |
| ३९१ | ११।१२ | रासिकही रासिकही | रासिकहि |
| ३९१ | १३ | कुज | कुंज |
| ३९१ | १४ | निसान | निस्सान |
| ३९१ | १५ | विरंद | विरद |
| ३९२ | १४ | भियारी | विहारी |
| ३९३ | ४ | मलातं | मलात |
| ३९३ | ८ | काहु पैं | काहूपैं |
| ३९५ | १ | सूरत | सुरत |
| ३९५ | १९ | सकुजोले | सकुचोले |
| ३९६ | १२ | पय | पिय |
| ३९७ | ३ | कीनौं | कौनौं ॥ |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३९७ | १४ | चालनि | चालनि ॥ |
| ३९८ | १ | ईंहिं | इंहिं |
| ३९८ | ९ | तनकत | तनक |
| ३९९ | ४ | रही | राहे |
| ३९९ | १६ | दीध | दधि |
| ४०० | ८ | तऊ | तउ |
| ४०२ | ६ | थां मैं | थां भैं |
| ४०२ | १४ | तटी | ताटि |
| ४०२ | १६ | दुपटे | दुपट्टे |
| ४०२ | २० | घीर | धीर |
| ४०३ | १२ | चवईया | चवइया |
| ४०५ | ६ | वित्तन | वितन |
| ४०५ | ६ | रही द्रुम | राहि द्रुम |
| ४०५ | १७ | दूरिककारि | दूरिकारि |
| ४०६ | २ | ढुहूं | ढुंहुं |
| ४०६ | ५ | मृदंग | मृदंग |
| ४०६ | १४ | कीयैं | कियैं |
| ४०७ | ४ | कईक | कइक |
| ४०७ | ४ | कई | कइ |
| ४०७ | ४।५ | कईक | कइक |
| ४०७ | १९ | कुहकी | कुहाकि |
| ४०८ | १० | लगि | लगी |
| ४०८ | २२ | ताहि | ताही |
| ४०९ | १ | गागरिया | नागरिया |
| ४०९ | २२ | सुवामत्त | सुवासमत्त |
| ४१० | ३ | नागीरय | नागरिया |
| ४११ | १ | लई | लइ |
| ४११ | ३ | गऊर | गउर |
| ४१४ | ११ | कंमल | कमल |
| ४१५ | १३ | फूरवी | पूरवी |
| ४१५ | २१ | द्दिग | द्दग |
| ४१७ | १६ | कवहून | कवहुन |
| ४१७ | १७ | गउ | गऊ |
| ४१८ | १६ | मेठैं | मेह |
| ४२० | ९ | लाल | लाल० |
| ४२१ | ११ | घूंवट | घूंघट |
| ४२१ | १८ | उराझि | उरझी |
| ४२२ | ५ | ॥ इन | ॥ दोहा ॥ इन |
| ४२२ | ६ | कहु | (कहु) |
| ४२२ | ९ | गया | (गया) |
| ४२८ | २० | मई | मइ |
| ४२९ | २ | दाईन | दाइन |
| ४३१ | १५ | भजि | भजी |
| ४३३ | ४ | मगरही | मगराहि |
| ४३३ | १३ | लटकीली | लडकोली |
| ४३३ | १९ | तितात | तिताल |
| ४३४ | १६ | धुं | धूं |
| ४३५ | २२ | भांवेर | भांवरे |
| ४३६ | ९ | रहसिमंग-लश | इस पदमें तुकके अंतमें (ई) है वह (इ) है। |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ४४० | १ | चौरी | चौंरी |
| ४४० | २ | चोरी गोरी | चौंरागोरी |
| ४४३ | ११ | आनंदैं | आनंद |
| ४४३ | २१ | श्वेत | स्वेत |
| ४४६ | ४ | सोई | सोइ |
| ४४६ | ८ | छ्वैं | छ्वैं |
| ४४६ | १६ | गई | गइ |
| ४४७ | ११ | गारो ॥ मोहैं | गारो मोहैं |
| ४४९ | १० | वोलैंत्तत्त | वोलैं तत्त |
| ४५० | ८ | चहूं | चहुं |
| ४५० | १७ | नंन नंद | नंदनंद |
| ४५१ | ३ | सैलहोनैं | सैनलहोनैं |
| ४५२ | १४ | जनर | नजर |
| ४५२ | २२ | घारि | धारि |
| ४५३ | ४ | नागरदे | नींगरदे |
| ४५४ | २ | आगौनैं | अगौनैं |
| ४५४ | ४ | टौंनौं | टौंनैं |
| ४५४ | १९ | होधोषे सौं | धोषे सौं (हो षेसौं) इत्यपि |
| ४५५ | १६ | जीजैरौं | जैरो (जीरो) इत्यपि |
| ४५८ | ७ | वीतती | वीनती |
| ४५८ | ८ | मिलिये ॥ | मिलियेजाय |
| ४५८ | २० | नाची | नीची |
| ४५९ | १५ | घिरिधारे | घिरिघिरे |
| ४५९ | २२ | वरसैं ॥ येरी | वरसैयेरी |
| ४६० | २० | रतवत | रतिवंत |
| ४६१ | १२ | दामिनी | दामिनि |
| ४६२ | १० | अखंडि· तरवर | अखंडितत· रवर |
| ४६४ | १५ | तरैं ॥ जमुना | तरैं जमुना |
| ४६८ | १४ | हिंडोरौं ॥ | हिंडोरैं ॥ |
| ४६९ | १६ | षषग | षग |
| ४७० | १२ | सहैंदी ॥ वह | सहैं दीवह |
| ४७२ | २१ | छईया ॥ | छइया ॥ |
| ४७२ | २१।२२ | अमर ईया॥ | अमरइया ॥ |
| ४७३ | १९ | हंरि | हरि |
| ४७४ | ९ | आनंदधन | आनंदघन |
| ४७४ | १९ | मुरलीका | मुरलिका |
| ४७७ | ७ | सित्प | सित्फ |
| ४७७ | १५ | पूव | षूव |
| ४७८ | २० | दरहरतरी-क | दरदहरतरी-क |
| ४७९ | ७ | तकुल्लहफ | तकल्लुफ |
| ४७९ | २० | रप्यूं | रप्षूं |
| ४७९ | २१ | क्याहैं ॥ मुस्कल | क्याहैं मु-स्कल |
| ४८० | १ | गई | गइ |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ४८० | १ | प्रीतम | प्रीत |
| ४८० | १० | नैनसफस | नैनफस |
| ४८० | १९ | नैव | नव |
| ४८१ | ११ | वदास्त | वदस्त |
| ४८२ | १५ | अेसा | अैसा |
| ४८४ | ५ | हूस्न | हुस्न |
| ४८४ | ८ | तव | (तव) |
| ४८४ | १२ | जुवान | जुवां |
| ४८५ | २ | छप्पै | यह छप्पय महाराज श्री नागरीदास-जीकी प्रशं-साकी है। और इनके भतीज महा-राज श्रीवि-रदसिंहजी की बनाई है। |
| ४८७ | २१ | सकुचिले | सकुचीले |
| ४८९ | १९ | दौ | दोउ |
| ४९० | ५ | त्रुटि | त्रुटी |
| ४९० | १४ | मष | मुख |
| ४९० | १६।१७ | चक | चमक |
| ४९२ | २ | दोऊ | दोउ |
| ४९२ | ११ | छवै | छवैं |
| ४९२ | ११ | कोऊ | कोउ |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ४९२ | १४ | दोऊ | दोउ |
| ४९३ | ११ | नवका | नाव |
| ४९४ | २१ | हियहसि | हियही स |
| ४९८ | १० | रागकछु | राग ॥ कछु |
| ५०० | ८ | सौंघें | सौं धें |
| ५०१ | ११ | परे ॥ आजु | परैंआजु |
| ५०३ | ९ | चीमंकैं | चिमंकैं |
| ५०३ | १० | मूरली | मुरली |
| ५०३ | १४ | पहुंचात ॥ | पहुंचात॥२॥ |
| ५०४ | ६ | जीं हिं | जिंहिं |
| ५०६ | ८ | समधानि | समधांनि |
| ५०६ | १५ | मद | मंद |
| ५०७ | २१ | गोइये | गाइये |
| ५०८ | २२ | मूके | सूके |
| ५०९ | ४ | आसू | आंसू |
| ५१० | १ | दोहा ॥ उहौ | यह दोहा दुबारे छपा ॥ |
| ५११ | ९ | हाथकगाहि | हाथगाहि |
| ५११ | २२ | राहरे | गहरे |
| ५१३ | ९ | चारू | चारु |
| ५१३ | १७ | पत्रीविपुन | पत्रविपन |
| ५१६ | १० | वडीवदा | वडीवडी |
| ५१६ | १० | कि | की |
| ५१७ | ९ | अंसरडांहि | अंसडांहि |
| ५१७ | १२ | पलाल्गाने | पलल्गानि |
| ५१७ | १५ | दिक | दिग |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध | पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५१७ | १९ | रझि | रीझि | ५४१ | १८ | जिहीं | जिंहिं |
| ५१९ | १२ | रूचि | रुचि | ५४२ | ७ | नागरी | नागरि |
| ५१९ | २२ | धर | घर | ५४२ | १२ | घाम | धाम |
| ५२१ | १७ | भुलि | भूलि | ५४२ | १५ | या पद | पद |
| ५२२ | १० | श्ववन | श्रवन | ५४२ | १६ | विपुलकृत | विपुलकित |
| ५२२ | २१ | संगउरंग | संगगउरंग | ५४२ | २१ | तिहैं | तिन्हैं |
| ५२४ | १० | कहंह्वायरी | कहुंहायरी | ५४३ | १ | म्हारि | म्हारि ॥५॥ |
| ५२७ | ५ | तितात | तिताल | ५४३ | १९ | मनसोहन | मनमोहन |
| ५२७ | ८ | भन | मन | ५४४ | ३ | दूती | हुती |
| ५२७ | १७ | द्त | देत | ५४४ | १७ | ह्वै | व्है |
| ५३० | १४ | विधुर्नित | विघूर्नित | ५४४ | २२ | सांझि | सांझी |
| ५३० | १९ | निरप | निरष | ५४४ | २३ | चलाप | आलाप |
| ५३० | २२ | ऐंमहल | ऐमहल | ५४५ | १ | ढूहूंन | ढुहूंन |
| ५३१ | १ | ऐं सैल | ऐसैल | ५४५ | २ | ह्वै | व्हैरही |
| ५३२ | २१ | नागरीदाल | नागरीदास | ५४५ | ९ | ह्वैं | व्है |
| ५३३ | ६ | धरां | घरां | ५४६ | २ | अषियानि | अंषियानि |
| ५३३ | ७ | भरांभरांभरांवा | भरांभरांवा | | | मांझ | मांझ |
| ५३४ | २ | सईये | सइयें | ५४६ | २ | अषियांही | अंषियांही |
| ५३४ | ६ | पाव | पावां | ५४६ | ३ | सांझ | सांझ ॥ |
| ५३५ | ११ | लह्यो | लह्यो | ५४६ | ४ | अषियनकी | अंषियनकी |
| ५३५ | १२ | अंगत | अदभुत | ५४६ | ५ | ह्वैं | व्है |
| ५३६ | ४ | याकी | याको | ५४६ | १६ | उयरचाई | उघरचाई |
| ५३८ | ५ | ह्वैं | व्हैं | ५४७ | १ | नैन | नैन ॥ |
| ५३८ | ५ | भई ॥ आनंद | भईआनंद | ५४७ | २ | पदकनीकी | पदकानिकी |
| ५३८ | १६ | असावरी | आसावरी | ५४७ | ८ | धुकतिहि | धुकतितिंहि |
| ५३८ | २ | कै; रु | कैरु; | ५४७ | १० | रहिग | रहिगइ |
| ५३९ | १८ | रगमगी | रगमगी ॥ | ५४७ | १९ | कवल | कंवल |
| ५३९ | १९ | आाज | आज ॥ | ५४७ | २० | ऊफनावैं | उफनावैं |
| ५४० | ५ | मोरातिनं | मोतिन | ५४८ | ४ | दविजात | द्रवीजात |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ५४८ | ११ | यरू | मरु |
| ५४८ | ११ | मिलि | मिली |
| ५४८ | १६ | भंग | धंग ॥ |
| ५४८ | १७ | घाके | वाके |
| ५४८ | २० | कन | क |
| ५४८ | २० | वूझयो | वूझ्यो |
| ५४८ | २२ | सिसकै | वसिसकै |
| ५५० | १८ | सर्दोत्फूलि | सर्दोत्फुलि |
| ५५१ | ७ | अचल | अंचल |
| ५५१ | ८ | यरिरंभनि | परिरंभनि |
| ५५१ | १९ | विनभजत | विनभजते |
| ५५१ | १९ | कही | कहो |
| ५५२ | ९ | लचैं | लचैं ॥ |
| ५५२ | १० | यमुन | जुमन |
| ५५२ | १२ | गिरयो | गिर्यो |
| ५५३ | १६ | भीर | मीर ॥ |
| ५५४ | ८ | सवानिका | सवनिके |
| ५५६ | ३ | एय | प्रिय |
| ५५६ | ११ | वोलेत | वोलत |
| ५५७ | ९ | उरद्दद | उरसुद्दद |
| ५५७ | १० | लरत | लरतें ॥ |
| ५५७ | १६ | जोहनप्रवत | जोन्हप्रवर्त |
| ५५७ | १८ | अरीब्यारी | अरीप्यारी |
| ५५८ | ८ | मृदंग | मृदंग ॥ |
| ५५९ | ८ | चद | चंद |
| ५५९ | १३ | सत | सात |
| ५६० | २ | अह | अकह |
| ५६० | ७ | मत | मत्त |
| ५६० | १० | झूकिझुलनि | झुकिझूलनि |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ५६२ | २० | मिनछत्र | मिलिनछत्र |
| ५६२ | २२ | जुरी | चारि |
| ५६३ | २१ | नैणांमें | सैणांमें |
| ५६४ | २ | वल्लभा | वलभा |
| ५६४ | ७ | आंद्रि | आंद्रि |
| ५६४ | १४ | उरानि | उरअघानि |
| ५६५ | ११ | झांझर | झांझ |
| ५६५ | १२ | पिचकारी | पिचकारि |
| ५६५ | १६ | झांझर | झांझ |
| ५६६ | २ | सोर | मोर |
| ५६६ | ९ | लपटाही | लपटांही |
| ५६६ | १७ | प्यारेनाहि प्यारे | प्यारेनाहि प्यारे |
| ५६७ | २१ | भौछकां | भोचकां |
| ५६८ | ५ | घूंघट | घूंघट |
| ५६८ | ९ | मदन | वदन |
| ५६९ | ३ | पइयां॥२॥ | पइयां ॥ |
| ५६९ | ८ | भूलिजाय गोरे | भूलिलगजाय गोरे |
| ५६९ | ९ | मचावै | मचावैं |
| ५७१ | १ | घूंघर | घूंघर |
| ५७१ | १० | आवै ॥ | आवै |
| ५७१ | १२ | लालचाछी इत | लालचांछी इत |
| ५७२ | ४ | पान | पान |
| ५७२ | ५ | वतकी | वनकी |
| ५७३ | १६ | सास | दास |
| ५७५ | ४ | सुघर | सुघर |
| ५७५ | १५ | नागरिय | नागरिया |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ५७७ | ९ | दिठा | दिट्ठा |
| ५७७ | ९ | मिठा | मिट्ठा |
| ५७७ | १३ | तेरो | (टेरो) |
| ५७८ | ८ | संगुवालरी | संभ्रमुवालरी |
| ५७९ | ३ | इजूतरावी | इजतरावी |
| ५७९ | ६ | यहक्या | यहक्या ॥ |
| ५७९ | ९ | चलाइयैं ॥ | चलाइयैं |
| ५७९ | १० | यावैंगे | पावैंगे |
| ५७९ | १० | जिन | न |
| ५७९ | १९ | अमिरामिनि | अभिरामिनि |
| ५८० | १ | कुंवारिहो | कुंवारीहो |
| ५८० | ६ | आरिघमारि | गारिघमारि |
| ५८० | १३ | जोति | जीति |
| ५८० | २२ | केवेसुरी | कीवेसर |
| ५८२ | १३ | चहूल | चहल |
| ५८२ | १७ | मुसकाते | मुसकाते ॥ |
| ५८२ | २२ | धनघन | धनधन |
| ५८५ | ५ | घर | धर |
| ५८७ | ११ | ढयो | दयो |
| ५८८ | १० | भैर | भरैं |
| ५८८ | ११ | जूवतन | जुवतिनि |
| ५८९ | ६ | वारीजीति | वारी ॥जोति |
| ५८९ | ६ | ॥३॥८२॥ | ॥ ३ ॥ |
| ५८९ | ७ | रंगसौं ॥ | रंगसौं ॥८२॥ |
| ५९० | ८ | वनराई है | वनराई हैं ॥ |
| ५९० | २० | नांव | नव |
| ५९१ | १४ | कूंज | कुंज |
| ५९२ | १ | सूंघे | सूंघैं |
| ५९२ | १ | फलनि | फूलनि |
| ५९४ | ११ | वारी | चारी |
| ५९४ | १६ | वईभव | वैभव |
| ५९५ | ३ | भई | भइ |
| ५९५ | ४ | देषिहौं | देषिहीं |
| ५९५ | ४ | झूंड | झुंड |
| ५९५ | ६ | को | के |
| ५९५ | ८ | लेपेटैं | लपेटैं |
| ५९५ | ८ | रसकत | रमकत |
| ५९५ | १६ | कुचन | कुचैन |
| ५९६ | ८ | झलनि | झूलनि |
| ५९६ | १० | अरी | (अरी) |
| ५९६ | १२ | अरी | (अरी) |
| ५९६ | १४ | अरी | (अरी) |
| ५९७ | ११ | वैठेहैं | वै ठेहैं |
| ५९७ | १२ | भुलावहीं | भुलांवहीं |
| ५९७ | १४ | डुलावहीं | डुलांवहीं |
| ५९७ | १५ | झुलावहीं | झुलांवहीं |
| ५९८ | ३ | सारे | सोरे |
| ५९८ | १२ | सोसेझ | सोयेसेझ |
| ५९८ | १२ | भुरयेरो | भुरयेरी |
| ५९९ | ४ | नीर | नील |
| ६०० | ५ | कुंजत | कुंजन |
| ६०० | ६ | मल्हारा | मल्हार |
| ६०० | ७ | झमि | झूमि |
| ६०० | १५ | संव्रघ | संवंध |